नवयुग की पहली शताब्दी

| गॉड पासेज बाए |

शोगी एफेन्दी

प्रथम कालचक्र

बाब का धर्मकाल

1844&1853

बाबी प्रकटीकरण का उदय

23 मई, 1844 बहाई इतिहास के शौर्यकाल के सबसे उथल–पुथल भरे समय की शुरूआत का संकेत है, एक ऐसा समय जो उस सर्वमहान कालचक्र में सबसे गौरवशाली कालखण्ड के आरम्भ का संकेत है जिसे मानवजाति के आध्यात्मिक इतिहास ने पहले कभी नहीं देखा। प्रथम बहाई शताब्दी के इस काल को केवल नौ वर्षों का एक ऐसा कम समय चिन्हित करता है, जो घटनाओं से भरा हुआ, सबसे दुःखद, किन्तु भव्यतम था। यह एक ऐसे प्रकटीकरण के जन्म के साथ शुरू हुआ जिसके धारक का जयघोष आने वाली पीढ़ियाँ *"उस बिन्दु"* के रूप में करेंगी *"जिसके आस–पास, अवतारों और दिव्य संदेशवाहकों की वास्तविकताएँ परिक्रमा करती हैं,"* जो, और भी शक्तिशाली प्रकटीकरण के प्रारम्भ की पहली हलचल के साथ ही समाप्त हो गया *"जिसके दिवस की घोषणा"* बहाउल्लाह कहते हैं, *"प्रत्येक अवतार ने की थी"* जिसके लिए *"प्रत्येक दिव्य संदेशवाहक की आत्मा तरसी थी,"* और जिसके माध्यम से "ईश्वर ने अपने सभी संदेशवाहकों और अवतारों के हृदयों को प्रकाशित किया था।" कोई आश्चर्य की बात नहीं, कि बहाई प्रकटीकरण के जन्म और उत्थान से जुड़ी घटनाओं के उस अमर इतिहासकार नबील ने अपनी कथा का आधा भाग उन घटनाओं के वर्णन को समर्पित करना उचित समझा है, जिन्होंने इतने कम समय में, अपनी वीरता की दुःखभरी कहानी के माध्यम से मानवजाति की धार्मिक गाथा को इतना अधिक समृद्ध बनाया है। पूर्ण रूप से अद्भुत शक्ति

के कारण, और उन अति महत्व की घटनाओं के कारण, जो बड़ी त्वरित गति से एक के बाद एक घटती चली गईं, उस आहूति के कारण जिसने इसके जन्म का अभिषेक किया, इसकी स्थापना करने वाले महान व्यक्ति की शहादत से जुड़ी उन आश्चर्यजनक परिस्थितियों के कारण, उन अन्तर्निहित क्षमताओं के कारण जिनसे शुरू से ही यह ओतप्रोत थी। और अन्त में इसके माध्यम से उपजी शक्तियों के कारण, इन नौ वर्षों की अवधि को मानवजाति के धार्मिक अनुभव के सम्पूर्ण अनुक्रम में अद्वितीय स्थान प्राप्त होना चाहिए। जब हम इस अद्‌भुत नाटक के पहले दृश्य की घटनाओं को देखते हैं, तो हम इसके मुख्य नायक, बाब को शीराज़ के क्षितिज पर उल्का के समान उदित होते हुए, ईरान के धुंधले आकाश में उत्तर से दक्षिण तक घूमते हुए, दुःखद तीव्रता के साथ अस्तगमित होते हुए और प्रताप की चमक में मिटते हुए देखते हैं। हम उनके उपग्रहों को, ईश्वर के उन मतवाले शूरवीरों की आकाशगंगा को उसी क्षितिज पर चढ़ते हुए, उसी उदीप्त प्रकाश को दीप्तिमान करते हुए, उसी तेज़ी के साथ स्वयं को जलाकर समाप्त करते हुए और स्थायी रूप से गतिशील हो रहे ईश्वर के नवजात धर्म को अतिरिक्त वेग प्रदान करते हुए देखते हैं।

जिन्होंने इस अकल्पित आंदोलन को प्रेरणा प्रदान की, वह अन्य कोई नहीं, बल्कि स्वयं प्रतिज्ञापित काईम (वह जो उठ खड़ा होगा), साहिबुज्ज़मान (इस युग का स्वामी) थे, जिन्हें क़ुरानकाल के सम्पूर्ण विधान को रद्‌द कर देने का अनन्य अधिकार प्राप्त था, जिन्होंने स्वयं को *"उस आदि बिन्दु"* की उपाधि दी थी, *"जिससे सभी सृजित वस्तुएँ उत्पन्न की गई हैं.....ईश्वर का वह मुखमण्डल, जिसकी भव्यता कभी धुँधली नहीं पड़ सकती, ईश्वर का प्रकाश जिसकी चमक कभी धूमिल नहीं होती।"* जिन लोगों के समक्ष वह प्रकट हुए, वे इस सभ्य जगत की सबसे पतित जाति थी, पूर्णतया अज्ञानी, जंगली, क्रूर, पूर्वाग्रहों से ग्रस्त, लगभग भगवान की तरह ही पूजे जाने वाले व्यक्तियों के अनुक्रम की अधीनता में जकड़े ऐसे लोग, जो अपनी अधमता में, मूसा के समय के मिस्र के इज़राइलियों की, अपनी हठधर्मिता में ईसा मसीह के ज़माने के यहूदियों की और अपनी भ्रष्टता में मुहम्मद के समय के अरबी मूर्ति–उपासकों की याद दिलाते थे। वह मुख्य शत्रु जिसने बाब के दावे को अस्वीकार किया,

उनकी सत्ता को चुनौती दी, उनके धर्म को हानि पहुँचायी, उनके प्रकाश को लगभग बुझा दिया और जो अन्त में उनके प्रकटीकरण के प्रभाव तले चूर–चूर हो गया, वह शिया धर्माधिकारी वर्ग था। भयानक रूप से हठधर्मी, अकथनीय रूप से भ्रष्ट, जनसाधारण पर असीमित अधिकार का आनन्द उठाने वाले, उनके पद से ईर्ष्या करने वाले और समस्त उदार विचारों का असंगत विरोध करने वाले, इस जाति के सदस्यों ने एक हजार वर्षों तक उस रहस्यमय इमाम के नाम का आह्वान किया था। उसके आगमन की अपेक्षा से उनके वक्ष दीप्त हो उठते थे, उसके विश्वव्यापी प्रभुत्व की प्रशंसा से उनके आसन गूँज उठते थे, उसके शीघ्र आगमन के लिए उनके अधर अब भी नित्य प्रार्थनाएँ उच्चारित करते थे। शत्रुओं के षड़यंत्रों को अंजाम देने के लिए अपने उच्च पद को पतित बनाने वाले इच्छुक माध्यम, कोई और नहीं, बल्कि काज़ार राजवंश के शासक थे, जिनमें पहला था, वह कट्टर, सुस्त, अस्थिर प्रकृति वाला मुहम्मद शाह, जिसने अन्तिम क्षण में, बाब की राजधानी की यात्रा को रद्द कर दिया। दूसरा शासक था, वह अल्पायु और अनुभवहीन नसीरूद्दीन शाह, जिसने अपने बन्दी की मौत के फरमान पर अपनी तत्पर सहमति दे दी। इतने दुष्ट षड़यंत्र के मुख्य प्रस्तावकर्ताओं का सहयोग करने वाले दो मुख्य खलनायक महामंत्रियों में पहला था – हाजी मिर्ज़ा आकासी, जो कि मुहम्मद शाह का प्रिय शिक्षक था, वह एक अधम, झूठा, अधीर–दिमाग और षड़यन्त्रकारी व्यक्ति था और दूसरा था, वह स्वेच्छाचारी, खून का प्यासा, निर्दयी अमीर–निज़ाम, मिर्ज़ा तक़ी खान। इनमें से पहले ने बाब को अज़रबैजान के पहाड़ों की कैद में निर्वासित किया और दूसरे ने तबरीज़ में उनकी मौत का आदेश जारी किया। ऐसे अपराधों के अलावा अन्य अतिदुष्ट अपराधों में एक ऐसी सरकार उनकी सह–अपराधी थी जिसे निकम्मे और मुफ्तखोर, राजकुमारों और राज्यपालों के एक ऐसे समूह का सहयोग प्राप्त था जो ऐसे धर्माधिकारी वर्ग के अधीन थे जो भ्रष्ट, असमर्थ, दुष्टता से प्राप्त किए गए विशेषाधिकारों को बलपूर्वक दबाए रखने वाला, और प्रत्यक्ष रूप से बदनाम वर्ग था। जनता, पुरोहित, शासक और सरकार को एक साथ शामिल करने वाले इस भयानक आध्यात्मिक संघर्ष के इतिहास में जिन शूरवीरों के पराक्रम चमक रहे हैं, वे बाब के चुने हुए

अनुयायी – वे जीविताक्षर थे और इस नए दिवस का मार्ग तैयार करने वाले उनके साथी थे, जिन्होंने इतनी साजिश, अज्ञानता, भ्रष्टता, क्रूरता, अंधविश्वास और कायरता के विपरीत जो गुण दर्शाए, वे थे एक उदात्त, कभी न बुझने वाली, और विस्मयकारी आत्मा, आश्चर्यजनक रूप से गहरा ज्ञान, ऐसी वाग्मिता जो अपने प्रभाव में व्यापक थी, ऐसी ईश्वर–भक्ति जो अपने जोश में अतुलनीय थी, ऐसा साहस जो अपनी प्रचंडता में शेर जैसा था, ऐसा आत्मत्याग जिसमें संतों जैसी पवित्रता थी, ऐसी दृढ़ता जिसमें चट्टानों जैसा दृढ़संकल्प था, ऐसी दूरदर्शिता जिसका विस्तार चकित कर देने वाला था, ईश्वरावतारों और उसके इमामों के प्रति ऐसा आदर जो शत्रुओं को कुण्ठित कर दे, विश्वास दिलाने की ऐसी शक्ति जो विपक्षी को भयभीत कर दे, आस्था का ऐसा स्तर और एक ऐसी आचार संहिता जिसने उनके देशवासियों के जीवन को चुनौती दी और उनमें क्रांति ला दी।

इस महान नाटक का पहला दृश्य शीराज़ में रेशम के एक व्यापारी के पुत्र के साधारण से निवास के ऊपरी कमरे में घटित हुआ। समय था 22 मई, 1844, सूर्यास्त से एक घंटे पूर्व। प्रतिभागी थे, पवित्र और पावन वंशावली के 25 वर्षीय युवा – बाब, और उनमें सर्वप्रथम विश्वास करने वाले युवक – मुल्ला हुसैन। इस साक्षात्कार से ठीक पहले की उनकी भेंट पूर्णतया संयोग प्रतीत होती है। साक्षात्कार सूर्य की पहली किरण निकलने तक चला। बन्द कमरे में मेज़बान अपने मेहमान के साथ अकेले थे, और सोया हुआ नगर उस बातचीत के अभिप्राय से बिलकुल अनभिज्ञ था जो उन्होंने एक–दूसरे से की। सिवाय उस आंशिक किन्तु अत्यन्त आलोकित कर देने वाले वृतान्त के, जिसका बयान मुल्ला हुसैन ने किया है, उस अद्वितीय रात का कोई भी अभिलेख आने वाली पीढ़ियों के लिए प्राप्त न हो सका।

जिसने प्रतिज्ञापित काईम होने के अपने दावे की वैधता को स्थापित करने में संदेह की परछाई तक को दूर कर दिया था, उस मेज़बान के समक्ष प्रस्तुत किए गए प्रश्नों के स्वरूप का और उनसे प्राप्त होने वाले निर्णायक उत्तरों का वर्णन करने के बाद मुल्ला हुसैन ने स्वयं यह बताया है "मैं समय को और उनको भूल चुका था जो मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। बाब की मनमोहक

वाणी ने मुझे मोह लिया था। अचानक, भोर की प्रार्थना के लिए भक्तों का आह्वान करने वाली मुआज़्ज़िन की पुकार ने मुझे आनन्दातिरेक की उस अवस्था से जगा दिया जिसमें मैं डूबा हुआ था। उस सर्वशक्तिशाली ने अपनी पुस्तक में स्वर्ग के निवासियों की अमूल्य सम्पत्ति के रूप में जिन सभी खुशियों और अमिट प्रसन्नताओं का वर्णन किया है, उन्हें मैंने उस रात महसूस किया। ऐसा लग रहा था जैसे मैं एक ऐसे स्थान पर था जिसके बारे में वास्तव में यह कहा जा सकता है कि : *"वहाँ हमें कोई कोशिश नहीं पहुँचा सकती और वहाँ हमें कोई थकान नहीं होगी; वहाँ व्यर्थ बातचीत कोई नहीं सुनेंगे, न ही कोई झूठ होगा, बस यह पुकार,'शांति! शांति'! वहाँ यह पुकार उठेगी,'महिमा हो तेरी, हे ईश्वर!' और वहाँ उनका अभिवादन होगा,'शांति'! और उनकी पुकार का अन्त होगा 'प्रशंसित हो ईश्वर, सभी प्राणियों के स्वामी!'"* उस रात्रि नींद ने मुझे त्याग दिया था। मैं उस स्वर–माधुर्य से मुग्ध हो चुका था जो उनके वचनों के साथ झंकृत और मंद होता; उनके द्वारा क़य्यूमुल–अस्मॉ के श्लोकों के प्रकटीकरण के साथ–साथ उनका स्वर उठता, और उनके द्वारा प्रकट की जा रही प्रार्थनाओं के उच्चारण के साथ पुनः एक स्वर्गिक सूक्ष्म लय प्राप्त कर लेता। प्रत्येक स्तुति के अन्त में, वे यह श्लोक दोहराते :*"तेरे सर्वप्रतापशाली स्वामी की महिमा से अति दूर हो वह जो उसके प्राणी उसके विषय में कहते हैं! और उसके संदेशवाहकों पर शांति विराजमान हो! और प्रशंसित हो वह ईश्वर, सभी प्राणियों का स्वामी!"*

मुल्ला हुसैन ने आगे लिखा है "इस प्रकार अचानक और घनघोर रूप से मुझ पर बरसाया गया यह प्रकटीकरण, गरज के साथ उस भारी बिजली की कड़क के समान बरसा जिसने, कुछ देर के लिए, मेरे अंग–प्रत्यंग को सुन्न–सा कर दिया। चकित कर देने वाली इसकी भव्यता से मेरी आँखें चौंधिया गईं और इसके प्रभाव से मैं भाव–विह्वल हो उठा। उत्तेजना, आनन्द, विस्मय, और आश्चर्य ने मेरी आत्मा की गहराईयों में हलचल मचा दी थी। इन भावनाओं में सबसे ऊपर, प्रसन्नता और शक्ति का वह बोध था जिसने जैसे मेरा कायाकल्प ही कर दिया था। इससे पहले मैं स्वयं को कितना दुर्बल और अक्षम, कितना निरुत्साहित और भयाक्रांत महसूस करता था! तब, मेरे

हाथ–पैर इतने काँपते थे, कि न तो मैं ढंग से लिख सकता था, न चल सकता था। परन्तु अब, उनके प्रकटीकरण के ज्ञान ने मेरे अस्तित्व को जैसे प्रेरणा से भर दिया था। अब मुझमें इतना साहस और इतनी शक्ति थी कि यदि यह दुनिया, और इसके सभी लोग और शासक, मेरे विरूद्ध उठ खड़े हो जाते, तो भी मैं भयभीत हुए बगैर अकेले ही उनके हमले का सामना कर लेता। यह ब्रह्माण्ड मेरे हाथों में मुट्ठीभर धूल के समान प्रतीत हो रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे मैं समग्र मानवजाति का यह आह्वान करने वाली जिब्राइल की आवाज़ बन चुका हूँ: 'उठो, क्योंकि, देखो! पौ फट चुकी है। उठ खड़े हो जाओ क्योंकि उसका धर्म प्रकट हो चुका है उसकी कृपा का द्वार पूर्ण रूप से खोल दिया गया है; इसमें प्रवेश करो, ओ दुनिया के लोगों! क्योंकि वह जो तुम्हारा प्रतिज्ञापित है, अब आ चुका है!'"

बाबी विधान की सभी पुस्तकों में *"प्रथम, सर्वमहान और सर्वशक्तिशाली"* पुस्तक सुरा–ए–यूसुफ पर की गई उस प्रख्यात टिप्पणी के अवलोकन से, बाब के ध्येय की उद्घोषणा को चिन्हित करने वाली इस उपकथा पर अधिक महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। इस पुस्तक के बारे में हम निश्चित रूप से यह कह सकते हैं कि उस अनूठी रात्रि को इसका पहला सम्पूर्ण अध्याय इसके दिव्य प्रकटकर्ता की कलम से निकला था। इस उपकथा के मुल्ला हुसैन द्वारा किए गए वर्णन के साथ–साथ उस पुस्तक के शुरू के कुछ पृष्ठ, इस महत्वपूर्ण प्रकटीकरण के महत्व और शक्ति की साक्षी देते हैं। जिस प्रथम सम्पर्क ने मानवजाति के आध्यात्मिक जीवन में सबसे प्रतापशाली युग के प्रारम्भ के जन्म को चिन्हित किया और इसकी तिथि निर्धारित की, उसकी मुख्य विशेषताएँ थीं – स्वयं ईश्वर का प्रवक्ता होने का बाब का दावा, जिसकी प्रतिज्ञा अतीत के ईश्वरावतारों ने की थी; यह दावा कि वे एक ऐसे व्यक्ति के अग्रदूत भी हैं जो उनसे अतुलनीय रूप से महान हैं; उनके वे आह्वान जो उन्होंने धरती के सम्राटों और राजकुमारों को भेजे; वे भयानक चेतावनियाँ जो राज्य के मुख्य दण्डदायक, मुहम्मद शाह को दी गईं; हाजी मिर्ज़ा आकासी को दिया गया ईश्वर से डरने का परामर्श और शाह के महामंत्री के रूप में अपना पद त्यागते हुए उस ईश्वर के समक्ष झुक जाने का आदेश, जो *"धरती और स्वर्ग, और जो कुछ भी इनमें हैं, का उत्तराधिकारी है"*, अपने धर्म की आत्मनिर्भरता की घोषणा

करते हुए, विश्व के शासकों की क्षणभंगुर शक्ति के दिखावे की भर्त्सना करते हुए,*"प्रत्येक शासक को अपनी प्रभुसत्ता त्यागने,"* तथा *"पूरब और पश्चिम में उनका संदेश प्रसारित करने के लिए दी गई चुनौती"।*

इस ऐतिहासिक घोषणा के साथ ही, उस युग का उदय हुआ जो समस्त युगों की पूर्णता का संकेत देता है। इस महत्वपूर्ण प्रकटीकरण की प्रथम प्रेरणा, उसके अन्दर संचारित की गई, जो, *किताब–ए–ईक़ान* की गवाही के अनुसार,*" यदि न होता, तो ईश्वर अपनी कृपा के आसन पर प्रतिष्ठित न हुए होते, न ही अनन्त महिमा के सिंहासन पर विराजमान हुए होते।"* फिर भी, जब तक चालीस दिन नहीं बीत गए, तब तक शेष सत्रह जीविताक्षरों का नामांकन प्रारम्भ नहीं हुआ। धीरे–धीरे, स्वतः ही, कुछ ने नींद में, अन्य ने जागने की अवस्था में, कुछ ने उपवास और प्रार्थना के माध्यम से, अन्य ने स्वप्न और आभास के माध्यम से, अपनी खोज के उद्देश्य को पा लिया, और इस नवजात धर्म से जुड़ गए। सुरक्षित पाती में अंकित किए गए इन अक्षरों में अंतिम किन्तु स्थान में प्रथम, बाईस वर्षीय विद्वान कुद्दूस थे, जो इमाम हसन के वंश से सीधे जुड़े थे और सैय्यद काज़िम के सबसे सम्मानित शिष्य थे। उनसे ठीक पहले, एक स्त्री को इस नए विधान में धर्म प्रचारक के उत्कृष्ट पद से विभूषित किया गया, जो अपनी जाति की एकमात्र ऐसी महिला थीं, जो अपने सह–शिष्यों के विपरीत, बाब से कभी नहीं मिली थीं। वे तीस वर्ष से भी कम आयु की एक कवयित्री थीं और एक कुलीन परिवार में जन्मी थीं। उनमें सम्मोहित कर देने वाला आकर्षण था और मुग्ध कर देने वाली वाग्मिता थी। वे अजेय हिम्मत रखने वाली एक ऐसी स्त्री थीं, जो अपने विचारों में अपरम्परागत, और अपने कार्यों में साहसी थीं। *"महिमा की वाणी"* ने उन्हें ताहिरा नाम प्रदान करके अमरत्व दे दिया था और अपने शिक्षक, सैय्यद काज़िम द्वारा वे "कुर्रातुल ऐन' (नेत्रों की शीतलता) के उपनाम से पुकारी जाती थीं। उनके स्वप्न में बाब के प्रकट होने के परिणामस्वरूप, उन्हें पहली बार एक ऐसे धर्म की सूचना मिली जो उन्हें कीर्ति की श्रेष्ठतम ऊँचाईयों तक उदात्त बनाने वाला था, और जिस पर अपनी निर्भीक वीरता के कारण वे एक अमिट आभा फैलाने वाली थीं।

"आदि बिन्दु से उत्पन्न होने वाले इन प्रथम अक्षरों को", "उसके आगमन के दिवस में ईश्वर के समक्ष प्रस्तुत होने वाले स्वर्गदूतों के इस दल को", "उसके रहस्यों के इन भण्डारों को", "उसके प्रकटीकरण के स्रोत से उत्पन्न होने वाले इन झरनों को", फारसी बयान के शब्दों में इन "प्रथम साथियों" को जिन्हें, ईश्वर की समीपतम निकटता का आनन्द प्राप्त है, इन *"प्रकाशपुंजों को, जो उस स्वर्गिक सिंहासन के समक्ष सदासर्वदा से झुकते आए हैं और अनन्तता तक झुकते रहेंगे"*, और अन्त में, प्रकटीकरण की पुस्तक में *"उज्जवल वस्त्रों से सुसज्जित और माथे पर सोने का ताज पहने हुए, ईश्वर के समक्ष अपने सिंहासनों पर विराजमान इन गुरुजनों"* को, सभी दिशाओं में भेजने से पहले बाब की उपस्थिति में बुलाया गया। बाब ने विदाई के अपने शब्दों से इन्हें सम्बोधित किया, प्रत्येक को एक विशेष कार्य सौंपा, और कार्य क्षेत्र के रूप में, उनमें से कुछ को उन्हीं के मूल प्रांत सौंप दिए, उन्हें अपने व्यवहार में अत्याधिक सावधानी और संतुलन बरतने के आदेश दिए, उनके स्थान की उदात्तता प्रकट की और उनकी ज़िम्मेदारियों की महत्ता पर बल दिया। उन्होंने उन शब्दों को याद किया जिनसे ईसा मसीह ने अपने शिष्यों को सम्बोधित किया था और इस नए दिवस की सर्वोत्कृष्ट महानता पर बल दिया। उन्होंने उन्हें चेतावनी दी कि कहीं पीछे हटने से वे ईश्वर का साम्राज्य न गवाँ बैठें और उन्हें यह विश्वास दिलाया कि यदि वे ईश्वर के आदेश का पालन करते हैं, तो ईश्वर उन्हें मानवों के बीच अपना उत्तराधिकारी और आध्यात्मिक नेता बना देंगे। उन्होंने एक और भी महान दिवस के रहस्य की ओर संकेत किया और उसके आगमन की घोषणा की और उन्हें आदेशित किया कि वे उस दिवस के आगमन के लिए स्वयं को तैयार कर लें। उन्होंने निम्रॉड पर इब्राहिम की विजय, फेरोह पर मूसा की विजय, यहूदियों पर ईसा की विजय और अरब के कबीलों पर मुहम्मद की विजय को याद किया और स्वयं के प्रकटीकरण की अटलता और अन्तिम विजय को निश्चित बताया। उन्होंने मुल्ला हुसैन को एक ऐसा लक्ष्य सौंपा जो स्वरूप में और अधिक विशेष था और महत्व में और अधिक महान। उन्होंने इस बात की पुष्टि की कि उनके साथ उनकी संविदा स्थापित हो चुकी है, उन्हें सावधान किया कि वे उन धर्माचारियों के साथ, धैर्य से काम लें, जिनसे उनका सामना होगा। उन्होंने मुल्ला हुसैन को तेहरान जाने

का आदेश दिया और उस नगर में सुरक्षित किन्तु अब तक छिपे हुए एक ऐसे रहस्य के बारे में अत्यन्त दीप्तिमान शब्दों में संकेत दिए जो उनकी पुष्टि के अनुसार हिज़ाज और शीराज़ दोनों ही से श्रेष्ठ था।

प्राप्त किए गए आदेशों से प्रेरणा पाकर गतिशील होने वाले ये लघु प्रकाशपुंज, जो बाब के साथ–साथ बयान के विधान के प्रथम वाहिद (एकता) के सदस्य थे, अपने जोख़िम भरे ध्येय के लिए निकल पड़े और अपने मूल प्रांत के दूर–दराज़ क्षेत्रों में बिखर गए, जहाँ उन्होंने विलक्षण शौर्य दर्शाते हुए उन बर्बर और संगठित ताकतों का प्रतिकार किया जो उनके विरूद्ध खड़ी थीं, और अपने स्वयं के तथा अपने सहयोगियों के पराक्रम से अपने धर्म को अमर कर दिया और इस सब ने एक ऐसी हलचल मचा दी जिसने उनके देश को हिला दिया और इसकी गूंज को पश्चिमी यूरोप की राजधानियों तक प्रतिध्वनित कर दिया।

बाब ने केवल तब ही अपने पूर्वजों की समाधियों पर तीर्थ करने के लिए लम्बी और कठिन यात्रा का निर्णय लिया जब उन्हें अपने विश्वसनीय और प्रिय उपसेनापति, मुल्ला हुसैन का वह पत्र प्राप्त हुआ जिसमें बहाउल्लाह के साथ उनके साक्षात्कार के आनन्ददायक समाचार थे और जिसकी उन्हें बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा थी। हिजरी सन् 1260 (सितम्बर, 1844 ई.) के शाबान माह में, इस्लाम की परम्पराओं को पूरा करते हुए, काबा की तीर्थ यात्रा करने के लिए जिस व्यक्ति ने प्रस्थान किया, वे अपने पिता और माता, दोनों की ओर से फातिमा के वंशज थे और उस इमाम हुसैन के भी वंशज थे जो इस्लाम के संदेशवाहक के वैध उत्तराधिकारियों में श्रेष्ठतम हैं। रमज़ान के 19वें दिन (अक्टूबर, 1844 ई.) उन्होंने बुशायर से एक जहाज़ में प्रस्थान किया। उनके साथ कुद्दूस भी थे जिन्हें बाब बड़े परिश्रम के साथ उनको भावी उत्तरदायित्वों के लिए तैयार कर रहे थे। एक माह से भी अधिक लम्बी अवधि वाली तूफानी यात्रा के बाद जब वे जेद्दाह पहुँचे तो वहाँ उन्होंने तीर्थ यात्री का लिबास धारण किया और एक ऊँट पर सवार होकर मक्का के लिए रवाना हो गए, जहाँ वे दिल–हाज्जिह के प्रथम दिन (12 दिसम्बर) पहुँचे। ऊँट की लगाम को पकड़े हुए कुद्दूस, अपने स्वामी के साथ उस समाधि तक पैदल चले। उनके

इतिहासकार बताते हैं कि आराफी के दिन, शीराज़ के उस अवतार–तीर्थयात्री ने अपना पूरा समय प्रार्थना में व्यतीत किया। नाहर के दिन उन्होंने मूना के लिए प्रस्थान किया, जहाँ प्रथा के अनुसार उन्होंने 19 मेमनों की कुर्बानी दी, जिनमें से 9 उनके स्वयं के नाम पर थे, सात कुद्दूस के नाम पर, और तीन उस इथियोपियायी सेवक के नाम पर थे जो उनकी सेवा में था।

विशेष महत्व वाली दो घटनाओं के कारण हिजाज़ की उनकी यात्रा विशिष्ट थी। पहली घटना थी उनके ध्येय की उद्घोषणा और उस अहंकारी मिर्ज़ा मुहित किरमानी को उनकी खुली चुनौती, जो शैखी स्कूल का सबसे उत्कृष्ट व्याख्याता था। मिर्ज़ा मुहित कभी–कभी इस हद तक भी चला जाता था कि उसने उस शैखी स्कूल से स्वयं को स्वतंत्र समझ लिया था जो सैय्यद काज़िम की मौत के बाद बाबी धर्म के भयानक शत्रु हाजी मुहम्मद करीम खान के नेतृत्व में था। दूसरी घटना थी, मक्का के शेरिफ को कुद्दूस के हाथों धर्मपत्र के रूप में पहुँचाया गया वह आमंत्रण, जिसमें इस नए प्रकटीकरण के सत्य को स्वीकार करने के लिए ईश्वर के मन्दिर के उस अभिरक्षक का आह्वान किया गया था, परन्तु, अपनी ही दुनिया में खोए उस शेरिफ ने कोई उत्तर नहीं दिया। सात वर्षों के बाद, किसी हाजी नियाज़ बगदादी के साथ बातचीत के अंतर्गत, इसी शेरिफ को शीराज़ के उस दिव्य संदेशवाहक के ध्येय और शहादत से सम्बन्धित घटनाओं की जानकारी मिली। उसने उन घटनाओं के वृत्तान्त को ध्यानपूर्वक सुना और बाब के साथ घटने वाली उस दुःखद नियति पर अपना रोष व्यक्त किया।

बाब की मदीना यात्रा के साथ उनकी तीर्थ यात्रा समाप्त हुई। पुनः जेद्दाह होते हुए वे बुशायर लौट आए, जहाँ उनके कई कार्यों में से एक था अपने सहयात्री और शिष्य कुद्दूस को अंतिम बार अलविदा कहना और उन्हें यह विश्वास दिलाना कि वे उनके हृदयों के उस प्रिय से अवश्य मिल सकेंगे। इसके अतिरिक्त उन्होंने कुद्दूस को यह सूचना भी दी कि एक शहीद की मृत्यु के ताज से उनका अभिषेक किया जायेगा, और इसके बाद उन्हीं शत्रुओं के हाथों स्वयं बाब का भाग्य भी ऐसा ही होगा।

1261 (फरवरी–मार्च, 1845 ई.) में बाब ने अपने मूल निवास की यात्रा की और वापसी, एक ऐसी हलचल का संकेत थी जिसने पूरे देश को हिला दिया था। उनके नियुक्त शिष्यों के फैलाव और गतिविधियों के कारण उस अग्नि ने एक ऐसी ज्वाला का रूप धारण कर लिया था जो उनकी उद्घोषणा से प्रज्वलित हुई थी। इस अग्नि ने दो वर्षों से भी कम अवधि में, मित्रों और शत्रुओं के आवेग को भड़का दिया था। इस प्रज्वलन की शुरूआत ने, इसे उत्पन्न करने वाले उस महान व्यक्ति की, अपने ही मूल नगर में वापसी की भी प्रतीक्षा नहीं की। वास्तव में, एक अत्यन्त पतित और प्रवृत्ति में अत्याधिक उत्तेजक पीढ़ी पर एक ऐसे प्रकटीकरण के इतने नाटकीय प्रवाह के आशय का अन्य कोई परिणाम नहीं हो सकता था सिवाय इसके कि मनुष्यों के भीतर भय, घृणा, क्रोध और ईर्ष्या का भीषणतम आवेग उमड़े। यह एक ऐसा धर्म था जिसके संस्थापक ने केवल उस छिपे हुए इमाम का द्वार होने का दावा करके ही स्वयं को सन्तुष्ट नहीं कर लिया बल्कि उसने एक ऐसा स्थान ग्रहण किया जो स्वयं साहिबुज्ज़मान से भी अधिक श्रेष्ठ था, उसने स्वयं को एक ऐसे व्यक्ति का अग्रगामी घोषित किया था, जो उससे अतुलनीय रूप से महान था, जिसने केवल शाह की प्रजा को ही नहीं, बल्कि स्वयं राजा और धरती के सम्राटों और राजकुमारों को भी निश्चित आदेश दिए कि वे अपना सर्वस्व त्याग कर उसका अनुसरण करें, और जिसने धरती और इसमें जो कुछ भी है, का उत्तराधिकारी होने का दावा किया। यह एक ऐसा धर्म था जिसके धार्मिक और सामाजिक सिद्धांत, जिसके नैतिक मानदण्ड और धार्मिक नियमों ने उस समाज के पूरे ढांचे को ही चुनौती दे डाली जिसमें इसका जन्म हुआ था। यह एक ऐसा धर्म था जिसने चौंका देने वाली एकमेवता के साथ लोगों को, उनके धर्माधिकारियों और मुख्य दण्डदायक तथा उसके मंत्रियों को सरकार के समर्थन में खड़ा कर दिया और उन्हें एक ऐसे विरोधी के रूप में एक कर दिया जो उस अभियान को जड़ से नष्ट करने पर उतारु थे जिसका आरम्भ करने वाले को वे एक अधर्मी और दुःसाहसी दावेदार समझते थे।

यह कहा जा सकता है कि बाब की शीराज़ वापसी के साथ ही उन परस्पर विरोधी ताकतों की आरम्भिक मुठभेड़ शुरू हो गई। उस ओजस्वी और

साहसी मुल्ला अली बस्तामी को बहिष्कृत किया गया, उन्हें ज़ंजीरों में जकड़ा गया, उन्हें अपमानित किया गया, कैद में डाला गया, और पूरी सम्भावना है कि उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया होगा। मुल्ला अली बस्तामी जीविताक्षरों में से एक थे, वे "ईश्वर का निवास" (शीराज़) छोड़ने में सर्वप्रथम थे और उसके लिए कष्ट उठाने में सर्वप्रथम थे। उन्होंने शिया इस्लाम के एक प्रमुख व्याख्याता, उस प्रख्यात शैख मुहम्मद हसन की उपस्थिति में, बड़े साहस के साथ यह घोषित किया था कि उनके नए स्वामी की कलम से 48 घंटों की अवधि में जो श्लोक प्रवाहित हुए, वे संख्या में क़ुरान के उन श्लोकों के बराबर थे, जिन्हें प्रकट करने में पैगम्बर मुहम्मद को तेईस वर्ष लगे। खसाइल–इ–साबिह में अज़ान की पावन विधि को बदल देने के बाब के आदेश से प्रेरित होकर मुल्ला सादिक खुरासानी ने शीराज़ में एक विक्षुब्ध सभा के समक्ष अज़ान की नई विधि उच्चारित कर दी, इसके परिणामस्वरूप उन्हें तुरन्त गिरफ्तार कर लिया गया, उन्हें भला–बुरा कहा गया, उन्हें निर्वस्त्र कर दिया गया. और उन पर एक हज़ार कोड़े बरसाए गए। फारस का राज्यपाल, वह अधम निज़ामुद–दौलिह, हुसैन खान, जिसने कय्यूमुल अस्मॉ में दी गई चुनौती को पढ़ा था, ने कुद्दूस और एक अन्य अनुयायी सहित मुल्ला सादिक को लोगों के सामने कड़ी सज़ा देने के आदेश जारी करके उनकी दाढ़ी जलाने, और उनकी नाकों में छेद करके नकेल डालने के आदेश दिए। इसके बाद, इस अपमानित अवस्था में उन्हें सड़कों से ले जाते हुए शहर से बाहर निकाल दिया।

अब तक शीराज़ के लोग उत्साह से पागल हो चुके थे। मस्जिदों, मदरसों, बाजारों, और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर हिंसक विवाद उठ रहे थे। शान्ति और सुरक्षा खतरे में पड़ गई थी। भयभीत, ईर्ष्यालु, क्रोध से आग बबूला हुए मुल्ला, अपने पद की गम्भीरता समझने लगे थे। अत्यन्त भयभीत राज्यपाल ने बाब की गिरफ्तारी के आदेश जारी कर दिए। बाब को सुरक्षा के बीच शीराज़ लाया गया और हुसैन खान की उपस्थिति में उन्हें कठोरतापूर्वक डांटा गया और उनके चेहरे पर इतना बलपूर्वक वार किया गया कि उनका ताज गिर गया। इमाम जुमाई के हस्तक्षेप के कारण उन्हें पैरोल पर छोड़कर उनके मामा–हाजी मिर्ज़ा सैय्यद अली की देखरेख में सौंप दिया गया। कुछ दिनों की

शान्ति के दौरान उस युवा ने, अपेक्षाकृत शान्ति के वातावरण में, अपनी माता, पत्नी और मामा के साथ उस वर्ष और अगले वर्ष का नवरोज़ मनाया। इस अंतराल जिस उत्कण्ठा ने उनके अनुयायियों को घेर लिया था, वह अब अपना प्रभाव धर्माधिकारी वर्ग के सदस्यों और व्यापारियों पर डाल रही थी और समाज के उच्च वर्ग में प्रवेश कर रही थी। वास्तव में, पूरे देश में उत्साहपूर्ण पूछताछ की एक लहर सी दौड़ गई थी और बड़े आश्चर्य के साथ असंख्य लोग उन प्रमाणों पर ध्यान दे रहे थे जिनका उल्लेख, बाब के भ्रमणकारी संदेशवाहक बड़ी बुद्धिमत्ता और निडरता के साथ कर रहे थे।

इस हलचल ने ऐसा रूप धारण कर लिया कि शाह भी इस परिस्थिति को अनदेखा न कर सका। उसने अपनी प्रजा में सबसे विद्वान, विश्वसनीय और प्रभावशाली व्यक्ति, सैय्यद याहया दराबी जिसका उपनाम वाहीद था, को इस पूरे मामले की जाँच करने और इसकी रिपोर्ट प्रस्तुत करने का उत्तरदायित्व सौंपा। वाहीद एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें तीस हजार कहावतें कंठस्थ थीं। वे उदार विचारों वाले, अत्यन्त कल्पनाशील, स्वभाव से उत्साही, दरबार के निकट सम्पर्क में रहने वाले एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें तीन साक्षात्कारों में बाब के तर्क और व्यक्तित्व ने पूरी तरह जीत लिया था। उनका पहला साक्षात्कार इस्लाम की आध्यात्मिक शिक्षाओं, कुरान के सबसे गूढ़ उद्धरणों, और इमामों की भविष्यवाणियों और परम्परागत कहावतों पर केन्द्रित था। दूसरे साक्षात्कार के दौरान, वाहीद यह देख कर भौंचक्के रह गए कि जिन प्रश्नों को वे स्पष्टीकरण के लिए प्रस्तुत करना चाहते थे, उन्हें वे भूल चुके हैं, और उनके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा जब उन्होंने देखा कि बाब उन्हीं प्रश्नों के उत्तर दे रहे थे जिन्हें वाहीद स्वयं भूल चुके थे। तीसरे साक्षात्कार के दौरान, शाह के इस प्रतिनिधि को, दो हजार श्लोकों वाले सुरा–ए–कौसर पर बाब की टिप्पणी के प्रकटीकरण की घटना ने इतना अभिभूत कर दिया कि दरबार के मुख्य अफसर को महज़ एक लिखित रिपोर्ट भेजते हुए स्वयं को सन्तुष्ट करके, वे अपने सम्पूर्ण जीवन और संसाधनों को उस धर्म की सेवा में समर्पित करने के लिए उठ खड़े हुए, जिसने बदले में, नायरीज़ क्रांति के दौरान उन्हें शहादत के ताज से सुशोभित किया। जिस वाहीद ने शीराज़ के एक अनजान सैय्यद के तर्कों

को गलत सिद्ध करने का, उसके विचारों को त्याग देने के लिए उसे प्रेरित करने का और उस पर विजय प्राप्त करने के प्रमाणस्वरूप उसे तेहरान लाने का दृढ़ संकल्प लिया था। उसी वाहीद को, अपने स्वयं के कथनानुसार ऐसा आभास हुआ जैसे वे "बाब के पैरों की धूल की तरह दीन" है। शीराज़ में वाहीद के प्रवास के दौरान उनके अतिथेय, हुसैन खान भी शाह को यह लिखने और इस बात का विश्वास दिलाने पर विवश हो गए कि हुज़ूर के नामवर प्रतिनिधि वाहीद, अब बाबी बन चुके हैं।

बाब के धर्म का एक और अधिवक्ता, जो जोश में वाहीद से भी अधिक तेज़ और पद में लगभग मुल्ला अली बस्तामी जितना प्रतिष्ठित था, वह मुल्ला अली ज़नजानी था जिसका उपनाम था हुज्जत। वह एक पत्रकार, एक समीक्षक, सोच में निर्भीक और स्वतंत्र, अवरोधों के प्रति अधीर, और एक ऐसा व्यक्ति था जिसने अबवाबी–अरबाईह से लेकर निम्नतम मुल्ला तक के सम्पूर्ण धर्माधिकारी तंत्र पर दोष लगाने की हिम्मत की थी। अपनी श्रेष्ठतर प्रतिभाओं और आवेशपूर्ण वाग्मिता के कारण हुज्जत ने कई बार अपने दकियानूसी शिया विरोधियों को आश्चर्यचकित कर दिया था। ऐसा व्यक्ति एक ऐसे धर्म के प्रति उदासीन न रह सका जो उसके देशवासियों के बीच इतनी बड़ी दरार उत्पन्न कर रहा था। जिस शिष्य को उसने मामले की जाँच के लिए शीराज़ भेजा, वह बाब के प्रति तुरन्त आकर्षित हो गया। उस संदेशवाहक द्वारा लाये गए क़य्यूमुल अस्मॉ के मात्र एक पृष्ठ का अवलोकन, हुज्जत में इतना परिवर्तन लाने के लिए काफी था कि उन्होंने अपने मूल निवासी नगर में एकत्रित हुए विद्वानों के समक्ष यह घोषित कर दिया कि यदि इस पुस्तक का लेखक, दिन को रात और सूर्य को परछाईं घोषित कर दे तो, वह बिना किसी झिझक के उसके निर्णय का समर्थन करेंगे।

इस नए धर्म की निरन्तर बढ़ती हुई सेना के एक और नए सिपाही, प्रतापशाली मिर्ज़ा अहमद अज़ग़न्दी थे, जो खुरासान के उलेमाओं में सबसे ज्ञानी, सबसे बुद्धिमान और श्रेष्ठतम थे, जिन्होंने उस प्रतिज्ञापित काईम के आगमन की प्रतीक्षा में, उनके प्रकटीकरण के समय और उसके स्वरूप सम्बन्धी करीब बारह हजार कहावतें और भविष्यवाणियाँ संकलित की थीं, इन्हें अपने

सह–शिष्यों के बीच फैलाया था और उन्हें प्रोत्साहित किया था कि वे सभी सभाओं और सम्मेलनों में इन्हें व्यापक रूप से उपयोग में लाएँ।

जहाँ अन्य प्रान्तों में परिस्थितियाँ बिगड़ती जा रहीं थीं, वहीं शीराज़ के लोगों का कठोर विरोध तेज़ी से अपनी चरम सीमा पर पहुँच रहा था। बदला लेने वाला, करूणा–रहित, हुसैन खान अपने बेचैन प्रतिनिधियों की इन रिपोर्टों से भड़क उठा था कि उसके कैदी की शक्ति और ख्याति पल–पल बढ़ती जा रही है। उसने तत्काल कदम उठाने का निर्णय लिया। यह भी कहा जाता है कि उसके साथी, हाजी मिर्ज़ा आक़ासी ने उसे आदेश दिए थे कि राज्य के उस भावी अव्यवस्था फैलाने वाले और इसमें प्रतिष्ठित धर्म को बरबाद करने वाले की चुपचाप हत्या कर दी जाए। राज्यपाल के आदेशानुसार, मुख्य दरोगा, अब्दुल हमीद खान ने मध्य रात्रि में दीवार लांघकर हाजी मिर्ज़ा सैय्यद अली के उस घर में प्रवेश कर लिया जहाँ बाब को नज़रबन्द किया गया था, उसने उन्हें गिरफ्तार किया और उनकी सभी किताबों और दस्तावेज़ों को अधिकार में ले लिया। परन्तु उसी रात एक ऐसी घटना घटी जो नाटकीय रूप से आश्चर्यजनक और निःसन्देह, ईश्वर द्वारा रची गई थी ताकि षड़यंत्रकारियों की योजनाएँ नष्ट हो सकें और उनकी घृणा के पात्र को अपने सेवाकाल का समय बढ़ाने का विराम मिल सके तथा अपने प्रकटीकरण को पूरा करने का अवसर मिल सके। मध्य रात्रि से ही उस शहर में सौ से भी अधिक लोगों को हैजे की एक ऐसी बीमारी ने अपना ग्रास बना लिया था जो अपने ज़हरीलेपन में विनाशकारी थी। इस महामारी का भय प्रत्येक के हृदय में प्रवेश कर चुका था और दर्द तथा शोक की चीखों के बीच, शहर के ग्रसित निवासी उलझन में पलायन कर रहे थे। राज्यपाल के घर के तीन नौकरों की मौत हो चुकी थी। अपने घर पहुँचने पर वह यह जानकर भयभीत हो उठा कि उसका बेटा भी इस महामारी की चपेट में आ चुका है। अपने दुःख में वह बाब के चरणों में गिर गया, उसने उनसे क्षमा की भीख माँगी और उनसे विनती की कि एक पिता के पापों की सज़ा उसके पुत्र को न दें और यह सौगंध खाई कि वह अपना पद त्याग देगा और ऐसा पद दोबारा कभी स्वीकार नहीं करेगा। यह देखकर कि उसकी प्रार्थना स्वीकार की जा चुकी है, उसने राज्यपाल को एक अर्जी

लिखी जिसमें उसने अपने बन्दी की रिहाई की भीख माँगी और इस प्रकार इस भीषण श्राप की जीवघातक दिशा को मोड़ने का निवेदन किया। हुसैन खान ने बन्दी की मुक्ति का निवेदन इस शर्त पर स्वीकार कर लिया कि बाब उस शहर को छोड़कर चले जाएँ।

उस सर्वशक्तिशाली और सर्वद्रष्टा ईश्वर ने बाब को चमत्कारी ढंग से सुरक्षित रखा, जिन्होंने सैय्यद काज़िम ज़नजानी के साथ इस्फहान की ओर प्रस्थान किया (सितम्बर, 1846 ई.)। एक बार फिर तुलनात्मक दृष्टि से कुछ समय के लिए ऐसी शान्ति छा गई, जिसके दौरान उन दिव्य प्रक्रियाओं में – जो आरम्भ हो चुकी थीं – तेज़ी आ गई जिसके कारण लगातार ऐसी घटनाएँ घटीं जिनके परिणामस्वरूप बाब को माहकू और चिहरिक के किलों में कैद कर दिया गया और अन्त में तबरीज़ के बैरक चौक में शहीद कर दिया गया। भविष्य में अपने समक्ष आने वाली मुसीबतों से भलीभाँति अवगत बाब ने, अपने परिवार से अन्तिम बार बिछड़ते समय अपनी पूरी सम्पत्ति अपनी माता और अपनी पत्नी के नाम लिख दी। उन्होंने अपनी पत्नी को उन घटनाओं के रहस्य से अवगत कराया था जो भविष्य में उनके साथ घटने वाली थीं, उनके लिए एक विशेष प्रार्थना प्रकट की और यह आश्वासन दिया कि इसे पढ़ने से उनकी समस्याओं का समाधान होगा और उनके दुःख दूर होंगे। शहर के राज्यपाल मुतामिद्दुद–दौलिह, मनुचिर खान को बाब की ओर से एक पत्र प्राप्त हुआ था जिसमें उन्होंने राज्यपाल से उनके रहने का स्थान निर्धारित करने का अनुरोध किया था। राज्यपाल के निर्देशानुसार इस्फहान में उनके प्रवास के प्रथम चालीस दिन, उस प्रान्त के धर्माधिकारी वर्ग के मुख्य उच्च पदाधिकारी मिर्ज़ा सैय्यद मुहम्मद, इमाम जुम्मे, सुल्तान–उल–उलेमा के मेहमान के रूप में व्यतीत हुए। जहाँ उनका शिष्टाचारपूर्वक स्वागत किया गया, उनकी उपस्थिति ने उस शहर के निवासियों पर ऐसा प्रभाव डाला कि एक बार सार्वजनिक स्नानागार से उनके लौटने के बाद, उस पानी के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी जिसका उपयोग उन्होंने प्रार्थना के लिए किया था। उनकी मनमोहकता में इतना जादू था कि उनके अतिथेय अपने पद की मर्यादा भूलकर व्यक्तिगत रूप से उनकी सेवा किया करते थे। इसी धर्माध्यक्ष के अनुरोध पर, एक रात भोजन के बाद बाब ने सूरा–ए–वल–अस्र पर अपनी

प्रख्यात टिप्पणी प्रकट की। आश्चर्यजनक तेज़ी से लिखते हुए उन्होंने कुछ ही घंटों में, उस सूरा के केवल पहले अक्षर के महत्व की व्याख्या पर कुरान के एक–तिहाई के बराबर श्लोक लिख दिए। यह एक ऐसा अद्भुत कार्य था जिसे अपनी आँखों से देखने वालों की ओर से भक्तियुक्त आश्चर्य का ऐसा आवेग उमड़ा कि उन्होंने उठ कर बाब का दामन चूम लिया। सूरा–ए–वल–अस्र के प्रथम अक्षर पर शेख अहमद अहसाई ने ज़ोर दिया था, और बहाउल्लाह ने *किताब–ए–अक़दस* में इसका उल्लेख किया है।

इस दौरान, इस्फहान के लोगों का अदम्य उत्साह प्रकट रूप से बढ़ता जा रहा था। शहर के कोने–कोने से लोगों की भीड़, इमाम जुमिह के निवास पर जमा होने लगी थी। कुछ जिज्ञासा के कारण आए थे, तो कुछ सत्य की खोज करने और अन्य अपनी बीमारियों का इलाज कराने के लिए बेचैन थे। बुद्धिमान और चतुर मनुचिर खान भी इतनी अद्भुत, इतनी जिज्ञासा उत्पन्न करने वाली विभूती से मिलने के प्रलोभन से बच न सका। उसने, जो मूल रूप से जॉर्जिया का निवासी और जन्म से ईसाई था, सबसे प्रवीण धर्माचारियों के दीप्तिमान सम्मेलन के समक्ष, बाब से अनुरोध किया कि वे मुहम्मद के विशेष ध्येय के सत्य की व्याख्या करें और इसे प्रमाणित करें। बाब ने यह निवेदन तत्काल स्वीकार कर लिया। यद्यपि वहाँ उपस्थित सभी ने इसे अस्वीकार कर दिया था। दो घंटे से भी कम समय में, पचास पृष्ठों में, उन्होंने न केवल इस श्रेष्ठ विषय पर एक ज़ोरदार ताज़ा व्याख्यान प्रकट कर दिया, बल्कि इसे काईम के आगमन और इमाम हुसैन की वापसी के साथ भी जोड़ दिया। यह एक ऐसा व्याख्यान था जिसने मनुचिर खान को उस सम्मेलन के समक्ष, इस्लाम के पैगम्बर में अपनी आस्था घोषित करने और यह स्वीकार करने के लिए बाध्य कर दिया कि इस अभिभूत कर देने वाले व्याख्यान के लेखक को दैवी वरदान प्राप्त है।

शिया इस्लाम का दुर्ग माने जाने वाले इस्फहान शहर के राज्यपाल तथा अन्य लोगों पर एक अशिक्षित युवक द्वारा डाले गए प्रभाव के इन बढ़ते हुए प्रमाणों ने धर्माधिकारियों को भयभीत कर दिया। वे यह जानते थे कि किसी भी प्रकार की खुली शत्रुता दिखाने से उनका उद्देश्य पूरा नहीं हो सकेगा,

इसलिए उन्होंने बाब के बारे में क्रूरतम अफवाहें फैलानी शुरू कर दी। इन अफवाहों के माध्यम से वे शाह के उप मंत्री को घट रही एक ऐसी घटना को रोकने के लिए उकसाना चाहते थे जो अब पल–पल विकट और डरावनी होती जा रही थी। बाब की लोकप्रियता, उनकी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा और उनके देशवासियों द्वारा उन्हें दिया गया सम्मान, अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया था। भावी विनाश की परछाइयाँ उन्हें तेज़ी से घेरने लगीं थीं। इसके बाद तीव्रता के साथ एक के बाद एक ऐसी दुःखद घटनाएँ घटने लगीं जिनकी चरम सीमा उनकी स्वयं की मौत थी और उनके धर्म के प्रत्यक्ष प्रभाव का अंत था।

अहंकारी और धूर्त हाजी मिर्ज़ा आकासी को यह डर था कि कहीं बाब का प्रभाव उसके राजा पर न पड़ जाए और इस तरह उसका अपना सर्वनाश न हो जाए। इसलिए वह पहले से कहीं अधिक उत्तेजित हो गया। इस शंका के कारण कि बाब को गुप्त रूप से मुतामिद की सहानुभूति प्राप्त थी और यह अच्छी तरह जानते हुए कि राजा को मुतामिद पर बहुत भरोसा था, उसने इमाम जुमिह को उसके पावन कर्त्तव्यों का पालन न करने के लिए जमकर फटकार लगाई। साथ ही, उसने अपने कई पत्रों में इस्फहान के उन उलेमाओं पर अपनी विशेष कृपा बरसायी, जिन्हें पहले उसने अनदेखा कर दिया था। उस शहर के धर्मासनों से इस नए धर्म के उस संस्थापक के लिए अपशब्द और निन्दा सुनाई देने लगी जिसकी शिक्षाएँ उनके लिए घृणा करने और डरने का विषय थीं। स्वयं शाह को भड़काया गया कि वह बाब को अपनी राजधानी बुलवाएँ। मनुचिर खान, जिसे बाब को रवाना करने की व्यवस्था करने का आदेश दिया गया था, ने निर्णय लिया कि वह बाब को कुछ दिन अपने निवास पर रखेगा। इस बीच, बाब के इतने व्यापक प्रभाव को देखकर, मुजताहिदों और उलेमाओं ने एक बैठक बुलवायी जिसमें एक ऐसा अपमानजनक दस्तावेज़ जारी किया गया जिसे शहर के धार्मिक नेताओं ने हस्ताक्षरित और मोहरबन्द किया। इस दस्तावेज़ में बाब पर धर्म–विरोधी होने का दोष लगाया गया था और उन्हें मौत की सज़ा सुनाई गई थी। यहाँ तक कि इमाम जुमिह को भी बाध्य किया गया था कि वह इस दस्तावेज़ में अपने हाथों से लिखा हुआ प्रमाण जोड़े कि बाब में सोचने–समझने की शक्ति नहीं है। बड़ी शर्मिन्दगी महसूस करते हुए

और बढ़ते हुए हंगामों को शान्त करने के लिए, मुतामिद ने एक उपाय सोच निकाला जिससे हठ करने वाली बढ़ती हुई जनता को यह विश्वास दिलाया गया कि बाब तेहरान के लिए रवाना हो चुके हैं। इस प्रकार वह राज्यपाल के निजी निवास, इमारत–ए–खुर्शीद के एकांत में बाब को चार माह का विराम देने में सफल रहा। इन्हीं दिनों बाब के अतिथेय ने अपनी इच्छा व्यक्त की कि वह अपनी पूरी सम्पत्ति इस नए धर्म के हितों को बढ़ावा देने के लिए समर्पित करना चाहता है। उनके समकालीन व्यक्तियों के अनुसार, उनकी सम्पत्ति चार करोड़ फ्रैंक से कुछ कम नहीं थी। मुतामिद ने यह इरादा व्यक्त किया कि वह मुहम्मद शाह का धर्म परिवर्तन करना चाहता है और एक बेशर्म एवं चरित्रहीन मंत्री से पीछा छुड़ाने के लिए उन्हें प्रेरित करना चाहता है, साथ ही वह यह भी चाहता है कि अपनी एक बहन से बाब के विवाह के लिए राजा की सहमति प्राप्त करे। परन्तु मुतामिद की आक़स्मिक मौत – जिसकी भविष्यवाणी बाब कर चुके थे , ने आने वाले संकट के मार्ग को और भी सुगम बना दिया। उस क्रूर और अति लोभी उप राज्यपाल गुर्गिन खान ने शाह को उकसाया कि वह दूसरी बार सम्मन जारी करते हुए आदेश दे कि उस बन्दी युवक का भेष बदलकर उसे एक रक्षक दल के साथ तेहरान लाया जाए। शाह के इस लिखित आदेश का उत्तर उस नीच गुर्गिन खान ने बेझिझक दिया, जिसने पूर्व में, अपने चाचा मुतामिद की वसीयत अपने हाथ लग जाने पर उसे नष्ट कर दिया और उनकी सम्पत्ति हड़प ली। परन्तु राजधानी से कुछ तीस मील की दूरी पर, किनार–गिर्द के किले में, एक संदेशवाहक ने सुरक्षा दल के मुखिया मुहम्मद बेग को हाजी मिर्ज़ा आक़ासी का एक लिखित आदेश दिया, जिसमें उसे कुलैन जाने और वहाँ पहुँचकर आगे के निर्देश की प्रतीक्षा करने के निर्देश दिए गए थे। इसके कुछ ही समय बाद, स्वयं शाह द्वारा बाब को सम्बोधित किया गया दिनाँक रबिउस्सानी 1263 (मार्च 19, अप्रैल 17, 1847 ई.), का एक पत्र प्राप्त हुआ और जो, यद्यपि विनम्र शब्दों में लिखा गया था, परन्तु स्पष्ट रूप से व्यक्त कर रहा था कि उस उप मंत्री ने किस हद तक अपने राजा पर अपना विषाक्त प्रभाव डाला हुआ था। मनुचिर खान द्वारा इतने प्रेम से संजोयी हुई योजनाएँ अब पूरी तरह निष्प्रभावी हो चुकी थीं। इसी गाँव के पास ही अज़रबैजान से उत्तर पश्चिमी कोने में स्थित माहकू का किला, जिसके निवासियों ने एक लम्बे समय

तक इस उप मंत्री के संरक्षण का लाभ उठाया था, वह स्थान था जो मुहम्मद शाह ने, अपने विश्वासघाती मंत्री की सलाह पर बाब की कैद के लिए निर्धारित किया था। उस उजाड़ और बंजर परिवेश में उनका साथ देने के लिए, उनके एक अनुयायी साथी, एक सेवक के अतिरिक्त अन्य किसी को भी रहने की अनुमति नहीं दी गई थी। उस शक्तिशाली और कपटी मंत्री ने, राजा का ध्यान खुरासान के हाल ही के गदर और किरमान के विद्रोह पर केन्द्रित करने की आवश्यकता का बहाना बनाकर उस योजना को विफल करने में सफलता प्राप्त कर ली, जो यदि निष्पादित हो जाती तो इससे उसके अपने भाग्य सहित, उसकी सरकार, उसके शासक और उसकी जनता के भाग्य पर गम्भीरतम प्रभाव पड़ता।

अज़रबैजान में बाब का कारावास

अज़रबैजान के पहाड़ों में बाब के निर्वासन के तीन वर्ष का समय, उनके छः वर्ष के धर्मकाल का सबसे दुःखद, सबसे नाटकीय और एक प्रकार से, सबसे अर्थपूर्ण समय था। इसमें, माहकू के किले में उनका लगातार नौ माह का कारावास और चिहरिक के दुर्ग का वह कारावास शामिल था, जिसमें केवल तब एक रूकावट आयी जब उन्हें एक छोटी किन्तु स्मरणीय अवधि के लिए तबरीज ले जाया गया। बाब के सम्पूर्ण धर्मकाल पर, प्रभुधर्म के दो सबसे शक्तिशाली शत्रुओं की बढ़ती हुई शत्रुता छायी रही, जिनमें एक था मुहम्मद शाह का उपमंत्री हाजी मिर्ज़ा अक़ासी और दूसरा था नसीरूद्दीन शाह का उपमंत्री अमीर निज़ाम। इन घटनाओं की तुलना, बहाउल्लाह के ध्येय के सबसे संकटकालीन चरण से की जा सकती है जब एड्रियानोपल में उनके निर्वासन के दौरान उस अत्याचारी सुल्तान अब्दुल अज़ीज़, उसके मंत्री अली पाशा और फुआद पाशा से उनका सामना हुआ। इन घटनाओं की तुलना, पावन भूमि में अब्दुल बहा के धर्मकाल के सबसे अंधकारपूर्ण दिनों से भी की जा सकती है जब वे पावन भूमि में उस अत्याचारी अब्दुल हमीद और उतने ही अत्याचारी जमाल पाशा के क्रूर शासन के अधीन थे। शीराज़, बाब की ऐतिहासिक उद्घोषणा का यादगार दृश्य पटल बना रहा; यद्यपि कम समय के लिए, फिर भी इस्फहान ने उन्हें अपेक्षाकृत शान्ति और सुरक्षा की शरणस्थली प्रदान की थी; जबकि अज़रबैजान उनकी वेदना और शहादत का रंगमंच बनने वाला था। उनके जीवन के ये अन्तिम वर्ष, इतिहास में एक ऐसे समय के रूप में अंकित किए जायेंगे जब यह नया युगधर्म अपनी ऊँचाईयों पर पहुँचा, जब इसके

संस्थापक के दावे को पूर्ण रूप से सार्वजनिक तौर पर घोषित किया गया, लेखक की संविदा अटल रूप से स्थापित हुई, स्वतंत्रता की घोषणा की गई और इसके विधानों की रचना की गई जिससे इसके शूरवीरों के पराक्रम अमिट महिमा में चमक उठे। यही वे अत्यन्त नाटकीय और भाग्यनिर्णायक वर्ष थे जब बाब के शिष्यों ने उनके महान स्थान के आशय को पूरी तरह समझा और बाब ने अज़रबैजान की राजधानी में राजसिंहासन के उत्तराधिकारी के समक्ष अपने महान स्थान की औपचारिक घोषणा की; यही वह समय था जब बाब द्वारा फारसी *बयान* प्रकट की गई, जो उनके द्वारा निर्धारित विधानों का कोष है; इसी अवधि में *"वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा"* के युगधर्म के समय और स्वरूप को सुस्पष्ट एवं असंदिग्ध रूप से निर्धारित किया गया; इन्ही दिनों में बदश्त के सम्मेलन में पुरानी व्यवस्था के निरस्तिकरण की घोषणा की गई; और यही वह समय था जब माज़िन्दरान, नयरीज़ और ज़नजान में विरोध की भयंकर ज्वालाएँ भड़क उठी थीं।

फिर भी उस मूर्ख, अंधे एवं अदूरदर्शी हाजी मिर्ज़ा अक़ासी को यह भ्रम था कि राजधानी में शाह से व्यक्तिगत रूप से मिलने की बाब की योजना को निष्फल करके और उन्हें देश के एक दूरस्थ कोने में कैद करवा कर, उसने इस आंदोलन के आरम्भ में ही इसका अन्त कर दिया है और शीघ्र ही वह इसके संस्थापक पर विजय प्राप्त कर लेगा। उसने यह कल्पना भी नहीं की थी कि जो एकाकीपन वह अपने कैदी पर थोप रहा है, वही, एक ऐसी व्यवस्था विकसित करने में उनकी सहायता करेगा जो उनके धर्म की आत्मा को मूर्त रूप देगा, और उन्हें वह अवसर प्रदान करेगा जिससे वे अपने धर्म को विभाजन और विच्छेद से सुरक्षित कर सकेंगे तथा औपचारिक एवं सार्वभौमिक रूप से इसकी उद्घोषणा कर सकेंगे। उसने यह कल्पना भी नहीं की थी कि यही एकाकीपन उसके कैदी के उत्तेजित शिष्यों और साथियों को एक पुराने धर्म की बेड़ियाँ तोड़ने और ऐसी घटनाओं को अंजाम देने की प्रेरणा देगा जिनके कारण वे ऐसी वीरता, ऐसा साहस और ऐसा आत्मत्याग प्रदर्शित करेंगे जिसकी बराबरी उनके देश के इतिहास में अब तक नहीं पाई जाती। उसने यह कल्पना भी नहीं की थी कि अपने इसी कृत्य के कारण, वह इस्लाम के पैगम्बर के

सम्बन्ध में उस प्रमाणित कहावत के पूरे होने का माध्यम बनेगा जिसमें अज़रबैजान में होने वाली उस अटल घटना का उल्लेख किया गया है। ईश्वर के दण्ड देने वाले कोप की पहली पछाड़ से भयभीत होकर काँपते हुए पलायन करने वाले शीराज़ के राज्यपाल के उदाहरण से सबक न लेते हुए, मुहम्मद शाह का यह उपमंत्री, अपने ही द्वारा जारी किए गए आदेशों के कारण, स्वयं के लिए कठोर और निश्चित रूप से आने वाली निराशा संग्रह कर रहा था और अपने ही अन्तिम पतन का मार्ग तैयार कर रहा था।

माहकू के किले के रक्षक अली खान को जारी किए गए उसके आदेश कठोर और स्पष्ट थे। माहकू की ओर अपनी यात्रा के दौरान, बाब ने कुछ दिन तबरीज़ में बिताए। ये वैसे दिन थे जो इतनी उत्तेजना से भरे थे कि कुछ लोगों को छोड़कर, न तो आम लोगों को, न ही उनके अनुयायियों को उनसे मिलने की अनुमति दी गई थी, जब रक्षक दल के साथ उन्हें शहर की सड़कों पर से ले जाया जा रहा था, तब चारों ओर से "अल्लाह–ओ–अकबर" की पुकार गूँज उठी। सचमुच, यह शोर इतना बढ़ गया कि शहर के ढिंढोरियों को आदेश दिया गया कि वह लोगों को चेतावनी दें कि जो भी बाब के निकट आने का प्रयास करेगा, उसकी पूरी सम्पत्ति छीन ली जायेगी और उसे कैद में डाल दिया जायेगा। माहकू, जिसे उन्होंने जबाल–ए–बसीत (खुला पहाड़) का नाम दिया था, पहुँचने पर, पहले दो सप्ताहों तक सिवाय उनके लिपिक सैय्यद हुसैन और उनके भाई के, अन्य किसी को उनसे नहीं मिलने दिया गया। उनकी अवस्था इतनी पीड़ादायक थी कि फारसी बयान में, उन्होंने स्वयं कहा है कि रात को उनके पास एक प्रज्वलित दीपक भी नहीं हुआ करता था और धूप में सिंकी हुई ईंटों से बने उनके एकान्त कक्ष में एक द्वार भी नहीं था। मुहम्मद शाह को अपनी एक पाती में, उन्होंने शिकायत की कि किले के निवासी केवल दो पहरेदार और चार कुत्ते थे।

बाब को ऑटोमन और रूस की सीमाओं पर एक दूरस्थ और खतरनाक रूप से स्थित पहाड़ की ऊँचाईयों पर, लोगों से दूर, चार मीनारों वाले किले की दीवारों के बीच कैद कर, अपने परिवारजनों, बंधु–बांधवों और शिष्यों से अलग कर दिया गया था। वे एक ऐसे कट्टर और उपद्रवी समुदाय के निकट

रह रहे थे जो जाति, परम्परा, भाषा और सम्प्रदाय से ईरान के अधिकांश लोगों से भिन्न थे और एक ऐसे प्रांत के लोगों के पहरे में थे, जो उपमंत्री का जन्म स्थान होने के कारण, उसके प्रशासन की ओर से विशेष उपहारों का पात्र था। शत्रुओं की दृष्टि में, माहकू के इस युवा कैदी का दुर्भाग्य था कि वह अपनी खिलती हुई युवावस्था को मुरझाते हुए और अपनी आशाओं को निकट भविष्य में पूरी तरह चूर–चूर होते देखे। परन्तु, बाब के यही शत्रु, शीघ्र ही यह जान गए कि उन्होंने अपने कैदी को और उनको कितना गलत समझा था, जिन पर वे अपने उपहार बरसाते थे। वे निरंकुश, घमंडी और मुँहजोर लोग बाब की कोमलता से धीरे–धीरे शान्त हो गए, उनकी शालीनता से अनुशासित हो गए, उनके परामर्शों से उन्नत बन गए और उनके विवेकशील व्यवहार से शिक्षित हो गए। वे उनके प्रति अपने प्रेम से इतने भर गए कि उस कठोर अली खान के समझाने–बुझाने और तेहरान से लगातार मिलने वाली अनुशासनात्मक कार्यवाही की धमकियों के बावजूद, हर सुबह उनका पहला कार्य एक ऐसे स्थान की तलाश करना होता था जहाँ से वे बाब के चेहरे की एक झलक प्राप्त कर सकें और दूर से ही सही, अपने दैनिक जीवन के लिए उनके आशीर्वादों की भीख माँग सकें। आपसी विवादों की स्थिति में वे तुरन्त किले तक पैदल जाते, और बाब के निवास–स्थान की ओर देखते हुए उनका नाम लेते हुए एक–दूसरे से सच बोलने का अनुरोध करते। स्वयं अली खान भी, एक अद्‌भुत दिव्य स्वप्न के प्रभाव के कारण, इतना संताप महसूस करने लगा कि वह अपने पहले के व्यवहार के प्रायश्चित के रूप में अपने अनुशासन की कठोरता को कम करने के लिए बाध्य हो गया। उसकी विनम्रता इतनी बढ़ गई कि वह उत्सुक और धर्मनिष्ठ तीर्थयात्रियों के एक बढ़ते हुए प्रवाह को इस किले में प्रवेश करने की अनुमति देने लगा। इन तीर्थयात्रियों में एक थे निडर और परिश्रमी मुल्ला हुसैन, जिन्होंने पूर्वी फारस में स्थित मशहद से लेकर फारस के पश्चिमी छोर में स्थित माहकू तक का पूरा रास्ता पैदल ही तय किया और इतनी कठिन यात्रा के बाद, नवरुज़ (सन् 1848 ई.) का पर्व अपने परम प्रिय के साथ मनाया।

अली खान पर निगरानी रखने के लिए नियुक्त किए गए गुप्त एजेंटों ने हाजी मिर्ज़ा अक़ासी को बदलती हुई परिस्थितियों की खबर दी, जिस पर

उसने तुरन्त बाब को (10 अप्रैल, 1848 ई. के आसपास) चिहरिक के किले में स्थानान्तरित करने का निर्णय लिया, जिसे बाब ने जबाल–ए–शदीद (दुःसह पर्वत) का नाम दिया था। वहाँ उन्हें याह्या खान, जो मुहम्मद शाह का साला था, की निगरानी में सौंपा गया। यद्यपि आरम्भ में याह्या खान ने अत्यन्त सख्ती से काम लिया, परन्तु अन्त में अपने कैदी के आकर्षण के सामने उसे भी घुटने टेकने ही पड़े। शियाओं के प्रति माहकू के निवासियों की घृणा से भी अधिक नफरत करने वाले चिहरिक के निवासी भी इस कैदी के व्यापक प्रभाव से बच न सके। वे भी प्रत्येक सुबह, अपने–अपने कार्यों पर जाने से पहले, किले के पास आकर इसके पावन निवासी की आराधना में साष्टांग प्रणाम करते हुए नज़र आते थे। एक यूरोपीय प्रत्यक्षदर्शी गवाह ने लिखा है *"लोगों का संगम इतना बड़ा था कि बाब को सुनने वालों की भीड़ के लिए किले का आँगन छोटा पड़ता था, इसलिए अधिकांश लोग गलियों में ही खड़े रहते और ध्यानमग्न होकर नई कुरान के श्लोकों को सुना करते।"*

वास्तव में, चिहरिक में होने वाली उथल–पुथल के सामने माहकू में हुई उथल–पुथल की घटनाओं के दृश्य फीके पड़ गए। विशिष्ट योग्यताओं वाले सैय्यद, प्रतिष्ठावान उलेमा और यहाँ तक कि सरकारी अधिकारी भी इस कैदी के धर्म को निर्बाध और तेज़ी से अपना रहे थे। 'दय्यान' की उपाधि से सम्मानित उच्च श्रेणी का साहित्यिक सम्मान प्राप्त करने वाले उत्साही और प्रख्यात अधिकारी मिर्ज़ा असदुल्लाह, जिन्हें बाब ने *"निगूढ़ और सुरक्षित ज्ञान"* से विभूषित किया था और *"एक सत्य ईश्वर की अमानत के संग्रहकर्ता,"* के रूप में जिनकी प्रशंसा की थी, के धर्म परिवर्तन के बाद तथा भारत के एक दरवेश, जो कभी एक नवाब हुआ करते थे और जिन्हें बाब ने एक दैवी स्वप्न में अपनी दौलत और पद त्यागकर पैदल ही उनसे मिलने की शीघ्रता करने के आदेश दिए थे, उनके आगमन के बाद, परिस्थितियाँ अपनी चरम सीमा पर पहुँच गईं। इन चौंका देने वाली घटनाओं के समाचार तबरीज़ तक पहुँच गए, और वहाँ से तेहरान पहुँचाये गए। इन समाचारों ने हाजी मिर्ज़ा अक़ासी को एक बार फिर हस्तक्षेप करने पर बाध्य कर दिया। जिस प्रकार राज्य के सक्षम अधिकारी इस नए धर्म में शामिल हो रहे थे, उससे भयभीत होकर मंत्री के घनिष्ठ मित्र,

दय्यान के पिता, पहले ही अपना भय उसके सामने व्यक्त कर चुके थे। इस बढ़ती हुई उत्तेजना को शान्त करने के लिए, बाब को तबरीज़ बुलाया गया। अजरबैजान के लोगों के उत्साह से भयभीत होकर, उन लोगों ने, अपना मार्ग बदल देने का निर्णय लिया, जिनकी सुरक्षा में बाब को रखा गया था और उन्होंने खुई के स्थान पर उरूमियेह नगर से जाने का निर्णय लिया। उस नगर में पहुँचने के बाद, राजकुमार मलिक कासिम मिर्ज़ा ने उनका शिष्टाचारपूर्ण स्वागत किया और एक शुक्रवार के दिन जब घोड़े पर सवार होकर, बाब एक सार्वजनिक हमाम के लिए रवाना हुए, तो वह उनके साथ पैदल जाता हुआ दिखाई दिया। इस दौरान राजकुमार के सुरक्षाकर्मी, ऐसे लोगों की भीड़ पर नियंत्रण रखने का प्रयास कर रहे थे, जो अपने उमड़ते हुए उत्साह के कारण, इतने महान कैदी की एक झलक प्राप्त करने की कोशिश में लगे थे। प्रचंड उत्तेजना में डूबा हुआ तबरीज़ शहर भी आनन्दित होकर अपनी बारी में उनके आगमन की खुशी में जयजयकार करने लगा। भावनाओं का जोश इतना था कि बाब को नगर के द्वार के बाहर एक स्थान पर रखा गया। परन्तु, इससे लोगों की उमड़ती हुई भावनाओं को शान्त न किया जा सका। लोगों को दी गई चेतावनियों और बाधाओं के कारण, परिस्थिति, जो पहले से ही नाजुक थी, अब और भी गम्भीर हो गई। ठीक इसी समय उस उपमंत्री ने तबरीज के धर्माधिकारियों की एक तात्कालिक सभा बुलवाने का अपना ऐतिहासिक आदेश जारी किया ताकि इतने प्रभावशाली उपायों पर विचार किया जा सके जो ऐसी भीषण ज्वाला की लपटों को हमेशा के लिए बुझा दें।

इस निर्णायक घटना के कारण होने वाली बाब की जाँच–पड़ताल से जुड़ी परिस्थितियों को, उनके सेवाकाल की एक प्रमुख नाटकीय घटना समझा जा सकता है। इस सभा का निश्चित उद्देश्य था इस कैदी को दोषी ठहराना और ऐसे कदम उठाने पर विचार करना, जो विधर्मी समझे जाने वाले बाब के धर्म के अस्तित्व को मिटा दे। लेकिन उन लोगों के इस निर्णय ने बाब को उनके ध्येय का वह सर्वोत्तम अवसर प्रदान किया, जिसके माध्यम से वे सार्वजनिक और औपचारिक रूप से तथा बिना किसी बाधा के, अपने प्रकटीकरण के दावों को दृढ़तापूर्वक व्यक्त कर पाए। राजसिंहासन के उत्तराधिकारी,

अज़रबैजान के राज्यपाल नसीरूद्दीन मिर्ज़ा के शासकीय निवास पर उसकी उपस्थिति में, राजकुमार के शिक्षक, निज़ाम–उल–उलेमा–हाजी मुल्ला महमूद की अध्यक्षता में और वहाँ एकत्रित तबरीज़ के धर्माधिकारियों, शेखी समुदाय के नेताओं, शेखुल इस्लाम और इमाम जुमीह के समक्ष, बाब, वली–अहद (राजसिंहासन के उत्तराधिकारी) के लिए सुरक्षित रखे गए आसन पर विराजमान हो गए। उन्होंने सभा के अध्यक्ष द्वारा किए गए प्रश्न के जवाब में, गूँजते हुए स्वर में अपना वह प्रख्यात उत्तर दिया। उन्होंने घोषणा की, *"मैं ही हूँ, मैं ही हूँ, मैं ही हूँ वह प्रतिज्ञापित ! मैं ही हूँ वह जिसका नाम तुम एक हजार वर्षों से लेते आए हो, जिसके नाम पर तुम उठ खड़े होते हो, जिसका आगमन देखने के लिए तुम तरस रहे हो, जिसके प्रकटीकरण की घड़ी को नज़दीक लाने के लिए तुमने ईश्वर से भीख माँगी है। वस्तुतः, मैं कहता हूँ, पूरब और पश्चिम के लोगों के लिए यह अनिवार्य है कि वे मेरी आज्ञाओं का पालन करें और मेरी अधीनता में प्रतिज्ञाबद्ध हों।"*

वहाँ उपस्थित सभी विस्मित रह गए। उन्होंने, उलझन भरे सन्नाटे में कुछ देर अपना सिर झुका लिया। इसके बाद, आँखों से दुर्बल, सफेद दाढ़ी वाले उस विश्वासघाती मुहम्मद–इ–ममक़ानी ने, धृष्टता से बाब को शैतान का एक भ्रष्ट और घृणित अनुयायी कहा; जिस पर उस निडर युवा ने उत्तर दिया कि अब भी उनका वही दावा है जो वे पहले कर चुके हैं। इसके बाद, निज़ाम–उल–उलेमा द्वारा उनसे पूछे गए प्रश्न के उत्तर में बाब ने इस बात की पुष्टि की कि उनके ध्येय के सबसे निर्विवाद प्रमाण उनके शब्द हैं और अपनी पुष्टि के सत्य के प्रमाणस्वरूप उन्होंने कुरान से श्लोक उद्धृत किए और यह दावा किया कि दो दिन और दो रातों की अवधि में वे क़ुरान के बराबर श्लोक प्रकट कर सकते हैं। उनके द्वारा व्याकरण के नियमों का उल्लंघन करने की आलोचना के उत्तर में, उन्होंने समर्थक प्रमाण के रूप में क़ुरान के कुछ उद्धरणों का उदाहरण दिया और वहाँ उपस्थित व्यक्तियों में से किसी एक की छिछोरी और असंबद्ध टिप्पणी से मुँह मोड़ते हुए, सभा को संक्षेप में ही भंग करते हुए, दृढ़ता और भव्यता के साथ वे उस कक्ष से बाहर चले गए। इसके बाद वह सभा तितर–बितर हो गई। उलझन में पड़े हुए सभा के अत्यन्त

अप्रसन्न और अवमानित सदस्य अपना उद्देश्य पूरा न होने के कारण आपस में विभाजित हो गए। अपने कैदी को हतोत्साहित करने और बाब को अपना ध्येय त्यागने के लिए उकसाने से भी दूर, उस सभा का और कोई परिणाम नहीं निकला सिवाय इसके कि लम्बी–चौड़ी बहस और चर्चा के बाद यह निर्णय लिया गया कि शहर के उस निर्दयी और लोभी शेख–उल–इस्लाम, मिर्ज़ा अली अस्कर के हाथों और उसके प्रार्थना–गृह में बाब के पैरों के तलवों पर बेंत लगायी जाए। अपने षडयंत्रों में विफल होने वाला हाजी मिर्ज़ा अक़ासी, बाब को पुनः चिहरिक भिजवाने के आदेश जारी करने के लिए बाध्य हो गया।

इतने महत्वपूर्ण प्रकटीकरण के संस्थापक को अज़रबैजान के पहाड़ों में तीन वर्ष कैद की सज़ा सुना देने के मूर्खतापूर्ण कृत्य के कई परिणामों में एक था बाब के दैवी ध्येय की नाटकीय, अप्रतिबंधित और औपचारिक उद्घोषणा। प्रांत के एक दूरस्थ कोने में, शीराज़, इस्फहान और तेहरान के तूफानी केन्द्रों से दूर, कैद की इस अवधि के दौरान, अपनी सबसे यादगार रचना के साथ–साथ अन्य कई सहायक रचनाओं का कार्य शुरू करने के लिए बाब को आवश्यक विश्राम मिल गया, जिसके कारण उनकी अल्पायु में किन्तु महत्वपूर्ण विधान की पूरी विविधता प्रकट हुई और इतने छोटे से धर्मकाल में बाब की लेखनी पूरी ताकत के साथ उभर कर सामने आई। उनकी कलम से प्रवाहित होने वाले पावन लेखों की प्रचुरता और उनमें समाहित विषयों की विविधता के कारण, बाब का प्रकटीकरण, पूर्व के किसी भी धर्म के इतिहास की तुलना में पूर्णतया अद्वितीय है। माहकू की कैद के दौरान वे स्वयं इसकी पुष्टि करते हैं कि अत्यन्त विविधता वाले विषयों को समाए हुए, अब तक प्रकट किए गए उनके लेख, संख्या में कुल मिलाकर पाँच लाख श्लोकों से भी अधिक थे। *किताब–ए–ईक़ान* में बहाउल्लाह प्रमाणित करते हैं कि, *"दिव्य कृपा के इस बादल से बरसने वाले श्लोक, इतने प्रचुर रहे हैं कि अब तक कोई भी उनकी संख्या का अनुमान नहीं लगा सका है। अब अनेकों ग्रंथ उपलब्ध हैं। कितने ही अब भी हमारी पहुँच से बाहर हैं! कितने ही लूट लिए गए हैं और शत्रुओं के हाथ लग चुके हैं और जिनका भाग्य कोई नहीं जानता!"* अपने धर्म के सुगठन और इसकी गतिविधियों के निर्देशन के लिए इन विस्तृत लेखों में प्रस्तुत

किए गए विषयों की विविधता भी कुछ कम दिलचस्प नहीं हैं जैसे कि प्रार्थनाएँ, धार्मिक उपदेश, व्याख्याएँ, तीर्थ यात्रा की पातियाँ, सैद्धांन्तिक लेख, सत्योपदेश, कुरान और विभिन्न कहावतों पर टिप्पणियाँ, प्रदेश के सर्वोच्च धार्मिक पदाधिकारियों को सम्बोधित धर्मपत्र तथा विधान और नियम।

अपने प्रारम्भिक धर्मकाल में ही बाब शीराज़ में वह प्रकट कर चुके थे जिसे बहाउल्लाह ने बाबी विधान की *"प्रथम, महानतम और सर्वशक्तिशाली पुस्तक"* कहा था। सूरा–ए–यूसुफ पर की गई इस प्रख्यात टिप्पणी का शीर्षक क़य्यूमुल–अस्मॉ था। इसका मुख्य उद्देश्य वह बताना था जो आने वाले विधान में उस सच्चे यूसुफ (बहाउल्लाह) को एक ऐसे व्यक्ति के हाथों सहन करना पड़ेगा जो उनका मुख्य शत्रु होने के साथ–साथ, खून के रिश्ते से उनका भाई भी था। इस पुस्तक में नौ हजार तीन सौ से भी अधिक श्लोक और एक सौ ग्यारह अध्याय थे। इसका प्रत्येक अध्याय उपरोक्त सूरा के एक श्लोक पर की गई टिप्पणी था। यह पुस्तक *"राजाओं और राजाओं के पुत्रों के सम्मेलन"* को सम्बोधित किए गए बाब के आह्वानों और भयानक चेतावनियों से शुरू होती है; मुहम्मद शाह की बरबादी की भविष्यवाणी करती है; उसके उपमंत्री, हाजी मिर्ज़ा अक़ासी को उसका पद त्याग देने का आदेश देती है; सम्पूर्ण मुसलमान धर्माधिकारी वर्ग को फटकार लगाती है; शिया समुदाय के सदस्यों को विशेष रूप से चेतावनी देती है; *"ईश्वर के अंश", "सर्वमहान स्वामी",* बहाउल्लाह के गुणों की प्रशंसा करती है और उनके आगमन की आशा करती है और स्पष्ट शब्दों में बाबी प्रकटीकरण की स्वतंत्रता और सार्वभौमिकता की घोषणा करती है, इसके महत्व को प्रकट करती है और इसके संस्थापक की अटल विजय की पुष्टि करती है। इसके अतिरिक्त, यह *"पश्चिम के लोगों"* को *"अपने नगरों से बाहर निकलकर ईश्वर के धर्म की सहायता करने"* के निर्देश देती है; धरती के लोगों को *"ईश्वर के कठोर और घोरतम दण्ड"* की चेतावनी देती है; पूरे इस्लाम जगत को *"उस महानतम अग्नि"* का भय दिखलाती है यदि वे इस नए विधान से मुँह फेर लेते हैं; इसके संस्थापक की शहादत की भविष्यवाणी करती है; उस *"तेज़ लाल रंग की मणिक नौका में प्रवेश करने वाले"* बहा के लोगों के लिए निर्धारित किए गए उच्च स्थान की प्रशंसा करती है; बाबी विधान के गगन के कुछ महानतम नक्षत्रों के बुझ जाने और

पूरी तरह मिट जाने की भविष्यवाणी करती है और इमामत हड़पने वाले उन लोगों के लिए, जिन्होंने यूफ्रेट्स की भूमि पर हुसैन (इमाम हुसैन) के साथ युद्ध किया था के लिए,*"अपनी वापसी के दिवस"* में और*"उस आने वाले लोक में"* दुःखदायी संताप की भविष्यवाणी करती है।

यह वही पुस्तक थी जिसे बाबियों ने बाब के लगभग पूरे धर्मकाल के दौरान बयान को लोगों की क़ुरान मान लिया था। इस पुस्तक का पहला और सबसे चुनौतीपूर्ण अध्याय, इसके लेखक की घोषणा वाली रात मुल्ला हुसैन की उपस्थिति में प्रकट किया गया था; इसके कुछ पृष्ठ, मुल्ला हुसैन ने एक ऐसे प्रकटीकरण के पहले प्रमाण के रूप में बहाउल्लाह तक पहुँचाए थे, जिसे बहाउल्लाह ने उसी क्षण उत्साहपूर्वक स्वीकार कर लिया था; इसके पूरे मूलग्रंथ का फारसी अनुवाद उस प्रतिभासम्पन्न और गुणी ताहिरा द्वारा किया गया था; इसके उद्धरणों ने हुसैन खान की शत्रुता को भड़का दिया था और शीराज़ में अत्याचार के प्रथम उफान को जन्म दिया था; इसके एकमात्र पृष्ठ ने हुज्जत की कल्पना को वश में कर लिया था और उसकी आत्मा को मोह लिया था इसकी विषय–वस्तु ने शेख तबरसी के किले के निडर रक्षकों और नैरीज़ तथा ज़नजान के शूरवीरों के अन्दर ज्वाला भड़का दी थी।

इतने उत्कृष्ट और इतने व्यापक प्रभाव वाले ग्रंथ के बाद जिन लेखों का प्रकटीकरण हुआ, वे थे – मुहम्मद शाह को लिखी गई बाब की प्रथम पाती, सुल्तान अब्दुल अज़ीज और बगदाद के वली (राजकुमार) नजीब पाशा को सम्बोधित पातियाँ, मिर्ज़ा मुहित किरमानी के प्रश्नों के उत्तर में मक्का और मदीना के बीच प्रकट की गई साहिफि–ए–बैनुल–हारामाईन, मक्का के शेरिफ को सम्बोधित धर्मपत्र, सात सौ श्लोकों वाली किताब–उर–रुह, अज़ान की विधि में परिवर्तन करने के आदेश देने वाली खसॉइल–इ–साबिह, मुल्ला मुहम्मद तक़ी–ए–हराती द्वारा अनुवादित रिसाइल–इ–फुरू–इ–अदलिए, वाहिद की आत्मा में इतना परिवर्तन लाने वाली सूरा–ए–कॉसर पर की गई टिप्पणी; इस्फहान के इमाम जुमिह के निवास पर प्रकट की गई सूरा–ए–वलअस्र पर टिप्पणी, मनुचिर खान के अनुरोध पर मुहम्मद के विशेष ध्येय पर लिखा गया लेख, इस नए प्रकटीकरण के सत्य को प्रस्तुत करने, मुहम्मद शाह के संदेहों

को दूर करने हेतु उससे भेंट करने का अनुरोध करने के लिए उसे सम्बोधित दूसरी पाती और सियाह दिहान गांव से क़ाजवीन के उलेमाओं और हाज़ी मिर्ज़ा अकासी को भेजी गई पातियाँ जिनमें यह पूछा गया है कि उन्होंने अपना निर्णय यूँ अचानक क्यों बदल दिया।

परन्तु बाब के प्रभावी मस्तिष्क से उत्पन्न होने वाले लेखों का निरन्तर प्रवाह, माहकू और चिहरिक में उनकी कैद की अवधि के लिए जैसे रुका हुआ था। स्वयं बहाउल्लाह ने कहा है कि इसी अवधि में वे असंख्य धर्मपत्र लिखे गए होंगे जो, फारस के साथ–साथ नज़फ और करबला में निवास करने वाले धर्मगुरूओं को विशेष रूप से सम्बोधित थे। इन धर्मपत्रों में बाब ने प्रत्येक धर्मगुरू द्वारा की गई गलतियों का उल्लेख किया है। उन नौ माहों की कैद के दौरान बाब ने अपने लिपिक को जो श्लोक लिखवाए थे उनका प्रतिलेखन करने वाले शेख हसन जुनूज़ी की गवाही के अनुसार, बाब ने माहकू की कैद में ही सम्पूर्ण क़ुरान पर कुल नौ टिप्पणियाँ प्रकट की थीं। कोई नहीं जानता कि इन टिप्पणियों का क्या हुआ, फिर भी, बाब ने स्वयं इस बात की पुष्टि की है कि इनमें से एक तो, कुछ अर्थों में 'क़य्यूमुल अस्मॉ' जैसी प्रख्यात पुस्तक से भी अधिक महान थी।

उसी किले की दीवारों के बीच, बयान (प्रकटीकरण) नामक पुस्तक प्रकट की गई जो इस नए प्रकटीकरण के विधानों और आदेशों का एक बड़ा कोष थी और बाब के अधिकांश सन्दर्भों और श्रद्धाँजलियों के साथ–साथ *"वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा"* के सम्बन्ध में चेतावनी थी। बाबी विधान के संस्थापक के सिद्धान्त सम्बन्धी लेखों में यह पुस्तक अद्वितीय है; इसमें नौ वाहिद हैं जिनमें से प्रत्येक में उन्नीस अध्याय हैं, सिवाय एक अन्तिम वाहिद के, जिसमें केवल दस अध्याय हैं; इसे छोटी और कम प्रभावशाली अरबी बयान के साथ नहीं मिलाना चाहिए, जो इसी अवधि में प्रकट हुई थी। यह पुस्तक हज़रत मुहम्मद की भविष्यवाणी को पूरा करती है कि "बनी हाशीम का एक युवा.....एक नई पुस्तक प्रकट करेगा और एक नए विधान की घोषणा करेगा; इस पुस्तक को उस मिलावट और विकृति से पूरी तरह सुरक्षित रखा गया है, जो बाब के तुलनात्मक दृष्टि से कम महत्व के बहुत से लेखों का भाग्य रहा।

इस पुस्तक में लगभग आठ हजार श्लोक हैं और बाबी साहित्य में इसका प्रमुख स्थान है। इसे केवल भविष्य की पीढ़ियों के स्थायी मार्गदर्शन के उद्देश्य से दिए गए नियमों और आदेशों की संहिता समझने की अपेक्षा, मुख्यतः उस प्रतिज्ञापित की स्तुति समझना चाहिए। इस पुस्तक ने, एक ही बार में, क़ुरान में दिए गए प्रार्थना, उपवास, विवाह, तलाक और उत्तराधिकार से सम्बन्धित विधानों और विधियों को रद्द कर दिया और पैगम्बर के रूप में मुहम्मद के ध्येय की अखण्डता की वैसे ही पुष्टि की, जैसे उनसे पहले इस्लाम के पैगम्बर ने बाइबिल के विधानों को रद्द कर दिया था, फिर भी ईसा मसीह के धर्म के दिव्य स्रोत को स्वीकार किया था। इस पुस्तक में स्वर्ग, नरक, मृत्यु, पुनरुत्थान, वापसी, तुला, समय, अन्तिम न्याय, जैसे कुछ शब्दों के अर्थों की उत्कृष्ट व्याख्या की गई है जो पूर्व के विधानों के पावन ग्रंथों में बार–बार आते हैं। अपने नियम और कानूनों की रचना में यह पुस्तक कठोर है, अपने उन सिद्धान्तों में क्रान्तिकारी है, जो धर्माधिकारियों और अन्य लोगों को उनकी युगों लम्बी निद्रा से जगाने के लिए रची गई थी। अप्रचलित और भ्रष्ट संस्थाओं को तुरन्त समाप्त करने के लिए, इस पुस्तक ने उस चिर प्रतीक्षित दिवस के आगमन की घोषणा कर दी, वह दिवस, जब *"वह आह्वान करने वाला एक कठोर कार्य के लिए आह्वान करेगा"*, जब वह, अपने पहले का सब कुछ उसी प्रकार बदल देगा जिस प्रकार ईश्वर के धर्मप्रचारक ने अपने पहले के लोगों के तौर–तरीकों को बदल दिया था।

इस सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि इस पुस्तक के तीसरे वाहिद में एक उद्धरण है, जिसमें उस प्रतिज्ञापित अवतार के नाम का स्पष्ट उल्लेख किया गया, साथ ही उसके प्रकटीकरण के साथ जुड़ी हुई उस व्यवस्था का भी स्पष्ट उल्लेख है, जो भविष्य में स्थापित होगी। इस उद्धरण को बाब के लेखों में पाए गए सबसे महत्वपूर्ण वक्तव्यों में एक माना जाना चाहिए। बाब यह दैवी घोषणा करते हैं कि *"कल्याण होगा उसका, जो बहाउल्लाह की व्यवस्था पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है और अपने स्वामी को धन्यवाद देता है, क्योंकि वह अवश्य प्रकट होगा। सत्य ही, बयान में ईश्वर का यह अटल आदेश है।"* बीस वर्ष बाद, उस प्रतिज्ञापित प्रकटीकरण के संस्थापक ने

किताब–ए–अक़दस में इसी शब्द को शामिल करते हुए वह व्यवस्था प्रदान की जिसका उल्लेख बयान में किया गया था। बहाउल्लाह ने यह पुष्टि की है कि *"इस सर्वमहान व्यवस्था ने विश्व के संतुलन को अस्त–व्यस्त कर दिया है और मनुष्य के व्यवस्थित जीवन में क्रान्ति ला दी है।"* बहाउल्लाह की संविदा के केन्द्र और उनकी शिक्षाओं के अधिकृत व्याख्याता ने, अपनी वसीयत और इच्छापत्र के प्रावधानों के माध्यम से भविष्य में प्रभुधर्म के क्रमिक विकास के दौरान इसी व्यवस्था की विशिष्टताओं की रूपरेखा प्रदान की। इस धर्म के रचनात्मक काल में इसी संविदा के सेवक, अर्थात विश्वव्यापी बहाई समुदाय के चुने हुए प्रतिनिधि, परिश्रम और एकता के साथ, आज इसी व्यवस्था के ढांचे का आधार स्थापित कर रहे हैं। इसी विधान के स्वर्णयुग में, बहाई विश्व राष्ट्रमण्डल के गठन से, अर्थात धरती पर ईश्वर के साम्राज्य की स्थापना के माध्यम से उचित समय आने पर इसी व्यवस्था का भवन अपनी सम्पूर्ण महिमा के साथ साकार होगा।

जब बाब ने मुहम्मद शाह को अपनी सबसे विस्तृत और प्रबोधक पाती लिखी थी तब वे माहकू में ही थे। यह पाती ईश्वर की एकता, उसके धर्मप्रचारकों और बारह इमामों की प्रशंसा की प्रस्तावना से आरम्भ होती है; अपने लेखक के देवत्व का और उन दैवी शक्तियों का दावा करने में यह स्पष्ट है, जिनसे उसका प्रकटीकरण विभूषित है; उस साहसिक दावे की पुष्टि करने वाले श्लोकों और कहावतों का उल्लेख करने में यह अद्वितीय है; शाह के प्रशासन के कुछ अधिकारियों और प्रतिनिधियों, विशेषकर उस "दुष्ट और श्रापित" हुसैन खान की निन्दा करने में यह कठोर है; इसके लेखक द्वारा सहन किए गए अपमान और कठिनाईयों का वर्णन करने में यह हृदयस्पर्शी है; यह ऐतिहासिक दस्तावेज़, अपनी कई विशिष्टताओं में, लौह–ए–सुल्तान (सुल्तान को सम्बोधित पाती) जैसी है, जो बहाउल्लाह ने इसी प्रकार की परिस्थितियों में अक्का के कारागार से नसीरूद्दीन शाह को सम्बोधित की थी। यह पाती बाब द्वारा किसी सम्राट को लिखा जाने वाला सबसे लम्बा धर्मपत्र है।

बाब की सबसे महत्वपूर्ण तार्किक कृति, दलाइल–इ–साबिह (सात प्रमाण) भी इसी अवधि के दौरान प्रकट की गई। उल्लेखनीय रूप से स्पष्ट, अपनी

सूक्ष्मता में प्रशंसनीय, परिकल्पना में मौलिक और अपने तर्क में लाजवाब, यह कृति, बाब के ध्येय के विविध प्रमाणों को प्रस्तुत करती है। साथ ही, बाब के जीवन–काल में शासन कर रहे *"विश्व के सात शक्तिशाली शासकों"* पर किए गए दोषारोपण के कारण यह उल्लेखनीय है। जिस ढंग से यह पूर्व के उन ईसाई धर्माधिकारियों के उत्तदायित्वों पर बल देती है और उनके आचरण की निन्दा करती है, उसके लिए यह उल्लेखनीय है। जैसा कि बाब तर्क देते हैं – *"यदि ये धर्माधिकारी, मुहम्मद के उद्देश्य के सत्य को समझ गए होते, तो उनके सह–अनुयायी के समूहों ने भी उनका अनुसरण कर लिया होता।"*

चिहरिक के किले की कैद में, जहाँ बाब ने अपने जीवन के शेष दो वर्षों की लगभग पूरी अवधि व्यतीत की, उन्होंने दय्यान के सम्मान में लौह–ए–हुरूफत (अक्षरों की पाती) प्रकट की। यह एक ऐसी पाती थी, जो भविष्य चित्रण करने वाले विज्ञान की व्याख्या के रूप में, शुरू में कितनी ही गलत क्यों न समझी गई हो, परन्तु आगे चलकर, इसे एक ऐसी पाती के रूप में स्वीकार किया गया जिसने, एक ओर उस मुस्तगास के रहस्य को उजागर कर दिया तो दूसरी ओर बाब और बहाउल्लाह की उद्घोषणा के बीच निश्चित रूप से बीतने वाले उन्नीस वर्षों की ओर संकेत किया। बाब की कैद की कठिनाईयों के कारण, उनके घोर अपमान के कारण और माज़िन्दरान एवं नैरीज़ के शूरवीरों की विपत्तियों के समाचार के कारण हमेशा के लिए शोक के अन्धकार में डूबने वाले इन वर्षों के दौरान ही, तबरीज़ से लौटने के तुरन्त बाद, बाब ने हाजी मिर्ज़ा अक़ासी को सम्बोधित वह पाती प्रकट की जिसमें उसकी कड़ी भर्त्सना की गई है। निर्भीक और हृदयस्पर्शी भाषा में लिखी गई इस पाती ने हाजी मिर्ज़ा अक़ासी की भर्त्सना में कोई कसर नहीं छोड़ी। यह पाती उस निडर हुज्जत को पहुँचायी गई और जैसी बहाउल्लाह ने पुष्टि की है, हुज्जत ने इसे उस दुष्ट मंत्री तक पहुँचा दिया।

माहकू और चिहरिक के किले की कैद की यह अवधि, अद्वितीय ओज से भरी थी, हालाँकि अपमान और लगातार गहराते शोक के कारण कड़वी थी। भविष्य में अपने ऊपर आने वाली घोरतम विपदा को ध्यान में रखते हुए, बाब

ने अपने स्वयं के प्रकटीकरण के बाद आने वाले उस अगले प्रकटीकरण के संस्थापक के सन्दर्भ में – चेतावनियों के रूप में या अनुरोध और परामर्श के रूप में – जिन लिखित प्रमाणों को प्रकट करना आवश्यक समझा वे सभी इसी अवधि में प्रकट किए गए थे। एक स्वतंत्र प्रकटीकरण के धारक होने और अपने से एक अधिक महान अवतार के अग्रदूत होने के अपने दोहरे उद्देश्य के प्रति बाब आरम्भ से ही सजग थे, इसलिए वे केवल टिप्पणियों, प्रार्थनाओं, नियम और विधानों, लेख और धर्मपत्रों, धार्मिक उपदेश और व्याख्यानों के प्रकटीकरण से स्वयं को संतुष्ट न कर सके, जो उनकी कलम से लगातार प्रवाहित हो रहे थे। जैसी उनके लेखों में पुष्टि की गई है, वह महान संविदा, जो सभी युगों के अवतारों के माध्यम से ईश्वर ने समग्र मानवजाति के साथ इस नए प्रकटीकरण के सम्बन्ध में अनन्तकाल से स्थापित की है, पूरी की जा चुकी थी जिसमें अब वह लघु संविदा जोड़ दी गई थी जो बाब ने अपने अनुयायियों के पूरे समूह के साथ, उसके सम्बन्ध में स्थापित करना आवश्यक समझा, जिसका आगमन उनके विधानों का परिणाम और अन्तिम उद्देश्य था। ऐसी ही संविदा समान रूप से पूर्व के प्रत्येक धर्म की विशिष्टता रही है। यह सदा से ऐसे अलग–अलग रूपों में अस्तित्व में रही है जिन पर विभिन्न प्रकार से बल दिया गया था। इसे सदा अप्रत्यक्ष भाषा में प्रस्तुत किया गया था और रहस्यमय भविष्यवाणियों, गूढ़ दृष्टान्तों, अप्रमाणित कहावतों और पावन लेखों के आंशिक और अस्पष्ट उद्धरणों में इसकी ओर संकेत किया गया था। परन्तु, बाबी विधान में, इसे किसी पृथक दस्तावेज़ में प्रस्तुत नहीं किया गया था, फिर भी एक स्पष्ट और असंदिग्ध भाषा में इसका स्थापित किया जाना नियत था। रहस्यों में छिपी रहने वाली पूर्व के पैगम्बरों की संविदाओं के विपरीत, बाब ने अपने नियमों की पुस्तक, अर्थात फारसी बयान में, ऐसे असंख्य उद्धरण शामिल कर दिए जिनमें कुछ उद्धरणों को जानबूझ कर रहस्यमय बनाया गया और अधिकांश को असंदिग्ध रूप से स्पष्ट और निर्णायक बनाया गया था। इन उद्धरणों में बाब उस प्रतिज्ञापित प्रकटीकरण की तिथि निर्धारित करते हैं, उसके गुणों की प्रशंसा करते हैं, उसके सर्वोत्कृष्ट स्वरूप की पुष्टि करते हैं, उसे असीमित शक्तियों और परमाधिकार से विभूषित बताते हैं और उस प्रत्येक अवरोध को

तोड़ गिराते हैं, जो इसे पहचानने में बाधक बने। अपनी पुस्तक *"किताब–ए–बदी'* में, बहाउल्लाह ने बाब के बारे में कहा है कि,*"वस्तुतः बयान के लोगों को शिक्षा देने और उन्हें अपना संदेश देने के अपने कर्त्तव्य में वे नहीं चूके हैं। किसी भी युग या विधान में किसी भी अवतार ने इतने विस्तार से और इतने स्पष्ट शब्दों में, अगले अवतार का उल्लेख नहीं किया है।"*

अपने कुछ अनुयायियों को बाब ने उस भावी प्रकटीकरण के लिए बड़े परिश्रम से तैयार किया। अन्य अनुयायियों को उन्होंने मौखिक आश्वासन दिए कि वे उस दिवस को देखने के लिए जीवित रहेंगे। मुल्ला बाक़ीर नामक एक जीविताक्षर को सम्बोधित एक पाती में तो उन्होंने वास्तव में यह भविष्यवाणी की कि वे उस प्रतिज्ञापित अवतार को प्रत्यक्षतः देख सकेंगे। सय्याह नामक एक अन्य शिष्य को भी उन्होंने ऐसा ही मौखिक आश्वासन दिया था। उन्होंने मुल्ला हुसैन को तेहरान जाने का निर्देश दिया और यह आश्वासन दिया कि उस नगर में एक ऐसा रहस्य छिपा हुआ है, जिसके प्रकाश की बराबरी, न तो हिजाज़ कर सकता है, न शीराज़। बाब से अन्तिम बार मिलने वाली शाम को, कुद्दूस से यह वादा किया कि कुद्दूस उनसे मिलेंगे जो उनकी आराधना और प्रेम का एकमात्र लक्ष्य है। जब वे माहकू में थे, तब शेख हसन जुनूज़ी के समक्ष उन्होंने यह घोषणा की थी कि वे करबला में उस प्रतिज्ञापित हुसैन को देख सकेंगे। उन्होंने दय्यान को *"वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, में विश्वास करने वाले तीसरे अक्षर"* की उपाधि से विभूषित किया, जबकि *किताब–ए–पान्ज–शॉन* में उन्होंने अज़ीम को उस महान का नाम बताया जो उनके प्रकटीकरण को पूर्णता प्रदान करेगा।

बाब ने न तो कभी कोई उत्तराधिकारी या प्रतिनिधि नियुक्त किया, न ही अपनी शिक्षाओं का कोई व्याख्याता नियुक्त किया। उस प्रतिज्ञापित अवतार के सम्बन्ध में उनके सन्दर्भ पारदर्शी रूप से इतने स्पष्ट थे और उनके अपने विधान की अवधि इतनी कम नियत की गई थी, कि न तो उन्हें किसी उत्तराधिकारी की, न ही किसी व्याख्याता की आवश्यकता महसूस हुई। "ए ट्रेवलर्स नरेटिव" नामक पुस्तक में अब्दुल बहा के कथनानुसार, बहाउल्लाह की एवं एक

अन्य शिष्य की सलाह पर बाब ने केवल नाम मात्र के लिए मिर्ज़ा याह्या को उस प्रतिज्ञापित अवतार के प्रकट होने तक नामांकित कर दिया, और इसी कारण बहाउल्लाह को, अपेक्षाकृत सुरक्षा में उस धर्म का प्रसार करने का अवसर मिला जो बाब को इतना प्रिय था।

इस पुस्तक – बयान में, उस प्रतिज्ञापित अवतार के सम्बन्ध में बाब यह पुष्टि करते हैं। *"आरम्भ से लेकर अन्त तक, यह बयान बहाउल्लाह के गुणों का भण्डार है और उनकी ऊष्मा तथा उनके प्रकाश का कोषागार है।"* एक अन्य सन्दर्भ में वे घोषित करते हैं,*"यदि तुम इस प्रकटीकरण को प्राप्त होते हो और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हो, तो तुम बयान का फल प्रकट करोगे; अन्यथा तुम ईश्वर के समक्ष उल्लेख करने योग्य नहीं हो।"* इसी पुस्तक में वे अपने अनुयायियों के पूरे समूह को यह चेतावनी देते हैं, *"ओ बयान के लोगों ! कुरान के लोगों जैसा व्यवहार न करो, क्योंकि यदि तुम ऐसा करते हो, तो तुम्हारा जीवन निष्फल हो जायेगा।"* वे बलपूर्वक आज्ञा देते हैं,*"ऐसा न हो कि यह बयान और इसमें प्रकट किया गया ज्ञान, तुम्हें अस्तित्व के उस सत्व और उस दृश्य एवं अदृश्य के स्वामी से दूर कर दे।"* वाहीद को एक महत्वपूर्ण चेतावनी देते हुए वे कहते हैं कि,*"सावधान, सावधान, कहीं उसके प्रकटीकरण के दिवसों में, बयान का वाहीद (18 जीवित अक्षर और स्वयं बाब) तुम्हें एक परदे की भाँति उससे दूर न कर दे, क्योंकि यह वाहीद उसकी दृष्टि में एक प्राणी मात्र है।"* और पुनः वे कहते हैं, *"ओ बयान के मानने वालों और वे सभी जो इसमें हैं , उन सीमाओं को समझो जो तुम पर डाली गई हैं, क्योंकि सभी वस्तुओं के सृजन के पूर्व, बयान के बिन्दु जैसे व्यक्ति ने स्वयं उसमें विश्वास किया है जिसे ईश्वर प्रकट करेगा। वस्तुतः, स्वर्ग और धरती के साम्राज्य में रहने वाले सभी के समक्ष मैं इसी में गौरव करता हूँ।"*

उस प्रतिज्ञापित प्रकटीकरण के आगमन की तिथि के सन्दर्भ में उन्होंने यह स्पष्ट रूप से लिखा है,*"वर्ष नौ में तुम समस्त अच्छाइयों को प्राप्त करोगे। "वर्ष नौ में तुम ईश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करोगे।"* और एक बार फिर वे कहते हैं कि*"हिन (68) के बाद तुम्हें जो धर्म प्रदान किया जायेगा उसे तुम जान पाओगे।"* उन्होंने विशेष रूप से कहा है, "इस धर्म के प्रारम्भ से लेकर

नौ वर्ष के पूरे होने से पहले, समस्त सृजित वस्तुओं की वास्तविकताएँ प्रकट नहीं होंगी। अब तक जो तुमने देखा है वह मात्र एक नम बीज है, जिसे अपने वास्तविक रूप में प्रकट होना अभी शेष है। जब तक तुम एक नई रचना न देख लो, धैर्य रखो। कहो! *"धन्य है वह ईश्वर, सृजनकर्ताओं में सर्वश्रेष्ठ!"* वे अज़ीम से कहते हैं, *"बयान के समय से लेकर नौ वर्ष के बीतने तक प्रतीक्षा करो।"* फिर कहो! *"अतः धन्य है वह ईश्वर, सृष्टिकर्ताओं में सर्वश्रेष्ठ!"* वर्ष उन्नीस के सम्बन्ध में एक उल्लेखनीय उद्धरण में वे चेतावनी देते हैं, *"इस प्रकटीकरण के प्रारम्भ से वाहीद की संख्या (19) तक ध्यान दो।"* उन्होंने और भी प्रकट रूप से कहा है, *"न्याय के दिवस का वह स्वामी, वाहीद (19) के अन्त में और अस्सी (हि.स.1280) के आरम्भ में प्रकट होगा।"* यह सुनिश्चित करने की अपनी उत्सुकता में, कि कहीं उस प्रकटीकरण की निकटता ही लोगों को उस प्रतिज्ञापित अवतार से दूर न कर दे, बाब कहते हैं, *"यदि वह इसी क्षण प्रकट हो जाए, तो उसकी आराधना करने वालों में प्रथम मैं रहूँगा और उसके समक्ष झुक जाने वालों में भी प्रथम मैं रहूँगा।"*

उस प्रतीक्षित प्रकटीकरण के संस्थापक की प्रशंसा में वे कहते हैं, "उसके उल्लेख के सम्बन्ध में मैंने ये रत्न–समान शब्द लिखे हैं : *"मेरा कोई भी संकेत या बयान में लिखा गया कुछ भी, उसका संकेत नहीं दे सकता।" "मैं स्वयं, उसमें और उसके चिन्हों में विश्वास करने वाला प्रथम सेवक हूँ..... ।"* वे इस बात की पुष्टि करते हैं, *"उस आने वाले प्रकटीकरण की क्षमताओं को धारण करने वाला कोई एक–वर्षीय सूक्ष्म जीव भी उस क्षमता से सम्पन्न होगा जो सम्पूर्ण बयान की संयुक्त शक्तियों से श्रेष्ठतर होगी।"* और एक बार फिर : *"सम्पूर्ण बयान, उसके स्वर्ग की पत्तियों में केवल एक पत्ती है।"* इसी प्रकार वे कहते हैं, *"तुम्हारे लिए सम्पूर्ण बयान को लिखने से बेहतर है उसका केवल एक श्लोक पढ़ना जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, क्योंकि उस दिवस में, वही एक श्लोक तुम्हें बचा सकता है, जबकि, सम्पूर्ण बयान तुम्हें नहीं बचा सकता।" "आज यह बयान एक बीज की अवस्था में है, परन्तु वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, के प्रकटीकरण के आरम्भ में, इसकी श्रेष्ठतम पूर्णता प्रत्यक्ष होगी।" "बयान अपनी सम्पूर्ण महिमा उससे प्राप्त करता है जिसे ईश्वर प्रकट करेगा।" "बयान में जो*

कुछ भी प्रकट किया गया है, वह मेरे हाथ की अँगूठीमात्र है और वस्तुतः मैं स्वयं, उसके हाथ की एक अँगूठी मात्र हूँ जिसे ईश्वर प्रकट करेगा। वह जैसे चाहे, जिसके लिए चाहे और जिसके माध्यम से चाहे, इसे घुमा सकता है। वस्तुतः, वह संकटों में सहायक, सर्वोच्च है।" उस प्रतिज्ञापित अवतार के बारे में, वाहीद और एक जीविताक्षर के प्रश्नों के उत्तर में उन्होंने यह घोषित किया था कि *"उसके सत्य का विश्वास दिलाने के लिए बुलाए जाने पर, स्वयं प्रमाण भी उसका प्रमाण देने से शर्मिन्दा है।"* इसी वाहीद को सम्बोधित करते हुए, उन्होंने आगे और कहा है :*"यदि मुझे आश्वस्त किया जाए कि उसके प्रकटीकरण के दिवस में तुम उसे अस्वीकार कर दोगे, तो मैं बिना झिझके ही तुम्हें त्याग दूँगा..... दूसरी ओर, यदि मुझे यह बताया जाए कि एक ईसाई, जिसका आज मेरे धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है, उसे स्वीकार करेगा, तो मैं उसे अपनी आँखों का तारा समझूँगा।"*

और अन्त में, ईश्वर से उनकी हृदयस्पर्शी प्रार्थना यह है : *"तू साक्षी दे, कि इस पुस्तक के माध्यम से, मैंने अपने स्वयं के ध्येय से सम्बन्धित संविदा स्थापित करने से पहले सभी सृजित वस्तुओं के साथ उसके ध्येय से सम्बन्धित संविदा स्थापित की है जिसे ईश्वर प्रकट करेगा। इसका तू और वे पर्याप्त साक्षी हैं, जिन्होंने तेरे चिन्हों में विश्वास किया है।"* बाब की कलम से निकलने वाला एक और प्रमाण है, *"वस्तुतः इन लोगों को चेतावनी देने के अपने कर्त्तव्य से मैं नहीं चूका हूँ।" "....यदि उसके प्रकटीकरण के दिवस में धरती के सभी लोग उसे स्वीकार कर लें, तो मेरा अन्तरतम अस्तित्व आनन्दित हो उठेगा, क्योंकि सभी अपने अस्तित्व के फल को प्राप्त कर चुके होंगे..... अन्यथा, मेरी आत्मा दुःखी होगी। मैंने सभी वस्तुओं को इसी उद्देश्य के लिए पोषित किया है। फिर भला कोई उनसे छिपा कैसे रह सकता है ?"*

जैसा कि हमने पिछले पृष्ठों में देखा है कि बाब के धर्मकाल के अन्तिम और सबसे अधिक घटनाओं से भरे तीन वर्षों के दौरान न केवल उनके ध्येय की औपचारिक और सार्वजनिक घोषणा की गई, बल्कि उनके प्रेरित लेखों का अतुलनीय प्रवाह भी देखा गया। इसमें उनके आधारभूत विधान के मौलिक

नियमों के साथ–साथ उस लघु संविदा की स्थापना भी सम्मिलित थी जो उनके अनुयायियों की एकता की सुरक्षा करने और एक अतुलनीय रूप से अधिक शक्तिशाली प्रकटीकरण के आगमन का मार्ग प्रशस्त करने के लिए थी। इसी अवधि के दौरान, चिहरिक के किले में उनकी कैद के शुरूआती दिनों में, उनके अनुयायियों द्वारा खुलकर इस नए धर्म की स्वतंत्रता को समझा गया और इसकी पुष्टि की गई। इस नए प्रकटीकरण के आधार में निहित नियमों को इनके लेखक द्वारा अज़रबैजान की पहाड़ियों में स्थित कैदियों के एक किले में प्रकट किया गया था जबकि अब इसी विधान का अभिषेक, माज़िन्दरान की सीमा पर स्थित एक क्षेत्र में एकत्रित होने वाले बाब के अनुयायियों के एक सम्मेलन में किया जाना था।

निरन्तर पत्र व्यवहार के द्वारा बाब के साथ निकट सम्पर्क रखते हुए और अपने परिश्रमी सह–अनुयायियों की विविध गतिविधियों के पीछे स्वयं निदेशक शक्ति बनकर, बहाउल्लाह ने अप्रत्यक्ष किन्तु प्रभावशाली ढंग से उस सम्मेलन की अध्यक्षता की और उसकी कार्यवाही को मार्गदर्शित और नियंत्रित किया। कुद्दूस, जिन्हें इस सम्मेलन का रूढ़िवादी तत्व माना गया है, ने ऐसे सम्मेलन में आकस्मिक भय और घबराहट को कम करने के लिए, एक पूर्वनियोजित योजना के तहत, उन अतिवादी विचारों का विरोध किया जिनकी वकालत उस प्रचण्ड ताहिरा द्वारा की गई थी। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य था, अतीत और इसकी व्यवस्था, इसके धर्माधिकारी, इसकी परम्पराओं और इसकी रस्मों को आकस्मिक, पूर्ण और नाटकीय ढंग से तोड़ कर बयान के प्रकटीकरण को लागू करना। इस सम्मेलन का सहायक उद्देश्य था चिहरिक में बाब की क्रूर कैद से उन्हें रिहा करने के उपायों पर विचार करना। इन दोनों उद्देश्यों में पहला तो उत्कृष्ट रूप से सफल रहा; परन्तु दूसरे का असफल होना शुरू से ही नियत था।

ऐसे चुनौतीपूर्ण और दूरगामी परिणामों वाली घोषणा बदश्त नाम के एक गाँव में की गई थी, जहाँ बहाउल्लाह ने मनोहर परिवेश में तीन बगीचे किराये पर लिए, जिनमें एक कुद्दूस के लिए था, दूसरा ताहिरा के लिए और तीसरे को उन्होंने अपने लिए आरक्षित रखा। विभिन्न प्रांतों से एकत्रित होने वाले 81 शिष्यों के आगमन से लेकर उनके प्रस्थान तक सभी बहाउल्लाह के मेहमान थे। उस

गाँव में उनके बाईस–दिवसीय प्रवास के दौरान प्रत्येक दिन, बहाउल्लाह एक पाती प्रकट करते थे जिसे अनुयायियों के बीच पढ़ा जाता था। उन्होंने प्रत्येक अनुयायी को एक नया नाम प्रदान किया, परन्तु किसी को यह नही ज्ञात होने दिया कि ये नाम किसने प्रदान किए हैं। उस समय से स्वयं उन्हें भी बहा के नाम से सम्बोधित किया जाने लगा। अन्तिम जीविताक्षर को कुद्दूस की उपाधि प्रदान की गई, जबकि क़र्रातुल–ऐन को ताहिरा का उपनाम दिया गया। बाद में, इनमें से प्रत्येक के लिए प्रकट की गई पाती में बाब ने उन्हें इन्हीं नामों से सम्बोधित किया।

वे बहाउल्लाह ही थे जिन्होंने उस स्मरणीय प्रसंग की कार्यवाही को निरंतर और अचूक किन्तु असंदिग्ध रूप से संचालित किया था और वे बहाउल्लाह ही थे जिन्होंने उस सभा को उसकी अन्तिम और नाटकीय चरम स्थिति तक पहुँचाया था। एक दिन, जब अपने स्वास्थ्य के कारण वे बिस्तर से नहीं उठ सके, तब पवित्रता की वह स्वच्छ और बेदाग मूर्ति और पावन फातिमा का अवतार मानी जाने वाली ताहिरा, सजी–सँवरी लेकिन बेनकाब होकर अचानक बहाउल्लाह की उपस्थिति में एकत्रित मित्रों के सामने आयीं और डरे हुए लेकिन क्रोध से भरे कुद्दूस की दाहिनी ओर बैठ गईं। इसके बाद उन्होंने अपने अग्नि–समान शब्दों से इस्लाम के विधानों की पवित्रता की रक्षा करने वाले परदों को चीरते हुए आह्वान किया और एक नए विधान के आरम्भ की घोषणा की। इस घटना का बिजली जैसा और तात्कालिक प्रभाव पड़ा। ताहिरा, जो इतनी बेदाग पवित्रता वाली महिला थी, जो इतनी सम्मानित थी कि उनकी परछाईं तक पर दृष्टि डालना एक अनुचित कृत्य समझा जाता था, को यूँ अचानक देखने वाले अनुयायियों को ऐसा धक्का लगा कि पल भर के लिए तो ऐसा प्रतीत हुआ जैसे ताहिरा ने स्वयं को कलंकित कर लिया हो, उस धर्म को लज्जित कर दिया जो उन्होंने स्वीकारा था और उस अविनाशी मुखमण्डल को मैला कर दिया हो जिसका वे प्रतीक थीं। ताहिरा को देखने वालों की आत्माओं में भय, क्रोध और घबराहट का तूफान आ गया, जिसने उनकी शक्तियों को सुन्न कर दिया। ताहिरा को यूँ बेनकाब देखकर अब्दुल–खलीक़ इस्फहानी भौंचक्का और विक्षिप्त हो गया और उसने अपने ही हाथों से अपना गला काट लिया।

खून में लथ–पथ और उत्तेजना से पागल, वह ताहिरा के सामने से पलायन कर गया। अन्य लोग उनके सामने मूक और स्तम्भित खड़े रह गए। कुछ अन्य ने धड़कते हृदयों से इस्लाम की उस कहावत को याद किया होगा जिसके अनुसार उस प्रतिज्ञापित न्याय के दिवस में उस पुल (सीरात) से गुज़रते समय स्वयं फातिमा बेनकाब होकर प्रकट होंगी। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे क्रोध से भरे हुए कुद्दूस बस उस क्षण का इन्तजार कर रहे थे जब वे ताहिरा को अपनी उस तलवार से मार गिरा दें जो उस समय उनके हाथ में थी।

दृढ़, शान्त और आनन्द से उल्लसित ताहिरा उठीं और तनिक भी सोचे–विचारे बगैर, कुरान से आश्चर्यजनक रूप से मिलती–जुलती भाषा में, उन्होंने सभा के बाकी सदस्यों के समक्ष एक ओज और भावपूर्ण अपील प्रस्तुत की जिसे इस साहसी कथन के साथ समाप्त किया कि : *"मैं वह शब्द हूँ जिसे उस काईम को उच्चारित करना है, वह शब्द जो धरती के मुखियाओं और कुलीन लोगों को पलायन कराएगा !"* इसके बाद उन्होंने वहाँ उपस्थित सभी को एक दूसरे का आलिंगन करने और इतने महान अवसर का उत्सव मनाने के लिए आमंत्रित किया।

उस यादगार दिन, वह "बिगुल" बजाया गया, ऊँचे स्वर में "तूर्यनाद" किया गया, और वह "आपदा" आई जिसका उल्लेख कुरान में किया गया है। कई युगों से सम्मान प्राप्त करती आ रहीं इस्लाम की परम्पराओं से इतने चौंका देने वाले विचलन के तुरन्त बाद के दिनों में हज़रत मुहम्मद के विधानों के इन तथाकथित उत्साही और धर्मनिष्ठ समर्थकों के दृष्टिकोण, आदतों, रस्मों और आराधना के तरीकों में एक वास्तविक क्रान्ति देखी गई। भले ही शुरू से अन्त तक इस सम्मेलन में हलचल मची रही, भले ही कुछ ऐसे लोगों का इससे अलग होना खेदजनक था, जिन्हें इस्लाम धर्म के आधारभूत कानूनों का समाप्त किया जाना स्वीकार नहीं था, फिर भी, इस सम्मेलन का उद्देश्य, पूरी तरह और गौरवशाली ढंग से पूरा हो चुका था। केवल चार वर्ष पहले ही, बाबी प्रकटीकरण के संस्थापक ने, शीराज़ के अपने निवास के एकान्त में मुल्ला हुसैन के समक्ष अपने ध्येय की घोषणा की थी। इस उद्घोषणा के तीन वर्ष बाद, माहकू के किले की कैद में, बाब

अपने लिपिक को अपने विधान के आधारभूत और विशिष्ट सिद्धान्त लिखवा रहे थे। एक वर्ष बाद, अपने सह–अनुयायी बहाउल्लाह के सफल नेतृत्व में, बाब के अनुयायी स्वयं, बदश्त के गांव में कुरान के विधानों को समाप्त कर रहे थे, मुहम्मद के दैवी और मानव–निर्मित सिद्धांतों को त्याग रहे थे और इसकी प्राचीन व्यवस्था की बेड़ियों से पीछा छुड़ा रहे थे। और इसके तुरंत बाद, राजसिंहासन के उत्तराधिकारी, शेखी समुदाय के प्रमुख व्याख्याताओं और अज़रबैजान में एकत्र होने वाले सबसे प्रख्यात उच्च स्तरीय धर्माचार्यों की उपस्थिति में स्वयं बाब ने, जो अब भी कैदी थे, औपचारिक रूप से और बेझिझक, अपने प्रतिज्ञापित काईम होने का दावा प्रस्तुत करके अपने शिष्यों के कार्यों को समर्थन प्रदान किया।

बाब के प्रकटीकरण के जन्म के बाद चार वर्ष से कुछ अधिक का समय बीत चुका था जब उस पुराने विधान के औपचारिक अंत और इस नए विधान के आरम्भ की घोषणा करने वाला तूर्यनाद किया गया। विश्व के धार्मिक इतिहास के इतने महान परिवर्तन–बिन्दु को चिन्हित करने के लिए कोई आडम्बर, कोई दिखावा नहीं हुआ। इसका साधारण परिवेश भी, उस आकस्मिक, चौंका देने वाली, सम्पूर्ण मुक्ति के लायक नहीं था जिसने हठधर्मिता, पुरोहिती कपट, धार्मिक रूढ़िवादिता और अंधविश्वास की अंधकारमय और मोर्चाबंद ताकतों से छुटकारा दिलाया था। इसमें एकत्र होने वाले अतिथेयों में केवल एक स्त्री और चन्द ऐसे पुरूष थे, जो अधिकांशतः उन्हीं लोगों के बीच से आए थे जिन पर वे आक्रमण कर रहे थे और इनमें से कुछ को छोड़कर अन्य सभी, धन–सम्पदा, प्रतिष्ठा और शक्ति से खाली थे। शत्रुओं की गिरफ्त में कैद, अतिथेयों के वह कप्तान स्वयं अनुपस्थित थे। स्थान था, माज़िन्दरान प्रांत की सीमा पर बदश्त क्षेत्र का एक छोटा सा गाँव। तूर्यनाद करने वाली थी एक अकेली स्त्री जो उस विधान की स्त्री जाति में कुलीनतम थीं, जिसे उसी के कुछ सह–अनुयायियों ने धर्म–विरोधी घोषित किया था। उसने जो आह्वान किया, वह बारह सौ वर्ष पुराने इस्लाम के कानून के लिए मौत का पैगाम था।

बीस वर्ष पश्चात, एक और तूर्यनाद से गति प्राप्त करके, तथा एक और विधान के नियमों की रचना की घोषणा करके उस पुराने, किन्तु दैवीविधान के पतन से जुड़ी विघटन की प्रक्रिया में और भी तेज़ी आ गई। बाद में, इसके

परिणामस्वरूप तुर्की में शरीयाह का विधान रद्द कर दिया गया। ईरान में शरीयाह विधान को वास्तविक रूप से त्याग दिया गया और हाल ही में, यह मिस्र में सुन्नी धर्माधिकारी कानून से, उस व्यवस्था का सम्बन्ध तोड़ने का कारण बना, जिसकी परिकल्पना *किताब–ए–अक़दस* में की गई है। इसके कारण पावन भूमि में भी इस नई व्यवस्था की स्वीकृति का मार्ग प्रशस्त हुआ है और अन्त में ये मुस्लिम राज्यों को धर्मनिरपेक्ष बनाने और सभी राष्ट्रों द्वारा बहाउल्लाह का विधान स्वीकारे जाने और मुस्लिम जगत के सभी लोगों के हृदयों में इसके प्रतिष्ठित किए जाने की चरम सीमा तक पहुँचेगा।

माज़िन्दरान, नैरीज़ और ज़नजान की उथल-पुथल

बदश्त के सम्मेलन की घटनाओं के कारण, अज़रबैजान के एक दूरस्थ कोने में बाब की कैद अविस्मरणीय बन चुकी थी और अब, उनके उद्देश्य की सार्वजनिक उद्घोषणा, उनके विधान के नियमों की रचना और उनकी संविदा की स्थापना जैसी उल्लेखनीय गतिविधियों के द्वारा विशेषता प्राप्त कर चुकी थी। अब उनके विरोधियों और शिष्यों के कृत्यों के कारण उत्पन्न होने वाली भीषण उथल–पुथल से, यह और भी महत्व प्राप्त करने वाली थी। जब बाब की कैद का समय पूरा होने को आया, तब जो तूफान उठा, उसके लिए इसके अनुयायियों की वीरता का वह स्तर और इसके दुश्मनों की शत्रुता का ऐसा भयानक रूप देखा गया जो उनके सेवाकाल के प्रथम तीन वर्षों में कभी नहीं देखा गया था। सचमुच, इस संक्षिप्त किन्तु सर्वाधिक उथल–पुथल वाली अवधि को, बहाई इतिहास के शौर्यकाल की सबसे खूनी और नाटकीय अवधि माना जाना उचित होगा।

माहकू और चिहरिक में बाब की कैद से जुड़ी महत्वपूर्ण घटनाएँ, अपने आप में, उनके प्रकटीकरण के चरमोत्कर्ष पर थी, जिनका सिवाय इसके और कोई परिणाम नहीं हो सकता था कि ये उनसे प्रेम करने वालों के जोश और उनके शत्रुओं के क्रोध की ज्वाला को और भड़का दे। शीघ्र ही एक ऐसे कष्ट का पहाड़ टूटने वाला था जिसका षड़यंत्र और भी अधिक भयानक, अधिक घिनौने और अधिक धूर्तरूप से रचा जाने वाला था, जो हुसैन खान या हाजी मिर्ज़ा अक़ासी ने रचा था। साथ ही, इसी के बराबर बेमिसाल शौर्य का ऐसा

प्रदर्शन होने वाला था जिसकी तुलना उस उत्साह के किसी भी आवेग से नहीं की जा सकती, जो सर्वप्रथम शीराज़ या इस्फहान में प्रभुधर्म के जन्म के समय देखा गया था। लगातार जारी रहने वाली और अपूर्व उथल–पुथल की इस अवधि ने इस धर्म से एक के बाद एक उसके प्रमुख लोगों को तेज़ी से छीन लिया और इनके जीवन के अन्त के साथ ये उथल–पुथल अपनी चरम सीमा पर पहुँची और इसके बाद इस बार, इसके श्रेष्ठ समर्थकों का जैसे विलोप होने वाला था। ईश्वर की इच्छा से केवल वह व्यक्ति बच गया था जिसे, घोरतम अन्धकार की इस घड़ी में एक अत्याधिक उत्पीड़ित धर्म को विनाश से बचाने का और उसका स्थान लेने वाले एक अन्य विधान की स्थापना करने का दोहरा कार्य सौंपा गया था।

इतनी नाटकीय परिस्थितियों और इतनी चुनौतीपूर्ण शैली में, उन शक्तिशाली, विद्वेषी, डरे हुए और विरोधी श्रेष्ठ शिया धर्माधिकारियों की एक विशिष्ट सभा में, बाब का वह प्रतिज्ञापित काईम होने का औपचारिक दावा, एक ऐसी विस्फोटक ताकत था जिसने विपत्तियों का वास्तविक बहाव प्रवाहित कर दिया, जो इस धर्म को और उन लोगों को बहा ले गया जिनके बीच इसने जन्म लिया था। इसने बाब के उन बिखरे हुए अनुयायियों की आत्माओं में धधकने वाली अग्नि को प्रज्वलित कर दिया जो अपने दिव्य नेता की कैद के कारण पहले से ही उत्पीड़ित थे और जिनका उत्साह अब और भी बढ़ गया था क्योंकि बाब की कलम से प्रवाहित होने वाले लेख उनकी कैद के स्थान से लगातार उन तक पहुँच रहे थे। इसने देश भर में, बाजारों, मस्जिदों, मदरसों, और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर प्रचंड और अन्तहीन वाद–विवाद को जन्म दिया और इसके माध्यम से उस दरार को और गहरा कर दिया जो पहले से ही इसके लोगों को विभाजित कर चुकी थी। इतने घोर संकट की घड़ी में, मुहम्मद शाह तेज़ी से अपनी शारीरिक कमज़ोरियों के बोझ तले दब रहा था। अब राज्य के क्रियाकलापों का मुख्य कर्ताधर्ता, वह ओछे दिमाग वाला हाजी मिर्ज़ा अक़ासी था, जिसने ऐसी हिचकिचाहट और अयोग्यता दर्शाई जो उसकी प्रत्येक बढ़ती हुई गम्भीर ज़िम्मेदारी के साथ–साथ और भी बढ़ती चली गई। कभी वह उलेमाओं के फैसले के समर्थन की ओर प्रवृत्त हो जाता, तो कभी उनके

आक्रमण की निंदा करता और उनके कथनों पर अविश्वास करता; और कभी, वह रहस्यवाद की पूर्वदशा में लौट, अपने ख्यालों में डूबकर, उस आपात स्थिति की गम्भीरता को समझ नहीं पाता जो उसके सामने खड़ी थी।

राष्ट्र के क्रियाकलापों के इतने स्पष्ट कुप्रबन्ध ने उस धर्माचारी वर्ग को साहसी बना दिया जिसके सदस्य, अब अपने धर्मासनों से प्राणघातक उत्साह में अभिशाप दे रहे थे और अन्धविश्वासी समूहों को उकसा रहे थे कि वे एक ऐसे वर्ग के लोगों के विरूद्ध हथियार उठाएँ जो घृणा के पात्र हैं, उनकी स्त्रियों के सम्मान को अपमानित करें, उनकी सम्पत्ति हड़प लें और उनके बच्चों को चोट पहुँचायें। ये उलेमा, असंख्य सभाओं में गरजकर कहते, "उन चिन्हों और विलक्षणताओं का क्या हुआ जो उस काईम के आगमन के साथ जुड़ी हैं ? उस बड़े और छोटे ग्रहण का क्या हुआ ? जाबुल्का और जाबुल्सा के दो शहरों का क्या हुआ ? हुसैन–इब्ने–रूह की कहावतों को हम कैसे समझायेंगे ? और इब्न–ए–मेह्रीयार के विषय में अधिकृत कहावतों की क्या व्याख्या की जाये ? वे अदृश्य लोग कहाँ हैं, जो एक सप्ताह के अन्दर सम्पूर्ण धरती की परिक्रमा करेंगें ? अपने प्रकट होने पर उस काईम द्वारा पूरब और पश्चिम पर प्राप्त की जाने वाली उस विजय का क्या हुआ ? वह आँखों से दुर्बल धर्मविरोधी कहाँ है, और वह गधा कहाँ है जिसकी वह सवारी करेगा ? सुफैन और उसका साम्राज्य कहाँ है ?" वे आपत्ति जताते हुए कहते, "क्या हम अपने पावन इमामों की उन असंदिग्ध एवं असंख्य कहावतों को एक मृत अक्षर समझ लें, या क्या हमें अग्नि और तलवार से इस निर्लज्ज विधर्म को नष्ट नहीं कर देना चाहिए, जिसने हमारी भूमि पर अपना सिर उठाने का साहस किया है ?"

ऐसी निन्दा, धमकियों और विरोधों के उत्तर में, मुस्लिम धर्माधिकारियों द्वारा गलत ढंग से पेश किए जाने वाले धर्म के विद्वान और दृढ़ शूरवीरों ने, अपने दिव्य नेता के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, उन लिखे गए लेखों, टिप्पणियों और खण्डनों का बेझिझक विरोध किया। वे अपने तर्क में अकाट्य, प्रमाणों से लैस, स्पष्ट, भावपूर्ण और विश्वासोत्पादक थे। उन्होंने मुहम्मद की पैगम्बरी, इमामों की सच्चाई और साहिबुज़्ज़मान (इस युग के स्वामी) के

आध्यात्मिक प्रभुत्व में अपने विश्वास की पुष्टि की और इस्लाम के पावन लेखों की उन अस्पष्ट और जान बूझकर गूढ़ बनाई गई कहावतों, श्लोकों और भविष्यवाणियों की उत्कृष्ट ढंग से व्याख्या की और अपने दावों के समर्थन में इमाम हुसैन की नम्रता और असहाय स्थिति का उल्लेख किया, जिन्हें अपनी पराजय, अपनी व्याकुलता और अपकीर्तिकर शहादत के बावजूद आज भी बाब के विरोधियों द्वारा ईश्वर की सर्वव्यापी सत्ता और शक्ति का विलक्षण प्रतीक और मूर्त रूप माना जाता है।

जब, बीमारी के कारण मुहम्मद शाह की मृत्यु हो गई, तब तक यह भयानक, राष्ट्रव्यापी विवाद विस्तार प्राप्त कर चुका था और राजा की मृत्यु के पश्चात उसके सबसे प्रिय और सर्वशक्तिशाली मंत्री, उस हाजी मिर्ज़ा अक़ासी का भी पतन हो गया, जिसे उसके द्वारा बटोरे गए खज़ाने से शीघ्र ही वंचित कर दिया गया और जो अपमान से बुरी तरह घिर गया। उसे राजधानी से निकाल दिया गया और उसे करबला में शरण लेनी पड़ी। सत्रह वर्षीय नसीरूद्दीन शाह ने राज सिंहासन सम्भाला और राज्य के समस्त क्रियाकलापों का संचालन उस कठोर और निष्ठुर अमीर निज़ाम मिर्ज़ा तक़ी खान के हाथों में सौंप दिया, जिसने, अपने सह–मंत्रियों से परामर्श किए बगैर ही, यह आदेश दे दिया कि उन असहाय बाबियों को तुरंत और उपयुक्त दण्ड दिया जाए। धर्माचारियों द्वारा संचालित किए गए, बदनाम करने वाले इस राक्षसी अभियान से बहकाए जाने पर तथा आर्थिक पुरस्कार के लालच में, सभी प्रान्तों के राज्यपाल, न्यायाधीश और सार्वजनिक सेवक, इस बहिष्कृत धर्म के अनुयायियों का शिकार करने और उन्हें अपमानित करने में एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करने लगे। प्रभुधर्म के इतिहास में, पहली बार इसके विरोध में एक ऐसा सुनियोजित अभियान छेड़ा जा रहा था जिसमें सार्वजनिक और धर्माचारियों की शक्तियाँ आपस में एक हो गई थीं। यह एक ऐसा अभियान था जो अपने उस संत्रास की चरम सीमा पर पहुँचने वाला था, जो बहाउल्लाह ने तेहरान के सियाहचाल में और इसके बाद उनके इराक निर्वासन में सहन किया था। सरकार, धर्माचारी वर्ग और जनता, तीनों एक साथ मिलकर, अपने इस आम शत्रु को पूरी तरह मिटा देने के लिए उठ खड़े हुए। दूरस्थ और एकाकी केन्द्रों में, इस सताये हुए

समुदाय को उसके शत्रुओं की तलवारों से बेरहमी से मार गिराया गया, जबकि उन केन्द्रों में, जहाँ ये बड़ी संख्याओं में एकत्रित हुए थे, वहीं उन्होंने आत्मरक्षा के ऐसे उपाय किए थे, जिनका उन कपटी और धोखेबाज़ शत्रुओं द्वारा गलत अर्थ निकाला गया और इसके परिणामस्वरूप अधिकारियों का विरोध और भी भड़क उठा, तथा अत्याचारियों के अत्याचार और बढ़ गए। पूरब में शेख तबरसी, दक्षिण में नैरीज़, पश्चिम में ज़नजान और स्वयं राजधानी में भी संहार, उपद्रव, लड़ाई, घेराबंदी और विश्वासघात के कृत्यों ने एक के बाद एक, तेज़ी से उस हिसंक तूफ़ान की घोषणा कर दी, उस मानसिक दिवालिएपन को खोलकर रख दिया और एक गर्वित किन्तु निम्न स्तरीय सोच वाली जनता ने इतिहास पर कालिख पोत दी।

जिसने बाब के आदेश पर हरे रंग का वह साफा पहना, जो उसके स्वामी ने उसे भेजा था, जिसने काले रंग की वह ध्वजा फहराई, जिसके बारे में हज़रत मुहम्मद ने कहा था कि इसका खुलना धरती पर ईश्वर के प्रतिनिधि के आगमन की घोषणा करेगा और जो जज़ीर–ए–खद्रा (हरे–भरे जजीरा) में कुद्दूस से मिलने के लिए और उन्हें सहायता प्रदान करने के लिए घोड़े पर सवार होकर अपने 202 सह–अनुयायियों का नेतृत्व करते हुए कूच कर रहा था, उस मुल्ला हुसैन की हिम्मत एक ऐसे संघर्ष का संकेत थी, जिसकी गूंज देशभर में प्रतिध्वनित होने वाली थी। यह संघर्ष कम से कम ग्यारह माह तक चलता रहा। इसकी रंगभूमि थी माज़िन्दरान का जंगल। इसके शूरवीर थे बाब के अलंकृत अनुयायी। इसके शहीदों में जीविताक्षरों की कम से कम आधी संख्या सम्मिलित थी, जिसमें कुद्दूस और मुल्ला हुसैन भी थे जो क्रमानुसार अन्तिम और प्रथम जीविताक्षर थे। वह निदेशक शक्ति, जो अप्रत्यक्ष रूप से ही सही, इसे सम्पोषित कर रही थी, बहाउल्लाह के मस्तिष्क से प्रवाहित होने वाली शक्ति के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं थी। इसका जन्म, इसके आगमन की भय–रहित और उचित घोषणा करने वाले भोर के उन संवाहकों के अनछिपे दृढ़संकल्प के कारण हुआ, जो इस बात के लिए भी उतने ही दृढ़ संकल्पित थे कि यदि समझाने बुझाने से काम नहीं चलेगा, तो वे अपने दुर्जन और तर्कहीन आक्रमणकारियों के हमलों को रोकेंगे और अपनी रक्षा करेंगे। किसी

भी प्रकार के संदेह की परछाईं से भी दूर, इससे यह प्रमाणित हो गया कि ईश्वर के मतवाले अप्रशिक्षित और साधन–विहीन एवं अधिकांशतया विद्यापीठ और मठों के गतिरहित विद्यार्थियों के इस दल के उन तीन सौ तेरह लोगों का अजेय साहस, तब क्या उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकता है जब वे आत्मरक्षा में, एक ऐसी प्रशिक्षित साधन–सम्पन्न सेना से टक्कर लेते हैं, जिसे जनता का समर्थन, धर्माचारियों का आशीर्वाद और शाही परिवार के राजकुमार का नेतृत्व प्राप्त हो, जिसके पीछे राज्य के संसाधनों की ताकत हो, जिसे अपने शासक की उत्साहयुक्त अनुमति प्राप्त हो और जो एक दृढ़ एवं सर्वशक्तिशाली मंत्री के सदा सफल परामर्शों से अनुप्राणित हो। इसका परिणाम था एक इतने घोर विश्वासघात का अन्त उन संहारपूर्ण नाटकीय परिस्थितियों में होना, जिन्होंने उन अपराधकर्ताओं को सदासर्वदा के लिए कलंकित कर दिया, जबकि इसका शिकार होने वालों को अमिट यश के तेजोमण्डल से विभूषित कर दिया और ऐसे बीज उत्पन्न किए, जो आगे चलकर विश्वव्यापी प्रशासनिक संस्थाओं में फलने–फूलने वाले थे और अवश्य ही, एक निश्चित समय आने पर, विश्व–मुक्तिदायक, विश्वव्यापी व्यवस्था के रूप में, अपना सुनहरा फल प्रदान करने वाले थे।

इस दुःखद वृतान्त का एक संक्षिप्त बयान देने का प्रयास भी अनावश्यक होगा, भले ही इसका महत्व कितना ही गम्भीर क्यों न हो और विरोधी इतिहासकारों द्वारा इसे कितना ही गलत क्यों न बताया गया हो। इसकी मुख्य विशेषताओं की एक झलक ही इन पृष्ठों के लिए पर्याप्त है। इस अत्यन्त दुःखान्त घटना के वृत्तान्तों का अध्ययन करने पर हम इसके शूरवीरों के धैर्य, उनकी बहादुरी, उनका अनुशासन और उनकी कार्यकुशलता को देखते हैं, जो उनके विरोधियों की नीचता, कायरता, अस्तव्यस्तता और अस्थिरता से बिल्कुल विपरीत थी। हम इसके प्रमुख नायकों में से एक, उस शेरदिल मुल्ला हुसैन द्वारा दर्शाया गया उत्कृष्ट धैर्य और श्रेष्ठ संयम देखते हैं जो तब तक अपनी तलवार उठाने से इन्कार करते रहे, जब तक कि बारफुरूश से लगभग तीन मील की दूरी पर, अत्यन्त अशोभनीय गालियाँ देने वाली एक क्रोधित भीड़ ने उनका रास्ता रोक कर उनके सात निर्दोष और दृढ़ साथियों को नहीं मार

गिराया। जब मुल्ला हुसैन और उनके साथी, सब्ज़ी–मैदान की सराय में चारों ओर से घिर गए थे तब, अज़ान पढ़ने का पावन दस्तूर पूरा करने के लिए सराय की छत पर एक के बाद एक चढ़ने वाले उनके तीन साथियों को शत्रुओं की गोलियों से तत्काल मार गिराया गया, तब मुल्ला हुसैन ने अज़ान पूरा करने के अपने दृढ़संकल्प में, आस्था की जो दृढ़ता प्रदर्शित की, उसके बारे में जानकर हम उनके प्रति प्रेम से भर उठते हैं। हम उस त्याग की भावना को देखकर अचम्भित रह जाते हैं जिन्होंने दुख़दायी रूप से अत्याचार पीड़ित इन व्यक्तियों को उस धन–सम्पत्ति से तिरस्कारपूर्वक मुँह मोड़ने के लिए प्रेरित किया था, जो पलायन करने वाले उनके शत्रु अपने पीछे छोड़ गए थे। हम उस त्याग की भावना को देखकर अचम्भित रह जाते हैं जिसने उन्हें, उनकी सम्पत्तियों का त्याग करने और अपने आप को घोड़ों और तलवारों से संतुष्ट कर लेने के लिए प्रेरित किया था, जिसने उस साहसी दल के एक सदस्य – बदी के पिता को इतना प्रेरित कर दिया था कि उन्होंने रत्नों से भरी उस थैली को सड़क के किनारे फेंक दिया, जो वे, निशापुर में अपने पिता की खदान से लाये थे। इस कृत्य को देखकर मिर्ज़ा मुहम्मद तक़ी–ए–जुवैनी ने इतनी ही कीमत के सोने–चांदी व नकदी फेंक दी थी। त्याग की इसी भावना ने, मुल्ला हुसैन के इन साथियों को बाध्य कर दिया था कि वे सजावट के उस महँगे सामान और सोने–चांदी के उन सन्दूकों को त्याग दें और इन्हें छूने से भी इन्कार कर दें, जिन्हें माज़िन्दरान की सेना का सेनापति और मुहम्मद शाह के उस हतोत्साहित और शर्मसार राजकुमार मेहदी–कुली मिर्ज़ा ने अपने शिविर से सिर पर पैर रखकर पलायन करते समय पीछे छोड़ दिया था। हम उस गहन सच्चाई का अनुमान नहीं लगा सकते, जिससे मुल्ला हुसैन ने राजकुमार से तब निवेदन किया था जब उन्होंने स्पष्ट शब्दों में राजकुमार को यह औपचारिक आश्वासन दिया कि शाह का अधिकार हड़पने या उसके राज्य की नींव उलटने का उनका या उनके साथी अनुयायियों का कोई इरादा नहीं है। हम उस मुख्य खलनायक, उस उन्मत्त, क्रूर और घमंडी सईदुल–उलेमा के आचरण को घृणा से देखने को बाध्य हो जाते हैं, जिसने, इन्हीं साथियों के निकट आने पर, उत्तेजना से भरे पागलपन में, स्त्रियों और पुरूषों की एक

विशाल भीड़ के सामने, अपनी पगड़ी फेंक दी थी, अपनी कमीज की कॉलर फाड़ दी और इस्लाम की दशा पर विलाप करते हुए, जनता से विनती की थी कि वे हथियार उठाएँ और निकट आने वाले इस दल का कत्लेआम कर दें। जब हम मुल्ला हुसैन के उस दैवी साहस के बारे में सोचते हैं तो हम अचम्भित रह जाते हैं, जिसने उन्हें उनकी दुर्बल शारीरिक स्थिति और कम्पित हाथों के बावजूद, एक ऐसे कपटी शत्रु का वध करने में समर्थ बनाया, जिसने एक पेड़ के पीछे शरण ली थी और जिसे मुल्ला हुसैन ने अपनी तलवार के मात्र एक एक ही वार से *पेड़, व्यक्ति और बन्दूक,* तीनों के दो टुकड़े करते हुए मार गिराया था। साथ ही, जब हम शेख तबरसी के किले के कुछ ऐसे दृश्यों की कल्पना करते हैं तो हम भाव–विभोर हो उठते हैं, जैसे कि, किले में बहाउल्लाह का प्रवेश करना, मुल्ला हुसैन की अपार प्रसन्नता, उनके सह–अनुयायियों का बहाउल्लाह को भक्तियुक्त आदर करना, मुल्ला हुसैन के साथियों द्वारा अपनी सुरक्षा के लिए शीघ्रता से निर्मित किए गए किलेबन्दी की व्यवस्था का बहाउल्लाह द्वारा निरीक्षण किया जाना, बहाउल्लाह का सलाह देना जिसके माध्यम से चमत्कारी ढंग से कुद्दूस का बाद के उस संघर्ष में बच जाना जिसमें वे किले के रक्षकों के नज़दीक रहकर संगत में संघर्ष कर रहे थे, इसकी घेराबंदी और अन्तिम विनाश से जुड़े पराक्रमों में उनकी प्रभावशाली प्रतिभागिता। हम कुद्दूस की धैर्यशीलता और विलक्षणता से चकित रह जाते हैं, उनके उस आत्मविश्वास से विस्मित रह जाते हैं जिससे उन्होंने अपने सह–अनुयायियों को अपने आगमन से उल्लसित कर दिया, हम उनके द्वारा प्रदर्शित की गई कार्यकुशलता से आश्चर्यचकित हो जाते हैं, तथा 'साद का समाद' पर उनकी प्रख्यात टिप्पणी के श्लोकों का सुबह–शाम गायन करने वाली उस आवाज़ के विषय में जानकर हम आश्चर्यचकित रह जाते हैं जिसे किले में घिरे हुए अनुयायी जोश और हर्ष के साथ सुनते थे। जब कुद्दूस, सरी नामक नगर में थे, तब इसी, 'साद का समाद' पर वे पहले ही एक लेख प्रस्तुत कर चुके थे जो कुरान की तुलना में तीन गुना बड़ा था, जबकि वे और उनके साथी, शत्रुओं के उग्र आक्रमण और अभावों को सहन कर रहे थे, वे उस व्याख्या में पहले जितने ही और श्लोक जोड़कर उस पर और अधिक प्रकाश डाल रहे थे।

रोमांचकारी हृदयों से हम उस यादगार मुठभेड़ का स्मरण करते हैं, जब, इस पुकार पर कि "ओ ईश्वर के शूरवीरों, अपने घोडों पर सवार हो जाओ !" मुल्ला हुसैन, अपने दो सौ दो, घिरे हुए और बुरी तरह से विपदाग्रस्त साथियों के साथ, कुद्दूस के नेतृत्व में दिन निकलने से पहले ही किले से बाहर निकलते और 'या साहिबुज़्ज़मान' का नारा लगाते हुए, पूरी रफ्तार के साथ राजकुमार के दुर्ग की ओर तेज़ी से बढ़ कर उसके निजी कमरे में घुसते ही देखते हैं कि राजकुमार अपनी भयाकुलता में अपने मेज़बान को मझधार में भौंचक्का छोड़कर, पीछे की एक खिड़की से खन्दक में कूद कर नंगे पाँव भाग निकलता है। हम अपनी तीक्ष्ण याददाश्त में मुल्ला हुसैन के जीवन के उस अन्तिम दिन को पुनः जीवित होते देखते हैं, जब मध्यरात्रि के तुरंत बाद प्रार्थना करके उन्होंने नए वस्त्र धारण किए और अपने सिर पर, बाब द्वारा प्रदान किया गया साफा पहना और अपने घोड़े पर सवार हुए और किले के दरवाज़ों को खोलने का आदेश दिया तथा बुलंद आवाज़ में "या साहिबुज़्ज़मान" का नारा लगाते हुए, अपने तीन सौ तेरह साथियों के साथ बाहर निकले। अपने साथियों के साथ वह उन सात अवरोधों को एक के बाद एक तोड़ते चले गए, जो उनके शत्रुओं ने उनके मार्ग में खड़े किए थे तथा उनमें से प्रत्येक को अधिकार में ले लिया, उन्होंने अपने ऊपर लगातार बरसने वाली गोलियों के बावजूद, अपने विरोधियों को खदेड़ते हुए उनकी ताकतों को छिन्न–भिन्न कर दिया। इसके बाद होने वाले दंगों में, मुल्ला हुसैन का घोड़ा, अचानक एक तम्बू की रस्सी में उलझ गया, इसके पहले कि वे अपने आपको छुड़ा पाते उनके सीने में एक गोली लगी, जिसे उस कायर अब्बास–कुली खान–ए–लारीजानी ने तब चलाई थी जब वह पास ही के एक पेड़ से लगी झाड़ियों में घात लगाये छिपा बैठा था। हम उस साहस की जयजयकार करते हैं जिसने, बाद की एक मुठभेड़ में, उन साहसी हृदय वाले साथियों में से उन्नीस व्यक्तियों को प्रेरित किया जब वे शत्रुओं के उस शिविर में बेखौफ कूद पड़े थे जिसमें पैदल सेना और घुड़सवार फौज की कम से कम दो पलटनें थीं। उन्होंने वहाँ जाकर ऐसी घबराहट उत्पन्न कर दी कि उनका एक नेता, अब्बास–कुली खान, अपने घोड़े से गिर गया और अपना एक जूता रकाब में लटकता हुआ छोड़कर, आधा नंगा, घबराया हुआ राजकुमार के

पास पहुँचा और अपनी घृणित हार स्वीकार की। हम उस क्रान्तिवान धैर्य का उल्लेख करने से भी नहीं चूक सकते हैं जिसके साथ इन शूरवीर आत्माओं ने अपनी कठोर विपत्तियों के बोझ को सहन किया जब, शुरू में शत्रुओं के वीरान शिविरों से लाए गए घोड़ों का मांस उनका भोजन बना, बाद में, जब उन्हें ऐसी घास से अपने आपको संतुष्ट करना पड़ा जो वे उन खेतों से लाते थे जहाँ उन्हें अपने शत्रुओं के आक्रमण से थोड़ा–बहुत विराम मिल जाता था। आगे चलकर, वे पेड़ों की छाल, अपनी कमरबन्द और म्यानों का चमड़ा खाने के लिए विवश हो गए; हम उस साहस की जयजयकार करते हैं, जो उन्होंने तब दिखाया जब भोजन के नाम पर अट्ठारह दिनों तक उनके पास पानी के सिवाय कुछ भी नहीं था, जिसकी एक घूँट वे प्रत्येक सुबह पीते थे; जब शत्रुओं की तोपों की आग ने उन्हें किले में भूमि के नीचे एक मार्ग तैयार करने को विवश कर दिया जहाँ पानी और मिट्टी के बीच रहने से उनके कपड़े कीचड़ में सन गए और सीलन और गीलेपन के कारण गलने लगे, ऐसे समय उन्हें पिसी हुई हड्डियाँ खाकर जीवित रहना पड़ा और अन्त में, जैसा कि एक तत्कालीन इतिहासकार ने लिखा है, जब वे तेज़ भूख से पीड़ित हो उठे थे, तो उन्हें अपने दिव्य नेतृत्वकर्ता, मुल्ला हुसैन के घोड़े को खोदकर बाहर निकालना पड़ा, और उसके टुकड़े करके, उसकी हड्डियाँ पीसकर, इसे सड़े हुए माँस के साथ मिलाकर पकाया जिसे वे तेज़ भूख के कारण निगल गए।

उस घृणित विश्वासघात का उल्लेख करना आवश्यक है, जो अन्त में उस कमज़ोर और बदनाम राजकुमार ने किया। साथ ही, उसकी उस शपथ का उल्लेख करना भी उतना ही आवश्यक है जो कहने को अटल थी, जिसे उसने क़ुरान के प्रारम्भिक श्लोक के हाशिये में लिखा था और उस पर अपनी मोहर लगाकर उस पावन ग्रंथ की सौगंध खाते हुए उसने किले के सभी रक्षकों को स्वतंत्र करने की ज़िम्मेदारी ली थी। उसने अपने पद की गरिमा के नाम पर यह शपथ ली थी कि उसकी सेना में या आस–पड़ोस के क्षेत्र में, कोई भी व्यक्ति उन्हें नहीं सताएगा और वह स्वयं, अपने खर्च पर उन्हें उनके घरों तक सुरक्षित पहुँचाने की व्यवस्था करेगा। अन्त में, हम उस काली दुःखान्त घटना के अन्तिम दृश्य को याद करते हैं, जब इसी राजकुमार द्वारा अपनी पावन

प्रतिज्ञा भंग करने के परिणामस्वरूप, धोखे में आने वाले कुद्दूस के कुछ साथियों को शत्रुओं के शिविर में एकत्रित किया, उनका सामान छीन कर उन्हें दासों के रूप में बेच दिया गया। शेष को अफसरों के भालों और तलवारों से मौत के घाट उतार दिया गया, या उनके शरीर को चीर–फाड़ दिया गया, अथवा पेड़ों से बाँधकर गोलियों से छलनी कर दिया गया, या तोपों से बाँधकर उड़ा दिया गया और आग में झोंक दिया गया, या उनके सिरों को धड़ से अलग करके बरछों या भालों पर टंगवा दिया गया। इसी डरपोक राजकुमार के एक और शर्मनाक कृत्य के कारण उनके प्रिय नेतृत्वकर्ता कुद्दूस को उस पैशाचिक सैदुल–उलेमा के हवाले कर दिया गया, जिसने अपनी कभी न बुझने वाली शत्रुता के कारण, उस भीड़ की सहायता से, कुद्दूस के कपड़े फाड़ दिए, उन्हें ज़ंजीरों से लाद दिया, उन्हें बारफुरूश की गलियों में घुमाया और उन पर थूकने, चाकू और कुल्हाड़ियों से वार करने, उनके शरीर को काटने–फाड़ने और तार–तार करके इसके टुकड़ों को आग में झोंकने के लिए नगर की स्त्रियों के भीतर के शैतान को उकसाया।

प्रभुधर्म के लिए इतनी गौरवशाली और शत्रुओं के नाम पर इतनी कालिख पोत देने वाली इस हृदय–विदारक घटना; जिसे आधुनिक दौर के इतिहास की एक अद्भुत घटना कहा जाना चाहिए, के बाद एक उतनी ही भीषण उथल पुथल मची। इस उथल–पुथल की मुख्य विशेषताएँ आश्चर्यजनक रूप से पहले की घटना से मिलती जुलती थीं। विपत्तियों का दृश्य अब दक्षिण के फारस प्रांत में, उस शहर के निकट दिखाई दे रहा था जहाँ से प्रभुधर्म का उदय हुआ था। इस ताज़ा अग्निपरीक्षा की सम्पूर्ण ज्वाला नैरीज़ और इसके इर्द–गिर्द के इलाकों में भड़की। उस उत्तेजित गाँव के चिनार–सुख़तिह नामक स्थान के निकट स्थित खाजिह का किला इस नए तूफान का केन्द्र बना। वह शूरवीर जिसने अपने साथियों का नेतृत्व किया था और दिलेरी से संघर्ष करते हुए, जो इस काण्ड का शिकार बने, वह थे अपने युग के एक बेजोड़ और अद्वितीय व्यक्तित्व, "प्रख्यात सैय्यद याहया–ए–दाराबी", जो वाहीद के नाम से बेहतर जाने जाते हैं। इस अग्नि को प्रज्वलित करने वाला, इसे बढ़ावा देने वाला और वाहीद के दगाबाज़ शत्रुओं में प्रधान, नैरीज़ का वह नीच और हठधर्मी राज्यपाल ज़ैनुल

आबदीन खान था, जिसे उस शाजुल–मुल्क, अब्दुल्लाह खान का समर्थन और शीराज़ के राज्यपाल, राजकुमार फीरोज़ मिर्ज़ा की ताकत प्राप्त थी। ग्यारह माह चलने वाले माज़िन्दरान के संघर्ष से कम अवधि के इस काण्ड के अन्तिम चरण को चिन्हित करने वाला अत्याचार, अपने परिणामों में, माज़िन्दरान की घटना से कम विध्वंसकारी नहीं था। इस प्रकरण में, एक बार फिर मुट्ठीभर बेगुनाह, आज्ञाकारी, शान्तिप्रिय किन्तु उत्साही और अजेय व्यक्तियों को, जिनमें से कुछ अप्रशिक्षित लड़के और बुजुर्ग थे – एक क्रूर और कपटी शत्रु की उस उच्चतर ताकत ने चौंका दिया, चुनौती दी और घेर लिया, जिसमें हट्टे–कट्टे शरीर के असंख्य ऐसे आदमी थे, जो प्रशिक्षित थे, पर्याप्त शस्त्रों से लैस थे और लगातार समर्थन प्राप्त कर रहे थे। फिर भी, ये बाब के मुट्ठीभर अनुयायियों को झुकने के लिए विवश करने या उनके साहस को दबाने में अक्षम थे।

इस तूफान की शुरूआत आस्था के वैसे ही निडर और जोशीले प्रदर्शनों से और धार्मिक उत्साह के वैसे ही प्रबल और नाटकीय दृश्यों से हुई, जैसी घटनाओं ने माज़िन्दरान की उथल पुथल को जन्म दिया था। इसे उकसाने वाले हठी धर्माचारियों के विरोध का प्रकोप उतना ही सतत् और हिंसक था, इसकी बराबरी करने वाले अन्धे धार्मिक कट्टरपन का वैसा ही रूप देखने को मिला, इसे उकसाने वाले कृत्य, धर्माचारियों और जनता के आक्रमण के नंगे नाच के वैसे ही कृत्य थे, इसमें भी उसी उद्देश्य को एक बार फिर प्रदर्शित किया गया और इसे लगातार अनुप्राणित करने वाला जोश वैसा ही था, यह भी दैवी वीरता, धैर्य, साहस और त्याग की वैसी ही ऊँचाईयों पर पहुँचा। सामान्य शत्रु को समाप्त करने के लिए नागरिक और धर्माचारी प्राधिकार के बीच उतनी ही चालाकी से रची गईं सुविचारित योजनाओं और प्रयासों का वैसा ही समन्वय देखा गया। इसके पहले भी बाबियों द्वारा, प्रांत के नागरिक कार्यक्षेत्र के साथ किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप का वैसा ही खण्डन किया गया। इसमें भी, अत्याचारी के निर्दयी और अनुचित रूप से किए गए आक्रमण के समक्ष बाबियों के संयम और धैर्य का उतना ही विश्वास दिलाने वाला प्रमाण मिला। जब यह अपनी चरम सीमा पर पहुँचा, तब इसने उतने ही अद्भुत ढ़ंग से एक आध्यात्मिक रूप से दीवालिए शत्रु की कायरता, अनुशासनहीनता और नीचता को वैसे ही खोल कर रख दिया।

अपने अन्त के नज़दीक पहुँचते हुए, यह भी वैसे ही नीच और लज्जाजनक विश्वासघात से अंकित हुआ। इसका अन्त ऐसे संहार में हुआ जिससे उत्पन्न होने वाला संत्रास इसके परिणामस्वरूप जन्म लेने वाला रंज, और भी अधिक घृणा उत्पन्न करने वाला था। इसने उस वाहीद का भाग्य लिख दिया, जिसे उनके गौरवपूर्ण वंश की निशानी – उनके हरे साफे से उन्हें एक घोड़े पर बाँधकर अपमानजनक ढंग से गलियों में घसीटा गया, इसके बाद उनका सिर कलम कर दिया गया और उसे भूसे से भरकर शीराज़ में जश्न मना रहे राजकुमार को विजय–चिन्ह स्वरूप भेंट किया गया, जबकि उनके शरीर को नैरीज़ की क्रोधित महिलाओं के हवाले कर दिया गया, जिन्होंने एक विजयी दुश्मन के हर्षोन्माद से भरे शोर के नशे में पशु–समान आनन्द उठाते हुए ढोल–मंजीरों की ताल पर वाहीद के शरीर की परिक्रमा करते हुए नृत्य किया। और अन्त में, इस काण्ड के परिणामस्वरूप, इन असहाय बाबियों पर, कम से कम पाँच हजार ऐसे आदमियों की सहायता से एक भयानक घातक आक्रमण किया गया, जिन्हें इस कार्य के लिए विशेष रूप से अधिकृत किया गया था। बाबियों की सम्पत्तियाँ छीन ली गईं, उनके घर बरबाद कर दिए गए, उनके सुरक्षा शिविर जला कर राख कर दिए गए, उनकी स्त्रियों और बच्चों को गिरफ्तार कर लिया गया, जिनमें से कुछ को लगभग निर्वस्त्र कर दिया गया, उन्हें गधों, खच्चरों और ऊँटों पर बैठाकर, उन्ही के उन भाईयों, पिताओं, बेटों और पतियों के निर्जीव शरीरों से अलग किए हुए सिरों की लम्बी कतारों के सामने से ले जाया गया, जिन्हें पहले ही लोहे की सलाखों से जलाया गया था या जिनके नाखून नोंच कर बाहर निकाल दिए गए थे, या जिन्हें बेतों से मार कर मौत के घाट उतार दिया गया था, या जिनके हाथ–पैरों में कीलें ठोकी गईं थीं, या जिनकी नाक में छेद करके रस्सी निकाली गई थी या जिन्हें पकड़कर क्रोधित और मज़ाक उड़ाने वाले लोगों की भीड़ से भरी गलियों से ले जाया गया था।

इतनी विनाशकारी और दुःखद उथल पुथल अभी थमी भी नहीं थी कि पहले की दो घटनाओं से भी अधिक विनाशकारी उपद्रव ज़नजान और इसके आस–पास के इलाकों में भड़क उठा। इसकी अवधि और इसकी ज्वाला की लपेट में आने वाले लोगों की संख्या अपूर्व थी। पश्चिमी फारस में उठने वाले

इस हिंसक तूफान में, हुज्जत की उपाधि से सम्मानित प्रभुधर्म के सबसे योग्य और साहसी शूरवीरों में एक, मुल्ला मुहम्मद अली–ज़नजानी के साथ–साथ उनके अट्ठारह सौ सह–अनुयायी भी वीरगति को प्राप्त हुए, जिनके माध्यम से इस नवजात धर्म के प्रकाश–स्तम्भों को उस अत्याधिक बीमार व्यवस्था के नागरिक और धर्माधिकारियों को अलग करने एवं कभी न मिटने वाली दूरी, और भी स्पष्ट दिखायी देने लगी। इस भयंकर दुःखान्त घटना के लिए मुख्य रूप से ज़िम्मेदार और इससे तात्कालिक रूप से जुड़े हुए मुख्य लोग थे, नसीरूद्दीन शाह का चाचा, वह विद्वेषी और पाखण्डी मजुद्दौली अमीर अर्सलान खान और उसके साथी, सदरुद्दौली इस्फहानी तथा मुहम्मद खान, जिन्हें, अमीर–निज़ाम के आदेशानुसार एक ओर तो सेना की बड़ी ताकत की सहायता प्राप्त थी तथा दूसरी ओर ज़नजान के सम्पूर्ण धर्माधिकारियों के समूह का उत्साहपूर्ण समर्थन मिला था। इन साहसी प्रयासों का रंगमंच, इस अत्याधिक दुःखदायी पीड़ा का दृश्य और क्रोध से भरे एवं बार–बार दोहराए जाने वाले इस आक्रमण का निशाना बनने वाला स्थान था अली मरदान खान का वह किला, जिसमें एक समय, कम से कम तीन हजार बाबियों ने शरण ली थी। जिनमें वे पुरूष, महिलाएँ और बच्चे भी सम्मिलित थे जिनकी वेदना की कहानी की मिसाल एक सम्पूर्ण सदी के इतिहास में नहीं मिलती।

प्रभुधर्म के आरम्भिक दौर में उसे अपरिमेय क्षमताओं से सम्पन्न करने वाले इस शोकमय वृत्तान्त की कुछ मुख्य विशेषताओं का एक संक्षिप्त उल्लेख ही इसके विशिष्ट स्वरूप को उजागर करने के लिए पर्याप्त है। इस खूनी संघर्ष की विशेषताओं के रूप में उभरकर आने वाली घटनाएँ हैं, ज़नजान के राज्यपाल के आदेशानुसार, एक ढिंढोरिये के माध्यम से वहाँ के निवासियों को दो अलग–अलग खेमों में विभाजित किए जाने वाले हृदयविदारक दृश्य, जिनमें सांसारिक रूचि और मोह को, एक अधिक शक्तिशाली स्वामिभक्ति के लिए त्याग दिया गया; हिंसा और आक्रमण के कृत्यों से दूर रहने के लिए बाबियों को बार–बार दी जाने वाली हुज्जत की सलाह; हुज्जत का यह कथन कि उनकी विजय केवल इसी में है कि वे अपना सर्वस्व उस साहिबुज़्ज़मान के धर्म की वेदी पर चढ़ा दें और उनकी यह घोषणा, कि उनके शासक की निष्ठापूर्ण

सेवा और जनता के शुभचिन्तक बनना उनके साथियों का अपरिवर्तनीय निश्चय है; भौंचक्का कर देने वाली वह निर्भयता जिससे इन्हीं साथियों ने एक ऐसे अतिक्रूर आक्रमण का सामना किया जो उस सद्रुद–दौलिह ने शुरू किया था और जिसे अन्त में अपनी घृणित असफलता स्वीकार करनी पड़ी थी, जिसके कारण शाह ने फटकार लगाकर पदावनत कर दिया था। इस काण्ड की एक और विशेषता थी वह अवज्ञा, जो किले के निवासियों ने उस ढिंढोरिये के अनुरोधों की प्रतिक्रिया में दर्शाई थी, जिसे भड़के हुए शत्रुओं ने किले के निवासियों को धर्म छोड़ने के लिए बहकाने और शाह की ओर से उदार उपहारों के वादे देकर फुसलाने के लिए भेजा था; ज़ैनब नाम की एक गाँव की उस कन्या की कुशलता और हिम्मत, जिसने, किले के रक्षकों की सहायता करने की अपनी अदम्य लालसा में, पुरूष के वस्त्र पहन लिए, अपने केश काट लिए, कमर पर तलवार लटका ली और, 'या साहिबुज़्ज़मान' का नारा लगाते हुए जो आक्रमणकारियों का पीछा करने के लिए आगे बढ़ी और जिसने, भूख और आराम की परवाह न करते हुए, पाँच महीनों तक उस उथल–पुथल के मध्य, अपने पुरुष–साथियों के उत्साह को बनाए रखा और उनकी सहायता करना जारी रखा; इस काण्ड की एक और विशेषता यह है कि जिस रात को किले की मोर्चाबन्दी के रक्षकों को, पाँच प्रार्थनाओं का पाठ करने की बाब की आज्ञा प्राप्त हुई, उसी रात, उन्होंने विस्मयकारी जोश के साथ अपनी पूरी ताकत से इन प्रार्थनाओं को उच्चारित किया, जिसके परिणामस्वरूप शत्रुओं के खेमे के कुछ लोगों की मृत्यु हो गई, कामुक अफसरों ने अपने शराब के प्यालों को तत्काल ज़मीन पर फेंक दिया, जुए की मेज़ों को पलटकर गिरा दिया और नंगे–पाँव भाग निकले, साथ ही, दूसरों को भी आधे वस्त्रों में ही जंगलों की ओर भाग जाने के लिए या आकस्मिक भय की अवस्था में उलेमाओं के घरों की ओर पलायन करने के लिए प्रेरित किया। इसी प्रकार, हमें शत्रुओं के खेमे की वह अव्यवस्था, वे अपशब्द, वह अश्लील हँसी, वह विलासिता और अपमान के विपरीत उस किले का भक्तियुक्त उपासना से भर देने वाला वातावरण याद आता है, जहाँ से स्तुति के धर्मगीत एवं आनन्द के भजनों की आवाज़ निरंन्तर सुनाई पड़ती थी। हम उस अनुरोध का भी उल्लेख करने से नहीं चूक सकते,

जिससे हुज्जत और उनके मुख्य समर्थकों ने शाह को सम्बोधित किया था और जिसमें उन्होंने शत्रुओं के विद्वेषी कथनों का खण्डन किया था, शाह और उसकी सरकार को अपनी वफादारी का तथा राजा की उपस्थिति में अपने धर्म की सार्थकता स्थापित करने के लिए तैयार होने का आश्वासन दिया था; परन्तु राज्यपाल ने इन संदेशों में लिखी गई बातों को बदल दिया और इनके स्थान पर अपशब्दों से भरे नकली पत्र तेहरान भेज दिए। हमें किले की स्त्रियों द्वारा प्रदान किया गया उत्साहजनक समर्थन, जयजयकार के नारे याद आते हैं और उस उत्साह का स्मरण हो उठता है जिसके साथ उनमें से कुछ ने पुरूषों का वेष धारण करके किले एवं अपने शहीद साथियों की रक्षा करने की शीघ्रता की थी और अन्य ने बीमारों की देखभाल की थी तथा घायलों के लिए अपने कंधों पर पानी ढोया था। कुछ अन्य ने, पूर्व की कार्थाजिनियन स्त्रियों की भाँति अपने लम्बे केशों को काटकर उन्हें बन्दूकों के इर्द–गिर्द कस दिया था ताकि उन्हें सहारा दिया जा सके; हमें घेरने वाले उन शत्रुओं का विश्वासघात याद आता है, जिन्होंने, अपने वचन के प्रमाण स्वरूप कुरान की एक प्रति के साथ हुज्जत को शान्ति का एक अनुरोध लिख भेजा, परन्तु उसी दिन अपने वचन को भंग करते हुए, उन्होंने बच्चों सहित, प्रतिनिधि समूह के सदस्यों को कैद में डाल दिया और वे उन बाबियों के आदरणीय नेता की दाढ़ी नोचकर उखाड़ने और उनके एक सह–अनुयायी के शरीर को बर्बरता से नोंचकर टुकड़े–टुकड़े करने से नहीं झिझके। इसके अतिरिक्त हम हुज्जत की उस विशालता को याद करते हैं जिन्होंने, अपनी पत्नी और बच्चे के आकस्मिक निधन के बावजूद, अविचलित हुए बगैर शान्ति के साथ तब तक अपने साथियों को धैर्य रखने और स्वयं को ईश्वरेच्छा के समक्ष झुका देने की सलाह दी जब तक उन्होंने शत्रुओं द्वारा दिए गए घाव के कारण दम नहीं तोड़ दिया। संख्या और संसाधनों में अधिक शक्तिशाली शत्रुओं ने जिस बर्बरता से अपने शिकार से बदला लिया और उन्हें संहार एवं लूट–खसोट के हवाले किया, उसकी व्यापकता और भयानकता वीभत्स है। इस कार्य में अति लोभी सेना, लालची जनता और अतृप्त धर्माधिकारी वर्ग पूर्णरूप से व्यस्त थे। भूखे–प्यासे, और कम वस्त्रों में लिपटे स्त्री और पुरुष बाबी बन्दियों को कम से कम पन्द्रह दिन तक

असाधारण शीत के मौसम में दर्दनाक ठंड में तड़पाया गया और इस दौरान औरतों की भीड़ उनके आसपास खुशी से नाच रही थी, उन पर थूक रही थीं और अपशब्दों से उन्हें अपमानित कर रहीं थी। अन्य बाबियों को तोपों से उड़ा दिया गया, बर्फीले ठंडे पानी में डालकर बेतों से निर्दयता से मारा गया, उनकी खोपड़ियों को उबलते तेल में डुबो दिया गया, उन पर चिकनाई पोतकर उन्हें बर्फ पर मरने के लिए छोड़ दिया गया, और अन्त में उस धूर्त राज्यपाल की कभी न तृप्त होने वाली घृणा ने उसे बाध्य कर दिया कि उसने हुज्जत के सात–वर्षीय पुत्र को फुसलाकर उस स्थान का पता बताने के लिए उकसाया जहाँ उसके पिता को दफनाया गया था, उसकी इसी घृणा ने उसे बाध्य किया कि वह हुज्जत की कब्र से उसकी लाश निकलवाने, उसे ढोल नगाड़ों की धुन पर ज़नजान की गलियों से घसीटने और तीन दिन एवं तीन रातों तक उस पर अकथनीय वार करने के आदेश दे। ज़नजान की कथा से जुड़ी यह घटना और अन्य मिलती–जुलती घटनाएँ, जिनका वर्णन लॉर्ड़ कर्ज़न ने "भीषण घेरा और संहार" जैसे शब्दों से किया है – मिलकर इसे एक ऐसे निराशाजनक गौरव से विभूषित करती हैं जो बहाउल्लाह के धर्म के शौर्यकाल के इतिहास में इस प्रकार के किसी भी वृत्तान्त की तुलना में अतुलनीय है।

बाब के सेवाकाल के अन्तिम वर्षों के दौरान फारस के अन्य प्रांत, चाहे वे पूरब में हों, या पश्चिम में, दक्षिण में हों या देश के हृदय और केन्द्र में, विपत्तियों के ज्वार की चपेट से अभेद्य न रह सके। बाब की शहादत के चार माह पूर्व, यद्यपि छोटे पैमाने पर और कम नाटकीय परिस्थितियों में देश की आन पर कीचड़ उछालने वाले संहार में भाग लेने की तेहरान की बारी आई। उस शहर में एक ऐसा दुःखान्त वृतांत संचालित किया जा रहा था जो उस भोग–विलास भरे संहार की एक झलक मात्र ही सिद्ध हुआ जिसने, बाब की हत्या के बाद, तेहरान के निवासियों को हिला कर रख दिया और सीमांत के प्रांतों तक भयाकुलता के बीज बो दिए। इसकी शुरूआत उस व्यग्र और खूनी अमीर निज़ाम के आदेशों से, उसी की आँखों के सामने हुई जिसे महमूद खान–ए–कलन्तर का समर्थन और जिसे काशान के हुसैन नाम के एक उलेमा की सहायता प्राप्त थी। उस दुःखान्त घटना के शूरवीर थे तेहरान के सात

शहीद, जो उस देश के अत्यन्त महत्वपूर्ण वर्ग के लोगों में से थे, और जिन्होंने, सदियों से संकट की घड़ी का एक न्यायसंगत और वास्तव में प्रशंसनीय उपाय मानी जाने वाली शिया इस्लाम की ताक़ियेह नामक केवल शाब्दिक अस्वीकृति से अपनी जान बचाने से इन्कार कर दिया। शहादत के उस अत्यन्त इच्छित सम्मान को गँवा देने के लिए इन सप्त वीरों में से एक को भी मनाने में न तो इनके व्यावसायिक क्षेत्र के उच्चाधिकारियों के बार–बार दोहराए गए पुरज़ोर अनुनय और हस्तक्षेप सफल हो सके, न ही, वह बड़ी रकम सफल हो सकी जो शीराज़ और तेहरान के दौलतमन्द व्यापारी फिरौती के रूप में बाब के मामा अर्थात कुलीन और शान्त हाजी मिर्ज़ा सैय्यद अली को देने के लिए उत्सुक थे। न ही एक अन्य बाबी – वह धर्मनिष्ठ और अत्यन्त आदरणीय दरवेश, मिर्ज़ा कुरबान अली के लिए राज्य के अधिकारियों के उत्तेजित अनुरोध सफल हो सके, यहाँ तक कि उस अमीर निज़ाम का व्यक्तिगत हस्तक्षेप भी सफल न हो सका जिसने इन दोनों साहसी व्यक्तियों को अपना धर्म त्याग देने के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया था। इन शहीदों द्वारा अपने आततायियों को जो निडर उत्तर दिए, अपनी मृत्यु के करीब पहुँचकर भी उन्होंने जिस परम आनन्द की अनुभूति की झलक दिखाई, अपने मृत्युदाताओं के सामने उन्होंने उल्लास भरे जो नारे लगाए, उनमें से कुछ ने अपने अन्तिम समय में अत्यंत कटु अर्थ प्रकट करने वाले जो छन्द पढ़े, पथराई निगाहों से देखते हजारों–हजार लोगों के सामने उन्होंने जो अपील और चुनौती भरे वाक्य बोले, जिस उत्सुकता के साथ अन्तिम तीन शहीदों ने एक से बढ़कर एक अपने रक्त से प्रभुधर्म का नाम मुहरबंद करना चाहा और अन्ततः सब्जी–मैदान में तीन दिन, तीन रातों तक पड़ी उनकी लाशों को – जिस दौरान हजारों तथाकथित 'श्रद्धालु' शियाओं ने उन्हें पैरों से रौंदा, उनके चेहरों पर थूका, पत्थर मारे शाप दिए, उनकी हँसी उड़ाई और उन पर लानतें भेजीं। रक्तपिपासु शत्रुओं ने किस तरह अपमानित किया, ये ही प्रमुख बातें थीं तेहरान के सात शहीदों की त्रासदी की – एक ऐसी त्रासदी जो बहाउल्लाह के धर्म के आरम्भिक वर्षों की एक अत्यंत दारुण घटना के रूप में अपना स्थान रखती है। कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि चिहरिक के किले की कैद में अपने दुःखों के बोझ से झुके हुए बाब ने एक ऐसी विस्तृत

स्तुति में इन सात शहीदों का जयघोष किया और उनकी प्रशंसा की, जिन्होंने बाब के धर्म के प्रति इनके प्रेम को, उन "सात बकरियों" की संज्ञा देते हुए अमर बना दिया, जो, इस्लाम की कहावतों के अनुसार, न्याय के दिवस में उस प्रतिज्ञापित काईम के 'आगे–आगे चलेंगी' और जिनकी मृत्यु उनके सच्चे गड़ेरिये की शहादत से पहले होगी।

बाब को प्राणदण्ड

प्रभुधर्म को प्रबलता के साथ क्षति पहुँचाने वाली विपदा की लहरों ने अन्त में बाब के सबसे सक्षम, सबसे प्रिय और सबसे विश्वसनीय शिष्यों को एक–एक करके निगल लिया और जैसा कि हम पहले ही जान चुके हैं, स्वयं बाब को भी अकथनीय दुःख में डुबो दिया। चिहरिक के इस कैदी के इतिहासकार ने अंकित किया है कि कम से कम छः माह तक, बाब न कुछ लिख सके न लिखवा सके। अपने सबसे योग्य योद्धाओं की अन्तहीन विपत्तियों, किले में कैद बाबियों द्वारा उठाए गए घोर कष्टों और बचे हुए लोगों के लज्जाजनक विश्वासघात, बन्दियों द्वारा सहन की गई कष्टदायक यातनाओं तथा स्त्री, पुरूष और बच्चों के घृणित कत्ले–आम के साथ–साथ उनके मृत शरीरों के घोर अनादर के प्राप्त होने वाले बुरे समाचारों के दुःख से चूर–चूर होने के कारण नौ दिनों तक बाब न किसी से मिले और न ही कुछ उत्कृष्ट खाद्य पदार्थ का सेवन कर सके। उनके लिपिक ने इस बात की पुष्टि की है। उनकी आँखें निरन्तर आँसू बहाती रहीं और अपनी एकाकी एवं उदास अवस्था में, अपने कारावास में पाँच माह तक उनके घायल हृदय से दारुण कष्ट और विह्वलता का प्रवाह बहा करता था।

उनके नवजात धर्म को घेरने वाले तूफान के प्रारम्भिक काल में ही इसके अधिकांश स्तम्भों को गिरा दिया गया था। कुद्दूस, जिन्हें "इस्मुल्लाहिल–आखिर" (ईश्वर के अन्तिम नाम) की उपाधि के रूप में बाब की ओर से अमरता प्रदान की गई थी, जिन्हें आगे चलकर, कुल्लुत–तआम नामक बहाउल्लाह की एक पाती में "नुक्ता–ए–अख्रा" (अन्तिम बिन्दु) की उत्कृष्ट उपाधि से सम्मानित

किया गया था, एक अन्य पाती में उनके *"प्रकटीकरण के अग्रदूत के अतिरिक्त अन्य सभी की तुलना में एक अद्वितीय पद पर उन्नत किया गया था"*; जिन्हें बहाउल्लाह ने और एक पाती में, कुरान में उल्लिखित उन *"संदेशवाहकों"* में से एक बताया था, जिन पर *"पाखंडी होने का आक्षेप लगाया गया था।"* फारसी बयान ने जिनकी प्रशंसा उस सह–तीर्थयात्री के रूप में की थी *"जिसकी परिक्रमा आठ वाहीद की संख्या में दर्पण करते हैं; जिनकी "अनासक्ति तथा ईश्वर इच्छा के प्रति जिनकी निष्ठा की सच्चाई पर स्वयं ईश्वर भी देवदूतों के समक्ष गर्व करते हैं"*; जिन्हें अब्दुल बहा ने *"मार्गदर्शन के चन्द्रमा"* के रूप में नामित किया है और दिव्य सेंट जॉन के प्रकटीकरण में, उन दो *"साक्षियों"* में से एक के रूप में जिनके प्रकट होने की प्रतीक्षा की गई थी, जो उस *"दूसरे संताप के समाप्त होने के पूर्व, ईश्वर से पुनर्जीवन प्राप्त करेंगे"* – ऐसे कुद्दूस ने – बहाउल्लाह अनुप्रमाणित करते हैं – अपनी भरी जवानी में, बारफुरूश के सब्ज़ी मैदान में ऐसी मौत को गले लगाया, जिसे ईसा मसीह ने भी अपने गहनतम कष्ट की घड़ी में नहीं देखी थी। बाबुल–ए–बाब (द्वार के द्वार) की उपाधि से सम्मानित प्रथम जीविताक्षर, मुल्ला हुसैन; जिन्हें *"आदिदर्पण"* की उपाधि से सम्मानित किया गया था, जिन पर बाब ने क़ुरान के श्लोकों की संख्या से तीन गुना अधिक स्तुतियाँ, प्रार्थनाएँ और तीर्थयात्रा की पातियों का उदार प्रकटीकरण किया था; जिन्हें इन्हीं स्तुतियों में बाब ने *"मेरे हृदय के प्रिय"* जैसे शब्दों से सम्बोधित किया था; और जिनकी समाधि की धूल को इसी लेखनी द्वारा इतना शक्तिशाली बताया गया था जिससे दुःखियों को खुशी और रोगियों को स्वास्थ्य प्राप्त होगा; जिनसे बाबी विधान के *"आरम्भ और अन्त में उत्पन्न किए गए प्राणी"* ईर्ष्या करते हैं और *"न्याय के दिवस"* तक ईर्ष्या करते रहेंगे, जिनका *किताब–ए–ईक़ान* ने उस व्यक्ति के रूप में अभिनन्दन किया है जिनके बगैर *"ईश्वर का, अपनी कृपा के आसन पर विराजमान होना सम्भव नहीं था, न ही अनन्त महिमा के सिंहासन पर ईश्वर का प्रतिष्ठित होना सम्भव था"*; जिन्हें सैय्यद काज़िम ने ऐसी प्रशंसा से सम्मानित किया था कि उनके शिष्यों को यह भ्रम हो गया कि ऐसी प्रशंसा के योग्य व्यक्ति स्वयं प्रतिज्ञापित काईम ही हो सकते हैं – ऐसे मुल्ला हुसैन भी, अपनी युवावस्था में ही तबरसी

में वीरगति को प्राप्त हुए। वाहिद, जिन्हें *किताब–ए–ईक़ान* में *"अपने युग का अद्वितीय और विलक्षण व्यक्ति घोषित किया गया था,"* अपार विद्वतासम्पन्न व्यक्ति थे और इस धर्म से जुड़ने वाले अपने युग की सबसे प्रतिष्ठित विभूति थे, जिनकी *"प्रतिभाओं और साधुत्व', विज्ञान और दर्शनशास्त्र की उच्च उपलब्धियों"* की साक्षी स्वयं बाब ने अपनी दलाइल–ए–साबिह (सात प्रमाण) में दी है। जो, इसी प्रकार की परिस्थितियों में, एक अन्य उथल–पुथल के भंवर में डूब चुके थे और शीघ्र ही, अपनी बारी में, शहादत का वह प्याला पीने वाले थे जिसे माज़िन्दरान के शूरवीर शहीद अन्तिम घूँट तक खाली कर चुके थे। प्रत्यक्ष हठधर्मी, अदम्य साहस, विशिष्ट मौलिकता और प्रचंड जोश वाले एक और शूरवीर थे हुज्जत, जो इस भट्टी में तीव्रता के साथ और अटल रूप से खिंचे जा रहे थे, जिसकी लपटें ज़नजान और इसके आस–पास के इलाकों को पहले ही निगल चुकी थीं। इसके साथ–साथ, बाब के मामा – जो उन्हें बचपन से पिता का प्यार देने वाले एकमात्र व्यक्ति थे – को भी तेहरान के जल्लाद की कुल्हाड़ी से उनसे अलग कर दिया गया था। उनके चुनिन्दा शिष्य, उन जीविताक्षरों की कम से कम आधी संख्या उनसे पहले शहीद हो चुकी थी। अब तक जीवित बची ताहिरा भी साहस के साथ एक ऐसे मार्ग पर आगे बढ़ रहीं थीं जो उन्हें निश्चित रूप से उनके अन्त तक पहुँचाने वाला था।

दुःखान्त धर्मकाल की चिन्ताओं, निराशाओं, विश्वासघातों और दुःखों से भरा तीव्रता से घटता हुआ एक जीवन अब अपनी चरम सीमा पर पहुँच रहा था। इस नए विधान के शौर्यकाल का सबसे उथल–पुथल वाला दौर तेज़ी से अपने अन्त को प्राप्त हो रहा था। उस विधान के अग्रदूत द्वारा चखा गया दुःखों का वह कड़वा प्याला भरकर छलकने लगा था। सत्य ही, बाब स्वयं ही अपनी भावी मृत्यु की भविष्यवाणी कर चुके थे। अपने एक अन्तिम लेख, किताब–ए–पान्ज–शॉन में उन्होंने इस तथ्य की ओर संकेत दिया था कि उनके ध्येय की घोषणा का छठवाँ नवरोज़, धरती पर उनके द्वारा मनाया जाने वाला अन्तिम नवरोज़ होगा। 'हा' अक्षर की उनकी व्याख्या में उन्होंने शहादत की तीव्र इच्छा व्यक्त की थी, जबकि क़य्यूमुल–अस्मॉ में उन्होंने अपने यशस्वी कार्य के ऐसे अन्त की अटलता की वास्तविक भविष्यवाणी की थी। यहाँ तक

कि, चिहरिक से उनके प्रस्थान के चालीस दिन पहले, उन्होंने अपने पास मौजूद समस्त दस्तावेज़ एकत्रित करके अपनी कलमदान, मोहरों और अँगूठियों सहित, एक जीविताक्षर मुल्ला बक़ीर को इस निर्देश के साथ सौंप दिए थे कि वे इन्हें, मुल्ला अब्दुल करीम–ए–क़ाज़वीनी, जिन्हें मिर्ज़ा अहमद का उपनाम प्रदान किया गया था, को सौंप दें, जिनका कार्य होगा इन्हें बहाउल्लाह तक पहुँचाना।

जब माज़िन्दरान और नैरीज़ की हिंसक उथल पुथल अपने–अपने खूनी रास्तों पर अग्रसर हो रही थी, तब अपने देशवासियों, अपनी सरकार तथा अपने शासक पर इनके प्रतिघात से भयभीत और इन दारूण घटनाओं के महत्व पर बड़ी बेचैनी से विचारमग्न नसीरूद्दीन शाह का महामंत्री, अपने मन में उस भाग्य निर्णायक निर्णय पर बड़ी उत्कण्ठा से विचार कर रहा था, जो न केवल उसके देश पर अपनी अमिट छाप छोड़ने वाला था, बल्कि जो समग्र मानवजाति के भाग्य के लिए असंख्य परिणामों से भरा हुआ था। अब तक उसे यह पूर्ण विश्वास हो चुका था कि बाब के अनुयायियों के खिलाफ की गई दमनकारी कार्यवाही ने उनके उत्साह की आग को और भी भड़का दिया था, उनके संकल्प को और भी दृढ़ कर दिया था और उनके सताए हुए धर्म के प्रति उनकी वफादारी को सम्पुष्ट कर दिया था। बाब के एकाकीपन और कैद ने अमीर–निज़ाम की उम्मीदों के बिल्कुल विपरीत प्रभाव डाला था। अत्यन्त घबराए हुए अमीर निज़ाम ने अपने पूर्वाधिकारी हाजी मिर्ज़ा अक़ासी की उस विनाशकारी नर्मी की कड़ी निंदा की, जिसके कारण मामला इस हद तक पहुँच चुका था। उसे लगा कि देश की सार्वजनिक और धार्मिक संस्थाओं को दूषित करने वाले इस घृणित विधर्म के लिए एक अधिक प्रचंड एवं एक अधिक दृष्टान्त–योग्य सजा दी जानी चाहिए। उसका मानना था कि ऐसे घिनौने सिद्धान्तों के निर्झर–स्रोत और इतने गत्यात्मक आंदोलन को चलाने वाली शक्ति के जीवन का अन्त करने से ही उस ज्वार में उतार आएगा जिसने पूरे देश में इतनी तबाही मचा रखी थी।

ज़नजान की घेराबन्दी अब भी तेजी से की जा रही पर थी, जब अपने राजा के आदेशों की अवहेलना करते हुए और अपने सलाहकारों एवं साथी–मंत्रियों

से बगैर परामर्श किए, अज़रबैजान के राज्यपाल, हिश्मातुद–दौलिह ने राजकुमार हम्ज़ी मिर्ज़ा को अपना आदेश भेजा और उसे बाब को प्राणदण्ड देने के निर्देश दिया। इस डर से कि कहीं उस प्रान्त की राजधानी में ऐसी निर्णायक सज़ा देने से ऐसी शक्तियाँ भड़क उठेंगी जिन्हें नियंत्रित करना उसके लिए असम्भव हो जायेगा, उसने यह आदेश दिए कि कैदी को तबरीज़ ले जाया जाए और वहाँ उसे मौत के घाट उतार दिया जाए। राजकुमार ने एक ऐसा कृत्य करने से साफ इन्कार कर दिया जिसे वह एक अपराध समझता था। ऐसे में अमीर–निज़ाम ने अपने ही भाई मिर्ज़ा हसन खान को अपने आदेशों के निष्पादन की जिम्मेदारी सौंपी। तबरीज़ के प्रमुख धर्माधिकारियों से आवश्यक अधिकार प्राप्त करने के लिए बनाई गई आम औपचारिकताओं को जल्दबाज़ी में और बड़ी सरलता से पूरा कर लिया गया। न तो तबरीज़ में बाब की जाँच–पड़ताल के ही दिन उनका मृत्यु–अधिपत्र लिखने वाला वह मुल्ला मुहम्मद–ए–ममक़ानी बाब से आमने–सामने मिलने को तैयार हुआ, न ही हाजी मिर्ज़ा बक़ीर और न ही वह मुल्ला मुर्तज़ा–कुली, जिनके घरों पर, महामंत्री के आदेशानुसार जल्लाद इस कैदी को अपमानपूर्वक ले गया था।

बाब के साथ किए गए अपमानजनक व्यवहार के तुरन्त पहले और उसके ठीक बाद, दो अत्यन्त महत्वपूर्ण घटनाएँ घटीं। ये ऐसी घटनाएँ थीं जिन्होंने बाब की शहादत के पहले दौर से जुड़ी रहस्यमय परिस्थितियों पर प्रकाश डाला। बैरक के एक कमरे में बाब द्वारा अपने लिपिक सैय्यद हुसैन के साथ की जा रही गोपनीय बातचीत को जल्लाद ने अचानक ही रोक दिया और सैय्यद हुसैन को एक तरफ ले जाकर उसने उसे फटकार लगाई। इस पर बाब ने उसे सम्बोधित करते हुए कहा : *"जब तक मैं उससे वह सब कुछ नहीं कह लेता जो मैं कहना चाहता हूँ, तब तक मुझे धरती की कोई ताकत चुप नहीं करा सकती। चाहे यह पूरा विश्व मेरे विरूद्ध सशस्त्र खड़ा हो जाए, फिर भी यह मेरे इरादे को अन्तिम अक्षर तक पूरा करने से मुझे रोकने में असमर्थ होगी।"* आरमिनियन रेजिमेण्ट के एक ईसाई कर्नल सैम खान को बाब का मृत्युदण्ड निष्पादित करने के आदेश दिए गए थे। वह भयभीत था कि कहीं उसके इस कृत्य से, वह ईश्वर के कोप को आमंत्रित न कर बैठे, इसलिए उसने बाब से

विनती की कि उस पर थोपे गए कर्त्तव्य से वे उसे मुक्ति दें। बाब ने उसे आश्वासन देते हुए कहा :*"अपने कर्त्तव्यों को पूरा करो और यदि तुम्हारी आकांक्षा सच्ची है, तो वह सर्वशक्तिशाली ईश्वर, निश्चित ही तुम्हारी इस व्याकुलता से तुम्हें मुक्त करेगा।"*

तदनुसार, सैम खान ने अपने कर्त्तव्य को पूरा करना शुरू किया। चौक के सामने वाले दो कमरों को अलग करने वाले एक खम्बे पर कील गाड़ी गई। इस पर दो रस्सियाँ बाँधी गईं जिनसे बाब और उनके एक अनुयायी, अनीस के उपनाम से सम्मानित, उस जवान और स्वामी भक्त मिर्ज़ा मुहम्मद अली ज़ुनूज़ी को अलग–अलग लटकाया गया। पहले की एक घटना में, इसी अनीस ने अपने स्वामी के पैरों में गिरकर यह विनती की थी कि किसी भी परिस्थिति में वे उसे अपने से अलग न करें। मृत्युदण्ड देने वाले सैनिकों के दस्ते ने अपने आपको तीन पंक्तियों में खड़ा किया, जिनमें से प्रत्येक में दो सौ पचास सैनिक थे। एक–एक करके प्रत्येक पंक्ति ने तब तक गोलियाँ दागीं जब तक कि पूरी पलटन ने अपनी गोलियाँ नहीं दाग लीं। इन सात सौ पचास बन्दूकों से उठने वाला धुँआ इतना घना था कि आसमान में अंधेरा छा गया। जैसे ही धुँआ छटा, वैसे ही बैरकों और आस–पास के घरों की छतों पर जमा होने वाली लगभग दस हजार लोगों की भौंचक्की भीड़ ने एक ऐसा दृश्य देखा कि उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

बाब उनकी आँखों से ओझल हो चुके थे ! केवल उनके साथी अनीस, उस दीवार के पास जीवित खड़े थे, जहाँ उन्हें बाँधकर लटकाया गया था। अनीस को किसी प्रकार की कोई क्षति नहीं पहुँची थी। जिन रस्सियों से उन्हें बाँध कर लटकाया गया था, बस वे कट गईं थीं। विस्मित तमाशबीन चिल्ला उठे,*"बाब हमारी आँखों से ओझल हो चुके हैं!"* अधिकारीगण बावले होकर उनकी खोज में तुरन्त इधर–उधर दौड़ने लगे। उन्होंने बाब को उसी कमरे में शान्त और स्वस्थ अवस्था में पाया जिसमें उन्हें एक रात पहले रखा गया था। वे अपने लिपिक के साथ उस बातचीत को पूरा करने में व्यस्त थे जिसे यकायक रोक दिया गया था। इतने दैवी ढंग से सुरक्षित रहने वाले इस कैदी

ने अपने समक्ष दोबारा आने वाले उस जल्लाद का अभिनन्दन करते हुए कहा : *"मैंने सैय्यद हुसैन के साथ अपनी बातचीत पूरी कर ली है। अब तुम अपनी इच्छा पूरी कर सकते हो।"* पहली मुलाकात में बाब द्वारा कहे गए शब्दों को याद करके और ऐसी चौंका देने वाली घटना से बुरी तरह घबराकर, जल्लाद तुरन्त वहाँ से भाग खड़ा हुआ और उसने अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया।

इसी प्रकार, सैम खान ने भी, विस्मय और आश्चर्य के भाव से बाब के आश्वासन भरे शब्दों को याद करते हुए अपने लोगों को तत्काल बैरक छोड़ने के आदेश दिए और चौक छोड़ते हुए सौगंध ली कि अब वह इस कृत्य को कभी नहीं दोहराएगा, चाहे इसके लिए उसे अपनी जान ही क्यों न गँवानी पड़े। अंगरक्षक का कर्नल आक़ा जान–ए–खम्सी ने सैम खान के स्थान पर इस कार्य को करने का ज़िम्मा लिया। बाब और उनके साथी अनीस को एक बार फिर, उसी दीवार पर, उसी तरह बाँधकर लटकाया गया जबकि नई रेज़ीमेंट ने एक कतार में खड़े होकर उन पर गोलियाँ चलाईं। और इस बार, उनके सीने गोलियों से छलनी हो गए और उनके शरीर पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। परन्तु, सिवाय थोड़ी–बहुत क्षति के, उनके चेहरों को कुछ नहीं हुआ था। जब वह रेज़िमेंट गोलियाँ दागने की तैयारी कर रही थी, तब वहाँ खड़ी तमाशबीन भीड़ के लिए बाब के अन्तिम शब्द थे, *"हे स्वेच्छाचारी लोगों! यदि तुमने मुझमें विश्वास किया होता, तो तुम में से प्रत्येक, इस युवा का अनुसरण करता, जो इस समय पद में तुम सब लोगों से ऊँचा है और तुम खुशी से मेरे पथ में बलि चढ़ गए होते। वह दिन आयेगा जब तुम मुझे पहचान लोगे; परन्तु, उस दिन मैं तुम्हारे पास नहीं होऊँगा।"*

इतना ही नहीं, जिस क्षण गोलियाँ चलाई गईं, उसी क्षण एक भयानक बवंडर उठा और नगर पर छा गया। दोपहर से लेकर रात तक धूल के भंवर ने सूर्य के प्रकाश को ढँक दिया और लोगों की आँखों को जैसे दृष्टिविहीन कर दिया। सेंट जॉन के प्रकटीकरण जैसी महत्वपूर्ण पुस्तक में जिस भूकम्प की भविष्यवाणी की गई है, वही भूकम्प हि.स. 1268 में शीराज़ में आया था। इस

भूकम्प ने पूरे नगर में उत्पात मचा दिया और लोगों के बीच तबाही फैल गई, ऐसी तबाही जिसने हैजा, भुखमरी और अन्य विपदाओं के जुड़ने से एक अत्यन्त भीषण रूप धारण कर लिया। उसी वर्ष में, सैम खान की रेज़िमेंट का स्थान लेने वाली दूसरी रेज़िमेंट के दो सौ पचास सैनिक और उनके अफसर एक भीषण भूकम्प में मारे गए। जबकि तीन वर्ष बाद, शेष पाँच सौ सैनिकों को, उनकी बग़ावत के लिए वही सज़ा दी गई, जो उनके हाथों ने बाब को दी थी। यह सुनिश्चित करने के लिए, कि इनमें से एक भी सैनिक जीवित न रह जाए, उन्हें एक बार फिर गोलियों से भूना गया, और इसके पश्चात, उनके शवों को बरछों और भालों पर टांगकर, तबरीज़ के लोगों के समक्ष नुमाईश के लिए रखा गया। इस बर्बर कृत्य के दो वर्षों के भीतर ही, बाब की मृत्यु के लिए उत्तरदायी मुख्य व्यक्ति, उस निर्दयी अमीर–निज़ाम और उसके मुख्य साथी, अर्थात उसके भाई की मृत्यु हो गई।

बाब के जीवन के इकत्तीसवें, और उनके धर्मकाल के सातवें वर्ष के दौरान, 9 जुलाई 1850 (हि.स. शाबान 1266) को, बाब के प्राणदण्ड दिया गया, उनके और अनीस के छलनी शरीरों को बैरेक के आँगन से, उस खन्दक के किनारे तक पहुँचा दिया गया जो नगर के बाहर स्थित था। दस पहरेदारों वाली चार टुकड़ियों को बारी–बारी से उन पर नज़र रखने के आदेश दिए गए। अगले दिन सुबह, तबरीज़ में स्थित रूसी राज़दूत ने उस स्थान का निरीक्षण किया और अपने साथ लाए गए चित्रकार को खन्दक के बाहर पड़े हुए बाब और अनीस के मृत शरीरों का वैसा ही चित्र बनाने के आदेश दिए। अगले दिन, मध्यरात्रि को, हाजी अल्लाह–यार नाम के एक व्यक्ति की सहायता से बाब के एक अनुयायी, हाजी सुलेमान खान, इन मृत शरीरों को रेशम के उस कारखाने तक ले जाने में सफल रहे, जो मिलान के एक अनुयायी का था। अगले ही दिन इन्हें एक विशेष रूप से बनाए गए लकड़ी के बक्से में रख दिया, जिसे उसने बाद में एक सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया। इस बीच धर्माचार्य अपने धर्मासनों से बड़े गर्व के साथ यह घोषित कर रहे थे कि उस पवित्र इमाम का पावन शरीर शिकारी जानवरों और समग्र रेंगने वाले जीवों से सुरक्षित रहेगा, परन्तु इस आदमी का शरीर तो जंगली जानवरों द्वारा खत्म किया जा चुका है।

जैसे ही बाब और उनके साथ यातनाएँ भुगतने वाले अनीस के अवशेषों को स्थानान्तरित किए जाने के समाचार बहाउल्लाह तक पहुँचे, वैसे ही उन्होंने उसी सुलेमान खान को आदेश दिए कि वह इन्हें अपने साथ तेहरान ले आयें, जहाँ उन्हें इमाम–ज़ादिह–हसन तक ले जाया गया, जहाँ से उनके पार्थिव शरीर को तब तक भिन्न–भिन्न स्थानों पर रखा गया जब तक कि अब्दुल बहा के आदेशानुसार, उन्हें पावन भूमि तक स्थानान्तरित नहीं कर दिया गया। यहाँ, कार्मेल पर्वत पर एक विशेष रूप से तैयार की गई समाधि में, अब्दुल बहा द्वारा स्थाई रूप से और अनुष्ठानिक सम्मान के साथ बाब के पार्थिव शरीर को समाधिस्थ किया गया।

इस प्रकार, एक ऐसा जीवन समाप्त हुआ जिसे आने वाली पीढ़ियाँ, उन दो सार्वलौकिक अवतारीय चक्रों के बीच स्थित देखेंगी, जिनमें पहला – आदम का वह चक्र है, जो विश्व के इतिहास की पहली भोर से शुरू हुआ और दूसरा – बहाई चक्र है, जिसका कम से कम पाँच हजार शताब्दियों तक की अवधि के दौरान स्वयं आगे बढ़ना नियत है। जैसा कि पहले ही देखा जा चुका है, जिस दैवीकरण के साथ ऐसा जीवन अपनी चरम सीमा की उपलब्धियों को प्राप्त हुआ, वह बहाई विधान के सबसे शूरतायुक्त काल की पराकाष्ठा थी। साथ ही, उस पहली बहाई शताब्दी के सम्पूर्ण काल में घटने वाले वृतांत की सबसे नाटकीय एवं सबसे दुःखान्त घटना के अलावा इसे कुछ और नहीं माना जा सकता। सत्य ही, विश्व की वर्तमान धार्मिक व्यवस्थाओं के संस्थापकों के जीवन के इतिहास में इसे अद्वितीय घोषित करना सही होगा।

इतनी महत्वूपर्ण घटना भला कैसे देश की सीमाओं से भी परे, जहाँ यह घटी थी, व्यापक और तीव्र रूचि नहीं उत्पन्न कर पाती। एक ईसाई विद्वान और सरकारी पदाधिकारी, जो फारस में रह चुका था और जिसने बाब के जीवन और उनकी शिक्षाओं का प्रभाव अपने ऊपर महसूस किया था, उसने यह उद्‌गार व्यक्त किए हैं : "साहस का यह सबसे सुन्दर उदाहरण है जो पूरी मानवजाति को गम्भीर चिन्तन के लिए प्रेरित करता है। यह एक प्रशंसनीय प्रमाण भी है उस प्रेम का जो हमारे वीर नायक ने अपने देशवासियों के समक्ष

रखा है। उसने मानवजाति के लिए त्याग किया है : इसके लिए उसने अपने मन–प्राण न्योछावर कर दिए, इसके लिए उसने अनेक क्षति उठाई, प्रवंचनाएँ सहीं, निरादर और अपमान सहे, यंत्रणा और अन्ततः शहादत को गले लगाया। उसने सार्वभौम सौहार्द और शांति के साथ समझौते पर जैसे खून की स्याही से दस्तख़त किए, जैसे जीसस ने सद्भाव, न्याय और पड़ोसियों के प्रति प्रेम के साम्राज्य की घोषणा के लिए अपने जीवन का बलिदान कर दिया था। इसी विद्वान व्यक्ति ने बाब की शहादत की परिस्थितियों की चर्चा करते हुए लिखा है कि, *"मानवजाति के इतिहास में यह एक अद्भुत, अनूठी घटना थी"।* जाने–माने फ्रांसिसी प्राच्यविद् ने बाब की शहादत की घटना को एक *"सच्चा चमत्कार"* कहा है। प्रख्यात अंग्रेज यात्री और लेखक ने बाब को *"एक सच्चा अवतार"* बताया है। जानेमाने फ्रांसिसी पत्रकार ने उन्हें *"अपने देश का सर्वोत्तम व्यक्ति"* बताकर सम्मानित किया है। एक विशिष्ट अंग्रेज़ विद्वान ने बाब को *"अपने युग का ईसा मसीह..... एक पैगम्बर और पैग़म्बर से भी महान,"* ठहराया है। ऑक्सफोर्ड के प्रसिद्ध विद्वान स्वर्गीय मास्टर ऑफ बेलियोल ने बाब द्वारा स्थापित किए गए धर्म में *"ईसाईयत की स्थापना के बाद दुनिया का सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक आन्दोलन"* बनने की सम्भावना देखी थी।

अब्दुल बहा की लिखित पुष्टि है कि *"दुनिया के कोने–कोने से कई लोग ईरान के लिए निकल पड़े और तहे–दिल से इस मामले की जाँच करने में लग गए।"* तत्कालीन इतिहासकार ने लिखा है, कि रूस के शासक जार ने बाब की शहादत के कुछ ही समय पहले, तबरीज़ में स्थित रूसी राजदूत को निर्देश दिए थे कि वे इस मामले की पूरी जाँच करें और ऐसे अद्भुत आन्दोलन से सम्बद्ध घटनाओं की पूरी रिपोर्ट लिख भेजें। परन्तु बाब के प्राणदण्ड के कारण इन निर्देशों पर अमल करना सम्भव न हो सका। पश्चिमी यूरोप के दूरस्थ देशों में भी इतनी ही गहन रुचि उत्पन्न हुई और वहाँ के साहित्य, कला, राजनयिक और बुद्धिजीवियों में बड़ी तेज़ी के साथ फैलने लगी। उपरोक्त फ्रांसिसी पत्रकार ने इस बात की साक्षी दी है कि "पूरा यूरोप, दया और क्रोध से हिल गया। .....1890 के पेरिस में, मेरी पीढ़ी के साहित्य में, बाब की शहादत का विषय, अब

भी उतना ही ताज़ा था जितना कि उनकी मृत्यु का वह प्रथम समाचार। हमने उनके बारे में कविताएँ लिखीं। सेरा बर्नहार्ट ने कत्यूले मेन्डिस से अनुरोध किया कि "इस ऐतिहासिक दुःखान्त पर एक नाटिका तैयार की जाए।" सेंट पीटर्सबर्ग की दार्शनिक, पूर्वी और, ग्रंथ–सम्बन्धी सोसायटी की एक सदस्या और रूसी कवयित्री ने सन् 1903 में "बाब" नामक नाटक प्रकाशित किया, जिसका अभिनय एक वर्ष के बाद उस शहर की एक मुख्य नाट्यशाला में किया गया, जिसे बाद में लंदन में लोक–प्रसिद्धि मिली, पेरिस में फ्रांसिसी भाषा में अनुवादित किया गया, और कवि फिडलर द्वारा जर्मन भाषा में अनुवाद किया गया। साथ ही, रूसी क्रान्ति के तुरन्त बाद, लेनिनग्राड के फोक थियेटर में इसकी प्रस्तुति की गई, जो प्रसिद्ध लेखक टॉल्सटाय में सच्ची सहानुभूति और रूचि उत्पन्न करने में सफल रही। बाद में टॉल्सटाय द्वारा की गई इस कविता की प्रशंसा को रूसी प्रेस द्वारा छापा गया।

यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि ईसाई धर्म की शिक्षाओं को छोड़कर, दुनिया के सम्पूर्ण धार्मिक साहित्य में, किसी भी धर्म के संस्थापक की मृत्यु से सम्बन्धित ऐसा कोई विवरण हमें नहीं मिलता जिसकी तुलना शीराज़ के पैग़म्बर द्वारा सहन की गई शहादत से की जा सके। बाबी धर्म के प्रति अन्तहीन शत्रुता की सौगंध लेने वाले लोगों के बीच, साक्ष्यों द्वारा प्रमाणित और सम्मानित व्यक्तियों द्वारा पुष्ट की गई और सरकार एवं अशासकीय इतिहासकारों द्वारा मानी गई इतनी आश्चर्यजनक और इतनी अकथनीय अद्भुत घटना को वास्तव में उन अद्वितीय क्षमताओं का सबसे उत्कृष्ट प्रदर्शन माना जा सकता है, जिनसे यह विधान विभूषित था, जिसका वचन पहले के विधानों ने दिया था। केवल ईसा मसीह की तीव्र इच्छा और वास्तव में उनका सम्पूर्ण सेवाकाल ही, बाब के ध्येय और उनकी मृत्यु की बराबरी कर सकते हैं, एक ऐसी बराबरी जिसे तुलनात्मक धर्म का कोई भी विद्यार्थी अनदेखा नहीं कर सकता या नकार सकता है। बाबी विधान के संस्थापक की विनम्रता और उनकी युवावस्था में; उनके जन–सेवाकाल की अत्याधिक संक्षिप्तता और हलचल में; उस नाटकीय तीव्रता में, जिसके साथ वह धर्मकाल अपनी चरम सीमा पर पहुँचा; बाब द्वारा स्थापित की गई धर्म व्यवस्था और उस श्रेष्ठता में जो उन्होंने अपने एक

अनुयायी को प्रदान की; उसके ताने–बाने में बुनी गई चिरकाल से सम्मानित की जा रही प्रथाओं, रीतियों और नियमों को बाब द्वारा दी गई चुनौती में; उस भूमिका में, जो बाब पर किए गए अत्याचार को उकसाने वाले के रूप में सरकार से मान्यता प्राप्त और दृढ़ता से जमे हुए इस धार्मिक उत्तराधिकारी ने निभाया, बाब पर बरसाए गए अपमान में, उनकी आकस्मिक गिरफ्तारी में, उनसे की गई पूछताछ में, उनके उपहास और बेतों से उन पर किए गए वार में, उनके द्वारा सहन की गई आम लोगों की अवज्ञा में और अन्त में, भीड़ के समक्ष अपमानजनक रूप से उन्हें बाँधकर लटकाए जाने में – इन सभी में हम ईसा मसीह के कार्यकाल की विशिष्टताओं की उल्लेखनीय समानताएँ देखने से चूक नहीं सकते।

परन्तु यह याद रखना चाहिए कि, बाब के प्राणदण्ड से जुड़े हुए चमत्कार के अतिरिक्त, ईसाई धर्म के संस्थापक के विपरीत, उन्हें केवल एक दैवी रूप से प्रकट किए गए स्वतंत्र धर्म का संस्थापक ही नहीं माना जाना चाहिए, अपितु उन्हें एक नए युग के अग्रदूत एवं एक महान सार्वलौकिक अवतार – चक्र के उद्‌घाटक के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। इस महत्वपूर्ण तथ्य को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए कि ईसा मसीह के जीवनकाल में उनके मुख्य शत्रु यहूदी रब्बी और उनके साथी थे, परन्तु बाब के विरूद्ध एकजुट होकर खड़ी होने वाली ताकतें, फारस की जनता और धर्माधिकारियों की संगठित शक्तियाँ थीं, जिन्होंने, बाब की उद्‌घोषणा के पल से लेकर उनकी मृत्यु की घड़ी तक, एक साथ मिलकर एवं उनके पास मौजूद प्रत्येक माध्यम के द्वारा, बाब के समर्थकों के विरूद्ध षड़यन्त्र रचना एवं उनके प्रकटीकरण के सिद्धान्तों को बदनाम करना जारी रखा।

बाब का जयघोष करते हुए बहाउल्लाह ने उन्हें जिन उपाधियों से सम्मानित किया है, वे हैं, वह *"सत्वों के सत्व," "सागरों का सागर," और "वह बिन्दु जिसके आस–पास अवतारों और संदेशवाहकों की वास्तविकताएँ परिक्रमा करती हैं,"* जिसके माध्यम से *"ईश्वर उन समस्त वस्तुओं का ज्ञान प्रदान करेगा जो अस्तित्व में थीं और होंगी,"* जिसका *"स्थान सभी पैग़म्बरों से ऊँचा है"* और

जिसका *"प्रकटीकरण उनके सभी चुने हुए जनों के बोध की समझ से परे है।"* ऐसी उपाधियों से सम्मानित व्यक्ति ने अपना संदेश दिया और अपना ध्येय पूरा किया है, जो अब्दुल बहा के शब्दों में, *"सत्य का सवेरा"* है और *"उस सर्वमहान प्रकाश का अग्रदूत है,"* जिसका आगमन, उस *"अवतारीय चक्र"* के अन्त के साथ–साथ *"पूर्ति के चक्र"* के शुभारम्भ का संकेत देता है और जिसने अपने प्रकटीकरण के माध्यम से अपने देश पर छाने वाली रात के अन्धेरे को दूर करने के साथ–साथ निकट भविष्य में उस अतुलनीय सूर्य के उदित होने की उद्घोषणा की जिसका प्रकाश समग्र मानवजाति पर छा जायेगा। वे स्वयं इस बात की पुष्टि करते हैं कि वह *"आदि बिन्दु जिससे समस्त सृजित वस्तुएँ उत्पन्न हुई हैं," "ईश्वर के आदि शब्द का एक समर्थक स्तम्भ है"* और वह *"रहस्यवादी मंदिर," "महान घोषणा," "सिनाई पर चमकने वाले दैवी प्रकाश की ज्वाला"* और *"ईश्वर का वह स्मरण"* है जिसके विषय में *"प्रत्येक पैगम्बर के साथ एक पृथक संविदा स्थापित की गई है"*, जिसने, अपने आगमन के द्वारा सभी युगों में किए गए वचनों को पूरा करने के साथ–साथ समग्र प्रकटीकरणों को पूर्णता प्रदान की है। बाब वह *"काईम"* हैं जिसके आगमन का वादा शियाओं से किया गया था (काईम–अर्थात् वह जो उठ खड़ा होगा), वह *"मेहदी"* हैं (अर्थात वह जो मार्गदर्शित है), जिसके आने की अपेक्षा ईसाईयों द्वारा की जा रही है, *"जॉन बैपटिस्ट की वापसी"* हैं, जरथोस्तियों के पावन ग्रंथों में उल्लेखित, *"उशिदरमाह"* हैं, यहूदियों द्वारा प्रतीक्षित *"एलाईजा की वह वापसी"* हैं, जिसका प्रकटीकरण *"सभी अवतारों के चिन्ह और संकेत प्रदर्शित करेगा"* और जो *"मूसा की पूर्णता, ईसा का प्रकाश और जॉब का धैर्य प्रकट करेगा।"* ऐसा व्यक्ति अब प्रकट हो चुका था, अपने धर्म की उद्घोषणा कर चुका था, निष्ठुरता से सताया गया और प्रतापशाली मृत्यु को प्राप्त हो चुका था। अन्ततः, वह *"दूसरा संताप"* जिसके बारे में उस दिव्य सेंट जॉन की एपोकेलिप्स में बताया गया है, प्रकट हो चुका था और उन दो *"संदेशवाहकों"* में वह प्रथम संदेशवाहक नीचे भेजा जा चुका है, जिसके प्रकट होने की भविष्यवाणी कुरान में की गई थी। अन्त में उस दूसरी पुस्तक में उल्लेखित प्रथम *"तूर्यनाद"* बजाया जा चुका था, जिसका धरती को खत्म करना नियत था। उसी पुस्तक में जिसकी भविष्यवाणी की गई थी, *"वह अटल", "वह आपद", "वह पुनरूत्थान", "वह अन्तिम*

घड़ी में आने वाला भूकम्प", सब कुछ घटित हो चुका था। वे *"स्पष्ट चिन्ह" "नीचे भेजे"* जा चुके थे और वह *"आत्मा" "फूँक दी गई थी"* और *"आत्माएँ" "जाग चुकी थीं"* और *"आकाश फट चुका था"* और *"स्वर्गदूत पंक्तिबद्ध खड़े हो चुके थे"* और *"तारे मिट चुके थे"* और *"धरती ने अपना बोझ उतार फेंका था"* और *"स्वर्ग को निकट लाया जा चुका था"* और *"नरक में ज्वाला भड़का दी गई थी"* और वह *"ग्रंथ निर्धारित किया जा चुका था"* और वह *"पुल बिछा दिया गया था"* और वह *"तुला स्थापित की जा चुकी थी"* और *"पर्वत धूल बन चुके थे"।"* उस *"पावन स्थल का परिष्करण किया जा चुका था"* जिसकी भविष्यवाणी डेनियल ने की थी और जिसकी पुष्टि ईसा मसीह ने *"घृणित विध्वंस"* के सन्दर्भ में की थी। वह *"एक हजार वर्ष लम्बा दिन"* जिसकी भविष्यवाणी ईश्वर के धर्मप्रचारक (मुहम्मद) ने अपनी पुस्तक में की थी, अब समाप्त हो चुका था। जैसा कि दिव्य सेंट जॉन ने भविष्यवाणी की थी, वह *"चालीस और दो माह"*, की अवधि जिसके दौरान वह *"पावन नगर, पैरों तले रौंदा जायेगा",* अब बीत चुकी थी। *"अन्त समय लाया जा चुका था"* और उन *"दो गवाहों"* में से प्रथम गवाह, जिसमें *"साढ़े–तीन दिन के बाद ईश्वर की ओर से चेतना प्रवेश करेगी"*, अब उठ खड़ा हो चुका था और *"एक बादल पर सवार होकर स्वर्ग में प्रवेश कर चुका था"।* इस्लाम की परम्पराओं के अनुसार जिन अक्षरों से समस्त ज्ञान उत्पन्न हुआ है, *"उन बीस और सात अक्षरों में से, प्रकट किए जाने वाले शेष बीस और पाँच अक्षर, अब प्रकट किए जा चुके थे"।* प्रकटीकरण की पुस्तक में उल्लेखित उस *"नर बालक"*, जिसका *"सभी राष्ट्रों पर लोहे की छड़ से शासन करना"*, नियत था, ने अपने आगमन से, उन सृजनात्मक शक्तियों को उत्पन्न कर दिया था, जो इसके शीघ्र बाद आने वाले अपार रूप से अधिक शक्तिशाली प्रकटीकरण के उद्‌गार से बल प्राप्त करके, सम्पूर्ण मानवजाति की स्वाभाविक एकता स्थापित करने, परिपक्वता प्राप्त करने और उसके माध्यम से इसे चिरकालिक क्रमिक विकास के अन्तिम चरण तक पहुँचने की क्षमता भर देंगी। शासकों एवं शासकों के पुत्रों को सम्बोधित तूर्यनादी आह्‌वान 'कय्यूमुल–अस्मॉ' द्वारा किया गया था। यह आह्‌वान एक ऐसी प्रक्रिया की शुरूआत को चिन्हित करता है जिसे बहाउल्लाह के बाद की उन चेतावनियों से बल प्राप्त हुआ जो उन्होंने पूरब और पश्चिम के शासकों को सम्बोधित की थीं

और जिनसे राजस्व के भाग्य में इतनी व्यापक क्रान्ति उत्पन्न होनी थी। जिस *"व्यवस्था"*, की नींव वह प्रतिज्ञापित अवतार *'किताब–ए–अक़दस'* में रखने वाले थे और जिसकी विशेषताओं की रूपरेखा, संविदा के केन्द्र, अपनी वसीयत में प्रस्तुत करने वाले थे तथा जिसकी प्रशासनिक संरचना का निर्माण उनके अनुयायियों का सम्पूर्ण दल आज कर रहा है, उस व्यवस्था की स्पष्ट भविष्यवाणी फारसी 'बयान' में की जा चुकी थी। एक ओर यह जिन नियमों को, एक पुराने विधान से सम्बद्ध विशेषाधिकारों और रस्मों, विधानों और संस्थाओं को एक ही झटके में समाप्त कर देने के लिए रचा गया था, वहीं दूसरी ओर, एक अप्रचलित व्यवस्था और इसका स्थान लेने वाली नियत विश्वव्यापी व्यवस्था की संस्थाओं के बीच का फासला बनाया जा चुका था और घोषित किया जा चुका था। पहले के विधानों के विपरीत, जो संविदा, स्वयं पर किए गए कृतसंकल्प आक्रमणों के बावजूद, अपने संस्थापक के धर्म की अखण्डता को कायम रखने में और इसके केन्द्र एवं लक्ष्य बनने वाले व्यक्ति के आगमन के लिए मार्ग प्रशस्त करने में सफल रही, वह अब दृढ़ता और अटल रूप से स्थापित की जा चुकी थी। वह प्रकाश, जो पश्चिम में वैन्कूवर तक और पूरब में चीनी महासागर तक क्रमिक कालों में अपने उद्‌गम–स्थल से स्वयं को धीरे–धीरे फैलाने वाला था और उत्तर में आइसलैंड तक तथा दक्षिण में तस्मान महासागर तक अपनी दीप्ति बिखेरने वाला था, अब फूट चुका था। शिया ईरान की जन–शक्ति एवं धर्माचार्यों की ताकतों के संयुक्त विरोध तक, प्रारम्भ में सीमित अधिकार की ताकतों ने इस्लाम के खलीफाओं और तुर्की के सुन्नी धर्माचार्यों के दृढ़ और सतत् विरोध के माध्यम से, आगे चलकर गतिशीलता प्राप्त कर ली। और भी अधिक शक्तिशाली अन्य धार्मिक संगठनों के धर्माधिकारियों की भयानक शत्रुता में चरम सीमा पर पहुँचने की नियति रखने वाली इन ताकतों ने अपने प्राथमिक विरोध का आरम्भ कर दिया था। उस दैवी, विश्वव्यापी समुदाय का बीज अब तैयार हो चुका था और धीरे–धीरे अंकुरित हो रहा था जिसकी नवजात शक्ति ने पहले ही शिया रूढ़िवादिता की बेड़ियों को तोड़ फेंका था और जो अपने भाईचारे की परिधि के विस्तार के साथ, भविष्य में विश्वधर्म होने के अपने दावों की अधिक विस्तृत एवं अधिक अर्थपूर्ण पहचान की माँग करने वाला था। अन्त में, वह बीज, जिसे उस

सर्वशक्तिमान के हाथों ने इतनी असीम क्षमताओं से सम्पन्न किया था, यद्यपि अपमान के साथ पैरों तले रौंद दिया गया था और जिसके अस्तित्व के बारे में ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो इसे धरती पर से मिटा दिया गया हो, उसी बीज को, उसे मिटाने की इसी प्रक्रिया के माध्यम से, एक और अधिक शक्तिशाली प्रकटीकरण के रूप में अंकुरित होने और स्वयं को पुनः प्रकट करने का अवसर प्रदान किया गया था, एक ऐसा प्रकटीकरण जिसका, आगे चलकर, उस अब तक अजन्मे स्वर्णयुग में एक विश्वव्यापी प्रशासनिक व्यवस्था की संस्थाओं के रूप में फलना–फूलना और जिसका एक विश्व–एकीकरणीय, विश्व–मुक्तिदायक व्यवस्था के सिद्धान्तों के अनुरूप कार्य करने वाली महान एजेन्सियों के रूप में परिपक्व होना नियत है।

शाह पर हमला और उसके परिणाम

वह धर्म जिसने एक सम्पूर्ण देश को उसकी गहराइयों तक हिला दिया था, जिसके लिए हज़ारों बहुमूल्य और शूरवीर आत्माओं को बलि चढ़ा दिया गया था और जिसकी वेदी पर इसके संस्थापक ने अपने प्राणों की आहूति दी थी, वही धर्म अब अत्याधिक हिंसा और दूरगामी परिणामों वाले एक और संकट के उत्पीड़न और बोझ से ग्रसित हो चुका था। एक सम्पूर्ण शताब्दी के दौरान लगातार घटित होने वाला ऐसा ही एक संकट, इस धर्म की भव्यता को थोड़े समय के लिए निस्तेज करने में और इसकी जैव संस्थाओं के ढांचे को लगभग पूरी तरह अस्त–व्यस्त कर देने में सफल रहा। एक सजीव, दावों में चुनौतीपूर्ण, सिद्धान्तों में क्रान्तिकारी, विपरीत परिस्थितियों के विरूद्ध संघर्ष करने वाले विश्वधर्म के रहस्यमय क्रमिक विकास के ये आकस्मिक, घातक प्रतीत होने वाले प्रदर्शन, या तो इसके दृढ़ विरोधियों के द्वेष के कारण बाहर से सम्पादित किए गए अथवा इसके मित्रों की नादानी से, इसके समर्थकों द्वारा इसके सिद्धान्तों की अवहेलना से, या इसके स्थापकों के बंधु–बांधवों में उच्च पदों वाले कुछ लोगों के विद्रोह द्वारा भीतर से उकसाए गए। जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं, तो पाते हैं कि इस धर्म को बार–बार इतनी क्षति पहुँचाने वाली ये बाधाएँ और असफलताएँ, भले ही इसके निष्ठावान अनुयायियों के विशाल समूह के लिए कितनी ही निराशाजनक रही हों और इसके पतन और भावी विनाश के लक्षण के रूप में इसके शत्रुओं द्वारा कितनी ही बदनाम घोषित की गईं हों, फिर भी इसकी गति को रोकने या इसकी एकता को भंग करने में असफल

रहीं हैं। इनके द्वारा मौत के घाट उतारे गए लोगों की संख्या अनगिनत थी, इनके द्वारा उत्पन्न की गई यातनाएँ अकथनीय थीं और इनके द्वारा उकसाया गया संत्रास व्यापक एवं कुछ समय के लिए शिथिल कर देने वाला था। फिर भी, अपने उचित परिप्रेक्ष्य में, इनमें से प्रत्येक को, विश्वास के साथ, एक ऐसा अप्रत्यक्ष आशीर्वाद माना जा सकता है, जो उस स्वर्गिक शक्ति के नवीन उद्‌गारों की प्राप्ति का एक दैवी माध्यम, चिरकालिक भविष्यवाणियों को पूरा करने का एक तरीका, सामुदायिक जीवन के परिष्करण और पुनर्जीवन का साधन, इसकी परिधि के विस्तार और इसके प्रभाव के प्रसार का संवेग और इसकी संगठित ताकत की अविनाशिता का अकाट्य प्रमाण बना। कभी–कभी, संकट की घड़ी के दौरान और अधिकांशतया संकट बीत जाने पर, लोगों की दृष्टि में, मित्र और शत्रु दोनों के सामने, शंका की परछाई से भी परे, इन विपत्तियों का महत्व व्यापक रूप से प्रकट हुआ है और ऐसे अनुभवों की आवश्यकता प्रदर्शित हुई है। शायद ही कभी ऐसा हुआ हो कि इन पूर्व सूचक, ईश्वर प्रदत्त उथल पुथल के पीछे छिपा रहस्य अप्रकटित रह गया हो या इन घटनाओं के गूढ़ उद्देश्य और अर्थ को मनुष्यों की समझ से छिपाया गया हो।

अपनी बाल्यावस्था के प्रारम्भिक चरणों में रहने वाले बाब के धर्म को घोर विपदाओं का अनुभव होना आरम्भ हो गया था। जिस क्षण इसका जन्म हुआ, तब से ही यह धर्म बदनामी का शिकार रहा है। अपने सबसे प्रारम्भिक दिनों में ही यह अपने अधिकांश मुख्य समर्थकों की सम्पोषक शक्ति से वंचित रहा। अपने संस्थापक की दुःखद और आकस्मिक हत्या के कारण भौंचक्का–सा रह जाने वाला और माज़िन्दरान, तेहरान, नैरीज़, और ज़नजान में एक के बाद एक सहन किए गए क्रूर आघातों के कारण लड़खड़ाने वाला एक अत्याधिक कष्टपीड़ित धर्म, अब एक हठधर्मी और लापरवाह बाबी के शर्मनाक कृत्य के कारण, ऐसा अपमान झेलने वाला था जैसा इसने पहले कभी नहीं देखा था। इसके द्वारा सहे गए कष्टों में, ताज़ा विपत्ति का एक ऐसा अति कठोर बोझ जुड़ गया, जो अपनी गम्भीरता में अपूर्व, अपने स्वरूप में कलंकित और अपने तात्कालिक परिणामों में विध्वंसकारी था।

अपने प्रिय स्वामी की शहादत के शोकमय दुःखान्त से ग्रस्त, उस घिनौने कर्म का बदला लेने के लिए निराशा के पागलपन से प्रभावित और उस अपराध को उत्पन्न करने एवं उकसाने के लिए स्वयं शाह को ज़िम्मेदार मानते हुए, सादिक–ए–तबरीज़ी नामक एक व्यक्ति, जो तेहरान की किसी मिठाई की दुकान पर सहायक का काम करता था, ने फतेउल्लाह–ए–कुमी नाम के अपने एक अनजाने साथी के साथ, 15 अगस्त, 1852 को नियावरान की ओर प्रस्थान किया जहाँ शाही फौज की सुरक्षा में बादशाह ठहरा हुआ था। वहाँ, वह एक मासूम दर्शक के वेष में सड़क के किनारे प्रतीक्षा करने लगा। जैसे ही घोड़े पर सवार बादशाह भोर में घूमने के लिए अपने महल के प्रांगण से बाहर निकले, वैसे ही, उस युवक ने अपनी पिस्तौल से बादशाह पर गोली चला दी। इस युवक द्वारा उपयोग में लाए गए हथियार ने, किसी भी प्रकार के सन्देह से परे, उसकी मूर्खता को प्रमाणित कर दिया और स्पष्ट रूप से यह दिखा दिया कि कोई भी समझदार व्यक्ति ऐसा काम नहीं कर सकता।

इस हमले के परिणामस्वरूप, पूरा नियावरान, जहाँ वह शाही दरबार और फौज जमा हुई थी, वहाँ का वातावरण अकल्पनीय शोरगुल में डूब गया। अमीर निज़ाम का उत्तराधिकारी, इतिमादू–दौलिह मिर्ज़ा आक़ा खान–ए–नूरी के नेतृत्व में, राज्य के भयभीत मंत्रीगण तत्काल अपने घायल शासक के पास पहुँचे। तुरहियों की धूमधाम, नगाडों की गड़गड़ाहट और बांसुरियों की चुभती हुई ध्वनि ने चारों ओर से बादशाह सलामत के सहायकों का आह्वान किया। कुछ घोड़ों पर सवार होकर और कुछ पैदल ही, बड़ी संख्या में शाह के सेवक महल परिसर में आ पहुँचे। भारी गड़बड़ी के बीच सभी आदेश दे रहे थे, कोई किसी की नहीं सुन रहा था, न तो कोई आज्ञापालन कर रहा था, न ही कोई कुछ समझ पा रहा था। इस बीच, तेहरान के राज्यपाल आर्देशिर मिर्ज़ा ने अपने रिसाले को राजधानी की सूनी सड़कों पर पहरा देने के आदेश दे दिए थे, गढ़ और नगर, दोनों के द्वार बंद करवा दिए गए, प्रहार की तैयारी कर ली गई और लोगों के बीच फैली हुई अफवाहों की सच्चाई का पता लगाने और विशेष निर्देश प्राप्त करने के लिए आनन–फानन में, एक संदेशवाहक को रवाना कर दिया।

जैसे ही यह घटना घटी, वैसे ही इसका अंधेरा सम्पूर्ण बाबी समुदाय पर छा गया। नौजवान शाह की माँ की निष्ठुर शत्रुता से बढ़ने वाला जन संत्रास, घृणा और क्रोध का तूफान पूरे राष्ट्र को बहा ले गया, जिसके परिणामस्वरूप इस घटना को अंजाम देने वाले की योजना और इस प्रयास को उकसाने वालों के बारे में किसी प्रकार की सतही जाँच की भी सम्भावना खत्म हो गई। एक चिन्ह–मात्र, या थोड़ी सी फुसफुसाहट ही, मासूमों को फंसाने के लिए और उन पर सबसे घिनौनी विपत्तियाँ बरसाने के लिए काफी थी। विरोधियों को अपमानित करने और मिटा देने के अवसर की ताक में बैठी धर्माचार्यों, शासकीय अधिकारियों और आम जनता जैसे शत्रुओं की मिली–जुली सेना को, अन्ततः वह बहाना मिल ही गया जिसके लिए वह तरस रही थी। अब वह सेना अपना द्रोही उद्देश्य पूर्ण कर सकती थी। यद्यपि, प्रभुधर्म ने राज्य के अधिकार और परमाधिकार को हड़पने के किसी भी प्रकार के इरादे से शुरू से ही इंकार किया था और इसके अनुयायियों ने ऐसे किसी भी कृत्य से दूर रहने के पुरज़ोर प्रयास किए थे, जिससे धर्मयुद्ध करने की इच्छा का या आक्रमणशील अभिवृत्ति का लेशमात्र भी सन्देह उत्पन्न हो, फिर भी, एक सताए हुए धर्म के अनुयायियों द्वारा दिखाए गए इस उल्लेखनीय आत्मसंयम के असंख्य प्रमाणों को जानबूझकर अनदेखा करते हुए, इसके शत्रुओं ने, स्वयं को वैसे ही बर्बर अत्याचार करने में सक्षम सिद्ध किया जो माज़िन्दरान, नैरीज़, और ज़नजान, की खूनी घटनाओं से सदा जुडे रहेंगे। अब जबकि शाह पर हमला करने जैसा इतना विश्वासघाती और दुस्साहस भरा कृत्य किया जा चुका था, तब यही शत्रु दुष्टता और क्रूरता की गहराइयों तक उतरने को भला क्यों नहीं राज़ी होगा? देश के प्रधान व्यक्ति के विरूद्ध किए गए घोर अपराध से, अन्यायपूर्वक ही सही, जोड़े जाने वाले लोगों पर क्या–क्या आरोप लगाने के लिए प्रेरित नहीं होगा और उन पर क्या–क्या ज़ुल्म नहीं ढाएगा?

इसके परिणामस्वरूप शुरू होने वाले आतंक का राज, किसी भी वर्णन से परे और घिनौना था। इसके संत्रास को जन्म देने वालों को अनुप्राणित करने वाली बदले की भावना अशोभनीय थी। इसकी प्रतिक्रिया यूरोप की प्रेस तक हुई, जिसने, खून के प्यासे इसके प्रतिभागियों पर कलंक लगा दिया। महामंत्री

ने मुत्युदण्ड प्राप्त करने वाले बाबियों को मौत के घाट उतारने का कार्य राजकुमारों एवं उच्च वर्ग के लोगों, अपने मुख्य सह–मंत्रियों, सेनाध्यक्षों एवं दरबार के अधिकारियों, धर्माचार्यों और व्यापारी वर्गों, तथा गोलन्दाज़ फौज एवं पैदल सेना के बीच बांट दिया। शाह को भी उसका शिकार आवंटित किया गया था, परन्तु ताज की मर्यादा कायम रखने के लिए उसने अपनी ओर से जीवघातक गोली चलाने का कार्य घर के एक नौकर को सौंप दिया। अर्देशिर मिर्ज़ा ने राजधानी के द्वार पर नाकाबन्दी करवा दी और पहरेदारों को आदेश दिए कि वे नगर छोड़ने वाले प्रत्येक व्यक्ति का चेहरा गौर से पहचानें। पहरेदारों को बुलाकर उसने उन्हें ये आदेश दिए कि वे उन सभी लोगों की जाँच करें और उन्हें गिरफ्तार करें जिन पर उन्हें बाबी होने का सन्देह था। प्रभुधर्म के एक जाने–माने अनुयायी के घर पर नौकर के रूप में पहले से कार्यरत अब्बास नामक एक युवा को अमानवीय यातनाओं का भय दिखाकर तेहरान की गलियों में घुमाया गया और उसे ऐसे प्रत्येक व्यक्ति की ओर संकेत करने को कहा गया जिसे वह एक बाबी के रूप में पहचानता था। उसे ऐसे व्यक्तियों को भी बाबी बताने को बाध्य किया गया जो स्वयं को छुड़ाने के लिए रिश्वत में एक बड़ी रकम दे सकते थे।

यातनाएँ सहन करने वाला पहला व्यक्ति था वह अभागा सादिक़, जिसे घटना–स्थल पर ही तत्काल मौत के घाट उतार दिया गया और जिसके शरीर को एक खच्चर की पूँछ से बाँधकर तेहरान तक घसीटकर ले जाया गया, जहाँ उसके मृत शरीर के दो टुकड़े कर दिए गए और प्रत्येक टुकड़े को लोगों के देखने के लिए लटकाया गया। इसके साथ ही नगर के अधिकारियों ने तेहरान निवासियों को आमंत्रित किया कि वे मुंडेरों पर चढ़कर इस कटे हुए शव को देखें। सादिक के साथी को, आग के समान धधकते लाल चिमटे एवं अंग को चीर कर रख देने वाले पेंचों से यातनाएँ देने के बाद, उसके गले में पिघला हुआ सीसा डाल दिया गया। उसके एक अन्य साथी, हाजी क़ासिम को निर्वस्त्र करके, उसके शरीर में किए गए छेदों में जलती हुई मोमबत्तियाँ ठूंस दी गईं और ऐसी अवस्था में उसे एक ऐसी भीड़ के सामने घुमाया गया जो चीख–चीखकर उसे धिक्कार रही थी। दूसरों की आँखें निकाल ली गईं, उन्हें

चीर दिया गया, उनका गला घोंट दिया गया, उन्हें तोपों से उड़ा दिया गया, उनके टुकड़े–टुकड़े कर दिए गए, उन्हें कुल्हाड़ियों और गदाओं से छिन्न–भिन्न कर दिया गया, उनके पैरों में घोड़ों की नालें ठोक दी गईं, उन्हें संगीनों से गोद दिया गया और उन्हें पत्थरों से मारा गया। उन्हें यातनाएँ देने वाले, क्रूरता की विविधता में एक–दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते, जबकि जनता, जिसके हाथों में इन असहाय शिकारों के शव सौंप दिए जाते थे, अपने शिकार पर टूट पड़ती और उन्हें इतना चीर–फाड़ कर रख देती थी कि उनके शरीर का नामोनिशान मिट जाता था। यद्यपि जल्लाद अपने भयानक कार्य के आदी होते थे, फिर भी, जनता की अतिदुष्ट क्रूरता को देखकर वे स्वयं अचम्भित रह जाते थे। औरतों और बच्चों को, अपने घावों में जलती हुई मोमबत्तियाँ लिए, अपने मांस की धज्जियों के साथ, गूँजती हुई आवाज़ में यह गाते हुए गलियों से निकलते हुए देखा जा सकता था : *"वस्तुतः हम ईश्वर की ओर से आये हैं, और उसी को लौट जायेंगे!"* जब इनमें से कुछ बच्चे बीच रास्ते में ही दम तोड़ देते थे, तब उन्हें यातनाएँ देने वाली भीड़, उन बच्चों के शवों को उनके पिताओं और बहनों के पैरों के नीचे फेंक देते थे, जो इन पर पैर रखते हुए निकल जाते और उन्हें एक नज़र देखना भी गवारा नहीं करते थे। एक प्रसिद्ध फ्रांसिसी लेखक की गवाही के अनुसार, एक पिता ने अपने धर्म को त्यागने के बजाय, अपने दो बेटों का गला कटवा देना अधिक उचित समझा। ज़मीन पर पड़े हुए पिता के सीने पर, अपने कटे हुए गले के कारण पहले ही खून में लथपथ, इन दोनों बेटों में से चौदह वर्षीय बडा बेटा, पुरज़ोर दावा कर रहा था कि चूँकि वह उम्र में बड़ा है इसलिए अपने प्राणों का बलिदान देने का पहला अधिकार उसे दिया जाए।

विश्वसनीय सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि उन दिनों शाह की सेवा में कार्यरत तथा इन क्रूरताओं को देखने के लिए विवश, एक ऑस्ट्रियाई अफसर, कप्तान वॉन गुमैन्स, इन यातनाओं को देखकर इतना संत्रस्त हो गया कि उसने अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया। उपरोक्त घटना के दो सप्ताह बाद लिखे गए अपने उस पत्र में जिसे "सोल्दातेनफ्रिन्ड" में प्रकाशित किया गया था, इस कप्तान ने साक्षी देते हुए अपने मित्र को लिखा है : "मेरे मित्रों, आकर देखो, तुम जो एक हृदय और यूरोपीय नैतिक सिद्धान्त रखने का दावा करते हो, मेरे

साथ चलकर उन दुःखियारों को देखो जिनकी आँखें निकाल ली जाती हैं और जिन्हें घटना–स्थल पर ही, अमानवीय हिंसा के साथ, अपने ही कटे हुए कान खाने को बाध्य किया जाता है; जल्लाद के हाथों जिनके दाँत नोंचकर निकाले जाते है; या जिनकी खुली खोपड़ियों को हथोड़े के वार से बड़ी सहजता से चूर–चूर कर दिया जाता है; या जहाँ शिकार बने इन दुःखी लोगों से बाजार जगमगाता है क्योंकि दायें और बायें से लोग उनके वक्षों पर छेद करके उनके घावों में जलती हुई मोमबत्तियाँ ठूंस देते हैं। मैंने इनमें से कुछ ऐसे लोगों को बाजार में फौजी बैंड के पीछे–पीछे बेड़ियों में घसीटे जाते देखा है, जिनके शरीर में गड़ी हुई ये मोमबत्तियाँ इस गहराई तक जल चुकी थीं कि उनके घावों के मांस की चरबी इस तरह टिमटिमा रही थी, जैसे कोई हाल ही में बुझाया हुआ दीप हो। प्रायः ऐसा होता है कि पूरब के लोगों के अथक प्रयास से नई यातनाएँ जन्म लेती हैं। वे बाबियों के पैरों के तलों की खाल उधेड़कर उनके घावों को उबलते हुए तेल में डुबो देते हैं, और पैरों में घोड़े की तरह जूता ठोक कर अपने शिकार को दौड़ने के लिए मज़बूर करते हैं। ऐसे में उस बाबी के मुख से कोई चीख नहीं निकली; उस धर्मोन्मत्त के सुन्न इन्द्रियबोध द्वारा इस यातना को गहरे मौन के साथ सहन किया गया। अब उसे दौड़ना होता है; परन्तु शरीर वह सहन नहीं कर सकता जो आत्मा ने किया है; वह गिर पड़ता है। उसे मौत प्रदान करने की कृपा करो ! उसे उसकी यातना से मुक्त करो ! परन्तु नहीं ! जल्लाद अपनी बेंत घुमाता है और मुझे स्वयं यह अपनी आँखों से देखना पड़ा, सैंकड़ों यातनाएँ सहन करने वाला वह दुःखी शिकार दौड़ता है ! यह तो अन्त का आरम्भ है। जहाँ तक अन्त का प्रश्न है, ये लोग इन झुलसे हुए और छिद्रित शरीरों को उनके हाथ–पैरों सहित एक पेड़ से बाँधकर उल्टा टाँग देते हैं, और फिर एक निश्चित दूरी से, परन्तु बहुत निकट से नहीं, प्रत्येक फारसी जी भरकर इन पर अपना निशाना साध सकता है। मैंने लगभग एक सौ पचास गोलियों से शवों को छलनी होते हुए देखा है।" वह आगे बताता है कि, "जब मैं अपने द्वारा लिखी गई बातों को दोबारा पढ़ता हूँ, तो मैं इस विचार से अभिभूत हो जाता हूँ कि हमारे अति प्रिय ऑस्ट्रिया में जो लोग तुम्हारे साथ हैं, शायद इस वर्णन के पूरे सत्य पर सन्देह करेंगे और मुझ पर अतिश्योक्ति का आरोप लगायेंगे। काश ! मैं यह देखने के लिए जीवित न

रहता ! परन्तु मेरे कर्त्तव्यों के कारण, मुझे दुःख के साथ अक्सर और बार–बार, इन घिनौने कृत्यों का साक्षी बनना पड़ा। ऐसे भयानक दृश्यों से बचने के लिए मैं आजकल अपने घर से बाहर ही नहीं निकलता.....। चूँकि मेरी आत्मा ऐसी अति दुष्टता से घृणा करती है..... इसलिए, मैं ऐसे अपराधों के स्थानों से कोई सम्बन्ध नहीं रखूँगा।" कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि रेनान जैसे प्रख्यात व्यक्ति ने, तेहरान में एक दिन में की गई अनुयायियों की हत्याओं को "लेआपोत्र" नामक अपनी पुस्तक में एक ऐसा दिन बताया है "जिसकी बराबरी विश्व के इतिहास में शायद ही की गई हो!"

इस अत्याधिक पीड़ित धर्म के अनुयायियों पर इतना दुःखद वार करने के लिए आगे बढ़ने वाले हाथ ने स्वयं को केवल बाब के अनुयायियों तक ही सीमित नहीं रखा, बल्कि उतने ही क्रोध और दृढ़निश्चय के साथ, यह प्रभुधर्म के समर्थकों की एक विशाल संख्या के विरोध में उठा और उतनी ही ताकत के साथ उन बचे–खुचे समर्थकों को मार गिराया जो उस विपदा की आँधियों से बच निकले थे, जिसने पहले ही, इसके समर्थकों की एक विशाल संख्या को मौत की नींद सुला दिया था। अमर वीरांगना ताहिरा, जो पहले ही स्त्री जाति और अपने नए धर्म पर समान रूप से एक अमिट छाप छोड़ चुकी थीं, को अब इस प्रचण्ड तूफान ने खींच लिया और अन्त में उसे निगल लिया। बाब के लिपिक, उनकी कैद में उनके साथी, उनकी अन्तिम इच्छाओं के विश्वसनीय संग्राहक और उनकी शहादत की विलक्षणताओं के साक्षी, सैय्यद हुसैन भी इस कोप के शिकार हो गए। उसी हाथ ने बहाउल्लाह जैसी उच्चतम विभूती पर भी उठने का दुस्साहस किया। यद्यपि यह उन पर उठा, फिर भी उन्हें खत्म करने में असफल रहा। इसने उनके जीवन को संकट में डाल दिया, उनके तन पर बेरहम क्रूरता की अमिट छाप छोड़ दी, परन्तु यह उस कार्यकाल की अवधि को काट कर कम नहीं कर सका जिसका न केवल उस अग्नि को प्रज्वलित रखना नियत था जो बाब ने जलाई थी, अपितु जिसका एक ऐसी ज्वाला उत्पन्न करना भी नियत था, जो बाब के प्रकटीकरण के प्रताप को पूर्णता प्रदान करे, साथ ही उससे अधिक प्रकाश फैलाए।

उन अन्धकारमय और दुःखदायी दिनों में, जब बाब नहीं रहे और उनके धर्म के आकाश में चमकने वाले प्रकाशपुंजों को एक–एक करके बुझा दिया गया, जब उनका उत्तराधिकारी, "दरवेश के वेष में, एक घबराए हुए भगोड़े की तरह" रश्त के आस–पास के इलाकों के पहाड़ों और मैदानों में भटकता फिर रहा था, तब, बहाउल्लाह द्वारा निष्पादित किए गए कार्यों के कारण, अपने चौकन्ने शत्रुओं की दृष्टि में, वे सबसे डरावने शत्रु बन गए और एक ऐसे धर्म की एक मात्र आशा बन गए जिसका अस्तित्व अब तक नहीं मिटा था। बहाउल्लाह की गिरफ्तारी और उनकी मौत अब एक ज़रूरत बन चुकी थी। वे बहाउल्लाह ही थे, जिन्हें, इस धर्म के जन्म के केवल तीन माह बाद, बाब के दूत मुल्ला हुसैन के हाथों, वह संदेश प्राप्त हुआ जिसमें एक नए धर्म के प्रकटीकरण की घोषणा के शुभ समाचार दिए गए थे। वे बहाउल्लाह ही थे जिन्होंने इसके सत्य को तत्काल स्वीकार कर लिया और इसके प्रसार के लिए उठ खड़े हुए। वह उन्ही का शहर और निवास–स्थान था जिसकी ओर मुल्ला हुसैन के कदम सर्वप्रथम बढ़े थे, और जो अपने आप में "एक ऐसा पावन ज्ञानातीत रहस्य समाए हुए था, जिसकी बराबरी करने की आशा न तो हिजाज़ कर सकता है, न शीराज़।" बहाउल्लाह के साथ इस प्रकार सम्पर्क स्थापित करने के विषय में, वह मुल्ला हुसैन का ही विवरण था, जिसे बाब ने इतने उल्लसित आनन्द के साथ प्राप्त किया और जिसने उनके हृदय को इतना आश्वासन प्रदान किया था कि आखिरकार उन्होंने मक्का और मदीना की अपनी उस तीर्थ यात्रा का निर्णय ले ही लिया, जिसका वे मन बना चुके थे। सिर्फ बहाउल्लाह ही उन अप्रत्यक्ष संकेतों, उन दीप्तिमान स्तुतियों, उन प्रज्वलित प्रार्थनाओं, उन आनन्दमय घोषणाओं और उन भयानक चेतावनियों का लक्ष्य और केन्द्र थे, जिनका उल्लेख कय्यूमुल–अस्मॉ और बयान में, उस महिमा के प्रथम और अन्तिम लिखित प्रमाण के रूप में किया गया है जिससे ईश्वर शीघ्र ही बहाउल्लाह को विभूषित करने वाले थे। वे बहाउल्लाह ही थे, जो इस नव संस्थापित धर्म के संस्थापक के साथ अपने पत्राचार के माध्यम से तथा वाहीद, हुज्जत, कुद्दूस, मुल्ला हुसैन, और ताहिरा जैसे विशिष्ट अनुयायियों के साथ अपने घनिष्ठ साहचर्य के माध्यम से, इसके विकास को सम्पोषण प्रदान

कर पाए, इसके सिद्धान्तों को स्पष्ट कर पाए, इसके नैतिक आधार को बल प्रदान कर सके, इसकी अत्यावश्यक ज़रूरतों को पूरा कर सके, इसके मार्ग में आने वाले तात्कालिक खतरों को हटा सके और इसके विस्तार और सुगठन में प्रभावशाली ढंग से भाग ले सके। बुशहिर लौटने पर तीर्थयात्री (बाब) ने, जब कुद्दूस को विदा करते समय उनके प्रिय की उपस्थिति में प्रवेश करने और शहादत प्राप्त करने की दोगुनी खुशी की घोषणा की थी, तब उनका इशारा हमारी "श्रद्धा और प्रेम के एकमात्र लक्ष्य" बहाउल्लाह की ओर ही था। वे बहाउल्लाह ही थे, जो सांसारिक प्रतिष्ठा, धन–वैभव और पद का विचार त्याग कर, संकटों से अविचलित तथा अपने धर्म के लोगों की निन्दा सहन करते हुए, युवावस्था में ही पहले तेहरान में और फिर अपने मूल प्रांत माज़िन्दरान में स्वयं को एक अज्ञात और निषिद्ध सम्प्रदाय के साथ जोड़ने के लिए उठ खड़े हुए; जिन्होंने बाबी धर्म के लिए नूर के सरकारी अधिकारियों और ऐसे प्रख्यात व्यक्तियों का समर्थन जीत लिया, जिनमें उनके स्वयं के मित्र और रिश्तेदार शामिल थे; जिन्होंने निडरतापूर्वक और समझदारी के साथ उस नामवर मुजताहिद, मुल्ला मुहम्मद के शिष्यों के समक्ष धर्म के सत्य की व्याख्या की; उसी मुजताहिद के शिष्यों को इसके ध्वज तले शामिल कर लिया। इसके परिणामस्वरूप, उच्च वर्ग के धर्माचार्यों, शासकीय अधिकारियों, किसानों और व्यापारियों की पूरी–पूरी वफादारी प्राप्त हुई और एक यादगार साक्षात्कार के दौरान उसी मुजताहिद को चुनौती देने में सफलता भी प्राप्त की। जब बाब कुलैन नामक एक गाँव के निकट थे, तब मुल्ला मुहम्मद मेहदी–ए–कान्दी के माध्यम से बाब को भेजे गए बहाउल्लाह के उस लिखित संदेश की ताकत ही थी जिसके कारण अनिश्चय और असमंजस के क्षणों में उस निराश कैदी की आत्मा अपने आप को उस मनोव्यथा से मुक्त कर सकी जिसने शीराज़ में उनकी गिरफ्तारी के समय से उन्हें बोझिल किया हुआ था। वे बहाउल्लाह ही थे जिन्होंने ताहिरा और उसके कैदी साथियों की खातिर, एक लम्बे समय तक जारी रहने वाले अपमानजनक कारावास को सहर्ष स्वीकार किया – जिसमें सबसे पहले कारावास में उन्हें तेहरान के एक कदखुदा के घर में कैद रखा गया। काज़वीन से ताहिरा का सफल बचाव, उनके शत्रुओं से उनकी मुक्ति,

बहाउल्लाह के घर तक उनका सुरक्षित लाना, बाद में राजधानी के समीप उस सुरक्षित स्थान तक उन्हें पहुँचाना जहाँ से उन्होंने खुरासान की ओर प्रस्थान किया। इन सभी कार्यों का श्रेय बहाउल्लाह की सावधानी, दूरदर्शिता और योग्यता को दिया जाना चाहिए। वे बहाउल्लाह ही थे जिनकी उपस्थिति में मुल्ला हुसैन को तेहरान पहुँचते ही गुप्त रूप से लाया गया, जिस साक्षात्कार के बाद उन्होंने माहकू के किले में कैद बाब से भेंट करने के लिए अज़रबैजान की यात्रा की। वे बहाउल्लाह ही थे, जिन्होंने अप्रत्यक्ष और अमोघ रूप से बदश्त के सम्मेलन की कार्यवाही का संचालन किया; जिन्होंने अपने मेहमान के रूप में कुद्दूस, ताहिरा और उस अवसर पर एकत्रित होने वाले 81 अनुयायियों की मेहमाननवाजी की; जिन्होंने प्रत्येक दिन एक पाती प्रकट की और प्रत्येक प्रतिभागी को एक नए नाम से विभूषित किया; जिन्होंने नियाला में अकेले ही, पाँच सौ से भी अधिक गाँव वालों की आक्रमणकारी भीड़ के हमले का सामना किया; जिन्होंने आक्रमणकारियों के क्रोध से कुद्दूस की रक्षा की; जो उस सम्पत्ति के कुछ हिस्से को पुनः वापस दिलाने में सफल रहे, जिसे शत्रु लूट चुके थे और जिन्होंने उस निरन्तर सताई जाने वाली एवं अत्यंत उत्पीड़ित ताहिरा की सुरक्षा और बचाव को सुनिश्चित किया। वे बहाउल्लाह ही थे, जिनके विरूद्ध मुहम्मद शाह के क्रोध को भड़काया गया, जो खुराफातियों के सतत् प्रयासों के परिणामस्वरूप बहाउल्लाह की गिरफ्तारी के आदेश जारी करने और उन्हें राजधानी बुलाने का सम्मन जारी करने लिए राज़ी हो गया – ऐसा सम्मन जिसका, मुहम्मद शाह की आकस्मिक मृत्यु के कारण पूरा न होना नियत था। शेख तबरसी के किले में बहाउल्लाह के दौरे के अवसर पर, इतने भक्तियुक्त सम्मान और प्रेम के साथ उनका स्वागत करने वाले किले के निवासियों को बहाउल्लाह द्वारा दी गई सलाहें और परामर्श ही उनके साहस के मुख्य प्रेरणा के स्रोत हैं, जो किले के शूरवीर रक्षकों ने प्रदर्शित किया था। वे बहाउल्लाह के स्पष्ट निर्देश ही थे जिनके कारण कुद्दूस की वह रहस्यमय रिहाई हो सकी जिसके पश्चात उन झकझोर देने वाले पराक्रमों में वे उन लोगों का साथ दे सके जिन्होंने माज़िन्दरान क्रांति को अमर बना दिया। ये ही वे रक्षक थे जिनका साथ देने की बहाउल्लाह की हार्दिक इच्छा थी

जिनके कारण ही इस बार बहाउल्लाह ने आमुल की उस मस्जिद में अपना दूसरा कारावास सहन किया, जहाँ उन्हें कम से कम चार हज़ार दर्शकों के शोरगुल के बीच ले जाया गया; ये वे रक्षक ही थे, जिनके लिए उस नगर के मुजताहिद के निवास पर उनके तलवों पर बेंतों से तब तक वार किया गया जब तक उनमें से खून नहीं बह निकला। इसके पश्चात शेख तबरसी के इन्ही रक्षकों के लिए, जब बहाउल्लाह को नगर के राज्यपाल के निजी निवास में कैद किया गया था, तब वहाँ के प्रधान मुल्ला ने उनकी कड़ी निन्दा की थी और एक ऐसी आक्रमणकारी भीड़ ने उनका अपमान किया था जिसने राज्यपाल के घर को घेर लिया और बहाउल्लाह पर पत्थर फेंके और उन्हें अपशब्द कहे। जब शेख तबरसी पहुँचकर कुद्दूस ने अपने घोड़े से नीचे उतरने के तत्काल बाद, उस समाधि से टिक कर इस दिव्य श्लोक को उच्चारित किया था कि "अगर तुम उनमें हो जो आस्था रखते हैं तो बक़ीय्यातुल्लाह (ईश्वर के अंश) तुम्हारे लिए सर्वोत्तम होंगे।" उस असाधारण प्रतिभा से सम्पन्न व्यक्ति की प्रशंसा के पात्र तब बहाउल्लाह ही थे। वे केवल बहाउल्लाह ही थे, जो समद के साद की उस अद्भुत प्रशस्ति, उस उत्कृष्ट व्याख्या के लक्ष्य थे जिसके कुछ अंश, उसी किले में, सबसे दुःखद परिस्थितियों में, कुरान की तुलना में छः गुना अधिक मात्रा में उसी जवान शूरवीर (कुद्दूस) द्वारा लिखे गए थे। वे बहाउल्लाह ही थे जिनके भावी प्रकटीकरण के दिवस की ओर गूढ़रूप से संकेत करते हुए, बाब ने दय्यान के सम्मान में, चिहरिक में लौह–ए–हुरूफत प्रकट की थी, जिसमें उस "मुस्तगास" के रहस्य को उजागर किया गया था। वे बहाउल्लाह ही थे जिनकी उपस्थिति प्राप्त करने के लिए स्वयं बाब ने, मुल्ला बक़ीर नाम के एक जीविताक्षर का स्पष्ट रूप से ध्यान आकर्षित किया था। चिहरिक से निकलने से पहले स्वयं बाब द्वारा जारी किए गए निर्देशों के अनुसार बाब के दस्तावेज़, उनकी कलमदानी, उनकी मोहरें और गोमेद की अँगूठियों सहित वह पर्चा जिसमें बाब ने एक पंचभुज के रूप में बहा शब्द से उत्पन्न होने वाले कम से कम तीन सौ साठ शब्द लिखे थे, बहाउल्लाह की ही सुरक्षा में सौंपे गए थे। वह केवल बहाउल्लाह द्वारा की गई पहल और उन्हीं के कड़े निर्देश ही थे जिनके अनुसार बाब के बहुमूल्य पार्थिव अवशेषों को सुरक्षित रूप से तबरीज़

से राजधानी स्थानान्तरित किया गया था, और उनकी शहादत के बाद के अशांत वर्षों के दौरान इन्हें अधिकतम गोपनीयता और सावधानीपूर्वक सुरक्षित रखा गया था। अन्त में, वे बहाउल्लाह ही थे, जिन्होंने शाह पर जानलेवा हमला होने से पहले, अपने करबला प्रवास के दौरान, उसी उत्साह और योग्यता के साथ बाब की शिक्षाओं का प्रसार किया, उनके धर्म के हितों की रक्षा की, उनके दुःखी अनुयायियों के उत्साह को पुनर्जीवित किया और उनके धर्म के घबराए हुए अनुयायियों की ताकत को संगठित किया।

अपने खाते में उपलब्धियों का ऐसा विवरण रखने वाला व्यक्ति, एक चौकन्ने शत्रु की नज़र या उसके क्रोध से न तो छूट सकता था और न ही वास्तव में छूटा। जिस धर्म को उन्होंने स्वीकार किया था, उस धर्म के प्रति प्रारम्भ से ही एक अदम्य उत्साह से प्रज्वलित; दलितों के अधिकारों के पक्ष का समर्थन करने में स्पष्ट रूप से निडर; अपनी जवानी की बहार में; अपार रूप से संसाधन–कुशल; तर्क करने में अनुपम; कभी न खत्म होने वाली ऊर्जा और तीक्ष्ण विवेक से विभूषित; धन–वैभव से सम्पन्न, तथा सौम्य रूप से उच्च एवं श्रेष्ठ स्तरों से जोड़े जाने वाले प्रचुर सम्मान और शक्ति से सुखी होने के बावजूद, समस्त भौतिक आडम्बरों, पुरस्कारों, दिखावों और सम्पदा का तिरस्कार करने वाले; एक तरफ उस धर्म के संस्थापक के साथ नियमित पत्राचार के माध्यम से नज़दीक से जुड़े हुए, जिसका प्रचार करने के लिए वे उठ खड़े हुए थे, तथा दूसरी ओर उस धर्म के प्रधान व्याख्याताओं की आशाओं, उनके भय, उनकी योजनाओं एवं उनकी गतिविधियों से प्रगाढ़ रूप से परिचित; कभी उस धर्म की मुक्ति के लिए संघर्ष करने वाली शक्तियों में सबसे आगे रहकर खुल्लम–खुल्ला आगे बढ़ने वाले और मान्यता प्राप्त नेतृत्व का स्थान लेने वाले, तो कभी किसी विकट या खतरनाक परिस्थिति का अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से निवारण करने के लिए पूर्ण विवेक के साथ जानबूझकर पीछे हटने वाले; उस धर्म की अखण्डता की सुरक्षा, उसकी समस्याओं के समाधान, उसका पक्ष रखने, उसके अनुयायियों को प्रेरित करने, तथा उसके विरोधियों को हक्का–बक्का करने के लिए सदा सावधान, तैयार और अपने प्रयासों में अथक, इस धर्म के भाग्य में सबसे संकटपूर्ण घड़ी में, बहाउल्लाह, आखिरकार उस मंच के केन्द्र

में ही कदम रख रहे थे जिसे बाब ने बड़े कष्ट से खाली किया था, एक ऐसा मंच जिस पर कम से कम चालीस वर्ष की अवधि तक बहाउल्लाह द्वारा एक ऐसी भूमिका निभाना नियत था जो अपनी शान, करूणामयता और भव्यता में विश्व के ऐतिहासिक धर्मों के किसी भी महान संस्थापक की पहुँच से दूर थी।

अपने विरूद्ध लगाए गए आरोपों के कारण पहले ही उस मुहम्मद शाह का कोप सुलग उठा था, जिसने बदश्त की घटना के बारे में सुनकर, माज़िन्दरान के खानों को सम्बोधित किए गए कई आदेशों में बहाउल्लाह की गिरफ्तारी के आदेश जारी कर दिए थे और उन्हें मौत के घाट उतारने का अपना दृढ़ निश्चय व्यक्त किया था। पहले ही वज़ीर (बहाउल्लाह के पिता) से अलग होने वाला और बहाउल्लाह की एक रियासत को छल से हड़पने में अपनी नाकामयाबी से क्रोधित, हाजी मिर्ज़ा अक़ासी ने बहाउल्लाह के प्रति अमिट शत्रुता की सौगंध खाई थी, लेकिन बड़ी बुद्धिमत्तापूर्वक उसके दुष्ट षड़यन्त्रों को निष्फल कर दिया गया था। इसके अतिरिक्त इतने ऊर्जावान विरोधों के व्यापक प्रभाव से पूरी तरह सावधान अमीर निज़ाम ने एक विशिष्ट सभा में, बहाउल्लाह पर आरोप लगाया कि उनकी गतिविधियों के परिणामस्वरूप सरकार को कम से कम पाँच करोड़ का घाटा सहन करना पड़ा है, साथ ही उसने प्रभुधर्म के भाग्य की इतनी संकटपूर्ण घड़ी में बहाउल्लाह से स्पष्ट अनुरोध किया कि वे अपना निवास स्थान करबला में अस्थाई रूप से स्थानान्तरित कर लें। अमीर निज़ाम का उत्तराधिकारी बनने वाले मिर्ज़ा आक़ा खान–ए–नूरी ने अपने कार्यकाल के आरम्भ में ही अपनी सरकार और बहाउल्लाह के बीच पुनः मैत्री कराने का प्रयास किया था, जिसे वह बाब के अनुयायियों में सबसे अधिक कुशल व्यक्ति मानता था। कोई आश्चर्य की बात नहीं कि बाद में, जब शाह पर जानलेवा हमले जैसा गम्भीर और दुस्साहस भरा कृत्य किया गया, तो शाह के मन में, तथा उसकी सरकार, उसके दरबार, और उसकी प्रजा के मन में भी बहाउल्लाह के प्रति एक अत्यन्त गम्भीर और उतना ही निराधार सन्देह घर कर गया हो। इनमें सर्वप्रथम उस युवा शासक की माँ थी, जो क्रोध से आग बबूला हो गई, और उन्हें अपने बेटे का भावी कातिल घोषित करने लगी।

जिस समय शाह पर जानलेवा हमला हुआ, उस समय बहाउल्लाह लवासान में महामंत्री के आतिथ्य में थे। जब उन्हें यह महत्वपूर्ण समाचार मिला, तब वे अफचिह गाँव में रह रहे थे। उनके अतिथेय के रूप में सेवा करने वाले महामंत्री के भाई, जाफर–कुली खान ने उन्हें सलाह दी कि वे कुछ समय के लिए पड़ोस के क्षेत्र में छिप जाएँ। परन्तु उसकी सलाह पर ध्यान न देते हुए और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए भेजे गए विशेष संदेशवाहक की सहायता को अस्वीकार करते हुए अगले दिन सुबह, बहाउल्लाह घोड़े पर सवार होकर शान्तिपूर्ण निर्भयता से, शिमरॉन ज़िले के नियावरान में स्थित शाही फौज के उस समय के मुख्यालय की ओर निकल पड़े। ज़रक़ान्दी नामक गाँव में उनकी भेंट उनके जीजा, मिर्ज़ा मजीद से हुई, जो उन्हें अपने घर ले गए। मिर्ज़ा मजीद उन दिनों रूसी मंत्री, प्रिंस दोलगोरूकी के सचिव के रूप में कार्य करते थे, इनका घर उनके अधिकारी के घर के पास ही था। बहाउल्लाह के आगमन की खबर पाते ही, हाजिबुद्दौली और हाजी अली खान के सेवकों ने तत्काल यह सूचना अपने मालिक को दे दी, जिसने मामले की सूचना अपने राजा को दी। आश्चर्यचकित होकर शाह ने अपने विश्वसनीय अधिकारियों को रूसी दूतावास भेजा और आरोपी को तत्काल उसके हवाले करने की माँग की। शाही प्रतिनिधियों की बात मानने से इन्कार करते हुए, रूसी मंत्री ने बहाउल्लाह से अनुरोध किया कि वे उस महामंत्री के निवास के लिए प्रस्थान करें, जिसे वह अपनी इस इच्छा से अवगत करा चुका था कि जो अमानत (बहाउल्लाह) रूसी सरकार उसे सौंप रही थी, उनकी सुरक्षा सुनिश्चित की जाए। परन्तु, महामंत्री के इस डर के कारण यह उद्देश्य पूरा न हो सका, कि यदि उसने आरोपी (बहाउल्लाह) को वह सुरक्षा प्रदान कर दी, जिसकी माँग उससे की जा रही थी, तो वह अपना पद गवाँ बैठेगा।

अपने शत्रुओं के हाथों में सौंपे जाने के बाद, निरन्तर शिकार बनाए जाने वाले धर्म के इस नामवर व्याख्याता को वह प्याला चखाया गया जिसे इसके माने हुए दिव्य नेतृत्वकर्ता ने तलछट तक पिया था। बहाउल्लाह को गरमी के मौसम की दोपहर की जलती हुई धूप में *"बगैर ताज के, बेड़ियों में बांध कर*

पैदल और नंगे–पाँव", नियावरान से तेहरान की सियाहचाल तक लाया गया। रास्ते में कई बार उनके ऊपरी वस्त्रों को निकालकर उनका बहुत मज़ाक उड़ाया गया और उन पर पत्थर फेंके गए। जहाँ तक उस अंधकूप जैसे कारागार का प्रश्न है, जहाँ उन्हें डाला गया था, वह ज़मीन के नीचे स्थित था और मूलरूप से, राजधानी के एक सार्वजनिक स्नानागार का जलाशय हुआ करता था। इस कारागार के विषय में, "भेड़िये के पुत्र" को सम्बोधित पत्र में लिखे गए बहाउल्लाह के शब्द ही उस अग्निपरीक्षा की साक्षी देते हैं, जो उन्होंने उस दूषित गह्वर में सहन कीं। *"चार माह तक हमें एक ऐसे स्थान के हवाले कर दिया गया जिसकी मलिनता की तुलना नहीं की जा सकती.....। वहाँ पहुँचते ही, पहले हमें एक घोर अंधकार भरे गलियारे से ले जाया गया, जहाँ से हम तीन खड़ी सीढ़ियों से नीचे उतरकर उस कैद तक पहुँचे जो हमारे लिए निर्धारित की गई थी। यह कैद घने अन्धकार से ढंकी हुई थी और हमारे साथी कैदियों की संख्या लगभग डेढ़ सौ थी जिनमें चोर, हत्यारे और डकैत शामिल थे। यद्यपि भीड़ बहुत थी, फिर भी बाहर जाने का और कोई रास्ता नहीं था, सिवाय उस गलियारे के, जिससे हमने प्रवेश किया गया था। कोई भी कलम उस स्थान का चित्रण नहीं कर सकती, न ही कोई जिह्वा उसकी घृणा योग्य दुर्गन्ध का वर्णन कर सकती है। उनमें से अधिकांश लोगों के पास न तो कपड़े थे, न ही सोने के लिए बिस्तर। केवल ईश्वर ही जानता है कि उस सबसे अधिक घृणित दुर्गन्ध और उदासी से भरे स्थान में हम पर क्या बीती।"* बहाउल्लाह के पैरों को लकड़ी के लट्ठे में रखा गया और उनकी गरदन के इर्द–गिर्द दो इतनी भारी बेड़ियाँ कस दी गईं कि उसके निशान बहाउल्लाह के शरीर पर जीवन भर बने रहे। स्वयं अब्दुल बहा ने साक्षी दी है कि, *"उनकी गरदन के आसपास एक भारी ज़ंजीर कस दी गई जिससे उन्हें पाँच अन्य बाबियों के साथ बाँधा गया; इन ज़ंजीरों को बड़े शक्तिशाली और भारी बोल्टों और पेंचों के साथ इकट्ठा बाँध दिया गया था; बहाउल्लाह के कपड़े और उनका ताज फटकर तार–तार हो गए थे। उन्हें इस दारूण अवस्था में चार माह तक रखा गया।"* तीन दिन और तीन रातों तक उन्हें कोई भोजन और पानी नहीं दिया गया। नींद लेना उनके लिए असम्भव था। यह जगह अतिशीत और

सीलनभरी, मैली, कीड़े–मकोड़ों से ग्रसित और असहनीय दुर्गन्ध से भरी थी। दयारहित घृणा से प्रेरित शत्रुओं ने इस आशा में कि उन्हें बहाउल्लाह के सबसे निर्दयी शत्रु, अर्थात उनके राजा की माता की ओर से अनुग्रह प्राप्त होगा, उनके भोजन तक को बीच में रुकवाकर उसमें ज़हर मिला दिया गया। उनके इस दुष्कर्म ने बहाउल्लाह के स्वास्थ्य को कई वर्षों तक हानि पहुँचाई, किन्तु शत्रु अपना उद्देश्य पूरा करने में असमर्थ रहे। अपनी एक पुस्तक में डॉ. जे. ई. एसलमॉन्ट ने दर्ज किया है कि : *"अब्दुल बहा हमें बताते हैं कि किस प्रकार, एक दिन अपने प्रिय पिताश्री से मिलने के लिए उन्हें उस कैदखाने के आँगन में प्रवेश करने की अनुमति दी गई, जहाँ बहाउल्लाह को उनके दैनिक व्यायाम के लिए प्रतिदिन लाया जाता था। बहाउल्लाह इतने भयंकर रूप से बदल गए थे, इतने अस्वस्थ थे कि वे चल भी नहीं पा रहे थे, कंघी न करने के कारण उनके केश और दाढ़ी बिखरे हुए थे, भारी स्टील के पट्टे के रगड़ने के घाव से उनकी गरदन सूज गई थी, ज़ंजीरों के बोझ से उनका शरीर झुक गया था।"*

जब बहाउल्लाह को उन तूफानी दिनों से जुड़ी परीक्षाओं और दारुण दुःखों से इतने घिनौने और क्रूर ढंग से उत्पीड़ित किया जा रहा था, तब प्रभुधर्म का एक अन्य प्रकाशपुंज, वह बहादुर ताहिरा भी बड़ी तेज़ी के साथ शत्रुओं की विनाशकारी शक्ति का शिकार बनती जा रही थीं। करबला में शुरू होने वाला, और बदश्त में अपनी चोटी पर पहुँचने वाला उनका उल्का के समान सेवाकाल, अब एक ऐसी शहादत में अपनी अन्तिम पूर्णता को प्राप्त होने जा रहा था जिसे बहाई इतिहास की सबसे अशांत अवधि की सबसे प्रभावशाली घटनाओं में एक माना जाना उचित होगा।

ताहिरा, हाजी मुल्ला सालिह–ए–बराक़ानी के उस अत्यन्त प्रतिष्ठित परिवार की वंशज थीं, जिसके सदस्यों को फारस के धर्माचार्य पदक्रम में एक वांछनीय स्थान प्राप्त था; वे यशस्वी फातिमा की हमनाम थीं; अपने बधु–बांधवों द्वारा ज़र्रिन ताज (स्वर्ण का मुकुट) और ज़ाक्कियेह (सच्चरित्र) के पदनामों से जानी जाती थीं। वे उसी वर्ष में जन्मीं थीं जिसमें बहाउल्लाह का जन्म हुआ था; अपनी बुद्धि और सुन्दरता के कारण अपने नगरवासियों की दृष्टि में वे बचपन

से ही प्रतिभाशाली मानी जाती थीं; उनके द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले विचारों की बुद्धिमत्ता और नवीनता के कारण, अपने धर्मपरिवर्तन के पूर्व, अपने देश के चन्द सब से घमण्डी और ज्ञानी उलेमाओं द्वारा वे अत्यन्त सम्मानित थीं; उनका आदर करने वाले उनके शिक्षक सैय्यद काज़िम द्वारा उन्हें कुर्रात–ए–ऐन (मेरी आँखों की शीतलता) की उपाधि से सराहा गया था; *"शक्ति और महिमा की वाणी"* ने उन्हें ताहिरा (पवित्र) की उपाधि से सम्मानित किया था; बाब द्वारा जीविताक्षर के रूप में शामिल की जाने वाली वे एकमात्र महिला थीं; उन्होंने, एक स्वप्न के माध्यम से जिसका उल्लेख पिछले पृष्ठों में किया जा चुका है, उस धर्म के साथ अपना प्रथम सम्पर्क जोड़ा, जिसका प्रचार वे अपनी अन्तिम साँस तक और इस धर्म के सबसे बड़े संकट की घड़ी में, अपने अदम्य साहस और पूरे उत्साह के साथ करती रहीं। अपने पिता के प्रबल विरोध से विचलित हुए बगैर; अपने चाचा के अभिशापों की परवाह न करते हुए; अपने पति और अपने भाईयों की विनती से अप्रभावित रहते हुए तथा पहले करबला के, फिर बग़दाद के और उसके बाद काज़वीन के नगर प्रशासन अधिकारियों द्वारा उनकी गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए उठाए गए कदमों से भयभीत हुए बिना, पूरी ऊर्जा के साथ वे बाबी धर्म को आगे बढ़ाती रहीं। अपने भावपूर्ण अभिवचनों, अपनी निडर भर्त्सनाओं, अपने लेखों, कविताओं और अनुवादों तथा अपनी व्याख्याओं और पत्राचार के माध्यम से वे अरबी और फारसी लोगों के विचारों को उत्साहित करने और इस नए प्रकटीकरण के प्रति उनका विश्वास जीतने, अपनी पीढ़ी की भ्रष्टता की निन्दा करने तथा अपने लोगों की आदतों और तौर–तरीकों में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने में लगी रहीं।

वे ताहिरा ही थीं, जिन्होंने शिया इस्लाम के मुख्य गढ़ करबला के अपने प्रवास के दौरान, उस शहर में निवास करने वाले उन प्रत्येक उलेमाओं को एक लम्बा पत्र लिखना ज़रूरी समझा, जिन्होंने स्त्रियों को पशुओं से ऊँचा स्थान दे कर अलग कर दिया था और इस बात से भी इन्कार कर दिया था कि उनके पास भी एक आत्मा होती है। इन पत्रों में ताहिरा ने बड़ी कुशलता के साथ अपने उच्च उद्देश्य को प्रमाणित किया और उन लोगों के कपटी षड़यंत्रों को उजागर कर दिया। वे ताहिरा ही थीं, जिन्होंने, उसी शहर के कट्टरपंथी लोगों के

रिवाज़ों को खुल्लम–खुल्ला चुनौती देते हुए, इमाम हुसैन की शहादत की बरसी की बेधड़क अवज्ञा की और मुहर्रम माह के शुरूआत में, इमाम हुसैन की शहादत के स्थान पर विस्तृत धर्मानुष्ठान के साथ बाब के जन्म दिन की बरसी का उत्सव मनाया, जो उसी माह के प्रथम दिन को पड़ा था। ताहिरा की विलक्षण वाक्पटुता के माध्यम से और भौंचक्का कर देने वाली उनके तर्क की शक्ति से ही उन्होंने शियाओं, सुन्नियों, ईसाईयों और यहूदियों के उस प्रतिनिधि दल को हक्का–बक्का कर दिया, जिसने उन्हें इस नए संदेश के शुभ समाचारों का प्रसार करने के अपने दृढ़ उद्देश्य से रोकने का प्रयास किया था। वे ताहिरा ही थीं, जिन्होंने, पूरी निपुणता के साथ अपने धर्म की रक्षा की और उस प्रतिष्ठित विधिवेत्ता, शेख महमूद–ए–अलूसी, बग़दाद के मुफ्ती के निवास पर और उसकी उपस्थिति में, अपने आचरण को सिद्ध किया बाद में, किरमानशाह में निवास करने वाले राजकुमारों, उलेमाओं और शासकीय अधिकारियों के साथ ऐतिहासिक साक्षात्कार किए, जिसके दौरान सूरा–ए–कॉसर पर बाब की व्याख्या को सार्वजनिक रूप से पढ़ा और अनुवादित किया, जिसके परिणामस्वरूप वहाँ के अमीर (राज्यपाल) और उनके परिवार ने प्रभुधर्म को स्वीकार कर लिया। ताहिरा ही वह असाधारण रूप से गुणवान स्त्री थीं जिन्होंने सूरा–ए–यूसुफ (कय्यूमुल अस्मॉ) पर बाब की लम्बी व्याख्या का अनुवाद करने का उत्तरदायित्व लिया और उस महान पुस्तक के ज्ञान का प्रसार करने के लिए और उसकी विषयवस्तु पर प्रकाश डालने के लिए अधिकतम परिश्रम किया। यह उनकी निडरता, उनका कौशल, व्यवस्थापन की उनकी योग्यता और उनका अदम्य उत्साह ही था जिनके कारण काज़वीन जैसे उस विरोधी धार्मिक केन्द्र में उनकी ताज़ा विजय हुईं, जिसे इस बात पर गर्व था कि इस शहर में इस्लाम के कम से कम सौ उच्चतम धर्माधिकारी वर्ग के लोग निवास करते थे। वे ताहिरा ही थीं जिन्होंने तेहरान में बहाउल्लाह के निवास स्थान पर, प्रख्यात वाहीद के साथ अपने एक साक्षात्कार के दौरान, नए अवतार के चिन्हों के बारे में उनके बुद्धिमत्तापूर्ण सम्भाषण के बीच में अचानक हस्तक्षेप किया और अपनी गोद में अब्दुल बहा को लिए हुए, जो कि उस समय एक नन्हे बालक थे, प्रबल रूप से वाहीद से अनुरोध किया कि वे अपने पराक्रमों और आत्मत्याग से अपनी आस्था की गहराई और

सच्चाई प्रदर्शित करें। ये वे ही थीं, जिनकी कीर्ति और लोकप्रियता के चरम सीमा पर पहुँचने के दौरान, तेहरान के स्त्री समुदाय की श्रेष्ठ महिलाएँ उनके धर्म के बेमिसाल सिद्धान्तों के बारे में उनके लाजवाब प्रवचन सुनने के लिए उनके द्वार पर एकत्र होतीं थीं। यह उनके शब्दों का जादू ही था, जिसने मुहम्मद खान–ए–कलन्तर, जिनके निवास में वे कैद थीं, के पुत्र के विवाह के अवसर पर बुलाए गए उन मेहमानों को जो ताहिरा का एक एक शब्द ग्रहण करने के लिए उत्सुक थे, उत्सव स्थान से दूर खींचकर ताहिरा के इर्द–गिर्द एकत्र कर दिया। उसी घर में अपनी कैद के दौरान महामंत्री के उन प्रतिनिधियों के साथ, जिन्हें उनसे पूछताछ के लिए भेजा गया था, ताहिरा ने सात सम्मेलनों की एक श्रृंखला में इस नए प्रकटीकरण को विशेषता प्रदान करने वाले दावों और विशिष्टताओं की गहन और बगैर शर्त पुष्टि की। यही वह कारण था जिसके परिणामस्वरूप उन्हें मौत की सज़ा सुनाई गई थी। वे ताहिरा ही थीं जिनकी कलम से ऐसी कविताएँ प्रकटित हुईं जो न केवल बाब के प्रकटीकरण में उनकी आस्था को प्रमाणित करती थीं, अपितु इस बात का भी प्रमाण देती हैं कि बहाउल्लाह के अब तक छिपे ध्येय के उदात्त स्वरूप को ताहिरा ने पहचान लिया था। और अन्तिम किन्तु उतना ही महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि बदश्त के सम्मेलन में भाग लेते समय ताहिरा की पहल पर ही, एक क्रान्तिकारी और अब तक बहुत कम समझ में आने वाले विधान के सबसे चुनौतीपूर्ण आशयों को उनके सह–अनुयायियों के समक्ष प्रस्तुत किया गया और नई विश्व व्यवस्था को इस्लाम के नियमों और संस्थाओं से हमेशा के लिए अलग कर दिया गया। इतनी शानदार उपलब्धियों को अब शहादत का ताज पहनाया जाने वाला था और पूरी राजधानी में उठने वाले तूफान के मध्य, ताहिरा की शहादत में ये अपनी चरम सीमा पर पहुँचने वालीं थीं।

एक रात, इस बात से अवगत होते हुए कि उनकी मृत्यु की घड़ी निकट आ चुकी है, ताहिरा ने दुल्हन के वस्त्र पहने, इत्र लगाया और कलन्तर की पत्नी को अपने पास बुलाकर उसे अपनी भावी शहादत का रहस्य बताया और उसे अपनी अन्तिम इच्छाओं का राज़दार बनाया। इसके बाद अपने कक्ष में बन्द होकर, उन्होंने प्रार्थना और भक्ति के साथ उस घड़ी का प्रतीक्षा की जिसमें

उनके परमप्रिय के साथ उनका मिलन होने वाला था। मध्यरात्रि के अंधकार में जब अज़ीज़ खान–ए–सरदार के जल्लाद, ताहिरा को उस इलखानी बगीचे में ले जाने के लिए वहाँ पहुँचे, जो नगर–द्वार के बाहर स्थित था और जो ताहिरा की शहादत का स्थान बनने वाला था, उस समय वे दुःख और विजय की मिली–जुली अभिव्यक्ति करने वाली एक प्रार्थना गाते हुए अपने कमरे में टहल रहीं थीं। जब वे बाहर आईं, तब सरदार नशे में बहका हुआ था और अपने उप–सेनापतियों के साथ ज़ोर–ज़ोर से हँस रहा था। उसने बिना सोचे विचारे, आदेश दे दिया कि ताहिरा को तत्काल गला घोंटकर मार दिया जाए और उन्हें एक गड्ढे में फेंक दिया जाए। इस अमर वीरांगना को उसी रेशमी रूमाल से मौत के घाट उतारा गया, जो उन्होंने अपने अन्तरज्ञान से प्रेरित होकर विशेष रूप से उसी उद्देश्य के लिए सुरक्षित रखा था तथा अपने अन्तिम समय में कलन्तर के उस पुत्र को सौंपा था जो उनकी अन्तिम घड़ियों में उनके साथ था। उनके पार्थिव शरीर को एक कुँए में उतारा गया, जिसे मिट्टी और पत्थर से उसी प्रकार भर दिया गया जैसा कि स्वयं ताहिरा ने चाहा था।

इस प्रकार इस महान बाबी वीरांगना के जीवन का अन्त हुआ, जो प्रथम महिला समर्थक शहीद थीं, जिन्होंने अपनी मृत्यु के समय, उस व्यक्ति की ओर मुड़कर, जिसकी हिरासत में उन्हें रखा गया था, बड़े साहस के साथ यह घोषित किया : *"तुम जितनी जल्दी चाहो, मुझे मार सकते हो, परन्तु तुम स्त्रियों की मुक्ति को नहीं रोक सकते।"* उनका सेवाकाल उतना ही चकित कर देने वाला था, जितना यह संक्षिप्त था और उतना ही दुःखद था जितना यह घटनाओं से भरा हुआ था। अपने उन सह–अनुयायियों, जिनके पराक्रम अधिकांशतः अज्ञात रहे तथा विदेशी प्रांतों के समकालीन लोगों द्वारा सराहे न जा सके, के विपरीत इस अमर स्त्री की ख्याति विदेशों तक पहुँची और अपूर्व तेज़ी के साथ पश्चिमी यूरोप की राजधानियों में प्रवेश कर गई, इसने विभिन्न राष्ट्रों, पृष्ठभूमियों और संस्कृतियों के स्त्री–पुरूषों में उत्साहपूर्ण प्रेम उत्पन्न किया और उनमें उत्कट प्रशंसा जगाई। कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि अब्दुल बहा ने उनका नाम, सारा, आसियेह, पवित्र मेरी और फातिमा के साथ जोड़ दिया, जो क्रमिक विधानों के दौरान, अपनी अंतर्भूत उत्कृष्टता और

अद्वितीय स्थान के कारण, अपनी जाति की समस्त स्त्रियों की तुलना में श्रेष्ठतम थीं। स्वयं अब्दुल बहा लिखते हैं कि *"वे अपने युग की आपदा थीं और तर्कपूर्ण दलीलों में दुनिया के लिए संकट"।* साथ ही उन्होंने ताहिरा का वर्णन *"ईश्वर के प्रेम से प्रज्वलित मशाल"* और *"ईश्वर के आशीषों से प्रकाशित दीप"* के रूप में किया है।

वास्तव में उनके जीवन की चमत्कारिक कहानी भी उतनी ही दूर तक और उतनी ही तेज़ी के साथ प्रचारित हुई, जितनी उनकी प्रेरणा के स्रोत स्वयं बाब की कहानी हुई थी। बाब और उनके अनुयायियों के जीवन पर टीका करने वाले एक विख्यात टीकाकार ने ताहिरा को *"विज्ञान के लिए आश्चर्य, लेकिन सौन्दर्यजगत में भी आश्चर्यचकित कर देने वाला"* की उपाधि से विभूषित किया, एक विख्यात नाटककार, जिनसे सेरा बर्नहार्ट ने विशेषरूप से ताहिरा के जीवन का नाटकीय रूपान्तरण लिखने का अनुरोध किया गया था, उसने ताहिरा की प्रशंसा में लिखा है कि वे "फारस की जॉन ऑफ आर्क थीं, पूरब की महिलाओं के उद्धार की वह अग्रणी थीं.....जो मध्यकालीन हेलोईस और नव–आदर्शवादी हीपेशिया, दोनों से मेल खाती थीं। केडलस्टन के लॉर्ड़ कर्जन साक्षी देते हैं कि "ज़र्रीन ताज (स्वर्ण का मुकुट) नामक, काज़वीन की इस सुन्दर किन्तु दुर्भाग्य की शिकार कवयित्री की वीरता, आधुनिक इतिहास का सबसे अधिक प्रभावित कर देने वाला वृत्तान्त है।" सुविख्यात अंग्रेज़ प्राच्यविद्, प्रोफेसर ई.जी. ब्राउन लिखते हैं, कि "किसी भी देश और युग में, कुर्रातुल–ऐन जैसी स्त्री का प्रकट होना, एक दुर्लभ संयोग है, परन्तु फारस जैसे देश में तो यह एक महा आश्चर्य है, बल्कि लगभग एक चमत्कार ही है। .....यदि बाबी धर्म के पास अपनी महानता सिद्ध करने का अन्य कोई प्रमाण न होता, तो इतना काफी था, ... कि इसने कुर्रातुल–ऐन जैसी वीरांगना उत्पन्न की।" प्रख्यात अंग्रेज़ विद्वान, डॉ. डी. के. चैन, यह महत्वपूर्ण पुष्टि करते हैं कि, "इस्लामिक देशों में कुर्रातुल–ऐन द्वारा बोई जाने वाली फसल, अब दिखाई देने लगी है, फारस में सामाजिक सुधार की सूची की शुरूआत करने का श्रेय इस महान महिला को जाता है.....।" इसके अलावा वे कहते हैं कि, "ऐसे कई लोगों ने, जो उन्हें जानते थे और जिन्होंने उनके जीवन के अलग–अलग समय पर उन्हें सुना था, मुझे

हमेशा यह बताया है कि.....जब वे बोलती थीं तो व्यक्ति आत्मा की गहराईयों तक हिल जाता था, प्रशंसा से भर उठता था और उसकी आँखे भर आती थीं।" सर वेलेन्टाईन चिरोल लिखते हैं, "ताहिरा के अतिरिक्त अन्य किसी की याद का सम्मान इतनी गहराई से नहीं किया जाता, न ही किसी अन्य की याद इतना अधिक उत्साह उत्पन्न करती है और अपने जीवन में उनके द्वारा डाला गया प्रभाव, आज भी स्त्री जाति को प्रभावित कर रहा है।" एक लेखक और कवि–सुलेमान नाज़ीम बेग, बाबियों पर लिखी अपनी एक पुस्तक में पुकार उठते हैं, "ओ ताहिरा ! तुम एक हजार नसीरूद्दीन शाहों के योग्य हो !" एक ऑस्ट्रियाई राष्ट्रपति की माँ, श्रीमती मेरियाना हैनिश ने ताहिरा को श्रद्धांजलि देते हुए कहा है, "स्त्रीत्व का महानतम आदर्श ताहिरा रहीं हैं, फारस की स्त्रियों के लिए जो करने में ताहिरा ने अपना बलिदान दिया, वही ऑस्ट्रियाई महिलाओं के लिए करने का प्रयास मैं भी करूँगी।"

पाँचों महाद्वीप में, उनके बारे में जानने के लिये उत्सुक, उनके उत्कट चाहने वाले बहुत से लोग हैं। ऐसे कई हैं जिनका आचरण उनके प्रेरणादायक उदाहरण से प्रेरित हुआ है, जिन्होंने उनकी अनूठी गज़लों को कंठस्थ किया है, या उनकी कविताओं को सुर में ढाला है, जिनकी आँखों के सामने उनके अदम्य साहस का दृश्य जगमगाता रहता है, जिनके हृदयों में एक ऐसा प्रेम और श्रद्धा घर कर गई है जिसे समय कभी भी धुँधला नहीं सकता और जिनकी आत्माओं में, वही निडरता और उसी सच्चाई के साथ उस पथ पर चलने का दृढ़संकल्प सुलगता रहता है जो ताहिरा ने अपने लिए चुना था और जिस पथ से वह अपने धर्मपरिवर्तन के क्षण से अपनी मृत्यु की घड़ी तक कभी विचलित नहीं हुईं।

यातनाओं के उसी भीषण तूफान ने, जिसने बहाउल्लाह को भूतल के एक कारागार में डाल दिया था और ताहिरा के प्रकाश को बुझा दिया था, अज़ीज की उपाधि से सम्मानित, बाब के उस प्रतिष्ठित लिपिक हुसैन–ए–याज़्दी के भाग्य पर भी मुहर लगा दी, जो माहकू और चिहरिक दोनों में, बाब की कैद के साथी थे। वे अनुभवों के धनी और उच्च योग्यतासम्पन्न व्यक्ति थे, उन्हें अपने

स्वामी की शिक्षाओं का गहन ज्ञान था और उनके अटल विश्वास के पात्र थे। उन्होंने तेहरान के जाने–माने शासकीय अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत किए गए उनकी रिहाई के प्रस्ताव ठुकरा दिए। वे उस शहादत के लिए लालायित थे जो उन्हें उस दिन प्रदान नहीं की गई जिस दिन बाब ने तबरीज़ के बैरक प्रांगण में अपने प्राणों का बलिदान दिया था। वे तेहरान के सियाहचाल में बहाउल्लाह के हमकैदी थे और अज़रबैजान में अपने स्वामी (बाब) की संगत में बिताए गए बहुमूल्य दिनों को याद करते समय वे अपनी प्रेरणा और सांत्वना बहाउल्लाह से ही प्राप्त करते थे। अन्ततः वे उसी अज़ीज़ खान–ए–सरदार के हाथों मारे गए जिसने ताहिरा को मृत्यु के घाट उतारा था।

इन भयानक यातनाओं के एक अन्य शिकार थे उच्च–विचार रखने वाले, प्रभावशाली और साहसी हाजी सुलेमान खान। वे इतने सम्मानित थे कि एक बार पहले भी अमीर–निज़ाम उनके द्वारा अपनाए गए धर्म से उनके सम्बन्धों को अनदेखा करते हुए उनकी जान बख्श देने के लिए विवश हो गया था। परन्तु शाह पर किए गए जानलेवा हमले और तेहरान में होने वाली उथल–पुथल के परिणामस्वरूप उनको गिरफ्तार कर शहीद कर दिया गया। हाजीबुद्दौली के माध्यम से अपना धर्म छोड़ने के लिए उन्हें प्रेरित करने में असफल होने के बाद, शाह ने आदेश दिए कि उन्हें उन्हीं की इच्छानुसार मौत के घाट उतारा जाए। उनकी ही इच्छा के अनुसार उनके शरीर में नौ छेद किए गए, जिनमें से प्रत्येक में एक सुलगती हुई मोमबत्ती रखी गई। जब जल्लाद ने ऐसा भयानक कृत्य करने से इन्कार कर दिया, तो उन्होंने उसके हाथों से चाकू छीनने का प्रयास किया ताकि वे स्वयं ही इसे अपने शरीर में घोंप सकें। इस डर से कि कहीं वे उस पर वार न कर दें, जल्लाद ने उन्हें चाकू देने से इन्कार कर दिया और अपने आदमियों को आदेश दिया कि वे उनके हाथ उनकी पीठ के पीछे बाँध दें। इस पर उस निडर पीड़ित ने उनसे अनुरोध किया कि वे दो छेद उनकी छाती में करें, दो उनके कंधों में, एक उनके गले की गुद्दी में और चार उनकी पीठ में करें। जैसे ही जल्लाद के आदमियों ने उनकी इस इच्छा को पूरा किया वे तीर के समान सीधे खड़े हुए, अपनी आँखों में वैराग्य का धैर्य लिए, चीखने–चिल्लाने वाली भीड़ को अथवा अपने घावों से बहने वाले

खून को देखकर विचलित हुए बगैर, बिना घबराए तथा गवैयों एवं ढोलकियों के पीछे–पीछे चलते हुए, वे अपने आस–पास की भीड़ को अपनी शहादत के स्थान तक खींच ले गए। कुछ कदमों के बाद वे रुकते और आश्चर्यचकित दर्शकों को ऐसे सम्बोधित करते जिसमें वे बाब की प्रशंसा करते और अपनी मृत्यु के महत्व को उजागर करते। जब उनकी आँखें उनके घावों में सुलगती हुई मोमबत्तियों पर पड़तीं, वे निरंकुश हर्ष से पुकार उठते। जब भी उनके शरीर से कोई मोमबत्ती गिर जाती, तो वे उसे अपने हाथों से उठाते, दूसरी मोमबत्तियों से दोबारा सुलगाते और उसे फिर उसके स्थान पर लगा देते। उनका मज़ाक उड़ाते हुए जल्लाद ने उनसे पूछा, "जब तुम्हें मौत इतनी अच्छी लगती है, तो तुम खुशी से नाचते क्यों नहीं हो?" इस पर उस पीड़ित ने उत्तर दिया, "नृत्य? एक हाथ में उसके प्रेम की मदिरा का प्याला, एक हाथ में उस मित्र के नाम की रट। बाज़ार में ऐसा नृत्य करना मेरी कामना है!" वे अब भी बाजार में थे जब उनके मांस की गहराईयों में अब तक जल रही मोमबत्तियों की लौ को हवा के एक झोंके ने और भी भड़का दिया जिससे उनका मांस कड़कड़ाने लगा। इस पर, उनके घावों को कुरेदने वाली आग की उन लपटों को सम्बोधित करते हुए वे पुकार उठे : "हे लपटें, तुम बहुत पहले ही अपनी चुभन खो चुकी हो और मुझे कष्ट पहुँचाने की तुम्हारी शक्ति छीन ली गई है। शीघ्रता करो, क्योंकि तुम्हारी अग्नि की जिह्वा से मेरे प्रिय के पास बुलाने वाली आवाज़ सुनाई दे रही है।" प्रकाश की चमक में वे ऐसे चल रहे थे, मानो कोई विजेता अपनी विजय के स्थान की ओर कूच कर रहा हो। फाँसी के तख्ते के पास पहुँचकर उन्होंने एक बार फिर अपनी आवाज़ को बुलन्द करते हुए वहाँ उपस्थित दर्शकों की भीड़ से अन्तिम अनुरोध किया। इसके बाद, इमाम–ज़ादेह हसन की समाधि की ओर दंडवत करते हुए, अरबी भाषा में उन्होंने कुछ शब्द कहे : उन्होंने जल्लाद से कहा, "मेरा काम तो समाप्त हो चुका है, आओ अब तुम अपना काम पूरा करो।" उनके शरीर के दो टुकड़े किए जाने के बाद भी उनमें जान बाकी थी और उनके होठों से अब भी अपने परमप्रिय की स्तुति के शब्दों की बुदबुदाहट आ रही थी। जैसा कि उन्होंने स्वयं अनुरोध किया था, उनके शव के जले हुए और खून से लथपथ अवशेषों को 'नौ' नामक द्वार के

दोनों ओर, उस अदम्य प्रेम के मूक गवाहों के रूप में टाँग दिया गया, जो बाब ने अपने अनुयायियों के सीनों में जगाया था।

शाह पर जानलेवा हमले के प्रयास के परिणामस्वरूप भड़कने वाली हिसंक ज्वाला को राजधानी तक ही सीमित नहीं रखा जा सका। यह ज्वाला आसपास के प्रान्तों में फैल गई, इसने बहाउल्लाह के मूल निवास प्रांत माज़िन्दरान को उजाड़ कर रख दिया, जिसके परिणामस्वरूप उनकी सम्पत्ति को जब्त कर लिया गया, लूट लिया गया और उसे नष्ट कर दिया गया। नूर ज़िले के ताकूर गाँव में, महामंत्री के भतीजे मिर्ज़ा अबू–तालिब खान के आदेशों से, बहाउल्लाह के उस राजसी निवास को जो उन्होंने अपने पिता से विरासत में पाया था, पूरी तरह लूट लिया गया और यहाँ से जो कुछ भी उठाकर नहीं ले जाया जा सका, उसे नष्ट कर देने के आदेश दे दिए गए। इस निवास के कमरों को जो तेहरान के महलों के कमरों से भी अधिक भव्य थे इतना बिगाड़ दिया गया कि उनमें सुधार की कोई गुंजाइश ही नहीं रही। लोगों के घरों को भी नष्ट कर दिया गया तथा उसके पश्चात पूरे गाँव को आग के हवाले कर दिया गया।

तेहरान को अपनी गिरफ्त में लेने वाली हलचल ने माज़िन्दारन में भी उपद्रव और लूटमार की स्थिति पैदा कर दी थी, यहाँ तक कि यह आग यज़्द, नैरीज़ और शीराज़ तक फैल चुकी थी और आस–पास के कई गाँवों तक को हिला चुकी थी तथा अत्याचार की ज्वाला को एक बार फिर भड़का रही थी। एक बार फिर, निर्दोष लोगों के साथ लूटमार करने, उनका संहार करने तथा अपनी जाति के सबसे कुलीन लोगों का अपमान करने में, लालची राज्यपाल और उनके अधीनस्थ कार्यरत् विश्वासघाती एक–दूसरे से प्रतिस्पर्धा करने लगे। इसके परिणामस्वरूप संहार का एक दौर फिर शुरू हुआ जिसने उन अत्याचारों को दोहरा दिया, जो नैरीज़ और ज़नजान में पहले ही किए जा चुके थे। हमारे धर्म के जन्म और उत्थान के साथ जुड़े खूनी वृत्तान्तों के एक इतिहासकार ने लिखा है कि "मेरी कलम उसका वर्णन करने में दहशत से रूक जाती है जो उन बहादुर स्त्रियों और पुरुषों पर बीती.....। ज़नजान की घेराबन्दी

की दहशतों का वर्णन करने का जो प्रयास मैंने किया है.....वह उन अत्याचारों की प्रत्यक्ष भयानकता के सामने फीका पड़ जाता है जो कुछ वर्षों बाद नैरीज़ और शीराज़ में हुए।" इस प्रचण्ड धर्मान्धता के आवेग के शिकार बनने वाले कम से कम दो सौ लोगों के सिरों को किर्चों पर टाँगकर विजय के चिन्ह स्वरूप शीराज़ से अबादिह लाया गया। चालीस स्त्रियों और बच्चों को एक ऐसी गुफा में कैद करके जलाकर राख कर दिया गया, जिसमें मिट्टी के तेल में भीगी हुई लकड़ियों के एक बहुत बड़े ढेर को आग लगा दी गई थी। तीन सौ स्त्रियों को, बिना काठी के घोड़ों पर दो–दो करके बैठाकर शीराज़ तक ले जाया गया। लगभग निर्वस्त्र करके उन्हें उनके पतियों, बेटों, पिताओं और भाईयों के शवों से अलग किए गए सिरों की कतारों के बीच से ले जाया गया। उनका अकथनीय अपमान किया गया, उनके द्वारा सहन की गई कठिनाईयाँ ऐसी थीं कि उनमें से अधिकांश की मृत्यु हो गई।

इस प्रकार एक ऐसा अध्याय समाप्त हुआ जिसमें प्रथम बहाई शताब्दी का सबसे खूनी, सबसे दुःखद, सबसे शौर्यपूर्ण काल अंकित है। उन घटनाओं से भरे और आपदाग्रस्त वर्षों के दौरान बहने वाले खून को उस विश्व व्यवस्था का उपजाऊ बीज माना जा सकता है जिसकी उद्घोषणा और स्थापना, वह शीघ्र ही प्रकट होने वाला इससे भी अधिक महान प्रकटीकरण करने वाला था। उस प्रारम्भिक युग के शूरवीरों, संतों और शहीदों जैसे श्रेष्ठ जनों की सेना को, मित्र और शत्रु द्वारा समान रूप से दी गई श्रद्धाँजलि, स्वयं बहाउल्लाह से लेकर दूरस्थ देशों में बसने वाले सबसे निष्काम दर्शक, इसके जन्म के क्षण से लेकर वर्तमान दिवस तक, उस युग को अमर बनाने वाले कर्मों की महिमा के अनश्वर साक्षी है।

किताब–ए–ईक़ान में बहाउल्लाह ने यह अद्वितीय साक्षी दी है कि, *"उनके त्याग के ढंग पर सारी दुनिया आश्चर्य करती है.....। उनके कर्मों से मस्तिष्क चकित रह जाता है और उनके धैर्य तथा शारीरिक सहनशक्ति से आत्मा विस्मित रह जाती है.....। क्या किसी युग ने ऐसी गौरवपूर्ण घटनाएँ देखी हैं ?"* और आगे : *"क्या आदम के समय से, इस दुनिया ने ऐसी उथल–पुथल, ऐसी*

हिंसक हलचल देखी है ? .....ऐसा लगता है जैसे केवल उन्हीं की सहनशीलता से धैर्य प्रकट हुआ है और स्वयं विश्वसनीयता, केवल उन्ही के कर्मों से उत्पन्न हुई है।" प्रभुधर्म के शहीदों का विशेष उल्लेख करते हुए, बहाउल्लाह ने एक प्रार्थना में यह महत्वपूर्ण पुष्टि की है कि, *"जो रक्त उन्होंने बहाया है, उसके कारण यह धरती अपनी सामर्थ्य के अद्भुत प्रकटीकरणों और अपनी प्रतापशाली सत्ता के रत्न–समान चिन्हों से भर उठी है। शीघ्र ही, जब निर्धारित समय आ पहुँचेगा, वह अपने शुभ समाचार प्रकट करेगी।"*

ईश्वर के संदेशवाहक मुहम्मद का यह कथन, जो कुद्दूस द्वारा शेख तबरसी में अपने साथियों को सम्बोधित करते हुए दोहराया गया था, यदि उन शूरवीरों पर लागू नहीं होता जिन्होंने अपने खून से सींच–सींचकर उस प्रतिज्ञापित दिवस के आगमन का संकेत दिया था तो और किन पर लागू होता है? *"हाय! मुझे अपने साथियों के चेहरे देखने की कितनी इच्छा है, मेरे वे साथी जो दुनिया के अन्त समय पर प्रकट होंगे! धन्य हैं हम, धन्य हैं वे, हमारी धन्यता से उनकी धन्यता अधिक महान है।"* कुफीह में अंकित, तथा *किताब–ए–ईक़ान* में बहाउल्लाह द्वारा प्रमाणित की गई और स्पष्ट भाषा में उस प्रतिज्ञापित काईम के प्रकट होने के चिन्ह निर्धारित करने वाली, हदीस–ए–जाबीर नामक इस कहावत का तात्पर्य अन्य किससे हो सकता था ? *"उसके दिवस में उसके संतों को अवनत किया जायेगा और उनके सिरों को, उसी प्रकार भेंट स्वरूप उपयोग में लाया जायेगा, जिस प्रकार तुर्कियों और डेलामाईटों के सिरों को भेंट स्वरूप उपयोग में लाया जाता है; उनका वध किया जायेगा और उन्हें जला दिया जायेगा और वे डरेंगे, भयभीत होंगे एवं निराश होंगे; धरती उनके खून से रंग जायेगी, तथा उनकी स्त्रियाँ और बच्चे विलाप करेंगे और रोएँगे; वास्तव में यही मेरे संत होंगे।"*

केडलस्टन के लॉर्ड कर्ज़न की लिखित साक्षी है कि, "बाबी इतिहास के खून से रंगे पन्नों को शानदार वीरता की कहानियाँ प्रदीप्त करती हैं.....। तेहरान के जल्लादों के सामने टिकने वाले और उन्हें चुनौती देने वाले साहस से अधिक श्रेष्ठ साहस तो स्मिथफील्ड की अग्नि ने भी उत्पन्न नहीं किया। अतः उस धर्म

पथ के सिद्धान्त, जो अपने अनुयायियों में इतना दुर्लभ और सुन्दर आत्मत्याग जागृत कर सकते है, वे मामूली नहीं हो सकते। बाब के अनुयायियों की वीरता और शहादत अन्य कई ऐसे लोगों को आकर्षित करेगी जिन्हें इस्लाम के समकालीन इतिहास में ऐसी कोई भी अद्‌भुत घटना देखने को नहीं मिलती।" प्रोफेसर जे. डारमेस्टेटर लिखते हैं, कि "वह बाबीयत जिसने पाँच वर्षों के अन्दर स्वयं को फारस के एक छोर से दूसरे छोर तक फैला दिया, जो 1852 ई. में अपने अनुयायियों के खून में नहा गया, धीरे–धीरे प्रगति कर रहा है और अपना प्रसार कर रहा है। यदि फारस के पुनर्जीवित होने की गुंजाइश है, तो यह केवल इस नए धर्म के माध्यम से है।" रेनान ने अपनी पुस्तक "द अपॉस्टल" में लिखा है : "उसके लिए हज़ारों शहीद हो गए। शायद दुनिया के इतिहास में यह एक ऐसा समय था जिसका सानी कहीं और नहीं मिलता, जब तेहरान में इतनी बड़ी संख्या में बाबियों का कत्लेआम किया गया हो।" पूरब के एक लेखक, प्रोफेसर ई.जी. ब्राउन बताते हैं कि "उत्साह, आस्था, उत्सुक भक्ति और अदम्य वीरता की वह आश्चर्यजनक अभिव्यक्ति..... एक ऐसे धर्म का जन्म जिसका इस दुनिया के महान धर्मों के बीच स्थान प्राप्त करना असम्भव नहीं है।" एक बार फिर उन्होंने लिखा : "बाबियों को प्रेरित करने वाला उत्साह ऐसा है कि इसके प्रभाव में आने वाले लोगों का बड़ी प्रबलता से प्रभावित होना निश्चित है.....। वे जिन्होंने अपनी आँखों से नहीं देखा, भले ही मेरा विश्वास न करें, परन्तु, यदि एक बार यह उत्साह उनके समक्ष प्रकट हो जाए, तो वे एक ऐसा मनोभाव महसूस करेंगे, जिसे भुलाना उनके लिए आसान न होगा।" कोम्त डी गोबीनो ने अपनी एक पुस्तक में यह पुष्टि की है कि, 'मैं यहाँ तक स्वीकार करता हूँ कि बाबी धर्म की तरह कोई धर्म यूरोप में प्रकट होता तो मैं यह भविष्यवाणी करने में तनिक भी नहीं हिचकिचाता कि इतने उच्च विचारों वाले इस समूह के हाथ में एक निश्चित समय के अन्दर सत्ता होती, निश्चित रूप से शक्ति होती, क्योंकि बाबी धर्म इतना हितकारी है जो सम्पूर्ण आस्था, अदम्य उत्साह, परीक्षित साहस और प्रमाणित निष्ठा का प्रतीक बन चुका है और हर वर्ग के लोगों का सम्मान प्राप्त करने के योग्य है और अपने विरोधियों को भयभीत कर चुका है। इसके अलावा परिवर्तन के लिए किए जा रहे अथक प्रयास लगातार अनुयायियों की संख्या हर वर्ग में बढ़ा रहे हैं।"

बताया जाता है कि अब्बास–कुली खान–ए–लारिजानी, जिसकी बन्दूक से निकली गोली से मुल्ला हुसैन की मृत्यु हुई थी, ने कई साक्ष्यों की उपस्थिति में, राजकुमार अहमद मिर्ज़ा द्वारा उससे पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में कहा था कि "सच तो यह है कि जिस किसी ने भी करबला नहीं देखा था, यदि वह तबरसी देख लेता, तो न केवल यह जान जाता कि वहाँ क्या घटित हुआ, बल्कि इस पर विचार भी न करता; और यदि उसने बुशरूई के मुल्ला हुसैन को देख लिया होता, तो उसे यह विश्वास हो जाता कि शहीदों के प्रधान (इमाम हुसैन) धरती पर लौट आए हैं; और यदि वह मेरे कृत्य को देख लेता, तो वह निश्चित रूप से कह उठता : "यह वही शिम्र है जो अपनी तलवार और भाले के साथ लौट आया है.....।" सत्य ही, मैं नहीं जानता कि इन लोगों को क्या दिखा दिया गया था, या इन्होंने क्या देख लिया था कि वे इतने उत्साह और आनन्द के साथ युद्ध करने आते थे.....। व्यक्ति उनके साहस और शौर्य की प्रचंडता की कल्पना भी नहीं कर सकता।"

अन्त में हम अपने आप से पूछ सकते हैं कि आखिर उस दुष्ट गिरोह का क्या हुआ जिसने द्वेष, लालच या कट्टरपन से प्रेरित होकर, उस प्रकाश को बुझाना चाहा जो बाब और उनके अनुयायियों ने अपने देश और इसकी जनता के बीच फैलाया था? दिव्य दण्ड के डंडों ने बड़ी तेज़ी के साथ और बड़ी सख्ती से, न तो राज्य के मुख्य न्यायाधीश को बख्शा, न ही उसके मंत्रियों और सलाहकारों को, न ही उस धर्म के धर्माधिकारियों को जिससे उसकी सरकार का ताना–बाना जुड़ा था, न ही उसका प्रतिनिधित्व करने वाले राज्यपालों को, न ही उसकी सेना के उन मुख्य अफसरों को, जिन्होंने अलग–अलग मात्रा में, जानबूझकर अथवा भय या लापरवाही के कारण, उन भयावह कष्टों को बढ़ावा दिया था जो इस नवजात धर्म को अकारण ही सहन करने पड़े। मुहम्मद शाह जैसा पक्षपाती और अस्थिर प्रकृति का शासक जिसने एक बुरा चाहने वाले मंत्री के दुराग्रहों के सामने घुटने टेक दिए थे और बाब के उस अनुरोध पर ध्यान नहीं दिया था, जिसमें उन्होंने कहा था कि उन्हें राजधानी बुलाकर उनके धर्म के सत्य को प्रमाणित करने की अनुमति दी जाए। ऐसा शासक चालीस वर्ष की कम आयु में ही दुर्भाग्य और बहुत–सी बीमारियों का शिकार हो गया और

जैसा कि कय्यूमुल अस्मा के लेखक (बाब) ने सौगंध खाई थी, उस "नरकाग्नि" में धकेल दिया गया जो "न्याय के दिवस में" उसे अटल रूप से निगलने वाली थी। राजसिंहासन के पीछे खड़ी ताकत बनने वाला और बाब के विरूद्ध किए गए अत्याचारों – जिसमें अज़रबैजान की उनकी कैद भी शामिल थी – को मुख्य उकसाने वाला उसी का सूक्ष्म–बुद्धि दुष्ट मंत्री, हाजी मिर्ज़ा अक़ासी ने जिस दिन से शासक और अपने कैदी के बीच हस्तक्षेप किया तब से लेकर केवल एक वर्ष और छः माह के अन्दर ही उसे पद से हटा दिया गया, उसे अनुचित ढंग से हड़पी हुई उसकी दौलत से वंचित कर दिया गया, उसके शासक द्वारा अपमानित किया गया, अपने देशवासियों के बढ़ते हुए क्रोध से बचने के लिए उसे शाह अब्दुल अज़ीम की समाधि में शरण लेनी पड़ी और बाद में उसे अपमानित करके करबला निर्वासित कर दिया गया। अन्त में वह बीमारी, गरीबी और विनाशकारी दुःख का शिकार हो गया। यह उसकी भर्त्सना करने वाली उस पाती की पुष्टि थी जिसमें उसके कैदी (बाब) ने उसके विनाश की भविष्यवाणी की थी और उसकी घोर दुष्टता की भर्त्सना की थी। जहाँ तक उस बदनाम अमीर निज़ाम मिर्ज़ा तक़ी खान का प्रश्न है जिसका कम समय का कार्यकाल, शेख तबरसी के किले के रक्षकों पर किए गए अति क्रूर और घातक आक्रमण से कलंकित था, जिसने तेहरान के सात शहीदों के प्राणदण्ड की स्वीकृति दी थी, जिसने वाहीद और उनके साथियों पर हमला करवाया था, जो बाब के प्राणदण्ड के लिए प्रत्यक्ष रूप ज़िम्मेदार था, और जिसके कारण ज़नजान में भारी उथल–पुथल हुई थी, उसने अपने शासक की निरंकुश ईर्ष्या तथा राजकीय साजिश की प्रतिहिंसा के कारण उन सभी विशेषाधिकारों को गवां दिया जो उसे प्राप्त थे और शाही आदेशों के तहत, काशान के पास स्थित फिन के महल के स्नानागार में उसकी नसें काट दी गईं और उसे बड़ी बेरहमी से मौत के घाट उतार दिया गया। नबील द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, बहाउल्लाह ने कहा था, *"यदि अमीर निज़ाम मेरे वास्तविक स्थान से अवगत होता, तो वह निश्चित रूप से मुझे नहीं छोड़ता। उसने वास्तविक स्थिति को समझने के अधिक से अधिक प्रयत्न किए, परन्तु असफल रहा। ईश्वर की इच्छा थी कि वह इससे अज्ञात बना रहे।"* वह मिर्ज़ा आक़ा खान, जिसने शाह पर

किए गए जानलेवा हमले के प्रयास के परिणामस्वरूप की गई निरंकुश क्रूरताओं में इतनी सक्रिय प्रतिभागिता निभाई थी, उसे उसके पद से हटा दिया गया और याज़्द में कठोर निगरानी में रखा गया, जहाँ उसने शर्म और निराशा में अपने अन्तिम दिन बिताए।

शीराज़ का राज्यपाल हुसैन खान, जो शराबखोर, अत्याचारी और बाब के साथ दुर्व्यवहार करने के लिए उठा खड़ा होने वाला पहला व्यक्ति था, जिसने सबके सामने बाब को भला–बुरा कहा था और अपने सेवक को आदेश दिए थे कि बाब के चेहरे पर ज़ोर से वार करे, ऐसे राज्यपाल को न केवल वह भयानक विपत्ति सहन करने के लिए बाध्य होना पड़ा जो इतने अचानक रूप से उस पर, उसके परिवार, उसके नगर तथा उसके प्रांत पर आ पड़ी थी, बल्कि बाद में उसे अपने समस्त प्रयासों पर पानी फिरता हुआ देखना पड़ा और मित्र एवं शत्रु, दोनों द्वारा बहिष्कृत होकर, अपने जीवन के शेष दिनों में तब तक गुमनामी की ज़िन्दगी व्यतीत करनी पड़ी, जब तक कि वह डगमगाता हुआ अपनी कब्र तक नहीं पहुँच गया। वह खून का प्यासा शत्रु हाजीबुद्दौली, जिसने निर्दोष और सुरक्षाहीन बाबियों का शिकार करने के लिए बड़ा श्रम किया था, स्वयं अपनी बारी में वह एक उपद्रवी के कोप का शिकार हो गया, उसकी सम्पत्ति छीन ली गई, उसकी दाढ़ी काट दी गई और उसे खाने को मजबूर किया गया, उसे काठी पहनाई गई और नकेल डालकर लोगों के सामने उसकी सवारी की गई, इसके बाद उसी की आँखों के सामने उसके घर की महिलाओं और बच्चों पर शर्मनाक अत्याचार किए गए। बारफुरूश का वह कट्टर, भयानक अति क्रूर और बेशर्म मुजताहिद, सैदुल उलेमा, जिसकी कभी न खत्म होने वाली शत्रुता ने, तबरसी के शूरवीरों को इतना अपमानित किया था और उन्हें इतनी यातनाएँ दी थीं कि अपने कुकर्मों को अंजाम देने के शीघ्र बाद, वह एक अजीब–ओ–गरीब बीमारी का शिकार हो गया, जिसमें उसे इतनी प्यास लगती थी कि बुझाए नहीं बुझती थी और इतनी ठंड लगती कि उसकी यातना को न तो वह शरीर में लिपटा हुआ गर्म फर कम कर सकता था और न ही उसके कमरे में लगातार जलाई जाने वाली आग की तपिश उसे बेचैनी से बचा सकती थी। उसकी मृत्यु के बाद, किसी ज़माने के उसके शानदार घर का ऐसा दुरूपयोग होने लगा कि

उसी के नगरवासियों के लिए वह गंदगी का ढेर बन चुका था। माज़िन्दरान के निवासियों पर इस बात का इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि एक–दूसरे को बुरा–भला कहते समय या श्रापित करते हुए वे एक–दूसरे के घर के लिए उसी दुर्भाग्य की कामना करते थे जिस दुर्भाग्य ने उस सैदुल उलेमा के घर को श्रापित कर दिया था। वह झूठा और उच्चाकांक्षी महमूद खान–ए–कलन्तर, जिसकी हिरासत में ताहिरा को उनकी शहादत से पहले रखा गया था, नौ वर्ष बाद अपने शाह के क्रोध का शिकार बन गया। उसके पैरों को रस्सियों से बाँध कर उसे बाजारों से घसीटते हुए नगर द्वार के बाहर ले जाया गया और वहाँ उसे फाँसी पर लटका दिया गया। मिर्ज़ा हसन खान, जिसने अपने भाई अमीर निज़ाम के आदेशों पर, बाब को मौत के घाट उतार कर एक ऐसा कृत्य किया था जो क्षमा के योग्य नहीं था, वह अपने इस कृत्य के दो वर्षों के भीतर ही एक भयानक सज़ा का शिकार बना जिसके परिणामस्वरूप उसकी मृत्यु हो गई। तबरीज़ का वह गुस्ताख, लालची और अत्याचारी शेखुल–इस्लाम, मिर्ज़ा अली असग़र को जिसने बाब पर बेंत लगाने के लिए राज्यपाल के अंगरक्षक के मना करने पर भी स्वयं अपने हाथों से बाब के पैरों पर ग्यारह बार बेंतों से वार किया, उसी वर्ष के दौरान उसे लकवा मार गया और अत्याधिक कष्टदायक कठिनाईयों को सहन करने के बाद वह अति कष्टपूर्ण मौत मरा, एक ऐसी मौत जिसके बाद उस शहर में शेखुल इस्लाम का पद ही समाप्त कर दिया गया। वह अहंकारी और विश्वासघाती मिर्ज़ा अबुतालिब खान को, जिसने महामंत्री मिर्ज़ा आक़ा खान की संयम से काम लेने की सलाह को अनदेखा करते हुए, ताकूर गाँव को लूटने और आग लगाने तथा बहाउल्लाह के निवास को नष्ट करने के आदेश जारी किए थे, एक वर्ष बाद उसे प्लेग हो गया और उसके निकटतम रिश्तेदारों द्वारा भी बहिष्कृत होकर, बड़ी ही घृणास्पद स्थिति में समाप्त हो गया। वह शुजाउल–मुल्क मिह्र–अली खान, जिसने शाह पर किए गए जानलेवा हमले के प्रयास के बाद, नैरीज़ के बाबी समुदाय के बचे–खुचे सदस्यों को बड़ी क्रूरता से सताया था, अपने ही पोते की साक्षी के अनुसार, वह बीमार पड़ गया और गूँगा हो गया। उसका गूँगापन उसकी अंतिम घड़ी तक उसे पीड़ित करता रहा। उसका साथी मिर्ज़ा नईम कलंकित

हो गया, उसे दो बार भारी जुर्माना भरना पड़ा, उसे पद से हटा दिया गया और चुन–चुनकर यातनाएँ दी गईं। सैम खान और उसके आदमियों को, बाब के जीवन का अन्त करने के दुस्साहस से बचाने वाले चमत्कार का उपहास करते हुए जो पलटन सैम खान और उसके आदमियों का स्थान लेने के लिए स्वेच्छा से आगे आई और जिसने बाब के शरीर को गोलियों से छलनी कर दिया था – अर्दबिल और तबरीज़ के बीच उसी वर्ष आने वाले एक भयंकर भूकम्प में उस पलटन ने अपने दो सौ पचास सैनिक और अधिकारियों को गवाँ दिया; दो वर्ष बाद पलटन के शेष पाँच सौ सैनिकों और अधिकारियों को बग़ावत के जुर्म में, तबरीज़ में बड़ी बेरहमी के साथ गोलियों से भून दिया गया और उनके खुले एवं छलनी शवों को देखकर, लोगों को उनके अमानवीय कृत्य की याद आ गई तथा उनकी निन्दा और आश्चर्य में ऐसे शब्द कहे गए कि वहाँ के जाने–माने मुजताहिद को उन्हें दण्ड देकर चुप कराना पड़ा। बाब की शहादत के छः साल बाद, मुहम्मारीह में अंग्रेज़ नौसेना द्वारा की गई बमबारी के दौरान इस पलटन के मुखिया आक़ा जान बेग की मृत्यु हो गई।

बाब और उनके अनुयायियों के विरूद्ध किए गए अपराधों में सबसे आगे रहते हुए सक्रिय भूमिका निभाने वालों पर ईश्वर का वह न्याय जो इतना कठोर और अपने कोप में इतना भयंकर था, उस जनता के साथ अपने व्यवहार में भी कुछ कम कठोर नहीं था, जो ईसा मसीह के ज़माने के यहूदियों से भी अधिक कट्टर थी, जो अपनी अज्ञानता, अपनी भयंकर धर्मान्धता, अपनी स्वैच्छिक भ्रष्टता और पाशविक क्रूरता के लिए बदनाम थी और जो लालची, लोभी, स्वार्थी और कायर थी। अपने सेवाकाल के अन्तिम दिनों में स्वयं बाब ने, दलाइल–ए–साबिह (सात प्रमाण) में जो लिखा है, उसी को उद्धृत करने से बेहतर मैं और कुछ नहीं लिख सकता : *"इस प्रकटीकरण के प्रारम्भिक दिनों को याद करो। हैजे से मरने वाले लोगों की संख्या कितनी बड़ी थी! वास्तव में यह इस प्रकटीकरण की अनेक विलक्षणताओं में एक थी, फिर भी इसे कोई नहीं समझ पाया! चार वर्षों तक शिया मुसलमानों को दण्डित किया जाता रहा, परन्तु इसके संकेत को कोई नहीं समझ सका!"* नबील ने अपने अमर इतिहास में लिखा है कि जहाँ तक फारस की उस विशाल जनता का प्रश्न है, जो अपनी आँखों के

सामने होने वाली इस त्रासदी को उदासीनता के साथ देखती रही और जिसने उन अत्याचारों के विरूद्ध उँगली तक नहीं उठाई, वह भी अपनी बारी में ऐसी विपदा का शिकार हो गई जिसे राज्य के समस्त संसाधन तथा इसके शासकों की सम्पूर्ण ताकत भी कम न कर सकी.....। जिस दिन से आक्रमणकारी का हाथ बाब की ओर बढ़ा.....तब से एक के बाद एक कोप ने उस अकृतज्ञ जनता का जैसे दम ही घोंट दिया और उन्हें राष्ट्र स्तरीय दिवालियेपन के नज़दीक लाकर खड़ा कर दिया। उन पर ऐसे प्लेग बरस पड़े जिनके नाम तक उन्होंने पहले कभी नहीं सुने थे, केवल उन धूल खा रही पुस्तकों में उनका उल्लेख पाया जाता था जिन्हें पढ़ने का कष्ट बहुत कम लोग करते हैं। प्लेग के कोप से कोई नहीं बच सकता था। जहाँ कहीं भी यह दण्ड पहुँचता, तबाही फैला देता। राजकुमार और श्रमिक, दोनों ने ही, समान रूप से इसके डंक को महसूस किया और इसकी आधीनता में झुक गए। इसने जनता को अपनी गिरफ्त में ले लिया और उन पर अपनी पकड़ को ढीला नहीं किया। जिलॉन प्रांत का खात्मा कर देने वाले ज्वर जैसी प्राणघातक विपदाओं ने देश को बरबाद करना जारी रखा। इतनी दुःखदायी विपत्तियों के बावजूद, इन भ्रष्ट और आस्थाहीन लोगों की बरबादी के बाद भी ईश्वर का कोप नहीं रुका। इसने उस देश की धरती पर सांस लेने वाले प्रत्येक जीवित प्राणी पर अपना प्रभाव डाला। इसने वनस्पति और पशु, दोनों को ही समान रूप से पीड़ित किया और लोगों को अपनी विपत्ति की विशालता का एहसास करा दिया। सूखे के कारण इसके उस त्रास के भारी बोझ में और भी वृद्धि हो गई, जिसके कारण लोग कराह रहे थे। भुखमरी की काली परछाई उनका पीछा करती रहती और धीमी चाल से निकट आने वाली कष्टदायक मौत उनकी आँखों के सामने मंडराती रहती थी....। जनता और सरकार दोनों ही समान रूप से उस राहत को तरसने लगे जो उन्हें कहीं नसीब नहीं हो रही थी। उन्होंने संताप के प्याले को उसके तलछट तक पी लिया था परन्तु वे उस हाथ से अनभिज्ञ रहे जिसने इसे उनके होठों तक पहुँचाया था और उस व्यक्ति से अनजान रहे जिसके कारण उन्हें ये घोर कष्ट दिए जा रहे थे।

दूसरा कालचक्र

बहाउल्लाह का धर्मकाल

1853&1892

बहाई प्रकटीकरण का जन्म

हमने अब तक देखा कि नसीरूद्दीन शाह पर किए गए हमले के दुर्भाग्यपूर्ण प्रयास के बाद घटनाओं का सिलसिला थमा नहीं। पहली बहाई शताब्दी के अंधकार से भरे, खून से लथपथ कुछ सालों के साथ ही बाबी विधान का अंत हो गया। इन घटनाओं के साथ, अपरिमेय विपत्तियों का एक ऐसा दौर प्रारम्भ हुआ, जिसके दौरान बाब द्वारा उद्घोषित धर्म का भाग्य अपने निम्नतम स्तर पर पहुँच गया। सत्य ही, इसके प्रारम्भ से ही, परीक्षाएँ, दुःख, बाधाएँ, निराशा, भर्त्सना, विश्वासघात और संहार की बढ़ती हुई तीव्रता ने इसके अधिकांश अनुयायियों को खत्म कर दिया और इसके सबसे शक्तिशाली समर्थकों की स्वामीभक्ति को पूरी तरह निचोड़ लिया, किन्तु हर सम्भव प्रयास के बावजूद यह उस नींव को नहीं उखाड़ सकी जिस पर यह धर्म टिका था।

इस धर्म के जन्म से ही, सरकार, धर्माधिकारी और जनता एक व्यक्ति बनकर इसके विरोध में उठ खड़े हुए और सदा के लिए इसके उद्देश्य के शत्रु बनने का जैसे प्रण ले लिया। सोच और इच्छा शक्ति में, समान रूप से कमज़ोर मुहम्मद शाह ने, दबाव में आकर उन प्रस्तावों को ठुकरा दिया था जो स्वयं बाब ने दिए थे, उनसे प्रत्यक्ष भेंट करने से इन्कार कर दिया था और यहाँ तक कि राजधानी में उनका प्रवेश भी निषेध कर दिया था। उत्तराधिकारी राजकुमार एवं शासन कर रहे बादशाह की हैसियत से, उस क्रूर और घमंडी स्वभाव के जवान नसीरूद्दीन शाह ने, अपनी उस कट्टर शत्रुता का अधिक से अधिक प्रदर्शन किया जो, उसके शासनकाल के दौरान ही आगे चलकर एक अन्धकारमय और

निर्दयी बर्बरता में भड़कने वाली थी। प्रभुधर्म की नवजात ताकत को सहारा देने वाले मुख्य गढ़ – वे अट्ठारह जीविताक्षर, जिनमें से अधिकांशतः समाप्त हो चुके थे। बाबी धर्म के उत्तराधिकारी के "दर्पण," "मार्गदर्शक", "गवाह", या तो तलवार से मारे जा चुके थे या अपनी मातृभूमि से खदेड़े जा चुके थे अथवा फिर लाठियों के वार से शान्त किए जा चुके थे। वे कार्यक्रम जिसकी आवश्यकता उनके प्रधान साथियों को बताई जा चुकी थीं, उनके अत्याधिक जोश के कारण पूरा न हो सका। उनमें से दो अनुयायियों ने प्रभुधर्म को तुर्की और भारत में स्थापित करने की जो कोशिश की थी, वह कोशिश उनके ध्येय के आरम्भ में ही विफल हो गई। माज़िन्दरान, नैरीज़ और ज़नजान को बहा ले जाने वाले तूफान ने आदरणीय कुद्दूस, शेरदिल मुल्ला हुसैन, विद्वान वाहीद और अदम्य हुज्जत के आशाजनक सेवाकाल की जड़ों को तबाह करने के अलावा उनके सह–अनुयायियों में सबसे संसाधन कुशल और साहसी साथियों की एक बड़ी संख्या को अकाल मौत देते हुए उनके जीवन की अवधि को घटा दिया। तेहरान के सात शहीदों की मृत्यु से जुड़े भयानक अत्याचार प्रभुधर्म के एक ऐसे जीवित चिन्ह को मिटा देने के लिए ज़िम्मेदार थे, जिन्हें यदि छोड़ दिया गया होता, तो बाब के साथ उनके नज़दीकी रिश्ते और आन्तरिक साहचर्य के साथ–साथ वे भी इस संघर्षशील धर्म की रक्षा और प्रसार में निर्णायक योगदान देते।

साथ ही, उस तूफान ने, जो इसके पश्चात एक ऐसे समुदाय पर, जिसकी कमर पहले से ही तोड़ी जा चुकी थी, अपूर्व हिंसा के साथ अचानक टूट पड़ा था, उसने इसकी विलक्षण और महानतम वीरांगना ताहिरा को छीन लिया था, जो अपनी विजय के उच्चतम स्तर पर थीं। इसी तूफान ने बाब के विश्वसनीय लिपिक और उनकी अन्तिम इच्छाओं के चुने हुए संग्राहक सैय्यद हुसैन के अन्त पर मुहर लगा दी थी। उस मुल्ला अब्दुल–करीम–ए–काज़वीनी को मौत के घाट उतार दिया था, जो उन गिने–चुने लोगों में एक थे जो प्रभुधर्म के उद्‌गम के बारे में गहरा ज्ञान रखने का दावा कर सकते थे और जिन्हें बहाउल्लाह के साथ कैद में डाल दिया गया था। वह ही इस नए विधान की महान विभूतियों में एकमात्र जीवित व्यक्ति थे। स्वयं बाब भी – जो वह निर्झरस्रोत थे जहाँ से इस नवीन प्रकटीकरण को अनुप्राणित करने वाली शक्ति

प्रवाहित होती थी – उस तूफान के आने से पहले, बड़ी दुःखदायी परिस्थितियों में, एक बंदूकधारी सैन्य दल की गोलियों से मारे जा चुके थे और अपने पीछे एक लगभग अस्त–व्यस्त समुदाय के लिए एक नाममात्र का मुखिया, एक नाममात्र का नेता छोड़ गए थे, जो समस्त विशिष्ट गुणों से रहित था। अब (जबकि वह दिव्य नेता–बहाउल्लाह के नियंत्रण से दूर जा चुका था), वह उन प्राणनाशक शत्रुओं की धमकी से भरे आक्रमणों से बचने के लिए दरवेश के भेष में, अपने मूल प्रांत माज़िन्दरान की पहाड़ियों में सुरक्षा तलाश रहा था। उन दिनों की अतिव्याकुलता और उथल–पुथल के कारण प्रभुधर्म के संस्थापक के हाथों से लिखे हुए, चहुँओर फैले हुए, अवर्गीकृत, जैसे–तैसे लिपिबद्ध किए हुए और असुरक्षित विस्तीर्ण लेख, आंशिक रूप से, या तो जान बूझकर नष्ट कर दिए गया, अपने अधिकार में ले लिए गए, अथवा जहाँ ये प्रकट किए गए थे उस देश की सीमाओं से बाहर, सुरक्षित स्थानों पर शीघ्रता से भेज दिए गए। ऐसे शक्तिशाली शत्रुओं ने, जिनमें वह अभिलाषी और ढोंगी हाजी मिर्ज़ा करीम खान मुख्य था, जिसने शाह के विशेष अनुरोध पर एक लेख में दुष्टतापूर्वक इस नए धर्म और इसके सिद्धान्तों पर आक्रमण किया था – अब उठ खड़ा हुआ था और इस धर्म द्वारा झेली गई पराजय से साहस प्राप्त करके, इस पर गालियाँ बरसा रहा था और इसकी निन्दा कर रहा था। इसके अतिरिक्त, असहनीय परिस्थितियों के बोझ के कारण कुछ बाबी अपने धर्म से फिर जाने के लिए विवश हो गए, जबकि अन्य इतनी दूर भटक गए कि अपने धर्म को छोड़कर अब शत्रुओं के दल में शामिल हो गए। इन घोर विपदाओं के साथ एक बहुत बड़ी निन्दा भी जुड़ गई जो कुछ गैरज़िम्मेदार उत्साहियों द्वारा किए गए दुस्साहस के कारण उत्पन्न हुई थीं। इस निन्दा ने एक पावन और निर्दोष धर्म पर एक ऐसा कलंक लगा दिया जो अमिट प्रतीत होता था और जिसने इसकी नींव को हिला देने का भय उत्पन्न कर दिया था।

वह अग्नि जो उस सर्वशक्तिमान के हाथों ने प्रज्वलित की थी, यद्यपि वह इस तूफान में धुँआ बन चुकी थी, किन्तु बुझी नहीं थी। जो आग इतनी दैदिप्यमान तीव्रता के साथ नौ वर्षों तक जलती रही, कुछ समय के लिए उसकी ऊष्मा मंद पड़ गई थी, किन्तु इस महान आग के बचे हुए शोले अब

भी सुलग रहे थे और एक अपरिमेय रूप से अधिक महान प्रकटीकरण की जीवनदायी हवा के माध्यम से निकट भविष्य में ही वह एक बार फिर भड़कने वाली थी और एक ऐसा प्रकाश फैलाने वाली थी जो न केवल आस–पास के अंधेरे को दूर करने वाला था बल्कि जो अपनी दीप्ति को पूरब और पश्चिम दिशाओं के छोर तक पहुँचाने वाला था। जिस प्रकार, बाब को दी गई कैद और एकाकीपन ने, एक ओर उन्हें अपने सिद्धान्तों की रचना करने, अपने प्रकटीकरण का पूरा–पूरा अर्थ प्रकट करने, औपचारिक एवं सार्वजनिक रूप से अपने स्थान की घोषणा करने और अपनी संविदा स्थापित करने का मौका दिया था, दूसरी ओर, बदश्त में एकत्रित हुए उनके अनुयायियों की आवाज़ के माध्यम से उनके विधान के नियमों की उद्घोषणा करने का माध्यम प्रदान किया था, उसी प्रकार बाब के मृत्युदण्ड और बहाउल्लाह की कैद से चोटी पर पहुँचने वाले इस अपूर्वरूप से विशाल संकट ने, उस पुनर्जीवन की शुरूआत की थी जो एक अधिक महान प्रकटीकरण की प्राणदायी शक्ति से, शीराज़ के पैगम्बर के मूल संदेश की प्रसिद्धि को अमर करने वाला था और इसे उनके मूल निवासी देश की सीमाओं से परे और भी अधिक स्थायी नींव पर प्रतिष्ठित करने वाला था।

जब बाब द्वारा प्रकटित धर्म लुप्तप्राय हो चला था, उसे अनुप्रणित करने वाली आशा–आकांक्षा धूमिल हो चली थी और ऐसा प्रतीत होने लगा था कि अनगिनत लोगों की शहादत का कोई भी सुफल प्राप्त नहीं हुआ किन्तु तब ही उस धर्म में अन्तर्निहित 'दिव्य वचन' की शक्ति जैसे प्रस्फुटन को प्राप्त हुई और इसकी सम्पूर्णता रहस्यमय ढंग से उजागर हुई। बाबी विधानकाल समाप्त किया जा रहा था (असमय नहीं, अपितु अपने निश्चित समय पर) और अपना निर्धारित फल देते हुए, अपने निश्चित लक्ष्य को पूरा करते हुए बहाउल्लाह के ध्येय का उद्भव देख रहा था। इस घोर निराशाजनक और भयावह घड़ी में फारस के अंधकारपूर्ण क्षितिज पर एक भव्य प्रकाश की अरूणिम आभा अपनी पूरी महिमा के साथ फैलने लगी थी। वास्तव में, धीरे–धीरे विकास की अवस्था को प्राप्त कर अपनी परिपक्वता तक पहुँचे हुए धर्म के शौर्यकाल का सर्वाधिक प्रभावशाली तो नहीं किन्तु महत्वपूर्ण चरण अब प्रारम्भ हो रहा था।

जैसी स्वयं बाब ने भविष्यवाणी की थी, नौ वर्षों के दौरान उनके द्वारा प्रकट किया गया नवजात धर्म, रहस्यमय ढंग से और अबाधित रूप से तब तक विकास करता रहा जब तक एक नियत घड़ी में ईश्वर के प्रतिज्ञापित धर्म का प्रस्फुटन, तेहरान के सियाहचाल की उदासी और वेदना के बीच उतार नहीं दिया गया। बाब के ध्येय के तत्काल बाद शुरू होने वाले उनके ध्येय की वैधता को नकारने वालों के दावों का खण्डन करते हुए, स्वयं बहाउल्लाह ने इस बात की पुष्टि की, *"देखो, इस अद्‌भुत्, इस पावनतम और उदार विधान के नौवें वर्ष की समाप्ति पर, बड़े ही रहस्यमय ढंग से पवित्र, पूर्ण रूप से समर्पित और पावन आत्माओं की आवश्यक संख्या प्राप्त की गई है।"* वे आगे कहते हैं, *"इस सर्वशक्तिशाली और अद्‌भुत प्रकटीकरण और पूर्व के मेरे स्वयं के प्रकटीकरण के बीच इतनी कम अवधि का होना एक ऐसा रहस्य है जिसे कोई भी मनुष्य उजागर नहीं कर सकता, जिसे कोई भी मस्तिष्क समझ नहीं सकता। इसकी अवधि पूर्वनिर्धारित थी।"*

एक के बाद एक आने वाले इन दो प्रकटीकरणों के बारे में दिव्य सेंट जॉन ने स्वयं यह स्पष्ट भविष्यवाणी की है : *"दूसरा संकट बीत चुका है, और देखो अब तीसरा संकट तेज़ी से आ रहा है।"* अब्दुल बहा ने, इस श्लोक पर टिप्पणी करते हुए बताया है कि, *"यह तीसरा संकट, बहाउल्लाह के प्रकटीकरण का दिवस है और यह बाब के प्रकट होने के दिवस के नज़दीक है।"* वे आगे यह पुष्टि करते हैं कि, *"दुनिया के सभी लोगों को, दो ऐसे अवतारों की प्रतीक्षा है, जिनका समकालिक होना आवश्यक है; सभी इस प्रतिज्ञा के पूरे होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"* और एक बार पुन : *"आवश्यक तथ्य यह है कि सभी को दो ऐसे अवतारों का वचन दिया गया है, जो एक के बाद एक आयेंगे।"* दिव्य मार्गदर्शन के उस दीप्तिमान सितारे–शेख अहमद एहसाई – जो कि हिज़री सन् 1260 से पहले ही, बहाउल्लाह के उस निकट आ रहे प्रताप को स्पष्ट रूप से देख चुके थे और जिन्होंने *"एक के बाद एक तेज़ी से आने वाले दो युगल प्रकटीकरणों"* पर ज़ोर दिया था, उसी शेख अहमद एहसाई ने सैय्यद काज़िम को अपने ही हाथ से लिखे हुए एक काव्यपत्र में उस सर्वोच्च प्रकटीकरण की निकट आ रही घड़ी के बारे में अपनी ओर से यह महत्वपूर्ण बात कही थी कि :

"इस धर्म का रहस्य प्रकट होकर ही रहेगा, और इस संदेश का रहस्य उजागर किया जायेगा। इससे अधिक मैं और कुछ नहीं कह सकता। मैं कोई समय निर्धारित नहीं कर सकता। उसका धर्म हिन (68) के बाद जाना जायेगा।"

बाब के प्रकटीकरण के कुछ साल बाद ही जिन परिस्थितियों में इस नवजात प्रकटीकरण के संवाहक को अपने ध्येय के प्राथमिक संकेत मिले, वे परिस्थितियाँ अपनी तीक्ष्णता में मूसा के उस अनुभव की याद दिलाती हैं, जो अनुभव उन्हें सिनाई के उजाड़ में उस प्रज्वलित गिरिश्रृंग का सामना करने पर हुआ था; जो अनुभव जरथोस्त को तब हुआ था जब उन्हें एक के बाद एक, सात दिव्य स्वप्नों के माध्यम से उनके ध्येय से अवगत कराया गया था; जो अनुभव ईसा मसीह को जॉर्डन के पानी से बाहर निकलते समय तब हुआ था जब उन्होंने आसमान को खुलते हुए और उसमें से पवित्रात्मा को कबूतर और प्रकाश के रूप में अपने पर उतरते हुए देखा था; जो अनुभव मुहम्मद को हुआ था जब मक्का के पावन शहर के बाहर हिरा की गुफा में जिब्राईल की आवाज़ ने उन्हें यह आदेश दिया था कि *"अपने स्वामी के नाम पर पुकार उठो"*; और जो अनुभव बाब को तब हुआ था जब एक स्वप्न में उन्होंने स्वयं को इमाम हुसैन के सिर के निकट जाते हुए देखा जिससे खून बह रहा था और उनके गले से टपक रहे रक्त को पीते हुए देखा और जागने पर पाया कि वे उस सर्वशक्तिशाली ईश्वर की कृपा–वर्षा के पात्र बन चुके थे।

इस समय हम अपने आप से यह सवाल कर सकते हैं कि, आखिर उस प्रकटीकरण का स्वरूप और उसके आशय क्या थे, जिसने बाब की उद्घोषणा के शीघ्र बाद स्वयं को प्रकट किया था, जिसने एक ही झटके में उस विधान का अन्त कर दिया था जिसकी घोषणा उस धर्म ने हाल ही में की थी और जिसने इतनी प्रबलता और शक्ति के साथ इसके दिव्य संस्थापक की सत्ता का समर्थन किया था ? हम ज़रा रुक कर इस बात पर विचार कर सकते हैं कि, उस व्यक्ति के दावे क्या थे जो स्वयं ही बाब का अनुयायी था और जिसने इतने प्रारम्भिक स्तर पर ही स्वयं को इतना सशक्त समझ लिया था कि वह अपने ही प्रिय शिक्षक के साथ जुड़े हुए कानूनों को रद्द कर सके ? साथ ही, हम यह

खोज भी कर सकते हैं कि उनसे पहले स्थापित की गई धार्मिक व्यवस्थाओं के और उनके स्वयं के उस प्रकटीकरण के बीच क्या सम्बन्ध था जो इस संकट भरे समय में, घोर दुःखों से भरी उनकी आत्मा से प्रवाहित हुआ था और उस अंधकार को भेद चुका था जो कीड़े–मकोड़ों से भरे उस गड्ढे पर छाया हुआ था और जो उसकी दीवारों को तोड़ता हुआ, धरती के कोने–कोने में प्रसारित होता हुआ, मानवजाति के सम्पूर्ण शरीर को अपनी अपार क्षमताओं से भर चुका था और जो आज हमारी आँखों के सामने मानव समाज की दिशा निर्धारित कर रहा है ?

"वह व्यक्ति जिन्हें इतने महान लक्ष्य के गुरूतम भार को वहन करने का दायित्व इतनी नाटकीय परिस्थितियों में सौंपा गया था वह कोई और नहीं बल्कि वही हैं जिनका गुणगान युग–युगांतर तक किया जायेगा और जिन्हें असंख्य अनुयायियों ने अब तक न्यायकर्ता, विधानों को देने वाले और मानवजाति के दुःखहर्ता के रूप में स्वीकार कर लिया है। वह सम्पूर्ण धरा को व्यवस्था देने वाले, मानव की संतानों को एकता के सूत्र में बांधने वाले, बहुप्रतीक्षित सहस्त्राब्दी का आरम्भ करने वाले, एक नए 'विश्व चक्र' के व्यवस्थापक, सर्वमहान शांति के संस्थापक, सर्वमहान न्याय के निर्झर, सम्पूर्ण उस युग का उद्घोषक करने वाले जब सम्पूर्ण मानवजाति की उत्पत्ति के एक स्त्रोत को पहचान मिलेगी, एक नई विश्व व्यवस्था के सृजनकर्ता और एक नई विश्व सभ्यता के संस्थापक तथा प्रेरक के रूम में स्वीकार किये जा चुके हैं।"

इज़राइल के लिए, वे उस *"अनन्त पिता"* के अवतार से, उन *"दस हजार संतों के साथ"* नीचे उतर आने वाले *"देवदूतों के स्वामी"* से न कम थे न अधिक; ईसाई जगत के लिए वे उस *"परमपिता की महिमा में"* लौटने वाले ईसा मसीह थे, शियाह इस्लाम के लिए वे *"इमाम हुसैन की वापसी"* थे; सुन्नी इस्लाम के लिए वे *"ईश्वर की आत्मा"* (ईसा मसीह) का अवतरण थे; जरथोस्तियों के लिए वे प्रतिज्ञापित *"शाह–बहराम" थे,* हिन्दुओं के लिए वे *"कृष्ण"* के अवतरण थे; बौद्ध धर्मियों के लिए वे *"पंचम बुद्ध"* थे।

जिन दो नामों से जुड़कर उनका नाम बनता है, उनमें से एक नाम ईश्वर के धर्मप्रचारक के सबसे उत्कृष्ट उत्तराधिकारी इमाम हुसैन का है जिन्हें सेंट जॉन के प्रकटीकरण में उल्लेखित *"ताज"* का सबसे दीप्तिमान *"सितारा"* कहा

गया है, और दूसरा नाम इमाम अली का है, जो निष्ठावानों के प्रधान सेनापति थे, और उन दो *"साक्ष्यों"* में से एक थे जिनकी प्रशंसा उसी पुस्तक में की गई है। उन्हें यथाविधि *बहाउल्लाह* की उपाधि दी गई थी, जो एक ऐसी उपाधि है जिसका विशेष उल्लेख फारसी बयान में किया गया है और जो ईश्वर की महिमा, उसके प्रकाश और उसकी भव्यता को एक साथ वर्णित करती है, और उन्हें *"देवदूतों के स्वामी", "सर्वमहान नाम", "प्राचीन सौन्दर्य", "सर्वमहान की लेखनी", "रहस्यमय नाम", "सुसंरक्षित खज़ाना", "वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा", "सर्वमहान प्रकाश", "सर्वोच्च क्षितिज", "सर्वमहान महासिन्धु", "परम स्वर्ग", "शाश्वत अस्तित्व मूल", "स्वयंजीवी", "सृष्टि का दिवास्रोत", "महान घोषणा", "सिनाई का वक्ता", "मनुष्यों का परीक्षक", "दुनिया द्वारा अपकृत", "राष्ट्रों की कामना", "संविदा का स्वामी", और "वह वृक्ष जिसके परे कोई मार्ग नहीं"* जैसी उपाधियाँ दी गई हैं। एक ओर वे (विश्वासियों के पिता) इब्राहिम की पत्नी खतूरा के माध्यम से इब्राहिम के वंशज थे, तो दूसरी ओर, जरथोस्त एवं सासानियाई राजवंश के आखिरी सम्राट, याज़्दगिर्द के वंशज थे। इसके अतिरिक्त, वे जेस्स के भी वंशज थे और अपने पिता मिर्ज़ा अब्बास – जो कि मिर्ज़ा बुज़ुर्ग के नाम से अधिक प्रख्यात थे और जो फतेहअली शाह के दरबार के मंत्रिमण्डल से नज़दीक से जुड़े रहने वाले एक कुलीन व्यक्ति थे – के माध्यम से माज़िन्दरान के सबसे प्राचीन और प्रसिद्ध परिवारों में से एक के सदस्य थे।

सबसे महान यहूदी पैगम्बर, इसाईयाह ने जिन उपाधियों से उनकी ओर संकेत किया है वे हैं, उस *"स्वामी की महिमा"*, वह *"अनन्त पिता", "शान्ति का युवराज", "अद्भुत", "सलाहकार", "जेस्स के तने से उत्पन्न होने वाली छड़"*, तथा *"उसकी जड़ों से उगने वाली शाखा"* जो *"डेविड के सिंहासन पर प्रतिष्ठित होगी"*, जो *"शक्तिशाली हाथ लेकर आयेगा"*, जो *"राष्ट्रों के बीच न्याय करेगा"*, जो *"धरती को अपने मुख की छड़ी से दण्ड देगा और अपनी फूँक से दुष्टों का संहार करेगा"* और जो *"इज़राइल के बहिष्कृतों को एकत्रित करेगा और धरती के चारों कोनों से जूडा के बिखरे हुए जनों को एकत्रित करेगा।"* अपनी स्तुतियों में उनकी प्रशंसा करते हुए डेविड ने उन्हें *"देवदूतों का स्वामी"* और *"महिमा का सम्राट"* कहा है। हेगायी ने उन्हें *"सभी राष्ट्रों की कामना"* कहा है, और ज़कारिया ने उन्हें वह *"शाखा"* कहा है जो *"उसके स्थान से उत्पन्न होगी"* और *"उस स्वामी के मन्दिर*

का निर्माण करेगी।" एज़ेकिएल ने उनकी प्रशंसा उस *"स्वामी"* के रूप में की है जो *"सम्पूर्ण धरती का सम्राट होगा"*, जबकि जोएल और ज़ेफानिया, दोनों ने उनके दिवस को *"जेहोवा का दिवस"* कहा है, और ज़ेफानिया ने उनके दिवस को *"कोप का दिवस", कष्टों और विपत्तियों का दिवस", बरबादी और तबाही का दिवस", "अंधकार और उदासी का दिवस", "धुंधलेपन और गहन अन्धकार का दिवस", "चहारदीवारियों वाले नगरों और ऊँची इमारतों के लिए तूर्यनाद और चेतावनी का दिवस"*, बताया था। इसके अतिरिक्त, ऐज़ेकिएल और डेनियल, दोनों ने ही, उसके दिवस की प्रशंसा, उस *"स्वामी के दिवस"* के रूप में की थी और मलाची ने इसका वर्णन *"उस स्वामी के महान और भयानक दिवस"* के रूप में किया था, जब *"नेकी का सूर्य", "उसके पंखों में आरोग्य लिए उदित होगा"*, जबकि डेनियल ने उसके आगमन को उस *"अपविघ्नता"* का संकेत घोषित किया था *"जो उजाड़ देती है।"*

जरथोस्त के अनुयायियों के पावन ग्रंथों ने उनके विधान के बारे में कहा है कि वह ऐसा विधान होगा जिसमें कम से कम एक सम्पूर्ण माह तक सूर्य थम जायेगा। जरथोस्त ने उन्हीं की ओर संकेत किया होगा जब, परम्पराओं के अनुसार, उन्होंने यह भविष्यवाणी की थी कि तीन हजार साल की अवधि तक संघर्ष और कलह होने के बाद ही, उस विश्व के उद्धारक शाह बहराम का आगमन होगा, जो अहरीमन पर विजय प्राप्त करेंगे और धन्यता एवं शान्ति का युग लायेंगे।

गौतम बुद्ध के बारे में की गई इस भविष्यवाणी – कि समय आने पर एक *"मैत्रेय नामक बुद्ध, अर्थात सर्वव्यापी बन्धुत्व का बुद्ध"* प्रकट होगा और *"अपनी अपार महिमा प्रकट करेगा"* – का अर्थ केवल बहाउल्लाह ही हैं। हिन्दुओं की भगवद्गीता उन्हें *"सर्वमहान आत्मा", "दशम अवतार"* तथा *"श्रीकृष्ण का श्रेष्ठतम अवतार"* कहती है।

ईसा मसीह ने उन्हें *"इस विश्व का युवराज"*, और वह *"सांत्वनादाता"* कहा था जो *"विश्व को पाप, नेकी और न्याय के बारे में सलाह देगा", "सत्य की वह आत्मा"* कहा था जो *"समस्त सच्चाई की ओर तुम्हारा पथ प्रदर्शन करेगा"*, जो *"अपनी ओर से नहीं बोलेगा, बल्कि जो सुनेगा वही कहेगा"*, और वह *"मनुष्य का*

पुत्र", कहा था जो *"अपने पिता की महिमा में"*, *"स्वर्ग के बादलों पर शक्ति और महान प्रताप के साथ"*, *"सभी पावन स्वर्गदूतों को अपने इर्द–गिर्द लिए"* तथा *"समस्त राष्ट्रों को अपने सिंहासन के सामने एकत्रित किए हुए"* आयेगा। बाईबिल के प्रकटकर्ता ने उन्हीं को *"ईश्वर की महिमा"*,*"एल्फा और ओमेगा"*, *"आदि और अन्त"*, *"प्रथम और अन्तिम"* की उपाधियाँ दी थीं। इसके अतिरिक्त, उसके प्रकटीकरण को *"तीसरे संकट"* के साथ सम्बद्ध करके, उन्होंने उसके आदेश की प्रशंसा*"एक नए स्वर्ग और एक नई धरती"*, के रूप में,*"ईश्वर के मन्दिर"* के रूप में, *"पावन नगर"* के रूप में तथा उस *"नए जेरुसलम के रूप में की थी जो ईश्वर के स्वर्ग से दुल्हन की तरह नीचे उतर आयेगा जैसे एक दुल्हन को उसके स्वामी के लिए सजाया जाता है।"* स्वयं ईसा मसीह ने, उनके दिन को एक ऐसा *"पुनर्जीवन"* कहा था, जिसमें वह *"मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा।"* उनके आगमन की घड़ी को सेंट पॉल ने*"ईश्वर का वह दिवस"* कहा था,*"जिसमें जलते हुए स्वर्ग बुझ जायेंगे और तेज़ ऊष्मा में सभी तत्व पिघल जायेंगे।"* इसके अतिरिक्त, उन्होंने उसके दिवस का वर्णन *"नवस्फूर्ति प्राप्त करने के समय" के रूप,* एवं *"सभी वस्तुओं की स्थापना" के उस समय के रूप में किया है,"जिसके बारे में ईश्वर ने संसार के प्रारम्भ से ही, अपने सभी पावन पैगम्बरों के मुख से बताया है।"*

अपने ग्रंथ में मुहम्मद ने उस *"महान घोषणा"* के रूप में बहाउल्लाह की ओर ही संकेत किया था और उनके दिवस को, वह दिवस बताया था, *जब "ईश्वर, बादलों के साये में नीचे आयेंगे,"* वह दिवस जब *"तुम्हारा स्वामी और स्वर्गदूतों की सेना की टोलियाँ आयेंगी"*, और*"वह पवित्रात्मा उठ खड़ी होगी तथा स्वर्गदूत पंक्तिबद्ध हो जायेंगे।"* उसी पुस्तक के एक श्लोक में – जिसके बारे में कहा जाता है कि मुहम्मद ने इसे *"कुरान का हृदय"* कहा था – उन्होंने भविष्यवाणी करते हुए, बहाउल्लाह के आगमन को उस*"तीसरे"* संदेशवाहक का आगमन बताया है, जिसे पूर्व के दो संदेशवाहकों का*"समर्थन"* करने के लिए भेजा जायेगा। उसी ग्रंथ के पृष्ठों में, मुहम्मद ने बहाउल्लाह के दिवस को श्रद्धांजलि दी है और उनके दिवस की प्रशंसा करते हुए इसे जो उपाधियाँ दी हैं, वे हैं *"महान दिवस"*,*"अन्तिम दिवस"*, *"ईश्वर का दिवस"*,*"न्याय का दिवस"*,

"लेखाजोखा का दिवस","परस्पर विश्वासघात का दिवस","सम्बन्ध तोड़ने का दिवस", "आहें भरने का दिवस","मिलने का दिवस","वह दिवस जिसमें उसका आदेश पूरा किया जायेगा", "वह दिवस जिसमें दूसरी बार तूर्यनाद" सुनाया जायेगा,*"वह दिवस जिसमें मानवजाति इस संसार के स्वामी के समक्ष खड़ी होगी"* और सभी*"विनम्रतापूर्वक उसके सामने आयेंगे"* वह दिवस जब*"तुम देखोगे कि जिन पर्वतों को तुम इतने दृढ़ समझते थे, वे एक बादल की तरह धुँआ बन चुके हैं"*, वह दिवस*"जिसमें हिसाब माँगा जायेगा","वह नज़दीक आता हुआ दिवस, जब मनुष्यों के हृदय ऊपर उठेंगे और उनके गले तक आकर उनका दम घोंट देंगे"* वह दिवस जब *"वे सभी, जो स्वर्ग में हैं और वे सभी जो धरती पर हैं, आतंक से काँप उठेंगे, सिवाय उसके जिसे ईश्वर बचाना चाहें"*, वह दिवस जब*"प्रत्येक स्त्री अपने दुधमुँहे बच्चे को त्याग देगी और प्रत्येक गर्भवती स्त्री अपने गर्भ के बोझ को निकाल फेंकेगी"*, वह दिवस *"जब धरती अपने स्वामी के प्रकाश से चमक उठेगी और वह पुस्तक निर्धारित होगी, तथा पैगम्बरों एवं गवाहों को ऊपर उठाया जायेगा; और लोगों के बीच न्यायपूर्वक फैसला किया जायेगा; और किसी के साथ अन्याय नहीं होगा।"*

जैसा स्वयं बहाउल्लाह द्वारा प्रमाणित किया गया है, ईश्वर के धर्मप्रचारक (मुहम्मद) द्वारा, बहाउल्लाह के प्रताप की परिपूर्णता की तुलना *"चौदहवीं के चाँद"* के साथ की है। विश्वासियों के सेनापति, इमाम अली ने भी, उसी साक्षी के अनुसार, उनके स्थान की तुलना उससे की थी जिसने उस *"प्रज्वलित गिरिश्रृंग से मूसा को सम्बोधित किया था"*। बहाउल्लाह के अनुसार, उनके ध्येय के श्रेष्ठ स्वरूप के बारे में, इमाम हुसैन ने यह साक्षी देते हुए कहा था कि यह एक ऐसा *"प्रकटीकरण है जिसका प्रकटकर्ता वह होगा जिसने स्वयं ईश्वर के धर्मप्रचारक (मुहम्मद) को प्रकट किया था।"*

बाबी विधान के अग्रदूत, शेख अहमद एहसाई जिन्होंने, उन *"आश्चर्यजनक घटनाओं"* की भविष्यवाणी की थी जो*"सन् 1260 और 1267 के बीच के वर्षों में"* घटने वाली थीं और उनके प्रकटीकरण की अटलता की पुष्टि की थी – जैसा पहले बताया जा चुका है, उनके विषय में लिखा था कि, "इस धर्म का रहस्य

प्रकट होकर ही रहेगा और इस सन्देश का रहस्य अवश्य ही उजागर किया जाएगा। इससे अधिक मैं और कुछ नहीं कह सकता, मैं कोई समय भी निर्धारित नहीं कर सकता। उसका धर्म हिन (68) के बाद" (अर्थात, कुछ समय बाद) "प्रकट किया जायेगा।"

इसी प्रकार, शेख अहमद के शिष्य और उत्तराधिकारी, सैय्यद काज़िम ने लिखा था :*"काईम को मृत्युदण्ड दिया जायेगा। जब उनका वध हो चुका होगा, तब यह दुनिया अट्ठारह साल की हो चुकी होगी।"* अपने लेख में उन्होंने *"बहा"* नाम की ओर संकेत किया था। जब उनके जीवन का अन्त निकट आ गया, तब उन्होंने अपने शिष्यों के समक्ष यह महत्वपूर्ण घोषणा की थी कि : "वस्तुतः मैं कहता हूँ, कि उस काईम के बाद, कय्य्यूम प्रकट होगा, क्योंकि जब काईम का सितारा अस्त हो चुका होगा, तब उस हुसैन के सौन्दर्य का सूर्य उदित होगा और सम्पूर्ण जगत को प्रकाशित कर देगा। तब वह 'रहस्य' और वह 'गूढ़ता' अपनी सम्पूर्ण महिमा में प्रकट होगी, जिनका उल्लेख शेख अहमद ने किया था.....। दिवसों के उस दिवस को प्राप्त होना, अतीत की समस्त पीढ़ियों की श्रेष्ठतम महिमा को प्राप्त करने के बराबर है और उस युग में किया गया एक सद्कर्म, असंख्य सदियों की पावन आराधना के बराबर है।"

इसी प्रकार बाब ने बड़ी महत्वपूर्ण उपाधियों से उनकी प्रशंसा की थी, जैसा कि *"अस्तित्व का सार", "ईश्वर के अंश", "सर्वशक्तिशाली स्वामी", "सर्वव्यापी प्रकाश", "दृश्य और अदृश्य का स्वामी", "स्वयं काईम के प्रकटीकरण सहित पूर्व के समस्त प्रकटीकरणों का एकमात्र लक्ष्य।"* उन्होंने यथाविधि उन्हें *"वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा"* की उपाधि दी थी, उनकी ओर उस *"आभा क्षितिज"* के रूप में संकेत किया था, जिसमें वे स्वयं रहते हैं और निवास करते हैं, विशेष रूप से उनकी उपाधि का उल्लेख किया था और अपनी सर्वोत्तम पुस्तक, फारसी बयान में उनकी*"व्यवस्था"* की प्रशंसा की थी,*"मनुष्यों के सच्चे और असंदिग्ध नेता"*, अली के पुत्र की ओर संकेत करते हुए उनका नाम प्रकट कर दिया था, उन्होंने मौखिक रूप से और लिखित में, किसी भी प्रकार के सन्देह से परे, उसके प्रकटीकरण का समय निर्धारित कर दिया था और अपने अनुयायियों को

चेतावनी दी थी कि कहीं *"बयान और उसमें जो कुछ भी प्रकट किया गया है"*, उन्हें *"एक परदे की भाँति उससे दूर न कर दे।"* इसके अतिरिक्त उन्होंने यह घोषित किया था कि उसमें विश्वास करने वाले *"सेवकों में वे प्रथम हैं"* और *"सभी वस्तुओं के सृजन से पहले, उनमें अपनी आस्था प्रकट कर चुके हैं"*, *और यह कि "साल–भर का एक जंतु, जिसमें उस आने वाले प्रकटीकरण की क्षमताएँ अन्तर्निहित हैं, वह इतना सामर्थ्यवान है कि उसकी क्षमता, सम्पूर्ण बयान की संयुक्त शक्तियों से भी अधिक श्रेष्ठ है।"* इसके अतिरिक्त उन्होंने स्पष्ट पुष्टि की है कि अपनी स्वयं की संविदा स्थापित करने से पहले, उन्होंने *"सभी सृजित वस्तुओं के साथ"* उसके बारे में संविदा स्थापित कर ली थी जिसे ईश्वर प्रकट करेगा। उन्होंने बड़ी तत्परता से यह स्वीकार कर लिया था कि वे तो उस *"सर्वमहान पुस्तक"* के *"एक अक्षर"* मात्र थे, उस *"असीम महासिन्धु"* की एक बूंद मात्र थे, उनका प्रकटीकरण, *"उसके स्वर्ग के पातों में से एक पात मात्र था"*, *"बयान में जो कुछ भी उदात्त किया गया है"*, वह उनके स्वयं के हाथ की केवल एक अंगूठी–मात्र है और वे स्वयं *"उसके हाथों की एक अंगूठी मात्र है जिसे ईश्वर प्रकट करेगा"*, जो, *"इसे जैसे चाहे, जिसके लिए चाहे, और जिसके माध्यम से चाहे, घुमा सकता है।"* उन्होंने यह असंदिग्ध घोषणा की थी कि उन्होंने स्वयं को उसके लिए *"पूर्णतया त्याग दिया है"*, उसके लिए श्रापित होना स्वीकार किया है, और उसके पथ में *"सिवाय शहादत के अन्य कुछ नहीं चाहा है।"* अन्त में, उन्होंने स्पष्ट रूप से यह भविष्यवाणी की है कि :*"आज बयान एक बीज के रूप में है। जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, उसके प्रकट होने पर, इसकी पूर्णता प्रत्यक्ष हो जायेगी।" "इस धर्म के प्रारम्भ से लेकर, नौ के समाप्त होने से पहले, सृजित वस्तुओं की वास्तविकता प्रकट नहीं होगी। अब तक तुमने जो कुछ भी देखा है, वह मात्र एक भीगे अंकुर से लेकर तब तक का चरण है जब हमने इसे अंकुरित किया। तब तक धैर्य रखो जब तुम एक नई रचना देखोगे। कहोः धन्य है ईश्वर, सभी सृजनकर्ताओं में सर्वोत्कृष्ट !"*

स्वयं के प्रकटीकरण की अकल्पनीय महानता और सर्वोत्कृष्ट स्वरूप की पुष्टि करने वाली बहाउल्लाह की साक्षी है कि *"वह, जिसके आसपास बयान के उस बिन्दु ने परिक्रमा की है, अब आ चुका है।"* आगे वे यह भी पुष्टि करते

हैं कि यदि इस दिवस में, उन सभी को, *"जो स्वर्ग में और धरती पर हैं, बयान के अक्षरों की शक्ति और गुणों से विभूषित कर दिया जाए, जिनका स्थान, कुरान के विधान के अक्षरों से दस हजार गुना अधिक यशस्वी है और यदि वे सभी, मात्र एक पलक झपकने की देर तक भी, मेरे प्रकटीकरण को पहचानने में हिचकिचायेंगे, तो ईश्वर की दृष्टि में वे उनमें से गिने जायेंगे जो भटक चुके हैं, और उन्हें 'प्रतिवाद के अक्षर' माना जायेगा।" किताब–ए–इक़ान* में, स्वयं की ओर संकेत करते हुए वे यह पुष्टि करते हैं कि, *"वह दिव्य सामर्थ्य का सम्राट इतना शक्तिशाली है कि अपने अद्भुत शब्दों के एक अक्षर के माध्यम से सम्पूर्ण बयान और इसके अनुयायियों के अन्दर से जीवन की साँस बुझा सकता है और एक अक्षर से उन्हें एक नया और अनन्त जीवन प्रदान कर सकता है और उन्हें उनकी व्यर्थ एवं स्वार्थपूर्ण कामनाओं की कब्रों से शीघ्रता से उठ खड़े होकर बाहर निकलने में समर्थ बना सकता है।"* इसके आगे वे यह घोषित करते हैं कि, *"यह दिवस, दिवसों का सम्राट है", "स्वयं ईश्वर का दिवस", "वह दिवस जिसके बाद रात नहीं आयेगी", "वह बहार, जिस पर पतझड़ कभी नहीं छायेगी", "अतीत के युगों और सदियों की वह दृष्टि",* जिसके लिए, *"ईश्वर के प्रत्येक पैग़म्बर, प्रत्येक दिव्य संदेशवाहक की आत्मा तरसी थी", जिसकी कामना "धरती के समस्त लोगों ने की है", "जिसके माध्यम से ईश्वर ने अपने संदेशवाहकों के सम्पूर्ण दल के, तथा उनके परे उनके हृदयों को प्रमाणित किया है जो उसके पावन एवं अलंघनीय शरण स्थल की रक्षा करते हैं, उस स्वर्गिक मंडप के निवासी हैं और महिमा के मन्दिर में रहते हैं।"* इसके आगे वे कहते हैं, *"इस सर्वमहान प्रकटीकरण में, अतीत के सभी विधान अपनी उच्चतम, अपनी अन्तिम पूर्णता को प्राप्त हुए हैं।"* और, एक बार फिर : *"पहले के किसी भी अवतार ने, एक निर्धारित सीमा से अधिक इस प्रकटीकरण के स्वरूप को पूरी तरह कभी नहीं समझा।"* अपने स्वयं के स्थान के बारे में वे कहते हैं : *"यदि यह उसके कारण न होता, तो कोई भी दिव्य संदेशवाहक, कभी भी पैग़म्बर का स्थान प्राप्त न करता, न ही कोई पावन ग्रंथ प्रकट किया जाता।"*

और अन्त में, उतनी ही महत्वपूर्ण, स्वयं अब्दुल बहा की वह श्रद्धांजलि है जो उन्होंने अपने पिता के सम्बन्धित प्रकटीकरण के श्रेष्ठ स्वरूप को दी

है। *"सत्य का वह दिवास्रोत एक बार फिर अपनी ग्रीष्मकालीन भव्यता से चमके, अथवा अपने बसन्ती प्रताप की दीप्ति में प्रकट हो, उससे पहले सदियाँ ही नहीं, बल्कि युग बीत जायेंगे।"* इसके आगे वे यह पुष्टि करते हैं कि, *"आशीर्वादित सौन्दर्य (बहाउल्लाह) द्वारा प्रारम्भ किए गए विधान का केवल विचार–मात्र ही, अतीत के युगों के संतों को अभिभूत कर देने के लिए पर्याप्त था – ऐसे संत जो इसकी विशाल महिमा में क्षणभर जीने के लिए तरसते थे।"* *"भविष्य में आने वाले अवतार के बारे में"*, उनका महत्वपूर्ण कथन है, *"वस्तुतः तुम यह जान लो, कि जहाँ तक उनकी प्रेरणा के स्रोत का सम्बन्ध है, वे प्राचीन सौन्दर्य (बहाउल्लाह) की छाया तले रहेंगे। परन्तु, जिस युग में वे प्रकट होंगे, उसके सम्बन्ध में उनमें से प्रत्येक 'जो चाहता है, करता है'"*। और अन्त में अब्दुल बहा की प्रकाश डालने वाली यह अटल व्याख्या, बहाउल्लाह और बाब के प्रकटीकरणों के बीच सही सम्बन्ध को निर्णायक रूप से प्रस्तुत करती है : *"बाब के प्रकटीकरण की तुलना सूर्य से की जा सकती है, जिसका स्थान राशिमण्डल की प्रथम राशि – मेष राशि – के अनुरूप है, जिसमें सूर्य तब प्रवेश करता है जब वह विषुवत रेखा पर होता है। दूसरी ओर, बहाउल्लाह के प्रकटीकरण का स्थान, सिंह राशि के स्थान से समझा जा सकता है, जो सूर्य का ग्रीष्मकालीन और सर्वोच्च स्थान होता है। इसका अर्थ यह है कि यह पावन विधान, सत्य के उस सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित हुआ है जो अपने सर्वोदात्त स्थान से तथा अपनी चमक, अपनी ऊष्मा और अपने प्रताप की परिपूर्णता से चमक रहा है।"*

बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के सन्दर्भ में की गई भविष्यवाणियों का पूरा–पूरा सर्वेक्षण करने का प्रयास भी करना वास्तव में एक असम्भव कार्य होगा। इसकी साक्षी स्वयं बहाउल्लाह की लेखनी ने दी है : *"समस्त दिव्य पुस्तकों और ग्रंथों ने इस महान प्रकटीकरण के आगमन की भविष्यवाणी की है और मनुष्यों के समक्ष इसकी घोषणा की है। अतीत के ग्रंथों में अंकित उन श्लोकों का पर्याप्त वर्णन कोई नहीं कर सकता, जिनमें इस सर्वोच्च उदारता, इस सर्वशक्तिशाली उपहार की भविष्यवाणी की गई है।"*

मुझे लगता है कि इस विषय के अन्त में, यह कहना आवश्यक होगा कि बहाउल्लाह के साथ जोड़ा गया प्रकटीकरण बिना किसी शर्त के अतीत के समस्त विधानों को रद्द करता है और बगैर किसी समझौते के, उन शाश्वत सत्यों का समर्थन करता है जो इन विधानों में अन्तर्निहित हैं, उनके संस्थापकों के दिव्य–स्रोत को दृढ़ता के साथ और पूर्ण रूप से स्वीकार करता है, उनके प्रमाणित ग्रंथों की पावनता को अलंघनीय रूप से सुरक्षित रखता है, उनके संस्थापकों के स्थान को नीचा दिखाने या उनके द्वारा दिए गए आध्यात्मिक आदर्शों को अस्वीकृत करने के किसी भी विचार को नकारता है, उनके कार्यों को स्पष्ट करता है और उन्हें आपस में जोड़ता है, उनके सामान्य, अपरिवर्तनीय और आधारभूत उद्देश्य की पुष्टि करता है, उनके भिन्न–भिन्न प्रतीत होने वाले दावों और सिद्धान्तों में समन्वय स्थापित करता है, एक ही दिव्य प्रकटीकरण के क्रमिक रूप से प्रकट होने वाले हिस्सों में उनके विशेष योगदानों को सहज भाव से एवं आभार के साथ स्वीकारता है, निरन्तर प्रगति कर रहे प्रकटीकरणों की श्रेणी में अपने आपको मात्र एक कड़ी मानता है, उनकी शिक्षाओं को ऐसे नियमों और आदेशों से पूरक बनाता है, जो एक तेज गति में क्रमिक रूप से विकास कर रहे तथा निरन्तर बदल रहे समाज की आवश्यक माँगों और बढ़ती हुई ग्रहणशीलता से प्रेरित होते हैं और जिन पंथों एवं टुकड़ों में ये विधान बँट गए हैं, उन्हें उस विश्व स्तरीय भाईचारे में मिलाने और शामिल करने की अपनी तत्परता और योग्यता की घोषणा करता है, जो एक ऐसी व्यवस्था में कार्य करेगी जो दिव्य रूप से उत्पन्न हुई है, इस विश्व को एकता के सूत्र में बाँध सकती है और इस विश्व को मुक्ति दिला सकती है।

एक ऐसा प्रकटीकरण जिसकी प्रशंसा, अतीत के युगों और सदियों की वचनबद्धता और महिमाशाली ताज के रूप में तथा आदम के उस चक्र के अंतर्गत आने वाले समस्त विधानों की पूर्णता के रूप में की गई है, जो चक्र एक हज़ार वर्ष की अवधि का होगा और पाँच हज़ार शताब्दियों तक जिसका चलना नियत है, जो चक्र अवतार के युग के अन्त का और पूर्णता के युग की शुरूआत का संकेत देता है और जो अपने संस्थापक के सेवाकाल की अवधि और उसके ध्येय की सार्थकता और भव्यता में समान रूप से अद्वितीय है – जैसा पहले

देखा जा चुका है, ऐसा प्रकटीकरण, तेहरान के एक ऐसे भूमिगत कारागार के अन्धकार में जन्मा था, जो एक इतना घृणास्पद गड्ढा था जो किसी ज़माने में, शहर के एक सार्वजनिक स्नानागार के लिए जल–भण्डार (टंकी) हुआ करता था। जब बहाउल्लाह इस कारागार के नारकीय अंधेरे में लिपटे हुए थे, इसकी दुर्गन्ध भरी हवा में साँस ले रहे थे, जब उनका शरीर इसके नम और बर्फीले वातावरण में सुन्न पड़ गया था, उनके पैरों में बेड़ियाँ थीं, जब एक भारी ज़ंजीर के बोझ के कारण उनकी गर्दन झुक गई थी और वे बदतरीन किस्म के अपराधियों और कुमार्गियों से चारों ओर से घिरे हुए थे, जब वे उस दुःखद कलंक के बोध से अत्यन्त व्यथित थे, जिसने उनके प्रिय धर्म के पवित्र नाम पर दाग लगा दिया था, जब उन्हें उस घोर वेदना की जानकारी मिली थी जो इस धर्म के शूरवीरों को सहन करनी पड़ी थी और उन भयानक खतरों की खबर हुई थी जो इस धर्म के शेष अनुयायियों के समक्ष खड़े थे। ऐसी संकटभरी घड़ी में तथा इतनी भयानक परिस्थितियों में, जैसा स्वयं बहाउल्लाह ने कहा है, *"वह सर्वमहान आत्मा"* बहाउल्लाह पर उतरी – जिसे जरथोस्ती, यहूदी, ईसाई, और मुहम्मदी विधानों में क्रमशः पावन अग्नि, ज्वलन्त झाड़ी, कपोत और देवदूत जिब्राईल का प्रतिरूप कहा गया है – उनकी दुःखी आत्मा के समक्ष उसने स्वयं को एक *"सेविका"* के रूप में प्रकट किया।

अपने जीवन के अन्तिम दौर में, अपनी आत्मा में ईश्वर के प्रकटीकरण की पहली हलचल को याद करते हुए, स्वयं बहाउल्लाह ने लिखा है, *"एक रात सपने में, ये उदात्त शब्द चारों ओर से सुनाई दिए, वस्तुतः हम तुम्हें तुम्हारे ही द्वारा और तुम्हारी ही लेखनी के द्वारा विजयी बनायेंगे। तुम पर जो बीती है, उससे दुःखी न हो, न ही तुम भयभीत हो, क्योंकि तुम सुरक्षित हो। शीघ्र ही ईश्वर धरती के खज़ानों को प्रकट करेगा – वे ऐसे मनुष्य होंगे जो तुम्हारे और तुम्हारे नाम के माध्यम से तुम्हारी सहायता करेंगे।"* एक अन्य उद्धरण में वे अपने सम्पूर्ण अस्तित्व पर, उस दिव्य आह्वान की प्रवाह शक्ति के ज्वार का संक्षिप्त वर्णन करते हैं, यह एक ऐसा अनुभव था जो ईश्वर के उस साक्षात्कार की स्पष्ट याद दिलाता है जिसने मूसा को बेहोश करके गिरा दिया था और ज़िब्राईल की वह आवाज़ जिसने मुहम्मद को इतने विस्मय में डुबो दिया था

कि अपने घर की सुरक्षा में शीघ्रता से पहुँचकर उन्होंने अपनी पत्नी खदीजा को आदेश दिया कि वे, उन्हें ओढ़ने से ढंक दें। स्वयं बहाउल्लाह के स्मरणीय शब्द हैं *"जिन दिनों मैं तेहरान के कारागार में था, यद्यपि ज़ंजीरों के कष्टकर बोझ और दूषित हवा के कारण मैं बहुत कम सो पाता था, फिर भी नींद की उन कभी–कभी आने वाली घड़ियों में मुझे ऐसा लगा जैसे कोई वस्तु मेरे सिर से प्रवाहित होते हुए मेरी छाती पर वैसे ही फैल गई जैसे किसी ऊँचे पर्वत की चोटी से कोई अत्यन्त शक्तिशाली जलप्रवाह अपने आप को धरती पर गिराता है। इसके परिणाम स्वरूप, मेरे शरीर के प्रत्येक अंग में ज्वाला भड़क उठती थी। ऐसे क्षणों में मेरी जिह्वा ने वह उच्चारित किया जिसे सहन करने की क्षमता किसी भी मनुष्य में नहीं थी।"*

अपने *सुरातुल–ए–हैकाल* में उन साँस रोक देने वाले पलों का वर्णन वे इस प्रकार करते हैं, जब उस *"सर्वमहान चेतना"* को चिन्हित करने वाली उस *"सेविका"* ने समस्त सृष्टि के समक्ष उनके ध्येय की घोषणा की थी : *"विपत्तियों से घिरे रहने के दौरान मैंने एक अत्यन्त सुन्दर, एक अत्यंत मीठी आवाज़ सुनी, जो मेरे सिर के ऊपर से आ रही थी। मैंने मुड़कर देखा कि एक सेविका, जो कि मेरे स्वामी के नाम के स्मरण का मूर्तरूप थी, मेरे समक्ष हवा में खड़ी थी। उसकी आत्मा इतनी हर्षित थी कि ईश्वर की सुप्रसन्नता के श्रृंगार से उसका चेहरा दीप्तिमान हो उठा था और उस सर्वदयालु के प्रकाश से उसके कपोल दमक रहे थे। धरती और स्वर्ग के बीच खड़ी वह एक ऐसा आह्वान कर रही थी जिसने मनुष्यों के हृदयों और मस्तिष्कों को मोहित कर लिया था। वह मेरे बाहरी वजूद और मेरे अन्तर्मन को ऐसे शुभ संदेश दे रही थी जिनसे मेरी आत्मा और ईश्वर के सम्मानित सेवकों की आत्माएँ आनन्दित हो उठीं थी। अपनी उँगली से मेरे सिर की ओर संकेत करते हुए, उसने उन सभी को, जो स्वर्ग में और धरती पर हैं, सम्बोधित करते हुए कहा : 'ईश्वर की सौगंध ! यह सभी लोकों का परमप्रिय है, और फिर भी तुम नहीं समझते। यह तुम्हारे बीच ईश्वर का सौन्दर्य है, और तुम्हारे अन्दर उसकी सत्ता की शक्ति है, काश तुम यह समझ पाते। यह ईश्वर का रहस्य और उसका खज़ाना है, ईश्वर का धर्म है। प्रकटीकरण एवं सृष्टि के साम्राज्यों में, उसकी महिमा है, यदि तुम उनमें से हो जो समझ सकते हैं।'"*

अपने संदेश की उद्घोषणा की चरम सीमा पर, नसीरूद्दीन शाह को सम्बोधित एक पाती में, ये उद्धरण मिलते हैं जो बहाउल्लाह के ध्येय के दिव्य स्वरूप पर और भी प्रकाश डालते हैं: *"हे राजा ! मैं अन्य मनुष्यों की तरह ही अपनी शैय्या पर सोया हुआ था, जब अचानक, उस सर्वमहिमामय की सुरभि मुझ पर बही और मुझे समस्त ज्ञान प्रदान किया। यह मेरी ओर से नहीं है, अपितु उसकी ओर से है जो शक्तिशाली और सर्वज्ञाता है। उसने मुझे धरती और स्वर्ग के बीच अपनी आवाज़ उठाने का आदेश दिया, इसके कारण मुझ पर वह बीती जिससे प्रत्येक समझदार व्यक्ति की आँखों से आँसू बह निकले.....। यह तो केवल एक पत्ता है जिसे तुम्हारे सर्वशक्तिशाली, सर्वप्रशंसित स्वामी की इच्छा ने अनुप्राणित किया है.....। उसका सर्वबाध्यकारी आह्वान मुझ तक पहुँचा और मुझे इस योग्य बनाया कि मैं सभी लोगों के बीच उसकी प्रशंसा कर सकूँ। जब उसका आदेश उच्चारित किया गया, तब मैं वास्तव में एक मृत व्यक्ति के समान था। तुम्हारे उस करुणामय, उस दयालु स्वामी की इच्छा की भुजा ने मुझे पुनर्जीवन प्रदान कर दिया।"* बहाउल्लाह एक अन्य पाती में यह पुष्टि करते हैं, *"मेरे जीवन की सौगंध ! मैंने स्वेच्छा से स्वयं को प्रकट नहीं किया, बल्कि ईश्वर ने अपनी स्वयं की इच्छा से मुझे प्रकट किया है।"* और एक बार फिर : *"जब भी मैंने मौन धारण करना और शान्त रहना चाहा, तब अचानक, मेरे दाहिने हाथ पर खड़ी उस पवित्रात्मा की आवाज़ ने मुझे जगाया और वह सर्वमहान चेतना मेरे समक्ष प्रकट हुई और जिब्राईल मुझ पर छा गया और उस महिमा की चेतना ने मेरे हृदय को प्रेरित करते हुए मुझे अपना मौन तोड़ने का आदेश दिया।"*

ऐसी थीं वे परिस्थितियाँ जिनमें सत्य का वह सूर्य तेहरान शहर में उदित हुआ था – एक ऐसा शहर जिसे प्रदान किए गए इतने दुर्लभ विशेषाधिकार के कारण, बाब ने इसकी प्रशंसा करते हुए इसे *"पावन भूमि"* कहा था, और बहाउल्लाह द्वारा इसे *"विश्व की माता", "प्रकाश का दिवास्रोत", "उस स्वामी के चिन्हों का उद्गम स्थल","समस्त मानवजाति के आनन्द का स्रोत"* जैसी उपाधियाँ दी गईं थीं। जैसा कि बताया जा चुका है, उस अद्वितीय भव्यता के प्रकाश की सर्वप्रथम किरणें शीराज़ शहर पर पड़ी थीं। उस प्रकाशपुंज का

किनारा अब तेहरान के सियाहचाल के क्षितिज पर प्रकट हुआ था। एक दशक के बाद इसकी किरणें बग़दाद में फूटने वाली थी और उन बादलों को भेदने वालीं थीं जिन्होंने इनके उदित होने के तत्काल बाद उस अंधकारमय वातावरण में इसकी भव्यता को धुंधला कर दिया था। एड्रियानोपल के दूरस्थ शहर में अपनी चरम सीमा पर पहुँचना और अन्त में अक्का के कारानगर की निकटतम समीपता में अस्तगमित होना इसकी नियति थी।

जिस प्रक्रिया के माध्यम से ऐसे चमत्कृत कर देने वाले प्रकटीकरण की दीप्ति मनुष्यों के समक्ष प्रकट हुई थी उसकी गति का धीमा होना आवश्यक था। न तो इसके धारक द्वारा प्राप्त किए गए पहले संकेत के साथ और न ही इसके तुरन्त बाद उन्होंने इसके स्वरूप की घोषणा अपने साथियों या अपने रिश्तेदारों के समक्ष की। बहाउल्लाह के साथ घनिष्टता से जुड़े हुए लोगों के समक्ष भी इसके दूरगामी आशयों को सीधा प्रकट किया जा सकता था। उससे पहले दस वर्षों की अवधि का व्यतीत होना आवश्यक था जो महान आध्यात्मिक हलचल की वह अवधि थी जिसके दौरान इतने गम्भीर संदेश के प्राप्तकर्ता (बहाउल्लाह) ने बड़ी बेचैनी के साथ उस घड़ी की प्रतीक्षा की जिसमें वे अपनी उस बोझिल आत्मा को बोझ रहित कर सकते थे, जो ईश्वर के नवजात प्रकटीकरण द्वारा उत्पन्न की गई क्षमतावान शक्तियों से सराबोर थी। इस पूर्व–विहित अन्तराल में उन्होंने उन पातियों, व्याख्याओं, प्रार्थनाओं और टिप्पणियों के माध्यम से जिन्हें प्रकट करने की उन्हें प्रेरणा मिली – एक अप्रत्यक्ष और सांकेतिक भाषा में केवल यह संकेत दिया कि बाब का वादा पूरा हो चुका है और वे स्वयं वह व्यक्ति थे जिन्हें इसे पूरा करने के लिए चुना गया था। उनके कुछ सह–अनुयायियों ने जो अपने विवेक और बहाउल्लाह के प्रति अपने व्यक्तिगत लगाव और समर्पण के कारण विशिष्ट थे, उनकी अब तक की अप्रकट महिमा की दीप्ति को महसूस कर लिया था जिसने बहाउल्लाह की आत्मा को सराबोर कर दिया था। यदि बहाउल्लाह ने उन्हें न रोका होता तो वे उनके इस रहस्य को प्रकट कर देते और दूर–दूर तक इसकी उद्घोषणा कर चुके होते।

बहाउल्लाह का इराक निर्वासन

जैसा कि पिछले अध्याय में बताया गया है, नसीरूद्दीन शाह पर जानलेवा हमले का प्रयास, हि.स. 1268 के शव्वाल माह की 28 तारीख अर्थात 15 अगस्त 1852 को किया गया था। इसके तुरन्त बाद, बहाउल्लाह को नियावरान में गिरफ्तार कर घोरतम अपमान के साथ तेहरान लाया गया और सियाहचाल की जेल में डाल दिया गया। उन्हें कम से कम चार माह की अवधि तक कैद रखा गया जिसके बीच आने वाले वर्ष "नौ" (1269) की प्रतीक्षा इतने प्रशंसा भरे शब्दों में बाब द्वारा की गई थी और शेख अहमद एहसाई द्वारा जिसका संकेत "हिन के बाद" आने वाले वर्ष के रूप में दिया गया था, वह अब आ चुका था और सम्पूर्ण विश्व को ऐसी क्षमताओं से सम्पन्न कर रहा था जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। उस वर्ष के जन्म के दो माह बाद, बहाउल्लाह को – जिनकी कैद का उद्देश्य अब पूरा हो चुका था – उनकी कैद से रिहा कर दिया गया और एक माह बाद उनके उस जीवनभर जारी रहने वाले यादगार देशनिकाले के पहले चरण में वे बग़दाद के लिए रवाना हो गए। यह निर्वासन कई वर्षों की अवधि के दौरान उन्हें यूरोपीय तुर्किस्तान में एड्रियानोपल तक ले जाने वाला था और इसका अन्त अक्का में 24 साल की उनकी कैद के साथ होने वाला था।

अब जबकि उस शक्तिशाली स्वप्न के परिणामस्वरूप उन्हें उस शक्ति और परम सत्ता से विभूषित कर दिया गया था जो उनके दिव्य ध्येय के साथ जुड़ी थी, तो उस कैद से उनकी मुक्ति न केवल अटल थी बल्कि अत्यावश्यक

और अविलम्ब भी, जिस कैद ने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया था और जिसकी अवधि बढ़ाने से वे शायद अपने इस नए कार्य को अंजाम देते–देते पूरी तरह टूट जाते। उन्हें बाँधने वाली बेड़ियों से उन्हें स्वतंत्र कराने वाले माध्यमों और साधनों का भी अभाव नहीं था। एक रूसी मंत्री, प्रिंस डोलगोरूकि जिसने बहाउल्लाह को निर्दोष सिद्ध करने का हर सम्भव प्रयास किया था, के लगातार और निर्णायक हस्तक्षेप के कारण तथा उस मुल्ला शेख अली–ए–तुरशीज़ी, अलियास अज़ीम के सार्वजनिक वक्तव्य के कारण जिसने सियाहचाल में हाजीबुद्दौली, एक रूसी मंत्री के अनुवादक और एक सरकारी प्रतिनिधि के समक्ष बहाउल्लाह को स्पष्ट रूप से निर्दोष ठहराया था और अपनी सहपराधिता स्वीकार की थी। साथ ही सक्षम न्यायालयों के निर्विवाद प्रमाणों के कारण स्वयं बहाउल्लाह के भाईयों, बहनों और रिश्तेदारों के अथक प्रयासों के कारण, इन सभी ने मिल–जुलकर अन्त में बहाउल्लाह के उन अति लोभी शत्रुओं से उनकी रिहाई भी प्राप्त की। उसी कैद में यातनाएँ भुगतने वाले बहाउल्लाह के आत्मत्यागी सह–अनुयायियों की इतनी बड़ी संख्या द्वारा सहन किया गया दुर्भाग्य भी, यद्यपि एक कम स्पष्ट किन्तु इतना शक्तिशाली प्रभाव है कि इसके बारे में यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि बहाउल्लाह की रिहाई में इनका भी योगदान था, क्योंकि जैसी कि नबील की सच्ची टिप्पणी है, "उस दुर्भाग्यपूर्ण वर्ष में जिन शूरवीरों की टोली के साथ बहाउल्लाह को तेहरान में कैद किया गया था उनके द्वारा बहाया गया खून, उस शत्रु के हाथ से बहाउल्लाह की की कीमत थी जो उस उद्देश्य को पूरा करने से बहाउल्लाह को रोकने का प्रयास कर रहा था जिसके लिए ईश्वर ने उन्हें नियत किया था।"

किसी सन्देह की परछाईं से भी परे बहाउल्लाह को निर्दोष सिद्ध करने वाले ऐसे प्रमाणों के कारण अपने कैदी को मुक्त कर देने की शाह की अनिच्छुक स्वीकृति प्राप्त करके वह महामंत्री अब इस परिस्थिति में था कि वह अपने एक विश्वसनीय प्रतिनिधि, हाजी अली को सियाहचाल रवाना करे और उसे यह निर्देश दे कि वह जाकर बहाउल्लाह को उनकी मुक्ति का आदेश पत्र सौंप दे। वहाँ पहुँचने पर उस प्रतिनिधि ने जो दृश्य देखा उससे वह इतना क्रोधित हो उठा कि इतने उच्च स्थान और बेदाग प्रसिद्धि पर प्रतिष्ठित व्यक्ति के साथ

किए गए शर्मनाक व्यवहार के लिए उसने अपने मालिक को धिक्कारा। उसने अपने लम्बे कोट समान ओढ़ने को उतारकर बहाउल्लाह के समक्ष प्रस्तुत कर दिया और उनसे भीख माँगी कि वे इसे उस मंत्री और सलाहकारों के सामने जाने से पहले पहन लें। बहाउल्लाह ने उसके इस अनुरोध को बड़ी दृढ़ता के साथ अस्वीकार कर दिया और शाही सरकार के सदस्यों के सामने एक कैदी के वस्त्रों में जाना अधिक उचित समझा।

जैसे ही बहाउल्लाह उनके समक्ष प्रस्तुत हुए, वैसे ही उस महामंत्री ने उन्हें सम्बोधित करते हुए कहा : "यदि तुमने मेरी सलाह मान ली होती और यदि तुमने स्वयं को सैय्यद–ए–बाब के धर्म से न जोड़ा होता तो तुम्हें वे सभी कष्ट और अपमान सहन न करने पड़ते जो तुम पर लादे गए हैं।" इस पर बहाउल्लाह ने कड़ा उत्तर दिया, *"यदि तुमने भी मेरी सलाह मानी होती तो सरकार के क्रियाकलापों की दशा इतनी संकटपूर्ण परिस्थिति में न पहुँची होती।"* इस पर मिर्ज़ा आक़ा जान को वह बातचीत याद आई जो बाब की शहादत के समय उसने बहाउल्लाह से की थी, जब उसे यह चेतावनी दी गई थी कि, *"जो अग्नि प्रज्वलित की गई है वह इतने भीषण रूप से भड़केगी जितने पहले कभी नहीं भड़की है।"* उसने बहाउल्लाह से पूछा, "अब आप मुझे क्या सलाह देना चाहेंगे ?" बहाउल्लाह ने तत्काल जवाब दिया, *"राज्य के राज्यपालों को आदेश दो कि वे निर्दोष लोगों का खून बहाना बन्द कर दें, उनकी सम्पत्ति को लूटना बन्द कर दें, उनकी स्त्रियों का अपमान करना और उनके बच्चों को कष्ट देना बन्द कर दें।"* महामंत्री ने उसी दिन उसे दी गई इस सलाह पर अमल किया; परन्तु जैसा कि आगे की घटनाएँ पर्याप्त रूप से दर्शाती हैं, इसका प्रभाव क्षणिक और नगण्य ही साबित हुआ।

बहाउल्लाह की दुःखद और क्रूर कैद के बाद उन्हें प्राप्त होने वाली तुलनात्मक शान्ति ईश्वर के त्रुटिरहित विवेक के कारण अत्यन्त कम अवधि की थी। वे अभी अपने परिवार और रिश्तेदारों के साथ ठीक से कुछ समय भी बिता नहीं पाए थे कि उन्हें नसीरूद्दीन शाह की ओर से भेजे गए एक संदेश से अवगत कराया गया जिसमें उन्हें फारस छोड़ने का आदेश दिया गया था और इसकी तैयारी के लिए उन्हें एक माह का समय दिया गया था। साथ ही, उनके देश निकाले के बाद उन्हें किसी भी देश में जाने का अधिकार दिया गया था।

जैसे ही उस रूसी मंत्री को इस शाही निर्णय के समाचार मिले, उसने बहाउल्लाह को अपनी सरकार की सुरक्षा में लेने की इच्छा व्यक्त की और बहाउल्लाह को रूस ले जाने के लिए हर एक सुविधा प्रदान करने का प्रस्ताव पेश किया। इतने स्वैच्छिक रूप से प्रस्तुत किए गए इस आमंत्रण को बहाउल्लाह ने अस्वीकार कर दिया और अपने त्रुटिरहित सहज ज्ञान का अनुसरण करते हुए उन्होंने तुर्क की भूमि पर अपना निवास स्थापित करना उचित समझा। कई सालों के बाद रूस के जार, निकोलेविच एलेक्ज़ेन्डर द्वितीय को सम्बोधित अपनी एक पाती में वे स्वयं इस बात की साक्षी देते हैं, *"जब मैं ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ कैद में था, तब तुम्हारे एक मंत्री ने मुझे सहायता प्रदान की, जिसके कारण ईश्वर ने तुम्हारे लिए एक ऐसा स्थान नियत किया है जिसे सिवाय उस ईश्वर के अन्य किसी का ज्ञान नहीं समझ सकता। सावधान! कहीं तुम इस स्थान का सौदा न कर बैठो।"* बहाउल्लाह की लेखनी से प्रकट होने वाला एक और प्रमाण यह है, *"उन दिनों जब यह अन्याय पीड़ित कैद में घोर यातनाएँ सह रहा था, तब रूस की अत्यन्त सम्मानित सरकार के एक मंत्री – ईश्वर, जो महिमावंत और प्रशंसित है, उसकी सहायता करे ! – ने मेरी रिहाई के लिए अधिक से अधिक प्रयास किए। कई बार मेरी रिहाई की अनुमति दी गई किन्तु नगर के कुछ धर्माचार्य इसे रोक दिया करते थे। अन्त में, इस महामहिम मंत्री की उत्सुकता और प्रयासों के कारण मेरी मुक्ति हुई। .....उस शाही आदर प्राप्त, सर्वमहान सम्राट – ईश्वर, जो उदात्त और महिमावन्त है, उसकी सहायता करे ! – ने ईश्वर के लिए मुझे सुरक्षा प्रदान की, एक ऐसी सुरक्षा जिसने धरती के मूर्खों की ईर्ष्या और शत्रुता को उकसा दिया है।"*

शाह का यह फरमान जो कि बहाउल्लाह को फारस की भूमि से तत्काल बाहर निकालने के आदेश के बराबर था, बहाई इतिहास की प्रथम शताब्दी में एक नवीन और प्रतापशाली अध्याय खोलता है। यदि इसे इसके उचित परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो यह ज्ञात होगा कि इसके कारण विश्व के धार्मिक इतिहास में सबसे अधिक महत्वपूर्ण घटनाओं से भरा समय आरम्भ हुआ था। यह बहाउल्लाह के उस सेवाकाल की शुरूआत के साथ ही प्रारम्भ हुआ जो लगभग चालीस साल की अवधि तक चलता रहा – एक ऐसा सेवाकाल, जो अपनी सृजनात्मक

शक्ति, परिष्कृत करने की अपनी ताकत, अपने आरोग्यदायी प्रभाव, इससे उत्पन्न की गईं उन विश्व–निदेशक और विश्व को आकार प्रदान करने वालीं शक्तियों के अबाध्य संचालन के कारण पूरी मानवजाति के धार्मिक इतिहास में अद्वितीय है। यह निर्वासन की उस श्रृंखला के आरम्भिक काल को चिन्हित करता है जो चार दशकों तक चलता रहा और उस महान की मृत्यु के साथ ही समाप्त हुआ जिसके लिए वह क्रूर आदेश जारी किया गया था। जो प्रक्रिया शुरू की जा चुकी है और जो धीरे–धीरे आगे बढ़ रही है तथा प्रकट होती जा रही है, उसकी शुरूआत शिया इस्लाम के ईर्ष्या से सुरक्षित केन्द्र के बीच कुछ समय के लिए उसके धर्म की स्थापना के साथ हुई और बहाउल्लाह को इसके उच्चतम और सबसे प्रसिद्ध व्याख्याताओं के सम्पर्क में लाई। इसके पश्चात आगे चलकर इस प्रक्रिया ने बहाउल्लाह का सामना धर्मासन माने जाने वाले प्रांत के सार्वजनिक और धर्माधिकारी वर्ग के विख्यात व्यक्तियों और तुर्की के उस सुल्तान के प्रतिनिधियों से करवाया जो इस्लाम जगत का सबसे शक्तिशाली शासक था; और अन्त में यह प्रक्रिया बहाउल्लाह को उस पावन भूमि तक ले गई जिससे ओल्ड और न्यू टेस्टामेंट की भविष्यवाणियाँ पूरी हुईं और ईश्वर के धर्म प्रचारक (मुहम्मद) तथा उनके उत्तराधिकारी इमामों के बारे में विभिन्न परम्पराओं में निहित प्रतिज्ञा पूरी हुई। इज़राइल की चिरप्रतीक्षित पुनर्स्थापना वहाँ हुई जो प्राचीन युगों से उसके धर्म का मूल स्थान था। यह कहा जा सकता है कि इसके साथ ही, उस महान के जीवन के चार चरणों का अन्तिम और सबसे फलदायी चरण आरम्भ हुआ जिसके प्रथम सत्ताईस वर्ष उन सभी लाभों का मुक्त आनन्द उठाने के कारण विशिष्ट थे जो उच्च कुल और ऐश्वर्य में जन्म लेने से तथा गरीबों, बीमारों और दलितों के हितों की लगातार चिन्ता करने से प्राप्त होते हैं; इसके बाद बाब की सेवा में नौ वर्ष की सक्रिय एवं उल्लेखनीय सेवा का समय आया; और अन्त में चार माह की कैद की वह अवधि आई, जिसमें बहाउल्लाह पर निरन्तर जानलेवा संकट छाया रहता था, जो कष्टदायक दुःखों की कड़वाहट से ग्रसित थी और अन्त में ऐसी शक्तियों के अचानक प्रवाहित होने से अमर बन गई जो उस अभिभूत कर देने वाले और आत्मा में क्रान्ति ला देने वाले प्रकटीकरण से उत्पन्न हो कर प्रस्फुटित हो गई थीं।

अपने कुछ रिश्तेदारों के साथ, अपने मूल निवासी देश से बहाउल्लाह का बाध्यकारी देशनिकाला, अपने कुछ पहलुओं में जिन बातों की याद दिलाता है, वे हैं (ईसा मसीह के) उस पावन परिवार का मिस्र को निर्णायक पलायन; पैग़म्बर का कार्यभार सम्भालने के तुरन्त बाद मुहम्मद का अचानक मक्का से मदीना देश परिवर्तन; दिव्य सम्मन के आज्ञापालन में मूसा उनके भाई और उनके अनुयायियों का अपनी जन्मभूमि से गमन और इन सबसे हटकर, चालदीस के ऊर से इब्राहिम का प्रतिज्ञापित भूमि में निर्वासन – एक ऐसा निर्वासन जिसके द्वारा इतने भिन्न–भिन्न जातियों, धर्मों और राष्ट्रों के लोगों को असंख्य लाभ प्रदान किए गए थे, इसलिए यह एक ऐसा ऐतिहासिक उदाहरण है जिससे उन असंख्य आशीर्वादों का अनुमान लगाया जा सकता है जो उस महान द्वारा सहन किए गए निर्वासन के सीधे परिणामस्वरूप आज के दिवस में और भविष्य के युगों में सम्पूर्ण मानवजाति को प्रदान किया जाना नियत है।

अपने "सम आन्सर्ड क्वेश्चन्स" में इब्राहिम के देशनिकाले के उन दूरगामी परिणामों का वर्णन करने के बाद अब्दुल बहा यह महत्वपूर्ण पुष्टि करते हैं कि, *"जब इब्राहिम के ऊर से सीरिया–अलेप्पो निर्वासन ने यह परिणाम उत्पन्न किया, तो हमें इस पर विचार करना चाहिए कि तेहरान से बग़दाद, बग़दाद से कॉन्सटेन्टीनोपल, कॉन्सटेन्टीनोपल से रूमेलिया, और रूमेलिया से पावन भूमि के कई प्रवासों में बहाउल्लाह के निर्वासन का क्या प्रभाव पड़ेगा।"*

करबला से अपनी वापसी के नौ माह बाद, हिजरी सन 1269 के रब्बी–उ–सानी माह के प्रथम दिन (12 जनवरी, 1853), बहाउल्लाह अपने परिवार के कुछ सदस्यों, शाही सुरक्षा दल के एक पदाधिकारी और रूसी दूतगण का प्रतिनिधित्व करने वाले एक अधिकारी के साथ बग़दाद की अपनी तीन माह की यात्रा पर निकल पड़े। उनके निर्वासन में उनका साथ देने वालों में संत जैसी उनकी पत्नी नवाब थीं जिन्हें बहाउल्लाह ने *"सर्वमहान वर्क"*, की उपाधि से सम्मानित किया था और जिन्होंने लगभग चालीस साल तक ऐसा धैर्य, ऐसी ईश्वर भक्ति, ऐसी तपस्या और आत्मा की ऐसी श्रेष्ठता दिखाई थी जिसके कारण उन्हें अपने स्वामी की लेखनी से *"ईश्वर के समस्त लोकों में उनकी संगिनी"* बनाए जाने का मरणोपरान्त अनमोल उपहार प्राप्त हुआ।

बहाउल्लाह के निर्वासन के अन्य साथियों में जो शामिल थे और जो अब अपने मूल देश को अन्तिम अलविदा कह रहे थे, उनमें उनके नौ वर्ष के पुत्र थे जिन्हें आगे चलकर *"सर्वमहान शाखा"* की उपाधि दी गई थी और जिनका, बहाउल्लाह की संविदा का केन्द्र और उनकी शिक्षाओं का अधिकृत व्याख्याता बनना नियत था और उनकी वह सात–वर्षीय बहन थी जिन्हें आगे चलकर उसी उपाधि से जाना गया जो उनकी उत्कृष्ट माता को दी गई थी और अपने उच्च कुल के अनुरूप 86 वर्षों की वृद्ध आयु तक दी गई जिनकी सेवाएँ उन्हें बहाई विधान की सर्वोत्कृष्ट वीरांगना की पदवी की ऊँचाई के योग्य बनाती हैं। उनके साथ जाने वाले उनके दो भाईयों में प्रथम थे मिर्ज़ा मूसा जो आक़ा–ए–कलीम के नाम से जाने जाते थे जो उनके दृढ़ एवं मूल्यवान समर्थक थे, उनके भाई–बहनों में सबसे योग्य और श्रेष्ठ थे। बहाउल्लाह की साक्षी के अनुसार, उन *"मात्र दो व्यक्तियों"* में से वे एक थे *"जिन्हें"* उनके धर्म के *"उद्गम के बारे में पर्याप्त ज्ञान था।"* दूसरे भाई थे मिर्ज़ा मुहम्मद कुली जो उनके सौतेले भाई थे और जो उनके कुछ रिश्तेदारों के धर्मत्याग के बावजूद उस धर्म के प्रति अन्त तक वफादार बने रहे जो उन्होंने अपनाया था।

असाधारण रूप से कड़ी सर्दी वाले मौसम की चरम सीमा में की जाने वाली यह यात्रा, जो उस छोटे से निर्वासित दल को जिसके पास ऐसी यात्रा के लिए पर्याप्त साधन भी नहीं थे, पश्चिमी फारस के बर्फीले पहाड़ों से होते हुए की गई। यद्यपि यह यात्रा लम्बी और संकटों से भरी थी फिर भी घटनारहित थी, सिवाय उस प्रेमभरे और उत्साही स्वागत के जो अल्युल्लाही पंथ के राज्यपाल, हयातकुली खान ने तब किया था जब इन यात्रियों ने थोड़े से समय के लिए करन्द में विश्राम किया था। इसके बदले में बहाउल्लाह ने उसके प्रति इतनी दया दिखाई कि इससे उस पूरे गाँव के लोग प्रभावित हो गए और उन्होंने एक लम्बे समय तक बग़दाद जाने वाले बहाउल्लाह के अनुयायियों का ऐसा आतिथ्य सत्कार किया कि वे भी बाबी के नाम से प्रचलित हो गए।

उस समय प्रकट की गई एक प्रार्थना में, सियाहचाल में सहन की गई विपत्तियों और कष्टों का वर्णन करते हुए बहाउल्लाह उस *"दुःखद यात्रा"* में सहन की गई कठिनाईयों को इन शब्दों में व्यक्त करते हैं : *"मेरे ईश्वर, मेरे*

मालिक, मेरी कामना ! .....तूने अपनी उत्कृष्ट शक्ति के सामर्थ्य से इस धूल के अणु को उत्पन्न किया है और इसे अपने उन हाथों से पोषित किया है जिन्हें कोई नहीं बाँध सकता..... । तूने उसके लिए ऐसी विपत्तियाँ और दारूण दुःख नियत किए हैं जिनका वर्णन कोई भी जिह्वा नहीं कर सकती, न ही तेरी कोई पाती पर्याप्त रूप से बयान कर सकती है। जिस गर्दन को तूने रेशम की छुअन का आदि बनाया है, उसे तूने अन्त में शक्तिशाली ज़ंजीरों में जकड़ लिया और जिस काया को तूने जरी और मखमल का आराम दिया, उसे तूने अन्त में एक अंधकूप कारागार की अवनति दिखाई। तेरे आदेश ने मुझे असंख्य बेड़ियों मे जकड़ लिया है और मेरी गर्दन के इर्द–गिर्द ऐसी ज़ंजीरें डाल दी हैं जिन्हें कोई नहीं तोड़ सकता। कुछ वर्ष बीत चुके हैं जिनके दौरान, कृपा की वर्षा की तरह मुझ पर विपत्तियाँ बरसी हैं..... । ऐसी कितनी रातें बीती हैं जिनके दौरान ज़ंजीरों और बेड़ियों के बोझ ने मेरा चैन छीन लिया और ऐसे कितने दिन बीते हैं जिनके दौरान, मनुष्यों के हाथों और जिह्वा द्वारा दिए गए दुःखों के कारण मुझे शान्ति से वंचित रखा गया। तेरी दया के माध्यम से जो रोटी और पानी, तूने धरती के पशुओं को प्रदान किए हैं उनसे भी इस सेवक को उन्होंने कुछ समय तक वंचित रखा और उन्होंने मुझे वे सभी कष्ट दिए हैं जो वे उन लोगों को भी नहीं देते जो तेरे धर्म के पथ से हट गए हैं। और अन्त में तेरा आदेश अटल रूप से निर्धारित किया गया तथा ऐसे समय में जब इतनी कड़ाके की ठंड पड़ रही है कि व्यक्ति बोल भी नहीं सकता, यहाँ हिम एवं बर्फ इतना प्रचुर है कि चलना भी असम्भव है, तब तेरी आज्ञा ने चन्द कमज़ोर शरीर वाले व्यक्तियों और नाजुक उम्र के बच्चों के साथ फारस छोड़ने के लिए इस सेवक का आह्वान किया।"

अन्त में, हि.स. 1269 के जामादिय्यूस्सानी माह की 28 तारीख (8 अप्रैल, 1853) को बहाउल्लाह बग़दाद पहुँचे, बग़दाद उन दिनों इराक के तुर्की प्रांत की राजधानी हुआ करता था। वहाँ से कुछ दिन बाद उन्होंने काज़मियान के लिए प्रस्थान किया जो कि शहर की उत्तर दिशा की ओर तीन मील की दूरी पर था और एक ऐसा नगर था जहाँ मुख्य रूप से फारस के लोग रहते थे जहाँ दोनों काज़िम, सातवें एवं नौवें इमाम दफन हैं। बहाउल्लाह के आगमन के

तत्काल बाद, बग़दाद में पदस्थ किया गया शाही सरकार का एक प्रतिनिधि उनसे मिलने आया और उसने यह सुझाव दिया कि तीर्थ के उस केन्द्र में आने वाले असंख्य यात्रियों की भीड़ को ध्यान में रखते हुए उनके लिए यह उचित होगा कि वे पुराने बग़दाद में निवास करें। बहाउल्लाह ने इस सुझाव को तुरन्त स्वीकार कर लिया। एक माह बाद, रज़ब माह के अन्त में उन्होंने, शहर के एक पुराने हिस्से में हाजी अली मदाद का घर किराये पर लिया जिसमें वे अपने परिवार के साथ रहने लगे।

जिसका वर्णन इस्लाम की परम्पराओं में "ज़ह्रुल–कुफिह" के रूप में किया गया है, जिसे सदियों से *"शान्ति के आवास"* की उपाधि दी गई है और जिसे बहाउल्लाह ने *"ईश्वर का नगर"* कह कर अमर कर दिया है, उस शहर में उन दो वर्षों को छोड़कर जो बहाउल्लाह ने कुर्दिस्तान की पहाड़ियों में व्यतीत किए थे तथा उनके उन सामयिक प्रवासों को छोड़कर जो उन्होंने नज़फ, करबला और काज़मियान में किए – बहाउल्लाह ने अपने निर्वासन तक कॉन्सटेन्टीनोपल में ही रहना जारी रखा। इसी शहर की ओर संकेत करते हुए कुरान ने इसे *"शान्ति का वह आवास"* कहा है जिसकी ओर स्वयं ईश्वर *"बुलाते"* हैं। इसी पुस्तक में आगे इस श्लोक के माध्यम से इसकी ओर संकेत करते हुए कहा गया है कि यह *"जिस दिवस में ईश्वर उन सभी को एकत्रित करेगा, यह उनके लिए उनके स्वामी के संग रहने का शान्ति का आवास है।"* इस शहर से, ऐसी शक्ति, ऐसे प्रकाश और प्रताप की ऐसी तरंगे एक के बाद एक चमकने लगीं जो बगैर अहसास दिलाए, उस मुर्झाये हुए धर्म को पुनर्जीवित कर गईं जो पतन की ओर अग्रसर हो रहा था, गुमनामी में लुप्त होता जा रहा था और जिसका अन्त दिखाई देने लगा था। इस शहर से, दिन–रात और बढ़ती हुई ऊर्जा के साथ लगातार एक ऐसे प्रकटीकरण की पहली किरणें फैलीं जिसके बारे में यह नियत था कि उसकी व्यापकता, उसकी प्रचुरता, उसकी प्रेरणा–शक्ति और उसके साहित्य का विस्तार और विविधता स्वयं बाब के प्रकटीकरण से अधिक उत्कृष्ट होंगी। इसी शहर के क्षितिज पर सत्य के सूर्य की किरणें फूट पड़ीं जिसका उदित होने वाला प्रताप उस भस्म कर देने वाली घृणा, उस अन्तहीन ईर्ष्या और उस क्रूर द्वेष के काले बादलों के साये में दस वर्षों तक

ढँका रहा। इसी शहर में उस प्रतिज्ञापित *"देवदूतों के स्वामी"* का मन्दिर पहले–पहल निर्मित किया गया और उस *"पिता"* के चिर–प्रतीक्षित साम्राज्य की नींव को अनाक्रमणीय रूप से स्थापित किया गया। यहीं से मुक्ति के उस संदेश के प्रारम्भिक शुभ समाचार बाहर फैलाये गए, जो, डेनियल की भविष्यवाणी के अनुसार, *"एक हजार दो सौ नब्बे दिन"* (हि.स. 1290) बीत जाने के बाद उस *"उजाड़ देने वाली तबाही"* के अन्त को चिन्हित करता है। *"इसी शहर के दुर्ग में अटल रूप से स्थापित किया गया था और स्थाई रूप से समर्पित किया गया था" "ईश्वर का वह सर्वमहान निवास"*, उसकी *"पदस्थली"* और *"उसकी महिमा का सिंहासन"*, *"एक उपासक संसार का मन्दिर"*, *"धरती और स्वर्ग के बीच मुक्ति का दीपक"*, जो उस *"रत्न" को अपने में समाए हुए था जिसकी चमक ने सम्पूर्ण सृष्टि को प्रकाशित किया है"*, *उस ईश्वर के साम्राज्य का वह "ध्वज, वह मन्दिर जिसके इर्द–गिर्द विश्वासियों का समूह परिक्रमा करता है।"* बहाउल्लाह के *"पावनतम निवास"* और *"उनकी उत्कृष्ट महिमा के सिंहासन"* के रूप में इस शहर की पावनता के कारण इसे तीर्थ का एक ऐसा केन्द्र माने जाने का सम्मान प्रदान किया गया था जो अक्का के नगर को छोड़कर जो बहाउल्लाह का *"सर्वमहान कारागार"* है अन्य किसी भी स्थान की तुलना में अद्वितीय नहीं है। अक्का नगर से तत्काल जुड़ी हुई परिधि में बहाउल्लाह की पावन समाधि जो बहाई जगत का 'किब्ला' कहलाता है। इसी शहर के मध्य फैलाये गए उस स्वर्गिक भोज के इर्दगिर्द, दूर और पास से आने वाले धर्माधिकारी और आम जनता, सुन्नी और शियाह, कुर्द, अरबी और फारसी, राजकुमार और उच्च कुल के लोग, किसान और दरवेश, सभी बढ़ती हुई संख्या में एकत्रित होने लगे और अपनी आवश्यकताओं और क्षमताओं के अनुसार वे सभी उस दिव्य आहार का एक भाग प्राप्त करने लगे जो उन्हें कुछ समय के अंदर उस कृपालु दाता की प्रसिद्धि दूर–दूर तक फैलाने में समर्थ बनाने वाला था, बहाउल्लाह के चाहने वालों की संख्या में वृद्धि करने वाला था, उनके लेखों को दूर–दूर तक प्रसारित करने वाला था, उनके सम्मिलन की सीमाओं को बढ़ाने वाला था और उनके धर्म की संस्थाओं के भावी निर्माण को एक ठोस आधार प्रदान करने वाला था। अन्त में इस नगर में बसने वाले विभिन्न समुदायों की आँखों के सामने धीरे–धीरे प्रकट होने वाले इस नवीन प्रकटीकरण का

पहला दौर आया, इसके संस्थापक की प्रेरित कलम से निकलने वाले प्रारम्भिक लेख अंकित किए गए, उनके स्थान के अर्थ को समझने की शुरूआत हुई, बहाउल्लाह के धर्म को अस्त–व्यस्त करने के उद्देश्य से इसके बीच से ही आक्रमण शुरू किए गए, इस धर्म के आन्तरिक शत्रुओं पर पहली विजय प्राप्त की गई और बहाउल्लाह की उपस्थिति के इस द्वार पर तीर्थ शुरू किए गए।

जीवन भर के जिस निर्वासन में इतने बहुमूल्य संदेश के वाहक (बहाउल्लाह) को ईश्वरेच्छा ने अब भेज दिया था, उसने अपने अन्दर छिपी क्षमताओं को अचानक या तेज़ी से न तो प्रकट किया और न ही वास्तव में वह ऐसा कर सकते थे। जिस प्रक्रिया के माध्यम से मानवजाति के सामने इसके असंदिग्ध लाभ प्रकट होने वाले थे, वह प्रक्रिया धीमी थी, दुःखदाई रूप से धीमी थी और जैसा कि वास्तव में प्रभुधर्म के प्रारम्भ से अब तक के इतिहास में देखने में आया है, यह ऐसे कई संकटों से ग्रसित थी जो कभी–कभी इसकी प्रगति के लिए खतरा बन जाते थे और उन सभी उम्मीदों पर पानी फेर देते थे जो इसके विकास ने उत्पन्न की थी।

ऐसे ही एक संकट ने बहाउल्लाह के इराक प्रवास जो उनके जीवनभर चलने वाले निर्वासन का प्राथमिक चरण था – के उन शुरूआती वर्षों को अंधकारमय कर दिया था और इन वर्षों को एक विशेष महत्व प्रदान किया था। इस संकट ने गम्भीर रूप धारण करके बहाउल्लाह के नवजात धर्म को संकट में डाल देने का और इसके सबसे शुरूआती आधार को उखाड़ फेंकने का खतरा उत्पन्न कर दिया था।

बहाउल्लाह के नवजात धर्म को संकट में डालने वाले और इसके प्रारम्भिक आधार को उखाड़कर फेंकने का खतरा बनने वाले ऐसे ही एक संकट ने इराक में बहाउल्लाह के प्रवास के उन प्रारम्भिक वर्षों को अंधकारमय कर दिया और इन्हें एक विशेष महत्व प्रदान किया था। इसके पूर्व के संकटों के विपरीत यह संकट पूरी तरह आन्तरिक संकट था जो बहाउल्लाह के जाने–माने सह–अनुयायियों में गिने जाने वालों के कृत्यों, महत्वाकांक्षाओं और मूर्खता के कारण उत्पन्न हुए थे।

प्रभुधर्म के वे बाहरी शत्रु, चाहे वे शहरी हों या धर्माचारी वर्ग के, वे उस क्षति और अपमान के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी थे जो प्रभुधर्म ने सहे थे, अब अपेक्षाकृत शान्त थे। बदला लेने की लोगों की भूख जो कभी न तृप्त होने वाली प्रतीत होती थी, वह अब उस खून–खराबे के परिणामस्वरूप कुछ हद तक कम हो चुकी थी। साथ ही इसके सबसे हठी शत्रुओं में से कुछ के मन में थकावट और निराशा जैसी भावनाएँ घर कर गई थीं। ये शत्रु इतने चालाक थे कि वे यह समझ चुके थे कि यद्यपि उनके द्वारा दिए गए दुःखदायी आघातों के कारण यह धर्म झुक गया था, फिर भी इसके आन्तरिक ढांचे को कोई क्षति नहीं पहुँची थी और इसका उत्साह सलामत था। महामंत्री द्वारा प्रान्तों के राज्यपालों को जारी किए गए आदेशों ने उन स्थानीय अधिकारियों को शान्त कर दिया था जो अब एक घृणित शत्रु पर अपना कहर ढाने से और अपनी पर–पीड़क क्रूरता को सन्तुष्ट करने से रोक दिए गए थे।

इन सबके परिणामस्वरूप एक क्षणिक सी शान्ति छा गई जो आगे चलकर उठाए गए उन दमनकारी कदमों के एक और दौर के साथ भंग होने वाली थी जिसमें तुर्की का सुल्तान और उसके मंत्री तथा सुन्नी धर्माचारी वर्ग, शाह एवं फारस और इराक के धर्माचारियों के साथ इस धर्म को और इससे सम्बन्धित हर बात को हमेशा के लिए मिटा देने के प्रयास में हाथ मिलाने वाले थे। जिस दौरान शान्ति का यह दौर जारी था, तब ही जैसा कि पहले बताया जा चुका है, प्रभुधर्म के अनुयायियों के बीच से उत्पन्न होने वाला संकट प्रकट होने लगा था – एक ऐसा संकट, यद्यपि वह लोगों की दृष्टि में कम तमाशा बना था, फिर भी जैसे–जैसे यह अपनी चरम सीमा पर पहुँचने लगा, वैसे–वैसे इसने ऐसा गम्भीर रूप धारण कर लिया जैसा पूर्व में कभी देखा नहीं गया था। इस संकट के कारण इस नवजात समुदाय की संख्यात्मक शक्ति कम होने लगी थी, इसकी एकता भंग होने लगी थी, इसकी प्रतिष्ठा को हानि पहुँचने लगी थी और इसके गौरव को कलंक लग चुका था।

वह संकट जो बाब के मृत्युदण्ड के तुरन्त बाद से ही उत्पन्न होने लगा था और उन महीनों में और भी बढ़ गया था जब तेहरान के सियाहचाल में बहाउल्लाह की कैद के परिणामस्वरूप इसे नियंत्रण में रखने वाला हाथ

अचानक हट गया था, जो फारस से बहाउल्लाह के निवार्सन के कारण और भी तीव्र हो चुका था और बग़दाद में उनके प्रवास के शुरूआती वर्षों में अपने विघ्न डालने वाले लक्षण दिखाने लगा था। कुर्दिस्तान के पहाड़ों में बहाउल्लाह के दो वर्ष के एकान्तवास की अवधि में इस संकट की विनाशकारी ताकत बढ़ गई थी। यद्यपि सुलेमानिया से बहाउल्लाह की वापसी के बाद उनके ध्येय की घोषणा की तैयारी के दौरान उनके सर्वनियंत्रणकारी प्रभाव तले कुछ समय के लिए इसे कुचल दिया गया, फिर भी आगे चलकर और अधिक हिंसा के साथ इसने अपना सिर एक बार फिर उठाया और एड्रियानोपल में यह अपनी चरम सीमा पर पहुँचा, लेकिन अन्त में समस्त मानवजाति के समक्ष उस ध्येय की उद्घोषणा के माध्यम से उत्पन्न होने वाली एवं अभिभूत कर देने वाली ताकतों के वार से इसे वह करारा झटका मिला जिससे इस संकट का अन्त हो गया।

इस संकट का उत्तरदायी केन्द्रीय व्यक्ति स्वयं बाब द्वारा नामित वह अविश्वासी और कायर मिर्ज़ा याह्या था जिसके चरित्र के कुछ लक्षणों का उल्लेख पूर्व के पृष्ठों में किया जा चुका है। वह काले दिल वाला था, जिस व्यक्ति ने इस तुच्छ और ढीले आदमी को मूर्ख बनाया था और बड़ी कुशलता और सतत् प्रयासों से उससे चालाकी से काम लिया था, वह एक सैय्यद मुहम्मद नामक आदमी था जो इस्फहान का रहने वाला था और जो अपनी निरंकुश अभिलाषाओं, अपनी अंधी हठ और अनियंत्रित ईर्ष्या के कारण बदनाम था। आगे चलकर बहाउल्लाह ने *किताब–ए–अक़दस* में इसी को वह व्यक्ति घोषित किया था जिसने मिर्ज़ा याह्या को *"गुमराह किया"* था और अपनी एक पाती में उसे *"ईर्ष्या का स्रोत और बुराई का सारतत्व"* कहकर कलंकित किया था, जबकि अब्दुल बहा ने मिर्ज़ा याह्या और सैय्यद मुहम्मद के आपसी सम्बन्ध की तुलना उस सम्बन्ध से की है जो *"एक दूधमुँहे बच्चे"* का अपनी माता के *"बहुमूल्य स्तन"* से होता है। इस्फहान के मदरसा–ए–सदर में अपनी पढ़ाई छोड़ने के लिए मजबूर यह सैय्यद, शर्मसार और मनोव्यथित होकर करबला में जा बसा और वहाँ बाब के अनुयायियों में शामिल हो गया। लेकिन बाब की शहादत के बाद उसने हिचकिचाहट दिखाना शुरू कर दिया था जिसके कारण उसकी आस्था का छिछलापन और उसके विश्वास की आधारभूत दुर्बलता

प्रकट हो गई थी। बहाउल्लाह के प्रथम करबला प्रवास की अवधि में सैय्यद काज़िम के कुछ पूर्व के शिष्यों और अनुयायियों में सबसे विशिष्ट लोगों ने उनके प्रति जो प्रत्यक्ष आदर, प्रेम और श्रद्धा दिखाई उसके कारण इस चालाक और विवेकहीन षड़यन्त्रकारी के अन्दर ऐसी ईर्ष्या उत्पन्न हुई और उसकी आत्मा में ऐसी शत्रुता की भावना घर कर गई कि जो सहनशीलता और धैर्य बहाउल्लाह ने उसके प्रति दिखाया था, उससे ये भावनाएँ और भी भड़क गईं। उसके बहके हुए सहायक और उसके दुष्ट षड़यन्त्रों के इच्छुक साधन, वे बहुसंख्यक बाबी थे जो इतने चकाराए हुए, निराश और नेतृत्वहीन थे कि वे अपने उस महान दिवंगत अग्रदूत (बाब) के सिद्धान्तों और उपदेशों के बिल्कुल विपरीत जाने वाला मार्ग अपनाने के लिए पहले से ही उसके बहकावे में आने का मन बना चुके थे।

बाब अब अपने अनुयायियों के बीच नहीं थे और उनके द्वारा नामांकित व्यक्ति या तो माज़िन्दरान के पहाड़ों में छिपने का एक सुरक्षित स्थान तलाश रहा था, या फिर एक दरवेश का, या एक अरबी का वेश धारण कर नगर–नगर भटक रहा था। बहाउल्लाह को कैद में डाल दिया गया था और उसके बाद उनके मूल निवासियों को देश की सीमाओं से दूर निर्वासित कर दिया गया था। अन्तहीन हत्याओं की एक श्रृंखला में प्रभुधर्म का नवपुष्पित सुमन कुचल दिया गया था, उस अत्याचार पीड़ित समुदाय के शेष बचे लोग ऐसी निराशा में डूब गए थे जिसने उन्हें डरा दिया था; जिसने उनका उत्साह मंद कर दिया था, उनके मन को उलझन में डाल दिया था और उनकी श्रद्धा की डट कर परीक्षा ली थी। निराशा की इस चरम सीमा को भी लांघ कर वे कोई ऐसा मार्गदर्शन नहीं पा रहे थे जो उन्हें अधिकारपूर्वक रोक सके, उनकी समस्याओं का समाधान दे सके अथवा उन्हें उनके कर्त्तव्य से अवगत करा सके।

उन दिनों इतिहासकार नबील खुरासान प्रान्त की यात्रा कर रहे थे। खुरासान उन दिनों एक उभरते हुए धर्म की क्रांतिकारी शुरूआती विजय का साक्षी था। उन्होंने स्वयं वहाँ की वर्तमान स्थिति के बारे में अपने विचार प्रकट किए हैं। अपने वर्णन में वे इस बात की साक्षी देते हैं कि, "प्रत्येक स्थान पर

ईश्वर के धर्म की अग्नि लगभग बुझ चुकी थी। मुझे कहीं भी इसकी गरमाहट के चिन्ह का कोई आभास नहीं होता था।" उनके साक्ष्य के अनुसार काज़वीन में बचा–खुचा बाबी समुदाय चार पंथों में बँट चुका था जो एक दूसरे के कट्टर विरोधी थे और ऊटपटांग सिद्धान्तों एवं कल्पनाओं के शिकार बन चुके थे। जिसने ताहिरा के अदम्य उत्साह के दीप्तिमान प्रमाण देखे थे, ऐसे बग़दाद शहर में पहुँचने पर बहाउल्लाह ने पाया कि उस शहर में रहने वाले उनके देशवासियों में केवल एक ही बाबी था, जबकि काज़वीन में, जहाँ मुख्य रूप से फारस के लोग रहते थे, उनके देशवासियों में से केवल मुट्ठीभर लोग बचे हुए थे जो डर और गुमनामी में ही सही लेकिन अब भी बाब में विश्वास करते थे।

अपनी संख्या के साथ–साथ घटते हुए इस समुदाय के सदस्यों की नैतिकता का भी तेज़ी से पतन हुआ था। उनकी *"स्वेच्छाचारिता और मूर्खता"* ऐसी थी कि बहाउल्लाह के शब्दों में कहा जाए तो कैद से उनकी रिहाई के बाद, उनका पहला निर्णय था *"इन लोगों को पुनर्जीवित करने का कठिन कार्य निष्पादित करने के लिए अधिक से अधिक ओजस्विता के साथ उठ खड़ा होना।"*

जैसे–जैसे बाब के अनुयायी कहलाने वाले लोगों के चरित्र का पतन होने लगा और उन्हें ग्रसित करने वाली उलझन के गम्भीर होते प्रमाणों में गुणात्मक वृद्धि होने लगी वैसे–वैसे अवसर की ताक में बैठे उन षड़यंत्रकारियों का दुस्साहस और भी बढ़ने लगा जिनका एकमात्र उद्देश्य था अपने हितों के लिए इस तेज़ी से बिगड़ती हुई परिस्थिति का भरपूर लाभ उठाना। जिसने बाब का उत्तराधिकारी होने का दावा किया था और जो मिरातुल–आज़ालिय (अनन्त दर्पण), सुबह–ए–अज़ल (अनन्तता की सुबह) और इस्मुल–अज़ल (अनन्तता का नाम) जैसी अपनी ऊँची प्रतीत होने वाली उपाधियों पर गर्व करता था – उसी मिर्ज़ा याह्या का आचरण और विशेषकर उस सैय्यद मुहम्मद के षड़यंत्र जिसे उसने बयान के "साक्षियों" में सर्वप्रथम के स्तर पर प्रतिष्ठित कर दिया था – अब ऐसा रुप धारण कर रहे थे कि प्रभुधर्म की प्रतिष्ठा सीधे दांव पर लग गई थी और इसकी भावी सुरक्षा गम्भीर संकट में पड़ गई थी।

बाब के मृत्युदण्ड के पश्चात मिर्ज़ा याह्या को इतना भारी धक्का लगा कि उसका विश्वास लगभग खत्म हो गया। कुछ समय तक एक दरवेश के भेष में माज़िन्दरान के पहाड़ों में भटकने के बाद उसने, अपने व्यवहार के कारण नूर में अपने उन सह–अनुयायियों जिनमें से अधिकांश बहाउल्लाह के अदम्य उत्साह के माध्यम से अनुयायी बने थे, की वफादारी की इतनी परीक्षा ली कि वे भी अपनी आस्था में डगमगाने लगे, यहाँ तक कि उनमें से कुछ ने शत्रुओं का साथ देना शुरू कर दिया। इसके बाद उसने रश्त के लिए प्रस्थान किया और किरमानशाह के लिए रवाना होने तक जिलान प्रान्त में छिपा रहा, जहाँ अपने आपको बेहतर ढंग से छिपाने के लिए वह एक कफन बनाने वाले अब्दुल्लाह–ए–काज़वीनी की नौकरी में लग गया और उसका माल बेचने वाला बन गया। जब बग़दाद जाते हुए बहाउल्लाह उस शहर से गुज़रे तब वह भी वहीं था और उसने बहाउल्लाह के निकट, किन्तु एक ऐसे अलग घर में अकेले रहने की इच्छा व्यक्त की जहाँ वह भेष बदलकर कोई व्यवसाय कर सके। वह बहाउल्लाह से कुछ रूपये प्राप्त करने में सफल हो गया जिनसे उसने रुई के कई गट्ठर खरीदे और इसके बाद वह एक अरब के वेश में मन्दालिज से होते हुए बग़दाद की ओर निकल पड़ा। वहाँ उसने स्वयं को कोयले के व्यापारियों की उस गली में बसा लिया जो शहर के एक जीर्ण–शीर्ण इलाके में स्थित थी और अपने सिर पर एक पगड़ी पहनकर तथा हाजी अली–ए–लास–फुरूश के नाम से अपने नए कारोबार में लग गया। इस बीच सैय्यद मुहम्मद ने करबला में अपना निवास बना लिया था और मिर्ज़ा याह्या को अपनी लाठी बनाकर अपने आस–पास एकत्रित निवार्सित अनुयायियों के और समुदाय के जीवन में फूट डालने और इसे अस्त–व्यस्त करने में व्यस्त हो गया।

कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि बहाउल्लाह अभी उस गुप्त बात को नहीं उजागर कर सकते थे जो उनके हृदय में हलचल मचा रही थी। उनकी कलम से एक ऐसे समय में चेतावनी, सलाह एवं आश्वासन के ये शब्द प्रकट हुए जब उनके आसपास अंधेरा गहरा रहा था। *"अब परीक्षा के दिन आ चुके हैं। फूट और विपत्तियों के सागर उमड़ रहे हैं और कोने–कोने में संदेह के ऐसे ध्वज लहरा रहे हैं जो षड़यंत्र रचने में व्यस्त हैं और मनुष्यों को अनन्त*

नरकवास की ओर ले जा रहे हैं। .....ऐसा न होने दो कि प्रतिवाद के कुछ सैनिकों की आवाजें तुम्हारे बीच संदेह उत्पन्न कर दें, न ही अपने आप को उसके प्रति लापरवाह बनने दो जो सत्य है, क्योंकि प्रत्येक विधान में ऐसे मतभेद उत्पन्न किए गए हैं। फिर भी, ईश्वर अपना धर्म स्थापित करेगा और अपने प्रकाश को प्रकट करेगा, भले ही विद्रोह उत्पन्न करने वालों को इससे नफरत हो। .....सभी उसकी मुट्ठी में कैद हैं। किसी के लिए भी पलायन का कोई स्थान नहीं है। ईश्वर के धर्म को हल्के अन्दाज़ में ली जाने वाली वस्तु मत समझो जिससे कोई भी अपनी इच्छाओं को तृप्त कर सकता हो। वर्तमान समय में विभिन्न स्थानों में कई लोगों ने ऐसे ही दावे किए हैं। वह समय आ रहा है जब .....उनमें से प्रत्येक न केवल नष्ट हो चुका होगा, बल्कि मिट चुका होगा और एक ऐसी वस्तु बन चुका होगा जिसे कोई याद भी नहीं करेगा बिल्कुल इस धूल की तरह।"

"बहाउल्लाह में विश्वास करने वाला प्रथम व्यक्ति," मिर्ज़ा आक़ा जान जिसे आगे चलकर "खादिमुल्लाह" (ईश्वर का सेवक) की उपाधि दी गई थी, ऐसी भक्ति से प्रज्वलित बाबी युवक था जिसने, उस स्वप्न के प्रभाव से जिसमें उसने बाब को देखा था और बहाउल्लाह के कुछ लेखों का अध्ययन करने के परिणामस्वरूप, काशान में अपना घरबार छोड़कर बहाउल्लाह के दर्शन की आशा में इराक की यात्रा की थी और जिसने इसके बाद से 40 साल तक बहाउल्लाह का लिपिक, उनका साथी और उनका सेवक बनकर उनकी अथक सेवा की थी, उसी के समक्ष बहाउल्लाह ने किसी अन्य व्यक्ति से अधिक अपने उस स्थान की महिमा की एक झलक प्रकट करने की इच्छा की थी जो अब तक गुप्त था। इसी मिर्ज़ा आक़ा जान ने करबला में अपने परम् प्रिय (बहाउल्लाह), जो उन दिनों हाजी मिर्ज़ा हसन–ए–बाशी के मेहमान थे, की उपस्थिति में बितायी गई उस पहली और कभी न भूलने वाली रात का अनुभव बताते हुए नबील को निम्नलिखित बयान दिया था : "चूँकि गर्मियों का मौसम था, बहाउल्लाह घर की छत पर ही अपनी शाम बिताया करते थे और रात को वहीं सो जाया करते थे.....। उस रात जब वे सो चुके थे उनके निर्देशानुसार मैं भी कुछ देर आराम करने के लिए उनसे कुछ फुट की दूरी पर लेट गया। जैसे ही

मैं उठा और.....छत के एक कोने में अपनी प्रार्थनाएँ अर्पित करने लगा, मैंने देखा कि बहाउल्लाह उठे और मेरी ओर आने लगे। जब वे मेरे निकट पहुँच गए तब उन्होंने कहा : 'तुम भी उठ चुके हो।' इसके बाद वे छत पर टहलते हुए कुछ श्लोक गुनगुनाने लगे। मैं उस आवाज़ का, उन श्लोकों का और जब वे मेरे सामने चहलकदमी कर रहे थे तब उनके चलने के अन्दाज़ का वर्णन किस प्रकार करूँ ! ऐसा लगता है जैसे उनके द्वारा रखे गए हर कदम से और उनके द्वारा उच्चारित किए गए हर शब्द के साथ मेरे चेहरे के सामने प्रकाश के हजारों सागर लहराने लगे थे और विलक्षण महानता के हजारों लोक मेरी आँखों के सामने प्रकट हो गए थे और हजारों सूरज मुझ पर अपना प्रकाश चमकाने लगे थे ! चाँद की उस रोशनी में वे इसी प्रकार टहलते और गुनगनाते रहे। हर बार वे मेरे निकट पहुँचते, वे ज़रा रुक जाते और एक ऐसे मधुर स्वर में जिसका वर्णन कोई भी जिह्वा नहीं कर सकती, वे कहतेः *"हे मेरे पुत्र, मेरी बात सुनो। उस एक सत्य ईश्वर की सौगंध ! यह धर्म निश्चित रूप से प्रकट होगा। तुम बयान के उन लोगों की व्यर्थ बातों की ओर ध्यान न दो जो प्रत्येक शब्द का अर्थ बिगाड़ देते हैं।"* इस प्रकार वे चलते रहे और गाते रहे और मुझे ऐसे शब्दों से तब तक सम्बोधित करते रहे जब तक भोर की पहली किरणें प्रकट नहीं हो गईं.....। इसके बाद मैंने उनका बिस्तर उठाकर उनके कमरे में लगा दिया और उनकी चाय बनाने के बाद मुझे उनकी उपस्थिति से बाहर भेज दिया गया।"

एक नवजात प्रकटीकरण की आत्मा और इसे निर्देशित करने वाली सूक्ष्म बुद्धि के साथ अनपेक्षित और आकस्मिक रूप से सम्पर्क में आने से मिर्ज़ा आक़ा जान में जो संशय भर गया था उसने उसकी आत्मा की गहराईयों को हिला दिया था एक ऐसी आत्मा जो पहले ही भस्म कर देने वाले उस प्रेम की ज्वाला से भड़क रही थी जो उस प्रभुता को पहचानने से उत्पन्न हुई थी जो विजिय उसके स्वामी (बहाउल्लाह) ने पहले ही इराक और फारस दोनों में अपने सह–अनुयायियों पर प्राप्त की थी। इस गहरी श्रद्धा को, जिससे मिर्ज़ा आक़ा जान का सम्पूर्ण अस्तित्व प्रभावित हो चुका था, जिसे न तो दबाया जा सकता था, न ही छिपाया जा सकता था जिसे मिर्ज़ा याह्या और उसके सह–षड़यंत्रकारी सैय्यद मुहम्मद, दोनों ने समझ लिया था। एक प्रतिष्ठित और उच्च संस्कृति के

एक बाबी हाजी मिर्ज़ा कमालुद्दीन–ए–नराक़ी के अनुरोध पर उसी अवधि में लिखी गई कुल्लुत–ए–आम की पाती के प्रकटीकरण को जन्म देने वाली परिस्थितियों से स्थिति और भी बिगड़ गई जो पहले ही गम्भीर और विपत्तिजनक थी। कुरान के इस श्लोक पर कि :*"इज़राइल की संतानों को सभी आहारों की अनुमति दी गई थी,"* मिर्ज़ा याहया से ज्ञान प्राप्त करने की चाह ने हाजी मिर्ज़ा कमालुद्दीन को प्रेरित किया था कि वह मिर्ज़ा याह्या से इसकी व्याख्या लिखने का अनुरोध करे। यह अनुरोध स्वीकार तो किया गया परन्तु इतनी अनिच्छा से, इतनी अयोग्यतापूर्वक और इतने छिछलेपन से कि हाजी मिर्ज़ा कमालुद्दीन निराश हो गया और इस व्याख्या के लेखक पर से उसका विश्वास उठ गया। वह बहाउल्लाह की ओर मुड़ा और यही अनुरोध उनके समक्ष दोहराया। बहाउल्लाह ने वह पाती लिखकर उसे सम्मानित किया जिसमें इज़राइल और इसकी संतानों की समानता बाब और उनके अनुयायियों से की गई थी। एक ऐसी पाती जिसने, अपने संकेतों, अपनी भाषा शैली और अपने तर्क की अकाट्यता के कारण, इसके प्राप्तकर्ता की आत्मा को इतना मोहित कर दिया कि यदि बहाउल्लाह ने उसे न रोका होता तो वह इस पाती के प्रकटकर्ता (बहाउल्लाह) के व्यक्तित्व में छिपे ईश्वर के गुप्त रहस्य की उद्घोषणा सबके सामने कर देता।

बहाउल्लाह के प्रति निरन्तर बढ़ने वाले आदर और इतने गहरे लगाव के इन प्रमाणों में अब ऐसे और भी कारण जुड़ रहे थे जिससे वह दबी हुई ईर्ष्या फूटकर बाहर आ सकती थी जो उनका बुरा चाहने वाले शत्रुओं के दिलों में उनकी बढ़ती हुई प्रतिष्ठा के कारण भड़क रही थी। उनके जान–पहचान वालों और प्रशंसकों का निरन्तर बढ़ता हुआ दायरा; नगर के राज्यपाल सहित अन्य अधिकारियों के साथ उनके मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध; किसी समय में सैय्यद काज़िम के विशिष्ट साथी रह चुके व्यक्तियों द्वारा उन्हें बहुत से अवसरों पर और सहज रूप से प्रदान किया गया ऐसा सम्मान जो दिखावटी नहीं था; मिर्ज़ा याह्या के लगातार छिपे रहने से और उसके चरित्र एवं योग्यताओं के बारे में फैलने वाली बुरी खबरों से उत्पन्न होने वाली निराशा; बढ़ती हुई आत्मनिर्भरता, दिवय ज्ञान और अन्तर्निहित श्रेष्ठता एवं नेतृत्व करने की क्षमता के वे चिन्ह जो स्वयं

बहाउल्लाह द्वारा दर्शाए जा रहे थे – इन सभी बातों ने मिलकर उस दरार को और भी चौड़ा कर दिया जो उस दुष्ट और चालाक सैय्यद मुहम्मद ने बड़े यत्नों से उत्पन्न की थी।

अब वह छिपा हुआ विरोध स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था, जिसका उद्देश्य था बहाउल्लाह द्वारा किए गए उस प्रत्येक प्रयास को निष्प्रभावी कर देना और उनके द्वारा तैयार की गई उस प्रत्येक योजना को निष्फल कर देना जो वे एक भटके हुए समुदाय को पुनःस्थापित करने के लिए करना चाहते थे। लगातार ऐसे संकेत फैलाए जा रहे थे जिनका उद्देश्य था संदेह और अविश्वास के बीज बोना और बहाउल्लाह को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करना जो हड़पने, बाब द्वारा स्थापित किए गए नियमों का खण्डन करने और उनके धर्म को बरबाद करने की चाह रखते हैं। उनकी पातियों, व्याख्याओं, स्तुतियों और टीका–टिप्पणियों की छिपे हुए अंदाज़ में तथा अप्रत्यक्ष रूप से निन्दा की जा रही थी, उन्हें चुनौती दी जा रही थी और गलत ढंग से प्रस्तुत किया जा रहा था। उन पर हमला करने के भी प्रयास किए गए परन्तु यह कोशिश नाकामयाब रही।

अब बहाउल्लाह के दुःखों का प्याला छलकने लगा था। तेज़ी से बिगड़ती जा रही परिस्थिति को सुधारने के लिए उनके सभी प्रयास निष्फल रहे। उनके दुःखों की रफ्तार स्पष्ट रूप से बढ़ती जा रही थी। उस निराशापूर्ण अवधि के दौरान प्रकट किए गए उनके लेख, उनकी आत्मा को भर देने वाली उदासी और उनके सामने खड़ी परिस्थिति की गम्भीरता पर अत्याधिक प्रकाश डालते हैं। अपनी कुछ प्रार्थनाओं में वे हृदय को छू जाने वाले इस सच का उल्लेख करते हैं कि वे *"विपत्ति पर विपत्ति"* से घिर चुके थे, कि *"सभी दुश्मन एक होकर"* उन पर टूट पड़े थे, कि घोर *"अधमता"* ने उन्हें छू लिया था, और उन पर *"घोर कष्ट"* टूट पड़े थे। अपनी *"आहों और विलाप"* के, अपनी *"शक्तिहीनता, दरिद्रता और अभावग्रस्तता"* के, और उनके द्वारा सहन की गई *"चोटों"* और उनके द्वारा झेले गए अपमान के साक्षी के रूप में, वे स्वयं ईश्वर का आह्वान करते हैं। इनमें से एक प्रार्थना में वे स्वीकार करते हैं कि *"मेरा रोना इतना दुःखदाई था कि मैं तेरा उल्लेख नहीं कर पाता था और तेरी प्रशंसा नहीं गा*

पाता था।" एक अन्य उद्धरण में वे यह वर्णन करते हैं कि, *"मेरा विलाप इतने उच्च स्वर में था कि अपने बच्चे के लिए रोने वाली प्रत्येक माँ विस्मित रह जाती और अपना विलाप और दुःख रोक देती।"* वे लौह–ए–मरियम की पाती में यह विलाप करते हैं कि *"मैंने सृष्टि की किताब से अपने प्रथम नाम (बाब) के साथ किए गए अन्याय को मिटा दिया है।"* वे आगे कहते हैं, *"ओ मरियम ! फारस के अत्याचारी के आदेश के कारण, असंख्य कष्ट सहन करने के बाद हम 'ता' (तेहरान) की भूमि से इराक पहुँचे, जहाँ हमारे शत्रुओं की बेड़ियों के बाद हमने अपने दोस्तों के विश्वासघात के दुःख सहन किए। ईश्वर जानता है कि इसके बाद मुझ पर क्या बीती है !"* और एक बार फिर : *"मैंने वह सहा है जो किसी भी मनुष्य ने, चाहे वह अतीत का हो या भविष्य का, न तो कभी सहा है, न सहेगा।"* कुल्लुत–ताम की पाती में वे गवाही देते हैं कि, *"मुझ पर उदासी के ऐसे सागर लहराए हैं जिनकी एक बून्द भी पीना किसी व्यक्ति के बस में नहीं है। मेरा दुःख ऐसा है कि मेरी आत्मा मेरे शरीर को लगभग छोड़ चुकी है।"* अपनी हालत बयान करते हुए वे इसी पाती में पुकार उठते हैं, *"ओ कमाल ! इस दीन, इस परित्यक्त चींटी की बात पर ध्यान दो, जिसने स्वयं को अपने बिल में छिपा लिया है और जो मनुष्यों की करतूतों के कारण तुम्हारे बीच से चले जाना चाहता है, और तुम्हारी आँखों से ओझल हो जाना चाहता है। ईश्वर अपने सेवकों के और मेरे बीच साक्षी रहा है।"* और एक बार फिर : *"कितना दुःखी हूँ मैं, कितना दुःखी हूँ मैं ! .....जिस दिन मैंने अपनी माता के स्तन से पहली बार पवित्र दूध पिया, उस दिन से आज तक मैंने जो कुछ भी देखा है, वह सब कुछ उसके परिणामस्वरुप मेरी स्मृति से मिट चुका है जो लोगों के हाथों किया गया है।"* इसके अतिरिक्त, कुर्दिस्तान के पहाड़ों में अपने एकान्तवास के दौरान प्रकट की गई, क़सीदे–ए–वर्क़ाईय्येह नामक एक गज़ल में ईश्वर की आत्मा का मूर्त रूप धारण करके उनके समक्ष उतर कर आने वाली सेविका की प्रशंसा में वे अपने उदासी भरे हृदय की वेदना को इस प्रकार व्यक्त करते हैं : *"(ईश्वरीय संदेशवाहक) मनु का जलमय तो केवल मेरे द्वारा बहाए गए आँसुओं के बराबर है और इब्राहीम की अग्नि मेरी आत्मा का आवेग है। जैकब का दुःख मेरे दुःखों की परछायी मात्र है, और जॉब की विपत्तियाँ मेरे संकटों का एक अंश मात्र हैं।"* अपनी एक प्रार्थना में उनकी याचना यह है कि, *"हे मेरे*

स्वामी, मुझ पर धैर्य बरसा ! और उल्लंघन करने वालों पर मुझे विजयी बना।" किताब–ए–ईक़ान में उस ईर्ष्या की विषमयता का वर्णन करते हुए – जो उन दिनों अपने विषैले दाँत प्रकट कर रही थी – उन्होंने लिखा है, *"ईर्ष्या की ऐसी दुर्गन्ध फैल रही है कि.....दुनिया की नींव रखने की शुरूआत से.....वर्तमान दिवस तक, ऐसा कपट, ऐसी ईर्ष्या और घृणा न तो कभी देखी गई है न ही भविष्य में कभी देखी जायेगी।"* इसी प्रकार वे एक अन्य पाती में यह घोषणा करते हैं, *"दो वर्षों या उससे कुछ कम समय तक मैंने ईश्वर के अतिरिक्त अन्य सभी से किनारा कर लिया और उसके अतिरिक्त अन्य सभी के प्रति अपनी आँखें मूँद लीं ताकि कदाचित घृणा की ज्वाला बुझ जाये और ईर्ष्या की ऊष्मा कम हो जाये।"*

स्वयं मिर्ज़ा आक़ा जान इस बात की साक्षी देते हैं : *"आशीर्वादित सौन्दर्य (बहाउल्लाह) इतने उदास दिखाई देते थे कि मेरे शरीर के अंग–प्रत्यंग काँपते थे।"* इसी प्रकार उन्होंने वर्णन किया है, जैसा कि नबील ने अपने वर्णन में यह बताया है कि बहाउल्लाह के एकान्तवास के ठीक पहले उन्होंने बहाउल्लाह को भोर और सूर्योदय के बीच अचानक अपने घर से बाहर निकलते हुए देखा था, उनकी रात की टोपी अब भी उनके सिर पर थी। उनके मुखमण्डल पर बेचैनी के ऐसे चिन्ह दिखाई दे रहे थे कि नबील उन्हें देखने की शक्ति नहीं जुटा पा रहे थे और चलते–चलते वे क्रोध से कह रहे थे : *"ये लोग वही हैं जिन्होंने तीन हज़ार साल तक मूर्तियों को पूजा है और जो उस स्वर्ण बछड़े के सामने नतमस्तक हुए हैं। अब भी वे किसी बेहतर वस्तु के लायक नहीं हैं। इन लोगों और उस महिमा के मुखमण्डल के बीच क्या सम्बन्ध हो सकता है ? कौन सा बन्धन इन्हें उस महान से बाँध सकता है, जो प्रेम करने योग्य सभी वस्तुओं का सर्वोच्च मूर्त रूप है ?"* मिर्ज़ा आका जान ने वर्णन किया है कि, "मैं जड़ बनकर उस सूखे हुए पेड़ की तरह वहीं खड़ा रह गया जो उनके शब्दों की विलक्षण शक्ति के प्रभाव से कभी भी गिर सकता था। अन्त में उन्होंने कहा : उन्हें इसका पाठ करने को कहो : *"क्या ईश्वर के अतिरिक्त कठिनाईयों को दूर करने वाला अन्य कोई है ? कहो : ईश्वर का गुणगान हो ! वही ईश्वर है ! सभी उसके सेवक हैं तथा सभी उसके आदेश से प्रतिबंधित हैं !"* उनसे कहो कि *"इसे दिन*

में और रात को, सोते या जागते, पाँच सौ बार, बल्कि एक हजार बार दोहराएँ ताकि महिमा का मुखमण्डल उनके समक्ष प्रकट हो सके और प्रकाश की किरणें उन पर उतर सकें।" बाद में मुझे बताया गया कि स्वयं उन्होंने भी इसी श्लोक का पाठ किया तब उनके चेहरे पर अत्यन्त उदासी दिखाई दे रही थी। .....उन दिनों में कई बार उन्हें यह कहते सुना गया था कि : *"हमने कुछ समय तक इन लोगों के बीच रुक कर प्रतीक्षा की, किन्तु उनकी ओर से थोड़ी सी भी प्रतिक्रिया देखने में विफल रहा।' उन्होंने कई बार हमारे बीच से चले जाने के संकेत दिए, फिर भी हम में से कोई भी इसका अर्थ नहीं समझ सका।"*

अन्त में, जैसा कि *किताब–ए–ईक़ान* में वे स्वंय साक्षी देते हैं *"आने वाली घटनाओं के संकेतों"* को देखकर, उन्होंने निर्णय लिया कि ये घटित हों उससे पहले वे एकान्तवास में चले जायेंगे। इसी पुस्तक में वे इस बात की पुष्टि करते हैं कि, *"हमारे एकान्तवास का एकमात्र लक्ष्य था वफादारों के बीच अनबन का विषय, अपने साथियों के लिए विघ्न का स्रोत, किसी भी आत्मा को चोट पहुँचाने का माध्यम या किसी भी हृदय की उदासी का कारण बनने से बचना।"* इसके अतिरिक्त, वे उसी उद्धरण में बल देकर कहते हैं, *"हमारे एकान्तवास का अन्त करने का हमारा कोई विचार नहीं था और हमारे वियोग से पुनर्मिलन की कोई आशा नहीं थी।"*

अचानक और अपने परिवार के किसी भी सदस्य को बताये बगैर, हि. स. 1270 के रज़ब माह की 12 तारीख (10 अप्रैल, 1854) को वे अबुलकासिम–ए–हमदानी नाम के एक ऐसे मुसलमान सेवक के साथ शहर छोड़ कर चले गए जिसे उन्होंने कुछ रकम देते हुए निर्देश दिए कि वह एक व्यापारी के रूप में काम करे और इस रकम को अपनी ज़रूरतों पर खर्च करे। इसके कुछ ही समय बाद, उस सेवक पर लुटेरों ने हमला कर दिया और उसकी हत्या कर दी और कुर्दिस्तान के उस बीहड़ में बहाउल्लाह अपने प्रवास में बिल्कुल अकेले रह गए थे जो एक ऐसा क्षेत्र था जिसके जंगी लोग उन फारसियों के प्रति अपनी पुरानी शत्रुता के लिए मशहूर थे जिन्हें वे इस्लाम धर्म से निष्कासित किए गए लोग समझते थे तथा जिनका दृष्टिकोण, जाति और भाषा, उनसे भिन्न थी।

एक यात्री का भेष धारण करके और अति साधारण वस्त्र पहनकर, केवल अपना कमण्डल और एक जोड़ी कपड़े साथ लेकर तथा दरवेश मुहम्मद का नाम धारण कर बहाउल्लाह बीहड़ में एकान्तवास पर चले गए और कुछ समय के लिए सारगेलु नामक एक पहाड़ पर रहे जो मनुष्यों की बस्ती से इतना दूर था कि उस क्षेत्र के किसान साल में केवल दो बार वहाँ आते थे – एक तो बीज बोने के दिनों में और दूसरा फसल काटने के समय। उन्होंने अपने एकान्तवास का काफी समय अकेले और निर्विघ्न रूप से पहाड़ की चोटी पर पत्थर से बने उस उजाड़ ढाँचे में बिताया जो उन किसानों के लिए बुरे मौसम से बचने का आश्रय था। कभी–कभार उनका निवास–स्थान एक गुफा हुआ करता था जिसका उल्लेख वे मशहूर शेख अब्दुर–रहमान को और अपने एक रिश्तेदार मरियम को सम्बोधित की गई पातियों में करते हैं। लौह–ए–मरियम में वे अपने कठोर अकेलेपन की कठिनाईयों का वर्णन इस प्रकार करते हैं, *"मैं ईश्वरेच्छा के प्रति समर्पित होकर बीहड़ में घूमता हुआ, इस प्रकार यात्रा करता रहा कि मेरे निर्वासन में हर आँख मेरे लिए विलाप कर रही थी और मेरे दुःखों के कारण सभी सृजित वस्तुओं ने खून के आँसू बहाए। आसमान के पंछी मेरे साथी थे और जंगल के पशु मेरे संगी।"* उन दिनों का उल्लेख करते हुए *किताब–ए–ईकान* में बहाउल्लाह यह गवाही देते हैं कि, *"मेरी आँखों से तीव्र व्यथा के आँसू बहा करते थे और मेरे घायल हृदय में दुःखदायी पीड़ा का सागर उमड़ रहा था। कई रातों को मेरे पास पोषण के लिए आहार नहीं होता था और कई दिन मेरे शरीर को आराम नहीं मिलता था.....। संसार और इसमें जो कुछ भी है उन सभी को भुलाकर मैं अकेले ही अपनी आत्मा से वार्तालाप किया करता।"*

पूरे एकान्त के उन दिनों में अपनी आराधना में डूबे रहने के दौरान उनके द्वारा प्रकट की गईं उन कविताओं, प्रार्थनाओं और आत्म सम्भाषण में, जो अरबी और फारसी दोनों भाषओं में, छंद और गद्य में उनकी दुःखभरी आत्मा से बरसे जिनमें कुछ वे स्वयं को ऊँची आवाज़ में सुनाया करते। भोर के समय और रात्रि की बेला में वे अपने सृष्टा के नामों और गुणों की प्रशंसा करते, अपने स्वयं के प्रकटीकरण के रहस्यों की महिमा की प्रशंसा करते, उस सेविका की प्रशंसा

गाते जो उनके अंदर मौजूद ईश्वर की आत्मा का मूर्तरूप थी, अपने अकेलेपन के बारे में तथा अतीत और भविष्य की अपनी विपत्तियों पर विचार करते, अपने युग की पीढ़ी के अन्धेपन, अपने मित्रों के विश्वासघात और अपने शत्रुओं की भ्रष्टता का सविस्तार वर्णन करते, अपने धर्म की स्थापना करने के लिए उठ खड़े होने और आवश्यकता पड़ने पर अपनी जान तक कुर्बान कर देने के अपने दृढ़संकल्प की पुष्टि करते, उन अत्यावश्यक पूर्वापेक्षाओं पर बल देते जो सत्य के प्रत्येक अन्वेषक में होनी चाहिए और अपने कष्टों की प्रतीक्षा में, करबला में इमाम हुसैन के दुःखान्त को, मक्का में मुहम्मद की अवस्था को, यहूदियों के हाथों ईसा मसीह को दी गई यातनाओं को, फेरो और उसके लोगों द्वारा मूसा को दिए गए कष्टों को तथा यूसुफ के भाईयों के कपट के कारण उन्हें एक गड्ढे में डाल दिए जाने से यूसुफ द्वारा झेली कठिन परीक्षा को याद किया करते। अपने आप को दिए गए इस एकान्तवास में, एक संघर्ष कर रही आत्मा से निकली भावनाओं से भरी अभिव्यक्तियों की बौछारें। कुल्लुता–ताम की पाती और तेहरान में प्रकट की गई, रश–ए–आमा नामक कविता, उनकी दिव्य कलम के पहले–पहले फल हैं। ये लेख, *"किताब–ए–ईक़ान", "निगूढ़ वचन" और "सात घाटियाँ",* जैसे उन अमर लेखों के अग्रदूत हैं जो बग़दाद में बहाउल्लाह की उद्घोषणा के पूर्व के वर्षों में उनके उन लेखों को समृद्ध बनाने वाले थे जिनका विस्तार लगातार बढ़ता जा रहा था और जिन्होंने उस मार्ग को और भी प्रशस्त कर दिया था जिससे उनकी अवतारीय योग्यता और भी निखर गई थी। ये लेख शक्तिशाली धर्मपत्रों के रूप में लिखे गए थे जो मानवजाति के सम्राटों और शासकों को सम्बोधित थे। और अन्त में, इन लेखों ने अक्का के सर्वमहान कारागार में बहाउल्लाह की कैद के दौरान रचे गए उनके विधान के नियमों और कानूनों द्वारा उनके ध्येय की अन्तिम सफलता के मार्ग को प्रशस्त किया।

बहाउल्लाह उसी पर्वत पर अपने एकान्तवास में जीवन यापन कर रहे थे जब एक शेख ने पैग़म्बर मुहम्मद को एक स्वप्न में देखा और उनसे प्राप्त किए गए निर्देशानुसार उसने बहाउल्लाह को ढूँढ़ निकाला। यह शेख सुलेमानिया में निवास करता था और पास के ही एक क्षेत्र में उसके पास कुछ सम्पत्ति थी।

सम्पर्क स्थापित होने के कुछ ही समय बाद, खालिदिय्येह पंथ के नेता, शेख इस्माईल बहाउल्लाह से मिलने के लिए आये। वह भी सुलेमानिया में रहते थे। उसने लगातार अनुरोध करके बहाउल्लाह को नगर में निवास करने के लिए राज़ी कर लिया। इस बीच, बग़दाद में बहाउल्लाह के मित्रों ने उनके रहने के स्थान का पता लगा लिया था, उन्हें बग़दाद वापस लौट आने का निवेदन करने के लिए उन्होंने आक़ा–ए–कलीम के ससुर को बहाउल्लाह के पास भेजा। और अब, जब बहाउल्लाह सुलेमानिया में तेक्य–ए–मौलाना खालिद (नैतिक विद्या सम्बन्धी विद्यालय) के एक कमरे में निवास कर रहे थे, उनका सन्देशवाहक वहाँ आ पहुँचा। इसी शेख सुल्तान ने नबील को अपने अनुभव का वर्णन करते हुए कहा है, "मैंने पाया कि वहाँ पर बहाउल्लाह के साथ निवास करने वाले मालिक से लेकर दीनतम नौसिखिये तक सभी बहाउल्लाह के प्रति अपने प्रेम में बँधे हुए और मग्न थे और उनकी जुदाई की सम्भावना का विचार भी करने को वे तैयार न थे और मुझे विश्वास था कि यदि मैं उन्हें अपने आने का उद्देश्य बता देता तो वे मुझे मौत के घाट उतारने से भी न झिझकते।"

शेख सुल्तान ने बताया है कि कुर्दिस्तान में बहाउल्लाह के आगमन के कुछ ही समय बाद, वे क्रमशः नक्शबन्दियेह, क़दीरियेह और खालिदीयेह समाज के निर्विवाद नेता शेख उस्मान, शेख अब्दुर–रहमान, और शेख इस्माइल को अपने व्यक्तिगत सम्पर्क के माध्यम से उनके दिलों को जीतने और उन पर प्रभुता स्थापित करने में सफल हो गए। इनमें से प्रथम शेख उस्मान के अनुयायियों में स्वयं सुल्तान जैसी महान हस्ती और उसके परिचारकगण शामिल थे। दूसरे जिसके प्रश्न के उत्तर में आगे चलकर *"चार घाटियाँ"* प्रकट की गई के नेतृत्व के अधीन कम से कम एक लाख समर्पित अनुयायियों का दृढ़ आज्ञापालन था, जबकि तीसरे को उसके समर्थकों का इतना सम्मान प्राप्त था कि वे उसे समाज के संस्थापक स्वयं खालिद के बराबर समझते थे।

जब बहाउल्लाह सुलेमानिया में आये थे तब उनके द्वारा रखे गए मौन और एकान्त के कारण, शुरू–शुरू में किसी ने भी यह नहीं सोचा था कि वे इतने ज्ञानी और बुद्धिमान होंगे। बहाउल्लाह के एक सेवक विद्यार्थी द्वारा संयोग से उनकी लाजवाब लिखावट दिखाए जाने के बाद ही वहाँ के ज्ञानवान शिक्षकों

और विद्यार्थियों की उत्सुकता जागी और वे बहाउल्लाह के ज्ञान के स्तर की और मौजूदा कलाओं और विज्ञानों के बारे में उनकी जानकारी के विस्तार की परीक्षा लेने के लिए उनसे मिलने को विवश हो गए। यह विद्यापीठ अपनी विशाल सम्पत्ति, अपनी असंख्य शाखाओं और सलाही–दीन–ए–अय्यूबी और उसके वंशजों के साथ अपने सम्बन्धों के कारण प्रसिद्ध था। सुन्नी इस्लाम के सबसे उत्कृष्ट व्याख्याताओं ने यहीं से निकलकर इसके सिद्धान्तों की शिक्षा दी थी और अब, स्वयं शेख इस्माइल के नेतृत्व में सबसे मान्यवर विद्वानों और सबसे विशिष्ट विद्यार्थियों का एक प्रतिनिधिमण्डल बहाउल्लाह से मिलने पहुँचा। वहाँ पहुँचने पर उन्होंने पाया कि वे उन लोगों के किसी भी प्रश्न का उत्तर देने के लिए तैयार हैं। तब उन्होंने बहाउल्लाह से अनुरोध किया कि वे चन्द साक्षात्कारों के दौरान उनके लिए मशहूर शेख मुहिद्–दीन–ए–अरबी के 'फुतुहात–ए–मक्क़यै' नामक जानी मानी पुस्तक में निहित रहस्यमय उद्धरणों की व्याख्या करें। विद्वानों के इस प्रतिनिधिमण्डल को तुरन्त उत्तर देते हुए बहाउल्लाह ने कहा, *"ईश्वर मेरा साक्षी है कि जिस पुस्तक की तुम बात कर रहे हो, उसे मैंने कभी नहीं देखा। फिर भी, ईश्वर की शक्ति से मैं वह कर दिखाना आसान समझता हूँ ..... जो तुम मुझसे चाहते हो।"* प्रतिदिन उन लोगों में से एक को उस पुस्तक का एक पृष्ठ पढ़ने का निर्देश देते हुए बहाउल्लाह ने उनकी उलझनों को इतने आश्चर्यजनक ढंग से सुलझा दिया कि वे उनकी प्रशंसा में लीन हो गए। उस पुस्तक के उद्धरणों की मात्र व्याख्या से स्वयं को सन्तुष्ट न करते हुए, बहाउल्लाह उनके लिए उस पुस्तक के लेखक की सोच स्पष्ट करते और उसके मत की व्याख्या करते और उसके उद्देश्य को प्रकट करते। यहाँ तक कि कभी–कभी तो वे उस पुस्तक में प्रस्तुत किए गए कुछ विचारों के तर्क पर भी प्रश्न उठाते और स्वयं उन विषयों को सही ढंग से प्रस्तुत करते जिन्हें गलत समझ लिया गया था, तथा अपनी बात को ऐसे प्रमाणों और सबूतों से समर्थित करते जो उनके सुनने वालों के सभी सन्देह दूर कर देते।

बहाउल्लाह की अन्तर्दृष्टि और समझ के स्तर से आश्चर्यचकित होकर, वे लोग उनसे वह प्राप्त करने को विवश हो गए जो उनकी दृष्टि में उस अद्वितीय शक्ति और ज्ञान का निर्णायक और अन्तिम साक्ष्य बनने वाला था, अब

वे मानने लगे थे कि वह अन्तर्दृष्टि बहाउल्लाह के पास है। बहाउल्लाह से अन्तिम अनुरोध करते हुए उन लोगों ने दावा किया कि,*"आज तक कोई भी रहस्यवादी, बुद्धिमान और ज्ञानी व्यक्ति स्वयं को इतना सक्षम साबित नहीं कर पाया है कि वह एक ऐसी कविता लिख सके जो पद और छन्द में, इब्न–ए–फरीद द्वारा लिखी गई क़ासिदी–ए–तैय्येह नामक दो कविताओं से अधिक लम्बी कविता के बिल्कुल एकरूप हो।"* इस अनुरोध को स्वीकार किया गया और जैसा कि उन लोगों ने विशेष रूप से बताया, उसी ढंग से बहाउल्लाह ने कम से कम दो हजार श्लोक लिखवाए, जिनमें से उन्होंने उन लोगों को एक सौ सत्ताईस श्लोक रखने की अनुमति प्रदान की, तथा अन्य श्लोकों की विषय वस्तु को असामयिक और समय की आवश्यकताओं के लिए अनुपयुक्त समझा। ये ही वे एक सौ सत्ताईस श्लोक हैं जिन्हें 'क़ासीदा–ए–वार्ग़ाईय्येह' के नाम से जाना जाता है, जिनसे बहाउल्लाह के अरबी भाषी अनुयायी परिचित हैं और जो उनके बीच दूर–दूर तक पहुँचे हैं।

बहाउल्लाह के विवेक और विलक्षणता के इस उत्कृष्ट प्रदर्शन के प्रति उन लोगों की प्रतिक्रिया ऐसी थी कि उन सभी ने एक होकर इस बात को स्वीकार किया कि उस कविता का प्रत्येक छन्द ऐसे बल, ऐसी सुन्दरता और ऐसी शक्ति से विभूषित है जो उस जाने माने कवि द्वारा रची गई बड़ी या छोटी कविता में निहित किसी भी चीज़ से अत्याधिक उत्कृष्ट था।

बग़दाद में बहाउल्लाह की अनुपस्थिति के दो वर्षों के दौरान होने वाली घटनाओं में, इस अतुलनीय रूप में अद्वितीय घटना ने, उस रुचि को और भी जगा दिया जिसके कारण अब उन उलेमाओं, विद्वानों, शेखों, धर्माचार्यों, आध्यात्मिक जनों और राजकुमारों जैसे लोग, जो कि सुलेमानिया और कारकुक के सेमिनारों में एकत्रित हुए थे, अब बढ़ती हुई संख्या में बहाउल्लाह की दैनिक गतिविधियों पर नज़र रखे हुए थे। अपने असंख्य संवादों और पातियों के माध्यम से बहाउल्लाह ने उन लोगों की आँखों के सामने नए दृश्य उजागर किए, उनके मन को उलझन में डालने वाली व्याकुलताओं का समाधान किया, विभिन्न टीकाकारों के लेखों में पाये जाने वाले कई ऐसे उद्धरणों के गूढ़ अर्थ को प्रकट किया, जिन्हें समझना बहुत कठिन था, तथा

प्रलेखों, कविताओं और व्याख्याओं से भरे हुए लेकिन आपस में विरोधी प्रतीत होने वाले कथनों का परस्पर सम्बन्ध स्थापित किया। बहाउल्लाह के प्रति लोगों का सम्मान और आदर ऐसा था कि कुछ लोग उन्हें *"अदृश्य पुरूषों में एक"* समझते थे, अन्य लोग यह मानते थे कि वे रसायन विद्या और ज्योतिष विद्या में दक्ष हैं, कुछ और लोगों ने उन्हें *"ब्रह्माण्ड के केन्द्रीय आधार"* की उपाधि दी थी, जबकि उनके अन्य चाहने वालों की विशाल संख्या तो यह तक मानने लगी कि उनका स्थान एक पैग़म्बर से कुछ कम नहीं था। सभी कुर्द, अरबी, और फारसी लोगों में ज्ञानवान और अशिक्षित, उच्च स्तर के और दीन जन, युवा और बूढ़े जो उन्हें जानने लगे थे, उनका समान रूप से आदर करते थे। इनमें से बहुत से ऐसे थे जिनका प्रेम सच्चा और गहरा था और यह सब बावजूद इसके हो रहा था कि बहाउल्लाह ने सार्वजनिक रूप से अपने स्थान के बारे में कुछ ऐसे संकेत दिए थे जो यदि किसी अन्य फारसी के मुख से निकले होते तो वे इतना क्रोध उत्पन्न कर देते कि उसका जीवन संकट में पड़ जाता। कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि *लौह–ए–मरियम* में स्वयं बहाउल्लाह ने अपने एकांतवास की अवधि को अपने प्रकटीकरण के सत्य का *"सबसे महान प्रमाण"* और *"सबसे पूर्ण और निर्णायक साक्ष्य"* घोषित किया है। स्वयं अब्दुल बहा साक्षी देते हैं, कि *"थोड़े समय में ही कुर्दिस्तान उनके प्रेम के प्रति आकर्षित हो गया। अपने एकांतवास की अवधि में बहाउल्लाह ने निर्धनता में दिन बिताए। उनके कपड़े एक गरीब व्यक्ति जैसे थे। उनका भोजन एक दरिद्र और दुःखी व्यक्ति जैसा था। उनके चारों ओर ऐसे प्रभामण्डल का वातावरण हुआ करता था जैसे दोपहर के सूर्य के आसपास होता है। सभी लोग उन्हें बहुत प्यार करते थे और उनका बड़ा आदर करते थे।"*

जब एक अनजान देश में और अजनबी लोगों के बीच, बहाउल्लाह की भावी महानता की नींव रखी जा रही थी, तब बाबी समुदाय तेज़ी से बद–से–बद्तर होता जा रहा था। अपने कठिन प्रयासों से और बहाउल्लाह की आकस्मिक और लम्बी दूरी से खुश होकर और साहस पा कर दुष्टता फैलाने वाले लोग अपने भ्रमित साथियों के साथ, अपनी षड़यंत्रकारी गतिविधियों

का दायरा बढ़ाने में व्यस्त थे। मिर्ज़ा याह्या जो कि अधिकांश समय अपने घर में छिपा रहता था, अपने उन बाबी साथियों के साथ जिन पर उसे पूरा भरोसा था, पत्राचार के माध्यम से गुप्त रूप से एक ऐसे अभियान को निर्देशित कर रहा था जो बहाउल्लाह को लोगों की दृष्टि से पूरी तरह गिरा देने के लिए रचा जा रहा था। किसी भी सम्भावित शत्रु के डर से उसने अपने एक समर्थक मिर्ज़ा मुहम्मद–ए–माज़िन्दरानी को दैय्यान की हत्या करने के लिए अज़रबैजान भेजा था। दैय्यान जिन्हें "ईश्वर के ज्ञान का कोष" की उपाधि दी गई थी, उसे मिर्ज़ा याह्या ने "दुष्टता जनक" की उपाधि दी थी और "तागूथ" कह कर कलंकित किया था। दैय्यान की प्रशंसा में बाब ने कहा था कि वे *"वह तीसरे अक्षर हैं जो उसमें विश्वास करेगा 'जिसे ईश्वर प्रकट करेगा'।"* मिर्ज़ा याह्या ने अपनी मूर्खता से मिर्ज़ा आक़ा जान को उकसाया कि वह नूर के लिए प्रस्थान करें और वहाँ जाकर ऐसे उचित समय की प्रतीक्षा करें जब वह राजा पर जानलेवा हमला कर सकता हो। उसकी बढ़ती हुई धृष्टता के परिणामस्वरूप उसने स्वयं एक ऐसा घृणित कार्य किया और अपने बाद में सैय्यद मुहम्मद को वही घृणित कार्य करने की अनुमति दे दी। बहाउल्लाह ने उसके इस कृत्य को बाब का अनादर करने वाले *"सबसे पीड़ाजनक विश्वासघाती"* का स्थान दिया, जिसने *"समस्त देशों को दुःख में डुबो दिया"।* अपने अपराधों की गम्भीरता के एक और प्रमाण के रूप में उसने यह आदेश दिया कि बाब के चचेरे भाई, मिर्ज़ा अली अकबर – जो कि दैय्यान के बड़े प्रशंसक थे – की चुपचाप हत्या कर दी जाए। यह एक ऐसा आदेश था जिसे पूर्ण दुष्टता से निष्पादित किया गया। जहाँ तक उस सैय्यद मुहम्मद का प्रश्न था जिसे उसके आक़ा, मिर्ज़ा याह्या ने पूरी आज़ादी दी थी, उसने अपने आसपास के कुछ षड़यंत्रकारियों को एक दल के रूप में रखा हुआ था, जिन्हें उसने यह अनुमति दी थी और प्रोत्साहन भी दिया था कि वे करबला में एकत्रित होने वाले दौलतमन्द तीर्थयात्रियों के सिर से रात में पगड़ियाँ छीन लें, उनके जूते चुरा लें, इमाम हुसैन की समाधि से दीवान, मोमबत्तियाँ चुरा लें और सार्वजनिक फव्वारों से पानी पीने के कप चुरा लें। नबील जो कि उस समय करबला में उसके साथ थे, इस बात की स्पष्ट रूप से पुष्टि करते हैं। बाब के धर्म के अनुयायी कहलाए जाने वाले ये लोग अधमता के इतने नीचे स्तर पर पहुँच चुके

थे कि नबील को उस उत्कृष्ट त्याग की याद आ गई जो मुल्ला हुसैन के उन साथियों के आचरण में देखा गया था, जिन्होंने अपने नेता के सुझाव पर अपना सोना, चाँदी और कीमती रत्नों का तिरस्कार करते हुए इन्हें सड़क के किनारे फेंक दिया था या वह त्याग जो वाहीद के व्यवहार में देखा गया था जिन्होंने यज़्द में लोगों द्वारा अपने घर के लूटे जाने से पहले उस खज़ाने की कीमती से कीमती वस्तु को भी बचाने से इन्कार कर दिया था, जिससे उनका घर सजा हुआ था, या वह त्याग जो हुज्जत के व्यवहार में देखा गया था जब उन्होंने यह निर्णय लिया कि वे भूख से मरने वाले अपने साथियों को यह अनुमति नहीं देंगे कि वे दूसरों की सम्पत्ति पर हाथ डालें, चाहे वे अपना जीवन ही क्यों न बचाना चाहते हों।

इन पथभ्रष्ट और निरूत्साही बाबियों की गुस्ताखी ऐसी थी कि अब्दुल बहा के अनुसार, कम से कम पच्चीस व्यक्तियों ने अपने आप को वह प्रतिज्ञापित अवतार घोषित करने की गलती की थी, जिसकी भविष्यवाणी बाब द्वारा की गई थी ! उनके भाग्य का ऐसा पतन हुआ कि उनमें लोगों के सामने आने की हिम्मत नहीं थी। सड़कों पर दिख जाने पर, उन्हें गाली देने के लिए और उनके धर्म को खुलेआम बदनाम करने में कुर्द और फारसी लोग एक दूसरे की होड़ किया करते थे। कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि बग़दाद लौटने पर बहाउल्लाह ने उस समय की परिस्थिति का वर्णन इन शब्दों में किया : *"हमने चन्द बुझी हुई और निरूत्साहित, बल्कि पूरी तरह भटकी हुई और मृत आत्माओं के अलावा और कुछ नहीं पाया। लोगों के होठों पर ईश्वर के धर्म की चर्चा नहीं थी, न ही कोई हृदय इसके सन्देश के प्रति ग्रहणशील था।"* जब बहाउल्लाह वहाँ पहुँचे तो उन्हें ऐसी उदासी ने घेर लिया कि उनके काज़मीयान प्रवासों के सिवाय और कभी–कभार उस नगर में तथा बग़दाद में निवास वाले उनके मित्रों से मिलने के सिवाय वे कुछ समय तक अपने घर से बाहर नहीं निकले।

उनकी दो वर्ष की अनुपस्थिति में उत्पन्न होने वाली दुःखदायी परिस्थिति अब उनके लौट आने की माँग कर रही थी। *किताब–ए–ईक़ान* में वे स्वयं बताते हैं कि *"रहस्यमय स्रोत से, यह सम्मन आए और हमें वहीं लौट जाने के आदेश दिए जहाँ से हम आए थे। अपनी इच्छा को उस (ईश्वर) के अधीन*

करते हुए, हम उसके आदेश के समक्ष झुक गए।" नबील के वृत्तान्त में दी गई जानकारी के अनुसार, शेख सुल्तान को बहाउल्लाह ने बलपूर्वक कहा, *"उस ईश्वर की सौगंध, जिसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है ! यदि मैं इस तथ्य को नहीं मानता, कि उस आदि बिन्दु का आशीर्वादित धर्म पूरी तरह मिटने की स्थिति में आ पहुँचा है और ईश्वर के पथ में बहाया गया समस्त पावन रक्त व्यर्थ ही बहाया गया है, तो मैं बयान के लोगों के पास कभी लौटकर न आता और उन्हें उनकी कल्पनाओं द्वारा रची गई मूर्तियों की आराधना करने के लिए छोड़ देता।"*

इसके अतिरिक्त, जब मिर्ज़ा याह्या यह पूरी तरह समझ चुका था कि धर्म के निरंकुश नेतृत्व ने उसे कहाँ लाकर खड़ा कर दिया है, तो उसने लगातार और लिखित रूप से बहाउल्लाह से अनुरोध किया कि वे लौट आएँ। उनके अपने परिवारजनों और मित्रों का भी अनुरोध कुछ कम गम्भीर नहीं था, विशेषकर उनके 12 वर्षीय पुत्र अब्दुल बहा का अनुरोध जिनके दुःख और अकेलेपन ने उनकी आत्मा को इस कदर बोझिल कर दिया था कि नबील के वृत्तान्त में उनके द्वारा दर्ज की गई बातचीत में अब्दुल बहा ने यह स्वीकार किया था कि बहाउल्लाह के चले जाने से वे अपने बचपन में ही बूढ़े हो गए थे।

अपने एकान्त वास की अवधि का अन्त करने का निर्णय लेने के बाद, बहाउल्लाह ने सुलेमानिया के उन शेखों से विदा ली, जो अब उनके सबसे समर्पित और जैसा कि उनके भावी आचरण ने दर्शाया है, सबसे दृढ़ चाहने वाले थे। उन्होंने शेख सुल्तान के साथ *"विपत्ति की नदी के किनारों"* से होते हुए, जैसा कि उन्होंने स्वयं वर्णन किया है – बग़दाद की ओर अपने कदम बढ़ाए। धीरे–धीरे आगे बढ़ते हुए, यह समझते हुए कि, जैसा कि उन्होंने अपने सहयात्री को बताया था : उनके एकान्तवास के ये आखिरी दिन उन्हें प्राप्त होने वाली *"शान्ति और चैन के अन्तिम दिन थे"* वे दिन *"जो मेरे भाग्य में दोबारा कभी नहीं आयेंगे।"*

हि.स. 1273 के रजब माह की 12 तारीख (19 मार्च 1856) को, अर्थात कुर्दिस्तान के लिए रवाना होने के ठीक दो वर्ष बाद वे बग़दाद पहुँचे।

बहाउल्लाह का इराक निर्वासन

(निरन्तर)

सुलेमानिया से बहाउल्लाह की बगदाद वापसी बहाई इतिहास की पहली शताब्दी के एक अत्यन्त महत्वपूर्ण मोड़ का सूचक है। जब प्रभुधर्म के भाग्य ने अपनी अवनति के निम्नतम स्तर को छू लिया, तब वह एक बार फिर प्रगति की ओर बढ़ने लगा और इसकी नियति थी कि यह स्थाई और शक्तिशाली ढंग से उस नई ऊँचाई को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ता रहे, जो इस बार कॉन्सटैन्टीनोपल में बहाउल्लाह के निर्वासन के अन्तिम समय में की गई उनके उद्देश्य की उद्घोषणा के साथ जुड़ा था। बग़दाद में बहाउल्लाह की वापसी के साथ ही अब एक ठोस सहारा मिल गया था – एक ऐसा सहारा जिसके जैसा कुछ भी प्रभुधर्म ने अपने इतिहास में पहले कभी नहीं देखा था। इससे पहले अपने जीवनकाल के प्रारम्भिक तीन वर्षों को छोड़कर ईश्वर का धर्म कभी भी यह दावा नहीं कर सकता था कि उसके पास ऐसा कोई ठोस और सुलभ केन्द्र है जिसकी ओर इसके अनुयायी मार्गदर्शन के लिए उन्मुख हो सकते थे और जिससे वे निरन्तर और बिना किसी बाधा के प्रेरणा प्राप्त कर सकते थे। बाब के संक्षिप्त सेवाकाल का कम से कम आधा समय उनके मूल निवासी देश की सबसे अधिक दूरी पर स्थित सीमा पर व्यतीत हुआ था, जहाँ उन्हें उनके अनुयायियों की विशाल संख्या के अधिकांश भाग से छिपा कर और लगभग उनकी पहुँच से बाहर रखा गया था। बाब की शहादत के तुरन्त बाद का समय ऐसी उथल–पुथल से जुड़ा हुआ था जो उन पर बलपूर्वक थोपी गई कैद से भी अधिक अफसोसजनक था। जब वह प्रकटीकरण आया जिसकी

उन्होंने भविष्यवाणी की थी, तो इसके आने पर तत्काल ऐसी कोई उद्घोषणा नहीं हुई ताकि एक भटके हुए समुदाय के सदस्य को उस अपेक्षित उद्धारकर्ता के व्यक्तित्व का सहारा मिल सके। उस प्रतिज्ञापित के प्रकटित होने तक प्रावधान के तौर पर नियुक्त किए गए केन्द्र मिर्ज़ा याह्या का एक लम्बे समय तक छिपे रहना, करबला प्रवास के दौरान बहाउल्लाह का नौ माह तक अपने मूल देश में मौजूद न रहना, इसके तुरन्त बाद सियाहचाल में उन्हें कैद किया जाना, इराक में उनका निर्वासन और बाद में कुर्दिस्तान में उनका एकान्तवास – इन सभी घटनाओं ने मिलकर उस अस्थिरता और दुविधा के दौर को और भी बढ़ा दिया जिससे बाबी समुदाय को गुज़रना पड़ा।

अन्ततः, अपने स्थान से सम्बन्धित रहस्य को उजागर करने की बहाउल्लाह की अनिच्छा के बावजूद, बाबियों को यह आभास हुआ कि वे अपनी आशाएँ और गतिविधियाँ उस महान के आसपास केन्द्रित कर सकते हैं जिन्हें वे इस योग्य समझते थे। वह ही उनके धर्म की स्थिरता और अखण्डता को सुनिश्चित कर सकते हैं। इस तरह प्रभुधर्म ने जो दिशा प्राप्त की थी और जिस केन्द्र की ओर यह अब किसी न किसी रूप में आकर्षित हो रहा था, उसकी अडिगता इसकी ऐसी विशिष्टता बनी रहीं जिनसे यह कभी वंचित नहीं किया जाने वाला था।

जैसा कि देखा जा चुका है, लगातार और भयानक प्रहार सहन करने के कारण बाब का धर्म लगभग समाप्त हो चुका था। साथ ही बहाउल्लाह को सियाहचाल में प्रदान किए गए महत्वपूर्ण प्रकटीकरण ने भी तात्कालिक रूप से ऐसा कोई भी ठोस परिणाम उत्पन्न नहीं किया, जो इस लगभग अस्त–व्यस्त बाबी समुदाय को स्थिरता प्रदान करने वाला प्रभाव डाल सके। बहाउल्लाह के अनापेक्षित निर्वासन ने बाबी समुदाय के उन सदस्यों को आघात पहुँचाया जिन्होंने बहाउल्लाह पर अपना विश्वास केन्द्रित करना सीख लिया था। मिर्ज़ा याह्या की निष्क्रियता से और उसके अलग–थलग रहने से विघटन की वह प्रक्रिया जिसकी शुरूआत पहले ही हो चुकी थी, अब और भी गतिशील हो गई। कुर्दिस्तान में बहाउल्लाह के लम्बे एकान्तवास ने इस सम्पूर्ण समुदाय के अन्त पर मुहर–सी लगा दी थी।

लेकिन अब, जो पतन इतने चिन्ताजनक स्तर तक पहुँच चुका था, उसकी दिशा उत्थान की ओर बदलने लगी थी और जैसे–जैसे यह उत्थान उफान के स्तर पर पहुँचने लगा, वैसे–वैसे यह अपने साथ ऐसे अमूल्य लाभ लाया जो उस प्रकटीकरण की घोषणा के अग्रदूत सिद्ध हुए जिसकी सूचना बहाउल्लाह को पहले ही गुप्त रूप से दी जा चुकी थी।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि बहाउल्लाह के अवतारीय ध्येय की घोषणा और उनके प्रयासों की दूसरी शुरूआत के बीच के सात सालों में जिनकी ओर हम अपना ध्यान अब केन्द्रित करेंगे – बहाई समुदाय का जन्म हुआ था और यह एक नवजीवन प्राप्त बाबी समुदाय के नाम से जाना जाता था और धीरे–धीरे आकार पा रहा था, जबकि इसके सृजनकर्ता (बहाउल्लाह) अब भी बाब के सर्वोत्कृष्ट अनुयायी माने जाते थे और इसी रूप में प्रयास कर रहे थे। यह एक ऐसी अवधि थी जिसके अन्तर्गत बाबी समुदाय के नाममात्र के नेता (मिर्ज़ा याह्या) का सम्मान धीरे–धीरे समाप्त होने लगा था और बहाउल्लाह जो इस समुदाय के सच्चे अग्रणी और उद्धारकर्ता थे, के बढ़ते हुए प्रताप के सामने फीका पड़ने लगा था। यह एक ऐसा काल था जो इतिहास में एक ऐसे समय के रूप अंकित किया जायेगा जिसके दौरान एक नवजीवन प्राप्त समुदाय का सम्मान बहुत अधिक बढ़ गया था। इसकी नैतिकता में पूरी तरह सुधार आ चुका था। इसने उस महान को दृढ़ता से पहचान लिया था जिसने इसे उत्साहपूर्वक पुनःस्थापित किया था, इसका साहित्य बहुत समृद्ध हो चुका था और इसके नए शत्रुओं पर इसकी विजय मान ली गई थी।

इस समुदाय को और विशेषकर बहाउल्लाह को मिलने वाला वह प्रथम सम्मान जिसका शुभारम्भ कुर्दिस्तान में हुआ था, अब लगातार बढ़ता जा रहा था। जिस प्रभुत्व को बहाउल्लाह ने त्याग दिया था, उसका उत्तरदायित्व अभी उन्होंने अपने हाथ में लिया ही था कि सुलेमानिया में निवास करने वाले, उनके प्रति समर्पित चाहने वालों की भीड़ अब बग़दाद आने लगी थी। इन लोगों के होठों पर *"दरवेश मुहम्मद"* का नाम था और उनका लक्ष्य था *"मिर्ज़ा मूसा नाम के बाबी के घर पहुँचना"*। बहाउल्लाह के निवास पर कुर्द के क़ादिरी और खालिदी उलेमाओं और सूफियों की इतनी बड़ी भीड़ को देख आश्चर्यचकित

होकर और जातीय एवं साम्प्रदायिक शत्रुता से प्रेरित होकर बग़दाद के मुफ्ती इब्न–ए–अनूसी, शेख अब्दुल सलाम, शेख अब्दुल कादिर और सैय्यद दाउदी जैसे धार्मिक नेता बहाउल्लाह से मिलने की कोशिश करने लगे और अपने बहुत से प्रश्नों के बिल्कुल संतोषजनक उत्तर प्राप्त करने पर, उन्होंने अपने आप को बहाउल्लाह के चाहने वालों में शामिल कर लिया। इन धार्मिक नेताओं ने बहाउल्लाह के चरित्र और आचरण को विशिष्ट बनाने वाले चिन्हों को बगैर किसी हिचकिचाहट के स्वीकार कर लिया था। इसके परिणामस्वरूप, इन सब बातों पर नज़र रखने वाले बहुत से वे लोग जो कम महत्व के थे, बहाउल्लाह की प्रशंसा करने लगे। इन लोगों में ऐसे कवि, रहस्यवादी और प्रतिष्ठित लोग शामिल थे जो या तो बग़दाद के निवासी थे या फिर उस शहर में आते–जाते रहते थे। कई सरकारी अधिकारी भी धीरे–धीरे उनके सम्पर्क में आने लगे और उन्होंने बहाउल्लाह की तेज़ी से फैलने वाली प्रतिष्ठा को और भी अधिक फैलाने में अपना–अपना योगदान दिया। इनमें सबसे आगे अब्दुल्लाह पाशा और उसके उप सेनापति महमूद आक़ा थे। साथ ही इन लोगों के बीच मशहूर कुर्द मुल्ला अली मर्दान भी था और फारस के वे विशिष्ट लोग भी थे जो या तो बग़दाद और इसके आसपास के क्षेत्रों के निवासी थे, अथवा फिर वहाँ के पावन स्थलों पर तीर्थ करने आते थे। ये लोग बहाउल्लाह के अगम्य आकर्षण के जादू से बच नहीं पाये। इन लोगों में नाईबुल–इयालिह, शुजाउद–दौलिह, सैफुद–दौलिह और फक्रूद–दौलिह ज़ैनुल आबदीन खान जैसे शाही खानदान के राजकुमार भी शामिल थे जो बहाउल्लाह के साथियों और परिचितों के लगातार बढ़ने वाले दायरे में दूसरों की तरह ही आकर्षित होते चले आए।

जिन लोगों ने बग़दाद में बहाउल्लाह की अनुपस्थिति के दो वर्षों के अन्तर्गत उनके साथियों और सगे–सम्बन्धियों को लगातार धिक्कारा और उनकी हँसी उड़ायी थी, वे अब लगभग चुप हो गए थे। उनमें से बहुत से लोगों ने बहाउल्लाह के प्रति दिखावटी सम्मान प्रदर्शित किया, कुछ ने उनके रक्षक और समर्थक होने का दावा किया, जबकि अन्य ने अपने आप को उनका सहअनुयायी बताया, किन्तु वास्तव में उसी के समुदाय से जुड़े हुए थे जिसके वे सदस्य थे। लोगों द्वारा की जाने वाली प्रतिक्रिया ऐसी थी कि एक को इस

बात पर गर्व करते हुए सुना गया कि उसने हि.स. 1250 में ही, अर्थात् बाब की उद्घोषणा के 10 साल पहले ही बहाउल्लाह के धर्म के सत्य को पहचान लिया था और इसे स्वीकार कर लिया था !

सुलेमानिया से बहाउल्लाह के लौटने के कुछ ही वर्षों के बाद परिस्थितियाँ बिल्कुल बदल गईं। सुलेमान–ए–घन्नाम का वह निवास जिसे आगे चलकर बैत–ए–आज़म (सर्वमहान निवास) की औपचारिक उपाधि से सम्मानित किया गया था, उन दिनों बाबी मिर्ज़ा मूसा के निवास के नाम से जाना जाता था। वह एक अत्यन्त साधारण सा घर था और शहर के कार्ख नामक भाग में नदी के पश्चिमी क्षेत्र में स्थित था। कुर्दिस्तान से बहाउल्लाह की वापसी से पहले बहाउल्लाह का परिवार इसी घर में रहने चला गया था। अब यही घर असंख्य जिज्ञासुओं, मिलने वालों और तीर्थयात्रियों के लिए मुख्य केन्द्र बन चुका था। इनमें मुसलमान, यहूदी और ईसाई धर्म के कुर्द, फारसी, अरबी और तुर्की लोग शामिल थे। इसके अतिरिक्त बहाउल्लाह का यह घर एक ऐसा शरण–स्थल बन चुका था जिसमें फारस की सरकार के शासकीय प्रतिनिधि के अन्याय से पीड़ित लोग इस आशा में शरण लेने आते थे कि उनके साथ किए गए अन्याय की यहाँ सुनवाई होगी।

इसी दौरान, सबका आदर–सत्कार करने वाले बहाउल्लाह के द्वार पर फारस के बाबियों की एक बहुत बड़ी संख्या ने आगंतुकों की भीड़ बढ़ा दी। इन बाबियों का एकमात्र उद्देश्य था बहाउल्लाह के दर्शन करना। अपने मूल देश को लौटते समय वे बहाउल्लाह की लगातार बढ़ रही शक्ति और प्रताप के असंख्य मौखिक और लिखित प्रमाणों को अपने साथ ले जाते। इस प्रकार निश्चित तौर पर उन्होंने इस नवजात धर्म के विस्तार और इसकी प्रगति में विशाल योगदान दिया। बहाउल्लाह से मिलने के लिए आने वाले और सह–अनुयायियों में जिन लोगों का नाम सम्मिलित था और जिन्होंने उनके आंगन को पार करके, उनकी प्रतापशाली भव्यता की एक झलक प्राप्त की थी उन लोगों ने बहाउल्लाह की आत्मा के सम्पर्क में आने के कारण अपने अन्दर भर जाने वाले सृजनात्मक प्रभाव के चर्चे दूर–दूर तक फैला दिए थे। उन लोगों में बाब के चार चचेरे भाई और उनके मामा हाजी मिर्ज़ा सैय्यद मुहम्मद थे; फतेह अली शाह की पोती और

ताहिरा की वह उत्सुक चाहने वाली थी जिसे वराक़ातुर–रिज़वान की उपाधि दी गई थी; नबील–ए–अकबर की उपाधि से सम्मानित विद्वान नबील–ए–क़ैनी थे; इस्माउल्लाहुल–असदक़ की उपाधि से सम्मानित वह मशहूर मुल्ला सादिक–ए–खुरासानी थे, जिन्हें शीराज़ में कुद्दूस के साथ अपमानजनक रूप से यातनाएँ दी गईं थीं; जीविताक्षर मुल्ला बक़ीर थे; दय्यान की उपाधि से सम्मानित सैय्यद असदुल्लाह थे; आदरणीय सैय्यद जवाद–ए–करबलाई थे; मिर्ज़ा मुहम्मद हसन और मिर्ज़ा हुसैन थे, जिन्हें आगे चलकर सुल्तानुश–शुहादा और माहबुबुश–शुहादा (शहीदों के सम्राट और शहीदों के प्रिय) की उपाधि से सम्मानित किया गया था और आगे चलकर जिनकी बेटी को अब्दुल बहा के साथ विवाह बन्धन में जोड़ा गया था। अमर सैय्यद इस्माईल–ए–ज़वाहीरी भी उन लोगों में थे; और बाब द्वारा नबील की उपाधि से सम्मानित हाजी शेख मुहम्मद थे। इस्मुल्लाहुल–मुनीब की उपाधि से सम्मानित मिर्ज़ा आग़ा–ए–मुनीर भी थे। अय्यूब की उपाधि से सम्मानित धैर्यवान हाजी मुहम्मद तक़ी थे; ज़ैनुल–मुकार्राबीन की उपाधि से सम्मानित मुल्ला ज़ैनुल आबदीन थे, जो एक अत्यन्त सम्मानित मुजताहिद माने जाते थे। नबील–ए–आज़म की उपाधि से सम्मानित मुल्ला मुहम्मद–ए–ज़रन्दी जो बहाउल्लाह के राजकीय कवि, उनके इतिहासकार और उनके समर्पित शिष्य थे। वह पहले ही निवार्सितों के साथ हो लिए थे और उन्होंने अपने परम प्रिय के धर्म को आगे बढ़ाने के लिए कई बार फारस की लम्बी और कठिन यात्राएँ भी की थीं।

यहाँ तक कि वे लोग भी, जिन्होंने बग़दाद, करबला, कुम, काशान, तबरीज़ और तेहरान में अपनी मूर्खता और दुःसाहस के कारण *"वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा"* के अधिकार का झूठा दावा किया था और उनकी उपाधि ग्रहण की थी, अधिकांश रूप से सहज ही बहाउल्लाह की उपस्थिति में प्रवेश करने, अपनी भूल स्वीकारने और उनसे क्षमा माँगने के लिए प्रेरित हुए। जैसे–जैसे वक्त बीतता गया, यातना के सदा मौजूद भय के कारण शरणार्थियों ने अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ, उस महान की समीपता में सुरक्षा प्राप्त करनी चाही जो पहले ही एक अत्यन्त सताए हुए समुदाय के सदस्यों के लिए शरण स्थल बन चुके थे। बहाउल्लाह के बढ़ते हुए सम्मान के समक्ष, संयम और

सावधानी की माँगों को ठुकराते हुए, निर्वासन में रहने वाले, फारस के प्रतिष्ठित जन, अपनी उच्चता को भूलकर बहाउल्लाह के पैरों के पास बैठते थे और प्रत्येक ने, अपनी क्षमता के अनुसार कुछ मात्रा में उनकी आत्मा और बुद्धि को आत्मसात किया। उनमें से मुहम्मद शाह के एक पुत्र वज़ीर निज़ाम अब्बास मिर्ज़ा और मिर्ज़ा मलकम खान सहित विदेशी सरकारों के कुछ अधिकारियों जैसे कुछ अधिक महत्वाकांक्षी व्यक्तियों ने अपने अन्धेपन के कारण, अपने मन में पलने वाले षड़यंत्रों को आगे बढ़ाने में बहाउल्लाह का समर्थन प्राप्त करने का प्रयास किया। ऐसे षड़यंत्र जिनकी बहाउल्लाह ने बेझिझक और कठोरता से निन्दा की। अंग्रेज़ सरकार का प्रतिनिधि, बग़दाद में पदस्थ कोलोनेल सर आरनोल्ड बर्रो केम्बॉल भी उस स्थान से अनभिज्ञ नहीं था जो बहाउल्लाह ने अब ग्रहण किया था। जैसा कि बहाउल्लाह ने साक्षी दी है, इस प्रतिनिधि ने उनके साथ मित्रवत पत्राचार के माध्यम से ब्रिटेन की नागरिकता की सुरक्षा प्रदान करने का प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए व्यक्तिगत रूप से बहाउल्लाह से भेंट की और महारानी विक्टोरिया को उनकी ओर से ऐसा कोई भी संदेश पहुँचाने की ज़िम्मेदारी ली जिसे बहाउल्लाह चाहते हों। उसने बहाउल्लाह का निवास भारत में या जहाँ कहीं भी वे चाहें, स्थानान्तरित करने की व्यवस्था का उत्तरदायित्व भी लेने की इच्छा व्यक्त की। बहाउल्लाह ने इस सुझाव को अस्वीकार कर दिया और तुर्की के सुल्तान के राज्य में रहने का फैसला किया। और अन्त में, बग़दाद में उनके प्रवास के अंतिम वर्ष के दौरान वहाँ के राज्यपाल नामिक पाशा ने बहाउल्लाह को दिए जाने वाले आदर और सम्मान के कई चिन्हों को देखकर उनसे मिलना चाहा ताकि वह उस महान के प्रति अपना व्यक्तिगत सम्मान दिखा सके जिन्होंने उन लोगों के दिलों और आत्माओं पर पहले ही इतनी स्पष्ट विजय प्राप्त कर ली थी जो उनसे मिल चुके थे। बहाउल्लाह, जिन्हें यह राज्यपाल *इस युग का प्रकाश* मानता था, के प्रति राज्यपाल के मन में इतना सम्मान था कि तीन महीने तक वह उन्हें यह सूचना नहीं दे सका कि तुर्की की सरकार की इच्छा थी कि वे राजधानी के लिए प्रस्थान करें, जबकि इस दौरान उसे इस कार्य के लिए अली पाशा की ओर से एक के बाद एक पाँच आदेश प्राप्त हो चुके थे। एक बार, जब बहाउल्लाह ने

अब्दुल बहा और आक़ा–ए–कलीम को राज्यपाल से मिलने का आदेश दिया, तब उसने बहुत ही विस्तृत समारोह के साथ उनका आदर सत्कार किया, उप–राज्यपाल ने कहा कि जहाँ तक वह जानता था किसी भी राज्यपाल ने शहर के किसी भी प्रतिष्ठित व्यक्ति का इतना प्रेमपूर्ण और विनीत स्वागत कभी नहीं किया था। बग़दाद के उत्तरोत्तर राज्यपालों से बहाउल्लाह के बारे में प्राप्त होने वाली अनुकूल रिपोर्ट से सुल्तान अब्दुल मजीद इतना प्रभावित हो गया था कि वह बहाउल्लाह को फारस सरकार के प्रतिनिधि के हवाले करने या उन्हें तुर्की की सीमा से बाहर भेजने के आदेश जारी करने के फारस सरकार के अनुरोध को लगातार अस्वीकार करता रहा (यह बग़दाद के उप–राज्यपाल द्वारा स्वयं बहाउल्लाह को दी गई व्यक्तिगत गवाही है)।

प्रभुधर्म की शुरूआत के दिनों से अब तक ऐसा कभी नहीं हुआ था कि इस धर्म का कोई भी व्याख्याता लोगों की नज़र में इतना ऊँचा उठा हो या इतने विविध आकार में फैले हुए अपने प्रशंसकों पर इतना दूरगामी और शक्तिशाली प्रभाव डाला हो, यहाँ तक कि उन दिनों में भी ऐसा नहीं हुआ था जब इस्फहान, तबरीज़ और चिहरिक की उत्साहित जनता ने बाब के स्वागत में उनकी जयजयकार की थी। प्रभुधर्म के उस प्रारम्भिक दौर में जब बहाउल्लाह बग़दाद में निवास करते थे, तब यद्यपि लोगों पर उनका आधिपत्य बेमिसाल था, फिर भी जो प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि प्रभुधर्म ने इसी युग के अन्त में और बहाउल्लाह की संविदा के केन्द्र की तात्कालिक प्रेरणा के द्वारा यूरोप और अमेरिका के महाद्वीपों में प्राप्त की थी उसकी तुलना में इस आधिपत्य का आकार कम था।

जो प्रभुत्व बहाउल्लाह ने प्राप्त किया था वह और कहीं भी उतना स्पष्ट प्रदर्शित नहीं हुआ था जितना कि उनकी उस योग्यता में जिसके द्वारा उन्होंने उस समुदाय जिसके वे सदस्य थे, के ज्ञान को विस्तार दिया और इसके चरित्र को परिवर्तित किया। यद्यपि वे स्वयं भी बाबी कहलाए जाते थे और बयान के आदेश अब भी बाध्यकारी और पवित्र माने जाते थे, फिर भी बहाउल्लाह ने बाबियों के मन में ऐसे मानदण्ड बैठा दिए जो, हालाँकि बाबी सिद्धान्तों से अलग नहीं थे, फिर भी नैतिकता में ये उन सिद्धान्तों से उच्च थे जो बाबी विधान द्वारा

स्थापित किए गए थे। साथ ही वे हितकारी और आधारभूत सच्चाईयाँ जिनका समर्थन बाब ने किया था और जो या तो धुँधली पड़ गईं थीं या जिनसे ध्यान हटा लिया गया था अथवा जिन्हें ग़लत ढंग से पेश किया गया था उन्हें बहाउल्लाह ने स्पष्ट किया, उनकी पुष्टि की और इन्हें ताज़गी प्रदान करके समुदाय के सामूहिक जीवन में और उन व्यक्तियों की आत्मा में भर दिया, जिनसे यह समुदाय बना था। किसी भी प्रकार की राजनीतिक गतिविधियों तथा गुप्त संघों और उपद्रवी दलों से बाबी धर्म का अलगाव; अहिंसा के सिद्धान्त पर दिया गया बल; संस्थापित प्राधिकरण की आज्ञाओं का कड़ाई से पालन करने की आवश्यकता; सभी प्रकार के विद्रोह, परनिन्दा, प्रतिहिंसा और विवाद पर लगाया गया प्रतिबंध; आध्यात्मिकता, दयालुता, विनम्रता और साधुत्व, ईमानदारी, सच्चाई, पवित्रता, वफादारी, न्याय, सहनशीलता, संसर्गशीलता, मित्रता, एकता, कला तथा विज्ञान का ज्ञान प्राप्त करने, आत्मत्याग और अनासक्ति, धैर्य, दृढ़ता और ईश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण पर दिया गया बल – ये सभी उस नैतिक आचारसंहिता की मुख्य विशेषताएँ थीं जिनकी स्पष्ट साक्षी वे पुस्तकें, टिप्पणियाँ और पातियाँ देती हैं जो उन वर्षों के दौरान बहाउल्लाह की अदम्य लेखनी द्वारा प्रकट की गई थी।

उस अवधि में अपनी कड़ी मेहनत के स्वरूप और परिणामों के बारे में स्वयं बहाउल्लाह ने लिखा है, *"ईश्वर की सहायता, उसकी दिव्य कृपा एवं दया के द्वारा हमने मूसलाधार वर्षा की तरह अपने श्लोक प्रकट किए और इन्हें दुनिया के विभिन्न भागों में भेजा। अपने विवेकयुक्त उपदेशों और प्रेममय चेतावनियों के माध्यम से हमने सभी मनुष्यों को और विशेषकर इस समुदाय के लोगों को शिक्षा दी और उन्हें विद्रोह, लड़ाई, विवाद या संघर्ष न करने के आदेश दिए। इसके परिणामस्वरूप, और ईश्वर की कृपा के द्वारा स्वेच्छाचारिता और अज्ञानता, ईश्वरभक्ति और ज्ञान में बदल गए तथा युद्ध के हथियार शान्ति के साधन बन गए।"* अब्दुल बहा ने पुष्टि की है कि *"सुलेमानिया से अपनी वापसी के बाद, बहाउल्लाह ने इस समुदाय को शिक्षित और प्रशिक्षित करने के लिए, इसके चरित्र को सुधारने की, इसके क्रियाकलापों को दुरुस्त करने और इसके सौभाग्य को पुनः स्थापित करने के लिए इतनी कड़ी मेहनत की कि थोड़े*

ही समय में ये सभी बुराईयाँ समाप्त हो गईं और लोगों के दिलों में अत्यन्त शान्ति और सुस्थिरता छा गई।" और आगे : *"जब इन लोगों के दिलों में ये आधारभूत सिद्धांत बैठ गए, तब सभी जगह वे ऐसा व्यवहार करने लगे कि सत्ता में रहने वाले लोगों की दृष्टि में वे अपने चरित्र की अखण्डता, अपने दिलों की दृढ़ता, अपने इरादों की पवित्रता, अपने कर्मों की प्रशंसनीयता तथा अपने आचरण की उत्कृष्टता के कारण मशहूर हो गए।"*

उस अवधि में प्रकट की गई बहाउल्लाह की शिक्षाओं के उदात्त स्वरूप का सबसे श्रेष्ठ उदाहरण है उनकी यह निम्नलिखित बात जो उन्होंने एक ऐसे अधिकारी से कही थी जिसने उन्हें यह रिपोर्ट दी थी कि चूँकि एक अपराधी ने बहाउल्लाह में अपना विश्वास व्यक्त किया था, इसलिए वह उसे उस अपराध की सज़ा देने से हिचकिचा रहा था जिसके वह लायक था : *"उससे कहो, कि इस दुनिया में कोई भी मेरा होने का दावा नहीं कर सकता सिवाय उनके जो अपने सभी कर्मों और अपने आचरण में, मेरा अनुसरण इस प्रकार करते हैं कि धरती के सभी लोग उन्हें वह कहने और करने से न रोक सकें, जो उचित और शोभनीय हो।"* आगे उन्होंने उस अधिकारी को यह बताया कि, *"मेरा यह भाई, यह मिर्ज़ा मूसा जो कि उसी माता–पिता की संतान हैं जिनसे मैं हूँ और जो बचपन से ही मेरे साथ रहा है, यदि ऐसा कोई काम करता है जो राज्य अथवा धर्म के हितों के विरूद्ध है और तुम्हारी दृष्टि में उसका गुनाह सिद्ध हो जाता है, तब यदि तुम उसके हाथ बाँधकर उसे नदी में डूबने के लिए भी फेंक दोगे तो मुझे दुःख नहीं होगा और मैं तुम्हारे इस कार्य को उचित समझूँगा और उसकी ओर से किसी भी प्रकार का बीचबचाव अस्वीकार कर दूँगा।"* एक अन्य मामले में, सभी प्रकार के हिंसक कृत्यों की कड़ी निन्दा करते हुए उन्होंने लिखा था कि, *"यदि कोई व्यक्ति किसी आत्मा को दुःखी करने की अपेक्षा, मेरे किसी बेटे या परिवारजन को दुःख देता है तो यह मेरी दृष्टि में अधिक स्वीकार्य होगा।"*

बग़दाद के सुधरे हुए बाबी समुदाय को प्रेरित करने वाले उत्साह का वर्णन करते हुए नबील लिखते हैं कि, *"बहाउल्लाह के आसपास रहने वाले अधिकांश लोग अपने चरित्र और आत्मा को पवित्र और शुद्ध करने के लिए*

इतनी सावधानी बरतते थे कि वे अपने मुख से एक भी ऐसा शब्द नहीं निकालते थे जो ईश्वर को पसंद नहीं था, न ही वे ऐसा एक भी कदम उठाते थे जो उसकी सुप्रसन्नता के विपरीत हो।" नबील लिखते हैं कि, "प्रत्येक व्यक्ति ने किसी न किसी एक सह–अनुयायी के साथ एक समझौता किया था, जिसके तहत यह तय किया गया था कि यदि उन दोनों में से जो कोई भी उन उच्च सिद्धान्तों को तोड़ता है जिनका पालन करने की उन्होंने सौगंध ली थी, तो वे एक–दूसरे को सावधान करेंगे और आवश्यकता पड़ने पर सज़ा के रूप में पैरों के तलवों पर बेतों से वार भी करेंगे जिसकी संख्या अपराध की गम्भीरता के अनुसार निर्धारित की जायेगी।" उनके उत्साह के जोश का वर्णन करते हुए नबील कहते हैं कि,*"जब तक कि अपराधी उस सज़ा को भुगत नहीं लेता था जिसका वह हकदार था तब तक वह भोजन–पानी को हाथ भी नहीं लगाता था।"*

बहाउल्लाह के लिखित और मौखिक शब्दों के माध्यम से, उनके साथियों के दृष्टिकोण और चरित्र में आने वाला बदलाव उस तीव्र भक्ति से संयोग रखता था जो बहाउल्लाह के प्रेम ने उनकी आत्माओं में उत्पन्न कर दी थी। जिस उत्साह और जोश ने बग़दाद के निवार्सित अनुयायियों के दिलों को अब वश में कर लिया था और उनके पूरे अस्तित्व को अपार शक्ति से भर दिया था, वह उस उत्साह से भी अधिक था जो बाब के अनुयायियों के सबसे उमंग भरे पलों में उनके दिलों में इतनी तीव्रता से भड़क रहा था। आध्यात्मिक पुनर्जीवन की इस अत्यन्त गतिशील क्षमता के बारे में नबील ने लिखा है,*"दिव्य प्रकटीकरण की सुबह की मीठी खुशबू से हर व्यक्ति इतना प्रभावित हो गया था कि मुझे ऐसा लगता है कि हर काँटे से भी असंख्य फूल उत्पन्न हो गए और हर बीज से असंख्य फसलें पैदा हो गईं।"* इसी इतिहासकार ने आगे बताया है कि "उस सर्वमहान निवास का वह कमरा जिसे बहाउल्लाह के मिलने वालों के लिए अलग रखा गया था, यद्यपि वह टूटा–फूटा था और एक लम्बे समय से अपनी उपयोगिता खो चुका था, फिर भी उस परम प्रिय के चरण पड़ने के कारण सर्वोच्च स्वर्ग से बराबरी का दावा कर रहा था। हालाँकि इस कमरे की छत नीची थी, फिर भी ऐसा लगता था मानो यह सितारों को छू रही हो और यद्यपि इसमें खजूर के पेड़ की शाखाओं से बनी एक मात्र वह खाट थी जिस पर वे

विराजमान हुआ करते थे जो नामों के सम्राट हैं, फिर भी यह कमरा राजकुमारों के दिलों को एक चुम्बक की तरह अपनी ओर आकर्षित कर लेता था।"

यही वह स्वागत कक्ष था जिसने अपनी सादगी के बावजूद, शुजाउद–दौलिह (शुजाउदौला) को इतना आकर्षित कर लिया था कि उसने अपने साथी राजकुमारों को बताया था कि काज़मियान के अपने निवास में वह भी ऐसा ही कमरा बनवायेगा। कहा जाता है कि बहाउल्लाह ने यह जानने पर मुस्कुराते हुए कहा था कि, *"निःसन्देह वह बाहरी तौर पर मिट्टी और भूसे से बना, छोटे से बगीचे वाला वैसा ही एक कमरा बनाने में सफल हो सकता है। लेकिन इस पर ईश्वर के छिपे हुए लोगों तक पहुँचाने वाले उन आध्यात्मिक दरवाज़ों को खोलने की उसकी क्षमता का क्या होगा।"* एक अन्य राजकुमार, ज़ैनुल आबदीन खान ने उस स्वागत कक्ष के वातावरण का वर्णन करते हुए इस बात की पुष्टि की थी कि, *"मुझे ऐसा लगता है कि यदि दुनिया के समस्त दुःख मेरे दिल में भर दिए जाते, तब भी बहाउल्लाह की उपस्थिति में आकर वे सभी लुप्त हो जाते। मानो जैसे मैंने स्वर्ग में ही प्रवेश पा लिया हो।"*

खुशियों से भरा सहभोज, ये साथी, अपनी बहुत कम आय के बावजूद अपने परम प्रिय के सम्मान में अर्पित करते थे; देर रात तक चलने वाले वे समारोह, जिनमें वे उच्च स्वर में प्रार्थनाएँ, कविताएँ और गीत गाकर बाब, कुद्दूस और बहाउल्लाह का गुणगान करते थे; वे उपवास जो ये रखते थे; वे रात्रि जागरण जो ये करते थे; वे स्वप्न और दिव्यदर्शन जिनसे इनकी आत्माएँ प्रज्वलित हो उठती थीं और जो वे एक–दूसरे को अपार उत्साह की भावना के साथ बताते थे; वह उत्सुकता जिससे बहाउल्लाह की सेवा में रहने वाले उनके व्यक्तिगत कार्य करते थे तथा उनकी प्रार्थना–सम्बन्धी एवं अन्य घरेलू आवश्यकताओं के लिए पानी ढोकर लाते थे; वे विवेकहीनता जो ईश्वर के प्रति अत्यन्त गहरे आकर्षण के पलों में ये कभी–कभी दिखला बैठते थे; उनके शब्द और कार्यों को देखने वाली एक ऐसी जनता के आश्चर्य और प्रशंसा की अभिव्यक्तियाँ, जिसने परमानंद और व्यक्तिगत समर्पण का ऐसा प्रदर्शन पहले कभी नहीं देखा था। ये सभी और ऐसे कई अन्य उदाहरण उस यादगार दौर के इतिहास के साथ हमेशा जुड़े रहेंगे जो बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के जन्म की घड़ी से

शुरू हुआ था और इराक छोड़ने की शाम को की गई उनके प्रकटीकरण की घोषणा तक चला था।

असंख्य और अद्‌भुत हैं वे कथाएँ जो उन लोगों द्वारा सुनाई गईं जिन्हें उन हृदयस्पर्शी वर्षों के दौरान, या तो कर्त्तव्य या फिर संयोग अथवा चाहत, बहाउल्लाह के सीधे सम्पर्क में ले आई थी। असंख्य और दिलों को छू लेने वाले हैं उन दर्शकों के साक्ष्य जिन्हें बहाउल्लाह के मुखड़े को देखने का सौभाग्य मिला जिन्होंने उनकी चाल को ध्यान से देखा, जिन्होंने संयोगवश उनकी बातों को तब सुन लिया जब वे शहर की गलियों से गुज़रते थे या नदी के किनारे टहलते थे। असंख्य और मर्मस्पर्शी हैं उन उपासकों की साक्षी जिन्होंने उन्हें मस्जिदों में प्रार्थना करते हुए देखा था; उनके द्वार पर आने वाले और उनके पैरों में बैठने वाले उन भिखारियों, मरीज़ों, वृद्धों और अभागों की साक्षियाँ जिनकी उन्होंने सहायता की थी, जिन्हें उन्होंने आरोग्य प्रदान किया था, जिनका उन्होंने समर्थन किया था और जिन्हें सांत्वना दी थी। असंख्य हैं उन व्यापारियों, शिल्पकारों और दुकानदारों की साक्षियाँ जो उनकी सेवा में उपस्थित रहते और जो उनकी दैनिक ज़रूरतों का सामान उपलब्ध कराते थे, उनके समर्पित सेवकों की साक्षियाँ जिन्होंने उनकी छिपी हुई महिमा के चिन्हों को पहचान लिया था; उनके शत्रुओं की साक्षियाँ जो चकित रह गए थे या जिन्होंने उनकी वाणी की शक्ति या उनके प्रेम के अपनेपन के कारण हथियार डाल दिए थे। असंख्य हैं उन धर्माधिकारियों और आम लोगों, प्रतिष्ठित व्यक्तियों और ज्ञानीजनों की साक्षियाँ जो या तो उनकी प्रभुता को चुनौती देने, या उनके ज्ञान की परीक्षा लेने, या उनके दावों के बारे में जाँच–पड़ताल करने, या अपने अपराध स्वीकार करने, या उस धर्म को स्वीकार करने की घोषणा करने के विचार से उनके पास आये थे, जो बहाउल्लाह ने अपनाया था।

बहुमूल्य स्मृतियों के इस कोष से मेरे उद्देश्य के लिए एक ही घटना की चर्चा करना पर्याप्त होगा जो सैय्यद इस्माईल नाम के ज़वारीह के रहने वाले उनके एक उत्कट प्रेमी के विषय में है। सैय्यद इस्माईल को ज़बीह (त्याग) की उपाधि से सम्मानित किया गया था। एक समय में वे एक जानेमाने, कम बोलने वाले, ध्यान और चिन्तन करने वाले तथा संसार के हर एक बन्धन से मुक्त रहने

वाले ऐसे विद्वान थे जिन्होंने बहाउल्लाह के घर के आंगन की नियमित रूप से झाड़ू लगाने के काम का उत्तरदायित्व स्वयं ही लिया था। वे इस कार्य को करने में बड़ा गर्व महसूस करते थे। अपने पावन वंश की निशानी, अपने हरे रंग के साफे को सिर से खोलकर, वे प्रत्येक दिन भोर के समय असीम धैर्य के साथ, उस साफे से उस आंगन की झाड़ू लगाकर, कंकड़ पत्थर इकठ्ठा कर लेते जिस आंगन पर उनके परम प्रिय के कदम पड़े थे। वे बहाउल्लाह के घर के दरवाज़े से लगी दीवार की ताकों की धूल फूँक कर हटाते और चूँकि उन्हें लगता था कि जिस मिट्टी पर बहाउल्लाह के कदम पड़े हों उस पर किसी अन्य के पैर नहीं पड़ने चाहिए, इसलिए वे इकट्ठी की हुई धूल और कंकड़ पत्थर को उठाकर बहुत दूर नदी में बहा आते थे। आगे चलकर जब वे अपनी आत्मा में उमड़ रहे प्रेम के सागर को बाँध नहीं पाए तब स्वयं चालीस दिन तक अपने आप को नींद और भोजन से वंचित रखने के बाद, एक दिन बहाउल्लाह के आँगन की धूल साफ करने की अपनी सबसे प्रिय सेवा को अन्तिम बार अर्पित करके, वे काज़मियान की ओर जाने वाले मार्ग पर नदी किनारे गए, वहाँ प्रार्थना की फिर बगदाद की ओर मुड़कर दंडवत करते हुए एक उस्तरे से अपना गला काट लिया, फिर उसे अपनी छाती पर रखा और स्वर्गारोहण कर गए। (हि.स. 1275)

केवल एक ज़बीह ही नहीं थे जिन्होंने ऐसा करने की ठानी थी और अपने निर्णय को परिणाम तक पहुँचाने का दृढ़ निश्चय किया था। यदि बहाउल्लाह तुरन्त हस्तक्षेप न करते और बग़दाद में निवास करने वाले शरणार्थियों को तत्काल उनके मूल देश लौट जाने के आदेश न देते, तो ऐसे कई अन्य लोग थे जो ज़बीह की तरह अपने प्राण त्याग देने के लिए तैयार बैठे थे। जब यह निश्चित रूप से सिद्ध हो गया कि ज़बीह ने आत्महत्या की थी, तो उसके बाद शासन के अधिकारी उस धर्म को अनदेखा न कर सके जिसके मार्गदर्शक अपने प्रेमियों को इतने अनूठे समर्पण के लिए प्रेरित कर सकते थे और उनके दिलों को इस कदर काबू में कर सकते थे। इस घटना से बग़दाद के कुछ भागों में उत्पन्न होने वाले डर से अवगत होने पर, कहा जाता है कि बहाउल्लाह ने यह टिप्पणी की थी कि :*"सैय्यद इस्माइल में ऐसी शक्ति और बल था कि यदि उसे*

दुनिया के सभी लोगों का सामना करना पड़ता, तो भी वह निश्चित रूप से उन पर अपनी प्रभुता स्थापित कर लेता।" कहा जाता है कि इसी ज़बीह के सन्दर्भ में, जिन्हें बहाउल्लाह ने *"शहीदों के सम्राट और प्रिय"* की उपाधि से सम्मानित किया था, बहाउल्लाह ने कहा था : *"धरती पर अब तक इतना पवित्र खून नहीं बहा, जितना पवित्र जबीह का खून था।"*

इन मर्मस्पर्शी घटनाओं में से अधिकांश को अपनी आँखों से देखने वाले नबील की लेखनी से निकले एक और साक्ष्य के अनुसार "बहाउल्लाह की उपस्थिति के प्याले का पान करने वाले लोग इतने मदमस्त थे कि उनकी दृष्टि में राजाओं के महल मकड़ी के जाले से भी अधिक क्षणभंगुर थे.....। जो उत्सव और भोज इन लोगों द्वारा मनाये जाते थे, वे ऐसे थे कि धरती के सम्राटों ने स्वप्न में भी नहीं देखे थे।" नबील बताते हैं कि, "स्वयं मैं और दो अन्य लोग एक ऐसे कमरे में रहते थे जिसमें कोई फर्नीचर नहीं था। एक दिन बहाउल्लाह इस कमरे में आए और अपने आसपास देखते हुए बोले, 'इस कमरे का खालीपन मुझे पसंद है। मेरी दृष्टि में यह कई विशाल महलों से अधिक पसंद करने योग्य है, क्योंकि इसमें ईश्वर के प्रिय, ऐसे हृदयों से उस अतुलनीय मित्र की आराधना करने में व्यस्त रहते हैं जो इस संसार के कूड़े से पूरी तरह खाली हैं।" स्वंय उनके जीवन में भी उसी कठोर नियम की प्रधानता थी और उनका जीवन भी वही सादगी दर्शाता था जो उनके प्रिय साथियों के जीवन की विशिष्टता थी। अपनी एक पाती में वे स्वयं इस बात की पुष्टि करते हैं कि, *"इराक में एक ऐसा समय भी था जब प्राचीन सौन्दर्य..... के पास एक ही जोड़ी कपड़े थे। जो एक कमीज़ वे पहना करते थे, वही धोकर, सुखाकर दोबारा पहनी जाती।"*

स्वयं को ही भुला देने वाले उन साथियों के जीवन का वर्णन करते हुए नबील आगे बताते हैं कि, "लगभग दस लोग कई रातों तक केवल एक पैसे के खजूर से ही गुजारा कर लेते थे। कोई नहीं जानता था कि वहाँ पड़े हुए जूते और वहाँ टंगे हुए लबादे वास्तव में किसके थे। बाजार जाने वाला कोई भी व्यक्ति यह दावा कर सकता था कि जो जूते वह पहने हुए था, वे उसी के थे और बहाउल्लाह की उपस्थिति में प्रवेश करने वाला प्रत्येक व्यक्ति इस बात को

निश्चित रूप से कह सकता था कि उस समय जो कपड़े उसने पहने थे, वे उसी के हैं। इन लोगों को अपने नाम तक याद नहीं थे, उनके दिल सिवाय उनके प्रिय की आराधना के अन्य सब से खाली हो गए थे.....। ओह, कितने आनन्द से ओतप्रोत थे वे दिन और कितने हर्ष और आश्चर्य से भरे थे वे क्षण।"

जिस काल की हम समीक्षा कर रहे हैं, उसी काल की एक और विशेषता है। सुलेमानिया से बहाउल्लाह की वापसी के बाद उनके लेखों की क्षमता और संख्या में विशाल विस्तार। चाहे बहाउल्लाह के लेख पातियों के रूप में रहे हों या सत्योपदेशों, टिप्पणियों, पक्ष–समर्थन, व्याख्यानों, भविष्यवाणियों, प्रार्थनाओं, कविताओं या विशेष पातियों के रूप में, लेकिन उन वर्षों के अंतर्गत उनकी लेखनी से प्रवाहित होने वाले श्लोकों ने बाबी समुदाय के सुधार और प्रगतिशील विकास में, इसके दृष्टिकोण के विस्तार में, इसकी गतिविधियों के फैलाव में, तथा इसके सदस्यों के मन–मस्तिष्क को प्रकाशित करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। स्वयं बहाउल्लाह ने इन लेखों का वर्णन *"प्रचुर वर्षा"* जैसे शब्दों में किया है। यह अवधि इतनी फलप्रदायक थी कि, नबील जो उन दिनों बग़दाद में निवास करते थे, की पुष्टि के अनुसार बहाउल्लाह के एकान्तवास से लौटने के बाद के दो वर्षों के दौरान, उनके होठों से दिन–रात प्रवाहित होने वाले ऐसे श्लोक जिन्हें लिखा नहीं जा सका था, लगभग कुरान के बराबर थे ! जहाँ तक उन श्लोकों का प्रश्न है जो या तो उन्होंने लिखवाए थे या स्वयं लिखे थे, उनकी संख्या उनकी विषय–वस्तु की सम्पन्नता, या उन विषयों की विविधता से कुछ कम उल्लेखनीय नहीं थी जिनके बारे में वे लिखे गए थे। बहुत दुःख की बात है कि इन लेखों का एक विशाल और वास्तव में महानतर हिस्सा, आने वाली पीढ़ियों के लिए खो चुका है। जैसा कि नबील ने बताया है और बहाउल्लाह के लिपिक, मिर्ज़ा आक़ा जान जैसे अधिकृत व्यक्ति ने स्वयं इस बात की पुष्टि की है कि बहाउल्लाह के स्पष्ट आदेशानुसार, उनके स्वयं के हाथों से लिखे गए लाखों श्लोकों को मिटा दिया गया और नदी में बहा दिया गया। मिर्ज़ा आक़ा जान ने नबील को बताया था कि जब बहाउल्लाह ने देखा कि उनके इस आदेश का पालन करने की मेरी इच्छा नहीं थी, तब मुझे आश्वासन देते हुए उन्होंने कहा : 'इस समय ऐसा कोई नहीं है जो इस स्वर

माधुर्य को सुनने योग्य हो।'.....एक या दो बार नहीं, बल्कि अनगिनत बार बहाउल्लाह ने मुझे इन लेखों को नष्ट करने का आदेश दिया।" शीराज़ के रहने वाले मुहम्मद करीम नाम के एक व्यक्ति ने अपनी आँखों से देखा था कि बाब कितनी तेज़ी के साथ और किस ढंग से उन श्लोकों को प्रकट करते थे जिनसे ईश्वर ने उन्हें प्रेरित किया था। इसी मुहम्मद करीम ने उन दिनों बहाउल्लाह की उपस्थिति में प्रवेश प्राप्त किया और जब उसने अपनी आँखों से वह देखा जिसे वह उस प्रतिज्ञापित ईश्वरावतार के ध्येय का एकमात्र सबूत मानता था, तो वह आने वाली पीढ़ियों के लिए निम्नलिखित प्रमाण दे गया : "मैं साक्षी देता हूँ कि बहाउल्लाह द्वारा प्रकट किए गए श्लोक, उनके लिखे जाने की तेज़ गति में, उनके प्रवाहित होने की आसानी में, उनकी स्पष्टता में, उनकी गहराई और मिठास में, उन श्लोकों से अधिक श्रेष्ठ थे जो मैंने स्वयं बाब की लेखनी से बरसते हुए देखे हैं जब मैं उनकी उपस्थिति में था। यदि इस दुनिया और इसके लोगों की दृष्टि में अपनी महानता सिद्ध करने का बहाउल्लाह के पास कोई और साक्ष्य न होता, तो यही काफी था कि उन्होंने ऐसे श्लोक प्रकट किए जो इस दिवस में उनकी लेखनी से प्रवाहित हुए हैं।"

बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के महासागर से निकलने वाले अनमोल खज़ानों में सर्वप्रथम है *किताब–ए–ईक़ान* (आस्था की पुस्तक), जिसे उसी काल (हि.स. 1278–ई. सन् 1862) के अन्त में, दो दिन और दो रातों की अवधि में प्रकट किया गया था। बाब ने विशेष रूप से यह कहा था कि वह प्रतिज्ञापित अवतार, फारसी 'बयान' के अधूरे व्याख्यान को पूरा करेंगे। अतः बाब की भविष्यवाणी को पूरा करते हुए तथा बाब के मामा हाजी मिर्ज़ा सैय्यद मुहम्मद – जो कि तब बाबी नहीं थे – द्वारा बहाउल्लाह से पूछे प्रश्नों के उत्तर में *किताब–ए–ईकान* लिखी गई थी। उन दिनों बाब के मामा अपने भाई हाजी मिर्ज़ा हसन अली के साथ करबला प्रवास पर आये थे। यह पुस्तक फारसी गद्य का आदर्श है, इसकी रचना शैली मौलिक होने के साथ–साथ विशुद्ध, शक्तिशाली भी है, और उल्लेखनीय रूप से स्पष्ट है। तर्क में अकाट्य होने के साथ–साथ, अपनी वाक्य–शक्ति के प्रभाव में अद्वितीय है, यह पुस्तक ईश्वर की महान योजना की रूपरेखा प्रस्तुत करती है। बहाउल्लाह के पवित्रतम ग्रंथ

किताब–ए–अक़दस को छोड़कर शेष बहाई साहित्य की सम्पूर्ण विविधता में उपलब्ध किसी भी लेख की तुलना में यह पुस्तक अतुलनीय है। बहाउल्लाह के ध्येय की उद्घोषणा की शाम को प्रकट की जाने वाली इस पुस्तक ने मानवजाति को वह *"चुनिन्दा मुहरबंद मदिरा"* अर्पित की है जिसकी मुहर *"कस्तूरी"* की है और जिसने उस *"पुस्तक"* की *"मुहरों"* को तोड़ दिया जिनका उल्लेख डेनियल द्वारा किया गया था, और जिसने उन *"शब्दों"* के अर्थ प्रकट कर दिए जिनका *"अन्त समय"* तक *"गुप्त रहना"* नियत था।

यह पुस्तक दो सौ पृष्ठों में ईश्वर के अस्तित्व और उसकी एकता की स्पष्ट रूप से घोषणा करती है; ईश्वर जो अज्ञात है, अगम्य है, अनन्त है, सर्वज्ञ है, सर्वव्यापी है, सर्वशक्तिशाली है और समस्त प्रकटीकरणों का स्रोत है; यह धार्मिक सत्य की सापेक्षता और दिव्य प्रकटीकरणों की निरन्तरता का दृढ़ता से दावा करती है; अवतारों की एकता, उनके संदेश की सार्वभौमिकता, उनकी आधारभूत शिक्षाओं की एकरूपता, उनके ग्रंथों की पवित्रता तथा उनके स्थान के दोहरे स्वरूप की पुष्टि करती है; यह हर युग के धर्माचार्यों और विद्वानों के अन्धेपन और भ्रष्टता की भर्त्सना करती है; न्यू टेस्टामेंट के दृष्टांकित उद्धरणों, कुरान के गूढ़ श्लोकों तथा मुहम्मद की उन रहस्यमयी परम्पराओं के दृष्टान्त देती है और इन्हें समझाती है, जिनके कारण सदियों से ऐसी गलतफहमियों, सन्देहों और शत्रुता को बढ़ावा मिला है जिन्होंने विश्व की जानी–मानी धार्मिक व्यवस्थाओं के अनुयायियों को एक–दूसरे से अलग कर दिया है और एक–दूसरे से दूर रखा है; यह पुस्तक उन अत्यावश्यक पूर्वापेक्षाओं का वर्णन करती है जो हर उस सच्चे जिज्ञासु के लिए ज़रूरी है, जो अपनी खोज के लक्ष्य को पाना चाहता है; यह बाबी प्रकटीकरण की वैधता, उदात्तता और महत्व को प्रमाणित करती है; बाब के अुनयायियों की वीरता और अनासक्ति की जयजयकार करती है; जिस प्रकटीकरण का वचन बयान के लोगों के साथ किया गया था उस प्रकटीकरण की विश्वव्यापी विजय की भविष्यवाणी करती है और उसका पूर्वाभास कराती है; पवित्र मेरी की पवित्रता और बेगुनाही का समर्थन करती है; मुहम्मद के धर्म के इमामों की प्रशंसा करती है; इमाम हुसैन की शहादत का गुणगान करती है और इमाम हुसैन के आध्यात्मिक प्रभुत्व की

प्रशंसा करती है;*"वापसी, "पुनर्जीवन", "अवतारों की मुहर"* तथा *"न्याय का दिवस"* जैसे सांकेतिक शब्दों के अर्थ प्रकट करती है; दिव्य प्रकटीकरण के तीन चरणों की रूपरेखा प्रस्तुत करती है और इनके बीच अन्तर बताती है; और प्रशंसा से भरे शब्दों में *"ईश्वर की उस नगरी"* की व्याख्या करती है जिसे मानवजाति के मार्गदर्शन, हित और मुक्ति के लिए निर्धारित अन्तरालों में उस अन्नदाता के विधान द्वारा नवीनीकरण किया जाता है। यह दावा करना बिल्कुल उचित होगा कि बहाई प्रकटीकरण के लेखक द्वारा प्रकट की गई सभी पुस्तकों में, इस पुस्तक ने अकेले ही दुनिया के महान धर्मों के अनुयायियों को ऐसे अलंघनीय रूप से अलग करने वाले सदियों पुराने अवरोधों को मिटा दिया है और इनके बीच सम्पूर्ण और स्थायी पुनःमित्रता की एक ऐसी विस्तृत नींव रख दी है जिस पर आक्रमण करना असम्भव है।

अनमोल खज़ानों के इस अनूठे भण्डार के बाद अगला स्थान उन रत्न–समान वचनों के उत्कृष्ट संग्रह, बहाउल्लाह के उन *"निगूढ़ वचनों"* का है जिन्हें प्रकट करने की प्रेरणा उन्हें तब प्राप्त हुई थी जब वे टिगरीस नदी के किनारे ध्यान में डूबे हुए टहल रहे थे। हि.स. 1274 में प्रकट किए गए ये वचन कुछ फारसी और कुछ अरबी में हैं। मूल रूप से इन्हें *"फातिमा की रहस्यमय पुस्तक"*, की उपाधि प्रदान की गई थी और इनके लेखक द्वारा इन्हें उसी नाम की एक ऐसी पुस्तक के साथ जोड़ा गया था, जिसके बारे में शिया इस्लाम का मानना है कि यह पुस्तक उस चिर प्रतीक्षित काईम के पास है तथा इस पुस्तक में सांत्वना के वे शब्द उपलब्ध हैं जो ईश्वर के आदेश से ईश्वर के देवदूत जिब्राईल ने फातिमा को सम्बोधित किए थे एवं इमाम अली को लिखवाए थे और इनका एकमात्र उद्देश्य था फातिमा के उत्कृष्ट पिता के स्वर्गारोहण के पश्चात घोर दुःख की घड़ी में उन्हें दिलासा देना। मानव मस्तिष्क की सोच को बदलने, उनकी आत्माओं की उन्नति और उनके आचरण के सुधार के लिए मानव जीवन में भर गए इस आध्यात्मिक उत्प्रेरण के महत्व को इसके उस स्वरूप के वर्णन से आंका जा सकता है जो इसके लेखक द्वारा प्रकट किए गए पहले उद्धरण में दिया गया है : *"यह वह सार है, जो गरिमा के साम्राज्य से उतरा है, बल और शक्ति की वाणी से उच्चारित हुआ और प्राचीन युग के अवतारों के लिए प्रकट*

किया गया है, हमने इसके अन्तर्निहित तत्व को लिया है और इसे संक्षिप्तता का वस्त्र पहनाया। इसे हमने धर्मपरायण लोगों को अपनी कृपा के चिन्हस्वरूप प्रदान किया ताकि वे महान संविदा के प्रति निष्ठावान बनें, अपने जीवन में उस महान के विश्वास को सार्थक करें और आभालोक में पहुँचकर दिव्य गुणों का रत्न प्राप्त करें।"

बहाई विधान के संस्थापक के सैद्धान्तिक और नैतिक लेखों में अद्वितीय स्थान रखने वाली और विश्व के साहित्य में उत्कृष्ट योगदान देने वाली इन दोनों पुस्तकों के साथ, उसी अवधि के दौरान एक ऐसा लेख जोड़ दिया गया जिसे बहाउल्लाह की महानतम रहस्यमय रचना मानना उपयुक्त होगा। इस लेख को *"सात घाटियाँ"* की उपाधि दी गई और बहाउल्लाह ने इसे शेख मुहियुद्दीन के प्रश्नों के उत्तर में लिखा था। इसमें वे उन सात चरणों का वर्णन करते हैं जो एक जिज्ञासु की आत्मा को अपने अस्तित्व के लक्ष्य को पाने के लिए पार करने होते हैं।

विद्वान शेख अब्दुर रहमान–ए–करकुटी को सम्बोधित किया गया *"चार घाटियाँ"*, नाम का पत्र; *"पवित्र नाविक की पाती"*, जिसमें बहाउल्लाह उन कठोर कष्टों के बारे में भविष्यवाणी करते हैं जो भविष्य में उन पर बरसने वाले थे; *"लौह–ए–हुरिये"* (सेविका की पाती), जिसमें बहुत आगे के भविष्य की घटनाओं की पूर्वसूचना दी गई है; रिज़वान के पहले दिन प्रकट की गई *"सूरि–ए–सब्र"* (धैर्य की सुरिह), जिसमें वाहीद और नैरीज़ के साथ कष्ट उठाने वाले उनके साथियों की प्रशंसा की गई है; कुरान के सुराओं के आगे लगने वाले अक्षरों पर की गई टिप्पणी; शेख अहमद–ए–एहसाई के लेखों में उल्लेखित 'वाव' अक्षर की तथा सैय्यद काज़िम रश्ती के लेखों के गूढ़ उद्धरणों की व्याख्या; "लौह–ए–मदीनातुत–तौहीद" (एकता की नगरी की पाती); "साहफिय–ए–शत्तीयीह"; "मुसीबत–ए–हुरूफत–ए–अतियत"; "तफसीर–ए–हू"; "जवाहिर उल–असरार और धर्मपत्रों, कविताओं, धार्मिक उपदेशों, विशेष पातियों, टिप्पणियों और प्रार्थनाओं के रूप में अन्य असंख्य लेखों में से प्रत्येक ने, अपने ही ढंग से *"अनन्त जीवन की उन धाराओं"* के उमड़ने में योगदान दिया जो *"शान्ति के आवास"* से बरस रही थीं। इसके साथ ही, फारस एवं इराक

में बाब के धर्म के विस्तार को प्रोत्साहन देते हुए लोगों को एक नया जीवन दिया तथा अनुयायियों के चरित्र को बदल दिया।

बहाउल्लाह की बढ़ती हुई शक्ति की पहुँच और शान के स्पष्ट साक्ष्य; उनकी तेज़ी से बढ़ती हुई प्रसिद्धि; बग़दाद से लेकर फारस के दूर–दराज के नगरों और गाँवों में रहने वाले उनके साथियों के दृष्टिकोण और चरित्र में बहाउल्लाह द्वारा अपने नियमों और उदाहरण के माध्यम से लाया गया आश्चर्यजनक परिवर्तन; उनके साथियों के हृदयों में उनके प्रति प्रेम की धधकती हुई ज्वाला; उनकी लेखनी से दिन–रात प्रवाहित होने वाले विलक्षण लेखों की संख्या – इन सभी बातों ने निश्चित तौर पर उनके शिया और सुन्नी शत्रुओं के हृदय में जलती हुई शत्रुता की आग को हवा देकर और भी भड़का दिया। अब, जबकि बहाउल्लाह का निवास शिया इस्लाम के दुर्ग के निकट आ चुका था और वे स्वयं भी लगभग प्रतिदिन उन कट्टर तीर्थयात्रियों के साथ सीधे सम्पर्क में आने लगे थे जो नज़फ, करबला और काज़मियान जैसे पावन स्थलों में भीड़ लगाने लगे थे, तब बहाउल्लाह की महिमा की बढ़ती हुई चमक और धार्मिक कट्टरपन की अंधकारमय एवं मोर्चाबंद ताकतों के बीच की टक्कर को और टाला नहीं जा सकता था। बाबियों की फिर से जीवित होने वाली गतिविधियों से उकसाई गई घृणा, डर, तथा ईर्ष्या और अधिक तेज हो गई, एक ऐसी ज्वलनशील सामग्री बन गई जिसे जलाने के लिए केवल एक चिंगारी की ज़रूरत थी और यह चिंगारी शेख अब्दुल हुसैन नाम के एक ऐसे व्यक्ति ने लगा दी जो एक ऐसा धोखेबाज और ज़िद्दी धर्माधिकारी था जिसके मन में बहाउल्लाह के प्रति ऐसी ईर्ष्या थी कि वह प्रतिष्ठावान लोगों के बीच उपद्रव मचाता था। ऐसे लोगों की भीड़ काज़मियान, करबला और बग़दाद के बाजारों में लगती थी। यह वह व्यक्ति था जिसे बहाउल्लाह ने अपनी पातियों में ऐसा "षड़यंत्रकारी" और "दुष्ट" कहा था, जिसने "अपनी तलवार से ईश्वर के मुखड़े को चुनौती दी थी", जिसकी आत्मा को शैतान ने प्रेरित किया था और जिसके "अधर्म से शैतान भी दूर भागता है", वह "भ्रष्ट" है, जिसके मूल से "समस्त अधर्म, क्रूरता और अपराध उत्पन्न हुआ है।" मुख्य रूप से महामंत्री के प्रयासों से जो उससे पीछा छुड़ाना चाहता था, इस क्लेश फैलाने वाले धर्माधिकारी को शाह ने आदेश दिया था कि

वह करबला शहर के पावन स्थलों की मरम्मत करवाने के लिए वहाँ जाए। इस अवसर की ताक में बैठे हुए इस धर्माधिकारी ने मिर्ज़ा बुज़ुर्ग खान से हाथ मिला लिया जो फारस का नवनियुक्त राजदूत था। मिर्ज़ा बुज़ुर्ग खान जो कि वैसा ही अन्याय करने वाला व्यक्ति था जैसा यह धर्माधिकारी स्वयं था और एक दुष्ट–बुद्धि वाला, झूठा, भविष्य के प्रति लापरवाह और सम्मानरहित और जानामाना नशेबाज था। वह जल्द ही उस ज़हरीले षड़यंत्रकारी से प्रभावित हो गया और उसके षड़यंत्रों का एक माध्यम बन गया।

इन दोनों का पहला संयुक्त प्रयास था, सच्चाई को तोड़–मरोड़कर बग़दाद के राज्यपाल, मुस्तफा पाशा से बहाउल्लाह और उनके साथियों को उनके देश वापस भेज देने का आदेश प्राप्त करना। यह एक ऐसा प्रयास था जो पूरी तरह असफल रहा। स्थानीय शासन के अधिकारियों के हस्तक्षेप के माध्यम से अपने उद्देश्य को पूरा करने के किसी भी प्रयास की नाकामी को देखते हुए, शेख अब्दुल हुसैन ने अपने ऐसे सपनों का बड़े श्रमपूर्वक प्रचार–प्रसार करना शुरू किया, जिन्हें वह पहले गढ़ता था और बाद में जिनकी व्याख्या करता था। इन सपनों की व्याख्या करके उसने एक अन्धविश्वासी एवं बहुत ही आसानी से भड़काई जाने वाली जनता के आवेग को उकसाना शुरू किया। जब उसकी बातों पर किसी ने ध्यान नहीं दिया तो वह क्रोधित हो उठा और जब वह बहाउल्लाह के साथ अपने एक साक्षात्कार की चुनौती में बड़े अपमानजनक ढंग से असफल हो गया तब उसका यह क्रोध और भी भड़क उठा। जहाँ तक मिर्ज़ा बुज़ुर्ग खान का प्रश्न था, तो उसने जनता के निम्नस्तरीय लोगों की शत्रुता को उकसाने के लिए अपने प्रभाव का इस आशा से उपयोग किया कि वह कोई ऐसी प्रतिक्रिया उकसाने में सफल हो जाए जिसके द्वारा बहाउल्लाह पर झूठे आरोप लगाये जा सकें और उन्हें फारस वापस भेज देने के आदेश प्राप्त किए जा सकें। यह प्रयास भी निष्फल सिद्ध हुआ, क्योंकि बहाउल्लाह के शुभचिन्तकों की चेतावनियों और उनके अनुरोध के बावजूद, उन्होंने दिन में या रात में, नगर की सड़कों पर बिना किसी सुरक्षा के अकेले ही आना–जाना जारी रखा। इस प्रकार उनके सताने वालों को भयाकुलता और शर्म में डुबोने के लिए बहाउल्लाह की उपस्थिति ही काफी

थी। उनकी इच्छा से भलीभाँति अवगत बहाउल्लाह उनके पास जाते, उनके इरादों के बारे में उनसे दिल्लगी करते, उनसे हँसी–मज़ाक करते और उन्हें उलझन में डालकर उनके अन्दर यह दृढ़ संकल्प उत्पन्न करके उन्हें छोड़ आते कि वे उन षड़यंत्रों का विचार छोड़ देंगे जो उन के दिमाग़ में घूम रहे थे। वहाँ का राज़दूत तो इस स्तर तक गिर गया कि उसने रज़ा नाम के एक तुर्की अपराधी को एक हजार तुमान के वेतन पर रखकर उसे एक घोड़ा और दो पिस्तौलें देकर यह आदेश दिया कि वह बहाउल्लाह को ढूँढ़ निकाले और उनकी हत्या कर दे, साथ ही उससे यह वादा भी किया कि उसकी स्वयं की सुरक्षा पूरी तरह सुनिश्चित की जायेगी। एक दिन रज़ा को यह पता चला कि उसका शिकार एक सार्वजनिक हमाम में उपस्थित है। उसने बहाउल्लाह की सेवा में उपस्थित बाबियों से नज़र बचाकर, अपने लबादे में छिपी एक पिस्तौल के साथ हमाम में प्रवेश किया और अन्दर के एक कक्ष में बहाउल्लाह के सामने जा खड़ा हुआ, लेकिन वहाँ पहुँचकर उसने अनुभव किया कि उसके पास अपने काम को अंजाम देने का साहस ही नहीं है। कई वर्षों बाद उसने स्वयं बताया कि एक अन्य अवसर पर जब वह बहाउल्लाह की प्रतीक्षा कर रहा था, तब बहाउल्लाह के आते ही वह इतना डर गया कि पिस्तौल उसके हाथ से नीचे गिर गई, इस पर बहाउल्लाह ने आक़ा–ए–कलीम को जो कि उस समय उनके साथ थे, यह आदेश दिया कि उसे उसकी पिस्तौल उठाकर दे दें और उसके घर का रास्ता बता दें।

अपने कपटपूर्ण उद्देश्य को पूरा करने के बार–बार किए गए प्रयासों से निराश होकर शेख अब्दुल हुसैन ने अब अपनी ताकत एक नई दिशा की ओर मोड़ दी। उसने अपने साथी से वादा किया कि यदि वह फारस सरकार को इस बात के लिए मना लेता है कि वह बहाउल्लाह को तेहरान वापस बुलवाकर उन्हें दोबारा कैद में डाल दें तो वह उसे राजदरबार के एक मंत्री का पद दिलवाएगा। वह लगभग प्रतिदिन शाह के निजी सेवकों को रिपोर्ट भेजता रहा। उसने उस प्रभुता का बढ़ा–चढ़ा कर चित्रण किया जो बहाउल्लाह को प्राप्त थी और उनके बारे में कहा कि उन्होंने इराक की बंजारा जाति को अपने अधीन कर लिया था। उसने दावा किया कि बहाउल्लाह उस स्थिति में थे कि अपने आदेश से एक

दिन में एक लाख आदमियों को इकट्ठा करके शस्त्र उठाने के लिए पूरी तरह तैयार कर लें। उसने उन पर आरोप लगाया कि वे फारस के कुछ नेताओं के साथ मिलकर शाह के विरूद्ध विद्रोह करने की योजना बना रहे हैं। ऐसे प्रयासों से उसने तेहरान के अधिकारियों पर इतना दबाव तो डाल ही दिया कि बादशाह उसे सम्पूर्ण अधिकार सौंपे जाने तथा फारस के उलेमाओं और अधिकारियों को उसे हर सम्भव सहायता देने के आदेश जारी करने के लिए सहमत हो जायें। उस शेख ने यह आदेश तुरन्त नज़फ और करबला के धर्माधिकारियों को पहुँचा दिया और उनसे कहा कि वे उसके निवास स्थान–काज़मियान में एक सभा का आयोजन करें। शाह की चापलूसी करके उसका अनुग्रह प्राप्त करने के उत्सुक शेखों, मौलवियों और मुजताहिदों के एक बड़े समूह ने इस आदेश का तुरन्त पालन किया। जब उन्हें बताया गया कि उन्हें किस उद्देश्य से बुलाया गया था, तो उन्होंने निर्वासितों की बस्ती पर ज़िहाद घोषित करने का और उन पर अचानक हमला बोल कर प्रभुधर्म को जड़ से मिटा देने का निश्चय किया। परन्तु उनके आश्चर्य और निराशा का ठिकाना न रहा जब उन्होंने यह पाया कि उनके प्रधान मुजताहिद, प्रख्यात शेख मुर्तज़ा–ए–अन्सारी जो कि अपनी सहनशीलता, विवेक, अचूक न्यायनिष्ठता, साधुता और चरित्र की श्रेष्ठता के लिए जाने जाते थे, को उनके षड़यंत्रों का पता चला तो उन्होंने बाबियों को वांछित दण्ड देने की घोषणा करने से इंकार कर दिया। आगे चलकर "लौह–ए–सुल्तान" में बहाउल्लाह ने इसकी प्रशंसा की है और उनका शुमार *"उन विद्वानों में किया है जिन्होंने वास्तव में त्याग के प्याले से पान किया है"*, और "उनके (बहाउल्लाह के) काम में कभी हस्तक्षेप नहीं किया" जिन्हें अब्दुल बहा ने *"उत्कृष्ट एवं विद्वतापूर्ण धर्माधिकारी, श्रेष्ठ एवं प्रख्यात व्याख्याता, सत्य के अन्वेषकों की मुहर"* कहकर सम्बोधित किया था। यह कहकर कि इस समुदाय के सिद्धान्तों के बारे में उनका ज्ञान पर्याप्त नहीं है और यह दावा करके कि उन्होंने बाबी समुदाय के सदस्यों को ऐसा कोई भी कार्य करते हुए नहीं देखा है जो कुरान के विरूद्ध हो, वे अपने साथियों के विरोध पर ध्यान न देते हुए, सभा से अचानक उठकर चले गए और जो कुछ भी हुआ उसके लिए एक संदेशवाहक के द्वारा बहाउल्लाह के समक्ष अपना खेद व्यक्त करके तथा उनकी सुरक्षा की भक्तिमय कामना करते हुए नज़फ लौट आए।

अपने षड़यंत्रों की असफलता से हताश होकर, परन्तु अपनी शत्रुता में अब भी कठोर रहते हुए, सभा में एकत्रित इन धर्माधिकारियों ने अपनी सच्चाई और विवेक के लिए मशहूर हाजी मुल्ला हसन–ए–अम्मु को अपना प्रतिनिधि बनाकर बहाउल्लाह के पास विभिन्न प्रश्न प्रस्तुत करके उनके उत्तर प्राप्त करने के लिए भेजा। जब ये प्रश्न प्रस्तुत किए गए और इन्हें लाने वाले संदेशवाहक को पूर्ण रूप से सन्तुष्ट करने वाले उत्तर दिए गए तब हाजी मुल्ला हसन ने इस बात की पुष्टि करते हुए कहा कि वहाँ के उलेमा, बहाउल्लाह के अथाह ज्ञान को स्वीकार करते हैं। उन्होंने बहाउल्लाह से अनुरोध किया कि वे अपने ध्येय की सत्यता के प्रमाण के रूप में एक ऐसा चमत्कार दिखाएँ जो सभी को पूरी तरह सन्तुष्ट कर दे। इस पर बहाउल्लाह ने उत्तर दिया, *"यद्यपि ऐसी माँग करने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं क्योंकि ईश्वर को अपने प्राणियों की परीक्षा लेनी चाहिए, प्राणियों को ईश्वर की परीक्षा नहीं लेनी चाहिए, फिर भी मैं इसकी स्वीकृति देता हूँ और यह अनुरोध स्वीकार करता हूँ..... । उलेमाओं को एकत्रित होकर सबकी सहमति से एक चमत्कार चुनना होगा और यह लिखना होगा कि इस चमत्कार के बाद उन्हें मेरे विषय में कोई सन्देह नहीं होगा और वे सभी मेरे धर्म के सत्य को मानेंगे और स्वीकार करेंगे। स्वीकार किए जाने का आधार यह होगा : यदि चमत्कार किया जायेगा तो उनके लिए कोई सन्देह बाकी नहीं रह जायेगा और यदि नहीं, तो हम पर धोखाधड़ी का आरोप लगाया जायेगा।"* अपने चिरकाल से सम्मानित दुर्ग में एकत्रित हुए सबसे उच्च श्रेणी के धर्माधिकारियों को सम्बोधित यह स्पष्ट, चुनौतीपूर्ण और साहसी उत्तर, जिसका उदाहरण किसी भी धर्म के इतिहास में नहीं मिलता है, उन धर्माधिकारियों के संदेशवाहक को इतना सन्तुष्ट कर गया कि वह तुरन्त उठा, बहाउल्लाह के घुटनों को उसने चूमा और उनका संदेश पहुँचाने के लिए चल दिया। तीन दिन बाद उसने यह खबर भेजी कि वह सभा किसी भी निर्णय पर पहुँचने में असफल रही है और उसने मामले को रद्द कर देने का निश्चय किया है। यह एक ऐसा निर्णय था जिसकी जानकारी उस प्रतिनिधि ने फारस के अपने दौरे के दौरान स्वयं ही चारों ओर फैला दी, यहाँ तक कि उसने यह जानकारी उस समय के विदेश मंत्री मिर्ज़ा सईद खान को व्यक्तिगत रूप से दी। बताया जाता है कि जब इस चुनौती को लेकर उनकी प्रतिक्रिया की जानकारी बहाउल्लाह

को दी गई तो उन्होंने यह टिप्पणी की, *"हमारे द्वारा भेजे गए इस सर्वसंतुष्टकर्ता, सर्वव्यापी संदेश के माध्यम से हमने सभी अवतारों के चमत्कारों को प्रकट एवं सिद्ध किया है, क्योंकि हमने चुनने का अधिकार स्वयं इन उलेमाओं के हाथों में सौंप दिया था, और जो कुछ भी उनका निर्णय होता वह प्रकट करने का वचन दिया था।"* आगे चलकर "लौह–ए–सुल्तान" में बहाउल्लाह द्वारा दी गई इसी प्रकार की एक चुनौती के बारे में अब्दुल बहा ने लिखा है कि, *"यदि हम बाईबल के मूलग्रंथ का ध्यानपूर्वक अध्ययन करते हैं, तो हम पाते हैं कि उस दिव्य अवतार ने उन्हें अस्वीकार करने वालों से यह कभी नहीं कहा कि, 'तुम जो भी चमत्कार चाहो, मैं वह करने के लिए तैयार हूँ और मैं तुम्हारे द्वारा प्रस्तावित हर परीक्षा दूँगा।' परन्तु शाह को सम्बोधित की गई पाती में, बहाउल्लाह ने यह स्पष्ट रूप से कहा कि, 'उलेमाओं को एकत्रित करो और मुझे बुलवाओ ताकि प्रमाण और साक्ष्य स्थापित किए जा सकें।'"*

निर्विघ्न, सहनशील और सफल सुगठन के सात साल अब समाप्त होने को थे। एक ऐसा गड़ेरियाविहीन समुदाय, जिसने एक लम्बे समय तक अन्दर और बाहर दोनों ही ओर से घोर उत्पीड़न झेला था और जिसके मिट जाने की पूरी–पूरी सम्भावना थी, अब उसे पुनर्जीवित किया जा चुका था और वह अब उन ऊँचाईयों पर पहुँच चुका था जिसका उदाहरण उसके बीस वर्ष के इतिहास में नहीं मिल सकता था। उसकी नींव सुदृढ़ हो चुकी थी, उसका उत्साह उदात्त था, उसका दृष्टिकोण बदल चुका था, उसका नेतृत्व सुरक्षित किया जा चुका था, उसके आधारभूत सिद्धान्तों को नए ढंग से प्रस्तुत किया गया था, उसकी प्रतिष्ठा बढ़ गई थी, उसके शत्रु परेशान थे, नियति का हाथ उसे धीरे–धीरे उसके विकास के एक और चरण पर ले जा रहा था। वह मुक्तिदाता, वह एकमात्र आशा और इस समुदाय का वास्तव में मान्य नेतृत्वकर्त्ता जिसने अपनी हत्या के इतने सारे षड़यंत्रों के रचने वालों को लगातार विस्मित किया था, जिसने उन सभी कायर सलाहों को तिरस्कारपूर्वक नामंजूर कर दिया था जिनमें उसे खतरे के स्थान से पलायन करने को कहा गया था, जिसने अपने मित्रों और समर्थकों के उन बार–बार दोहराये जाने वाले और उदार प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया था जिनके द्वारा उसे अपनी व्यक्तिगत

सुरक्षा सुनिश्चित करने का अनुरोध किया गया था तथा जिसने अपने विरोधियों पर ऐसी स्पष्ट विजय प्राप्त की थी – उसे, इस शुभ घड़ी में, उसके प्रकट होते जा रहे उदेश्यों को न रोकी जा सकने वाली प्रक्रिया बाध्य कर रही थी कि वह अपना निवास एक महानतर श्रेष्ठता के केन्द्र, ओटोमन साम्राज्य की राजधानी में स्थानांतरित कर ले जहाँ खलीफा सरकार का सिंहासन था, सुन्नी इस्लाम का प्रशासनिक केन्द्र था और इस्लामी जगत के सबसे शक्तिशाली सम्राट का निवास स्थान था।

उन्होंने नज़फ, करबला और काज़मियान में रहने वाले तथा राजकीय व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रख्यात पादरियों को पहले ही एक साहसिक चुनौती दे दी थी। अब जबकि वे अपने शाही शत्रुओं के दरबार के निकट थे, वे सुन्नी इस्लाम के स्वीकृत मुखिया के साथ–साथ फारस के बादशाह को जो कि उस रहस्यमय इमाम के न्यासी थे, इसी प्रकार की एक चुनौती प्रस्तुत करने वाले थे। इसके अतिरिक्त धरती के सम्राटों के सम्पूर्ण दल, और विशेषकर सुल्तान और उसके मंत्रियों को भी सम्बोधित किया जाना था, उनसे अपील की जानी थी और उन्हें चेतावनी दी जानी थी, जबकि ईसाई जगत के सम्राटों और सुन्नी धर्माधिकारियों को भी कठोर चेतावनी दी जानी थी। कोई आश्चर्य की बात नहीं कि अपने धर्म के दीप के इराक से हटाये जाने के बाद इसके भावी तेज की प्रतीक्षा में इस नवघोषित प्रकटीकरण के एक निर्वासित संवाहक ने भविष्यवाणी करते हुए ये शब्द उच्चारित किए हों : *"उसकी नियति के अनुसार, जो सर्वशक्तिशाली, युगप्राचीन है, यह एक अन्य चिराग में प्रकाशमान होकर चमकेगा। .....उन सभी के लिए जो स्वर्ग में हैं और धरती पर हैं, इराक की काया से आत्मा का चला जाना, वास्तव में एक अद्‌भुत चिन्ह है। शीघ्र ही तुम इस दिव्य युवा को विजय के युद्धाश्व पर सवार देखोगे। तब ईर्ष्यालुओं के हृदय काँप उठेंगे।"*

अब जबकि इराक से बहाउल्लाह के जाने की पूर्वनिर्धारित घड़ी आ चुकी थी, तो वह प्रक्रिया शुरू हो गई जिसके द्वारा ऐसा होना था। उनके शत्रुओं और विशेषकर शेख अब्दुल–हुसैन एवं उसके साथी मिर्ज़ा बुज़ुर्ग खान द्वारा किए गए नौ माह के अथक प्रयास अब अपने परिणाम तक पहुँचने वाले

थे। एक ओर नसीरूद्दीन शाह और उसके मंत्री से और दूसरी ओर कॉन्सटैन्टीनोपल में फारस के राजदूत से लगातार आग्रह किया जा रहा था कि वे बहाउल्लाह को बग़दाद से हटाने की तुरन्त कार्यवाही करें। वास्तविक स्थिति से बिल्कुल झूठी बात प्रस्तुत करके और भ्रम उत्पन्न करने वाली रिपोर्ट फैलाकर, एक घातक और ताकतवर शत्रु ने इस बात के लिए शाह को राज़ी करने में सफलता हासिल कर ही ली कि वह अपने विदेश मंत्री मिर्ज़ा सईद खान को यह आदेश दें कि वह सुल्तान के महामंत्री अली पाशा और विदेश मंत्री फुआद पाशा के मित्र मिर्ज़ा हुसैन खान, जो कि सब्लाईम पोर्ट पर फारस का राजदूत था को यह निर्देश दे कि वह सुल्तान अब्दुल अज़ीज़ को राज़ी करे कि वह बहाउल्लाह को इस आधार पर बग़दाद से तत्काल बहुत दूर भेज देने के आदेश जारी करे कि बहाउल्लाह का बग़दाद शहर में लगातार बने रहना, अपने आप में फारस और उसकी सरकार की सुरक्षा के लिए एक सीधा खतरा है क्योंकि बग़दाद फारस की सीमा से लगा हुआ है और शियाह तीर्थस्थान के इतने महत्वपूर्ण केन्द्र के निकट है।

राजदूत को अपने एक संदेश में मिर्ज़ा सईद खान ने प्रभुधर्म पर एक "पथभ्रष्ट और घिनौना सम्प्रदाय" होने का कलंक लगाया, सियाहचाल से बहाउल्लाह की रिहाई पर खेद व्यक्त किया और उन पर एक ऐसा व्यक्ति होने का आरोप लगाया जो "मूर्ख, अज्ञानी और दुर्बल व्यक्तियों को चोरी छिपे गुमराह करता है।" उसने लिखा कि, "शाही फरमान के अनुसार, आपके वफादार मित्र यानी मुझे यह आदेश दिया गया है कि मैं आपको निर्देशित करूँ कि महामहिम सद्र–ए–आज़म और विदेश मंत्री से मिलने की अनुमति प्राप्त करें, ताकि उपद्रव के इस स्रोत को बग़दाद जैसे केन्द्र से हटाने का अनुरोध किया जा सके जो कि विभिन्न प्रकार के लोगों के मिलने का स्थान है और जो फारस के प्रान्तों की सीमा के निकट स्थित है।" उसी पत्र में, एक प्रख्यात छन्द को उद्धरित करते हुए वह लिखता है : "मैं राख के नीचे आग की चमक देखता हूँ, जिसे भड़कने के लिए बस थोड़ी सी हवा चाहिए", इस प्रकार उसने अपने अन्दर छिपा हुआ भय प्रकट किया और इसे अपने समर्थकों के अन्दर भरने का प्रयास किया।

एक ऐसे सम्राट की उपस्थिति से प्रोत्साहित हो कर जिसने अपने अधिकांश अधिकार अपने मंत्रियों को सौंप दिए थे और कॉन्सटैन्टीनोपल में कुछ विदेशी राजदूतों और मंत्रियों की सहायता से, मिर्ज़ा हुसैन खान मंत्रियों पर मित्रवत दबाव डालकर बहाउल्लाह और उनके साथियों को कॉन्सटैन्टिनोपल स्थानान्तरित करने के लिए सुल्तान की अनुमति लेने में सफल हो गया। यह भी बताया गया है कि नए सुल्तान के राजगद्दी सम्भालने के बाद फारस के अधिकारियों ने इस मैत्रीपूर्ण शासन से पहला अनुरोध यह किया कि वे इस मामले में सक्रिय और तत्काल हस्तक्षेप करे।

नौरूज़ (1863) के पाँचवें दिन जब बहाउल्लाह बगदाद की सीमा पर स्थित माज़राये–इ–वाश्शाश में यह पर्व मना रहे थे और जब उन्होंने "पावन नाविक की पाती', अभी प्रकट की ही थी जिसकी उदासी से भरी भविष्यवाणियों ने उनके साथियों में गम्भीर भय फैला दिया था, उसी समय नामिक़ पाशा का दूत वहाँ पहुँचा और उसने बहाउल्लाह के हाथों में एक सन्देश देते हुए उनके और गवर्नर के बीच एक साक्षात्कार के लिए अनुरोध किया।

जैसा कि नबील ने अपने वर्णन में पहले ही उल्लेख किया था, बहाउल्लाह ने बग़दाद में अपने अन्तिम वर्षों के दौरान अपने वक्तव्यों में, परीक्षाओं और उथल–पुथल के उस दौर की ओर संकेत किया था जो दौर न चाहते हुए भी निश्चित रूप से निकट आ रहा था और हृदय की एक ऐसी उदासी प्रदर्शित कर रहा था जिसने बहाउल्लाह के आस–पास के लोगों को विचलित कर दिया था। उन दिनों बहाउल्लाह ने एक स्वप्न देखा था जिसके अशुभ स्वरूप के बारे में किसी को गलतफहमी नहीं हो सकती थी। इस स्वप्न ने उनके साथियों के उस डर और शक को और भी बढ़ा दिया जिससे वे पहले ही जूझ रहे थे। एक पाती में बहाउल्लाह ने लिखा कि *"मैंने देखा कि मेरे आस–पास ईश्वर के पैग़म्बर और संदेशवाहक जमा हो कर बैठ गए, वे विलाप कर रहे थे, रो रहे थे और ज़ोर–ज़ोर से शोक मना रहे थे। आश्चर्यचकित होकर मैंने उनसे इसका कारण पूछा, इस पर उनका शोक और विलाप और बढ़ गया और उन्होंने मुझसे कहा : 'हम आपके लिए विलाप कर रहे हैं, हे*

सर्वमहान रहस्य, हे अमरता के मन्दिर !' वे इस तरह रोये कि मैं भी उनके साथ रोया। इस पर देवदूतों ने मुझे सम्बोधित करते हुए कहा : '.....शीघ्र ही आप अपनी स्वयं की आँखों से वह देखेंगे जो किसी भी अवतार ने नहीं देखा.... । धैर्य रखो, धैर्य रखो।' .....रात भर, भोर होने तक वे मुझे सम्बोधित करते रहे।" नबील इस बात की पुष्टि करते हैं कि जब इन साथियों के समक्ष पवित्र नाविक की पाती को ज़ोर से पढ़कर सुनाया गया तो सुनने वालों के दिलों में उदासी के सागर उमड़ने लगे। .....सबके लिए यह स्पष्ट था कि बग़दाद का अध्याय अब समाप्त होने वाला था और इसके स्थान पर एक नया अध्याय आरम्भ होने वाला था। जैसे ही इस पाती का पाठ समाप्त हुआ, बहाउल्लाह ने आदेश दिया कि जो तम्बू ताने गए थे उन्हें खोलकर तह किया जाए और उनके सभी साथी शहर लौट जाएँ। जब तम्बू हटाये जा रहे थे तब बहाउल्लाह ने कहा : *"इन तम्बुओं को इस संसार की श्रृंगार की वस्तुओं के समान समझा जा सकता है, जिन्हें जैसे ही सजावट के लिए बिछाया जाता है तो उनके समेटने का समय आ जाता है।"* उनके इन शब्दों से सुनने वाले यह समझ गए कि अब ये तम्बू उस स्थान पर कभी नहीं लगेंगे। अभी उन्हें ले जाया भी नहीं गया था कि बग़दाद से एक संदेशवाहक वहाँ आया और उसने गवर्नर का वह संदेश दिया जिसके बारे में ऊपर बताया जा चुका है।

अगले दिन उप–राज्यपाल द्वारा गवर्नर के निवास के पड़ोसी इलाके की एक मस्जिद में बहाउल्लाह को अलीपाशा का एक पत्र दिया गया, जो नामिक़ पाशा को सम्बोधित था। इस पत्र में सम्मानजनक भाषा में बहाउल्लाह को ओटोमन सरकार के मेहमान के रूप में कॉन्सटैन्टिनोपल आमंत्रित किया गया था, उनके उपयोग के लिए कुछ धनराशि दी गई थी और उनकी सुरक्षा के लिए घुड़सवार सुरक्षाकर्मियों को भेजने का आदेश दिया गया था। इस अनुरोध को बहाउल्लाह ने सहर्ष स्वीकार किया, लेकिन उन्हें दी गई धनराशि लेने से इन्कार कर दिया। इस पर जब उप–राज्यपाल ने ज़ोर देकर अनुरोध किया कि उस ध नराशि को अस्वीकार करने से अधिकारी बुरा मान जायेंगे, तो बहाउल्लाह ने अनिच्छा से उस रकम को स्वीकार करने की अनुमति दे दी जो उनके उपयोग के लिए अलग रखी गई थी, किन्तु उसी दिन वह रकम गरीबों में बांट दी गई।

निर्वासितों की बस्ती पर इस आकस्मिक जानकारी का प्रभाव तात्कालिक और अभिभूत कर देने वाला था। बहाउल्लाह के प्रस्थान का समय निकट आने के समाचार के प्रति समुदाय की प्रतिक्रिया का वर्णन करते हुए एक प्रत्यक्षदर्शी साक्ष्य ने लिखा है कि, "उस दिन होने वाली उथल–पुथल क़यामत के दिन से जुड़ी हई हलचल थी। मुझे ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे उस परम प्रियतम "आभा सौंदर्य" से बिछड़ जाने के गम में, शहर के दरो दीवार भी ज़ोर–ज़ोर से रूदन कर रहे थे। जब उस पहली रात को उनके प्रस्तावित प्रस्थान का उल्लेख किया गया तब उनके प्रत्येक प्रेमी ने नींद और भोजन दोनों त्याग दिए.....। उनमें से एक भी आत्मा को शान्त नहीं किया जा सकता था। कई लोगों ने तो यह दृढ़ संकल्प ले लिया था कि यदि उन्हें बहाउल्लाह के साथ जाने की कृपा से वंचित रखा गया, तो वे बेझिझक अपनी जान ले लेंगे.....। लेकिन, धीरे–धीरे बहाउल्लाह द्वारा उन्हें सम्बोधित किए गए शब्दों के माध्यम से और उनकी सलाहों और प्रेममयी दया के द्वारा वे शान्त हो गए और उन्होंने अपने आपको बहाउल्लाह की इच्छा के प्रति समर्पित कर दिया। "बग़दाद में निवास करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए चाहे वह अरबी हो या फारसी, स्त्री हो या पुरूष, बच्चा हो या बड़ा, बहाउल्लाह ने अपने हाथों से लिखकर अलग–अलग पाती प्रकट की। इन में से अधिकांश पातियों में उन्होंने उस *"बछड़े"* और *"रात के पक्षियों"* के प्रकट होने की भविष्यवाणी की। यह उन लोगों की ओर संकेत था, जो विद्रोह की ध्वजा फहराने वाले थे और प्रभुधर्म के इतिहास के सबसे गम्भीर संकट को जन्म देने वाले थे, जैसा कि पावन नाविक की पाती से अपेक्षित था और उपरोक्त स्वप्न में भविष्यवाणी की गई थी।

जब बहाउल्लाह ने उस शोकयुक्त पाती को प्रकट किया और जब कॉन्सटेन्टीनोपल में उनके प्रस्थान से सम्बन्धित वह भविष्यसूचक सन्देश उनके हाथों में पहुँचा तब उसके सत्ताईस दिन बाद, एक बुधवार की दोपहर को (22 अप्रैल, 1863) नौरूज़ के इकत्तीस दिन बाद, ई.स. 1279 के धिल–क़ादिह माह के तीसरे दिन, बहाउल्लाह ओटोमन सम्राज्य की राजधानी की ओर अपने चार माह लम्बे सफर के पहले चरण के लिए निकल पड़े। उस दिन जो आगे

चलकर सदा के लिए रिज़वान पर्व के पहले दिवस के नाम से जाना जायेगा, उन प्रत्येक वर्ग और स्तर के असंख्य मित्रों एवं परिचितों के लिए भेंट का यह अन्तिम अवसर था, जो बहाउल्लाह को विदा करने के लिए लगातार आ रहे थे। उस ऐतिहासिक दिन के जैसा कुछ भी बग़दाद के निवासियों ने शायद ही पहले कभी देखा हो। स्त्री–पुरूष और हर उम्र के लोगों की ऐसी भीड़, जिसमें मित्र और अजनबी, अरबी, कुर्द, फारसी, सम्मानित वर्ग और धर्माधिकारी, अधिकारी और व्यापारियों के साथ–साथ निचले वर्ग के कई लोग, गरीब, अनाथ, बहिष्कृत, कुछ आश्चर्यचकित, कुछ टूटे हुए दिल लेकर, कई डरे हुए और आशंकाग्रस्त, कुछ उत्सुकता से मजबूर होकर या चोरी–छिपे सन्तोष पाने की चाह में बहाउल्लाह के घर के आसपास जमा हो गए। वे उस महान की एक झलक पाने के लिए उत्सुक थे, जिसने, दस साल तक, सिद्धान्त और उदाहरण के माध्यम से शहर के विविध निवासियों की इतनी विशाल संख्या पर इतना शक्तिशाली प्रभाव डाला था।

विलाप और शोक के बीच अपने उस *"पावनतम निवास"* को अन्तिम बार छोड़ते हुए – जहाँ *उस सर्वमहिमामय की श्वास फूँकी गई थी"* और जहाँ से *"अविरल सुरों"* में *"उस सर्वदयालु का स्वर माधुर्य"* निकला था, अपने मार्ग में उदार हाथों से उन गरीबों को दान देते हुए जिन्हें उन्होंने श्रद्धा के साथ अपनाया था और उन दुःखी जनों को सांत्वना के शब्द सुनाते हुए जो चारों ओर से उनके पास आते थे, बहाउल्लाह नदी किनारे के पहुँचे और उन्हें उनके पुत्रों और लिपिकों के साथ नदी के उस पार स्थित नजीब पाशा के बगीचे में ले जाया गया। नाव में सवार होने से पहले उन्होंने श्रद्धालुओं के उस समूह को जो उन्हें घेरे हुए था, ये शब्द कहे, *"मैं बग़दाद शहर को उस अवस्था में तुम्हारी सुरक्षा में छोड़कर जा रहा हूँ, जिसमें तुम इसे अब देख रहे हो, जब इसकी छतों, गलियों और बाजारों में भीड़ लगाने वाले मित्र और अजनबी, सभी की आँखों से बहार के मौसम की वर्षा की तरह आँसू बह रहे हैं और मैं जा रहा हूँ। अब यह तुम पर है कि तुम सचेत रहो ताकि कहीं तुम्हारे कर्म और आचरण उस प्रेम की लौ को मन्द न कर दें जो इस शहर के निवासियों के सीनों में जल रही है।"*

मुअज़्ज़िन ने दोपहर की नमाज़ के लिए पुकार लगाई ही थी कि बहाउल्लाह ने नजीब पाशा के उस बगीचे में प्रवेश किया जहाँ वे उस शहर को अन्तिम बार छोड़ने से पहले बारह दिन तक रहे। वहाँ उनके साथियों के समूह लगातार आते रहे और उनके दर्शन करने के बाद, गहन दुःख के साथ उनसे अन्तिम विदा लेते रहे। इनमें से प्रमुख थे, बग़दाद शहर के मुफ्ती, जिन्होंने आँसू भरी आँखों से नसीरूद्दीन शाह के नाम की भर्त्सना की, जिसे वह बहाउल्लाह के इस अन्यायपूर्ण निर्वासन के लिए मुख्य रूप से ज़िम्मेदार समझते थे। उन्होंने खुलकर दावा किया, "मैंने उसे नसीरूद्दीन (प्रभुधर्म का सहायक) मानना छोड़ दिया है, बल्कि मैं उसे इसका विनाशकर्ता समझता हूँ।" भेंटकर्ताओं में एक अन्य विशेष व्यक्ति स्वयं गवर्नर नामिक़ पाशा था जिसने, बहाउल्लाह के प्रस्थान के कारणों पर अत्यन्त सम्मानजनक शब्दों में अपना खेद व्यक्त करने और उन्हें अपनी ओर से हर प्रकार की सहायता का आश्वासन देने के बाद, उनके साथ जाने के लिए नियुक्त किए गए अधिकारी को एक लिखित आदेश दिया जिसमें उन प्रान्तों के गवर्नरों को – जिनसे बहाउल्लाह गुज़रने वाले थे, आदेश दिया गया था कि वे उनका अधिक से अधिक खयाल रखें। क्षमा माँगने के बाद उसने बहाउल्लाह को बताया, "आपकी जो भी आवश्यकता हो, आपको बस आदेश देना है, हम कुछ भी करने के लिए तैयार हैं।" उसके द्वारा इन प्रस्तावों को लगातार दोहराए जाने और बल दिए जाने पर बहाउल्लाह ने उत्तर दिया, *"हमारे प्रियजनों का ध्यान रखना और उनके साथ दया का व्यवहार करना "*– एक ऐसा अनुरोध जिसे उस गवर्नर ने सहर्ष और बेझिझक स्वीकार कर लिया।

कोई आश्चर्य की बात नहीं कि जब से बहाउल्लाह ने अपनी प्रस्तावित यात्रा की घोषणा की, तब से लेकर नजीब पाशा के बगीचे से उनके प्रस्थान के दिन तक इतने गहरे समर्पण, सहानुभूति और सम्मान के इतने सारे प्रमाणों के समक्ष, वे लोग जिन्होंने बहाउल्लाह को निर्वासित करने के आदेश जारी करवाने के लिए इतने अथक प्रयास किए थे और जो अपनी सफलता पर इतने खुश हो रहे थे, वे ही लोग अब अपने इस कर्म पर पश्चाताप कर रहे थे। इन शत्रुओं के बारे में उस बगीचे में अब्दुल बहा द्वारा लिखे गए एक पत्र में इस

बात की पुष्टि की गई है, *"ईश्वर का हस्तक्षेप ऐसा था कि उनके द्वारा व्यक्त की गई खुशी अफसोस में बदल गई, यहाँ तक कि बग़दाद में स्थित फारस के राजदूत को उन योजनाओं और षड़यंत्रों का बहुत अधिक दुःख है जो षड़यंत्रकारियों ने रचे थे। जिस दिन नामिक़ पाशा मुझसे मिलने आया, उस दिन स्वयं उसने कहा : 'पहले वे आपको यहाँ से हटा देने की ज़िद्द कर रहे थे, लेकिन अब वे और ज़्यादा ज़िद्द कर रहे हैं कि आप रूक जायें।"*

बहाउल्लाह के उद्देश्य की घोषणा तथा कॉन्सटैन्टिनोपल की ओर उनकी यात्रा

नजिबियेह नाम के बगीचे को बहाउल्लाह के अनुयायियों ने *"रिज़वान का उपवन"* की उपाधि दी थी। यहाँ बहाउल्लाह का आगमन उस पर्व की शुरूआत का संकेत देता है जिसे बहाई उत्सवों में सबसे पावन और सबसे महत्वपूर्ण उत्सव माना जाता है, वह पर्व जो बहाउल्लाह के साथियों के समक्ष उनके ध्येय की घोषणा का उत्सव मनाता है। इतनी महत्वपूर्ण उद्घोषणा को उस क्रान्तिकारी प्रक्रिया की तर्कसंगत चरम सीमा मानना उचित होगा जो स्वयं बहाउल्लाह के द्वारा सुलेमानिया से लौटने के बाद शुरू की गई थी और जिसे उसी उद्देश्य की वह निर्णायक उद्घोषणा का शुभारम्भ समझना चाहिए जो बहाउल्लाह ने एड्रियानोपल से विश्व एवं इसके शासकों के लिए की थीं।

उस पवित्र कार्य के माध्यम से सियाहचाल में बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के जन्म एवं बाब के अनुयायियों के सामने उस प्रकटीकरण की घोषणा के बीच, दिव्य हस्तक्षेप द्वारा किया गया कम से कम दस साल का *"अन्तराल"* अन्ततः समाप्त हो गया। जैसा कि स्वयं बहाउल्लाह ने प्रमाणित किया है : *"गुप्त रखे जाने का वह निर्धारित समय"*– जिसके दौरान उन पर *"ईश्वर की ओर से भेजे गए प्रकटीकरण के चिन्ह और संकेत"* बरसाये जा रहे थे अब पूरा हो चुका था। *"प्रकाश के वे लाखों परदे"* जिनमें उनकी महिमा छिपी हुई थी, उस ऐतिहासिक घड़ी में आंशिक रूप से उठाये जा चुके थे और

मानवजाति को उनके *"अतुलनीय, उनके सबसे पावन और उदात्त मुखड़े"* की एक अति सूक्ष्म झलक दिखाई गई थी। वे *"एक हजार दो सौ नब्बे दिन"* जिन्हें डेनियल ने अपनी पुस्तक के अन्तिम अध्याय में *"उजाड़ देने वाले विद्वेष"* की अवधि के रूप में निर्धारित किया था अब बीत चुके थे। वे *"सौ चाँद वर्ष"*, (1335 दिन) अब शुरू हो चुके थे, जिनके बारे में यह नियत था कि वे उस आनन्दमय अन्त के तुरन्त पहले आने वाले हैं जिसकी घोषणा डेनियल ने उसी अध्याय में की थी। फारसी बयान में बाब की कलम से पूर्वविहित वे उन्नीस वर्ष जिनसे प्रथम *"वाहिद"* बना था, अब पूरे हो चुके थे। अपने पिता की महिमा में लौट आने वाले दिव्य साम्राज्य के स्वामी, ईसा मसीह अब अपने सिंहासन पर प्रतिष्ठित होने ही वाले थे और एक विश्वव्यापी, अविनाशी प्रभुसत्ता का राज्याधिकार ग्रहण करने वाले थे। उस सर्वमहान नाम से जुड़ा समुदाय, *"उस किरमिज़ी रंग की नौका में सवार होने वाले साथी"* जिनकी प्रशंसा क़य्यूमुल अस्मॉ में शानदार शब्दों में की गई है अब प्रत्यक्ष रूप से प्रकट हो गए थे। बहाउल्लाह की पारलौकिक महिमा के दृश्य अर्थात् *"रिज़वान"* के बारे में स्वयं बाब की भविष्यवाणी अब वास्तव में पूरी हो चुकी थी।

उन डरावनी विपत्तियों से डरे बगैर, जो उनकी स्वयं की भविष्यवाणी के अनुसार उन्हें शीघ्र ही घेरने वालीं थीं; उस दूसरे निर्वासन की शाम को जिसमें कई खतरे और संकट थे और जो उन्हें उनके मूल देश, उनके धर्म के पालने से और भी दूर एक ऐसे देश में ले जाने वाला था जिसकी जाति, भाषा और संस्कृति से वे बिल्कुल अनभिज्ञ थे; अपने उन शत्रुओं के घेरे के विकास से भलीभाँति सचेत, जिनमें शीघ्र ही एक ऐसा सम्राट सम्मिलित होने वाला था जो नसीरूद्दीन शाह से भी ज़्यादा अत्याचारी था और साथ ही ऐसे मंत्री शामिल होने वाले थे जो अपनी शत्रुता में हाजी मिर्ज़ा अक़ासी या आमिर निज़ाम से कुछ कम ज़िद्दी और कठोर नहीं थे; अपने खेमे में भीड़ लगाने वाले असंख्य आगंतुकों की अन्तहीन कतार से पैदा होने वाले व्यवधान से विचलित हुए बगैर, बहाउल्लाह ने उस नाजुक और प्रतिकूल दिखाई देने वाली घड़ी में अपने व्यक्तित्व की परिधि के रहस्य को प्रकट करने की और उस शक्ति एवं अधिकार की प्रचुरता को ग्रहण करने की चुनौती प्रस्तुत कर दी, जो केवल उस महान का ही विशेषाधिकार था जिसके आगमन की भविष्यवाणी बाब ने की थी।

निकट आती जा रही उस महान घटना की परछाई उन निवार्सितों की बस्ती पर पड़ चुकी थी जो बड़ी आशा से इसके अन्त का इन्तजार कर रहे थे। जब धीरे–धीरे वर्ष *"अस्सी"* नज़दीक आने लगा, तब जो उस समुदाय के सच्चे नेतृत्वदाता बन चुके थे, इसे अधिक से अधिक महसूस करने लगे और धीरे–धीरे अपने भावी अनुयायियों को इसकी चुनौती के प्रभाव की शक्ति से अवगत कराने लगे। उनके द्वारा लगभग प्रतिदिन प्रकट किए गए उत्सव के दिलकश क़सीदे; उनकी कलम से प्रवाहित होने वाले संकेतों से भरी पातियाँ; अपनी व्यक्तिगत बातचीत और सार्वजनिक वक्तव्यों में, उस नज़दीक आ रहे समय की ओर उनके द्वारा किए गए संकेत; आनंन्द और उदासी के पलों में उनकी आत्मा को सराबोर कर देने वाली उमंग; उनकी बढ़ती हुई महानता और महिमा के बढ़ते हुए प्रमाणों को देखकर पहले ही निहाल होने वाले उनके प्रेमियों को सराबोर कर देने वाला उत्साह; उनके व्यवहार में पाया गया प्रत्यक्ष परिवर्तन और अन्त में, अपने सबसे पावन निवास को छोड़कर जाने वाले दिन, उनके द्वारा अपनाया गया ताज (ऊनी कपड़े से बना टोप) पहनने का चलन – इन सभी बातों ने स्पष्ट रूप से बहाउल्लाह द्वारा ग्रहण किए जाने वाले ईश्वरावतार के पद तथा बाब के अनुयायियों का नेतृत्व करने की घोषणा कर दी थी।

बहाउल्लाह के साथियों के दिलों में होने वाली हलचल का वर्णन करते हुए नबील लिखते हैं कि "कई रातों को मिर्ज़ा आक़ा जान उन्हें बहाउल्लाह के कक्ष में एकत्रित करते और दरवाज़ा बन्द करके कपूर की कई मोमबत्तियाँ जलाकर उनके समक्ष उन नई प्रकट की गईं कविताओं का उच्च स्वर में सस्वर पाठ करते जो उनके पास होती थीं। इस नाशवान संसार को बिल्कुल भुलाकर, आध्यात्मिक साम्राज्य में पूरी तरह डूबकर, भोजन, नींद और पानी की आवश्यकता को विस्मृत कर वे अचानक अनुभव करते कि रात बीत चुकी है और दिन निकल आया है, और सूरज मध्य आसमान तक पहुँचने वाला है।"

यह खेदजनक है कि उस ऐतिहासिक घोषणा की वास्तविक परिस्थितियों की पर्याप्त जानकारी हमारे पास नहीं है। उस अवसर पर बहाउल्लाह द्वारा वास्तव में कहे गए शब्द, उनकी घोषणा का तरीका, उससे उत्पन्न होने वाली प्रतिक्रिया, मिर्ज़ा याह्या पर उसका असर, उन लोगों की पहचान जिन्हें

बहाउल्लाह की यह घोषणा सुनने का विशेष सौभाग्य प्राप्त हुआ था – आदि सब कुछ एक ऐसे धुँधलेपन में खो गया है कि इसकी तह तक पहुँचना भविष्य के इतिहासकारों के लिए कठिन होगा। उस बगीचे में बहाउल्लाह द्वारा बिताए गए उन यादगार दिनों की जो अपूर्ण जानकारी आने वाली पीढ़ियों के लिए उनके इतिहासकार नबील ने छोड़ी है, वह उन चन्द अधिकृत वृत्तांतों में से एक है जो हमारे पास उपलब्ध है। नबील ने बताया है कि, *"प्रतिदिन भोर होने से पहले, माली बगीचे में चारों ओर लाइन से लगे गुलाबों को तोड़कर, बहाउल्लाह के आशीर्वादित खेमे में लाते और खेमे के बीचो बीच इनका ढेर लगा देते। यह ढेर इतना बड़ा हुआ करता था कि जब उनके साथी सुबह की चाय पीने के लिए उनके खेमें में इकट्ठा होते तब वे गुलाबों के ढेर के इस पार से उस पार एक–दूसरे को देख नहीं पाते थे। बहाउल्लाह अपने हाथों से ये गुलाब उनके सुपुर्द करते थे जिन्हें वे अपनी उपस्थिति से विदा करने वाले होते थे ताकि वे इन गुलाबों को उनकी ओर से शहर में उनके अरबी और फारसी मित्रों को पहुँचा दें।"* वे आगे बताते हैं कि "एक रात जो कि पूर्णिमा के पहले की नौंवी रात थी, मैं उन लोगों में से एक था जो उनके आशीर्वादित खेमें के आसपास पहरा दे रहे थे। जैसे ही अर्धरात्रि का समय नज़दीक आया, मैंने बहाउल्लाह को अपने खेमे से बाहर आते देखा। वे उन स्थानों के पास से गुज़रे जहाँ उनके कुछ साथी सो रहे थे और उस चाँदनी रात में फूलों के किनारों वाले मार्ग पर चहल–कदमी करने लगे। चारों ओर कोयल के चहकने की आवाज़ इतनी तेज़ थी कि केवल वे ही लोग बहाउल्लाह की आवाज़ को स्पष्ट सुन सकते थे जो उनके निकट थे। बहाउल्लाह इसी प्रकार चहलकदमी करते रहे और अचानक बीच में रुककर बोले : 'इन कोयलों को देखो। ये इन गुलाबों से इतना प्रेम करती हैं कि शाम से सवेरे तक वे सोये बगैर अपनी धुन गाती रहती हैं और अपने प्रज्वलित प्रेम के कारण अपने आकर्षण के लक्ष्य के साथ वार्तालाप करती रहती हैं। ऐसे में वे जो अपने परम प्रियतम की गुलाब रूपी सुन्दरता से प्रज्वलित होने का दावा करते हैं, कैसे सो सकते हैं?' लगातार तीन रातों को मैं उनके आशीर्वादित खेमे की पहरेदारी और परिक्रमा करता रहा। प्रत्येक बार जब मैं उस पलंग के पास से गुज़रा जिस पर वे लेटते थे, मैं उन्हें जागा हुआ पाता और प्रतिदिन, सुबह से शाम तक, मैं उन्हें उन आगन्तुकों के साथ बातचीत करते

हुए पाता जो बड़ी संख्या में बग़दाद से लगातार वहाँ आ रहे थे। फिर भी मैंने उनके शब्दों में एक बार भी दुराव–छिपाव का चिन्ह तक नहीं पाया।"

इस ऐतिहासिक अवसर की प्रशंसा करते हुए *किताब–ए–अक़दस* में बहाउल्लाह ने इसे *"सर्वमहान उत्सव", "उत्सवों का सम्राट", "ईश्वर का उत्सव"* कहा है, इसकी विशेषता बताते हुए उन्होंने इसे वह दिवस कहा है जब *"समस्त सृजित वस्तुएँ पवित्रता के महासागर में डुबो दी गईं"*, जबकि अपनी एक विशेष पाती में उन्होंने इसे वह दिवस कहा है जिसमें *"समस्त सृष्टि पर क्षमा की हवा प्रवाहित की गई।"* एक अन्य पाती में वे लिखते हैं, *"ओ बहा के लोगों ! जब तुम परम आनन्द के उस दिवस को याद करो तो अत्याधिक हर्ष से आनन्दित हो जाओ – वह दिवस जब उस युगप्राचीन ने अपना निवास छोड़कर उस पावन स्थल की ओर प्रस्थान करते हुए यह बात कही थी, जहाँ से उसने समस्त सृष्टि पर अपने सर्वदयालु नाम की आभा बिखेरी थी..... । यदि हम उस दिवस के छिपे हुए रहस्यों को प्रकट कर दें, तो वे सब जो धरती पर और स्वर्ग में हैं, मूर्छित होकर मृत्यु को प्राप्त हो जायेंगे, सिवाय उनके जिन्हें वह सर्वशक्तिशाली, सर्वज्ञाता, सर्वबुद्धिमान ईश्वर सुरक्षित रखेगा। ईश्वर के असंदिग्ध प्रमाणों के प्रकटकर्ता पर उसके शब्दों का ऐसा मग्न कर देने वाला प्रभाव पड़ा है कि उसकी कलम आगे और चल नहीं सकी।"* और एक बार पुनः *"हे सर्वमहान लेखनी, दिव्य बसंत आ गया है, क्योंकि उस सर्वदयालु का पर्व शीघ्रता से निकट आ रहा है..... । 'आनन्दमय' कहलाये जाने वाले हमारे नाम के क्षितिज से आनन्द का सूर्य चमक रहा है, क्योंकि ईश्वर के नाम का साम्राज्य, सृष्टि और स्वर्गों के रचयिता, तुम्हारे स्वामी के नाम के श्रृंगार से यह सजाया जा चुका है..... । सावधान रहो ताकि कोई भी वस्तु तुम्हें इस दिवस की महानता की प्रशंसा करने से न रोके – एक ऐसा दिवस जब तेज और शक्ति की उँगली ने पुनर्मिलन की मदिरा की मुहर खोल दी है और उन सभी को बुलाया है जो स्वर्गों में तथा धरती पर हैं। यह वह दिवस है जब वह अदृश्य जगत पुकार रहा है : 'हे धरती, महान है तेरी धन्यता क्योंकि तुझे तेरे ईश्वर के चरणों का स्पर्श मिला है और उसके महान सिंहासन के स्थान के रूप में चुना गया है',*

.....कहो.....वह जिसने तुम्हारे समक्ष वह गुप्त और बहुमूल्य मणि प्रकट की है, काश तुम इसे खोज पाते। वही है वह जो समस्त वस्तुओं का एकमात्र परम प्रियतम है, चाहे वे अतीत की हों या भविष्य की।" और एक बार फिर : *"उठ खड़े हो और समस्त सृष्टि के समक्ष यह सन्देश घोषित कर दो कि उसने, जो सर्वदयालु है, अपने कदम रिज़वान की ओर बढ़ाये हैं और इसमें प्रवेश किया है। अतः प्रसन्नता के इस उद्यान की ओर लोगों का मार्गदर्शन करो जिसे ईश्वर ने अपने स्वर्ग का सिंहासन बनाया है.....। इस स्वर्ग के अन्दर और इसके सर्वोच्च कक्षों की ऊँचाईयों से, स्वर्ग की सेविकाएँ पुकार उठी हैं और यह जयकार की है : 'ओ तुम उच्च साम्राज्यों के निवासियों, खुशियाँ मनाओ, क्योंकि उस सर्वमहिमामय के नाम पर स्वर्गों के अन्तरतम हृदय में उस युग प्राचीन की उँगलियाँ सर्वमहान तुरही बजा रही हैं। कृपा के हाथों ने अनन्त जीवन के प्याले बाँटें हैं। आगे आओ ! और अपना भाग ग्रहण करो।'"* और अन्त में : *"हे लेखनी, तुम सृष्टि के जगत को भूल जाओ और अपने उस स्वामी के मुखड़े की ओर उन्मुख हो जाओ जो सभी नामों का स्वामी है। फिर इस संसार को अपने उस स्वामी के अनुग्रहों से सजा दो, जो अनन्त दिवसों का सम्राट है। क्योंकि हम उस दिवस की सुरभि को महसूस कर सकते हैं जब उसने, जो सभी राष्ट्रों की कामना है, दृश्य और अदृश्य जगत पर अपने सर्वोत्कृष्ट नामों के प्रकाश की चमक बिखेरी है और उन्हें अपने सबसे कृपालु अनुग्रहों के प्रकाशपुंजों की दीप्ति से आवृत्त कर दिया है, ऐसे अनुग्रह जिन्हें कोई नहीं समझ सकता, सिवाय उसके जो समस्त सृष्टि का सर्वशक्तिशाली रक्षक है।"*

ई.स. 1279 के धिल–कादिह माह की 14 तारीख, (3 मई, 1863) को जब बहाउल्लाह रिज़वान के उद्यान से प्रस्थान कर रहे थे, तब बड़े ही हलचल भरे उत्साह के दृश्य देखने को मिले जो उन दृश्यों से कुछ कम भव्य नहीं थे बल्कि और भी हृदयस्पर्शी थे, जो दृश्य उस समय देखे गए थे जब बहाउल्लाह बग़दाद के अपने सर्वमहान निवास को छोड़ रहे थे। एक प्रत्यक्षदर्शी ने लिखा है, "एकत्रित होने के दिवस, या न्याय के दिवस से जुड़ी महान उथल–पुथल की जो कल्पना हमारे मस्तिष्क में है उसका साकार रूप हमने उस अवसर पर

देखा। विश्वासी और अविश्वासी समान रूप से सिसक रहे थे और विलाप कर रहे थे। वहाँ एकत्रित होने वाले मुखियागण और सम्मानित जन आश्चर्य में पड़ गए। भावनाएँ ऐसी गहराईयों को छू गईं कि इसका वर्णन कोई भी जिह्वा नहीं कर सकती, न ही कोई देखने वाला इनसे अप्रभावित रह सकता था।"

अपने चाहने वालों द्वारा खरीदे गए सबसे उत्तम और बेहतरीन नस्ल के कत्थई रंग के घोड़े पर सवार होकर और सम्मान में झुकी हुई भीड़ को पीछे छोड़कर, वे एक ऐसी यात्रा के पहले चरण पर निकल पड़े जो उन्हें कॉन्सटैन्टिनोपल शहर तक ले जाने वाली थी। उस यादगार दृश्य के साक्षी स्वयं नबील वर्णन करते हैं कि, "असंख्य थे वे लोग जिन्होंने चारों ओर से उनके घोड़े के पैरों की धूल पर झुक कर उसके खुर को चूमा और असंख्य थे वे लोग जो आगे आकर उनके रक़ाब को गले लगाने के लिए आतुर हो रहे थे।" एक सहयात्री ने साक्षी देते हुए कहा, "स्वामीभक्ति के उन साकार रूपों की संख्या कितनी बड़ी थी जिन्होंने अपने आप को उस घोड़े के आगे डाल दिया और जिन्हें अपने परम प्रियतम से बिछुड़ने की अपेक्षा मौत अधिक प्रिय थी ! मुझे ऐसा लगता है कि वह आशीर्वादित घोड़ा उन पवित्र हृदय वाले लोगों के ऊपर से गुज़र गया।" स्वयं बहाउल्लाह घोषित करते हैं कि,*"वही था वह (ईश्वर) जिसने मुझे ऐसे प्रताप से विभूषित करके उस शहर (बग़दाद) से प्रस्थान करने में समर्थ बनाया कि सिवाय अविश्वासी और दुष्ट के अन्य कोई भी इसे स्वीकार करने में विफल नहीं हो सके।"* कॉन्सटैन्टिनोपल पहुँचने तक वे इसी तरह भक्ति और समर्पण के चिन्हों से घिरे रहे। जब बहाउल्लाह कॉन्सटैन्टिनोपल पहुँचे, तब नबील ने उनकी बग्गी के पीछे–पीछे तेज़ी से पैदल चल रहे मिर्ज़ा याह्या को सैय्यद मुहम्मद से यह कहते हुए सुन लिया : "यदि मैंने अपने आप को छिपाये रखने का निर्णय न लिया होता और यदि मैंने अपना परिचय दे दिया होता तो उन्हें (बहाउल्लाह को) दिया गया सम्मान आज मुझे भी मिला होता।"

बहाउल्लाह द्वारा अपने निवास से प्रस्थान करते समय और बाद में रिज़वान के उद्यान से उनके प्रस्थान के समय उनके प्रति दर्शाए गए समर्पण

के वे ही चिन्ह धिल–क़ादिह की बीस तारीख (9 मई, 1863) को भी दोहराए गए जब अपने परिवार के सदस्यों और अपने 26 अनुयायियों के साथ बहाउल्लाह ने फिरेयजात से प्रस्थान किया, जो कि उस प्रवास के दौरान उनका पहला विराम स्थान था। 50 खच्चरों के अलावा 10 घुड़सवार सुरक्षा कर्मियों का एक दल और उनका अधिकारी तथा चार–चार आफ्ताबगीरों वाली सात जोड़ी पालकियों का एक कारवाँ तैयार किया गया जिसने आसान टुकड़ों में और कम से कम 110 दिन की अवधि के अन्दर ऊँची भूमि, संकरी घाटियों, जंगलों, दर्राओं और पूर्वी अनातोलिया के प्राकृतिक मनोहारी चारागाहों से होते हुए, काला सागर पर सेमसन नामक बन्दरगाह तक अपना रास्ता तय किया। कभी घोड़े पर तो कभी उनके लिए सुरक्षित रखी गई उस पालकी में आराम करते हुए जो अकसर उनके ऐसे साथियों से घिरी रहती थी जिनमें से अधिकांश पैदल चल रहे थे। जब बहाउल्लाह उत्तरी दिशा की ओर, बसंत के पथ पर यात्रा कर रहे थे तो नामिक़ पाशा के लिखित आदेशों के कारण, वे जहाँ से भी गुज़रे उन ज़िलों के वलियों, मुस्तरिफों, काईम–मक़ामों, मुदीरों, शेखों, मुफ्तियों और क़ादियों, शासकीय अधिकारियों और प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने उनका उत्साहपूर्वक स्वागत किया। कारकुक, इरबिल और मोसुल में जहाँ वे तीन दिन रूके, निसिबिन, मर्दिन एवं दियार–बाक्र में जहाँ कुछ दिनों का पड़ाव डाला गया, खारपत में, सिवास में, साथ ही अन्य गाँवों और कस्बों में उनके आगमन से तुरन्त पहले एक प्रतिनिधि दल उनसे मुलाकात करने आ पहुँचता था और उनके प्रस्थान के समय भी ऐसा ही एक प्रतिनिधि दल कुछ दूरी तक उनके साथ जाता था। कुछ स्थानों में उनके सम्मान में जो उत्सव आयोजित किए जाते, गाँव वाले उनकी स्वीकृति के लिए जो भोजन तैयार करके लाते, बहाउल्लाह के सुख–सुविधा के साधन प्रदान करने में जो उत्सुकता उन्होंने दिखलाई, वह बग़दाद के लोगों के उस सम्मान की याद दिलाती थी जो उन्होंने इतने सारे अवसरों पर दिखाया था।

उसी सहयात्री ने बताया है कि, "जब हम उस दिन सुबह मर्दिन नगर से गुज़र रहे थे तो सरकारी सैनिकों के घुड़सवार सुरक्षाकर्मियों का एक दल हमारे आगे चल रहा था, उनके हाथों में उनके ध्वज थे और वे स्वागत में नगाड़े

बजा रहे थे। शासकीय अधिकारियों एवं सम्मानित व्यक्तियों सहित वहाँ का मुस्तर्रिफ हमारे साथ चला, जबकि छतों और सड़कों पर जमा होने वाले स्त्री, पुरूष और बच्चों की भीड़ हमारे पहुँचने की प्रतीक्षा कर रही थी। गौरव और शान के साथ हम उस शहर से गुज़रे और एक बार फिर अपनी यात्रा आरम्भ की। मुस्तरिफ और उसके साथी हमें छोड़ने के लिए काफी दूर तक आये।" नबील ने अपने वर्णन में लिखा है कि, "उस यात्रा में जिन लोगों के साथ हमारी भेंट हुई वे सभी एकमत थे कि उन्होंने इस मार्ग पर किसी को भी ऐसी अवस्था में यात्रा करते हुए, ऐसा आतिथ्य सत्कार करते हुए तथा प्रत्येक को उसकी कृपा का इतना महान हिस्सा देते हुए पहले कभी नहीं देखा था जबकि उस मार्ग पर कॉन्सटैन्टिनोपल और बग़दाद के बीच गवर्नरों और मुशिरों का लगातार आना–जाना लगा रहता है। सेमसन के बन्दरगाह के निकट पहुँचते समय, अपनी पालकी से काला सागर को देखते ही बहाउल्लाह ने मिर्ज़ा आक़ा जान के अनुरोध पर, लौह–इ–हौदाज (हौदाह की पाती) नामक पाती प्रकट की जिसमें *"दिव्य कसौटी" "दुःखद और कष्टकर दुष्टता"* जैसे संकेतों द्वारा उन भयानक भविष्यवाणियों की पुष्टि की गई है और उनको सम्पूर्ण किया गया जो हाल ही में प्रकट की गई *पावन नाविक की पाती* में अंकित थीं।

सेमसन में, बग़दाद से लेकर कॉन्सटैन्टिनोपल तक के पूरे प्रान्त का मुख्य निरीक्षक कई पाशाओं के साथ, बहाउल्लाह से मिलने आया, उनके प्रति अधिक से अधिक आदर दिखाया और उन्हें दोपहर के भोजन पर आमंत्रित किया। परन्तु जैसा कि बहाउल्लाह ने *पावन नाविक की पाती* में भविष्यवाणी की थी उनके वहाँ पहुँचने के कुछ ही दिन बाद, उन्हें एक तुर्की जहाज़ पर भेज दिया गया और तीन दिन बाद हि.स. 1280 के रबिउल–आव्वाल माह की पहली तारीख को (16 अगस्त, 1863) दोपहर में उन्हें उनके सह–निर्वासितों के साथ कॉन्सटैन्टिनोपल के बन्दरगाह पर उतार दिया गया। बन्दरगाह पर उनके इन्तजार में खड़ी दो बग्गियों में बहाउल्लाह और उनके परिवार को एक शासकीय अधिकारी शम्सी बेग के निवास पर ले जाया गया, जिसे सरकार ने अपने इन अतिथियों के सम्मान के लिए नियुक्त किया था और जो खिरक़िय–ए–शरीफ की मस्जिद के निकट रहता था। बाद में इन्हें विसी पाशा

के उस निवास में ले जाया गया जो और भी बड़ा था और सुल्तान मुहम्मद की मस्जिद के पड़ोस के इलाके में स्थित था।

यह कहा जा सकता है कि ओटोमन साम्राज्य की राजधानी और खलीफा सरकार के सिंहासन कॉन्सटैन्टिनोपल – (जिसे मुहम्मदी "इस्लाम का गुम्बज" कहते हैं लेकिन जिसे बहाउल्लाह ने वह स्थल कहा है जिस पर *"अत्याचार का सिंहासन"* स्थापित किया गया था) – में बहाउल्लाह के आगमन पर बहाई इतिहास की पहली शताब्दी का सबसे भयानक और आपदाग्रस्त, किन्तु सबसे महिमाशाली अध्याय प्रारम्भ हुआ। अब एक ऐसी अवधि की शुरूआत हो रही थी जिसमें असंख्य अभाव एवं अपूर्व विपत्तियों के साथ श्रेष्ठतम आध्यात्मिक विजय जुड़ी हुई थी। बहाउल्लाह के सेवाकाल का सूर्य अपनी चरम सीमा पर बस पहुँचने ही वाला था। उनके विधान के शौर्यकाल के निर्णायक वर्ष निकट आ चुके थे। उनके अग्रदूत ने 60वें वर्ष में ही क़य्यूमुल अस्मॉ में जिस विनाशकारी प्रक्रिया की भविष्यवाणी की थी वह गतिशील होने लगी थी।

ठीक बीस वर्ष पूर्व, सबसे अंधकारमय फारस के शीराज़ शहर में बाबी प्रकटीकरण का जन्म हुआ था। इसके संस्थापक को दी गई कठोर कैद के बावजूद जो अद्‌भुत् दावा उन्होंने किया था उसकी घोषणा उनके द्वारा एक विशिष्ट सभा के समक्ष, अज़रबैजान की राजधानी तबरीज में की गई। उनका धर्म जो विधान लाया था उसका अभिषेक उनके धर्म के सूरमाओं ने बड़ी निडरता के साथ बदश्त के गाँव में किया। नौ वर्ष पश्चात, तेहरान के सियाहचाल की निराशा और यातना के बीच, तीव्रता के साथ और रहस्यमय ढंग से वह प्रकटीकरण अचानक प्रतिफल तक पहुँच गया। प्रभुधर्म के भाग्य के तेज़ी से पतन होने की उस प्रक्रिया को जो धीरे से शुरू हो चुकी थी और जो बहाउल्लाह के कुर्दिस्तान के एकान्तवास के दौरान भयानक रूप से गतिशील हो गई थी उसे सुलेमानिया से बहाउल्लाह की वापसी के बाद बड़े कुशल ढंग से रोक लिया गया था और उसका रूख उत्थान की ओर कर दिया था। आगे चलकर, बग़दाद में बहाउल्लाह के कुछ वर्षों के निवास के दौरान

इस नवजात समुदाय के आचरण सम्बन्धी, नैतिक और सैद्धान्तिक आधारों को अकाट्य रूप से स्थापित कर दिया गया। और अन्त में, रिज़वान के उद्यान में कॉन्सटैन्टिनोपल में बहाउल्लाह के निर्वासन की संध्या को उस अगम्य ईश्वर द्वारा विहित दस साल का विलम्ब तब समाप्त हुआ जब बहाउल्लाह द्वारा अपने ध्येय की घोषणा की गई और एक विश्वव्यापी बंधुत्व की नाभिक बनने वाली व्यवस्था का प्रत्यक्ष रूप सामने आया। अब जो प्राप्त करना बाकी रह गया था, वह था एड्रियानोपल शहर से विश्व के धर्मनिरपेक्ष एवं धार्मिक नेताओं के समक्ष उसी उद्देश्य की उद्घोषणा करना जिसके बाद भविष्य के क्रमबद्ध दशकों में, अक्का के बंदीगृह से उन सिद्धान्तों और विधानों की रचना करना जो उस धर्म की आधारशिला बनने वाले थे, इस धर्म की अखण्डता की सुरक्षा करने वाले नियमों और विधानों का स्वरूप तैयार करना, बहाउल्लाह के स्वर्गारोहण के तुरन्त बाद इस धर्म की एकता को बनाये रखने वाली तथा इसके प्रभाव का विकास करने वाली संविदा की स्थापना करना, इस संविदा के केन्द्र अब्दुल बहा के मार्गदर्शन में इसकी गतिविधियों का अद्भुत् एवं विश्वव्यापी विस्तार करना और अन्त में प्रभुधर्म के रचनात्मक काल में इस धर्म के स्वर्णिम युग और भविष्य की महिमा का अग्रदूत बनने वाली इसकी प्रशासनिक व्यवस्था का विकास करना।

यह ऐतिहासिक उद्घोषणा एक ऐसे समय में की गई, जब प्रभुधर्म एक अत्याधिक हिंसक संकट की ओर मुड़ रहा था। यह घोषणा मुख्य रूप से धरती के उन सम्राटों एवं ईसाई तथा मुसलमान धार्मिक नेताओं को सम्बोधित की गई थी जो अपनी अपार प्रतिष्ठा, प्रभाव और अधिकार के कारण, अपनी प्रजा और अनुयायियों के निकटतम भाग्य के लिए भयावह और अपरिहार्य रूप से उत्तरदायी थे।

यह कहा जा सकता है कि उस उद्घोषणा का प्रारम्भिक दौर कॉन्सटैन्टिनोपल में तब शुरू हुआ था जब बहाउल्लाह ने स्वयं सुल्तान अब्दुल–अज़ीज़ को एक संदेश सम्बोधित किया था (यह खेदजनक है कि इस संदेश की विषयवस्तु हमारे पास उपलब्ध नहीं है)। इस सुल्तान ने अपने आप को इस्लाम के पैग़म्बर के प्रतिनिधि की उपाधि दी थी। वह एक शक्तिशाली

साम्राज्य का शासक था। दिव्य सम्मान प्राप्त करने वाले विश्व के शासकों में यह शक्तिशाली और प्रतापी व्यक्ति सर्वप्रथम था और ईश्वर का दण्डदायी न्याय प्राप्त करने वाला पूरब का पहला सम्राट भी यही था। यह संदेश इसलिए भेजा गया था क्योंकि इस सुल्तान की राजधानी में इन निर्वासितों के आगमन के चार माह बाद इस सुल्तान ने एक निन्दनीय आदेश जारी किया जिसमें उसने कड़ाके की ठंड के मौसम में और अत्यन्त अपमानजनक परिस्थितियों में इन लोगों को अचानक और अकारण ही देशनिकाला देकर एड्रियानोपल भेज दिया जो उसके साम्राज्य की दूरस्थ सीमाओं पर स्थित था।

सुल्तान और उसके मुख्य मंत्री, अली पाशा और फुआद पाशा ने जो दुर्भाग्यपूर्ण और घृणित निर्णय लिया था, उसका मुख्य कारण था, सब्लाई पोर्टे में फारस के राजदूत मशिरूद दौलिह, मिर्ज़ा हुसैन खान का षड़यंत्र। बहाउल्लाह ने इस व्यक्ति की भर्त्सना करते हुए उसे एक ऐसा *"निन्दक"* कहा था जो उन पर और उनके उस धर्म पर वार करने के अवसर की प्रतीक्षा में था जिसके वे स्वीकृत नेता थे। इस राजदूत पर उसकी सरकार लगातार दबाव डाल रही थी कि वह बहाउल्लाह के विरूद्ध तुर्की शासन की शत्रुता को बढ़ावा देने की अपनी नीति को जारी रखे। उसका दुःसाहस तब और भी बढ़ गया जब बहाउल्लाह ने उस परम्परागत चलन का अनुसरण करने से इन्कार कर दिया जिसके तहत सभी सरकारी अतिथियों, "चाहे वे कितने ही उच्च पद पर क्यों न हों" – के लिए यह आवश्यक था कि राजधानी पहुँचने पर वे शेखुल–इस्लाम, सद्र–ए–आज़म तथा विदेश मंत्री से व्यक्तिगत रूप से मिलने जाएँ। बहाउल्लाह तो उन मंत्रियों, कमाल पाशा और फारस के दरबार में पूर्व के एक तुर्की राजदूत से भी मिलने नहीं गए जो उनसे भेंट करने के लिए पहले ही आ चुके थे। मिर्ज़ा हुसैन खान को बहाउल्लाह के उस सीधे सच्चे और स्वतंत्र व्यवहार ने नहीं रोका जो फारस के राजकुमारों के उन लालची अनुचरों के व्यवहार के इतना विपरीत था, जो राजधानी पहुँचते ही प्रत्येक दरवाजे से ऐसे भत्ते और उपहारों की याचना करते थे जो वे प्राप्त कर सकें।" फारस के दूतावास में उपस्थित होने और इसके प्रतिनिधि द्वारा उनसे की गई भेंट के बदले में उनसे मिलने जाने की बहाउल्लाह की अनिच्छा के कारण मिर्ज़ा हुसैन खान अप्रसन्न था और अपने प्रयासों में अपने साथी, हाजी मिर्ज़ा हसन–ए–सफा – जिसे उसने

बहाउल्लाह के बारे में गलत बातें फैलाने के निर्देश दिए थे का समर्थन पाकर, अपने शासकीय पद के प्रभाव के साथ–साथ मुल्लाओं, प्रतिष्ठित व्यक्तियों और सरकारी अधिकारियों के साथ अपने व्यक्तिगत सम्बन्धों के माध्यम से, वह बहाउल्लाह को एक ऐसा घमंडी और अहंकारी व्यक्ति सिद्ध करने में सफल रहा, जो अपने आप को किसी कानून के अधीन नहीं समझते थे, जो ऐसे षड़यंत्रों का इरादा रखते थे जो समस्त स्थापित प्राधिकार के प्रतिकूल थे और जिनकी धृष्टता के परिणामस्वरूप उनके और फारस की सरकार के बीच गम्भीर मतभेद उत्पन्न हो गए थे। इन अतिदुष्ट षड़यंत्रों को स्वीकृति देने वाला केवल मिर्ज़ा हुसैन खान ही नहीं था। अब्दुल बहा के अनुसार, अन्य लोगों ने भी उन निर्वासितों की *"निन्दा की और उन पर कलंक लगाते हुए"* उन्हें *"पूरे संसार को हानि पहुँचाने वाले", संधियों और संविदाओं का नाश करने वाले", "सभी देशों के लिए अनिष्टकर" तथा "हर प्रकार के दण्ड और सज़ा के हकदार"* कहा।

सद्र–ए–आज़म के साले जैसे अति–आदरणीय व्यक्ति को यह उत्तरदायित्व दिया गया कि वह उस कैदी (बहाउल्लाह) को, उसके विरूद्ध घोषित किए गए आदेश से अवगत कराए। एक ऐसा आदेश जो तुर्की और फारस के साम्राज्य की सरकारों का आपसी गठबंधन सिद्ध कर रहा था और जो अन्त में, सल्तनत, खलीफत और काजार राजवंश पर इतने दुःखद परिणाम लाया। जब बहाउल्लाह ने उस राजदूत से मिलने से इन्कार कर दिया, तब उसे अपनी बचकानी और तुच्छ टिप्पणियाँ अब्दुल बहा और आक़ा–ए–कलीम के समक्ष पेश करके सन्तुष्ट होना पड़ा, जिन्हें उस राज़दूत से मिलवाने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी और जिन्हें उसने बताया कि, वह तीन दिन के बाद उस आदेश का उत्तर लेने के लिए लौटेगा जिसे पहुँचाने का उसे आदेश दिया गया था।

उसी दिन बहाउल्लाह द्वारा एक ऐसी पाती प्रकट की गई, जो गम्भीर रूप से निन्दात्मक शैली में लिखी गई थी और जिसे उन्होंने अगले दिन सुबह एक मुहर बन्द लिफाफे में शम्सी बेग के हवाले कर दिया और उसे यह निर्देश दिए कि वह इसे अली पाशा के हाथों में पहुँचाए और कहे कि यह पाती ईश्वर

की ओर से भेजी गई है। बाद में शम्सी बेग ने आक़ा–ए–कलीम को बताया कि, "मैं नहीं जानता कि उस पत्र में क्या लिखा था, क्योंकि जैसे ही महामंत्री ने उसे पढ़ा, तो उसका रंग किसी लाश जैसा सफेद हो गया और वह बोला : *"ऐसा लगता है जैसे कोई राजाओं का राजा अपने दीनतम दास को आदेश दे रहा हो और उसके आचरण को सुधार रहा हो। उसकी हालत इतनी बुरी थी कि मैं उसके सामने से चला आया।"* कहा जाता है कि उस पाती द्वारा डाले गए प्रभाव के बारे में टिप्पणी करते हुए बहाउल्लाह ने कहा, *"उस पाती की विषय–वस्तु को जान लेने के बाद सुल्तान के मंत्रियों ने हमारे विरूद्ध जो कार्यवाही की उसे अनुचित नहीं ठहराया जा सकता। परन्तु, इस पाती को पढ़ने से पहले जो कार्य उन्होंने किए, वे न्यायोचित नहीं ठहराये जा सकते।"*

नबील के अनुसार, वह पाती काफी लम्बी थी। उसके प्रारम्भिक शब्द, स्वयं सुल्तान को सम्बोधित थे। इसमें सुल्तान के मंत्रियों की बड़ी कड़ी निन्दा की गई थी, उनकी अपरिपक्वता और अयोग्यता को खोल कर रख दिया गया था। और इस पाती में ऐसे उद्धरण शामिल थे जिनमें स्वयं मंत्रियों को भी सम्बोधित किया गया था, जिनमें उन्हें कठोर चेतावनी दी गई थी, कि वे अपनी सांसारिक धन–सम्पदा का घमंड न करें, न ही मूर्खतापूर्वक उस दौलत के पीछे भागें जो समय आने पर उनसे बड़ी निर्दयता से छीन ली जाएगी।

बहाउल्लाह के देशनिकाले के आदेश की घोषणा के तुरन्त बाद, उनके प्रस्थान की शाम को, हाजी मिर्ज़ा हसन–ए–साफा के साथ एक अन्तिम और यादगार साक्षात्कार में बहाउल्लाह ने फारस के राजदूत को निम्नलिखित संदेश भेजा : *"साल–दर–साल इतने असंख्य अत्याचार–पीड़ितों की हत्या करके और उन्हें असंख्य यातनाएँ देकर तुम्हें और तुम्हारे जैसे दूसरों को क्या लाभ प्राप्त हुआ, जबकि उनकी संख्या तो सौ गुना बढ़ गई और तुम अपने आप को पूरी तरह घबराए हुए पाते हो और यह भी नहीं जानते कि इस कष्टदायक विचार को मन से कैसे निकालें। .....उसका धर्म तुम्हारे द्वारा रची गई प्रत्येक एवं सभी योजनाओं से परे है। इतना जान लो : चाहे दुनिया की सभी सरकारें मिलकर मेरी हत्या कर दें और उन सभी की हत्या कर दें जो इस नाम को धारण करते*

हैं, तो भी यह दिव्य अग्नि कभी नहीं बुझ सकती। बल्कि उसका धर्म धरती के सभी सम्राटों को ही नहीं, अपितु उन सभी को जो जल और मिट्टी से उत्पन्न किए गए हैं, अपने आवरण में लेगा.....। हम पर कुछ भी आन पड़े, फिर भी हमारा अभिलाभ महान होगा और प्रत्यक्ष होगी वह क्षति जिनसे वे पीड़ित होंगे।"

पहले ही दो बार देश से निकाले गए इन निर्वासितों के तत्काल प्रस्थान के लिए जारी किए गए अनुलंघनीय आदेश के अनुसार बहाउल्लाह, उनका परिवार और उनके साथी, कुछ चार–पहिया बग्घी में, तो अन्य, बोझा ढोने वाले जानवरों पर सवार होकर, अपना सामान बैलगाड़ियों में लादकर, तुर्की अधिकारियों के साथ, दिसम्बर माह की एक सर्द सुबह को, पीछे छूट जाने वाले अपने मित्रों को बिलखता हुआ छोड़कर, एक उजाड़ और तूफानग्रस्त देश से होते हुए, अपनी बारह दिन की यात्रा पर एक ऐसे शहर की ओर निकल पड़े जिसकी विशेषता के बारे में बहाउल्लाह ने कहा था कि यह *"वह स्थान था जिसमें कोई प्रवेश नहीं करता सिवाय उनके जिन्होंने सुल्तान की सत्ता के विरूद्ध विद्रोह किया है।"* सुरिय–ए–मुलुक में उनकी स्वयं की साक्षी है कि *"उन्होंने हमें ऐसे अपमान के साथ आपके शहर (कॉन्सटैन्टिनोपल) से बाहर कर दिया, जिसकी तुलना धरती के किसी अपमान से नहीं की जा सकती।"* आगे वे कहते हैं, *"न तो मेरे परिवार के पास, न ही उनके पास जो मेरे साथ थे, उस अत्याधिक सर्द मौसम से अपनी सुरक्षा करने के लिए ज़रूरी कपड़े थे।"* एक बार फिर वे कहते हैं : *"हमारे शत्रुओं की आँखें भी हम पर रोयीं और उनसे परे प्रत्येक समझदार व्यक्ति की भी।"* नबील शोक व्यक्त करते हैं कि इस निर्वासन को इतनी विनम्रता के साथ सहन किया गया, कि इसका बयान करते हुए कलम आँसू बहाती है और इसके वर्णन का बोझ सहन करने में पृष्ठ शर्मिन्दा हो जाता है। इसी इतिहासकार ने अंकित किया है, "उस वर्ष इतनी तेज़ ठंड थी कि वृद्धों ने ऐसा पहले कभी नहीं देखा था। इसकी तीव्रता के कारण तुर्क और फारस, दोनों के कुछ क्षेत्रों में पशु बर्फ में दब कर खत्म हो गए। मादान–नुक्रिह में युफ्रेट्स नदी का उत्तरी भाग कई दिनों तक बर्फ से ढका रहा, यह एक अपूर्व प्राकृतिक घटना थी – जबकि दियार बक्र की नदी का पानी कम से कम चालीस दिन तक जमा रहा।" एड्रियानोपल का एक

निवार्सित बताता है कि "झरनों से पानी लाने के लिए उनके बिल्कुल नज़दीक बहुत बड़ी आग जलानी पड़ती थी, जो इनके पिघल जाने के बाद भी कई घंटों तक जलती रहती थी।"

बारिश और तूफान में सफर करते हुए, यहाँ तक कि कभी–कभी रात भर यात्रा करके, थोड़े–थोड़े समय के लिए पड़ाव डालने के बाद, हि. सन् 1260 के रजब माह की पहली तारीख (12 दिसम्बर, 1863) को, ये थके हुए यात्री अपने गंतव्य स्थान को पहुँच गए, यहाँ उन्हें खान–ए–अरब में ठहरा दिया गया, जो इज़्जत आक़ा के घर के पास स्थित एक दो–मंज़िली धर्मशाला थी। तीन दिन पश्चात, बहाउल्लाह और उनके परिवार को, एक ऐसे निवास में ठहरा दिया गया जो केवल गर्मी के दिनों के लिए उपयुक्त था, किन्तु एक सप्ताह पश्चात, उन्हें एक बार फिर, वहाँ से हटाकर एक अन्य निवास में ठहरा दिया गया, जो उसी क्षेत्र में स्थित एक मस्जिद के निकट था। लगभग छः माह के बाद उन्हें थोड़े और बड़े मकान में ले जाया गया, जो अमरूल्लाह (ईश्वर के आदेश का निवास) के नाम से जाना जाता था और सुल्तान सलीम की मस्जिद की उत्तर दिशा में स्थित था।

और इस प्रकार बहाउल्लाह के जीवनकाल के एक और सबसे नाटकीय काल के शुरुआती दृश्य पर परदा गिरा। अब परदा उठता है उस पहली बहाई शताब्दी पर जिसे सबसे उथल–पुथल वाली और संकटपूर्ण अवधि कहा गया है – एक ऐसी अवधि जिसका, उस काल के सबसे महिमाशाली दौर – विश्व और इसके शासकों के समक्ष बहाउल्लाह के संदेश की घोषणा से पहले आना नियत था।

मिर्ज़ा याहया का विद्रोह और एड्रियानोपल में बहाउल्लाह के उद्देश्य की घोषणा

निरन्तर प्राप्त हो रहे आघातों से इस बीस वर्षीय धर्म ने, अभी सम्भलना आरम्भ ही किया था कि उस पर एक भीषण संकट टूट पड़ा, जिसने उसे उसकी जड़ों तक हिला कर रख दिया। बाब की दुःखद शहादत, शाह पर किए गए प्राणघातक हमले का प्रयास और इसके घातक परिणाम, बहाउल्लाह के मूल देश से उनका निर्वासन, कुर्दिस्तान में उनका दो वर्षीय एकान्तवास – यह सब यद्यपि अपने परिणामों में विनाशकारी था, फिर भी इनकी गम्भीरता की तुलना उस पहली विशाल आन्तरिक हलचल से नहीं की जा सकती जिसने, एक ऐसे समुदाय को अपने आगोश में ले लिया था जिसने अभी–अभी पुनर्जीवन प्राप्त किया था। इस हलचल से इस समुदाय के सदस्यों के बीच एक ऐसी दरार पैदा होने वाली थी जो कभी नहीं मिट सकती थी। मुहम्मद के चाचा अबु–जाह्ल द्वारा दर्शाई गई शत्रुता से भी अधिक कठोर, ईसा मसीह के शिष्य जूडास इस्केरियट द्वारा किए गए विश्वासघात से भी अधिक शर्मनाक, जेकॉब के बेटों द्वारा अपने भाई जोसेफ के साथ किए गए दुर्व्यवहार से भी अधिक विश्वासघाती, मनु के एक पुत्र द्वारा किए गए कुकर्म से भी अधिक घृणित, कैन द्वारा एबेल के विरूद्ध किए गए आपराधिक कृत्य से भी अधिक बुरा था उस मिर्ज़ा याह्या का आचरण, जो बहाउल्लाह के सौतेले भाईयों में से एक था। वह बाब द्वारा नामित और बाबी समुदाय का स्वीकृत मुखिया था। मिर्ज़ा याह्या के आचरण के कारण, घोर दुःख का एक ऐसा समय आया जिसने कम

से कम पचास वर्ष के लिए प्रभुधर्म के भाग्य पर अपने निशान छोड़ दिए। स्वयं बहाउल्लाह ने इस घोरतम संकट को अय्याम–ए–शिदाद (तनाव के दिन) का नाम दिया, जिसके दौरान *"सबसे क्षतिकर आवरण"* को चीर कर रख दिया गया और अटल रूप से *"महानतम अलगाव"* हुआ। इससे इस धर्म के बाहरी शत्रुओं, राजनैतिक और धार्मिक – दोनों को बहुत सन्तुष्टि मिली। उनका दुस्साहस और भी बढ़ गया, उन्हें एक बहाना मिला और उन्होंने इस संकट का खुलकर मज़ाक उड़ाया। इस हलचल ने बहाउल्लाह के मित्रों और समर्थकों को हैरान कर दिया और उन्हें उलझन में डाल दिया और पश्चिमी प्रशंसकों की दृष्टि में प्रभुधर्म की नेकनामी को गम्भीर रूप से क्षति पहुँचाई। यह उथल–पुथल बहाउल्लाह के बग़दाद प्रवास के आरम्भिक दिनों से ही पनप रही थी और कुछ समय के लिए उस सृजनात्मक शक्ति के कारण दब गई थी, जिसने बहाउल्लाह के अब तक अघोषित नेतृत्व की छत्रछाया में, इस बिखरते हुए समुदाय को पुनर्जीवित किया था, और अन्त में, बहाउल्लाह के संदेश के ठीक पहले के वर्षों में, यह गड़बड़ी अपनी पूरी हिंसा के साथ फूट पड़ी। इसने बहाउल्लाह को बेहिसाब दुःख दिए, उन्हें प्रकट रूप से वृद्ध बना दिया और अपने परिणामों के कारण बहाउल्लाह को उनके जीवन के सबसे भारी आघात दिए। आरम्भ से लेकर अन्त तक, इस गड़बड़ी के लिए उत्तरदायी थे उसी पापी सैय्यद मुहम्मद के कपटपूर्ण प्रयास और उसके द्वारा लगातार रचाये जा रहे षड़यंत्र। सैय्यद मुहम्मद, एक ऐसा निम्न चरित्र का और चुगलखोरी करने वाला व्यक्ति था, जिसने बहाउल्लाह की सलाह की अवहेलना करते हुए, उनके साथ कॉन्सटैन्टिनोपल और एड्रियानोपल चलने की ज़िद्द की थी और अब वह इस उथल–पुथल को इसके अंजाम तक पहुँचाने के लिए अपने प्रयासों को कठोर सतर्कता के साथ बढ़ा रहा था।

सुलेमानिया से बहाउल्लाह की वापसी के समय से ही, या तो मिर्ज़ा याह्या अपने घर की अकीर्तिकर एकांतता में बना रहता, या फिर खतरा नज़र आने पर हिल्लीह और बस्रा जैसे सुरक्षित स्थानों पर जाकर छिप जाता। वह एक यहूदी के वेष में बस्रा भाग गया और वहाँ जूतों का व्यापारी बन गया। उसका डर इतना अधिक था कि, बताते हैं कि एक बार उसने कहा : "जो कोई

भी मुझे देखने, या मेरी आवाज़ सुनने का दावा करता है, उसे मैं काफिर घोषित करता हूँ। बहाउल्लाह के कॉन्सटैन्टिनोपल प्रवास की जानकारी मिलने पर, उसने पहले तो अपने आप को बग़दाद शहर के नज़दीक स्थित हुवैदार के बगीचे में छिपा लिया और एबिसिनियाह, भारत या किसी अन्य देश के लिए पलायन करने के औचित्य पर विचार करने लगा। फारस जाकर बाब के लेखों को फैलाने की बहाउल्लाह की सलाह को अस्वीकार करते हुए, उसने मिर्ज़ा अली–ए–किरमानशाही के नाम से पासपोर्ट प्राप्त करने के लिए अपने एक हमशक्ल हाजी मुहम्मद काज़िम को सरकारी निवास पर भेजा और बाब के लेखों को वहीं छोड़कर बग़दाद से चला गया तथा भेष बदलकर, ज़ाहिर नाम के एक अरबी बाबी के साथ मोसुल के लिए रवाना हो गया, जहाँ वह उन निर्वासितों के साथ हो लिया जो कॉन्सटैन्टिनोपल जा रहे थे।

मिर्ज़ा याह्या, बहाउल्लाह के प्रति निर्वासितों के लगातार बढ़ रहे लगाव और उनके प्रति इनके आश्चर्यजनक आदर का साक्षी था; बग़दाद में, कॉन्सटैन्टिनोपल की उनकी यात्रा के दौरान और आगे चलकर एड्रियानोपल के सम्मानित जनों और गवर्नरों के साथ उनके प्रगाढ़ सम्बन्धों के माध्यम से उसके भाई (बहाउल्लाह) की लोकप्रियता जिन ऊँचाईयों को प्राप्त कर चुकी थी, उसकी उसे पूरी जानकारी थी; राजधानी में शासकीय अधिकारियों के साथ अपने व्यवहार में उसके भाई ने जो साहस, मर्यादा, और स्वतंत्रता प्रदर्शित की थी उसके असंख्य प्रमाणों को देखकर मिर्ज़ा याह्या क्रोधित हो गया; इस नए विधान के संस्थापक द्वारा लगातार प्रकट की जा रही अनगिनत पातियों ने उसे उकसा दिया; जिस तरह बाबी प्रकटीकरण में बाब के शत्रु और विरोधी मिर्ज़ा अक़ासी ने मुहम्मद शाह को गुमराह किया था, उसी प्रकार, बहाई प्रकटीकरण के शत्रु और विरोधी सैय्यद मुहम्मद ने मिर्ज़ा याह्या को निरंकुश नेतृत्व की लुभावनी सम्भावनाएँ दिखाकर उसे ठग लिया। मिर्ज़ा याह्या ने समुदाय के उन प्रमुख सदस्यों की चेतावनियों पर ध्यान नहीं दिया, जिन्होंने उसे विवेक और आत्मसंयम से काम लेने की लिखित सलाह दी थी; बहाउल्लाह उम्र में मिर्ज़ा याह्या से तेरह साल बड़े थे और उन्होंने उसकी युवावस्था के प्रारम्भिक वर्षों से लेकर प्रौढ़ता तक उसकी देखभाल की थी, फिर भी वह उनकी दया

और सलाहों को भूल गया; जिस भाई ने उसके अनगिनत अपराधों और मूर्खताओं पर कई बार परदा डाला था, दोषों को अनदेखा कर देने वाली उनकी दृष्टि से साहस पाकर, बाब की संविदा का यह मुख्य संविदाभंजक, अपनी बढ़ती हुई ईर्ष्या से प्रेरणा पाकर और नेतृत्व करने की अपनी तामसी लालसा से वशीभूत ऐसे कृत्य करने पर मजबूर हो गया जिन्हें छिपाना या सहन करना नामुमकिन था।

दुष्टता, लोभ और छल की जीती–जागती मिसाल, उस सैय्यद मुहम्मद के साथ लगातार सम्बन्ध बनाए रखने के कारण मिर्ज़ा याह्या इतना भ्रष्ट हो चुका था कि उसे सुधारना नामुमकिन था। बग़दाद में बहाउल्लाह की गैरमौजूदगी के दौरान और सुलेमानिया से उनकी वापसी के बाद भी, उसने प्रभुधर्म के इतिहास को पहले ही दागदार कर दिया था। उसके द्वारा बाब के लेखों के शब्दों में फेरबदल किए जाने के बहुत से उदाहरण थे; उसके द्वारा, अज़ान के फॉर्मूले में एक ऐसा निन्दापूर्ण अनुच्छेद शामिल किया गया था जिसमें उसने स्वयं को और अपने वंशजों को बाब का उत्तराधिकारी नामित कर दिया था; अपने स्वामी (बाब) की दुःखद मृत्यु की जानकारी मिलने पर उसके द्वारा की गई धोखाधड़ी; उसने बाबी विधान के सभी दर्पणों (शूरवीरों) की निन्दा की थी, जबकि वह स्वयं भी उन दर्पणों में से एक था; उसने उस दय्यान की हत्या करवाने का कायराना कृत्य किया था, जिनसे वह बहुत डरता और ईर्ष्या करता था; बग़दाद में बहाउल्लाह की अनुपस्थिति के दौरान, उसने बाब के चचेरे भाई मिर्ज़ा अली–अकबर की हत्या करवाने का कुकर्म किया था और इन सबसे अधिक जघन्य कर्म यह था, कि उसी अवधि में उसने बाब के सम्मान का अकथनीय रूप से घृणित खण्डन किया था। जैसा कि आक़ा–ए–कलीम ने साक्षी दी है और नबील ने अपने वर्णन में बताया है, मिर्ज़ा याह्या के ये सभी कृत्य, आगे चलकर ऐसी बहुत सी काली करतूतों से घिरने वाले थे जिनके कारण उसका विनाश निश्चित था।

उनके एड्रियानोपल पहुँचने के लगभग एक साल बाद, बहाउल्लाह और उनके साथियों को ज़हर देने और इसके माध्यम से अपने स्वयं के निष्क्रिय

नेतृत्व को पुनर्जीवित करने के बेताब षड़यंत्र, मिर्ज़ा याह्या के मन में खलबली मचाने लगे। दवाईयों के बारे में अपने सौतेले भाई आक़ा–ए–कलीम के ज्ञान से वह पूरी तरह अवगत था। उसने अलग–अलग बहाने से कुछ जड़ी–बूटियों और ज़हरों के असर के बारे में उनसे ज्ञान हासिल कर लिया और फिर, अपनी आदत के विपरीत बहाउल्लाह को अपने घर आमंत्रित करने लगा, जहाँ एक दिन उनकी चाय में उसने एक ऐसा पदार्थ मिला दिया जो उसके द्वारा तैयार किया गया था। इस तरह वह बहाउल्लाह को इतना ज़हर देने में सफल हो गया कि उन्हें एक ऐसी गम्भीर बीमारी हो गई जो कम से कम एक माह तक रही और जिसमें उन्हें बहुत दर्द और तेज़ बुखार रहता था। इसके परिणामस्वरूप बहाउल्लाह के जीवन के अन्त तक उनका एक हाथ कांपता था। उनकी हालत इतनी गम्भीर थी कि उनकी देखभाल करने के लिए शीशमन नाम के एक विदेशी डॉक्टर को बुलाया गया। उनका नीला रंग देखकर यह डॉक्टर बहुत डर गया। उनकी बीमारी को लाइलाज बताकर उनके चरणों में गिरने के बाद, बगैर कोई भी दवाई लिखे वह उनकी उपस्थिति से उठकर चला गया। कुछ दिन बाद वह डॉक्टर बीमार पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई। उसकी मौत से पहले बहाउल्लाह ने बताया था कि डाक्टर शीशमन ने उनके लिए अपने जीवन का बलिदान कर दिया है। डॉक्टर शीशमन को देखने के लिए बहाउल्लाह द्वारा भेजे गए मिर्ज़ा आक़ा जान को उस डॉक्टर ने बताया कि ईश्वर ने उनकी प्रार्थना सुन ली है और उनकी मृत्यु के बाद, यदि आवश्यकता हो तो एक डॉक्टर चूपन को उनके स्थान पर बुलाया जाए, जो उनकी दृष्टि में एक विश्वसनीय व्यक्ति थे।

मिर्ज़ा याह्या की पत्नियों में से उसकी एक पत्नी, जिसने कुछ समय के लिए उसका साथ छोड़ दिया था और उसके उपरोक्त कृत्य की बारीकियाँ बताई थीं, ने साक्षी दी है कि इसी मिर्ज़ा याह्या ने एक अन्य अवसर पर उस कुँए में ज़हर डाल दिया था जहाँ से बहाउल्लाह का परिवार और उनके साथियों को पानी मिलता था। इसके परिणामस्वरूप इन निर्वासितों में बीमारी के बड़े अजीब लक्षण देखे गए थे। मिर्ज़ा याह्या ने धीरे–धीरे और बड़ी सावधानी के साथ, अपने एक साथी नाई उस्ताद मुहम्मद–अली–ए–सलमानी

जिस पर उसने बड़े उपहार लुटाये थे, को अपनी यह इच्छा बताई थी, कि वह चाहता था कि एक अनुकूल अवसर पाकर, वह बहाउल्लाह के स्नान के समय उनकी हत्या कर दे। आक़ा–ए–कलीम बताते हैं कि, "इस प्रस्ताव को सुनकर उस्ताद मुहम्मद–अली इतना क्रोधित हो उठा कि उसकी इच्छा हुई कि वह मिर्ज़ा याह्या को वहीं खत्म कर दे, यदि उसे बहाउल्लाह की नाराज़गी का डर न होता तो वह ऐसा कर भी देता। जब वह हमाम से रोता हुआ बाहर आया.....तब उससे मिलने वाला सबसे पहला व्यक्ति मैं था। बहुत मनाने के बाद, अन्त में मैंने उसे राज़ी कर लिया कि वह हमाम में वापस जाकर बहाउल्लाह की सहायता करे।" इसके बाद, यद्यपि बहाउल्लाह ने उसे कई बार आदेश दिए कि वह इस घटना का उल्लेख किसी से न करे, फिर भी वह नाई चुप नहीं रह सका और इसकी गोपनीयता भंग कर दी, जिसके कारण समुदाय में भारी गड़बड़ी फैल गई। स्वयं बहाउल्लाह इस बात की पुष्टि करते हैं कि, *"जब ईश्वर ने उसके (मिर्ज़ा याह्या के) सीने में छिपी हुई बात को उजागर कर दिया, तो उसने ऐसे किसी भी इरादे से इन्कार कर दिया और आरोप उसी सेवक (उस्ताद मुहम्मद–अली) पर लगा दिया।"*

अब वह समय आ गया था कि वह जिसने हाल ही में, मौखिक रूप से और असंख्य पातियों के द्वारा, अपने दावों के अर्थों को प्रकट किया था, बाब द्वारा नामित व्यक्ति (मिर्ज़ा याह्या) को अपने ध्येय के स्वरूप से अवगत करा दें। तदनुसार, मिर्ज़ा आक़ा जान को यह कार्य सौंपा गया कि वह मिर्ज़ा याह्या को हाल ही में प्रकट की गई वह सुरिह–ए–अम्र दे आए, जो बहाउल्लाह के इन दावों की स्पष्ट रूप से पुष्टि करती है, उसे यह पढ़कर सुनाए और उससे एक स्पष्ट और निर्णायक उत्तर की माँग करे। अपने उत्तर पर विचार करने के लिए एक दिन के अवसर का मिर्ज़ा याह्या का अनुरोध स्वीकार कर लिया गया। लेकिन, उसकी ओर से जो एकमात्र उत्तर प्राप्त हुआ, वह था एक जवाबी दावा, जिसमें उस घड़ी और पल का स्पष्ट उल्लेख किया गया था जिसमें उसे एक स्वतंत्र प्रकटीकरण का वाहक बनाया गया था, जिसके प्रति धरती के पूरब और पश्चिम के लोगों का शर्तरहित समर्पण आवश्यक था।

इतने निर्णायक प्रकटीकरण के संवाहक (बहाउल्लाह) के दूत के समक्ष इतने विश्वासघाती शत्रु द्वारा किया गया इतना धृष्ट दावा, बहाउल्लाह और मिर्ज़ा याह्या के बीच खुले और अन्तिम अलगाव का संकेत था, एक ऐसा अलगाव जो बहाई इतिहास की सबसे काली तारीखों में से एक को चिन्हित करता है। अपने शत्रुओं के सीनों में भड़क रही भयानक शत्रुता को कम करने की चाह में और यह सुनिश्चित करने के लिए कि प्रत्येक निर्वासित को, स्वयं के और उनके बीच चुनने की पूरी–पूरी आज़ादी मिले, बहाउल्लाह अपने परिवार के साथ रिज़ा बेग के उस निवास में रहने चले गये (हि.स. 1282, शव्वल, 22), जो उनके आदेश से किराये पर लिया गया था और दो माह तक उन्होंने किसी भी मित्र या अपरिचित से मिलने से इन्कार कर दिया, जिसमें उनके साथी भी शामिल थे। उन्होंने आक़ा–ए–कलीम को निर्देश दिए कि वे, घर में मौजूद समस्त फर्नीचर, बिस्तर, कपड़े और बर्तन में से आधा सामान मिर्ज़ा याह्या को भेज दे; उसे बाब की मुहरें, अँगूठियाँ, और हस्तलिपियाँ जैसे चन्द बहुमूल्य स्मारक सौंप दें जिन्हें प्राप्त करने का उसे एक लम्बे समय से लालच था और यह सुनिश्चित करें कि सरकार द्वारा निर्वासितों एवं उनके परिवारों के भरण–पोषण के लिए निर्धारित भत्ते का उसका पूरा–पूरा हिस्सा उसे मिले। उन्होंने आक़ा–ए–कलीम को निर्देश दिए कि वे अपने साथियों में से किसी एक को स्वयं चुनकर आदेशित करें कि वह दिन में कुछ घंटों के लिए मिर्ज़ा याहया की ज़रूरत का सामान खरीदने के लिए जाये और मिर्ज़ा याहया को यह आश्वासन दें कि इसके बाद फारस से जो भी सामान उसके नाम से आयेगा, उसे पहुँचा दिया जायेगा।

आक़ा–ए–कलीम ने नबील को बताया था कि, "उस दिन एक बहुत बड़ा शोरगुल देखा गया। बहाउल्लाह से अलग होने के कारण सभी साथी रो रहे थे।" उन्हीं साथियों में से एक की लिखित साक्षी है कि, "वे दिन, उथल–पुथल और उलझन के दिन थे। हम बहुत ज़्यादा घबरा गए थे और बहुत डर गए थे कि कहीं हम सदा के लिए उनकी उपस्थिति की कृपा से वंचित न कर दिए जाएँ।"

लेकिन ये दुःख और घबराहट बहुत कम समय के लिए थी। मिर्ज़ा याह्या और सैय्यद मुहम्मद दोनों ने जिस निन्दापूर्ण ढंग से अपने पत्रों को लिख कर फारस और इराक में वितरित किया और एड्रियानोपल के गवर्नर, खुर्शीद पाशा और उसके सहायक अज़ीज़ पाशा को, मिर्ज़ा याह्या ने जो चापलूसी भरी अर्ज़ियाँ लिखीं, उनके कारण बहाउल्लाह को अपने एकान्तवास से बाहर आना पड़ा। इसके तुरन्त बाद उन्हें बताया गया कि उनके इसी भाई (मिर्ज़ा याहया) ने अपनी एक पत्नी को सरकारी निवास पर यह शिकायत करने के लिए भेजा कि उसके पति के अधिकारों का हनन हुआ है और उसके बच्चे भूखे मर जायेंगे। यह एक ऐसा आरोप था जिसकी खबर दूर–दूर तक फैल गई, जब यह खबर कॉन्सटैन्टिनोपल तक पहुँची तो बहाउल्लाह को इस बात का बहुत दुःख हुआ कि यह खबर उन लोगों के बीच उत्साही चर्चाओं और दुःखदायी टिप्पणियों का विषय बन गई, जो पूर्व में उस उच्च स्तर से बहुत प्रभावित हुए थे जो बहाउल्लाह के श्रेष्ठ और मर्यादापूर्ण आचरण ने उस शहर में स्थापित की थी। सैय्यद मुहम्मद राजधानी पहुँचा, उसने फारस के राजदूत, मुशीरूद–दौलियह से भीख माँगी कि वे मिर्ज़ा याह्या को एक वृति आबंटित करें। उसने बहाउल्लाह पर आरोप लगाया कि वे नसीरूद्दीन शाह की हत्या करवाने के लिए एक प्रतिनिधि को भेजने वाले हैं और उस महान के प्रति अपशब्द उगलने और उनकी निन्दा करने का भरपूर प्रयास किया, जिसने इतने लम्बे समय तक इतने धैर्य के साथ उसे सहन किया था और उन अत्याचारों को चुप रहकर बरदाश्त किया था जिनका सैय्यद मुहम्मद दोषी था।

रिज़ा बेग के निवास में एक साल तक रहने के पश्चात, बहाउल्लाह उस घर में लौट आए जिसमें वे अपने साथियों से अलग होने से पहले रहते थे और फिर वहाँ से अपना निवास बदल कर वे इज़्ज़त आक़ा के घर में रहने लगे। इस घर में वे एड्रियानोपल छोड़ने तक रहे। यह वही घर था जिसमें हि.स. 1284 के जामादिउल–अव्वल माह (सितम्बर 1867) में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना घटी, जिसने मिर्ज़ा याह्या और उसके समर्थकों को बुरी तरह परेशान कर दिया और उन पर बहाउल्लाह की विजय की घोषणा, मित्र और शत्रु, दोनों

के सामने कर दी। मीर मुहम्मद नाम का शीराज़ का एक बाबी, जिसे मिर्ज़ा याह्या के दावे और उसके एकान्तवास से घृणा थी, सैय्यद मुहम्मद को इस बात के लिए विवश करने में सफल हो गया कि वह मिर्ज़ा याह्या को बहाउल्लाह से प्रत्यक्ष मिलने के लिए राज़ी कर ले, ताकि सच और झूठ का निर्णय सबके सामने हो जाए। मूर्खतापूर्वक यह मानकर, कि उसके विख्यात भाई (बहाउल्लाह) ऐसे प्रस्ताव का सामना कभी नहीं कर सकेंगे, मिर्ज़ा याह्या ने बहाउल्लाह से अपनी भेंट के लिए सुल्तान सलीम की मस्जिद को चुना। जैसे ही बहाउल्लाह को इस व्यवस्था की जानकारी दी गई, वे, दोपहर की धूप में, उसी मीर मुहम्मद के साथ, उपरोक्त मस्जिद के लिए पैदल ही रवाना हो गए, जो शहर के एक दूर–दराज़ हिस्से में स्थित थी। सड़कों और बाज़ारों से गुज़रते हुए, वे एक ऐसी वाणी और ढंग में श्लोकों को उच्चारित कर रहे थे कि उन्हें देखने और सुनने वाले बहुत आश्चर्य में पड़ गए।

जैसी कि स्वयं बहाउल्लाह ने एक पाती में पुष्टि की है, उस स्मरणीय अवसर पर उनके द्वारा उच्चारित किए गए कुछ शब्द इस प्रकार हैं, *"ओ मुहम्मद !" वस्तुतः वह जो परम आत्मा है, अपने निवास से निकल आई है और उसके साथ ईश्वर के चुने हुए जन और उसके संदेशवाहकों की वास्तविकताएँ भी आगे आई हैं। अतः देखो, मेरे सिर के परे स्वर्गिक साम्राज्य के निवासी हैं और मेरी मुट्ठी में सभी पैग़म्बरों के प्रमाण हैं। कहो : यदि धरती के सभी धार्मिक नेता, सभी विद्वान, सभी सम्राट और शासक एकत्रित हो जाएँ, तो मैं, सत्य ही, उनका सामना कर लेता और उस अधिपति प्रभु, उस सर्वशक्तिशाली, सर्वज्ञाता के श्लोकों को घोषित करता। मैं वह हूँ जो किसी से नहीं डरता, भले ही वे सभी जो स्वर्ग में और धरती पर हैं, मेरे विरूद्ध उठ खड़े हों..... । यह मेरा वह हाथ है जिसे ईश्वर ने सभी लोकों को दिखाने के लिए श्वेत किया है। यह मेरी छड़ है; यदि हम इसे नीचे पछाड़ दें, तो सत्य ही, यह सभी सृजित वस्तुओं को निगल जायेगी।"* मीर मुहम्मद, जिसे बहाउल्लाह के आगमन की सूचना देने के लिए आगे भेज दिया गया था, शीघ्र ही लौट आया और उन्हें सूचना दी कि वह जिसने उनकी सत्ता को चुनौती दी थी, कुछ आकस्मिक कारणों की वजह से इस साक्षात्कार को एक या दो दिन के लिए टालना चाहता है। अपने घर लौटने पर बहाउल्लाह

ने एक पाती प्रकट की, जिसमें उन्होंने इस घटना का वर्णन किया, टाले गए साक्षात्कार का समय निर्धारित किया, इस पाती को अपनी मुहर से बन्द किया, नबील को सौंपा और उन्हें निर्देशित किया कि वे इस पाती को, सैय्यद मोहम्मद की जानकारी के लिए उस नए अनुयायी, मुल्ला मुहम्मद–ए–तबरीज़ी को दे दें, जिसकी दुकान पर सैय्यद मुहम्मद अक्सर आया करता था। यह व्यवस्था की गई कि सैय्यद मुहम्मद को वह पाती सौंपने से पहले उससे एक मुहर लगे कागज़ पर यह लिखवाने की माँग की जाए कि यदि मिर्ज़ा याह्या, साक्षात्कार के निश्चित स्थान पर नहीं पहुँचता, तो वह उससे इस बात की लिखित पुष्टि करवायेगा कि उसके दावे झूठे हैं। सैय्यद मुहम्मद ने वादा किया कि वह अगले दिन वह दस्तावेज़ ले आयेगा। लेकिन, तीन दिन तक नबील रोज उस दुकान पर जाकर प्रतीक्षा करते रहे, न तो सैय्यद आया, न ही उसने ऐसा कोई दस्तावेज़ भेजा। तेईस साल बाद इस घटना के अपने ऐतिहासिक वर्णन में नबील इस बात की पुष्टि करते हैं कि जो पाती सैय्यद मुहम्मद को दी जानी थी, वह अब भी उनके पास थी, "बिल्कुल वैसी ही ताज़ा, जैसी वह उस दिन थी जब महानतम शाखा (अब्दुल बहा) ने इसे लिखा था और प्राचीनतम सौन्दर्य (बहाउल्लाह) की मुहर ने इसकी पुष्टि की थी।" यह एक खदेड़े गए शत्रु पर बहाउल्लाह की स्पष्ट विजय का वास्तविक और अकाट्य प्रमाण था।

जैसा कि देखा जा चुका है, बहाउल्लाह के जीवनकाल की इस सबसे दुःखद घटना पर उनकी स्वयं की प्रतिक्रिया गहरे दुःख से भरी थी। वे अपनी वेदना व्यक्त करते हैं, *"वह जिसे मैंने कई वर्षों तक प्रेममय दयालुता के हाथों से पाला–पोसा, मेरी हत्या करने के लिए उठ खड़ा हुआ है।"* इन जैसे विश्वासघाती शत्रुओं की ओर संकेत करते हुए वे लिखते हैं, *"मुझ पर अत्याचार करने वालों द्वारा की गई क्रूरता से मेरी कमर झुक गई है और मेरे बाल सफेद हो गए हैं। यदि तुम स्वयं को मेरे सिंहासन के समक्ष प्रस्तुत करोगे, तो तुम इस प्राचीन सौन्दर्य (बहाउल्लाह) को पहचान नहीं पाओगे, क्योंकि काफिरों के अत्याचारों के कारण उसके मुखड़े की ताज़गी बदल चुकी है और इसकी चमक फीकी पड़ चुकी है।"* वे पुकार उठते हैं, *"ईश्वर की सौगंध ! मेरे शरीर का ऐसा कोई अंग नहीं है जो तुम्हारे षड़यंत्रों के भाले से अनछुआ रह गया*

हो।" और एक बार फिर वे कहते हैं : *"तुमने अपने भाई के साथ वह किया है जो किसी भी मनुष्य ने किसी दूसरे मनुष्य के साथ नहीं किया है।"* वे आगे यह पुष्टि करते हैं, *"तुम्हारी कलम से जो निकला है, उसने महिमा के मुखड़ों को धूल में गिरा दिया है, सर्वोच्च स्वर्ग में महानता के परदे को चीर कर दो टुकड़े कर दिया है और उच्चतम सिंहासनों पर प्रतिष्ठित ईश्वर के प्रियजनों के हृदयों को गहरा घाव दिया है।"* इसके बावजूद, *किताब–ए–अक़दस* में, इसी भाई को, *"विकृति के इस स्रोत"* को *"जिसकी अपनी ही आत्मा से लालसा की आँधी उठी और उसी पर चल गई।"* वह क्षमाशील स्वामी, विश्वास दिलाते हैं कि वह *"अपने कर्मों के कारण डरे नहीं"* और उसे आदेश देते हैं कि वह *"विनम्रता, समर्पण और दीनता में ईश्वर की ओर लौट आये"* और यह पुष्टि करते हैं कि *"वह तुम्हारे पापों को तुमसे अलग कर देगा"* और यह कि *"तुम्हारा स्वामी क्षमाशील, शक्तिशाली, सर्वदयालु है।"*

उसके आदेश और शक्ति के माध्यम से जो सर्वमहान न्याय का निर्झर स्रोत है, उस *"सर्वमहान छाया"* को खंडित अवस्था में, उस सर्वमहान नाम के समुदाय से बहिष्कृत कर दिया गया है। इस प्रदूषण से दूर, स्वच्छ होकर, इस भयंकर स्वामित्व से छुटकारा पाकर, ईश्वर का नवजात धर्म अब आगे बढ़ सकता था और इसे हिला देने वाली उथल–पुथल के बावजूद नए संघर्ष करने की, उच्चतर ऊँचाईयों को प्राप्त करने की तथा महानतर विजय प्राप्त करने की अपनी क्षमता प्रदर्शित कर सकता था।

बाबी धर्म के समर्थकों के बीच, स्पष्ट रूप से एक अस्थायी दरार डाल दी गई थी। इसके तेज को ग्रहण लग गया था और इसका इतिहास सदा के लिए दाग़दार हो गया था। परन्तु, इसका नाम नहीं मिटाया जा सका, इसका उत्साह यथावत था और तथाकथित विधर्म, इसके ताने–बाने को नहीं चीर सका। बाब की वह संविदा, जिसका उल्लेख किया जा चुका है, अपनी अपरिवर्तनीय सच्चाईयों, निर्विवाद भविष्यवाणियों और बार–बार दोहराई गई चेतावनियों के द्वारा इस धर्म की रक्षा कर रही थी, इसकी अखण्डता को सुनिश्चित कर रही थी, इसकी शुद्धता को प्रदर्शित कर रही थी और इसके प्रभाव को बनाए रख रही थी।

यद्यपि वे स्वयं दुःख के बोझ से झुक गए थे और उन पर किए गए जानलेवा हमले के प्रभाव के कारण वे अब भी कष्ट में थे और यद्यपि वे यह अच्छी तरह जानते थे कि उन्हें एक बार फिर निर्वासित किया जा सकता है, फिर भी उनके धर्म द्वारा सहन किए गए आघात और इसे घेरने वाले खतरों से विचलित हुए बगैर, उस कठिन परीक्षा के समाप्त होने के पहले ही, अद्वितीय शक्ति के साथ, बहाउल्लाह पूरब और पश्चिम के उन लोगों के समक्ष, जिनकी मुट्ठी में सर्वोच्च भौतिक सत्ता की बागडोर थी, उस ध्येय की घोषणा करने के लिए उठ खड़े हुए जो उन्हें सौंपा गया था। इस अत्यन्त स्पष्ट घोषणा के माध्यम से, यह नियत था कि उनके प्रकटीकरण का सूर्य अपने प्रकाश की पराकाष्ठा में चमकेगा और उनका धर्म अपनी दिव्य शक्ति की प्रचुरता प्रकट करेगा।

विलक्षण गतिविधि का एक ऐसा समय आया कि इसका प्रभाव, बहाउल्लाह के जीवनकाल के बासन्ती वर्षों से अधिक शक्तिशाली था। एक प्रत्यक्षदर्शी ने लिखा है कि, "दिन–रात दिव्य श्लोकों की इतनी बड़ी संख्या में वर्षा होती थी कि इन्हें लिख पाना लगभग असम्भव था। जैसे–जैसे ये कहे जाते थे, उसी समय, मिर्ज़ा आक़ा जान इन्हें लिख लेते थे, जबकि अब्दुल बहा इन्हें स्पष्ट हस्तलिपि में लिखने में व्यस्त रहते थे। एक क्षण का भी अवकाश नहीं रहता था।" नबील बताते हैं कि कई लिपिक दिन–रात व्यस्त रहते थे, फिर भी इस कार्य को पूरा नहीं कर पाते थे। इनमें से एक थे मिर्ज़ा बक़िर–ए–शिराजी....,वे अकेले ही कम से कम दो हजार श्लोक प्रतिदिन उतार लेते थे। उन्होंने छः या सात माह तक अथक परिश्रम किया। हर माह, उनके द्वारा कई पुस्तकों के बराबर लेख लिपिबद्ध किए जाते और फारस भेजे जाते। अपनी उत्कृष्ट हस्तलिपि में वे लगभग बीस पुस्तकें लिपिबद्ध करके यादगार के रूप में मिर्ज़ा आक़ा जान के लिए छोड़ गए हैं। स्वयं के द्वारा प्रकट किए गए श्लोकों के बारे में बहाउल्लाह ने लिखा है : *"दिव्य कृपा के बादलों की वर्षा इतनी प्रचुर है कि एक घंटे के अन्दर एक हजार श्लोक प्रकट किए गए हैं।" "इस दिवस में प्रदान की गई कृपा इतनी अधिक है कि यदि इस कार्य को निष्पादित करने की क्षमता रखने वाला कोई लिपिक मिलता, तो दिव्य पावनता के स्वर्ग से एक दिन और*

रात में, फारसी बयान जितने श्लोक प्रकट किए जा सकते हैं।" एक अन्य सम्बन्ध में उन्होंने इसकी पुष्टि की है कि, *"मैं ईश्वर की सौगंध खाता हूँ ! उन दिनों में जितना प्रकट किया गया है, वह पूर्व के सभी ईश्वरीय अवतारों को भेजे गए कुल प्रकटीकरण के बराबर है।" "अपने लेखों के प्रवाह का उल्लेख करते हुए, उन्होंने यह घोषित किया कि जो कुछ भी इस भूमि (एड्रियानोपल) में प्रकट किया गया है, उसे लिपिबद्ध कर पाने में लिपिक अक्षम हैं। अतः यह अधिकांशतया लिपिबद्ध किए बगैर ही रह गया है।"*

पहले ही से उस दुःखद संकट के बीच होते हुए और इस संकट के चरम सीमा पर पहुँचने से भी पहले, बहाउल्लाह की लेखनी से ऐसी असंख्य पातियाँ प्रकटित हो रहीं थीं, जिनमें उनके द्वारा हाल ही में किए गए दावों के अर्थों की पूरी–पूरी व्याख्या की गई थी। सुरीय–ए–अम्र, लौह–ए–नुक़्ती, लौह–ए–अहमद, सुरीय–ए–आश्शाब, लौह–ए–सैयाह, सुरीय–ए–दाम्म, सुरीय–ए–हज्ज, लाहउर–रूह, लाहउर–रिज़वान, तथा लाहउर–तुक़ा उन पातियों में थीं जो बहाउल्लाह की लेखनी द्वारा पहले ही, तब प्रकट कर दी गई थी जब बहाउल्लाह ने अपना निवास इज्ज़त आक़ा के घर में स्थानान्तरित कर लिया था। उस "सर्वमहान अलगाव" के घटने के तुरन्त बाद, एड्रियानोपल में बहाउल्लाह के प्रवास से जुड़ी सबसे महत्वपूर्ण पातियाँ प्रकट की गईं। बहाउल्लाह के द्वारा प्रकट की गई सबसे निर्णायक पाती थी सुरीय–ए–मुलुक (सम्राटों की पाती), जिसमें वे पहली बार पूरब और पश्चिम के सम्राटों को संयुक्त रूप से अपने शब्द सम्बोधित करते है और जिसमें तुर्की के सुल्तान, उसके मंत्रियों, ईसाई सम्राटों, सब्लाईम पोर्ट पर पदस्थ फ्राँसिसी और फारसी राजदूतों, कॉन्सटैन्टिनोपल के मुस्लिम धार्मिक नेताओं, वहाँ के विद्वानों और निवासियों, फारस के लोगों और दुनिया के दार्शनिकों को अलग–अलग सम्बोधित किया गया था; मिर्ज़ा मेहदी–ए–रश्ती द्वारा उन पर लगाए गए आरोपों को झूठा सिद्ध करने के लिए उनका वह लिखित स्पष्टीकरण, जो बाबी प्रकटीकरण के समर्थन में लिखी गई *किताब–ए–ईक़ान* के समान था; उनके नियमों की पुस्तक की प्रतीक्षा में लिखी गई मुनाजात–ए–सियाम (उपवास की प्रार्थनाएँ); नेपोलियन तृतीय को लिखी गई वह पहली पाती, जिसमें फ्राँसिसियों

के इस सम्राट को सम्बोधित किया गया है और उसके कार्यों की सच्चाई की परीक्षा ली गई है; नसीरूद्दीन शाह को सम्बोधित उनकी वह विस्तृत पाती लौह–ए–सुल्तान, जिसमें उनके धर्म के लक्ष्य, उद्देश्य और सिद्धान्तों की व्याख्या की गई है और उनके ध्येय की वैधता प्रदर्शित की गई है; सुरीय–ए–रईस, जो गेलीपोली जाते हुए काशान गाँव में शुरू की गई थी और कुछ ही समय बाद ग्यावुर–क्यू में पूरी की गई थी। इन सभी को, न केवल एड्रियानोपल में प्रकट की जाने वाली उन असंख्य पातियों में से सबसे उत्कृष्ट माना जाना चाहिए, बल्कि बहाई प्रकटीकरण के संस्थापक के सभी लेखों में सबसे प्रधान स्थान लेने वाली पातियाँ समझी जानी चाहिए।

सुरीय–ए–मुलुक में बहाउल्लाह, धरती के सम्राटों को अपने संदेश में अपने ध्येय के स्वरूप की घोषणा करते हैं; उन्हें अपना संदेश स्वीकार करने की सलाह देते हैं; बाब के प्रकटीकरण की वैधता की पुष्टि करते हैं; अपने धर्म के प्रति उनकी उदासीनता के लिए उनकी भर्त्सना करते हैं; उन्हें न्यायनिष्ठ और सचेत रहने, अपने मतभेदों को भुला देने और अपने शस्त्रों को कम करने के आदेश देते हैं; अपने कष्टों का वर्णन करते हैं; निर्धनों को उनकी सुरक्षा में सौंपते हैं; उन्हें चेतावनी देते हैं कि यदि वे उनके परामर्शों पर ध्यान नहीं देंगे, तो उन पर *"चारों ओर से" "दिव्य दण्ड" "टूट पड़ेंगे"।* वे *"धरती पर अपनी विजय"* की भविष्यवाणी करते हैं, चाहे कोई भी सम्राट उनकी ओर उन्मुख हो या न हो।

उसी पाती में बहाउल्लाह, विशेषकर ईसाई सम्राटों की निंदा करते हैं, क्योंकि वे उसका *"स्वागत"* करने में और उसके *"नज़दीक जाने"* में विफल रहे हैं जो *"सत्य की आत्मा"* है और उन्होंने अपने आप को अपने मनोरंजन और कल्पनाओं से बहलाने में व्यस्त रखा है। बहाउल्लाह घोषित करते हैं कि उन्हें उसकी उपस्थिति में उनके कर्मों का हिसाब देने के लिए बुलाया जायेगा जो सम्पूर्ण सृष्टि को एकत्रित करेगा।

वे सुल्तान अब्दुल अज़ीज़ को आदेश देते हैं कि वह *"उसकी वाणी पर ध्यान दे.....जो अमोघ रूप से उस सीधे पथ पर चलता है।"* उसे सलाह देते हैं कि वह अपनी प्रजा के क्रियाकलापों का व्यक्तिगत रूप से निर्देशन करे और

अयोग्य मंत्रियों के भरोसे न रहे; उसे चेतावनी देते हैं कि वह अपने खज़ानों पर आश्रित न रहे, न ही *"संयम की सीमाओं को लांघे"* बल्कि अपनी प्रजा के साथ *"अचूक न्याय" का व्यवहार करे"*; उसे अपनी स्वयं की विपत्तियों के भारी बोझ से अवगत कराते हैं। उसी पाती में वे दृढ़ता से अपनी बेगुनाही और सुल्तान और उसके मंत्रियों के प्रति अपनी वफादारी पर बल देते हैं; राजधानी से अपने निर्वासन की परिस्थितियों का वर्णन करते हैं; और उसकी ओर से ईश्वर से प्रार्थना करने का आश्वासन देते हैं।

इसके अतिरिक्त, जैसा सुरीय–ए–रईस द्वारा प्रमाणित किया गया है, जब बहाउल्लाह गेलीपोली में थे, तब उन्होंने एक तुर्की अफसर के माध्यम से इसी सुल्तान को एक मौखिक संदेश भेजकर उससे दस मिनट के एक साक्षात्कार का अनुरोध किया था, *"ताकि वह साक्ष्य के तौर पर, वह माँग सके जिसे वह उसकी सच्चाई का पर्याप्त सबूत समझता हो जो स्वयं सत्य है"* साथ ही वे यह भी कहते हैं कि *"यदि ईश्वर उन्हें यह प्रस्तुत करने में समर्थ बनाते हैं, तो वह इन अन्याय–पीड़ितों को रिहा कर दे और उन्हें उनके हाल पर छोड़ दे।"*

नेपोलियन तृतीय को बहाउल्लाह ने एक विशेष पाती सम्बोधित की थी, जिसे सम्राट की सेवा में कार्यरत् एक फ्रांसिसी मंत्री के द्वारा भेजा गया था। इस पाती में बहाउल्लाह ने उन कष्टों का उल्लेख किया है जो उनके और उनके अनुयायियों द्वारा सहन किए जा रहे थे; उनकी बेगुनाही पर बल दिया है; इस पाती में उन्होंने अत्याचार पीड़ितों और असहायों की ओर से सम्राट को उनकी दो घोषणाओं का स्मरण कराया है और उनके इरादों की सच्चाई को परखने के उद्देश्य से उनसे आग्रह किया है कि वह *"उन लोगों की अवस्था के बारे में पता लगाएं जिनके साथ अन्याय किया गया है", "कमज़ोरों तक अपनी सुरक्षा पहुँचाएं" तथा उनके एवं उनके निर्वासित साथियों को "दया की दृष्टि से देखें।"*

नसीरूद्दीन शाह के लिए बहाउल्लाह ने वह पाती प्रकट की जो किसी सम्राट को सम्बोधित की जाने वाली सबसे लम्बी पाती थी। इस पाती में बहाउल्लाह ने उन कष्टों की अत्याधिक कठोरता की साक्षी दी है जो उन पर

टूट पड़े थे, यह याद किया है कि इराक के लिए उनके प्रस्थान की शाम को, शाह ने उनकी बेगुनाही स्वीकार की थी; उन्होंने शाह से न्यायपूर्वक शासन करने का अनुरोध किया; ईश्वर और उसके अवतारों की एकता में अपना विश्वास घोषित किया है; शाह की ओर से कई प्रार्थनाएँ उच्चारित कीं; इराक में अपने स्वयं के आचरण को उचित ठहराया; अपनी शिक्षाओं के उपकारी प्रभाव पर ज़ोर दिया और सभी प्रकार की हिंसा और दुष्टता की स्वयं के द्वारा निन्दा पर विशेष ज़ोर दिया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने इसी पाती में अपने ध्येय की वैधता को प्रदर्शित किया; यह इच्छा ज़ाहिर की कि उन्हें *"उस युग के धर्माचारियों के सम्मुख लाया जाए, ताकि वे महामहिम की उपस्थिति में ऐसे साक्ष्य और प्रमाण प्रस्तुत कर सकें,"* जो उनके धर्म की सच्चाई को स्थापित कर दे; इस पाती में बहाउल्लाह ने अपने समय के साथ–साथ ईसा मसीह और मुहम्मद के समय के धार्मिक नेताओं की पथभ्रष्टता को उजागर कर दिया है; यह भविष्यवाणी की है कि उनके दुःख और कष्ट के बाद *"सर्वोच्च दया की वर्षा"* होगी और *"समृद्धि का प्रवाह"* बहेगा। इस पाती में बहाउल्लाह ने उनके परिजनों पर आने वाली विपत्तियों की तुलना पैग़म्बर मुहम्मद के परिजनों द्वारा सहन की गई विपत्तियों से की है; मानवीय क्रियाकलापों की अस्थिरता का विस्तृत वर्णन किया है उस शहर का वर्णन किया है जिसमें उन्हें कुछ ही समय में निर्वासित करने वाले थे; भविष्य में होने वाले उलेमाओं के अपमान की भविष्यवाणी की है और एक बार फिर आशा व्यक्त करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि *"उनके धर्म की सहायता करने में और न्याय की ओर मुड़ने में"* ईश्वर शाह की सहायता करें।

बहाउल्लाह ने महामंत्री अली पाशा को सुरीय–ए–रईस की पाती सम्बोधित की थी। इसमें वे उसे आदेश देते हैं कि वह *"ईश्वर की वाणी की ओर ध्यान दे"*, यह घोषित करते हैं कि न तो उसकी *"गुर्राहट"*, न ही उसके आसपास के लोगों का *"भौंकना"*, और न ही *"दुनिया की सेनाएँ"* ईश्वर को अपना उद्देश्य पूरा करने से रोक सकती हैं; इस पाती में बहाउल्लाह उसे ऐसे कृत्य का दोषी ठहराते हैं जिसके कारण *"सर्वोत्कृष्ट स्वर्ग में ईश्वर के धर्मरक्षक (मुहम्मद) ने विलाप किया"*, और उसे फारस के राजदूत के साथ मिलकर उन्हें हानि

पहुँचाने का षड़यंत्र रचने के लिए दोषी ठहराते हैं; वे उस *"प्रत्यक्ष क्षति"* के बारे में भविष्यवाणी करते हैं जिसमें वह जल्द ही स्वयं को पायेगा; इस पाती में वे स्वंय अपने प्रकटीकरण के दिवस की प्रशंसा करते हैं; यह भविष्यवाणी करते हैं कि यह प्रकटीकरण *"शीघ्र ही धरती और इसमें निवास करने वाले सभी को अपने आगोश में समेट लेगा"*, और यह कि *"रहस्यमय भूमि (एड्रियानोपल) और जो कुछ भी इसके पास है..... सुल्तान के हाथ से निकल जायेगा, हंगामा मचेगा, विलाप की आवाज़ें सुनाई देंगी और चारों ओर दुष्टता के चिन्ह प्रकट होंगे"*। वे इस प्रकटीकरण की पहचान, मूसा और ईसा के प्रकटीकरणों के साथ करते हैं; वे मुहम्मद के दिनों में फारस के सम्राट के *"अहंकार"* को, मूसा के दिनों में मिस्र के राजा (फेरो) के अपराध को और इब्राहिम के दिनों में निम्रॉड की *नास्तिकता* को याद करते हैं तथा *"दुनिया को पुनर्जीवित करने और इसके सभी लोगों को एक करने के अपने उद्देश्य की घोषणा करते हैं।"*

सुरीय–ए–मुलुक में वे सुल्तान के मंत्रियों को उनके आचरण के लिए ऐसे उद्धरणों में फटकारते हैं, जिनमें वे उनके सिद्धान्तों की सुदृढ़ता को चुनौती देते हैं, यह भविष्यवाणी करते हैं कि उन्हें उनके कृत्यों के लिए सज़ा दी जायेगी। उनके घमंड और अन्याय की निन्दा करते हैं, संसार के अभिमान से स्वयं की शुद्धता और अनासक्ति पर ज़ोर देते हैं और अपनी बेगुनाही घोषित करते हैं।

उसी सूरा में वे सब्लाईम पोर्ट में पदस्थ फ्राँसिसी राजदूत को इस बात के लिए धिक्कारते हैं कि उसने उनके विरूद्ध फारस के राजदूत का साथ दिया; उसे सेंट जॉन के बाईबल में दर्ज किए गए ईसा मसीह के परामर्श याद दिलाते हैं; उसे चेतावनी देते हैं कि वह अपने कर्मों के लिए स्वयं उत्तरदायी होगा और उसे एवं उस जैसे अन्य लोगों को सलाह देते हैं कि, किसी अन्य के साथ वैसा व्यवहार न करे जैसा उसने उनके साथ किया है।

इसी पाती में वे कॉन्सटैन्टिनोपल में पदस्थ फारस के राजदूत को एक लम्बा उद्धरण सम्बोधित करते हैं जिसमें वे उसके भ्रम और मिथ्यापवाद को उजागर करते हैं, उसके और उसके देशवासियों के अन्याय की निन्दा करते हैं

और उसे आश्वासन देते हैं कि वे उसके विरूद्ध कोई दुर्भावना नहीं रखते, यह घोषित करते हैं कि, यदि उसे अपने कृत्य के महापाप का अंदाज़ा हो जाए तो वह जीवन के शेष दिन रो–रो कर बिताएगा। बहाउल्लाह यह पुष्टि करते हैं कि उसकी मृत्यु तक वह लापरवाह बना रहेगा। इस पाती में वे तेहरान और इराक में अपने स्वयं के आचरण को उचित ठहराते हैं और बग़दाद में फारस के राजदूत की भ्रष्टता की और इस मंत्री से उसकी सांठगांठ की साक्षी देते हैं।

इसी सूरा–ए–मुलुक में कॉन्सटैन्टिनोपल में सुन्नी इस्लाम के धर्मगुरूओं के पूरे समुदाय को वे एक विशेष संदेश सम्बोधित करते हैं, जिसमें वे उन्हें लापरवाह और आध्यात्मिक रूप से मृत कहकर उनकी भर्त्सना करते हैं; बहाउल्लाह की उपस्थिति में पहुँचने में विफल रहने के कारण वे उनके अभिमान के लिए उन्हें धिक्कारते हैं; उनके समक्ष अपने ध्येय के सम्पूर्ण प्रताप और महत्व को उजागर करते हैं; बहाउल्लाह इस बात की पुष्टि करते हैं कि यदि आज उन लोगों के अग्रणी जीवित होते, तो *"उनकी (बहाउल्लाह की) परिक्रमा करते"*; वे उन्हें *"नामों के पुजारी"* और नेतृत्व की चाह रखने वाले लोग कहकर उनकी निन्दा करते हैं और दृढ़तापूर्वक कहते हैं कि जब तक वे लोग उनकी दृष्टि में *"नए नहीं बनाये जायेंगे"*, तब तक ईश्वर उनकी ओर से कुछ भी स्वीकार नहीं करेगा।

वे, सूरा–ए–मुलुक का अन्तिम उद्धरण, कॉन्सटैन्टिनोपल शहर के बुद्धिमान लोगों और विश्व के दार्शनिकों को समर्पित करते हैं। इन उद्धरणों में वे उन्हें चेतावनी देते हैं कि वे ईश्वर के समक्ष अहंकार न दिखायें; वे उनके सामने सच्चे विवेक का सार प्रकट करते हैं; आस्था और ईमानदार आचरण के महत्व पर बल देते हैं; उनसे ज्ञान प्राप्त करने में विफल रहने के कारण वे उन्हें धिक्कारते हैं और उन्हें सलाह देते हैं कि *"ईश्वर की सीमाओं को न लाँघें"*, न ही अपनी दृष्टि को *"मानवों के रास्तों और आदतों"* की ओर केन्द्रित करें।

इसी पाती में वे कॉन्सटैन्टिनोपल के निवासियों के समक्ष यह घोषित करते हैं कि वे *"ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी से नहीं डरते"*, कि वे *"उसके (ईश्वर के) आदेश के बगैर"*, कुछ नहीं कहते, कि वे सिवाय ईश्वर के सत्य के

अन्य किसी का अनुसरण नहीं करते, कि उन्होंने उस शहर के गवर्नरों और सम्मानित लोगों को *"मिट्टी से खेलने के लिए एकत्रित होने वाले बच्चों"* के समान पाया है और यह कि उन्होंने ऐसा एक भी व्यक्ति नही देखा जो उन सच्चाईयों को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त रूप से परिपक्व हो, जो ईश्वर ने उन्हें सिखाई थीं। वे उन्हें आदेश देते हैं कि वे ईश्वर के सिद्धान्तों को कस कर थाम लें; उन्हें चेतावनी देते हैं कि वे ईश्वर और उसके प्रियजनों के समक्ष अहंकार प्रदर्शित न करें; वे इमाम हुसैन की विपत्तियों को याद करते हैं और उनके गुणों की प्रशंसा करते हैं; यह प्रार्थना करते हैं कि स्वयं उन्हें भी उसी प्रकार की विपत्तियों का कष्ट मिले; वे यह भविष्यवाणी करते हैं कि शीघ्र ही ईश्वर ऐसे लोगों को उत्पन्न करेगा जो उनके (बहाउल्लाह के) कष्टों का वर्णन करेंगे और उनके अत्याचारियों से उनके अधिकारों को लौटाने की माँग करेंगे और उनका आह्वान करते हैं कि वे उनके शब्दों पर ध्यान दें, तथा ईश्वर की ओर लौट जाएँ और पश्चाताप करें।

और अन्त में, फारस के लोगों को सम्बोधित करते हुए वे उसी पाती में यह पुष्टि करते हैं कि यदि वे उन्हें मौत के घाट उतार देंगे, तो निश्चित रूप से, ईश्वर उनके स्थान पर एक अन्य को खड़ा करेगा और दावा करते हैं कि वह सर्वशक्तिशाली *"अपने प्रकाश को पूरी आभा बिखेरने में सहायता करेगा"*, भले ही वे लोग अपने दिल की गहराइयों में इससे घृणा करें।

धरती के मुसलमान और ईसाई सम्राटों, मंत्रियों और राजदूतों, सुन्नी इस्लाम के धर्मगुरुओं, कॉन्सटैन्टिनोपल शहर के विद्वानों और निवासियों, जो सल्तनत और खलीफा सरकार का सिंहासन था – विश्व के दार्शनिकों और फारस के लोगों के समक्ष, इतने उत्कृष्ट संदेश के वाहक द्वारा इतने नाजुक समय में इतनी बड़ी घोषणा को बहाउल्लाह के एड्रियानोपल प्रवास से जुड़ी एकमात्र विशेष घटना नहीं समझ लिया जाना चाहिए। यदि हम बहाउल्लाह के जीवनकाल के इस उत्तेजित और सबसे निर्णायक दौर के महत्व का न्यायसंगत अंदाज़ा लगाना चाहते हैं, तो हमें इन पृष्ठों में, अन्य कम महत्वपूर्ण किन्तु महान गतिविधियों और घटनाओं पर मनन् करना चाहिए।

यही वह काल था जिसके दौरान तथा मिर्ज़ा याह्या के विद्रोह एवं पतन के सीधे परिणामस्वरूप, इस नवजात धर्म की रक्षा करने के लिए और *किताब–ए–बदी* में उनके स्वामी का अनुसरण करते हुए, असंख्य और विस्तृत पक्ष–समर्थक लेखों द्वारा उनके विरोधियों के तर्कों का खण्डन करने और उनके घृणित कर्मों को उजागर करने के लिए बहाउल्लाह के कुछ ऐसे अनुयायी उठ खड़े हुए थे (जिनका शुमार उन *"खज़ानों"* में किया जा सकता है, जिनका वचन ईश्वर ने तब बहाउल्लाह को दिया था जब वे तेहरान के सियाहचाल में बेड़ियों के बोझ से झुक गए थे)। इनमें एक जीविताक्षर, तबरसी के संघर्ष के कुछ उत्तरजीवी थे और विद्वान मिर्ज़ा मुहम्मद–ए–अज़क़न्दी थे। यही वह काल था जिसमें प्रभुधर्म की सीमाओं का विस्तार हुआ था और जिसमें मुल्ला अबु–तालिब और उन अन्य लोगों के हाथों – जिन्हें नबील ने धर्मान्तरित किया था, इस धर्म का ध्वज सदा के लिए कोहक़ाफ में लगाया गया था, जिसमें सैय्यद हुसैन–ए–काशानी और हाजी बाक़िर–ए–काशानी के मिस्र में निवास स्थापित करने से, उस देश में इसका प्रथम केन्द्र स्थापित हुआ था और जिसमें ईश्वर के प्रकटीकरण की पहली किरणों से इराक, तुर्की और फारस जैसे पहले ही पुनर्जीवित किए गए देशों में सीरिया को भी जोड़ दिया गया था। यह वह समय था जिसमें *"अल्लाह–ओ–आभा"* के अभिनन्दन ने *अल्लाह–ओ–अकबर"* के पुराने अभिवादन का स्थान ले लिया था और इसे फारस और एड्रियानोपल में एक साथ अपनाया गया था। नबील के सुझाव पर, फारस में इसका सर्वप्रथम उपयोग करने वाले व्यक्ति थे मुल्ला मुहम्मद–ए–फुरूग़ी, जो शेख तबरसी के किले के रक्षकों में से एक थे। यह वह समय था जिसमें मिर्ज़ा याह्या के अनुयायियों की ओर संकेत करने वाले वाक्यांश – *"बयान के लोग"* को छोड़ दिया गया था और इसके स्थान पर *"बहा के लोग"*– शब्दों का उपयोग किया जाने लगा था। इन्हीं दिनों में नबील को विशेष रूप से सम्बोधित की गई एक पाती में उन्हें *"नबील–ए–आज़म"* की उपाधि से सम्मानित किया गया था। इस पाती में उन्हें आदेशित किया गया था कि वे *"पूरब और पश्चिम में"* अपने स्वामी का *"संदेश दें"*। अत्याधिक उत्पीड़नों के बावजूद नबील, उस *"सबसे क्षतिकर परदे"* को चीरने के लिए, अत्यन्त प्रिय स्वामी के प्रेम को उनके देशवासियों के दिलों में रोपने के लिए तथा उस धर्म का उत्साही

समर्थक बनने के लिए उठ खड़े हुए, जिस धर्म की घोषणा उनके परम प्रिय ने इतनी दुःखदाई परिस्थितियों में की थी। ये ही वे दिन थे जिसमें बहाउल्लाह ने नबील को निर्देश दिए थे कि वह उनकी ओर से तीर्थयात्रा की उन दो पातियों का पाठ करें जो हाल ही में प्रकट की गईं थीं और शीराज़ में बाब के निवास पर और बग़दाद में उस सर्वमहान निवास पर पहुँचने पर वह बहाउल्लाह की ओर से इनमें बतलाई गई विधियों को निष्पादित करे। यह एक ऐसा कार्य था जो एक ऐसे पावनतम अनुपालन की शुरूआत को चिन्हित करता है, जिसे आगे चलकर, *किताब–ए–अक़दस* में औपचारिक रूप से स्थापित किया जाने वाला था। यही वह काल था जिसके दौरान बहाउल्लाह द्वारा उस नियम की प्रतीक्षा में *"उपवास की प्रार्थनाएँ"* प्रकट की गईं थी, जिसकी घोषणा उसी पुस्तक *(किताब–ए–अक़दस)* में शीघ्र की जाने वाली थी। एड्रियानोपल में बहाउल्लाह के निर्वासन के दौरान ही उन्होंने तेहरान के अपने दो जानेमाने अनुयायियों, मुल्ला अली–अकबर–ए–शामिर्ज़ादी और जमाल–उ–बुरूजिर्दि को एक पाती सम्बोधित की थी, जिसमें उन्हें निर्देश दिए थे कि वे अत्यन्त गुप्त रूप से बाब के पावन अवशेषों को छिपाए गए स्थान, अर्थात इमाम–ज़ादेह मासूम के यहाँ से हटाकर किसी अन्य सुरक्षित स्थान पर स्थानान्तरित कर दें। यह एक ऐसा कार्य था जो आगे चलकर ईश्वर की कृपा सिद्ध हुआ। इस कार्य में, उन पावन अवशेषों को कार्मल के हृदय स्थल तक एक लम्बे और श्रमपूर्ण स्थानान्तरण का चिन्ह माना जा सकता है, जिसे आगे चलकर, अपने निर्देशों में वे अब्दुल बहा को बताने वाले थे। यही वह समय था जिसमें वह *सुरीय–ए–गुस्न* (शाखा की सुरा) प्रकट की गई थी, जिसमें अब्दुल बहा के भावी स्थान की भविष्यवाणी की गई है, और जिसमें उन्हें *"पावनता की शाखा", "ईश्वर के विधान का अंग", "ईश्वर की वह अमानत",* जिसे *"मनुष्य के रूप में धरती पर भेजा गया है"* जैसी उपाधियाँ देकर उनकी प्रशंसा की गई है। यह एक ऐसी पाती है जिसे उस पद का संवाहक कहा जा सकता है जो *किताब–ए–अक़दस* में उन्हें प्रदान किया जाने वाला था और जिसे आगे चलकर उसकी संविदा की पुस्तक में स्पष्ट किया जाने वाला था और उसकी पुष्टि की जाने वाली थी। और अन्त में, यही वह काल था जिसमें उनके निवास पर, जो अब एक नए स्थापित किए गए धर्म का प्रत्यक्ष केन्द्र था, पहली बार

तीर्थ यात्रा की गई थी। इससे डरी हुई फारस की सरकार ने इस पर शुरू–शुरू में रोक लगाई और बाद में निषेध कर दिया, लेकिन जो एक ही बिन्दु की ओर जाने वाले उन तीर्थयात्रियों के प्रवाह के पूर्व सूचक थे, जो पूरब और पश्चिम से, शुरूआत में जोखिम भरे और कठिन हालातों में, अक्का के दुर्ग–कारागार की ओर अपने कदम बढ़ाने वाले थे। ये वे तीर्थ स्थल थे, जो एक ऐसे राजसी अनुयायी के, कार्मेल पर्वत पर ऐतिहासिक आगमन के साथ अपनी चरम सीमा पर पहुँचने वाले थे, जिसे क्रूरतापूर्वक उसके उद्देश्य को पूरा करने से तब रोका गया, जब वह उस तीर्थ की देहलीज़ पर पहुँच गया, जिसकी उसे तीव्र इच्छा थी और जिसकी पर्याप्त चर्चाएँ फैल चुकी थीं।

इन उल्लेखनीय गतिविधियों में कुछ तो बहाउल्लाह की उद्घोषणा से जुड़ी थीं तथा उस आन्तरिक हलचल के कारण जिससे प्रभुधर्म को गुज़रना पड़ा, था की समकालीन थीं और अन्य इनका परिणाम थीं। ये गतिविधियाँ, प्रभुधर्म के उन बाहरी शत्रुओं की दृष्टि से न बच सकीं, जो हर उस संकट का पूरा–पूरा लाभ उठाने पर तुले हुए थे और प्रभुधर्म के शुभचिंतकों की मूर्खताओं या स्वधर्म त्यागियों के विश्वासघात के कारण कभी भी संकट उत्पन्न हो सकता था। अपने मध्यान्ह में चमक रहे इस सूर्य की किरणों के अब यकायक फूट पड़ने से ये काले बादल अभी पूरी तरह छँटे भी नहीं थे कि इस पर एक और ऐसी घोर विपदा आ पड़ी जो इस धर्म के संस्थापक द्वारा सहन की जाने वाली विपत्तियों में अन्तिम विपत्ति होने के साथ–साथ, इसके आकाश को अंधकारमय करने वाली सिद्ध हुई, जिसने इसे एक ऐसी कठिनतम परीक्षा में डाल दिया जिसका अनुभव इस धर्म ने पहले कभी नहीं किया था।

हाल ही के जिन घोर कष्टों ने बहाउल्लाह को इतनी क्रूरता से सताया था, उनसे साहस पाकर ये शत्रु, जो थोड़े समय के लिए शान्त हो चुके थे, अब दोबारा और कई तरीकों से अपनी उस छिपी हुई शत्रुता को प्रदर्शित करने लगे जिसे उन्होंने अपने दिलों में पाल रखा था। विभिन्न देशों में अब एक बार फिर एक ऐसा अत्याचार फूट पड़ा जो अपनी कठोरता के परिमाण में अलग था। अज़रबैजान और ज़नजान में, निशापुर और तेहरान में, इस धर्म के अनुयायियों को, या तो कैद कर लिया गया, बदनाम किया गया, दण्डित किया गया,

यातनाएँ दी गईं, अथवा मौत के घाट उतार दिया गया। इन कष्टपीड़ितों में जो लोग सम्मिलित थे, उनमें से एक थे वे निडर नजफ–अली–ए–ज़नजानी, जो कि ज़नजान की लड़ाई के एक उत्तरजीवी थे और जिन्हें *"भेड़िये के पुत्र को सम्बोधित पत्र"* में अमर बना दिया गया, जिनके पास जो स्वर्ण था, उसे उन्होंने अपने जल्लाद को दान कर दिया, जिनका सिर कलम किए जाने से पहले उन्हें "या रब्बिलयल–आभा" का नारा लगाते हुए सुना गया था। मिस्र में, एक लालची और पापी काउन्सिल–जनरल ने फारस के एक अमीर अनुयायी हाजी अबुल–कासिम–ए–शीराज़ी को धमकी देकर, उससे कम से कम एक लाख तुमान वसूल कर लिए; हाजी मिर्ज़ा हैदर अली और उनके छः सह–अनुयायियों को गिरफ्तार किया और उन्हें नौ साल के निर्वासन पर खारतुम भेज देने के लिए सम्बन्धित अधिकारियों को भड़काया, उनका सब कुछ छीन लिया और उसके बाद नबील को कैद में डाल दिया, जिन्हें बहाउल्लाह ने उनकी ओर से खेदिव के समक्ष अपील करने के लिए भेजा था। बग़दाद और क़ाज़मियान में, अवसर की तलाश में बैठे उन अथक शत्रुओं ने, बहाउल्लाह के वफादार समर्थकों के साथ कठोर और अपमानजनक व्यवहार किया; भोर के समय, जब अब्दुर–रसूल–ए–कूमी उस सर्वमहान निवास के लिए चमड़े की खाल में पानी ले जा रहा था तो उन्होंने जानवरों की तरह उसकी अंतड़ियाँ निकाल लीं और मज़ाक उड़ा रहे लोगों के सामने, औरतों और बच्चों सहित, लगभग सत्तर साथियों को मोसुल निर्वासित कर दिया।

मिर्ज़ा हुसैन–खान और उसके वे साथी भी कुछ कम सक्रिय नहीं थे, जिन्होंने बहाउल्लाह पर हाल ही में आए कष्टों का पूरा–पूरा लाभ उठाने का निश्चय करते हुए, उनका विनाश करने की ठान ली थी। राजधानी में पदस्थ अधिकारी उस सम्मान को देखकर कुढ़ गए जो पहले महामंत्री रह चुके गवर्नर मुहम्मद पाशा–ए–क़िब्रिसी और उसके उत्तराधिकारी, क़ादीरिय्येह समाज के सुलेमान पाशा और विशेषकर खुर्शीद पाशा ने बहाउल्लाह के प्रति दिखाया था और जिन्होंने खुले रूप से कई अवसरों पर बहाउल्लाह के घर पर आना–जाना किया था, रमज़ान के दिनों में उनकी मेज़बानी की थी और अब्दुल बहा के प्रति उत्कट श्रद्धा दिखाई थी। वे उस चुनौती भरे रुख से भली भाँति परिचित थे जो

बहाउल्लाह ने हाल ही में प्रकट की गई अपनी पातियों में अपनाया था। वे अपने देश की वर्तमान अस्थिरता के प्रति भी सजग थे। वे एड्रियानोपल में तीर्थयात्रियों के लगातार आने–जाने से और उस फुआद पाशा को बढ़ा–चढ़ाकर भेजी गई जानकारियों के कारण परेशान थे, जो हाल ही में निरीक्षण के दौरे पर वहाँ से गुज़रा था। मिर्ज़ा याह्या ने अपने प्रतिनिधि सैय्यद मुहम्मद के माध्यम से उन तक पहुँचाए गए आवेदनों से उन्हें उकसा दिया था। इसी सैय्यद और तुर्की तोपखाने में कार्य करने वाले उसके एक साथी आक़ा जान द्वारा लिखे गए ऐसे बेनामी पत्रों ने उनके सीने में भय उत्पन्न कर दिया, जिनमें बहाउल्लाह के लेखों के अर्थ का अनर्थ किया गया है और जिनमें उन पर यह आरोप लगाया गया कि वे बल्गेरिया के नेताओं और यूरोप के कुछ शक्तिशाली देशों के मंत्रियों के साथ साठगांठ करके अपने हजारों अनुयायियों की सहायता से कॉन्सटैन्टिनोपल पर विजय प्राप्त करना चाहते हैं। और अब, प्रभुधर्म को हिला देने वाली आन्तरिक फूट से प्रोत्साहित होकर और उस प्रत्यक्ष सम्मान से चिढ़कर जो एड्रियानोपल में पदस्थ विदेशी ताकतों के राजदूत बहाउल्लाह को देते थे, उन्होंने ऐसे कठोर और तात्कालिक कदम उठाने का निश्चय किया जो इस धर्म को मिटा कर रख दे, इसके संस्थापक को दूर कर दे और उन्हें शक्तिहीन बना दे। इसमें कोई सन्देह नहीं, कि एड्रियानोपल पहुँचने वाले कुछ अति–उत्साही अनुयायियों द्वारा की गई बुद्धिहीनता के कार्यों ने पहले से ही नाजुक स्थिति को और भी गम्भीर बना दिया।

अन्त में बहाउल्लाह को अक्का में कालापानी की सज़ा देकर निवार्सित करने का दुर्भाग्यपूर्ण निर्णय लिया गया और मिर्ज़ा याह्या को साईप्रस के फामगुस्ता में निर्वासित किया गया। यह निर्णय, सुल्तान अब्दुल अज़ीज़ द्वारा जारी किए गए एक आदेश में कठोर शब्दों में लिखा गया था। बहाउल्लाह के उन साथियों के साथ, जो राजधानी आ चुके थे, उन अन्य साथियों को और उस बदनाम षड़यंत्रकारी आक़ा जान को भी हिरासत में ले लिया गया, उनसे पूछताछ की गई, उनके कागज़ात छीन लिए गए और उन्हें कैद में डाल दिया गया। एड्रियानोपल के समुदाय के सदस्यों को कई बार सरकारी निवास पर बुलवाया गया ताकि उनकी वास्तविक संख्या का पता लग सके, साथ ही यह

अफवाह फैला दी गई कि उन्हें एक–दूसरे से अलग कर दिया जायेगा और विभिन्न स्थानों पर निर्वासित किया जायेगा या फिर चुपचाप मौत के घाट उतार दिया जायेगा।

एक सुबह बहाउल्लाह के घर को सैनिकों ने अचानक घेर लिया और द्वार पर पहरा बैठा दिया गया। अधिकारियों ने उनके अनुयायियों को एक बार फिर बुलवा भेजा, उनसे पूछताछ की और उन्हें आदेश दिये कि वे वहाँ से प्रस्थान करने की तैयारियाँ कर लें। सुरीय–ए–रईस में बहाउल्लाह साक्षी देते हैं कि, *"पहली रात को ईश्वर के प्रियजन और उनके बंधु–बांधवों को भूखा रखा गया.....। लोगों ने इस घर को घेर लिया और मुसलमान एवं ईसाईयों ने हम पर आँसू बहाए.....। हमने देखा कि उस पुत्र (ईसा मसीह) के अनुयायी, अन्य लोगों से ज़्यादा रो रहे थे – विचार करने वालों के लिए यह एक संकेत था।"* बग़दाद से अक्का तक, बहाउल्लाह के साथ निर्वासित किए गए उनके सबसे साहसी समर्थकों में से एक, आक़ा रिदा लिखते हैं कि, "लोगों में बड़ी हलचल मच गई थी। सभी घबराए हुए थे और बहुत अफसोस कर रहे थे.....। कुछ लोगों ने अपनी सहानुभूति व्यक्त की, अन्य ने हमें दिलासा दिया और रोए.....। हमारा अधिकांश सामान आधी कीमत में नीलाम कर दिया गया।" कुछ विदेशी राजदूत बहाउल्लाह से मिलने आए और उनकी ओर से अपनी–अपनी सरकारों के साथ बीच–बचाव करने की अपनी इच्छा व्यक्त की। बहाउल्लाह ने इन सुझावों के प्रति अपनी प्रसन्नता व्यक्त की लेकिन इन्हें दृढ़तापूर्वक अस्वीकार कर दिया। बहाउल्लाह स्वयं लिखते हैं कि, *"इस युवा के प्रस्थान की घड़ी में उस शहर (एड्रियानोपल) के राजदूत उनकी उपस्थिति में एकत्रित हुए और उनकी सहायता करने की इच्छा ज़ाहिर की। वस्तुतः उन्होंने हमारे प्रति प्रेम प्रकट किया।"*

फारस के राजदूत ने इराक में पदस्थ फारस के वाणिज्य दूत को तत्काल सूचना दी कि तुर्की की सरकार ने बाबियों पर से अपनी सुरक्षा हटा ली है और अब वे उनके साथ जैसा चाहें वैसा व्यवहार कर सकते हैं। इस बीच बहुत से तीर्थयात्री एड्रियानोपल पहुँच चुके थे जिनमें से एक थे, हाजी मुहम्मद

इस्माइल–ए–काशानी जिन्हें अनीस की उपाधि से सम्मानित किया गया था। अपने परम प्रिय का मुखड़ा देखे बगैर ही इन तीर्थयात्रियों को गलीपोली के लिए रवाना होना पड़ा। दो साथियों को अपनी पत्नियों को तलाक देना पड़ा क्योंकि उनके रिश्तेदारों ने उन्हें निर्वासन में भेजने से इन्कार कर दिया। खुर्शीद पाशा, जिसने कई बार स्पष्ट रूप से उन लिखित आरोपों का खण्डन किया था जो कॉन्सटैन्टिनोपल के शासकीय अधिकारी उसे भेज रहे थे और जिसने बहाउल्लाह की ओर से प्रबल बीच–बचाव किया था, अपनी सरकार के कृत्य से इतना शर्मिन्दा हो गया कि जब उसे बहाउल्लाह के तत्काल शहर छोड़ने के समाचार मिले तो उसने वहाँ उपस्थित न रहने का निर्णय लिया और रजिस्ट्रार को निर्देश दे दिये कि वह बहाउल्लाह को सुल्तान के आदेश के तात्पर्य से अवगत करा दे। जब हाजी जफर–ए–तबरीज़ी नाम के एक अनुयायी को यह पता चला कि बहाउल्लाह के साथ निर्वासित किए गए लोगों की सूची में उसका नाम शामिल नहीं किया गया है, तो उसने एक उस्तरे से अपना गला काट लिया, लेकिन उसे आत्महत्या करने से रोक लिया गया। सुरीय–ए–रईस में बहाउल्लाह के अनुसार यह एक ऐसा कृत्य था जैसा कुछ भी *"अतीत के युगों में कभी नहीं सुना गया था"* और जिसे *"अपनी शक्ति के बल के प्रमाण के रूप में ईश्वर ने इसी प्रकटीकरण के लिए अलग रखा था।"*

हि.स. 1285 के रबी–उस्सानी माह की बाईस तारीख (12 अगस्त, 1868) को, हसन एफेन्दी नाम के एक तुर्की अफसर और स्थानीय सरकार द्वारा नियुक्त किए गए अन्य सैनिकों की सुरक्षा में बहाउल्लाह और उनका परिवार, बग्घियों में सवार होकर तथा अपने मार्ग में उजुन–कुप्रू और काशान में रुकते हुए, गैलीपोली पहुँचने के लिए अपनी चार दिन की यात्रा पर रवाना हो गए। उजुन–कुप्रू में सुरीय–ए–रईस प्रकट की गई थी। एक प्रत्यक्षदर्शी ने लिखा है, "शहर के उस भाग के निवासी, जिसमें बहाउल्लाह रहते थे, उन्हें विदा करने के लिए एकत्रित होने वाले पड़ोसी, गहरे दुःख और अफसोस के साथ उनके हाथों और दामन को चूमने के लिए एक–एक करके आए और उनके चले जाने के कारण दुःखी हो गए। वह दिन भी एक विचित्र दिन था। मुझे ऐसा लगता है जैसे वह पूरा शहर, उसकी दरो–दीवारें बहाउल्लाह से अपनी भावी

विदाई में रो रहीं थीं।" एक अन्य प्रत्यक्षदर्शी ने लिखा है, "उस दिन, हमारे स्वामी के घर के दरवाज़े पर मुसलमानों और ईसाईयों का एक आश्चर्यजनक जमघट था। हमारे प्रस्थान की घड़ी भी एक स्मरणीय घड़ी थी। वहाँ उपस्थित अधिकांश लोग, विशेषकर ईसाई जन रो रहे थे और विलाप कर रहे थे।" सूरा–ए–रईस में स्वयं बहाउल्लाह घोषित करते हैं, *"कहो, इस युवा ने इस देश से प्रस्थान किया है और प्रत्येक वृक्ष एवं प्रत्येक पत्थर के नीचे एक ऐसी अमानत जमा की है, जिसे वह ईश्वर, सत्य की शक्ति से शीघ्र ही प्रकट करेगा।"*

कॉन्सटैन्टिनोपल से लाए गए बहुत से साथी गैलीपोली में उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वहाँ पहुँचने पर बहाउल्लाह ने, उस हसन एफेन्दी के समक्ष, जो अपना कार्य पूरा करके लौटने की तैयारी में था, निम्नलिखित घोषणा की : *"सुल्तान से कहना कि ये राज्य उसके हाथ से निकल जायेगा और उसका प्रशासन उलझन में पड़ जायेगा।"* इस दृश्य को देखने वाले आक़ा रिद़ा ने लिखा है कि "बहाउल्लाह ने आगे कहा : *"ये शब्द मैं नहीं बोल रहा, बल्कि इन्हें ईश्वर बोल रहा है।"* उन क्षणों में वे ऐसे श्लोक उच्चारित कर रहे थे, जो हमें भी सुनाई दे रहे थे, जबकि हम नीचे थे। ये शब्द ऐसी प्रचंडता और शक्ति से उच्चरित किए गए थे, कि मुझे लगता है कि उस घर की नींव भी काँप उठी थी।"

गैलीपोली में भी, जहाँ तीन रातें बिताई गईं थीं, कोई नहीं जानता था कि बहाउल्लाह को कहाँ ले जाया जायेगा। कुछ लोगों का मानना था कि उन्हें और उनके भाईयों को एक ही स्थान पर निर्वासित कर दिया जायेगा और शेष लोगों को एक दूसरे से अलग करके निर्वासित कर दिया जायेगा। अन्य यह सोच रहे थे कि बहाउल्लाह के साथियों को फारस वापस भेज दिया जायेगा, जबकि कुछ अन्य यह अपेक्षा कर रहे थे कि उन्हें तुरन्त खत्म कर दिया जायेगा। सरकार के मूल आदेश के अनुसार बहाउल्लाह, आक़ा–ए–कलीम और मिर्ज़ा मुहम्मद–कुली को एक सेवक सहित निर्वासित करके अक्का भेजा जाना था और बाकी लोगों को कॉन्सटैन्टिनोपल भेजना था। परन्तु यह आदेश, जिसके कारण अवर्णनीय दुःख के दृश्य देखे गए थे, बहाउल्लाह के ज़ोर देने पर और उस सेनापति उमर एफेन्दी की मध्यस्थता के द्वारा बदल दिया गया, जिसे निर्वासितों के साथ जाने

के लिए नियुक्त किया गया था। अन्त में यह निर्णय लिया गया कि सभी निर्वासितों को, जो संख्या में लगभग 70 थे, अक्का निर्वासित कर दिया जाए। इसके अतिरिक्त, यह निर्देश जारी किए गए कि मिर्ज़ा याह्या के कुछ अनुयायी, जिनमें सैय्यद मुहम्मद और आक़ा जान शामिल थे, भी इन निर्वासितों के साथ जाएँ, जबकि बहाउल्लाह के चार साथियों को अज़ालियों (मिर्ज़ा याह्या के अनुयायियों) के साथ साइप्रस जाने के आदेश दिए गए।

गैलीपोली से बहाउल्लाह के प्रस्थान के समय उनके सामने इतने दुःखदाई खतरे और कठिनाईयाँ थीं कि उन्होंने अपने साथियों को चेतावनी दी कि *"यह यात्रा पिछली किसी भी यात्रा से बिल्कुल अलग होगी"* और जो कोई भी *"अपने आपको भविष्य का सामना करने योग्य नहीं समझता उसके लिए यह उत्तम होगा कि वह जहाँ कहीं भी जाना चाहे, चला जाए और परीक्षाओं से बचा रहे, क्योंकि इसके बाद वह नहीं लौट सकेगा।"* यह एक ऐसी चेतावनी थी जिस पर उनके सभी साथियों ने एक मत होकर ध्यान नहीं दिया।

हि.स. 1285 के जामादिउल–अव्वल माह की दूसरी तारीख को (21 अगस्त, 1868), वे सभी एक ऑस्ट्रियाई जहाज़ पर सवार हुए, रास्ते में बहुत अल्प समय के लिए ठहरे और एक अन्य स्थान पर दो दिन तक रूके। यहाँ जनाब–ए–मुनीर, जिन्हें इस्मुल्लाहुल–मुनीब की उपाधि दी गई थी, गम्भीर रूप से बीमार हो गए। वे बहुत दुःखी हुए जब उन्हें एक हॉस्पिटल में छोड़कर सबको जाना पड़ा, जहाँ, कुछ ही समय बाद उनकी मृत्यु हो गई। हाईफा जाने के लिए, वे एलेक्ज़ेन्ड्रिया में उसी कम्पनी के एक अन्य जहाज़ में सवार हुए और पोर्ट सईद एवं जाफ्फा में कुछ देर ठहरने के बाद वे हाईफा पहुँचे, जहाँ से कुछ ही घंटों बाद, उन्हें एक नाव में बैठाकर अक्का के लिए रवाना कर दिया गया। हि.स. 1285 के जामादियुल–अव्वल माह की 12 तारीख (31 अगस्त, 1868) की दोपहर को वे अक्का पहुँचे। जिस क्षण बहाउल्लाह ने उस जहाज़ में कदम रखा जो उन्हें हाईफा में उतारने वाला था, तब ही मिर्ज़ा याह्या के साथ भेजे जाने वाले चार साथियों में से अब्दुल–ग़फ्फार नाम का एक मित्र अत्यन्त दुःखी होकर, "या बहा–उल–आभा" का नारा लगाते हुए समुद्र में कूद गया। बाद में यद्यपि बड़ी मुश्किल से उसे बचा लिया गया, लेकिन ज़िद्दी अधिकारियों

ने उसे मिर्ज़ा याह्या की टोली के साथ उस स्थान के लिए अपनी यात्रा जारी रखने पर मजबूर कर दिया, जो उसके लिए पहले नियत किया गया था। बहाउल्लाह इसी अब्दुल–ग़फ्फार की अनासक्ति, प्रेम और ईश्वर पर विश्वास की बहुत प्रशंसा किया करते थे।

अक्का में बहाउल्लाह की क़ैद

बहाउल्लाह का अक्का पहुँचना, उनके चालीस वर्ष लम्बे कैदी जीवन के अन्तिम काल के आरम्भ को, उस निर्वासन के अन्तिम चरण को और वास्तव में उसकी चरम सीमा को चिन्हित करता है, जिसमें उनका पूरा जीवनकाल व्यतीत हुआ था। एक ऐसा निर्वासन जो पहले तो उन्हें शिया धर्मपरायणता के गढ़ के बिल्कुल निकट और इसके उत्कृष्ट व्याख्याताओं के सम्पर्क में ले आया और आगे चलकर उन्हें ऑटोमन साम्राज्य की राजधानी तक ले आया था। इस निर्वासन के दौरान बहाउल्लाह द्वारा सुल्तान को, उसके मंत्रियों और सुन्नी इस्लाम के धर्मगुरूओं को अपनी ऐतिहासिक घोषणाएँ सम्बोधित की गईं। यही निर्वासन अब उन्हें इस पावन भूमि के किनारों तक लाने के लिए उत्तरदायी था वह भूमि जिसका ईश्वर ने इब्राहिम से वादा किया था, जो मूसा के प्रकटीकरण द्वारा पवित्र हुई थी, जो यहूदी कुलपतियों, न्यायाधीशों, सम्राटों और पैग़म्बरों के जीवन और परिश्रम से सम्मानित थी, जो ईसाईयत के पालने के रूप में और अब्दुल बहा की गवाही के अनुसार उस स्थान के रूप में प्रतिष्ठित थी, जहाँ जरथोस्त्र ने *"इज़राईल के कुछ पैग़म्बरों के साथ बातचीत की थी"* और जो इस्लाम के पैग़म्बर के उस रात के उस सफर से जुड़ी है जो उन्होंने ईश्वर के सिंहासन तक पहुँचने के लिए सात स्वर्गों से गुज़रते हुए किया था। इसी पावन और सुन्दर देश की सीमाओं के अन्दर, जो कि *"सभी पैग़म्बरों का घोंसला" था, "ईश्वर के अगम्य विधान का दर्रा, हिम की तरह श्वेत स्थली"* और *"अमिट प्रकाश का स्थान" था।* बग़दाद, कॉन्सटैन्टिनोपल और एड्रियानोपल के इस निर्वासित को उनके जीवन की आवंटित अवधि का कम से कम

एक–तिहाई हिस्सा बिताने की सज़ा दी गई। अब्दुल बहा यह पुष्टि करते हैं कि *"यह समझ पाना कठिन है कि बहाउल्लाह के शत्रुओं के अत्याचारों, उनके देश निकाले और निर्वासन के सिवाय उन्हें फारस छोड़ने के लिए और अपना शिविर इस पावन भूमि में लगाने के लिए कैसे मजबूर किया जा सकता था।"*

वे हमें आश्वासन दिलाते हैं कि दो या तीन हजार साल पहले अवतारों की वाणी के माध्यम से ऐसी चरम सीमा की वास्तव में भविष्यवाणी की गई थी। *"अपनी प्रतिज्ञा के प्रति वफादार"* उस ईश्वर ने *"कुछ अवतारों के समक्ष"* यह शुभ समाचार प्रकट कर दिए थे कि *"स्वर्गदूतों की सेना का वह स्वामी इस पावन भूमि पर प्रकट होगा।"* इस सम्बन्ध में ईसाईयाह ने अपनी पुस्तक में यह घोषणा की थी : *"ओ जियॉन जो शुभ समाचार लाते हो, तुम उस ऊँचे पहाड़ पर चले जाओ; ओ जेरूसलम जो शुभ समाचार लाते हो, शक्ति के साथ अपनी आवाज़ उठाओ। पुकार उठो और डरो नहीं; जुडाह के शहरों से कहो : अपने ईश्वर को देखो ! देखो वह स्वामी, ईश्वर एक शक्तिशाली हाथ लेकर आयेगा और उसकी ओर से उसकी भुजा शासन करेगी।"* अपनी स्तुतियों में डेविड ने भविष्यवाणी की है : *"ओ द्वारों, अपना सिर उठाओ; ओ तुम अनन्त द्वारों, तुम भी अपना सिर उठाओ और महिमा का सम्राट प्रवेश करेगा। महिमा का यह सम्राट कौन है ? स्वर्गदूतों की सेना का वह स्वामी, वही है महिमा का सम्राट।" "सुन्दरता की पूर्णता, वह ईश्वर जियॉन से दीप्तिमान हुआ है। हमारा ईश्वर आयेगा और चुप नहीं रहेगा।"* इसी प्रकार आमॉस ने उसके आने की भविष्यवाणी की थी : *"वह स्वामी जियॉन से गरजेगा और जेरूसलम से अपनी आवाज़ उठाएगा और गड़ेरियों के आवास में विलाप करेगा और कार्मेल पर्वत की चोटी मुरझा जायेगी।"*

"लेबनान की महिमा" के साथ और स्वयं ईसा मसीह के घर के सामने वाली पहाड़ियों के नीचे *"कार्मेल की ऊँचाई"* से पूर्ण रूप से दिखाई देने वाले अक्का का वर्णन भी डेविड ने *"एक शक्तिशाली नगर"* जैसे शब्दों में किया है, हासिया द्वारा इसे *"आशा के द्वार"* की उपाधि दी गई है और एज़ेकिएल ने इसकी ओर संकेत करते हुए इसे *"पूरब की ओर देखने वाला वह द्वार"* कहा है, जहाँ *"पूरब के रास्ते से, इज़राइल के ईश्वर की महिमा आयेगी"*, उसकी आवाज़ *"तेज़ बहने*

वाले पानी की आवाज़ जैसी होगी।" इसके बारे में अरब के पैग़म्बर (मुहम्मद) ने कहा था कि *"सीरिया में एक शहर है जिसे ईश्वर ने अपनी विशेष कृपा दिखाई है"*, जो *"दो पहाड़ों के बीच.....एक उपवन में, सागर के किनारे स्थित है.....यह उस सिंहासन के नीचे झूल रहा है,"* जो *"सफेद है, जिसकी सफेदी ईश्वर को प्रिय है।"* जैसी बहाउल्लाह ने पुष्टि की है, वे आगे घोषित करते हैं कि, *"धन्य है वह व्यक्ति जिसने अक्का की यात्रा की है, और धन्य है वह जिसने अक्का के यात्री से भेंट की है।"* और आगे, *"वह जो यहाँ प्रार्थना की पुकार लगाता है, उसकी आवाज़ स्वर्ग तक पहुँचेगी"* और एक बार फिर : *"अक्का के गरीब लोग, स्वर्ग के राजा और वहाँ के राजकुमार हैं। अक्का में बिताया गया एक माह, किसी अन्य स्थान पर बिताये गए हजार साल से बेहतर है।"* इसके अतिरिक्त, एक उल्लेखनीय परम्परा में, जो कि "शेख इब्नुल–आराबी के फुतुहात–ए–माकिय्येह नाम के लेखों में पाया जाता है और जिसे मुहम्मद की प्रामाणिक वाणी माना जाता है और जिसे मिर्ज़ा अबुल–फज़ल द्वारा अपनी "फारईद" में उद्धरित किया गया है – यह उल्लेखनीय भविष्यवाणी की गई है : *"उस महान के अतिरिक्त, जो अक्का की भूमि, ईश्वर के दावत कक्ष तक पहुँचेगा, बाकी सभी का (काईम के साथियों का) वध कर दिया जायेगा।"*

जैसा कि नबील ने अपने इतिहास में प्रमाणित किया है स्वयं बहाउल्लाह ने, एड्रियानोपल में अपने निर्वासन के प्रारम्भिक वर्षों के दौरान ही, अपनी लाह–ए–सय्याह में उसी शहर की ओर संकेत करते हुए इसे "नबील की घाटी" की उपाधि दी थी, नबील शब्द का संख्यात्मक मूल्य अक्का शब्द के संख्यात्मक मूल्य के बराबर है। उस पाती में यह भविष्यवाणी की गई है, *"हमारे आगमन पर, प्रकाश के ध्वजों से हमारा स्वागत किया गया, जिस पर उस परमात्मा की वाणी यह कहते हुए पुकार उठी : 'शीघ्र ही, धरती पर निवास करने वाले सभी, इन ध्वजों के तले एकत्रित होंगे।'"*

कम से कम चौबीस वर्ष तक चलने वाला यह निर्वासन, जिसके दौरान दो पूर्वी प्रजापीड़क शासकों ने, अपनी निर्दयी शत्रुता और अदूरदर्शिता के कारण बहाउल्लाह को सज़ा देने के लिए एक दूसरे से हाथ मिला लिया था, इतिहास में एक ऐसे काल के रूप में अंकित किया जायेगा जिसने इस

निर्वासित (बहाउल्लाह) के स्वयं के जीवन और गतिविधियों से जुड़ी परिस्थितियों में एक चमत्कारी और सचमुच क्रान्तिकारी परिवर्तन देखा था। इस काल को बहाउल्लाह के पूरे मूल निवासी देश में होने वाले ऐसे व्यापक अत्याचार के प्रत्यावर्तन के लिए मुख्य रूप से स्मरण किया जायेगा जो अत्याधिक किन्तु विलक्षण रूप से क्रूर था, और अन्त में इस काल को बहाउल्लाह के लेखों की विविधता और विस्तार की विशाल पहुँच के लिए भी याद किया जायेगा।

अक्का की कारागार नगरी में बहाउल्लाह का आगमन उनके कष्टों का अन्त नहीं था बल्कि एक ऐसे बड़े संकट का आरम्भ था, जो घोर पीड़ा, कठोर बंधन और तीव्र उत्पात से भरा था, जो अपनी गम्भीरता में तेहरान के सियाहचाल की यातनाओं से भी अधिक कष्टकर था और जिसकी तुलना उस पूरी शताब्दी के इतिहास की किसी भी घटना से नहीं की जा सकती, सिवाय उस आन्तरिक हलचल के, जिसने एड्रियानोपल में प्रभुधर्म को हिलाकर रख दिया था। इस कारागार नगरी में अपने प्रथम नौ वर्ष के निर्वासन की गम्भीरता पर ज़ोर देने के लिए बहाउल्लाह ने लिखा है, *"तुम यह जान लो कि इस स्थान पर हमारे पहुँचने पर, हमने इसे 'सर्वमहान बंदीगृह' का नाम देना उचित समझा। यद्यपि इससे पहले भी एक अन्य प्रान्त में (तेहरान) हमें जंजीरों और बेड़ियों में रखा गया था, फिर भी हमने उसे यह नाम देने से इन्कार कर दिया। कहो : इस पर विचार करो, ओ तुम, जिन्हें समझ प्रदान की गई है !"*

नसीरूद्दीन शाह पर किए गए जानलेवा हमले के प्रयास के परिणामस्वरूप जो घोर यातना उन्होंने सही, वह एक ऐसी यातना थी जो प्रभुधर्म के केवल बाहरी शत्रुओं ने उन्हें दी थी। दूसरी ओर, एड्रियानोपल में मिलने वाला वह घोर दुःख, जिसके प्रभाव से बाब के अनुयायियों के समुदाय में विभाजन को छोड़कर अन्य सब कुछ हो चुका था, अपने स्वरूप में पूरी तरह आन्तरिक था। लेकिन यह ताज़ा संकट, जो लगभग एक दशक तक बहाउल्लाह और उनके साथियों को दुःख पहुँचाता रहा, न केवल उनके बाहरी शत्रुओं के वार से बल्कि अन्दर के शत्रुओं के षड़यंत्रों से, साथ ही उन लोगों के दुष्कर्मों से भी भरा था, जो यद्यपि उनका नाम धारण करते थे, फिर भी उन्होंने ऐसे कर्म किए जिनके कारण बहाउल्लाह का हृदय और उनकी लेखनी, दोनों ने आँसू बहाये।

अक्का, वह प्राचीन टोलमेस, धर्मयोद्धाओं का वह सेंट जॉन डी एकर, जिसने नेपोलियन के घेराव का सफलतापूर्वक सामना किया था, जिसका तुर्कियों के शासनकाल में एक ऐसी कारागार नगरी के रूप में पतन हो गया था जहाँ तुर्की साम्राज्य के चारों ओर से हत्यारों, डाकुओं और राजनीतिक उपद्रवियों को दण्डित करके भेजा जाता था। इसके चारों ओर बचाव की दोगुनी व्यवस्था थी, इसमें ऐसे लोग निवास करते थे जिन्हें बहाउल्लाह ने *"सांपों की पीढ़ी"* कहा था। इस नगर के अन्दर पानी का कोई स्रोत नहीं था; यहाँ पिस्सुओं की भरमार थी,। सीलन थी और जगह–जगह मधुमक्खियों के छत्ते लगे हुए थे। इसकी गलियाँ अत्यन्त गन्दी और संकरी थीं। लौह–ए–सुल्तान में, सर्वोच्च लेखनी ने दर्ज किया है,*"जैसा कि लोग कहते हैं, यह दुनिया की सबसे वीरान नगरी है, देखने में सबसे भद्दी, आबोहवा में सबसे घृणास्पद और यहाँ का पानी सबसे अशुद्ध है। ऐसा लगता है जैसे यह उल्लुओं का नगर है।"* यहाँ की हवा इतनी बद्बूदार थी कि एक कहावत के अनुसार, इसके ऊपर से उड़कर जाने वाला पक्षी मरकर गिर जाता था।

सुल्तान और उसके मंत्रियों ने स्पष्ट आदेश दिए थे कि इन निर्वासितों को, जिन्होंने बड़ी भारी भूल की हैं और दूसरों को दूर भटकाया है, कठोरतम कैद में रखा जाना चाहिए। बड़े विश्वास के साथ यह आशा की जा रही थी कि इनके विरूद्ध सुनाये गए आजीवन कैद के निर्णय के परिणामस्वरूप इनका अन्त हो जायेगा। हि.स.1285 के रबि–उस्सानी माह की पाँच तारीख (26 जुलाई, 1868) को जारी किये गए सुल्तान अब्दुल–अज़ीज़ के आदेश ने, न केवल उन्हें सदैव के लिए निर्वासित किए जाने की घोषणा की, बल्कि उनकी कठोर कैद का आदेश दिया और उन्हें एक दूसरे से या स्थानीय निवासियों से मेलजोल रखने से निषिद्ध किया। इन निर्वासितों के पहुँचने के तुरन्त बाद, नगर की मुख्य मस्जिद में उस आदेश को भी सार्वजनिक रूप से पढ़ा गया ताकि लोगों को चेतावनी मिल सके। अक्का में इन लोगों के निर्वासन के एक वर्ष बाद लिखे गए एक पत्र में, सब्लाईम पोर्ट में पदस्थ फारस के राजदूत ने अपनी सरकार को यह आश्वासन दिया : "मैंने तार द्वारा और लिखित संदेश जारी कर दिए हैं कि उन्हें (बहाउल्लाह को) किसी के

साथ मिलने–जुलने की अनुमति नहीं है सिवाय उनकी पत्नी और बच्चों के। उन्हें किसी भी कारण से उनकी काल कोठरी से बाहर जाने की अनुमति नहीं है जहाँ उन्हें कैद किया गया है। दमस्कस में पदस्थ कॉउन्सल जनरल, अब्बास–कुली खान ने लिखा..... तीन दिन पहले मैंने, उसे ये निर्देश देकर लौटा दिया है कि वह सीधे अक्का के लिए रवाना हो.....उन लोगों के कारावास की कठोरता बनाए रखने के लिए सभी आवश्यक उपाय करने के बारे में वहाँ के गवर्नर के साथ परामर्श करे..... और यह सुनिश्चित करे कि सब्लाईम पोर्ट द्वारा जारी किए गए आदेशों की किसी भी परिस्थिति में अवहेलना न की जाए, इसलिए दमस्कस में अपनी वापसी से पहले उस स्थान पर उपस्थित रहने के लिए एक प्रतिनिधि नियुक्त करे। साथ ही, मैंने उसे निर्देश दिए हैं कि प्रत्येक तीन माह में एक बार उसे दमस्कस से अक्का जाना होगा और व्यक्तिगत रूप से उन पर निगरानी रखनी होगी तथा अपनी रिपोर्ट दूतावास में प्रस्तुत करनी होगी।" उन पर ऐसा अलगाव लादा गया कि, इस्फहान के अज़लियों द्वारा फैलाई गई इन अफवाहों से घबराकर, कि बहाउल्लाह को डुबो दिया गया है, फारस के बहाईयों ने जुल्फा में स्थित ब्रिटेन के तारघर को इस बात के लिए तैयार कर लिया कि वे उनकी ओर से, इस मामले की सच्चाई का पता लगायें।

एक अत्यन्त दुःखदायी और कष्टदायक यात्रा के पश्चात सभी निर्वासित पुरूष, स्त्रियाँ और बच्चों को, उस उत्सुक और निर्दयी जनता की नज़रों के सामने अक्का में उतारा गया जो *"फारसियों के भगवान"* को सेना के बैरकों में ले जाते हुए देखने के लिए उस बन्दरगाह पर जमा हुई थी। इन लोगों को बैरकों के अन्दर कैद कर दिया गया और उन पर नज़र रखने के लिए वहाँ पहरा बैठा दिया गया। लौह–ए–रईस में बहाउल्लाह साक्षी देते हैं कि, *"पहली रात को सभी को भूखा–प्यासा रखा गया..... । उन्होंने पानी के लिए विनती भी की, किन्तु उन्हें मना कर दिया गया।"* बैरकों के आँगन के पोखर में जमा पानी इतना गन्दा और खारा था कि इसे कोई नहीं पीता था। प्रत्येक व्यक्ति को काली और नमकीन ब्रेड के तीन पाव दिए गए थे, जिन्हें बाद में, पहरेदारों के साथ बाज़ार जाने पर बेहतर किस्म के दो पाव बदलने की अनुमति उन्हें दी गई थी।

आगे चलकर उन्हें दिए गए पाव के स्थान पर बहुत कम भत्ता दिया जाने लगा। वहाँ पहुँचने के कुछ ही दिनों बाद, दो व्यक्तियों को छोड़कर अन्य सभी बीमार पड़ गए। मलेरिया, हैजा और जलती गर्म हवाओं ने मिलकर उनके दुःखों और कष्टों को और बढ़ा दिया। तीन लोगों की मृत्यु हो गई, इनमें वे दो भाई शामिल थे, जो उसी रात, जैसा कि बहाउल्लाह ने बयान किया है, *"एक दूसरे के आलिंगन में बंधे"* इस दुनिया से चल बसे। उनके पार्थिव शरीरों को लपेटने और दफनाने के लिए बहाउल्लाह ने अपना वह कालीन बेचने के आदेश दिए जिसका वे स्वयं उपयोग करते थे। कालीन की नीलामी से जो छोटी सी रकम प्राप्त हुई थी वह पहरेदारों को दे दी गई, जिन्होंने पहले आवश्यक खर्च प्राप्त किए बगैर उन्हें दफनाने से इन्कार कर दिया था। बाद में, यह पता चला कि इन पहरेदारों ने उन पार्थिव शरीरों को बगैर नहलाए और कपड़े में लपेटे, ताबूत में रखे बिना ही, उन्हीं वस्त्रों में दफन कर दिया था जो उन्होंने मरते समय पहने थे। यद्यपि, जैसा कि बहाउल्लाह ने पुष्टि की है, उन्हें दफनाने के लिए उन पहरेदारों को आवश्यक खर्च से दोगुनी रकम दी गई थी। वे स्वयं लिखते हैं कि, *"उस सर्वशक्तिशाली, सर्वज्ञाता ईश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं जानता कि हम पर क्या बीती..... । जब से दुनिया बनी है तब से आज तक ऐसी क्रूरता न तो कभी देखी गई, न ही सुनी गई।"* इसके अतिरिक्त, उन्होंने स्वयं के बारे में बताते हुए कहा है कि, *"अपने जीवन के अधिकांश भाग के दौरान, उन्हें उनके शत्रुओं के चंगुल में घोर यातनाएँ दी गईं। अब, इस कष्टकर कारावास में, जहाँ उनके अत्याचारियों ने उन्हे इतने अन्यायपूर्वक कष्टों में डाल दिया है, उनके दुःख और कष्ट अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुके हैं।"*

उन चन्द तीर्थयात्रियों को, जो इतनी कठोरता से लगाए गए निषेध के बावजूद, इस कारागार के द्वार तक पहुँच गए थे, जिनमें से कुछ ने फारस से यह पूरा सफर पैदल ही तय किया था, उन्हें खन्दक के उस पार खड़े होकर स्वयं को इस कैदी (बहाउल्लाह) के मुखड़े की एक झलक मात्र से ही सन्तुष्ट होना पड़ा। उन चन्द लोगों के दुःख का ठिकाना नहीं था, जो नगर में प्रवेश करने में सफल तो हो गए थे, लेकिन जिन्हें उनके मुखड़े की एक झलक भी देखे बगैर लौट जाना पड़ा। इन लोगों में से, बहाउल्लाह की उपस्थिति में प्रवेश

करने वाले प्रथम व्यक्ति, वह आत्मत्यागी हाजी अब्दुल हसन–ए–आर्दिकानी थे, जिन्हें अमीन–ए–इलाही (ईश्वर का विश्वासपात्र) की उपाधि दी गई थी, किन्तु वे भी केवल एक सार्वजनिक स्नानागार में बहाउल्लाह के दर्शन कर सके जहाँ यह व्यवस्था की गई थी कि वे बहाउल्लाह के पास आए बगैर या उन्हें पहचानने का कोई भी संकेत दिए बिना ही उनके दर्शन करेंगे। मोसुल से वहाँ पहुँचने वाले एक अन्य तीर्थयात्री, उस्ताद इस्माईल–ए–काशी उस खन्दक के पास खड़े हो गए और आराधना में लीन घंटो तक अपने परम प्रिय की खिड़की को देखते रहे, लेकिन इसके बावजूद, अपनी कमज़ोर आँखों के कारण वे बहाउल्लाह का मुखड़ा देखने में असफल रहे और उन्हें मजबूर होकर उस गुफा में लौटना पड़ा जो कार्मेल पर्वत पर उनका निवास बन चुका था। इस घटना ने उस पावन परिवार के सदस्यों को रूला दिया जो बड़े चिन्तित होकर दूर से अपनी आशाओं को निराशा में बदलते हुए देख रहे थे। स्वयं नबील को भी उस नगर को छोड़कर पलायन करना पड़ा जहाँ उन्हें पहचान लिया गया था। उन्हें भी उसी खन्दक से बहाउल्लाह की एक झलक मात्र से ही सन्तुष्ट होना पड़ा और वे नाज़रथ, हाईफा, ज़ेरूसलम और हीब्रोन के आसपास तब तक भटकते रहे जब तक निर्वासितों पर लगाई गई पाबन्दियों को धीरे–धीरे कम नहीं कर दिया गया और उन्हें उनके साथ सम्मिलित होने का अवसर नहीं मिल गया।

इन विपत्तियों के कष्टदायक बोझ में अब एक आकस्मिक घटना का गहरा दुःख भी सम्मिलित हो गया। यह घटना थी उस श्रेष्ठ, उस पावन मिर्ज़ा मेहदी की अकाल मृत्यु, जो पवित्रतम शाखा और अब्दुल बहा के बाईस वर्षीय भाई थे। वे बहाउल्लाह के लिपिक और उन दिनों से ही उनके निर्वासन के साथी थे, जब उनके पिता की सुलेमानिया से वापसी के बाद, उन्हें बाल्यावस्था में ही उनके साथ रहने के लिए तेहरान से बग़दाद लाया गया था। एक शाम, जब वे अपनी नियमित आराधना में लीन, बैरक की छत पर चहलकदमी कर रहे थे, तभी वे एक असुरक्षित रोशनदान से, लकड़ी के उस खांचे पर गिर गए, जो नीचे रखा हुआ था, जो उनकी पसलियों में घुस गया, जिसके कारण बाईस घंटे के बाद हि.स. 1287 के रबिउल–अव्वल की 23 तारीख (23 जून, 1870)

को उनकी मृत्यु हो गई। एक अत्यन्त दुःखी पिता के समक्ष उनकी अन्तिम प्रार्थना यह थी कि वे उनके जीवन की कुरबानी को स्वीकार करें और इसके बदले में उनके लिए जो अपने परम प्रिय (बहाउल्लाह) की उपस्थिति में प्रवेश करना चाहते हैं। वे इस कैद के द्वार खोल दें।

बहाउल्लाह द्वारा अपने पुत्र की याद में प्रकट की गई एक अत्यन्त प्रभावपूर्ण प्रार्थना ऐसी है जो उनकी मृत्यु को क्षतिपूर्ति के उन महान कृत्यों के स्तर पर उन्नत करती है, जो अब्राहम की अपने पुत्र के इच्छित बलिदान से, ईसा मसीह की सूली पर मृत्यु से और इमाम हुसैन की शहादत से जुड़ी है। अब हम इस प्रार्थना को पढ़ते हैं : *"हे मेरे स्वामी, मैंने वह अर्पित कर दिया है जो तूने मुझे दिया था, ताकि तेरे सेवक नवजीवन पा सकें और धरती पर निवास करने वाले सभी एक हो सकें।"* इसी प्रकार, अपने पुत्र को सम्बोधित किए गए भविष्य–सूचक शब्द : *"इस भूमि पर तुम ईश्वर की अमानत और उसका खज़ाना हो। शीघ्र ही तुम्हारे माध्यम से ईश्वर वह प्रकट करेगा जो उसने चाहा है।"*

बहाउल्लाह की उपस्थिति में मिर्ज़ा मेहदी को नहलाने के बाद, उन्हें – *"जिन्हें बहा के प्रकाश से उत्पन्न किया गया था"*, जिनकी *"आज्ञाकारिता"* की साक्षी उस सर्वोच्च लेखनी ने दी थी और जिनके स्वर्गारोहण के *"रहस्यों"* का उल्लेख उसी लेखनी ने किया था, उस दुर्ग के पहरेदारों की सुरक्षा में ले जाकर, शहर की दीवारों के उस पार एक ऐसे स्थान पर समाधिस्थ किया गया जो नबीह सलीह की समाधि से लगा हुआ था जहाँ से सत्तर वर्ष पश्चात, उनके पार्थिव अवशेषों को, उनकी माता के पार्थिव अवशेषों के साथ एक ही समय में कार्मेल पर्वत की ढलान पर, उनकी बहन की समाधि के निकट एवं बाब की पावन समाधि की छाँव तले स्थानान्तरित किया जाना था।

इस कैदी और उनके सह–निर्वासितों की विपत्तियों का अन्त अब भी नहीं हुआ था। इस दुःखान्त घटना के चार माह बाद, तुर्की की फौज़ी गतिविधियों के कारण बहाउल्लाह और उनके सभी साथियों को बैरक से हटाना आवश्यक हो गया। उन्हें और उनके परिवार को, शहर के पश्चिमी भाग में स्थित मलिक का वह घर आवंटित किया गया, जहाँ से तीन माह की कम अवधि के पश्चात, सरकार ने उन्हें खव्वाम के उस मकान में भेज दिया जो इस घर के बिल्कुल

सामने था और जहाँ से कुछ माह बाद ही उन्हें रबीह के मकान में निवास करने के लिए विवश किया गया, जहाँ से, अन्त में उन्हें उदी ख़म्मार के उस मकान में स्थानान्तरित कर दिया गया जो उनकी आवश्यकताओं के लिए अनुपयुक्त था। इसके एक कमरे में स्त्री–पुरूष मिलाकर कुल तेरह लोगों को रहने के लिए बाध्य होना पड़ा। कुछ साथियों को अन्य घरों में रहना पड़ा, जबकि शेष मित्रों को खान–इ–अवामिद नाम की एक धर्मशाला में शरण लेनी पड़ी।

उनका कठोर कारावास अभी भी कम नहीं हुआ था और उन पर निगाह रखने वाले पहरेदारों को अभी हटाया ही गया था कि एक और आंतरिक संकट, जो इस समुदाय के बीच रचा जा रहा था, को यकायक अपनी चरम सीमा पर पहुँचा दिया गया। बहाउल्लाह के साथ अक्का आने वाले दल में शामिल किए गए दो निर्वासितों का आचरण ऐसा था कि अन्त में बहाउल्लाह को उन्हें बाहर करना पड़ा, यह एक ऐसा निर्णय था जिसका पूरा–पूरा लाभ उठाने में सैय्यद मुहम्मद बिल्कुल भी नहीं हिचकिचाया। इन नए लोगों को अपने दल में शामिल करने से बल प्राप्त करके और जासूसी करने वाले अपने पुराने साथियों के साथ मिलकर उसने दुराचरण, निन्दा और षड़यंत्र का एक अभियान चलाया, यह उससे भी अधिक घातक था जो उसने कॉन्सटैन्टिनोपल में चलाया था। उसके इस अभियान का उद्देश्य था एक ऐसी जनता को भड़का कर शत्रुता और उत्तेजना की चोटी पर पहुँचा देना, जो पहले ही पूर्वाग्रहग्रस्त और शंकालु थी। अब बहाउल्लाह के जीवन के लिए एक नया संकट उत्पन्न हो गया। यद्यपि उन्होंने कई बार मौखिक और लिखित रूप से अपने अनुयायियों को उनके अत्याचारियों से बदला लेने का कोई भी कृत्य करने से कठोर रूप से मना किया था और यहाँ तक कि एक लापरवाह अरबी अनुयायी को – जिसने अपने परम प्रिय नेता (बहाउल्लाह) के साथ किए गए अन्याय का बदला लेने की ठान ली थी – बेरूत लौटा दिया था, फिर भी सात मित्रों ने उन तीन अत्याचारियों को ढूँढ़ कर उनकी हत्या कर दी, जिनमें सैय्यद मुहम्मद और आक़ा जान शामिल थे।

पहले ही सताये हुए इस समुदाय में उत्पन्न होने वाली भयाकुलता का वर्णन करना असम्भव है। बहाउल्लाह के क्रोध का ठिकाना न रहा। इस कृत्य

के किए जाने के कुछ ही समय बाद प्रकट की गई एक पाती में वे अपनी भावनाओं को इस प्रकार व्यक्त करते हैं, *"यदि हम उसका उल्लेख कर देते जो हम पर बीती है, तो ये आसमान फट जाता और पर्वत चूर–चूर हो जाते।"* एक अन्य अवसर पर उन्होंने लिखा, *"मेरी कैद मुझे हानि नहीं पहुँचा सकती। वह जो मुझे हानि पहुँचा सकता है, उन लोगों का आचरण है जो मुझसे प्रेम करते हैं, जो मुझसे सम्बन्ध रखने का दावा करते हैं और फिर भी ऐसे कर्म करते हैं जो मेरे हृदय और मेरी लेखनी की आहों का कारण बन जाते हैं।"* और एक बार पुनः, *"मेरी कैद मुझे लज्जित नहीं कर सकती। नहीं, मेरे जीवन की सौगंध, यह मुझे यश प्रदान करती है। वह जो मुझे लज्जित करता है, मेरे ऐसे अनुयायियों का आचरण है जो मुझसे प्रेम करने का दावा करते हैं, लेकिन वास्तव में एक पापी का अनुसरण करते हैं।"*

जिस समय बहाउल्लाह अपने लिपिक को पातियाँ लिखवा रहे थे उसी समय खुली तलवारें लिए हुए अपनी फौज की अगुवाई करते हुए गवर्नर ने उनके निवास को घेर लिया। पूरा जनसमुदाय और सेना के अधिकारी बड़ी घबराहट की स्थिति में थे। चारों ओर से लोगों के चिल्लाने की और हंगामा मचाने की आवाज़ें आ रहीं थीं। बहाउल्लाह को अनिवार्य रूप से गवर्नर के कार्यालय में बुलवाया गया, उनसे पूछताछ की गई। पहली रात को उन्हें उनके पुत्र के साथ खान–इ–शाविर्दि के एक कक्ष में कैद में रखा गया, अगली दो रातों के लिए उन्हें उसी इलाके के एक बेहतर स्थान पर स्थानान्तरित कर दिया गया और सत्तर घंटे बीत जाने के बाद ही उन्हें उनके घर लौटने दिया गया। अब्दुल बहा को पहली रात कैद में डाल दिया गया और जंजीरों में बांधकर रखा गया, जिसके बाद उन्हें उनके पिता के पास जाने दिया गया। पच्चीस मित्रों को एक अन्य कारागार में डाल दिया गया और उनके पैरों में बेड़ियां डाली गईं। इनमें से, उन्हें छोड़कर, जो उस घृणित कृत्य के लिए ज़िम्मेदार थे और जिन्हें कई सालों तक कैद में रखा गया था, अन्य सभी को छः दिन के पश्चात खान–इ–शाविर्दि में स्थानान्तरित कर दिया गया और उन्हें वहाँ छः माह के कारावास में रखा गया।

जब बहाउल्लाह गर्वनर आवास पर पहुँचे, तब शहर के कमाण्डेंट ने उनकी ओर मुड़कर बिना किसी संकोच के उनसे पूछा, "क्या यह उचित है कि आपके कुछ अनुयायी ऐसा व्यवहार करें?" बहाउल्लाह ने तुरन्त उत्तर दिया, *"यदि आपका कोई सैनिक कोई निन्दा–योग्य कृत्य करता है, तो क्या उसके लिए आपको ज़िम्मेदार ठहराकर उसके स्थान पर दण्ड दिया जायेगा?"* जब उनसे पूछताछ की गई, तो उनसे उनका नाम और उस देश का नाम बताने को कहा गया जहाँ से वे आये थे। बहाउल्लाह ने उत्तर दिया, *"यह तो सूर्य से भी अधिक स्पष्ट है।"* इस पर उनसे वही प्रश्न एक बार फिर पूछा गया, जिसके लिए उन्होंने निम्नलिखित उत्तर दिया: *"मैं इसका उल्लेख करना उचित नहीं समझता। उस सरकारी आदेश में देख लो जो तुम्हारे पास है।"* एक बार फिर उन्होंने उल्लेखनीय सम्मान के साथ अपना अनुरोध दोहराया, जिस पर बहाउल्लाह ने ऐश्वर्य और शक्ति के साथ ये शब्द कहे: *"मेरा नाम बहाउल्लाह है (ईश्वर का प्रकाश) और मेरा देश नूर (प्रकाश) है। तुम इससे अवगत हो जाओ।"* इसके बाद, मुफ्ती की ओर मुड़कर, उन्होंने उसे अप्रत्यक्ष फटकार लगाने वाले शब्द सम्बोधित किए और उस पूरी सभा को इतनी प्रचंड और ऊँची आवाज़ में सम्बोधित किया कि किसी की हिम्मत नहीं हुई कि उनको उत्तर दे सके। सुरीय–ए–मुलुक में से श्लोक उद्धरित करने के पश्चात वे उठे और सभा को छोड़कर चले गए। इसके तुरन्त बाद ही उस गवर्नर ने संदेश भेजा कि बहाउल्लाह अपने घर जाने के लिए स्वतंत्र हैं और जो घटित हुआ उसके लिए उसने क्षमा माँगी।

ऐसी घटना के बाद, वह जनता जो पहले ही निर्वासितों से चिढ़ी हुई थी, उन सब के प्रति अनियंत्रित शत्रुता से भड़क उठी जो उस धर्म से जुड़े हुए थे जिसके ये निवार्सित अनुयायी थे। लोग खुल्लम–खुल्ला और बगैर किसी नियंत्रण के उनके मुँह पर ही उन्हें अपवित्र, नास्तिक, आतंकवादी और विधर्मी होने का आरोप लगाते थे। बहाउल्लाह के पड़ोस में रहने वाले अब्बुद ने अपने डरावने और संदिग्ध पड़ोसी (बहाउल्लाह) के निवास से अपने घर को अलग करने वाली दीवार को और भी मज़बूत कर लिया। यहाँ तक कि उन दिनों में

जब भी इन कैद किए गए निर्वासितों के बच्चे गलियों में दिखाई देते, तो उनका पीछा किया जाता, उन्हें अपशब्द कहे जाते और पत्थरों से मारा जाता था।

बहाउल्लाह के दुःखों और कष्टों का प्याला अब छलकने लगा था। इन निवार्सितों को एक अपमानजनक, चिन्ताजनक और यहाँ तक कि खतरे की इस स्थिति का उस समय तक सामना करना पड़ा जब तक कि उस अगम्य ईश्वर की इच्छा ने इसका अन्त निर्धारित नहीं कर दिया, जिसके बाद उनके दुःख और पीड़ा का ज्वार उतरने लगा। प्रभुधर्म के भाग्य में यह एक ऐसे परिवर्तन का संकेत था जो उस क्रान्तिकारी बदलाव से भी अधिक प्रत्यक्ष था जो बहाउल्लाह के बग़दाद प्रवास के अन्तिम वर्षों में आया था।

हर वर्ग के लोगों द्वारा बहाउल्लाह की बेगुनाही को धीरे–धीरे समझ लेना; उन लोगों की लापरवाही और कट्टरता की कठोर परत को बहाउल्लाह की शिक्षाओं के सच्चे भावार्थ द्वारा धीरे–धीरे भेदना; उस दूरदर्शी और दयालु गवर्नर, अहमद बेग तौफिक़ के स्थान पर एक ऐसे व्यक्ति का पदस्थ किया जाना, जिसके मन में प्रभुधर्म और इसके अनुयायियों के विरूद्ध विष भर दिया गया था; अब्दुल बहा के अथक प्रयास जो, अब अपने पुरुषत्व के पूरे यौवन पर थे और जो जनसमुदाय के हर वर्ग के लोगों के साथ अपने प्रगाढ़ सम्बन्धों के माध्यम से अपने पिता की ढाल बनने की अपनी क्षमता को अधिकाधिक प्रदर्शित कर रहे थे; उन अधिकारियों की पदमुक्ति, जो इन निर्दोष साथियों के निर्वासन की अवधि को बढ़ाने में अग्रणी थे – इन सभी बातों ने उस प्रतिक्रिया के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया जो अब आरम्भ होने लगी थी, एक ऐसी प्रतिक्रिया जिसके साथ बहाउल्लाह के अक्का निर्वासन का समय सदा अटूट रूप से जुड़ा रहेगा।

अब्दुल बहा के साथ सम्पर्क में आने और बाद में प्रभुधर्म के उस साहित्य का अध्ययन करने से, जिसे दुष्टों ने इस आशा के साथ जाँच के लिए दिया था ताकि वह क्रोधित हो जायें, उस गर्वनर के दिल में धीरे–धीरे ऐसे समर्पण का भाव उत्पन्न हो गया जिससे वह अब्दुल बहा के प्रति अपने सम्मान के चिन्हस्वरूप उनकी उपस्थिति में जाने से पहले हमेशा अपने जूते उतार लिया

करता था। यहाँ तक कि यह अफवाह भी फैल चुकी थी कि इस गवर्नर के विशेष और प्रिय सलाहकार भी वे निर्वासित लोग ही थे जो उसकी हिरासत में रहने वाले कैदी के अनुयायी थे। वह अपने पुत्र को भी शिक्षा और ज्ञान के लिए अब्दुल बहा के पास भेजा करता था। बहाउल्लाह के साथ एक लम्बे समय से चाहे गए साक्षात्कार के अवसर पर, जब उसने उनकी कुछ सेवा करने की अनुमति माँगी तो उसके उत्तर में उसे यह सुझाव दिया गया कि वह उस जलाशय को सुधरवा दे, जो तीस वर्षों से उपयोग में नहीं लाया जा रहा है। उसने इस सुझाव पर तुरन्त कार्यवाही की। यद्यपि शाही आदेश के अनुसार किसी भी अनुयायी का नगर में प्रवेश निषिद्ध था, फिर भी उस गवर्नर ने उन तीर्थयात्रियों के आने का कोई विरोध नहीं किया जिनमें धर्मनिष्ठ और आदरणीय मुल्ला सादिक़–ए–खुरासानी और बदी के पिता – दोनों शेख तबरसी के संघर्ष के उत्तरजीवी शामिल थे। कुछ वर्षों बाद गवर्नर बनने वाले मुस्तफा दीया पाशा ने तो यहाँ तक कहा कि उनका कैदी जब चाहे तब नगर के द्वार के बाहर जा सकता है, लेकिन बहाउल्लाह ने इस सुझाव को अस्वीकार कर दिया। यहाँ तक कि अपने कट्टरपन के लिए बदनाम अक्का के मुफ्ती, शेख महमूद ने भी प्रभुधर्म को स्वीकार कर लिया था और नए उत्साह से प्रेरित होकर उसने उन मुहम्मदी परम्पराओं का एक संकलन तैयार किया जो अक्का से सम्बद्ध थीं। उस नगर में कभी–कभार ऐसे गवर्नर भी भेजे जाते थे जो सहानुभूतिरहित होते थे, लेकिन अपनी एकतरफा शक्ति और सत्ता के बावजूद, वे उन शक्तियों को नहीं रोक पाए जो प्रभुधर्म के संस्थापक को उनकी वास्तविक स्वतंत्रता और उनके उद्देश्य की प्राप्ति की ओर ले जा रही थीं।

जैसे–जैसे समय बीतता गया, वैसे–वैसे सीरिया में निवास करने वाले विद्वान और उलेमागण भी बहाउल्लाह की बढ़ती हुई महानता और शक्ति को स्वीकार करने के लिए विवश हो गए और अपनी स्वीकृति की चर्चा करने लगे। अज़ीज़ पाशा, जिसने एड्रियानोपल में अब्दुल बहा के प्रति गहरा अनुग्रह दर्शाया था और इस बीच जिसे वली के ओहदे पर पदोन्नत किया जा चुका था, उसने दो बार अक्का का भ्रमण केवल इसलिए किया कि वह बहाउल्लाह के प्रति अपना सम्मान व्यक्त करना चाहता था और उस महान के साथ अपनी मित्रता को नवीन करना चाहता था जिसका वह सम्मान करने लगा था।

यद्यपि, बहाउल्लाह ने कभी भी व्यक्तिगत साक्षात्कार की अनुमति नहीं दी, जैसा वे बग़दाद में किया करते थे, फिर भी, अब उनका प्रभाव इतना अधिक बढ़ गया था कि अक्का के निवासी खुलेआम यह कहते थे कि उस नगर के वातावरण और पानी में देखे गए प्रत्यक्ष सुधार का सीधा–सीधा कारण था बहाउल्लाह का उन लोगों के बीच लगातार उपस्थित रहना। *"वह महान नेता"* और *"महामहिम"* जैसी उपाधियों से ये लोग बहाउल्लाह का उल्लेख करना पसंद करते थे, यह अपने आप में उस आदर को व्यक्त करता है जिसके लिए बहाउल्लाह ने इन लोगों को प्रेरित किया था। एक बार, बहाउल्लाह ने गवर्नर सहित एक यूरोपीय जनरल को उनसे मिलने की अनुमति दी। वह जनरल इतना प्रभावित हो गया कि वह दरवाज़े के पास ही "ज़मीन पर घुटने टेक कर बैठा रहा।" यहाँ तक कि अक्का नगरी के द्वार से बाहर निकलने के लिए बहाउल्लाह को तैयार करने के उद्देश्य से, अब्दुल बहा के सुझाव पर अक्का के मुफ्ती, शेख आली–ए–मिरी ने बहाउल्लाह से लगातार विनती की कि वे उस कारानगरी की दीवारों के भीतर अपनी नौ–वर्षीय कैद का अन्त करने की अनुमति प्रदान करें। शहर की पूर्वी दिशा में एक नदी के बीच स्थित, नॉमेन के उद्यान में एक छोटा सा द्वीप था, जिसे रिज़वान की उपाधि से सम्मानित किया गया था और जिसे बहाउल्लाह ने *"नया जेरूसलम"* और *"हमारा हरा भरा टापू"* का नाम दिया था, उसे अब, अब्दुल्लाह पाशा के निवास सहित, जो अक्का से कुछ मील दूर उत्तर में स्थित था और जिसे अब्दुल बहा ने किराये पर लेकर बहाउल्लाह के लिए तैयार किया था, वह अब, उस महान का सबसे प्रिय एकान्त निवास स्थान बन चुका था, जिन्होंने लगभग दस साल तक नगर की दीवारों के बाहर कदम तक नहीं रखा था और जिनके लिए एकमात्र व्यायाम था अपने शयनकक्ष की चहलकदमी की नीरसता को दोहराना।

उदी खम्मार का वह महल, जिसके निर्माण पर इतना धन व्यय किया गया था और जिसे उसके स्वामी ने एक महामारी के फैलने के कारण छोड़ दिया था, दो वर्ष पश्चात, उसे किराये पर ले लिया गया और बाद में उसे बहाउल्लाह के लिए खरीद लिया गया। यह एक ऐसा आवास था जिसे उन्होंने एक *"उदात्त महल"* और एक ऐसा स्थान कहा जिसे *"ईश्वर ने मानवजाति का*

सबसे उत्कृष्ट दृश्य नियत किया था।" उसी दौरान, तुर्की के एक भूतपूर्व महामंत्री, मिधत पाशा के आमंत्रण पर अब्दुल बहा के बेरुत प्रवास के कारण तथा उस शहर के नागरिक और धार्मिक नेताओं के साथ उनके निकट सम्बन्धों के कारण और जाने–माने शेख मुहम्मद अब्दु के साथ उनके कई साक्षात्कारों की वजह से इस समुदाय की बढ़ती हुई प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई और इसके सबसे विशिष्ट सदस्य की कीर्ति देश–विदेश में फैल गई। उस विद्वान और अत्यन्त सम्मानित नाज़रथ के मुफ्ती, शेख यूसुफ द्वारा जो बेरुत के वलियों का आतिथ्य किया करते थे और जिन्होंने अब्दुल बहा के शहर के निकट पहुँचने पर अपने समुदाय के सभी विशिष्ट जनों को उन्हें लाने के लिए उसी सड़क पर कई मीलों आगे भेज दिया था और स्वयं भी, अपने भाई एवं अक्का के मुफ्ती सहित उनके स्वागत के लिए निकल पड़े थे, ने अब्दुल बहा का जो शानदार स्वागत किया था और इसी शेख यूसुफ के अक्का आने पर, जो शोभायमान स्वागत अब्दुल बहा द्वारा किया गया, वह ऐसा था कि वे जिन्होंने कुछ ही साल पहले अब्दुल बहा और उनके सह–निर्वासितों को नीची और घृणा की दृष्टि से देखा था, वे अब ईर्ष्या से भर उठे।

सुल्तान अब्दुल अज़ीज का कठोर आदेश, यद्यपि औपचारिक रूप से निरस्त नहीं किया गया था किन्तु अब तक वह आदेश एक मृत पत्र के समान बन चुका था। यद्यपि बहाउल्लाह अब भी नाममात्र के कैदी थे, फिर भी, अब्दुल बहा के कथनानुसार, *"महिमा और सच्ची सम्प्रभुता के द्वार पूरी तरह से खोल दिए गए थे।"* उन्होंने आगे लिखा है, *"फिलिस्तीन के शासक उनके प्रभाव और शक्ति से ईर्ष्या करते थे। गवर्नर और मुस्तरिफ, जनरल और स्थानीय अधिकारीगण, उनकी उपस्थिति में प्रवेश पाने का सम्मान प्राप्त करने के लिए बड़ी विनम्रता से अनुरोध करते थे – ऐसा अनुरोध जिसे वे शायद ही कभी स्वीकार करते थे।"*

यही वह भवन था, जिसमें पूरब के लोगों की संस्कृति का ज्ञान रखने वाले कैम्ब्रिज के प्रसिद्ध प्रोफेसर ई.जी. ब्राउन को, उन पाँच दिनों के दौरान बहाउल्लाह के साथ लगातार चार बार साक्षात्कार का अवसर प्राप्त हुआ, जब

वे बहजी में मेहमान थे (अप्रैल 15–20, 1890 ई.)। ये ऐसे साक्षात्कार थे जो उस महान निर्वासित की इस ऐतिहासिक घोषणा से अमर हो गए थे कि *"ये निरर्थक लड़ाईयाँ, ये विनाशकारी युद्ध समाप्त हो जायेंगे और 'सर्वमहान शान्ति' आयेगी।"* आने वाली पीढ़ियों के लिए, उस साक्षात्कारकर्ता प्रोफेसर का यादगार बयान इस प्रकार है, *"मैं उनका मुख मण्डल कभी नहीं भूल सकता, जिन्हें मेरी निगाहें देख रहीं थीं, यद्यपि मैं इसका वर्णन नहीं कर सकता। वे तीक्ष्ण आँखें व्यक्ति की आत्मा तक को पढ़ती हुई प्रतीत होती थीं; उस मस्तक पर शक्ति और सत्ता विराजमान थी.....। यह पूछने की आवश्यकता नहीं है कि मैं किसकी उपस्थिति में खड़ा था। जब मैंने उस महान के समक्ष झुककर प्रणाम किया, जो एक ऐसे समर्पण और प्रेम के प्रतीक थे और जिनसे बादशाह ईर्ष्या करें और जिसके लिए सम्राट व्यर्थ ही आहें भरते रह जायें।"* इस आगन्तुक ने स्वयं इस बात की साक्षी दी है कि, "यहाँ मैंने सबसे यादगार पाँच दिन बिताए, जिनके दौरान मुझे उन लोगों के साथ बातचीत करने के अपूर्व और आशातीत अवसरों का आनन्द मिला जो उस शक्तिशाली और अद्भुत् प्रेरणा के निर्झर–स्रोत हैं, जो ऐसे लोगों के परिवर्तन और नवजीवन के लिए अदृश्य किन्तु सदा बढ़ती हुई शक्ति के साथ कार्य करते हैं जो मृत्यु समान नींद में सोये हुए हैं। सत्य ही, यह एक अद्भुत् और हिला देने वाला ऐसा अनुभव था, लेकिन मैं निराश हूँ कि मैं इसकी एक हल्की सी झलक ही दे पा रहा हूँ।"

उसी साल बहाउल्लाह का खेमा, *"महिमा का वह मन्दिर"*, उस कार्मल पर्वत पर लगा दिया गया जिसे बहाउल्लाह ने *"ईश्वर का पर्वत और उसकी बगिया"* कहा है, जिसकी प्रशंसा करते हुए इसाय्याह ने इसे *"ईश्वर का वह पर्वत"* कहा है जिसकी ओर *"सभी देश जायेंगे।"* बहाउल्लाह चार बार हाईफा प्रवास पर गए और उनका अन्तिम प्रवास कम से कम तीन माह तक चला। इनमें से एक प्रवास के दौरान, जब उनके खेमे को कार्मलाईट (कार्मल निवासी) के मठ के निकट लगाया गया था, तब उस *"बगिया के स्वामी"* ने कार्मल की वह पाती प्रकट की, जो अपने गूढ़ संकेतों और भविष्यवाणियों के कारण उल्लेखनीय है। एक अन्य अवसर पर, जब वे उस पर्वत की ढलान पर खड़े हुए थे, तो उन्होंने स्वयं उस स्थान को चिन्हित कर अब्दुल बहा को वह स्थान बताया था जहाँ

स्थायी रूप से बाब की समाधि तैयार की जानी थी और जिस पर बाद में एक सुशोभनीय समाधि का निर्माण किया जाना था।

इसके अतिरिक्त, बहाउल्लाह के आदेश पर, ईसा मसीह के सेवाकाल से जुड़ी एक झील से लगी वे ज़मीनें खरीद ली गईं जो बहाउल्लाह के धर्म की महिमा को समर्पित की जानीं थीं और जो उन *"उत्कृष्ट एवं भव्य भवनों"* के निर्माण की अग्रणी बनने वाली थीं, जिनके बारे में अपनी पातियों में पूर्वघोषणा करते हुए बहाउल्लाह ने लिखा था कि ऐसे भवन *"उस सम्पूर्ण पावन भूमि पर"* एवं जॉर्डन तथा इसके निकट उन *"पावन क्षेत्रों पर"*, निर्मित किए जायेंगे, जिन्हें, *"उस एक सत्य ईश्वर की उपासना और सेवा"* में समर्पित करने की उन्होंने पातियों में अनुमति दी थी।

बहाउल्लाह के पत्राचार के परिमाण का विशाल विस्तार; इन पत्रों की रवानगी और वितरण के लिए एलेक्ज़ेन्ड्रिया में एक बहाई एजेन्सी की स्थापना; बेरुत शहर से होकर जाने वाले तीर्थयात्रियों के हितों की रक्षा करने के लिए अब उस शहर में रहने वाले बहाउल्लाह के एक दृढ़ अनुयायी, मुहम्मद मुस्तफा द्वारा प्रदान की गई सुविधाएँ; वह तुलनात्मक सुगमता जिससे अब एक कैदी, फारस, इराक, काकेशस, तुर्किस्तान और मिस्र में बढ़ते हुए केन्द्रों के साथ पत्र–व्यवहार कर रहा था; भारत और बर्मा में शिक्षण का एक सुव्यवस्थित अभियान शुरू करने के लिए उनके द्वारा जमाल एफेन्दी के नाम से जाने जाने वाले सुलेमान खान–ए–तानाकाबूनी को सौंपा गया ध्येय; उनके कुछ अनुयायियों की *"ईश्वर की धर्मभुजाओं"* के रूप में नियुक्ति; शीराज़ में उस पावन निवास की मरम्मत, जिसका संरक्षण अब औपचारिक रूप से उन्होंने बाब की पत्नी और उनकी बहन को सौंप दिया था और यहूदी, पारसी, एवं बौद्ध धर्म के अनुयायियों की एक इतनी बड़ी संख्या द्वारा प्रभुधर्म का स्वीकार किया जाना, जो उस उत्साह और दृढ़ता के प्रतिफल थे, जो फारस, भारत और बर्मा के भ्रमणशील शिक्षक इतने उल्लेखनीय ढंग से प्रदर्शित कर रहे थे, यह एक ऐसा परिवर्तन था जिसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि उन्होंने ईसाईयत और इस्लाम, दोनों के दिव्य उद्‌गम को दृढ़तापूर्वक स्वीकार किया। इन सभी बातों

ने उस नेतृत्व की जीवन शक्ति को प्रमाणित कर दिया जिसे सम्राट या धर्मगुरू, भले ही वे कितने भी शक्तिशाली क्यों न हों, न तो नष्ट कर सकते थे, न ही इसे हानि पहुँचा सकते थे।

रूसी तुर्किस्तान के नवीन स्थापित इश्क़ाबाद शहर में समृद्ध बहाई समुदाय के उभरने का उल्लेख यहाँ नहीं छूटना चाहिए, जिसे एक सहानुभूति भरी सरकार की सद्भावना का आश्वासन था, जिसके कारण यहाँ एक बहाई गुलिस्तान स्थापित किया जा सका और ज़मीन खरीदकर उस पर ऐसे भवन बनाना सम्भव हो सका जो बहाई जगत के प्रथम मश्रिकुल–अश्कार (उपासना मन्दिर) के पूर्व लक्षण सिद्ध हुए; यह उल्लेख करना भी नहीं भूलना चाहिए कि उस विद्वान फाज़िल–ए–क़ैनी और ज्ञानवान मिर्ज़ा अबुल–फज़ल के वक्तव्यों और लेखों के परिणामस्वरूप, एशियाई महाद्वीप के बीचो–बीच स्थित उस समरकन्द और बुखारा में प्रभुधर्म की नई चौकियाँ स्थापित हुईं; यह उल्लेख करना भी नहीं भूलना चाहिए कि प्रभुधर्म के संस्थापक के *"पावनतम ग्रन्थ"* सहित उनके लेखों के पाँच संस्करणों को भारत में प्रकाशित किया गया। ये प्रकाशन, विभिन्न लिपियों और भाषाओं में इसके साहित्य की विशाल वृद्धि और भविष्य के दशकों में, पूरब और पश्चिम में इसके वितरण के पूर्व सूचक थे।

बहाउल्लाह के एक सह–निर्वासित ने उल्लेख किया है कि बहाउल्लाह ने कहा था कि *सुल्तान अब्दुल–अज़ीज ने हमें अत्यन्त अपमानजनक अवस्था में इस देश में निर्वासित किया था और उसका उद्देश्य हमें नष्ट करने और नीचा दिखाने का था, इसलिए, जब भी हमारे समक्ष सुख और सुविधा के अवसर आए, हमने उन्हें अस्वीकार नहीं किया।"* जैसा कि नबील ने अपने इतिहास में वर्णन किया है, बहाउल्लाह ने इसी प्रकार एक बार यह टिप्पणी की थी कि, *"अब, ईश्वर का धन्यवाद कि बात यहाँ तक पहुँच गई है कि इन क्षेत्रों के सभी लोग हमारे समक्ष अपनी अधीनता प्रकट कर रहे हैं।"* और एक बार फिर, जैसा कि उस वर्णन में बताया गया है : *"ऑटोमन का सुल्तान, बगैर किसी औचित्य या कारण के, हम पर अत्याचार करने के लिए उठ खड़ा हो गया और हमें अक्का के दुर्ग के कारागार में भेज दिया। उसके शाही फरमान ने आदेश दिया कि*

किसी को भी हमसे मिलने–जुलने की अनुमति नहीं है और सभी को हमसे घृणा करनी चाहिए। इसलिए, दिव्य शक्ति के हाथ ने शीघ्र ही हमारा बदला ले लिया। पहले तो इसने उसके उन दोनों मंत्रियों, अली और फुआद को एवं उसके उन विश्वासपात्रों को विनाश की आँधियों से घेर लिया, जिन्हें हटाना असम्भव था और उसके बाद, वह हाथ, स्वयं अज़ीज की शान–ओ–शौकत को लपेट देने के लिए और उसके पतन के लिए आगे बढ़ा, ऐसा केवल वह ही कर सकता है जो शक्तिशाली और बलशाली है।"

इसी विषय का उल्लेख करते हुए, अब्दुल बहा ने लिखा है कि, *"उनके शत्रुओं का लक्ष्य था कि उनकी यह कैद इस आशीर्वादित धर्म को पूरी तरह नष्ट कर दे और इसका विनाश कर दे, लेकिन यह कारागार, वास्तव में, सबसे अधिक सहायक रहा और इसके विकास का माध्यम बन गया।"* इसके अतिरिक्त उन्होंने इस बात की पुष्टि की है कि, *".....इस उत्कृष्ट व्यक्तित्व ने उस महानतम कारागार में अपने धर्म को ऊँचा उठाया। इसी बन्दीगृह से उसका प्रकाश दूर–दूर तक फैला; उसकी प्रसिद्धि दुनिया भर में फैली और उसकी महिमा की घोषणा पूरब और पश्चिम में पहुँची।" "शुरू में उसका प्रकाश एक सितारा था, अब यह एक शक्तिशाली सूर्य बन चुका है।"* वे आगे पुष्टि करते हैं कि, *"हमारे ज़माने तक, पहले कभी भी ऐसा कुछ भी घटित नहीं हुआ है।"*

कोई आश्चर्य की बात नहीं है, कि अक्का में बहाउल्लाह के निर्वासन के चौबीस वर्षों की परिस्थितियों में इतने उल्लेखनीय परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने स्वयं ये प्रभावशाली शब्द लिखे हैं : *"उस सर्वशक्तिशाली ने.....इस कारागार को सर्वोच्च बैकुण्ठ और स्वर्गों के स्वर्ग में बदल दिया है।"*

अक्का में बहाउल्लाह की कैद
(निरंतर)

जिस समय बहाउल्लाह और उनका साथ देने वाले छोटे से दल को एक ऐसे निर्वासन की कठिनाईयाँ सहन करने पर बाध्य किया जा रहा था – जिसका उद्देश्य धरती से उनका अस्तित्व मिटा देने का था – उस समय उनकी जन्मभूमि में उनके अनुयायियों का स्थाई रूप से बढ़ता हुआ समुदाय ऐसे अत्याचारों को झेल रहा था जो उन विपत्तियों से भी ज़्यादा हिंसक और लम्बी अवधि के थे, जिनसे बहाउल्लाह और उनके साथी पीड़ित थे। जब मात्र एक ही वर्ष के दौरान, जैसा कि अब्दुल बहा ने कहा है, *"चार हज़ार लोगों से भी अधिक की हत्या कर दी गई थी और बहुत बड़ी संख्या में स्त्री और बच्चे किसी भी रक्षक या सहायक से वंचित रह गए थे"*, उस खूनी स्नान की तुलना मे, बाद में, यद्यपि छोटे पैमाने पर, किन्तु जो घातक और भयानक कृत्य उन असंतोषी और निर्दयी शत्रुओं ने किए वे उतने ही व्यापक रूप से फैले हुए थे और क्रूरता का और भी गम्भीर रूप धारण किए हुए थे।

उस अवधि के दौरान, जिसकी हम समीक्षा कर रहे हैं, नसीरूद्दीन शाह अपने पुरुषार्थ की चरम सीमा पर और अपनी निरंकुश सत्ता की चोटी पर था। इसी नसीरूद्दीन शाह को बहाउल्लाह ने *"अत्याचारियों का सरदार"* और ऐसा व्यक्ति कहकर निन्दित किया था जिसने *"वे कर्म किए थे जिनके कारण न्याय और निष्पक्षता के नगरों के निवासी रो पड़े थे"*, जो एक ऐसे देश के भाग्य का एकमात्र न्यायकर्ता था जो *"पूरब की स्मरणातीत परम्पराओं में दृढ़ता से रूढ़िबद्ध"* था; जो ऐसे *"धन के लोभी, धूर्त और बेईमान"* मंत्रियों से घिरा हुआ

था जिन्हें वह अपनी इच्छा से उन्नत या अवनत कर सकता था; जो एक ऐसे प्रशासन का सरदार था जिसका *प्रत्येक नेता, विभिन्न रूपों में, रिश्वत खिलाने वाला भी था और रिश्वतखोर भी"*; जो प्रभुधर्म के अपने विरोध में एक ऐसी राजकीय व्यवस्था के साथ सम्बद्ध था जो एक वास्तविक *"धार्मिक शासन"* था; जिसे ऐसे लोगों का समर्थन प्राप्त था, जो अपने अत्याचारों के लिए मशहूर, अपने कट्टरपन, चापलूसी, लोभ और भ्रष्ट प्रथाओं के लिए बदनाम थे। ऐसी नीच प्रवृत्ति का बादशाह, जो अब बहाउल्लाह को व्यक्तिगत रूप से गिरफ्तार नहीं कर सकता था, उसे अपने ही राज्य में मौजूद इस अत्यन्त भयाक्रांत और नवजीवन प्राप्त समुदाय के बाकी लोगों को कुचलकर मिटा देने के प्रयास से ही अपने आपको सन्तुष्ट करना पड़ा। उसके बाद पद और बल में अगले व्यक्ति थे उसके तीन सबसे बड़े बेटे, जिन्हें, आन्तरिक प्रशासन की आवश्यकतानुसार, अपने प्राधिकार उसने दे रखे थे और जिन्हें उसने अपने राज्य के सभी प्रांतों की राज्यपालिका सौंप दी थी। इसके अलावा उसने अज़रबैजान का प्रान्त उस कमज़ोर और डरपोक उत्तराधिकारी मुज़फ्फराद–दीन मिर्ज़ा के अधीन कर दिया था, जो शेखी पंथ के प्रभाव में पड़ चुका था और मुल्लाओं के प्रति विशेष आदर दिखाता था। उसने, यज़्द और इस्फहान के प्रांतों सहित, अपने राज्य के पाँच में से दो हिस्से, अपने उस सबसे बड़े जीवित बेटे मसूद मिर्ज़ा के कठोर शासन के हवाले कर दिए थे, जिसकी माता आम लोगों में से एक थी, जबकि उसके सबसे प्रिय बेटे कामरान मिर्ज़ा को जिसे आमतौर पर नायीबुस–सल्तनीह की उपाधि से सम्बोधित किया जाता था – जीलान और माज़िन्दरान का शासन प्रदान किया था और उसे तेहरान के गवर्नर ने अपना युद्ध–मंत्री और अपनी सेना का मुख्य कमान्डर बनाया था। अपने पिता का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए इन दो भाईयों के बीच ऐसी शत्रुता थी, कि वे अपने–अपने कार्यक्षेत्र के प्रधान धर्मगुरूओं के साथ मिलकर, इस असुरक्षित समुदाय के सदस्यों का शिकार करने, उन्हें लूटने और मिटा देने के कार्य में एक–दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते थे, जिन्होंने बहाउल्लाह के आदेश पर किसी भी प्रकार का सशस्त्र विरोध करना छोड़ दिया था, यहाँ तक कि आत्मरक्षा में भी नहीं और जो बहाउल्लाह के इन आदेशों का पालन कर रहे थे कि *"मारने से अच्छा है मर जाना।"* तेहरान के दो प्रमुख धर्मगुरू, हाजी मुल्ला अली–ए–कानी और सैय्यद

सादिक़–ए–तबातबाई सहित इस्फहान में उनके साथी शेख मुहम्मद–बक़ीर और उसी शहर के इमाम–जुमिह, मुहम्मद–हुसैन जैसे आग लगाने वाले धर्माधिकारी, अपनी पूरी ताकत और शक्ति के साथ एक ऐसे शत्रु पर वार करने का छोटे से छोटा अवसर भी हाथ से नहीं जाने देना चाहते थे, जिसके उदारीकरण के प्रभाव से डरने के उनके पास इतने अधिक कारण थे, जितने स्वयं बादशाह से डरने के नहीं थे।

कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि, इतनी जोखिम भरी परिस्थिति के समक्ष, प्रभुधर्म को भूमिगत होना पड़ा और इस धर्म के विकास की इस उथल–पुथल भरी अवधि में, गिरफ्तारियाँ, पूछताछ, कैद, बदजुबानी, डाका, अत्याचार और हत्याएँ, इसकी उल्लेखनीय विशेषताएँ बन गईं। इसके अतिरिक्त वे तीर्थ, जो एड्रियानोपल में शुरू किए गए और जो बाद में अक्का में एक प्रभावशाली स्तर तक पहुँच गए थे, अब बहाउल्लाह की पातियों के वितरण और उन लोगों के माध्यम से फैलायी गई उत्साही रिपोर्टों के कारण, उन धर्माचारियों और आम लोगों के दिलों में, समान रूप से शत्रुता भड़क उठी, जिन्होंने यह मूर्खतापूर्ण कल्पना कर ली थी कि एड्रियानोपल में प्रभुधर्म के अनुयायियों के बीच पड़ने वाली दरार और इसके बाद, इसके दिव्य नेता के खिलाफ घोषित किए गए निर्वासन के फैसले से इसके भाग्य पर सदा के लिए विराम की मुहर लग जायेगी।

आबादेह में एक स्थानीय सैय्यद के उकसावे में आकर उस्ताद अली–अकबर को गिरफ्तार कर लिया गया और उसे इतनी बेरहमी से पीटा गया कि वह सिर से पाँव तक अपने ही खून में नहा गया। ताकुर गाँव में, शाह के आदेश पर, यहाँ के निवासियों की सम्पत्ति को लूट लिया गया, बहाउल्लाह के एक सौतेले भाई हाजी मिर्ज़ा रिद़ा–कुली को गिरफ्तार करके उसे राजधानी ले जाया गया और सियाहचाल में डाल दिया गया जहाँ वह एक माह तक रहा, जबकि बहाउल्लाह के एक और भाई–मिर्ज़ा हसन के साले को भी पकड़ कर सुलगते हुए लाल लोहे से दागा गया, जिसके बाद पड़ोस के दाराकलां गाँव को आग की लपटों के हवाले कर दिया गया।

खुरासान के आक़ा बुज़ुर्ग, उत्कृष्ट *"बदी"* (अद्भुत्) थे। प्रभुधर्म को स्वीकार करने में नबील ने उनकी सहायता की थी। उन्हें *"शहीदों के गौरव"* की उपाधि से सम्मानित किया गया था। नसीरूद्दीन शाह को सम्बोधित की गई पाती पहुँचाने वाले वे एक 17 वर्षीय युवक थे। जैसी कि बहाउल्लाह ने पुष्टि की है, उनके अन्दर *"सामर्थ्य और शक्ति की चेतना फूँक दी गई थी।"* उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और लगातार तीन दिन तक जलते हुए लाल लोहे से दागा गया। एक राइफल के कुन्दे से उनके सिर पर लगातार वार करके उसे कुचल दिया गया, जिसके बाद उनके शरीर को एक गड्ढे में फेंक कर उसे मिट्टी और पत्थरों से भर दिया गया। बहाउल्लाह के कारावास के दूसरे वर्ष के दौरान बैरकों में उनसे मिलने के बाद, उस पाती को अकेले और पैदल ही तेहरान ले जाकर शाह के हाथों में पहुँचाने के लिए, बदी, बड़ी आश्चर्यजनक तत्परता के साथ उठ खड़े हुए थे। चार माह की लम्बी यात्रा के पश्चात वे उस शहर पहुँच गए और उपवास एवं जागरण में तीन दिन व्यतीत करने के बाद, वे शाह से उस समय मिले थे जब वह एक शिकारी अभियान के लिए शिमिरान के लिए रवाना हो रहा था। वे शांति और आदर के साथ शाह के पास गए और बोले "हे राजा ! मैं शेबा की ओर से एक महत्वपूर्ण सन्देश लेकर आया हूँ", इतना कहते ही, शाह के आदेश पर, उनसे पाती ले ली गई और तेहरान के धर्मगुरुओं के हवाले करते हुए उन्हें आदेश दिया गया कि वे इस पत्र का उत्तर दें। लेकिन उन लोगों ने इस आदेश को टाल दिया और बदले में यह सलाह दी कि उस सन्देशवाहक को मौत के घाट उतार दिया जाए। इसके पश्चात, शाह ने वह पाती कॉन्सटैन्टिनोपल में पदस्थ फारस के राजदूत को, इस आशा में भेज दी कि सुल्तान के मंत्रियों द्वारा इसको पढ़ने से शायद उनकी शत्रुता और भड़क उठे। तीन वर्ष तक बहाउल्लाह अपने लेखों में उस युवक की वीरता की प्रशंसा करते रहे। उस उत्तम बलिदान के बारे में अपने लेखों में किए गए उल्लेखों को *"मेरी पातियों का लवण"* कहते थे।

आबा–बसीर और सैय्यद अशरफ – जिनके पिताओं की ज़नजान के संघर्ष में हत्या कर दी गई थी – के सिरों को उसी दिन उस शहर में काट दिया गया। आबा–बसीर ने तो प्रार्थना के लिए घुटने टेकते हुए अपने जल्लादों को यह निर्देश तक दिए थे कि उनके वार करने का कौन सा तरीका सबसे उत्तम होगा,

जबकि सैय्यद अशरफ, जिन्हें इतनी बुरी तरह से पीटा गया था कि उनके नाखूनों से खून बहने लगा था, का सिर तब काट दिया गया जब वे अपने शहीद किए गए साथी के शरीर को अपनी बाँहों में लिए हुए थे। वह इसी अशरफ की माता थीं जिन्हें, जब इस आशा में अपने बेटे से मिलने जेल भेजा गया कि वे अपने इकलौते बेटे को अपने धर्म से मुकर जाने के लिए राज़ी कर लें, उन्होंने वहाँ पहुँचकर अपने बेटे को यह चेतावनी दी कि यदि वह अपने धर्म से मुँह फेर लेगा, तो वे उसे अपना बेटा मानने से इंकार कर देंगी। उन्होंने अपने बेटे को आदेश दिया कि वह भी आबा–बसीर का अनुसरण करे, यहाँ तक कि वे अपने बेटे को मरते हुए देखती रहीं लेकिन अपनी आँखे नम नहीं कीं। बुरूजिर्द में उस दौलतमंद और प्रख्यात मुहम्मद–हसन खान–ए–काशी के तलवों पर इतनी बेरहमी से बेतें लगायी गई कि इस यातना से वे शहीद हो गए। शीराज़ में स्थानीय धर्मगुरू के आदेश से मिर्ज़ा आक़ा–ए–रिकाब–साज़ को मिर्ज़ा रफी–ए–खय्यात और मशहदी नबी के साथ, आधी रात को एक ही समय में गला घोंटकर मार दिया गया बाद में एक ऐसी भीड़ ने उनकी समाधि पर गंदगी का ढेर लगाकर अपवित्र कर दिया। काशान में शेख अबुल–कासिम–ए–माज़कानी ने यह कहकर उस पानी को पीने से इंकार कर दिया जो उसकी मौत से पहले उसे दिया गया था, कि वह शहादत के प्याले का प्यासा है। इसी शेख अबुल–कासिम को उसकी गर्दन पर जानलेवा वार करके तब मार दिया गया जब वह प्रार्थना करने के लिए झुका था।

मिर्ज़ा बकीर–ए–शीराज़ी, जिसने एड्रियानोपल में पूर्ण समर्पण के साथ बहाउल्लाह की पातियों का प्रतिलेखन किया था, उसे किरमान में मौत के घाट उतार दिया गया, जबकि अर्दिकान में एक क्रोधी भीड़ ने उस वृद्ध और कमज़ोर गुल–मुहम्मद का पीछा करके उसे ज़मीन पर पटक दिया और दो सैय्यदों के कीलों वाले जूतों से इस तरह कुचल डाला कि उसकी पसलियाँ चूर–चूर होकर अन्दर धंस गईं और उसके दाँत भी टूट गए, जिसके बाद उसके शरीर को नगर के बाहर ले जाया गया और एक गड्ढे में केवल इसलिए गाड़ दिया गया, ताकि अगले दिन उसे एक बार फिर बाहर निकाला जा सके, उसे सड़कों पर घसीटा जा सके और अन्त में किसी उजाड़ स्थान में छोड़ दिया जाए। अपने बेलगाम कट्टरपन के लिए प्रसिद्ध मशहद शहर में, उस हाजी

अब्दुल–मजीद को, जो कि पूर्व में उल्लेखित बदी के 85–वर्षीय पिता थे और तबरसी के संघर्ष के एक उत्तरजीवी थे, अपने पुत्र की शहादत के बाद बहाउल्लाह से मिलने गए थे और वहाँ से उत्साह से प्रज्वलित होकर खुरासान लौटे थे – उन्हें कमर से गले तक चीर कर खोल दिया गया और उनके सिर को, अपमान करने वाले दर्शकों की एक भीड़ को दिखाने के लिए, संगमरमर के एक पत्थर पर रख दिया गया। इस भीड़ ने उनके शरीर को अपमानजनक अवस्था में बाज़ारों में घसीटा और उसके बाद, उसे उनके रिश्तेदारों के हवाले करने के लिए मुर्दाघर में छोड़ दिया।

इस्फहान में शेख मुहम्मद–बक़ीर के आदेशों पर मुल्ला करीम का सिर कलम कर दिया गया और उनके शव पर से एक घोड़ा दौड़ाया गया, जिसके बाद उस शव को आग में झोंक दिया गया। सैय्यद आक़ा जान के कान काट लिए गए और उन्हें एक लगाम से बाँधकर गलियों और बाज़ारों में घुमाया गया। एक माह बाद उसी शहर में उन दो प्रसिद्ध भाईयों, मिर्ज़ा मुहम्मद हसन और मिर्ज़ा मुहम्मद हुसैन के साथ एक दुःखान्त घटना घटी। उन दोनों भाईयों को, उन *"दो जगमगाते हुए प्रकाशपुंजों,* को क्रमशः *"सुल्तानुश–शुहादा"* (शहीदों के सम्राट) और *"माहबूबुश–शुहादा"* (शहीदों को प्रिय) की उपाधियों से सम्मानित किया गया था। ये दोनों अपनी उदारता, विश्वासपात्रता, दयालुता और ईश्वर भक्ति के लिए प्रसिद्ध थे। उन्हें, उस दुष्ट, बेईमान इमाम–जुमिह, मीर मुहम्मद हुसैन के भड़काने पर शहीद किया गया जिसे बहाउल्लाह ने *"नागिन"*, कह कर निंदित किया है, जिसने अपने कारोबार के लिए इन दो भाईयों से बहुत पैसा उधार लिया था, इसलिए उधार चुकाने के अपने दायित्व से हाथ धोने के लिए उसने एक षड़यंत्र के तहत इन दोनों भाईयों को बाबी घोषित कर दिया और इस तरह उनकी हत्या करवा दी। कीमती सामान से सजे उनके घर को लूट लिया गया, यहाँ तक कि उनके बगीचे के पेड़ और फूलों को भी। उनका बाक़ी सारा सामान भी लूट लिया गया। बहाउल्लाह द्वारा *"भेड़िये"* के नाम से निंदित किए गए उस शेख मुहम्मद बक़ीर ने इन्हें मृत्यु दण्ड सुनाया और ज़िल्लूस–सुल्तान ने उसके इस फैसले को मंजूरी दी, जिसके पश्चात इन दोनों भाईयों को जंजीरों से बाँध कर उनके सिर काट दिए, उन्हें घसीट कर मैदान–ए–शाह तक ले जाया गया और जहाँ उन्हें उस अनादर का शिकार

बनने के लिए छोड़ दिया गया और यहीं पर एक भ्रष्ट निकृष्ट और लालची जनता ने उन्हें अपमानित किया। अब्दुल बहा ने लिखा है, कि *"इन दो भाईयों की हत्या इस प्रकार की गई थी कि उस दिन जुल्फा का ईसाई पादरी भी चिल्ला उठा, विलाप करने लगा और बहुत रोया।"* बहाउल्लाह, अपनी पातियों में कई सालों तक इन दो भाईयों का उल्लेख करते रहे, उनकी मृत्यु पर अपना दुःख व्यक्त करते रहे और उनका गुणगान करते रहे।

मुल्ला अली जान को माज़िन्दरान से तेहरान पैदल ले जाया गया, उस सफर की कठिनाईयाँ इतनी कठोर थीं कि उनकी गर्दन में घाव हो गए और उनका शरीर कमर से पैर तक सूज गया। उनकी शहादत के दिन उन्होंने पानी माँगा और जब वे प्रार्थना में लीन थे तब एक कटार से उनका गला काट दिया गया, जिसके बाद उनके शव पर थूका गया, उस पर मिट्टी डाली गई, उसे तीन दिन तक खुला छोड़ दिया गया, अन्त में उसके टुकड़े कर दिए गए। बाब के दिनों में, प्रभुधर्म को स्वीकार करने वाले मुल्ला अली पर इतनी क्रूरता से आक्रमण किया गया और कुल्हाड़ी से उनकी पसलियों को इस तरह तोड़ दिया गया कि वे तुरन्त मर गए। मिर्ज़ा अशरफ को इस्फहान में मौत के घाट उतार दिया गया, शेख मुहम्मद तक़ी–ए–नजफी, जिसे *"भेड़िये का पुत्र"* कहा गया है, ने उनके शव को अपने पैरों से कुचल दिया, उनकी आँखों को बर्बरतापूर्वक नोंच लिया और उनके शव को जला देने के लिए भीड़ के हवाले कर दिया, जिसके पश्चात उस शव की जली हुई हड्डियों को एक टूटी–फूटी दीवार के नीचे दफन कर दिया गया और उसी को तोड़कर उन्हें ढँक दिया गया।

यज़्द में, इसी शहर के एक धर्मगुरु के भड़काने और ज़िल्लुस–सुल्तान के उस निर्दयी पुत्र, राज्यपाल जलालुद–दौलिह, महमूद मिर्ज़ा के आदेशों पर, एक ही दिन में सात लोगों को भयानक परिस्थितियों में मौत के घाट उतार दिया गया। इनमें से पहला व्यक्ति एक बाईस वर्षीय युवक, अली असगर को गला घोंट कर मार दिया गया और उसके शव को कुछ यहूदियों के हवाले कर दिया गया, जिन्होंने उस व्यक्ति के छः साथियों को अपने साथ चलने पर विवश करते हुए, उसके शव को गली–गली में घसीटा। इस दौरान ये लोग,

ढोल और तुरही बजाने वाले लोगों की भीड़ और सैनिकों से घिरे हुए थे। इसके बाद जब वे तारघर के पास पहुँचे तो उन्होंने 85–वर्षीय मुल्ला मेहदी का सिर कलम कर दिया और उन्हें उसी ढंग से घसीटते हुए शहर के दूसरे हिस्से तक ले गए, जहाँ दर्शकों के एक बहुत बड़े जमघट की आँखों के सामने, संगीत की लय में पागल होकर, उन्होंने आक़ा अली को भी उसी तरह मार डाला। इसके पश्चात, वे स्थानीय धर्मगुरु के घर गए और अपने साथ उन चार बाकी साथियों को भी ले गए। वहाँ उन्होंने उस मुल्ला अली–ए–सब्ज़ीवरी का गला काट दिया, जो लोगों की भीड़ को सम्बोधित कर रहा था और अपनी भावी शहादत पर गर्व कर रहा था। उसकी मृत्यु अभी हुई भी नहीं थी कि उन्होंने एक कुदाली से उसके शरीर के दो टुकड़े कर दिए और पत्थरों से उसके सिर को चूर–चूर करके उसका गूदा बना दिया। शहर के एक अन्य भाग में, मिहरिज़ द्वार के निकट, उन्होंने मुहम्मद बक़ीर की हत्या कर दी और बाद में, मैदान–ए–खान में, जब संगीत और भी अधिक तेज़ और प्रचंड हो गया और उसने लोगों की चिल्लाने की आवाज़ों को डुबो दिया, तब उन्होंने बाकी बचे हुए उन दो भाईयों के सिर काट दिए, जिनके नाम थे अली–असगर और मुहम्मद हसन, जिनकी उम्र बीस से पच्चीस वर्ष के बीच थी। मुहम्मद हसन के पेट को चीर कर खोल दिया गया और उसके हृदय और कलेजे को नोचकर बाहर निकाल लिया गया, जिसके बाद उसके सिर को एक बरछी भाले पर चढ़ाकर, संगीत की धुन पर शहर की गलियों में घुमाकर शहतूत के एक पेड़ पर टाँग दिया गया और लोगों के एक विशाल समूह ने उस पर पत्थर मारे। उसके शरीर को उसकी माता के घर के दरवाज़े पर फेंक दिया गया, जहाँ नाचने एवं खुशियाँ मनाने के लिए औरतें जानबूझ कर उसके घर में घुस गईं। यहाँ तक कि लोग उनके मांस के टुकड़ों को भी औषधि के रूप में उपयोग में लाने के लिए ले गए। अन्त में, अन्य शहीदों के सिरों सहित, मुहम्मद हसन के सिर को उनके शरीर के निचले हिस्से से जोड़कर शहर के बाहर ले गए और इतनी दुष्टता से पत्थरों से मारा कि उनकी खोपड़ियाँ टूट गईं। इसके बाद उन्होंने यहूदियों को मजबूर किया कि उनके अवशेषों को सल्साबिल के मैदान में एक गड्ढे में फेंक दें। वहाँ के राज्यपाल द्वारा सार्वजनिक छुट्टी घोषित कर दी गई और उसके आदेश से सभी दुकानें बन्द कर दी गईं। रात को शहर में

उजाला करके उसे सजाया गया और आधुनिक दौर के सबसे बर्बर कृत्यों में से एक के निष्पादित किए जाने पर उत्सव मनाने की घोषणा कर दी गई।

वे यहूदी और पारसी लोग भी जिन्होंने हाल ही में प्रभुधर्म को स्वीकार किया था और जो क्रमशः हमदान और यज़्द में निवास करते थे, उन शत्रुओं के आक्रमणों से अछूते नहीं थे, इनका क्रोध यह देखकर भड़क उठा था कि प्रभुधर्म का प्रकाश ऐसे क्षेत्रों में फैल चुका था जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी। इश्काबाद शहर में भी हाल ही में स्थापित किये गए शिया सुमदाय ने, अपने बीच रहने वाले बहाउल्लाह के अनुयायियों की बढ़ती हुई प्रतिष्ठा से कुण्ठित होकर, दो गुण्डों को उस सत्तर–वर्षीय, हाजी मुहम्मद–रिज़ा–ए–इस्फहानी पर हमला करने के लिए भड़काया, गुण्डों ने दिन–दहाड़े और बीच बाज़ार में उन पर कम से कम बत्तीस जगह पर चाकू मारे, उसका कलेजा बाहर निकाल लिया, उसका पेट फाड़ दिया और उसका सीना चीर कर खोल दिया। जार द्वारा इश्काबाद भेजी गई एक सैन्य अदालत ने लम्बी छानबीन के पश्चात, शियाओं को कुसूरवार ठहराते हुए, दो लोगों को मौत की सज़ा सुनाई और अन्य छः लोगों को निर्वासित कर दिया गया। जिस सज़ा को न तो नसीरूद्दीन शाह, न ही तेहरान, मशहद और तबरीज़ के वे उलेमा कम कर सकते थे, जिनसे अपील की गई थी, उसे इस पीड़ित समुदाय के प्रतिनिधियों ने, अपने उस उदार बीच–बचाव से कम करवा दिया, जिसने रूसी अधिकारियों को बड़े अचम्भे में डाल दिया।

बहाउल्लाह के अक्का निर्वासन की अवधि के दौरान, दोबारा पुनर्जीवित होने वाले इस समुदाय के साथ प्रभुधर्म के शत्रुओं द्वारा, किए गए व्यवहार के ये कुछ विशिष्ट उदाहरण हैं, एक ऐसा व्यवहार जिसके बारे में सचमुच यह कहा जा सकता है कि वैकल्पिक रूप से यह "जानवर की बेरहमी और शैतान की चालाकी" का प्रमाण देता है।

नसीरूद्दीन शाह पर जानलेवा हमले के प्रयास के बाद होने वाली अदालती पूछताछ और डरावनी यातनाओं ने (केडेलस्टन के लॉर्ड कर्ज़न जैसे सम्मानित पर्यवेक्षक के शब्दों में) प्रभुधर्म को पहले ही "एक ऐसी जीवन–शक्ति प्रदान कर दी थी जो अन्य किसी भी माध्यम से प्राप्त नहीं हो सकती थी।"

उत्पीड़न के इस नए दौर ने और शहीदों के खून के इस ताज़े प्रवाह ने उन जड़ों में एक बार फिर प्राण फूँक दिए जो उस पावन पौध ने अपनी मातृभूमि में पहले ही जमा ली थीं। उस ख़ूनी नीति, जिसका उद्देश्य उनका विनाश करना था, की चिन्ता किए बग़ैर और अपने आराध्य नेता (बहाउल्लाह) पर होने वाली विपत्तियों की बारिश से हताश हुए बगैर, (जिन्हें उनसे इतना दूर कर दिया था) तथा बाब की संविदा के मुख्य उल्लंघनकर्ता द्वारा किए गए विद्रोह से दूषित न होते हुए, बहाउल्लाह के अनुयायियों की संख्या में वृद्धि हो रही थी और वे एक रहस्यमय ढंग से वह आवश्यक ऊर्जा प्राप्त कर रहे थे जो आगे चलकर स्वतंत्र रूप से अपनी जड़ें जमाने में और अपनी संस्थाओं के तानेबाने का निर्माण करने में उन्हें समर्थ बनाने वाली थी।

1889 की शरद ऋतु में फारस के अपने दौरे के शीघ्र बाद, केडेलस्टन के लॉर्ड़ कर्ज़न ने, उन बातों का उल्लेख करने के दौरान, जिनका उद्देश्य था उस "बड़ी उलझन" और "गलती" को दूर करना जो प्रभुधर्म के सम्बन्ध में "यूरोप और विशेषकर अंग्रेज़ लेखकों" के बीच पैदा हो गई थी। यह "माना जाता था कि बीस में से उन्नीस बाबी अब बहाई हो चुके हैं।" 1865 में ही काउन्ट गाबीनो ने निम्नलिखित प्रमाण लिख दिया था : 'सन् 1865 में कॉउंट गोविन्यू ने लिखा था, "आम धारणा यह है कि बाबी फारस के हर वर्ग और धर्म को मानने वालों के बीच फैल चुके है, सिवाय ईसाइयों के, और वे खासतौर से देश के बुद्धिजीवी वर्ग के पढ़े–लिखे लोग हैं, वैज्ञानिक भी हैं, लेकिन उन्हें शक की नज़रों से देखा जाता है। मैं समझता हूँ कि शायद यही कारण है कि अनेक मौलवी और खासतौर पर प्रमुख मुजताहिद, उच्च स्तर के दण्डाधिकारी, कोर्ट में महत्वपूर्ण काम करने वाले लोग, बादशाह के करीब रहने वाले लोग बाबी हैं। हाल ही में की गई एक गणना के अनुसार तेहरान की कुल 80,000 आबादी में इस धर्म को मानने वालों की संख्या लगभग 5000 है। इसके अलावा.....फारस के बुद्धिजीवी वर्ग पर बाबियों और बाबी धर्म का अच्छा–खासा प्रभाव है और देश के भू–भाग के बाहर भी बाबी धर्म को मानने वाले रहते हैं। बगदाद के अन्दर और यहाँ तक कि भारत तक वे फैल चुके हैं।" एक बार फिर हम देखते हैं ".....एशिया में भारत और टर्की के हिस्सों में तथा बगदाद के चारों ओर ये फैल चुके हैं। उनके इस विस्तार पर सहज ही ध्यान आकर्षित होता

है। इस धर्म के विकास में जिन परिस्थितियों, घटनाओं और झंझावातों का दौर देखने को मिला है उससे तो यही साफ़ होता है जैसे किसी महान धर्म के साथ पहले हुआ है, यह धर्म भी वैसी ही परिस्थितियों से गुज़र रहा है।'

इसके अतिरिक्त, बहाउल्लाह के ध्येय की घोषणा और मिर्ज़ा याह्या के विद्रोह की ओर संकेत करते हुए लॉर्ड कर्ज़न ने लिखा है : "लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि इन परिवर्तनों ने किसी भी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाई वरना इसके विपरीत इस धर्म के सिद्धांतों के प्रचार को और भी बल प्रदान किया, जो इस तीव्रता के साथ आगे बढ़ा है कि उन लोगों को इसका कारण नहीं समझाया जा सकता जो इसमें केवल राजनीतिक या आध्यात्मिक उबाल का एक कच्चा रूप देखते हैं। न्यूनतम आकलन के अनुसार फारस में बाबियों की तत्कालीन संख्या लगभग पाँच लाख की है। निर्णयकुशल व्यक्तियों के साथ बातचीत के आधार पर मेरा विचार है कि इनकी कुल संख्या दस लाख के आसपास होगी।" आगे वे लिखते हैं, "दरबार के मंत्रियों और श्रेष्ठ जनों से लेकर सफाई कर्मचारी और घोड़े की देखरेख करने वालों तक, ये लोग प्रत्येक व्यवसाय में लगे हुए हैं, लेकिन मुसलमान धर्माधिकारी वर्ग उनकी गतिविधियों का क्षेत्र बिल्कुल नहीं हैं।" अपने एक अन्य साक्षात्कार में वे कहते हैं, "इस तथ्य से कि अपनी शुरूआत के वर्षों से ही, बाबीयत ने अपने आप को नागरिक शक्तियों के विरोध में पाया है और चूँकि बाबियों द्वारा शाह पर जानलेवा हमले का प्रयास किया गया था, इसलिए यह ग़लत निष्कर्ष निकाल लिया गया है कि यह आंदोलन अपने स्वरूप में मौलिक रूप से राजनीतिक और संशयवादी है.....। वर्तमान समय में बाबी लोग, शाह की प्रजा के किसी भी अन्य सदस्य जितने ही वफादार हैं। इस युवा धर्म पर बेरोकटोक लगाए गए समाजवादी, साम्यवादी और अनैतिक होने के दोषों में भी कोई न्याय नज़र नहीं आता है.....। जिस एकमात्र साम्यवाद को वे (बाब) जानते थे और जिसकी उन्होंने सलाह दी थी वह न्यू टेस्टामेन्ट (बाईबिल) और प्रारम्भिक ईसाई गिरिजाघर थे, अर्थात, प्रभुधर्म के सदस्यों द्वारा वस्तुओं को आपस में आमरूप से बाँटना और दान देना एवं परोपकार करना। अनैतिक होने का दोष आंशिक रूप से विरोधियों के दुष्ट षड़यंत्रों के कारण और कुछ हद तक बाब द्वारा स्त्रियों को दी गई उस स्वतंत्रता के कारण लगाया गया था, जिसे पूरब के लोग

चरित्रहीनता के साथ जोड़ते हैं।" और अन्त में, उनकी लेखनी से निकली यह भविष्यवाणी : "यदि बाबीयत् अपनी वर्तमान प्रगति की दर से आगे बढ़ती है, तब एक ऐसे समय के आने की कल्पना की जा सकती है जब यह फारस के मैदान से इस्लाम को खदेड़ देगी। लेकिन शायद, ऐसा सम्भव नहीं है, क्योंकि यह एक विरोधी धर्म की ज़मीन पर प्रकट हुआ है। फिर भी चूँकि इसमें सम्मिलित होने वाले लोग, उस सेना के श्रेष्ठ सैनिक हैं जिस पर इसने धावा बोला है। अतः अन्त में इसी की विजय होने की सम्भावना पर विश्वास करने का कारण बढ़ गया है।"

अक्का के बंदीगृह में बहाउल्लाह का कारावास, उनके द्वारा सहन की गई यातनाएँ, फारस में उनके अनुयायियों के समुदाय पर लम्बे समय तक किए गए अत्याचार भी दिव्य प्रकटीकरण के शक्तिशाली प्रवाह को न रोक सके, न ही उसमें लेशमात्र भी बाधा डाल सके। बिना किसी बाधा के बहाउल्लाह की लेखनी से यह प्रकटीकरण प्रवाहित हो रहा था और इस पर उनके धर्म का भावी अनुस्थापन, उसकी अखण्डता, उसका विस्तार और सुगठन सीधे तौर पर निर्भर करता था। उस महानतम बन्दीगृह में बहाउल्लाह की कैद के वर्षों के दौरान, उनके लेखों की विषय–वस्तु की व्यापकता और परिमाण की तुलना में एड्रियानोपल या बग़दाद में उनकी लेखनी से प्रवाहित होने वाले लेखों की वर्षा सचमुच कहीं अधिक थी। अक्का में उनके अपने जीवन की परिस्थितियों में होने वाले मूल परिवर्तन से भी अधिक उल्लेखनीय और उनकी जन्मभूमि में उनके धर्म के शत्रुओं द्वारा इतनी निर्दयता से चलाए गए दमनकारी अभियान के आध्यात्मिक परिणामों से भी कहीं अधिक व्यापक होने वाले, उनके उन लेखों के विस्तार की ऐसी पहुँच को उनके धर्म के क्रमिक विकास के फलदायी चरणों में सबसे अधिक जीवनदायी माना जाना चाहिए, जो उस कारागार में उनके निर्वासन के दौरान प्रकट किए गए थे।

बहाउल्लाह के सेवाकाल के आरम्भ में प्रभुधर्म पर आने वाली आँधियाँ और तेहरान से उनके निर्वासन के शीघ्र बाद उनके पैग़म्बरी कार्य की शुरूआत को चिन्हित करने वाली शीत की उस वीरानगी के पश्चात, बग़दाद में उनके प्रवास के अन्तिम समय में, उनके ध्येय के बासन्ती वर्ष शुरू हुए, ऐसे वर्ष जिनमें

उस दिव्य बीज में अन्तरर्निहित शक्तियों की प्रकट गतिविधि को प्रस्फुटित होते देखा गया। यह बीज अपने अग्रदूत के दुःखद बिछोह के बाद से निष्क्रिय पड़ा था। बहाउल्लाह के एड्रियानोपल आने से और उनके ध्येय की उद्घोषणा से उनके प्रकटीकरण का सूर्य अपने शिरोबिन्दु पर पहुँच गया और जैसा उनके लेखों की भाषा शैली और रुख में देखा गया था, यह सूर्य अब अपने ग्रीष्मकालीन प्रताप में चमका था। अक्का में उनकी कैद की अवधि के दौरान एक धीरे–धीरे परिपक्व होने वाली प्रक्रिया अब जड़ पकड़ चुकी थी और यह वह अवधि थी जिसके अन्तर्गत उस ध्येय के सबसे चुनिन्दा फल अन्त में एकत्र किए गए थे।

जब हम बहाउल्लाह के लेखों द्वारा आवृत किए गए विशाल क्षेत्र पर दृष्टि डालते हैं तब हमें ज्ञात होता है कि ये लेख तीन अलग–अलग वर्गों में विभाजित किए जा सकते हैं। पहले वर्ग में वे लेख आते हैं जो एड्रियानोपल में उनके ध्येय की उद्घोषणा के परिणाम थे। दूसरे वर्ग के लेखों में उनके विधान के वे नियम और आदेश शामिल हैं, जो अधिकांशतया उनके पावनतम ग्रंथ *किताब–ए–अक़दस* में अंकित किए गए हैं। तीसरे वर्ग में वे पातियाँ शामिल की जानी चाहिए जो आंशिक रूप से इस विधान के आधारभूत सिद्धांतों और शिक्षाओं को घोषित करती हैं और इनकी पुष्टि करती हैं।

जैसा पहले ही देखा जा चुका है, उनके ध्येय की उद्घोषणा विशेष रूप से धरती के उन सम्राटों को सम्बोधित की गई थी, जिन पर, अपनी ताकत और सत्ता के कारण, प्रजा की ओर एक अनोखी और अपरिहार्य ज़िम्मेदारी थी। इन्हीं सम्राटों और दुनिया के उन धार्मिक नेताओं के प्रति जिनका, अपने अनुयायियों के जनसमूह पर कुछ कम व्यापक प्रभाव नहीं था, अक्का के इस कैदी ने अपनी अपीलें, चेतावनियाँ और परामर्श सम्बोधित किए थे। बहाउल्लाह स्वयं इस बात की पुष्टि करते हैं कि *"इस कैद में पहुँचने पर, हमने सम्राटों को उनके शक्तिशाली, सर्वप्रशंसित स्वामी के सन्देश प्रेषित करने का निर्णय लिया। यद्यपि हमने कई पातियों में उन्हें वह प्रेषित किया है जिसके लिए हमें आदेशित किया गया था, फिर भी, ईश्वर की कृपा के चिन्हस्वरूप, हम एक बार फिर यह कार्य कर रहे हैं।"*

धरती के पूरब और पश्चिम के ईसाई और मुसलमान सम्राटों को, जिन्हें, एड्रियानोपल में प्रकटित "सूरा–ए–मुलुक" में पहले ही सामूहिक रूप से सावधान किया जा चुका था और चेतावनी दी जा चुकी थी और जिन्हें बाब द्वारा, उनके ध्येय की घोषणा की रात को ही क़य्यूमुल अस्मा के पहले अध्याय में इतने प्रचंड तरीके से सम्बोधित किया जा चुका था, उन्हीं को, अक्का की अपनी कैद के सबसे अंधकारमय दिनों के दौरान, बहाउल्लाह ने अपने पावनतम ग्रंथ के श्रेष्ठतम उद्धरणों में सम्बोधित किया। इन उद्धरणों में उन्होंने उनका आह्वान किया कि वे इस *"सर्वमहान विधान"* को दृढ़ता से धारण करें; उन्होंने स्वयं को *"सम्राटों का सम्राट"* और *"सभी राष्ट्रों की कामना"* घोषित किया; और उन्हें अपने *"दास"* और *"अपनी प्रभुसत्ता के चिन्ह"* घोषित किया; उनके राज्यों पर अधिकार करने के किसी भी प्रकार के इरादे से इन्कार किया; उन्हें आदेश दिया कि वे अपने–अपने महलों को त्यागकर उनके साम्राज्य में प्रवेश करें; उस सम्राट को *"मानवजाति की दृष्टि"* बताया जो उनके धर्म की सहायता करने के लिए उठ खड़ा होगा; और अन्त में, उन लोगों के हाथों बहाउल्लाह पर जो बीती, उसके लिए उन्हें दोषी ठहराया।

इसके अतिरिक्त, महारानी विक्टोरिया को सम्बोधित की गई अपनी पाती में वे इन सम्राटों को आमंत्रित करते हैं कि अब वे *"इस लघु शान्ति"* को दृढ़ता से थाम लें, क्योंकि उन्होंने *"उस सर्वमहान शान्ति"* से इन्कार कर दिया है; उन्हें परामर्श देते हैं कि वे आपस में सामंजस्य बनाए रखें, एक हो जाएँ और अपने शस्त्र कम कर दें; उन्हें आदेश देते हैं कि वे अपनी प्रजा पर अतिशय बोझ न डालें, जो उन पर *"आश्रित"* है और उनकी *"अमानत"* है; उनके लिए यह सिद्धान्त प्रकट करते हैं कि यदि उनमें से कोई एक, किसी दूसरे के विरूद्ध शस्त्र उठा ले, तो सभी को उसके विरूद्ध उठ खड़ा होना चाहिए और उन्हें चेतावनी देते हैं कि वे उनके साथ वैसा व्यवहार न करें जैसा *"इस्लाम के सम्राट"* और उसके मंत्रियों ने किया था।

पश्चिम में अपने समय के सबसे प्रख्यात और प्रभावशाली सम्राट, फ्राँस के नेपोलियन तृतीय को उन्होंने *"सम्राटों का प्रधान"* कहा था और उनके शब्दों में, वह जिसने एड्रियानोपल में उसके लिए प्रकट की गई पाती को "नज़रन्दाज

कर दिया", इस पर उस महान ने, अक्का में अपनी कैद के दौरान उसे एक दूसरी पाती सम्बोधित की और इसे अक्का में पदस्थ एक फ्राँसिसी एजेन्ट के द्वारा पहुँचा दिया गया। इस पाती में वे "उसके" आगमन की घोषणा करते हैं "जो अबाधित है," जिसका उद्देश्य है *"दुनिया को पुनर्जीवित करना"* और इसके लोगों को एक करना; स्पष्टतया इस पर बल देते हैं कि ईसा मसीह उनके ध्येय के अग्रदूत थे; उन *"ज्ञान के गगन के सितारों"* के गिरने की घोषणा करते हैं जो उनसे विमुख हो गए हैं; उस सम्राट की निष्ठाहीनता को उजागर करते हैं; और स्पष्ट रूप से यह भविष्यवाणी करते हैं कि यदि वह ईश्वर के धर्म की सहायता करने के लिए उठ खड़ा नहीं होता और उसका अनुसरण नहीं करता जो उसकी आत्मा है, तो *"उसका राज्य अस्त–व्यस्त हो जायेगा"* और उसका *"साम्राज्य"* उसके हाथ से *"निकल जायेगा"* और *"उस भूमि के सभी लोग उत्तेजना की गिरफ्त में आ जायेंगे।"*

किताब–ए–अक़दस में, *"अमेरिका के शासकों तथा इसके गणतंत्रों के राष्ट्रपतियों"* को सम्बोधित किए गए यादगार उद्धरणों में, वे उनका आह्वान करते हैं कि वे *"साम्राज्य के मन्दिर को न्याय और ईश्वर के भय के आभूषण से तथा इसके मस्तक को उनके स्वामी के स्मरण"* से विभूषित करें; यह घोषित करते हैं कि वह *"प्रतिज्ञापित"* अब प्रकट हो चुका है; और उन्हें आदेश देते हैं कि वे *"न्याय के हाथों से टूटे हुओं को जोड़ें"* और *"अपने उस विधानकर्ता, सर्वबुद्धिमान स्वामी के आदेशों की छड़ी"* से *"अत्याचारी"* को *"कुचल दें।"*

जब वे बैरक में एक कैदी के रूप में जी रहे थे, तब उन्होंने रूस के उस सर्वशक्तिशाली जार, निकोलेविच ऐलेक्ज़ेन्डर द्वितीय को एक पत्र लिखा था, जिसमें वे उस प्रतिज्ञापित पिता के आगमन की घोषणा करते हैं, जिसकी, *"ईसाईयाह की वाणी ने प्रशंसा की थी"*, और *"जिसके नाम से तोराह और इवेन्जल, दोनों ही सुसज्जित हुए थे"*, उन्हें आदेश देते हैं कि वे *"उठ खड़े हों और राष्ट्रों को ईश्वर की ओर अभिमुख होने का आह्वान करें"*; उसे चेतावनी देते हैं कि वह सावधान रहे, कहीं उसकी सत्ता उसे उससे वंचित न कर दे *"जो सर्वोच्च शासक है"*, वे उस सहायता को स्वीकार करते हैं जो तेहरान में उसके राजदूत ने उन्हें दी की थी। उसे चेतावनी देते हैं कि वह उस स्थान को न गवाँ दे जो ईश्वर द्वारा उसके लिए निर्धारित किया गया है।

इसी अवधि के दौरान, उन्होंने महारानी विक्टोरिया को एक पत्र सम्बोधित किया जिसमें उन्होंने उनका आह्वान किया है कि वह अपने स्वामी और मानवजाति के स्वामी के आगाज पर ध्यान दें, वे उन्हें आदेश देते हैं कि वह *"धरती की समस्त वस्तुओं को त्याग दें"* और अपना हृदय अपने उस युग–प्राचीन स्वामी की ओर लगाएँ। इस बात पर बल देते हैं कि *"गॉस्पेल में जो कुछ भी लिखा है वह पूरा हुआ है"*, यह आश्वासन देते हैं कि *"दासों के व्यापार को निषिद्ध करने के लिए"*, ईश्वर उन्हें पुरस्कृत करेंगे यदि वह उसका अनुसरण करें जो उनके द्वारा उन्हें भेजा गया है; विचार–विनिमय की बागडोर को जनता के प्रतिनिधियों के हाथों में सौंपने के लिए वे उनकी सराहना करते हैं और उन्हें परामर्श देते हैं कि वे *"स्वयं को उन सभी का प्रतिनिधि समझें जो धरती पर निवास करते हैं"* और लोगों के बीच *"शुद्ध न्याय"* के साथ निर्णय करें।

पर्शिया के राजा और संयुक्त जर्मनी के नवघोषित सम्राट को सम्बोधित किए गए एक प्रसिद्ध उद्धरण में, बहाउल्लाह अपनी *किताब–ए–अक़दस* में, इस सम्राट को आदेश देते हैं कि वह उनकी आवाज़ की ओर ध्यान दे जो स्वयं ईश्वर की आवाज़ है; उन्हें चेतावनी देते हैं कि वह ध्यान रखें कि कहीं उसका घमंड उसे *"इस दिव्य प्रकटीकरण के दिवास्रोत"* को पहचानने से वंचित न कर दे और *"उसे उस (नेपोलियन तृतीय) को याद करने की सलाह देते हैं जिसका बल उसके बल से कहीं बढ़कर था"* और जो *"खाली हाथ ही मिट्टी में मिल गया।"* इसके अतिरिक्त, उसी पुस्तक में, "राईन के किनारों" को सम्बोधित करते हुए, वे भविष्यवाणी करते हैं कि उसके विरूद्ध *"सज़ा की तलवारें उठेंगी"* और *"बर्लिन विलाप करेगा"*, भले ही वर्तमान में वह *"प्रत्यक्षतः यश में दिखायी दे रहा हो।"*

उसी पुस्तक के एक अन्य उल्लेखनीय उद्धरण में, ऑस्ट्रियाई सम्राट और पावन रोमन साम्राज्य के उत्तराधिकारी, फ्राँसिस जोसेफ को सम्बोधित एक उल्लेखनीय उद्धरण में, बहाउल्लाह, जेरूसलम में उसके द्वारा किए गए एक तीर्थ के दौरान उनके बारे में पूछताछ करने में लापरवाह होने के लिए उसकी निंदा करते हैं; इस बात के लिए ईश्वर को साक्षी मानते हैं कि उन्होंने उसे *"शाखा से लगाव रखते हुए किन्तु जड़ से बेखबर पाया"*; उसकी स्वेच्छाचारिता

देखकर दुःखी होते हैं और उसे आदेश देते हैं कि वह अपनी आँखें खोले और *"उस प्रकाश की ओर देखे जो इस दीप्तिमान क्षितिज पर चमक रहा है।"*

अक्का पहुँचने के शीघ्र बाद, टर्की के सुल्तान के महामंत्री, अली पाशा को बहाउल्लाह ने एक दूसरी पाती लिखी, जिसमें उन्होंने उसे उसकी उस क्रूरता के लिए फटकारा *"जिसके कारण नर्क में आग की लपटें भड़क उठीं और जो उस "पावन चेतना" के विलाप का कारण बनी थी"।* इस पाती में वे उसके अत्याचारपूर्ण कृत्यों की जानकारी देते हैं; उसे उन लोगों में से एक कहकर निन्दित करते हैं, जो ईशदूतों को सदासर्वदा से दुष्टता के दोषी कह कर उनकी निन्दा करते आए हैं; वह उसके पतन की भविष्यवाणी करते हैं; अपने स्वयं के और अपने सह–निर्वासितों के कष्टों और दुःखों का वर्णन करते हैं; उनके धैर्य और अनासक्ति की सराहना करते हैं; यह भविष्यवाणी करते हैं कि ईश्वर के *"कोप से भरा क्रोध"* उसको और उसकी सरकार को अपने नियंत्रण में ले लेगा और उनके बीच विद्रोह भड़क उठेगा जिससे उनके *"राज्य अस्त व्यस्त हो जायेंगे"* और यह पुष्टि करते हैं कि यदि *"वह जाग उठता है और अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति को त्याग देता है तथा इस सर्वमहान बन्दीगृह के एक टूटे–फूटे कमरे में रहना अधिक पसंद करता है तो वह प्रशंसा का पात्र कहलाएगा।"* लौह–ए–फुआद में, सुल्तान के विदेश मंत्री, फुआद पाशा की अकाल मृत्यु का उल्लेख करने के दौरान, वह अपनी उपरोक्त भविष्यवाणी की पुष्टि करते हैं : *"शीघ्र ही हम उसे (अली पाशा को) हटा देंगे और इस राज्य पर शासन करने वाले उनके मुखिया (सुल्तान अब्दुल–अज़ीज़) को दण्ड देंगे। मैं, सत्य ही, सर्वशक्तिशाली, सर्वबाध्यकारी हूँ।"*

वे सन्देश जो बहाउल्लाह द्वारा विश्व के धर्मगुरूओं को सम्बोधित किए गए हैं, इनमें से कुछ तो विशेष पातियों में सम्मिलित हैं और अन्य उनके लेखों में फैले पड़े हैं। ये ऐसे सन्देश हैं जिनमें वे स्पष्ट और निःसंकोच रूप से, अपने प्रकटीकरण के दावों को प्रकट करते हैं, अपने आह्वान पर ध्यान देने के लिए धर्मगुरूओं को प्रेरित करते हैं और कुछ विशेष प्रकरणों में उनकी भ्रष्टता, उनके घमण्ड की चरम सीमा और उनके अत्याचार की निन्दा करते हैं।

किताब–ए–अक़दस के महत्वपूर्ण उद्धरणों और अन्य पातियों में, वह

इन धर्मगुरूओं के पूरे समूह को आदेश देते हैं कि वे *"ईश्वर से डरें"*, अपनी लेखनी पर *"लगाम लगायें*, व्यर्थ विचारों और कल्पनाओं को दूर हटा दें और इसके बाद *"निश्चितता के क्षितिज की ओर मुड़ें"*; उन्हें चेतावनी देते हैं कि वे *"ईश्वर की पुस्तक (किताब–ए–अक़दस) को ऐसे मानदण्डों और ज्ञान से न तोलें"* जो उनके बीच *"प्रचलित"* हैं; बहाउल्लाह इस पुस्तक को *"मनुष्यों के बीच स्थापित की गई एक अचूक तुला"* कहते हैं; उनके अन्धेपन और स्वेच्छाचारिता पर रुदन करते हैं; वह दूरदर्शिता, अन्तर्दृष्टि, वाणी और बुद्धि में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करते हैं; ईश्वर द्वारा प्रदान किए गए अपने सहज ज्ञान की घोषणा करते हैं; उन्हें सचेत करते हैं कि, जब वह स्वयं उन *"परदों को चीर कर हटा चुके हैं"* तो अब *"एक और परदे द्वारा वे लोगों को दूर न करें"*; उन पर आरोप लगाते हैं कि प्रभुधर्म के प्रारम्भिक दिनों में लोगों द्वारा इस धर्म को *"अस्वीकार करने का कारण वे लोग ही हैं"*। उनसे अनुरोध करते हैं कि वे *"निष्पक्षता और न्याय के साथ उसका अध्ययन करें"* जो ईश्वर द्वारा *"भेजा गया है और उनके पास जो कुछ है, उसके कारण सत्य को रद्द न करें"*।

ईसाईयत के सबसे बड़े चर्च के प्रमुख और आध्यात्मिक एवं भौतिक, दोनों ही प्रकार की सत्ता के निर्विवाद मालिक – नौवें पोप (रोम के बड़े पादरी) पायस को, अक्का द्वीप के कारागार की सैनिक बैरक के उस कैदी (बहाउल्लाह) ने सर्वाधिक सशक्त पाती सम्बोधित की जिसमें वे यह घोषित करते हैं कि *"वह, जो स्वामियों का स्वामी है, बादलों के साये में आ चुका है"*, और *"वह शब्द, जो उस पुत्र (ईसा मसीह) ने गुप्त रखा था, अब प्रकट किया जा चुका है"*। साथ ही, वे उसे चेतावनी देते हैं कि वह उसी तरह उनसे विवाद न करे जिस तरह अतीत के फारसियों ने ईसा मसीह के साथ विवाद किया था; उसे आदेश देते हैं कि वह अपने महलों को उन लोगों के हवाले कर दे जो इनकी कामना रखते हैं और अपने पास उपलब्ध *"सजावट का समस्त सामान"* बेच दे और इन्हें *"ईश्वर के मार्ग में खर्च कर दे, अपने राज्य को राजाओं के लिए छोड़ दें"*, और *"धरती के लोगों के बीच.....उठ खड़ा हो और लोगों को ईश्वर के धर्म की ओर बुलाए"*। उसे ईश्वर के नामों के स्वर्ग का एक सूर्य मानकर, उसे चेतावनी देते हैं कि वह स्वयं अपनी रक्षा करे, ताकि कहीं *"अंधकार"* उस पर *"अपने परदे न बिछा दे"*; उसका आह्वान करते हैं कि वह *"सम्राटों को परामर्श दे"* कि

वे *"मनुष्यों के बीच न्याय से काम ले"* और उसे सलाह देते हैं कि वह अपने स्वामी के कदमों पर चले और उसके उदाहरण का अनुसरण करे।

ईसाई चर्च के प्रधानों को उन्होंने एक विशेष आदेश जारी किया जिसमें वे उस प्रतिज्ञापित के आगमन की घोषणा करते हैं; उन्हें परामर्श देते हैं कि वे *"ईश्वर से डरें"* और *"व्यर्थ कल्पनाओं एवं अन्धविश्वासों"* का अनुसरण न करें। उन्हें निर्देशित करते हैं कि वे उन चीज़ों को त्याग दें जो उनके पास हैं और *"ईश्वर की श्रेष्ठ शक्ति से उनकी पाती को दृढ़तापूर्वक थाम लें"*। वे, इसी प्रकार, उस चर्च के पादरियों के समक्ष यह घोषित करते हैं कि *"वह जो सभी मनुष्यों का स्वामी है, अब प्रकट हो चुका है"* और यह कि *"उन लोगों की गिनती मृतकों में की गई है"*। महान है जो *"ईश्वर की प्रेरणा से वह अनुप्राणित होता है और जो इस सुबोध नाम पर मृतकों के बीच नवजीवन प्राप्त कर चुका हो"* चर्च के पादरियों को सम्बोधित किए गए उद्धरणों में, बहाउल्लाह घोषित करते हैं कि *"धरती और स्वर्ग के बीच वह अनन्त पिता पुकार लगा रहा है"*, वे उन्हें अपने ज्ञान के स्वर्ग से गिरे हुए सितारे घोषित करते हैं और यह पुष्टि करते हैं कि *"ईश्वर के मार्ग में"* उनका शरीर *"सूली के लिए लालायित है"* और उनका सिर *"बरछी का इच्छुक है।"* वे ईसाई धर्माधिकारियों को आदेश देते हैं कि वे घंटियों को बजाना छोड़ दें और अपने चर्चों से बाहर निकल आएँ; उन्हें सलाह देते हैं कि वे *"राष्ट्रों के बीच इस सर्वमहान नाम की दृढ़ता से घोषणा करें"*, उन्हें आश्वासन देते हैं कि जो कोई भी उनके नाम पर लोगों का आह्वान करेगा, *"वह उसे प्रदर्शित करेगा जो उन सभी की शक्ति से परे हैं"*। उन्हें चेतावनी देते हैं कि *"न्याय का दिवस प्रकट हो चुका है"* और उन्हें सलाह देते हैं कि वे अपने *"क्षमाशील, उदार स्वामी की ओर अपने दिलों से उन्मुख हों"*। *"सन्यासियों के समूहों को"* सम्बोधित असंख्य उद्धरणों में वे उन्हें आदेश देते हैं कि वे अपने आप को चर्चों और मठों में अलग न रखें, बल्कि स्वयं को उसमें व्यस्त रखें जो उनकी आत्माओं और मनुष्यों की आत्माओं को लाभ पहुँचाए; उन्हें विवाह करने की आज्ञा देते हैं और यह पुष्टि करते हैं कि यदि वे उसका अनुसरण करने का निर्णय करेंगे, तो वह उन्हें अपने साम्राज्य के उत्तराधिकारी बना देगें और यदि वे उसके विरूद्ध अपराध करेंगे, तो वह, धैर्यपूर्वक इसे सहन कर लेंगे।

और अन्त में, ईसा मसीह के अनुयायियों के सम्पूर्ण समूह को सम्बोधित किए गए कई उद्धरणों में, वे स्वयं को वह *"पिता"* बताते हैं जिसके बारे में ईसाईयाह ने बताया था, वह *"दिलासा देने वाला"*, जिसकी संविदा उसने स्वयं स्थापित की थी जो सर्वमहान सत्य की चेतना (ईसा मसीह) है और *"सत्य की वह चेतना"* जो *"समस्त सच्चाई"* की ओर उनका मार्गदर्शन करेगी; वे अपने दिवस को ईश्वर का दिवस घोषित करते हैं, *"उस सर्वमहान महासागर"* के साथ जॉर्डन नदी के संयोजन की घोषणा करते हैं; उनकी लापरवाही की पुष्टि के साथ–साथ उनके समक्ष *"उस साम्राज्य के द्वार"* खोलने के अपने दावे की पुष्टि करते हैं; वे यह दावा करते हैं कि उनके शक्तिशाली, कृपालु स्वामी की *"इच्छा के हाथों से"* उस प्रतिज्ञापित *"मन्दिर"* का निर्माण हो चुका है; उन्हें आदेश देते हैं कि वे *"उन परदों को चीर कर हटा दें"* और उसके नाम पर उसके साम्राज्य में प्रवेश करें; ईसा मसीह द्वारा पीटर से कही गई बात याद करते हैं; और उन्हें आश्वासन देते हैं कि यदि वे उनका अनुसरण करेंगे, तो वे उन्हें *"मानवजाति को पुनर्जीवित करने वाले"* बना देंगे।

अपनी पुस्तकों और पातियों में बहाउल्लाह ने विशेष रूप से मुस्लिम धर्मगुरूओं के पूरे समूह को ऐसे असंख्य उद्धरण समर्पित किए हैं, जिनमें वे एक प्रचंड भाषा में उनकी क्रूरता की भर्त्सना करते हैं, उनके घमंड और अहंकार की निन्दा करते हैं; उनका आह्वान करते हैं कि वे वह सब कुछ छोड़ दें जो उनके पास है। वे अपनी जुबान पर लग़ाम दें और उन शब्दों पर ध्यान दें जो उन्होंने कहे हैं। वे यह दावा करते हैं कि उनके कर्मों के कारण *"लोगों के उच्च स्थान का पतन हुआ है, इस्लाम का ध्वज नीचे झुक गया है और इसका शक्तिशाली सिंहासन गिर गया है।" "फारस के धर्मगुरूओं के समूह को"* उन्होंने और भी विशेष रूप से अपने वे निंदात्मक शब्द सम्बोधित किए जिनमें वे उनके कर्मों को कलंकित करते हैं और यह भविष्यवाणी करते हैं कि उनका *"यश सबसे घृणित अपमान में बदल जायेगा"* और यह कि, जैसा कि *"उस विधानकर्ता, सर्वबुद्धिमान ईश्वर ने आदेशित किया है, वे वह सज़ा भुगतेंगे जो उन्हें दी जायेगी।"*

इसके अतिरिक्त, यहूदियों के लिये वे यह घोषित करते हैं, *"वह सर्वमहान विधान आ चुका है, वह प्राचीन सौंदर्य डेविड के सिंहासन पर*

विराजमान हो चुका है।" वह उच्च स्वर में पुकारता है और उसका नाम लेता है, कि *"सियोन से वह प्रकट हुआ है जो गुप्त था"* और यह कि *"जेरूसलम से उस एक अतुलनीय, सर्वज्ञ ईश्वर की वाणी सुनाई देती है।"*

इसके अतिरिक्त, पारसी धर्म के *"उच्च धर्माधिकारियों* के लिए उन्होंने यह घोषित किया कि वह *"अतुलनीय मित्र"* प्रकट हो चुका है, कि वह *"वही कहता है जिसमें मोक्ष है"*, कि *"उस सर्वशक्तिमान का हाथ बादलों के पीछे से बाहर आया है"*, कि "उसकी प्रभुता और महानता प्रकट हो चुकी है" और यह घोषित किया कि *"इस दिवस में मनुष्य के कृत्य तब ही स्वीकार किए जायेंगे जब वह मानवजाति को और उन समस्त वस्तुओं को त्याग देगा जो मनुष्यों की हैं और अपना मुखड़ा उस सर्वशक्तिशाली की ओर मोड़ लेगा।"*

रानी विक्टोरिया को सम्बोधित की गई अपनी सारगर्भित पाती के महत्वपूर्ण अंशों में से कुछ अंश ब्रिटेन की विधानसभा, जो विश्व के जन प्रतिनिधियों के संसदों की जननी है, के सदस्यों को और अन्य देशों के जन प्रतिनिधियों को सम्बोधित किए गए हैं। इनमें वे दावा करते हैं कि उनका उद्देश्य है दुनिया को नवजीवन देना और इसके लोगों को एक करना; इनमें वे अपने शत्रुओं द्वारा स्वयं के साथ किए गए व्यवहार का उल्लेख करते हैं; विधायकों को सलाह देते हैं कि वे *"मिलकर परामर्श करें"* और स्वयं को केवल उसमें व्यस्त रखें *"जो मानवजाति को लाभ पहुँचाता हो"* और यह दावा करते हैं कि *"सम्पूर्ण जगत के आरोग्य"* का *"श्रेष्ठतम उपचार"* है *"इसके लोगों का यह मनोरथ एक विश्व में और एक आम धर्म में समन्वय"* और यह, *"एक कुशल और सर्वशक्तिशाली एवं दिव्य चिकित्सक के बगैर कदापि प्राप्त नहीं किया जा सकता।"* इसके अतिरिक्त, अपने पावनतम ग्रंथ में उन्होंने धरती के सभी लोगों के उपयोग के लिए *"एक ही भाषा का चयन करने का और एक आम लिपि अपनाने का आदेश दिया है"*, उस पुस्तक में, वे स्वयं इस बात का दावा करते हैं कि यह एक ऐसा आदेश है जिसका पालन *"मानवजाति की परिपक्वता के युग के आगमन का एक चिन्ह होगा।"*

उनके द्वारा *"बयान के लोगों"* को, दुनिया के बुद्धिमान जनों, कवियों, ज्ञानी जनों, इसके रहस्यवादियों को और यहाँ तक कि इसके व्यापारियों को

भी पृथक रूप से सम्बोधित किए गए शब्द भी कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं है, जिनमें वे उन्हें सलाह देते हैं कि वे उनकी वाणी की ओर ध्यान दें, उनके दिवस को पहचानें और उनके आदेशों का पालन करें।

कुल मिलाकर, ये थीं उस ऐतिहासिक उद्घोषणा के शब्दों की मुख्य विशेषताएँ, जिसके प्रथम स्वर, एड्रियानोपल में बहाउल्लाह के सेवाकाल के दूसरे भाग के दौरान सुनाई दिए और जो, अक्का दुर्ग के कारागार में उनकी कैद के प्रारम्भिक वर्षों में समाप्त हुए। इनमें अलग–अलग और सामूहिक रूप से, राजाओं और सम्राटों को; अमेरिकी महाद्वीप के गणतंत्रों के मुख्य न्यायाधीशों को; मंत्रियों और राजदूतों को; स्वयं प्रधान पोप को; इस्लाम के पैग़म्बर के प्रतिनिधि को; इमाम के साम्राज्य के शाही अमानतदार को; ईसाईयत के सम्राटों, इसके कुलपतियों, प्रधान धर्माचार्यों, अन्य धर्माधिकारियों और सन्यासियों को; सुन्नी और शिया धर्मगुरूओं के पूरे वर्ग को; पारसी धर्म के उच्च पुजारियों को; दार्शनिकों, पुरोहिती अग्रणियों, सल्तनत और खलीफा सरकार के गौरवशाली सिंहासन अर्थात कॉन्सटैन्टिनोपल के बुद्धिमान व्यक्तियों और निवासियों को; पारसी, यहूदी, ईसाई और मुसलमान धर्मों के सभी मानने वालों को; तथा इसके लोगों के निर्वाचित प्रतिनिधियों को; अपने स्वयं के देशवासियों को, बहाउल्लाह की पुस्तकों, पत्रों और पातियों में कभी न कभी, उन परामर्शों, चेतावनियों, अपीलों, घोषणाओं और भविष्यवाणियों की परिधि में लाया गया है जिनमें विश्व के नेताओं को बहाउल्लाह के निर्णायक सम्मन दिए गए हैं, ऐसे सम्मन जो पूर्व के किसी भी धर्म के इतिहास में कहीं नहीं मिलते और जिसकी मात्र एक हल्की सी समानता ही, इस्लाम के पैग़म्बर द्वारा उनके समय के चन्द शासकों को सम्बोधित किए गए सन्देशों में पाई जाती है।

बहाउल्लाह स्वयं यह दावा करते हैं कि, *"दुनिया की शुरूआत से लेकर अब तक ईश्वर के संदेश को कभी भी इतना खुले रूप में घोषित नहीं किया गया"* धरती के शासकों को सम्बोधित की गईं अपनी उन पातियों की ओर विशेष रूप से संकेत करते हुए, जिनकी अब्दुल बहा ने *"चमत्कार"* कहकर प्रशंसा की है वे लिखते हैं, "इनमें से प्रत्येक (पाती) को एक विशेष नाम प्रदान किया गया है – पहली है *'गड़गड़ाहट'*, दूसरी *'प्रहार'*, तीसरी *'अटल'*, चौथी

'प्रकट', पाँचवी *'तबाही'* और अन्य हैं *'वह अद्भुत् तूर्यनाद'*, *'वह निकट घटना'*, *'वह महान भय'*, *'वह तुरही'*, *'वह बिगुल'*, इत्यादि, ताकि धरती के सभी लोग यह निश्चित रूप से जान लें और अपनी बाह्य एवं आन्तरिक आँखों से देख लें कि *"वह जो नामों का सम्राट है, सभी मनुष्यों पर विजयी है और सभी परिस्थितियों में विजयी रहेगा।"* इसके अतिरिक्त उन्होंने आदेश दिए कि इन पातियों में सबसे महत्वपूर्ण पाती सहित उस प्रसिद्ध सुरीय–ए–हैकल (मन्दिर का सुरा) को एक पंचभुज के आकार में लिखा जाए, जिसमें मन्दिर को मनुष्य के शरीर का प्रतीक बताया गया है और जिसे अपनी पातियों में से एक में बाईबल के मानने वालों को सम्बोधित करते समय, उन्होंने इसे वह मन्दिर कहा है जिसका उल्लेख पैग़म्बर ज़कारिया द्वारा किया गया था और जिसे *"उस सर्वदयालु का प्रकाशमान उदय–स्थल कहा गया है"* और *"जिसका निर्माण उसके शक्ति के हाथों ने किया है जो कारणों का कारण है।"*

वह उद्घोषणा जो पहले ही अतुलनीय और अद्भुत थी, अब अपने संस्थापक की सृजनात्मक शक्ति और शक्तिशाली प्रकटीकरण के कारण, अपने धर्मकाल की अतुलनीय कृति, *किताब–ए–अक़दस* की घोषणा का एक पूर्व लक्षण सिद्ध हुआ, जिसके बारे में *किताब–ए–ईक़ान* में संकेत दिया गया था; जो उस विधान का मुख्य भण्डार था। जिसकी प्रतीक्षा पैग़म्बर ईसाईयाह ने की थी और भविष्य के लेख लिखने वाले ने जिसका वर्णन *"नए स्वर्ग"*, *"नई धरती"*, *"ईश्वर के मन्दिर"*, *"पावन नगर"*, *"दुल्हन" और नए जेरूसलम"* के रूप में किया, जो ईश्वर की ओर से आया। इस *"पावनतम ग्रंथ"*, जिसके विधान कम से कम एक हज़ार वर्ष तक अक्षय बने रहेंगे और जिसकी व्यवस्था पूरी धरती पर छा जायेगी, को बहाउल्लाह के मस्तिष्क की सबसे दीप्तिमान रचना, उनके विधान का मातृग्रंथ और उनकी नई विश्व व्यवस्था के घोषणापत्र की श्रेणी में रखा जा सकता है।

बहाउल्लाह को उदी खम्मार के निवास में स्थानान्तरित करने के तुरन्त बाद, जब वे अपने शत्रुओं और अपने धर्म के अनुयायी कहलाए जाने वाले कुछ लोगों के कृत्यों के कारण उन विपत्तियों से घिरे हुए थे जो उन्हें घोर कष्ट पहुँचा चुकी थीं, यह पुस्तक, जो उनके प्रकटकीरण के अमूल्य रत्नों को अपने

में समाहित करने वाला एक कोष है, प्रकट की गई थी। जिन सिद्धान्तों को यह समाहित करती है, जिन प्रशासनिक संस्थाओं का यह विधान करती है और जिस कार्य से यह अपने संस्थापक द्वारा नियुक्त किए गए उत्तराधिकारी को विभूषित करती है – इन सब के कारण, विश्व के पावन ग्रंथों में यह पुस्तक अनूठी और अतुलनीय है, क्योंकि, ओल्ड टेस्टामेंट (बाईबिल) और उसके पहले प्रकट किए गए उन पावन ग्रंथों की तुलना में, जिनमें वे बातें उपलब्ध नहीं हैं, जो स्वयं अवतारों द्वारा कही गई थीं और उन गॉस्पेलों की तुलना में जिनमें ईसा मसीह की ओर से लिखे गए कुछ कथनों में उनके धर्म के भविष्य के प्रशासन सम्बन्धी स्पष्ट मार्गदर्शन प्रदान नहीं किए गए हैं; यहाँ तक कि कुरान की भी तुलना में, जो यद्यपि, ईश्वर के धर्म प्रचारक (मुहम्मद) द्वारा विधित किए गए नियमों और आदेशों के मामले में तो स्पष्ट है, परन्तु उत्तराधिकार जैसे सर्वमहत्वपूर्ण विषय पर मौन है, *किताब–ए–अक़दस*, जो कि आरम्भ से लेकर अन्त तक, इस विधान के संस्थापक द्वारा स्वयं प्रकट की गई है, आने वाली पीढ़ियों के लिए न केवल उन आधारभूत नियमों और आदेशों को सुरक्षित रखती है जिस पर बहाउल्लाह की भावी विश्व व्यवस्था का तानाबाना आधारित होगा बल्कि उनके उत्तराधिकारी को प्रदान की गई व्याख्या के कार्य के अतिरिक्त, उन आवश्यक संस्थाओं की स्थापना का आदेश देती है जिनके माध्यम से उनके धर्म की अखण्डता और एकता सुरक्षित रखी जा सकती हैं।

भविष्य की विश्व सभ्यता के इस घोषणापत्र में, इसके लेखक (बहाउल्लाह) जो कि एक ही समय में, मानवजाति के न्यायकर्ता, कानून रचने वाले, विश्व को एक करने वाले और मुक्तिदाता हैं, धरती के सम्राटों के समक्ष इस *"सर्वमहान विधान"* की घोषणा करते हैं; उन्हें अपना दास घोषित करते हैं; स्वयं को *"राजाओं का राजा"* घोषित करते हैं; उनके राज्यों पर अधिकार करने के किसी भी इरादे से इन्कार करते हैं; *"मनुष्यों के हृदयों पर कब्ज़ा करके रखने"* का अधिकार स्वयं के लिए सुरक्षित करते हैं; विश्व के धर्मगुरूओं को चेतावनी देते हैं कि वे *"ईश्वर की इस पुस्तक"* को ऐसे मानदण्डों से न तोलें जो उनके बीच प्रचलित हैं और यह दावा करते हैं कि यह पुस्तक अपने आप में वह *"अचूक तुला"* है जिसे मनुष्यों के बीच स्थापित किया गया है। इसमें वे औपचारिक रूप से *"विश्व न्याय मन्दिर"* की संस्था का प्रावधान करते हैं; इसके

कार्य परिभाषित करते हैं; इसके राजस्व निर्धारित करते हैं। और इसके सदस्यों को *"न्यायशील पुरूष"*, *"ईश्वर के प्रतिनिधि"* और *"उस सर्वदयालु के अमानतदार"* की उपाधि देते हैं; अपनी संविदा के भावी केन्द्र की ओर संकेत करते हैं और उन्हें अपने पावन लेखों की व्याख्या करने का अधिकार प्रदान करते हैं; निहितार्थ रूप से धर्मसंरक्षकत्व की संस्था का पूर्वानुमान लगाते हैं; अपनी विश्व व्यवस्था के क्रान्तिकारी प्रभावों की साक्षी देते हैं; ईश्वर के अवतार की *"सर्वमहान अचूकता"* के सिद्धान्त का दावा करते हैं; इस बात पर बल देते हैं कि यह अचूकता अवतारों का अन्तर्निहित और अनन्य अधिकार है और कम से कम एक हज़ार वर्ष व्यतीत हो जाने तक किसी भी अन्य अवतार के प्रकट होने की सम्भावना को रद्द करते हैं।

इसके अतिरिक्त, इस पुस्तक में वे, अनिवार्य प्रार्थना का नियम देते हैं; उपवास का समय और अवधि निर्धारित करते हैं; दिवंगतों के अन्तिम संस्कार के दौरान की गई सामूहिक प्रार्थना को छोड़कर अन्य अवसरों पर सामूहिक प्रार्थना दोहरना निषिद्ध करते हैं; 'किब्लिह' निर्धारित करते हैं; हुकूक़ुल्लाह (ईश्वर के अधिकार) का विधान करते हैं; उत्तराधिकार के नियम प्रदान करते हैं; मश्रिकुल–अश्कार की संस्था का विधान करते हैं; उन्नीस दिवसीय सहभोज, बहाई पर्व और लौंद के दिनों की स्थापना करते हैं; धर्माचार्यों की संस्था का अन्त करते हैं; दासता, तपस्या, भीख माँगना, मठाधिकारिता, देह दण्ड, धर्मासनों का प्रयोग और हाथ चूमने की प्रथा निषिद्ध करते हैं; एक पत्नी विवाह का विधान करते हैं, पशुओं के प्रति क्रूरता, आलस्य और सुस्ती, पीठ पीछे निन्दा करने और मिथ्यापवाद फैलाने, कठोर शब्दों के उपयोग एवं तलाक की निन्दा करते हैं। जुआ, अफीम, शराब और अन्य नशीले पदार्थों को निषिद्ध करते है। हत्या, आगजनी, व्याभिचार और चोरी की सज़ा के लिए विशिष्ट निर्देश देते हैं; विवाह के महत्व पर बल देते हैं और इसकी आवश्यक शर्तें निर्धारित करते हैं। अनुयायियों के लिए किसी न किसी व्यवसाय या व्यापार में संलग्न रहने का कर्त्तव्य निर्धारित करते हैं और इन्हें सेवा की उच्च श्रेणी प्रदान करते हैं; बच्चों की शिक्षा के साधन उपलब्ध करने की आवश्यकता पर बल देते हैं और प्रत्येक व्यक्ति को उसकी वसीयत लिखने और उसकी सरकार की आज्ञाओं का कड़ाई से पालन करने का उत्तरदायित्व सौंपते हैं।

इन प्रावधानों के अतिरिक्त बहाउल्लाह अपने अनुयायियों को सलाह देते हैं कि वे सभी धर्मों के अनुयायियों के साथ सौहार्द, एकता और भेदभावरहित व्यवहार करें; उन्हें चेतावनी देते हैं कि वे कट्टरपन, दंगे, घमंड, विवाद, और कलह से दूर रहें; उन्हें बेदाग़ स्वच्छता, सत्यवादिता, निष्कलंक पवित्रता और विश्वासपात्रता के साथ–साथ अतिथि सेवा, ईमानदारी, भद्रता, सहनशीलता, न्याय और निष्पक्षता के आदेश देते हैं; उन्हें परामर्श देते हैं कि वे *"एक ही हाथ की उँगलियों और एक ही शरीर के अंगों के समान बनें"*, अपने धर्म की सेवा में उठ खड़े होने के लिए उनका आह्वान करते हैं और निश्चित रूप से उनकी सहायता करने का आश्वासन देते हैं; इसके साथ ही वे, मानव क्रियाकलापों की अस्थिरता की चर्चा करते हैं; यह घोषित करते हैं कि सच्ची स्वतंत्रता इसी में है कि मनुष्य अपने पूरे समर्पण के साथ उनके आदेशों का पालन करे; उन्हें चेतावनी देते हैं कि वे उनके आदेशों के अनुपालन में असंयमी न बनें; वे दो अविभाज्य कर्त्तव्यों का विधान करते हैं जिनमें एक है, उसे पहचानना जो *"ईश्वर के प्रकटीकरण का दिवास्रोत है"* और दूसरा है, उसके द्वारा प्रकट किए गए *"सभी आदेशों का पालन करना"*, वे इस बात पर बल देते हैं कि इन दोनों कर्त्तव्यों में से एक भी कर्त्तव्य, दूसरे के बगैर स्वीकार्य नहीं है।

ईश्वर के दिवस में अपना अवसर न गवाँने के और न्याय के पक्ष के सहयोगी बनने के जो महत्वपूर्ण आह्वान अमेरिकी महाद्वीप के गणतंत्रों के राष्ट्रपतियों को जारी किए गए; एक विश्व लिपि और भाषा अपनाने के जो आदेश दुनिया भर की संसदों के सदस्यों को दिए गए; नेपोलियन पर विजय प्राप्त करने वाले विलियम प्रथम को उनके द्वारा दी गई चेतावनियाँ; जो फटकार उन्होंने ऑस्ट्रिया के सम्राट फ्राँसिस जोसफ को लगाई; *"राईन नदी के किनारों"* को उनके सम्बोधन में उनके द्वारा किया गया *"बर्लिन का विलाप"* का उल्लेख; कॉन्सटैन्टिनोपल में स्थापित किए गए *"अत्याचार के सिंहासन"* की उनके द्वारा की गई निन्दा और इसकी *"बाहरी भव्यता"* का अन्त होने तथा इसके निवासियों पर आने वाली घोर विपत्तियों की उनकी भविष्यवाणी; अपने मूल निवासी शहर को उनके द्वारा सम्बोधित किए गए सुख के शब्द, जिसमें वे उसे आश्वासन देते हैं कि ईश्वर ने उसे *"समस्त मानवजाति के आनन्द के स्रोत"* के रूप में चुना है; उनकी यह भविष्यवाणी कि अपने स्वामी के

महिमागान में *"खुरासान के शूरवीरों की आवाज़"* उठेगी; उनका यह दावा कि किरमान में *"शक्तिशाली वीरता से विभूषित"* ऐसे लोग उठ खड़े होंगे जो उनका नामोल्लेख करेंगे और अन्त में, उन्हें इतना गहरा दुःख देने वाले उस दगाबाज़ भाई को उनका यह उदार वचन, कि *"सदाक्षमाशील, सर्वकृपालु"* ईश्वर उसे उसकी अधर्मिता के लिए माफ कर देगा यदि वह पश्चाताप करे, उनके सभी आदेश और परामर्श उस पुस्तक की विषयवस्तु को और भी प्रभावशाली बना देते हैं जिसे इसके लेखक ने *"सच्चे आनन्द का स्रोत"*, एक *"अचूक तुला"*, एक *"सीधा मार्ग"* और *"मानवजाति का जीवनदाता* नामित किया है।

इसके अतिरिक्त इस ग्रंथ की मुख्य विषय–वस्तु से सम्बन्धित नियमों और विधानों को बहाउल्लाह ने विशेष रूप से जो संज्ञाएँ दी हैं वे हैं : *"समस्त सृजित वस्तुओं के लिए जीवन की साँस", "सबसे शक्तिशाली दुर्ग"* उनके *"वृक्ष के फल", "विश्व में व्यवस्था बनाए रखने और इसके लोगों की सुरक्षा के सर्वोच्च माध्यम", "अपने विवेक और प्रेममयी दया के दीप", "उनके वस्त्रों की मीठी सुरभि की महक", अपने सेवकों के लिए अपनी "दया" की "कुंजियाँ"।* वे स्वयं यह साक्षी देते हैं कि *"यह ग्रंथ वह स्वर्ग है जिसे हमने अपने आदेशों और निषेधों के सितारों से सजाया है।"* इसके अतिरिक्त, वे कहते हैं कि *"धन्य है वह मनुष्य, जो इसका पाठ करेगा और उस शक्ति के स्वामी, सर्वशक्तिशाली ईश्वर द्वारा इसमें भेजे गए श्लोकों पर मनन करेगा। कहो ! हे मनुष्यों ! अनासक्ति के हाथों से इसे थामों..... । मेरे जीवन की सौगंध ! इसे इस तरह भेजा गया है कि मनुष्यों के मस्तिष्क अचम्भित रह जाते हैं। वस्तुतः, सभी लोगों के लिए यह मेरा सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण है और उन सब के लिए जो स्वर्ग में हैं और उन सब के लिए जो धरती पर हैं, यह उस सर्वदयालु का साक्ष्य है।"* और एक बार पुनः *"धन्य है वह रूचि जो इसकी मिठास का आनन्द उठाती है और वह देखने वाली दृष्टि जो इसे पहचान लेती है जो इसमें संजो कर रखा गया है और वह समझदार हृदय जो इसके संकेतों और रहस्यों को समझता है। ईश्वर की सौगंध ! इसमें जो प्रकट किया गया है, उसकी महिमा इतनी महान है और इसके अप्रत्यक्ष संकेतों के प्रकटीकरण इतने विशाल हैं कि इनका वर्णन करने के प्रयास में, वाणी कम्पायमान हो जाती है।"* और अन्त में, *"किताब–ए–अक़दस" इस तरह प्रकट की गई है कि यह समस्त दिव्य प्रकटीकरणों को आकर्षित*

करती है और समा लेती है। धन्य है वे जो इसका पाठ करते हैं ! धन्य हैं वे जो इसे समझते हैं ! धन्य है वे जो इस पर चिन्तन करते हैं ! धन्य हैं वे जो इसके अर्थ पर विचार करते है ! इसका विस्तार इतना फैला हुआ है कि सभी मनुष्यों को ज्ञात होने से पहले ही इसने उन्हें अपनी परिधि में ले लिया है। शीघ्र ही इसकी श्रेष्ठ शक्ति, इसका व्यापक प्रभाव और इसके बल की महानता धरती पर प्रकट होगी।"

बहाउल्लाह द्वारा *किताब–ए–अक़दस* में उनके विधान के आधारभूत नियमों की रचना के बाद, जब उनके ध्येय का अन्त निकट आ गया, तब उन्होंने कुछ ऐसे विशेष नियम और सिद्धान्त रचे जो उनके धर्म के अभ्यन्तर में समाए हुए हैं, ऐसी सच्चाईयों की एक बार फिर उन्होंने पुष्टि की जिन्हें वे पहले घोषित कर चुके थे, ऐसे कुछ नियमों का विस्तृत वर्णन और व्याख्या उन्होंने की जो वे पहले ही स्थापित कर चुके थे, अन्य कई भविष्यवाणियाँ और चेतावनियाँ प्रकट की तथा ऐसे सहायक विधानों की स्थापना की जो उनके पावनतम ग्रंथ के आदेशों के पूरक थे। इन नियमों और आदेशों को ऐसी असंख्य पातियों में अंकित किया गया है, जिन्हें वे धरती पर अपने जीवन के अंतिम दिनों तक प्रकट करते रहे। इन पातियों में "इश्राकात" (ज्योतियाँ), "विशारत" (शुभ समाचार), "तराजात" (आभूषण) "तजल्लियात" (प्रभा), "कलीमत–ए–फिरदौसियेह" (स्वर्ग के शब्द), "लौह–ए–अक़दस" (पावनतम पाती), "लौह–ए–दुनिया" (विश्व को सम्बोधित पाती), "लौह–ए–मक़सूद" (मक़सूद की पाती), उल्लेखनीय हैं। ये पातियाँ, जो उनकी अदम्य लेखनी का शक्तिशाली और अन्तिम प्रवाह है, उनके मस्तिष्क की सबसे उत्कृष्ट उपज की श्रेणी में रखी जानी चाहिए, जो उनके चालीस वर्षीय सेवाकाल के अन्त को चिन्हित करती हैं।

इन पातियों में निहित सिद्धान्तों में से सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त है मानवजाति की एकता और अखण्डता, जिसे बहाउल्लाह के प्रकटीकरण की विशिष्टता और उनकी शिक्षाओं की धुरी समझा जाना चाहिए। यह सिद्धान्त इतना महत्वपूर्ण है कि उनकी संविदा की पुस्तक में इसका विशेष उल्लेख किया गया है और वे इसे निःसंकोच अपने धर्म का केन्द्रीय उद्देश्य घोषित करते हैं। वे घोषणा करते हैं, *"वस्तुतः हम विश्व को एक करने और धरती पर निवास करने वाले सभी के दिलों को जोड़ने के लिए आये हैं।"* आगे वे कहते हैं, *एकता*

का प्रकाश इतना शक्तिशाली है कि यह सम्पूर्ण धरा को प्रकाशित कर सकता है।" अपने प्रकटीकरण की इस केन्द्रीय विषय–वस्तु के बारे में उन्होंने लिखा है, *"कभी हम विधानकर्ता की भाषा में बोले; तो कभी सत्य के अन्वेषक और रहस्यवादी की भाषा में, लेकिन हमारा प्रमुख उद्देश्य और सर्वोच्च इच्छा इस स्थान की महिमा और उदात्तता को प्रकट करना है।"* वे कहते हैं *"एकता"* वह लक्ष्य है जो *"प्रत्येक लक्ष्य से उत्कृष्ट है"* और एक ऐसी प्रेरणा है जो *"सभी प्रेरणाओं का सम्राट है"।* वे घोषित करते हैं *"सम्पूर्ण विश्व एक ही देश है, और मानवजाति इसके नागरिक हैं"।* वे आगे यह पुष्टि करते हैं मानवजाति का एक हो जाना – जो कि परिपक्वता की ओर इसके क्रमिक विकास का अन्तिम चरण है, अटल है। *"शीघ्र ही वर्तमान व्यवस्था समाप्त कर दी जायेगी और इसके स्थान पर एक नई व्यवस्था स्थापित होगी", "वर्तमान में सम्पूर्ण पृथ्वी गर्भावस्था में है"*। वह दिन आ रहा है जब यह अपने श्रेष्ठतम फल उपजाएगी, जब इसमें सबसे शानदार वृक्ष, सबसे मनमोहक फूल, और सबसे उत्तम आशीर्वाद प्रकट होंगे। वे वर्तमान व्यवस्था की दोषपूर्णता का अफसोस करते हैं, मानव समाज को निर्देशित और नियंत्रित करने वाली ताकत के रूप में देशभक्ति की अपर्याप्तता सिद्ध करते हैं और *"मानवजाति के प्रति प्रेम"* और इसके हितों की सेवा को, मानव प्रयास का सबसे योग्य और प्रशंसनीय लक्ष्य मानते हैं। इसके अतिरिक्त, वे विलाप करते हैं *"प्रत्येक देश में, ईश्वर के प्रति मनुष्य की आस्था मर रही है," "दुनिया का मुख अविश्वास और बेपरवाही की ओर मुड़ा हुआ है"*, वे धर्म को *"दीप्तिमान प्रकाश और दुनिया के लोगों की सुरक्षा और कल्याण का अजेय दुर्ग"* और *"विश्व में व्यवस्था स्थापित करने का मुख्य माध्यम"* घोषित करते हैं; यह पुष्टि करते हैं कि धर्म का मूल उद्देश्य है मनुष्यों के बीच एकता और सामंजस्य को बढ़ावा देना; यह चेतावनी देते हैं कि कहीं यह *"कलह, झगड़े और घृणा का स्रोत न बन जाए"*, यह आदेश देते हैं कि विश्व के स्कूलों में बच्चों को धर्म के सिद्धान्तों की शिक्षा इस प्रकार दी जानी चाहिए कि इससे न तो पूर्वाग्रह उत्पन्न हो न ही कट्टरपन; अधर्मियों की बेपरवाही के कारण *"धर्म का पतन"* बताते हैं; और भविष्यवाणी करते हैं कि ऐसी गम्भीर हिंसक *"उथलपुथल"* होगी कि इसके कारण *"मानवजाति के अंग–प्रत्यंग काँप उठेंगे।"*

वे निःसंकोच सामूहिक सुरक्षा का अनुरोध करते हैं; राष्ट्रीय आयुध घटाने का सुझाव देते हैं और एक विश्व सभा के आयोजन को आवश्यक और अटल घोषित करते हैं, जिसमें राष्ट्रों के बीच शान्ति की स्थापना के लिए विश्व के सम्राट और शासक विचार–विमर्श करेंगे।

वे, न्याय की प्रशंसा *"मनुष्यों के प्रकाश"* और उनके *"संरक्षक"* के रूप में, *"अस्तित्व जगत के रहस्यों के प्रकटकर्ता और प्रेम एवं कृपा का ध्वज उठाए रखने वाले"* के रूप में करते हैं; यह घोषित करते हैं कि इसका प्रकाश अतुलनीय है; यह पुष्टि करते हैं कि इस पर *"विश्व की व्यवस्था और मानवजाति की शान्ति निर्भर करती है"*; इसके दो स्तम्भों – *"पुरस्कार और दण्ड"* को वे मानवजाति के लिए *"जीवन का स्रोत"* कहते हैं; दुनिया के लोगों को यह चेतावनी देते हैं कि वे इसके आगमन की प्रतीक्षा में स्वयं को तैयार कर लें और यह भविष्यवाणी करते हैं कि विशाल उथल–पुथल और दुःखदायी अन्याय के बाद, इसका सूर्य अपनी सम्पूर्ण भव्यता और प्रताप के साथ अपनी आभा प्रकट करेगा।

इसके अतिरिक्त, वे *"सभी कार्यों में संयम"* बरतने की सलाह देते हैं; यह घोषित करते हैं कि जो कुछ भी हो, चाहे वह *"आज़ादी या सभ्यता"* हो, *"संयम की सीमाओं से जो बाहर चला जाता है"* उसका असर मनुष्यों के लिए "घातक" होगा। यह अवलोकन करते हैं कि पश्चिमी सभ्यता ने दुनिया को गम्भीर रूप से बेचैन कर दिया है, डरा दिया है और यह भविष्यवाणी करते हैं कि वह दिन आ रहा है जब *"अति की स्थिति तक ले जाई गई सभ्यता की ज्वाला नगरों को खा जाएगी।"*

वे यह स्थापित करते हैं कि परामर्श उनके धर्म का एक आधारभूत सिद्धान्त है; वे इसका वर्णन करते हुए इसे *"मार्गदर्शन का दीप"*, *"समझ प्रदाता"* और *"दिव्य विवेक के स्वर्ग"* के दो *"प्रकाशपुंजों"* में से एक कहते हैं। वे कहते हैं कि *"ज्ञान मनुष्य के जीवन के लिए पंखों के समान और उसकी उन्नति के लिए सीढ़ी के समान है"*, इसे प्राप्त करना सभी के लिए *"अनिवार्य मानते हैं"*। *"कला, शिल्प और विभिन्न विधाओं"* को वे अस्तित्व जगत के उत्थान में सहायक मानते हैं; शिल्प और व्यवसाय के माध्यम से अर्जित किए गए धन की

सराहना करते हैं; यह मानते हैं कि विश्व के लोग वैज्ञानिकों और शिल्पकारों के ऋणी हैं और ऐसे शास्त्रों के अध्ययन को अनुचित ठहराते हैं जो मनुष्यों को लाभ नहीं पहुँचाते और जो *"शब्दों से शुरू होते हैं और शब्दों पर ही समाप्त हो जाते हैं।"*

आगे, वे इस आदेश पर ज़ोर देते हैं कि *"सभी मनुष्यों के साथ मित्रता और भाईचारे की भावना से मेलजोल रखना चाहिए"* और यह मानते हैं कि ऐसा मेलजोल *"एकता और शान्ति"* में सहायक होता है। एक विश्व भाषा और लिपि को अपनाने की आवश्यकता पर वह बार–बार बल देते हैं; विभिन्न भाषाओं के अध्ययन में बर्बाद होने वाले समय का अफसोस करते हैं; यह पुष्टि करते हैं कि एक विश्व भाषा और लिपि के अपनाए जाने से सम्पूर्ण पृथ्वी को *"एक ही देश और एक ही भूमि"* माना जाएगा और यह दावा करते हैं कि उन्हें इन दोनों का ज्ञान है और यह ज्ञान वे उसे प्रदान करने के लिए तैयार हैं जो उनसे इसे प्राप्त करना चाहते हैं।

विश्व न्याय मंदिर के न्यासियों को वे उन मामलों से सम्बन्धित कानून बनाने का कर्त्तव्य सौंपते हैं जिनका उनके लेखों में स्पष्ट उल्लेख नहीं किया गया है और यह वादा करते हैं कि *"ईश्वर उन्हें वैसी प्रेरणा देगा जैसी उसकी इच्छा होगी।"* एक ऐसी संवैधानिक सरकार की स्थापना को वे एक उत्कृष्ट उपलब्धि समझते हैं जिसमें प्रजातंत्र, राज्य के आदर्श और राजतंत्र, जिसे वे *"ईश्वर के चिन्हों"* में एक बताते हैं का प्रताप, दोनों ही शामिल हों; वे अनुरोध करते हैं कि कृषि के हितों पर विशेष ध्यान दिया जाए; *"तेज़ी से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों"* का वे विशेष उल्लेख करते हैं और उनका वर्णन *"विश्व के दर्पण"* और *"एक आश्चर्यजनक एवं शक्तिशाली घटना* के रूप में करते हैं, साथ ही इन्हें तैयार करने में जिम्मेदार सभी के लिए यह कर्त्तव्य निर्धारित करते हैं कि वे द्वेष, आवेग और पूर्वाग्रह से मुक्त रहें, न्यायनिष्ठ और पक्षपात–रहित बनें, अपनी छानबीन में परिश्रमी और सावधान रहें और प्रत्येक परिस्थिति में पूरी वास्तविकता का पता लगाएँ।

वे सर्वमहान निर्दोषत्व के सिद्धान्त का विस्तृत वर्णन करते हैं; वे अपने अनुयायियों के इस दायित्व का समर्थन करते हैं कि "जिस देश में वे निवास

करते हैं, उसकी सरकार के प्रति उन्हें वफादारी, ईमानदारी और सच्चाई का व्यवहार करना चाहिए", धर्मयुद्ध करने और किताबों को नष्ट करने के निषेध पर वे पुनः ज़ोर देते हैं। वे विद्वानों एवं ज्ञानीजनों की विशेष प्रशंसा करते हुए उन्हें मानवजाति रूपी शरीर की *"आँखे"* और विश्व को प्रदान किए गए *"महानतम उपहार"* कहते हैं।

अक्का में बहाउल्लाह के निर्वासन के दूसरे भाग में प्रकट किए गए उनके लेखों की विशेषताओं की समीक्षा में *लौह–ए–हिकमत* (प्रज्ञा की पाती) का उल्लेख अवश्य सम्मिलित किया जाना चाहिए, जिसमें वे सच्चे दर्शन के आधारभूत सिद्धान्त प्रस्तुत करते हैं। इसमें *तीर्थयात्रा की पाती* का भी उल्लेख अवश्य शामिल किया जाना चाहिए जो इमाम हुसैन के सम्मान में प्रकट की गई थी, जिनकी प्रशंसा वे शालीन भाषा में प्रस्तुत करते हैं; इस समीक्षा में उन *"प्रश्नों और उत्तरों"* का भी उल्लेख नहीं छूटना चाहिए जो *किताब–ए–अक़दस* के नियमों और विधानों को स्पष्ट करते हैं; साथ ही *लौह–ए–बुरहान* (प्रमाण की पाती) का भी उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिए, जिसमें उन्होंने शेख मुहम्मद बक़ीर – जिसे उन्होंने *"ज़िब"* (भेड़िया) कहा था और इस्फहान के उस इमाम–जुमिह, मीर मुहम्मद–हुसैन, – जिसे उन्होंने *"राक्शा"* (नागिन) कहा था, के कृत्यों की कठोर निन्दा की है; इसमें *लौह–ए–कार्मल* (कार्मल की पाती) का भी उल्लेख किया जाना उचित होगा, जिसमें वे *"ईश्वर के उस नगर"* का महत्वपूर्ण उल्लेख करते हैं *"जो स्वर्ग से नीचे उतरा है"* और यह भविष्यवाणी करते हैं कि *"शीघ्र ही ईश्वर अपनी नौका को"* उस पर्वत पर *"चलाएँगे"* और *"बहा के लोगों को प्रकट करेंगे।"* अन्त में, बहाउल्लाह की लेखनी से प्रकट किए गए उस पत्र का उल्लेख किया जाए जो शेख मुहम्मद–तक़ी, जिसे इब्न–ए–ज़िब (भेड़िये का पुत्र) कहा गया था, को सम्बोधित किया गया था और जो बहाउल्लाह की लेखनी से प्रकट होने वाली अन्तिम उत्कृष्ट पाती थी, जिसमें वे उस लुटेरे पुजारी का आह्वान करते हैं कि वह अपने कर्मों का पछतावा करे और अपने लेखों में से सबसे विशिष्ट और प्रसिद्ध उद्धरणों को दोहराते हैं तथा अपने धर्म की वैधता स्थापित करने वाले प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

यह कहा जा सकता है कि बहाउल्लाह के स्वर्गारोहण के लगभग एक वर्ष पहले प्रकट किए गए इस ग्रंथ के साथ ही, एक सौ ऐसे ग्रन्थों के लेखक

होने की विलक्षण उपलब्धि का अन्त हुआ, जो बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के अमूल्य रत्नों की खान हैं। ये ऐसे ग्रंथ थे जो असंख्य परामर्शों, क्रान्तिकारी सिद्धान्तों, विश्व को आकार देने वाले नियमों और विधानों, कठोर चेतावनियों और अनिष्ट सूचक भविष्यवाणियों, आत्मा को ऊँचा उठाने वाली प्रार्थनाओं एवं चिन्तनों, ज्योर्तिमय टिप्पणियों और व्याख्याओं, आवेगहीन वक्तव्यों और धर्मगीतों से भरपूर थे, जो उन सम्बोधनों और उल्लेखों के साथ मिले हुए थे जो पूरब और पश्चिम के सम्राटों, राजाओं और मंत्रियों, विविध स्तर के धर्मगुरूओं, और मानव गतिविधि के बौद्धिक, राजनीतिक, रहस्यवादी, व्यावसायिक एवं मानवीय क्षेत्रों के नेताओं को दिए गए थे।

अपने जीवन के संध्याकाल में सर्वमहान कारा से अब तक प्रकटित सम्पूर्ण दिव्य साहित्य की समीक्षा करते हुए बहाउल्लाह लिखते हैं : *"हम, सत्य ही, मनुष्यों को अपनी सलाह देने के कर्त्तव्य से चूके नहीं हैं और जो भी सर्वशक्तिशाली सर्वप्रशंसित ईश्वर का आदेश हुआ है उसे देने में पीछे नहीं रहे हैं।"* उन्होंने आगे लिखा है, *"क्या किसी को अब भी इस प्रकटीकरण पर संदेह रह गया है ? नहीं, ईश्वर की सौगंध, उस शक्तिसम्पन्न सिंहासन की सौगंध! मेरे चिन्हों ने सम्पूर्ण धरा को अपने आगोश में ले लिया है और सम्पूर्ण मानवजाति पर अधिकार आच्छादित हुआ है।"*

बहाउल्लाह का स्वर्गारोहण

प्रभुधर्म की शुरूआत से अब तक लगभग पचास वर्ष बीत चुके थे। विपत्तियों के पालने में पली प्रभुधर्म अपनी बाल्यावस्था में अपने अग्रदूत और नेतृत्व प्रदान करने वाले से वंचित रहा, इसे इसके दूसरे महानतम प्रकाशपुंज (बहाउल्लाह) ने धूल से उठा कर जीवित किया था जिस धूल में इसे धर्म के एक शत्रु, निर्दयी शासक ने फेंक दिया था। लगातार निर्वासित होने के बावजूद, आधी शताब्दी से भी कम समय में इसके भाग्य को पुनःस्थापित करने में, इसके संदेश की घोषणा करने में, इसके नियमों और आदेशों का विधान देने में, इसके सिद्धान्तों की रचना करने में और इसकी संस्थाओं का विधान देने में बहाउल्लाह सफल रहे। इसने अभी–अभी एक ऐसी समृद्धि की धूप का आनन्द लेना प्रारम्भ ही किया था, जो इसने पहले कभी अनुभव नहीं की थी, कि अचानक भाग्य के हाथों ने इससे इसका संस्थापक छीन लिया। इसके अनुयायी दुःख और आँसुओं में डूब गए, इसका विरोध करने वालों की डूबती आशाएँ एक बार फिर जाग उठीं और इसके राजनीतिक एवं धर्माधिकारी वर्ग के शत्रुओं को फिर से अवसर मिल गया।

जैसा कि अब्दुल बहा ने लिखा है, अपने स्वर्गारोहण के नौ माह पहले ही बहाउल्लाह ने इस संसार से जाने की अपनी इच्छा व्यक्त कर दी थी। उसके बाद से, उनकी उपस्थिति में आने वालों के समक्ष की गई उनकी टिप्पणियों के संकेतों से यह बिल्कुल स्पष्ट होने लगा था कि अब धरती पर उनके जीवन का अन्तिम समय निकट आ रहा है, यद्यपि वे कभी किसी के सामने इसका खुलकर उल्लेख नहीं करते थे। हि.स. 1309 के शव्वाल माह की

ग्यारह तारीख (8 मई, 1892) को उन्हें हल्का बुखार हुआ, जो अगले दिन अधिक हो गया, लेकिन शीघ्र ही उतर भी गया। वे कुछ मित्रों और तीर्थ यात्रियों से साक्षात्कार करते रहे, लेकिन शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि उनका स्वास्थ्य अभी ठीक नहीं हुआ है। उनका बुखार पहले से अधिक तेज़ होकर लौटा, धीरे–धीरे उनकी सामान्य स्थिति बिगड़ती चली गई, ऐसी जटिलताएँ पैदा हो गईं जिनके बढ़ जाने पर, हि.स. 1309 के ज़िल–कादिह माह के दूसरे दिन (29 मई, 1892) को, सूर्यास्त के आठ घण्टे बाद, भोर के समय में, उनके जीवन के 75 वें वर्ष में, विपत्तियों से भरे हुए जीवन के परिश्रम से मुक्त होकर अंततः उनकी आत्मा ने अन्य लोकों की ओर अपनी उड़ान भर ली – ऐसे *"लोक"* जिन्हें इस संसार के लोगों की दृष्टि ने कभी नहीं देखा है और जहाँ जाने की शीघ्रता करने के लिए उस *"श्वेत वस्त्रधारिणी", "प्रकाशमान सेविका"* ने उनसे अनुरोध किया था। उन्नीस वर्ष पहले, अपने अग्रदूत के जन्म दिवस पर प्रकट की गई लौह–ए–रूय्या (दिव्य दर्शन की पाती) में, बहाउल्लाह ने स्वयं इस घटना का वर्णन किया था।

अपने स्वर्गवास के छः दिन पहले, जब वे अपने पुत्र के कन्धे के सहारे अपने बिस्तर पर लेटे हुए थे, तब उन्होंने उपस्थित अनुयायियों के उस पूरे समूह को अपनी उपस्थिति में बुलाया जो भवन में किसी–न–किसी काम के लिए एकत्रित हुए थे। यह बहाउल्लाह से उनकी अन्तिम भेंट सिद्ध हुई। अपने आसपास एकत्रित विलाप करने वालों की भीड़ को बड़ी मृदुलता और स्नेह से सम्बोधित करते हुए बहाउल्लाह ने कहा, *"मैं तुम सभी से बहुत प्रसन्न हूँ। तुमने कई सेवाएँ अर्पित की हैं और अपने प्रयासों में बहुत श्रमशील रहे हो। तुम हर सुबह, हर शाम यहाँ आते रहे हो। एकता में रहने में ईश्वर तुम्हारी सहायता करे। अस्तित्व के स्वामी के धर्म को उन्नत करने में वह तुम्हारी रक्षा करे।"* उनके बिस्तर के आसपास एकत्र होने वाली सभी स्त्रियों को, जिनमें उनके स्वयं के परिवार की सदस्याएँ भी शामिल थीं, उन्होंने इसी प्रकार प्रोत्साहन के शब्द कहे और उन्हें यह निश्चित आश्वासन दिया कि महानतम शाखा को सौंपे गए एक दस्तावेज़ में उन्होंने उन सभी को उनकी देखरेख में सौंप दिया है।

बहाउल्लाह के स्वर्गारोहण का समाचार सुल्तान अब्दुल हमीद को तत्काल एक तार द्वारा भेज दिया गया। यह तार इन शब्दों से शुरू किया गया,

बहा का सूर्य अस्त हो गया है" और तार में उस सुल्तान को इस बात से अवगत कराया गया था कि बहाउल्लाह के पावन अवशेषों को उसी भवन की परिधि में समाधिस्थ करने का विचार है। सुल्तान ने इस व्यवस्था के लिए तत्क्षण ही स्वीकृति प्रदान कर दी। तदनुसार बहाउल्लाह को उस निवास के उत्तरी कमरे में समाधिस्थ किया गया, जिसमें उनका दामाद रहता था। यह घर उत्तरी भाग में था और भवन की पश्चिमी दिशा में होने के साथ–साथ उससे सटा हुआ भी था। बहाउल्लाह के स्वर्गारोहण के दिन ही, सूर्यास्त के बाद उनके पावन अवशेषों को समाधिस्थ कर दिया गया।

बहाउल्लाह की इस अस्वस्थ अवस्था में नबील को उनसे अकेले में मिलने का सौभाग्य मिला था। वह इतना विलाप कर रहे थे कि उन्हें सम्भालना मुश्किल था। उन्हें अब्दुल बहा ने उन उद्धरणों का चयन करने के लिए चुना था, जो आज उस तीर्थयात्रा की पाती के अंश हैं जिन्हें उस सर्वमहान समाधि में पढ़ा जाता है; नबील ने अपने असहनीय दुःख के कारण, अपने परम प्रिय के स्वर्गारोहण के कुछ ही समय बाद, सागर में डूब कर अपने प्राणों की आहूति दे दी थी। नबील, उन दिनों के तीव्र दुःख का वर्णन इस प्रकार करते हैं : "मुझे ऐसा लगता है जैसे मिट्टी के इस लोक में उठने वाली आध्यात्मिक उत्तेजना से ईश्वर के लोक थरथरा उठे.....। मेरी जिह्वा हम लोगों की हालत बयान नहीं कर सकती.....। उस समय की उलझन के बीच, अक्का और आस–पास के गाँवों के असंख्य निवासियों को रूदन करते हुए, अपना सिर पीटते हुए और बिलख–बिलख कर अपना दुःख व्यक्त करते हुए देखा जा सकता था।"

शोक व्यक्त करने वाले, असंख्य अमीर और गरीब, दुःख में डूबे हुए इस परिवार के साथ पूरे एक सप्ताह तक रहे और उन्होंने इसके सदस्यों द्वारा दिन–रात खुलकर बाँटे गए भोजन का भाग ग्रहण किया। जो प्रतिष्ठित लोग दुःख मनाने और बहाउल्लाह के गुण एवं महानता का वर्णन करने पहुँचे, उनमें शिया, सुन्नी, ईसाई, यहूदी सहित कवि, उलेमा और सरकारी अधिकारीगण शामिल थे। इनमें से कई लोगों ने, काव्य और गद्य में, अरबी और तुर्की भाषाओं में अपनी–अपनी लिखित श्रद्धांजलियाँ अर्पित की। इन प्रशंसापत्रों को अब्दुल बहा के सम्मुख पेश किया गया, जो अब उस स्वर्गवासी प्रियतम के स्थान पर प्रभुधर्म

का प्रतिनिधित्व कर रहे थे और जिनकी प्रशंसा अक्सर उनके पिता को दी गई श्रद्धांजलि के साथ इन स्तुतियों में शामिल थी।

बहाउल्लाह के स्वर्गारोहण से पावन भूमि और आसपास के देशों में बसने वाले अविश्वासियों ने जो दुःख प्रदर्शित किया था वह, दुःख के उस महासागर और असीम भक्ति के असंख्य प्रमाणों की तुलना में एक बूँद के समान था, जो उस सत्य के सूर्य के अस्त होने की घड़ी में उसके धर्म के उन अनगिनत अनुयायियों के दिलों से फूट पड़ा था, जो इसके ध्वज को फारस, भारत, इराक, तुर्की, फिलिस्तीन, मिस्र और सीरिया में फहराने के लिए कटिबद्ध थे।

बहाउल्लाह के स्वर्गवास के साथ एक ऐसी अवधि समाप्त हो गई, जो कई अर्थों में विश्व के धार्मिक इतिहास में विलक्षण है। बहाई युग की पहली शताब्दी का आधा भाग समाप्त हो चुका था। एक ऐसे कालखण्ड का अन्त हो चुका था, जो अपनी उदात्तता, अपनी रचनात्मकता और अपनी अवधि में, पहले के किसी भी विधान से कहीं बढ़कर था और तीन वर्ष की एक छोटी सी अवधि को छोड़कर, आधी शताब्दी के, सतत और प्रगतिशील प्रकटीकरण के कारण विशेष। बाब द्वारा प्रकट किया गया सन्देश अपना स्वर्णिम फल दे चुका था। शौर्यकाल का सबसे शानदार तो नहीं, लेकिन सबसे निर्णायक चरण का अब अन्त हो चुका था। सत्य का सूर्य, विश्व का महानतम प्रकाशपुंज, तेहरान के सियाहचाल में उदित हुआ, बग़दाद में उसे घेरने वाले बादलों को हटाकर वह बाहर निकला, एड्रियानोपल में अपने शिरोबिन्दु पर पहुँचते हुए थोड़े समय के लिए ग्रहण से ग्रस्त हुआ, और अन्त में, एक सम्पूर्ण सहस्राब्दी के व्यतीत हो जाने तक दोबारा न लौटने के लिए अक्का में अस्तगमित हो गया था। अतीत के सभी विधानों के आकर्षण का केन्द्र, ईश्वर का नवजात धर्म, पूर्ण रूप से और निःसंकोच घोषित किया जा चुका था। इसके आगमन की घोषणा करने वाली भविष्यवाणियाँ आश्चर्यजनक रूप से पूरी हुई थीं। इसकी भावी विश्व व्यवस्था के ढाँचे का ताना–बाना बुनने वाले इसके आधारभूत नियम और मुख्य सिद्धान्तों को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया जा चुका था। इसके पहले आने वाली धार्मिक व्यवस्थाओं के साथ इसके जैविक सम्बन्धों और उनके प्रति इसके व्यवहार को त्रुटिरहित रूप से परिभाषित किया जा चुका था। वे प्राथमिक संस्थाएँ जिनमें रहकर एक भ्रूणीय विश्व व्यवस्था का परिपक्व होना नियत था,

वह अब अटल रूप से स्थापित की जा चुकी थी। इसकी विश्वव्यापी व्यवस्था की एकता और अखण्डता की सुरक्षा के लिए रची गई संविदा को अटल रूप से, आने वाली पीढ़ियों को सौंपा जा चुका था। पूरी मानवजाति के एक होने, सर्वमहान शान्ति के शुभारम्भ और एक विश्व सभ्यता के प्रकट होने का निर्विवाद वचन दिया जा चुका था। उन कठोर चेतावनियों को बार–बार दोहराया जा चुका था, जिनमें इतने महान निष्पादन से पहले आने वाली उन विपदाओं की भविष्यवाणियाँ की गई थीं जो सम्राटों, धर्मगुरूओं, सरकारों और लोगों पर आने वाली थी। नए विश्व के मुख्य न्यायाधीशों को वे निर्णायक आदेश जारी किए जा चुके थे जो उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप को आगे चलकर सौंपा जाना था। उस राष्ट्र के साथ पहला सम्पर्क स्थापित किया जा चुका था जिसके शाही निवास का एक वंशज, पहली बहाई शताब्दी के अन्त से पहले, इसके धर्म को अपनाने वाला था। ईश्वर के उस पावन पर्वत पर जिस मूल प्रेरणा ने क्रमिक दशकों के दौरान आध्यात्मिक और संस्थागत – दोनों प्रकार के महत्व के अमूल्य लाभ प्रदान किए थे और आने वाले वर्षों में करती रहेगी, वह प्रेरणा अब दी जा चुकी थी। और अन्त में, उस आध्यात्मिक विजय के प्रथम ध्वज, जो उस शताब्दी के अन्त से पहले, पूरब और पश्चिम के कम से कम साठ देशों में पहुँचने वाले थे, विजयी होकर लगाए जा चुके थे।

इसके पावन लेखों के विस्तार और विविधता में; इसके शहीदों की संख्या में; इसके शूरवीरों की वीरता में; इसके अनुयायियों द्वारा स्थापित किए गए उदाहरण में; इसके शत्रुओं द्वारा भोगी गई उचित सज़ा में; इसके प्रभाव की व्यापकता में; इसके अग्रदूत की अतुलनीय वीरता में, इसके संस्थापक की चकाचौंध कर देने वाली महानता में; इसकी अदम्य आत्मा के रहस्यमय संचालन में बहाउल्लाह का धर्म, जो कि अब अपने अस्तित्व के छठवें दशक के द्वार पर पहुँच चुका था, अविभाज्य और पवित्र बने रहते हुए उस मार्ग पर आगे बढ़ने की अपनी क्षमता प्रदर्शित कर चुका था जो इसके संस्थापक ने रेखांकित की थी और आने वाली पीढ़ियों की नज़रों में उस स्वर्गिक सामर्थ्य के चिन्ह प्रदर्शित कर चुका था, जिन्हें स्वयं बहाउल्लाह ने इतने बड़े पैमाने पर सम्पन्न किया था।

मैं समझता हूँ कि अब पूरब और पश्चिम के उन सम्राटों, मंत्रियों और धर्मगुरूओं के दुर्भाग्य के विषय पर ध्यान दिया जाना चाहिए जिन्होंने बहाउल्लाह के जीवनकाल के विभिन्न चरणों में, या तो जानबूझकर उनके धर्म के अनुयायियों को सताया, या उन चेतावनियों पर ध्यान नहीं दिया जो उन्होंने दी थीं, अथवा जो उनके आह्वान का उत्तर देने के अपने प्रत्यक्ष कर्त्तव्य से चूके थे और जिन्होंने उन्हें और उनके सन्देश के साथ वैसा व्यवहार नहीं किया जिसके वे योग्य थे, जो लोग उनके धर्म का विनाश करने के लिए सक्रिय रूप से उठ खड़े हुए थे उनके विषय में, स्वयं बहाउल्लाह ने यह घोषित किया था *"अत्याचारी के अन्याय पर ईश्वर ने, न तो कभी पलक झपकी है, न ही कभी झपकेगा। विशेषकर इस प्रकटीकरण में, उसने प्रत्येक अन्यायी को अपने दण्ड से दण्डित किया है।"* जब हम उस परिधि के विस्तार का अवलोकन करते हैं जिस पर बहाउल्लाह के सेवाकाल के आरम्भ से ही ईश्वर के दण्ड के तूफानी झोंकों ने बड़ी प्रचंडता से काम किया है, तो हमारी दृष्टि के सामने सचमुच ही एक विशाल और डरावना दृश्य आ खड़ा होता है। दण्ड के इस तूफान ने सम्राटों के सिंहासन उलट दिए, राजवंशों का अन्त कर दिया, धर्माचारियों के धंधों की जड़ों को उखाड़ फेंका, युद्ध और क्रान्तियाँ उत्पन्न कीं, राजकुमारों और मंत्रियों को बेदखल कर दिया, हड़पने वालों के अधिकार छीन लिए, अन्यायी को धूल में मिला दिया और दुष्टों एवं विद्रोहियों को दण्डित किया।

सुल्तान अब्दुल अज़ीज़, जो नसीरूद्दीन शाह के साथ–साथ बहाउल्लाह पर थोपी गई विपत्तियों का स्रोत था और जो, ईश्वरावतार के निर्वासन के उन तीन आदेशों के लिए स्वयं उत्तरदायी था; जिसे, *किताब–ए–अक़दस* में *"अन्याय के सिंहासन"* पर बैठने वाला कहकर निन्दित किया गया है और जिसके पतन की भविष्यवाणी लौह–ए–फुआद में की गई थी, उसे राजमहल में होने वाले एक विद्रोह के परिणामस्वरूप राजगद्दी से उतार दिया गया और उसकी स्वयं की राजधानी के एक मुफ्ती द्वारा जारी किए गए एक फतवे में सज़ा सुनाई गई, जिसके चार दिन पश्चात उसे मौत के घाट उतार दिया गया। उसके बाद उसके एक भतीजे ने राजगद्दी सम्भाली जिसे जड़बुद्धि घोषित कर दिया गया। 1877–78 के युद्ध ने तुर्की की दासता से लाखों लोगों को आज़ाद कर दिया; एड्रियानोपल को रूसी सेना ने कब्ज़े में कर लिया; 1914–18 के युद्ध के

परिणामस्वरूप तुर्की साम्राज्य भी समाप्त हो गया। सल्तनत का अन्त कर दिया गया; प्रजातंत्र की घोषणा कर दी गई; इस प्रकार छः शताब्दियों तक कायम रहने वाले राज का अन्त हो गया।

वह अहंकारी और निरंकुश नसीरूद्दीन शाह, जिसे बहाउल्लाह ने *"अत्याचारियों का राजकुमार"* कहकर निन्दित किया था; जिसके बारे में उन्होंने लिखा था कि शीघ्र ही *"वह दुनिया के लिए एक सबक की वस्तु बन जायेगा"*; जिसका राज्य बाब की हत्या और बहाउल्लाह की कैद से दागदार हो चुका था; जिसने कॉन्सटैन्टिनोपल, एड्रियानोपल, और अक्का में बहाउल्लाह के निर्वासन को लगातार हवा दी थी; जिसने, एक ज़हरीले धर्माधिकारी वर्ग के साथ मिलकर, प्रभुधर्म के पालने में ही उसका गला घोंट देने की सौगंध खायी थी, उसी नसीरूद्दीन शाह को, उसकी जयंती के दिन नाटकीय हालातों में शाह अब्दुल अज़ीम की समाधि पर मार डाला गया, जन्म जयंती चूँकि एक नए युग का प्रारम्भ करने वाली थी, इसलिए उसे बड़े शानोशौकत के साथ मनाया जाना था और फारस के इतिहास में इसका उल्लेख एक महानतम दिवस के रूप में किया जाने वाला था। इसके बाद धीरे–धीरे उसके भाग्य का पतन होने लगा और अन्त में उस गैरज़िम्मेदार अहमद शाह के भ्रष्ट और निन्दात्मक चरित्र के कारण, काजार वंश पर ग्रहण लग गया और इसका अस्तित्व ही समाप्त हो गया।

नेपोलियन तृतीय – जो पश्चिमी देशों में उस ज़माने का सबसे महान सम्राट था – अत्याधिक महत्वाकांक्षी, घमंडी, कपटी और छिछोरा व्यक्ति था। बताया जाता है कि उसने बहाउल्लाह द्वारा भेजी गई पाती को घृणा से नीचे फेंक दिया था। बहाउल्लाह द्वारा उसकी परीक्षा ली गई और उसे उन्होंने अनुपयुक्त पाया था और उसके पतन के बारे में बाद की एक पाती में स्पष्ट भविष्यवाणी की थी, उसी नेपोलियन तृतीय को सूडान के उस युद्ध में (1870 ई.) बड़े अपमानजनक ढंग से हरा दिया गया, जो आधुनिक इतिहास में वर्णित सबसे विशाल सैन्य आत्मसमर्पण था। नेपोलियन ने अपना राज्य गवाँ दिया और अपने जीवन के शेष दिन निर्वासन में बिताए। उसकी उम्मीदें पूरी तरह धूल में मिल गईं, उसका एकमात्र पुत्र, शाही राजकुमार जूलू युद्ध में मारा गया, जिस साम्राज्य की नेपोलियन डींगे मारता था, वह ढेर हो गया। फलस्वरूप

एक ऐसा गृहयुद्ध हुआ जो फ्राँस और जर्मनी के बीच होने वाले युद्ध से भी अधिक भयंकर और क्रूर था और इसके बाद वरसैल्स के महल में, पर्शिया के सम्राट विलियम–प्रथम को संयुक्त जर्मनी का सम्राट घोषित किया गया।

नेपोलियन तृतीय पर विजय प्राप्त करने वाले, उस घमंड के नशे में चूर विलियम प्रथम को, *किताब–ए–अक़दस* में सावधान किया गया था और आदेश दिया गया था कि वह उस दुर्भाग्य के बारे में विचार करे जो उस व्यक्ति पर टूटा था *"जिसका बल"* उसके स्वयं के बल से *"कही अधिक था"*। इसी पुस्तक में उसे यह चेतावनी भी दी गई थी कि *"बर्लिन से विलाप"* उठेगा और राईन नदी के तट *"गाढ़े खून से ढक जायेंगे"*। विलियम प्रथम पर दो जानलेवा हमलों के प्रयास किए गए, जिसके बाद उसका पुत्र राजगद्दी पर बैठा। राज करने के केवल तीन माह बाद ही एक भंयकर बीमारी का शिकार होकर वह मर गया और अपना सिंहासन एक अभिमानी, हठी और अदूरदर्शी विलियम द्वितीय को सौंप गया। इस नए सम्राट का घमंड उसे ले डूबा। बड़ी तीव्रता के साथ और अचानक ही उसकी राजधानी में विद्रोह भड़क उठा, कई शहरों में साम्यवाद ने अपना सिर उठा लिया, जर्मनी के राज्यों के राजकुमारों ने अपने–अपने सिंहासन छोड़ दिए और वह स्वयं भी, बड़ी अपमानजनक परिस्थितियों में हॉलैंड पलायन कर गया। उसे उस सिंहासन पर अपना अधिकार त्यागने को बाध्य होना पड़ा। संविधान ने एक ऐसे साम्राज्य के दुर्भाग्य पर मुहर लगा दी, जिसके जन्म की घोषणा उसके दादा ने बड़े ज़ोर–शोर से की थी और एक अत्याचार से भरी कठोर संधि की शर्तों के कारण *"वह विलाप"* उत्पन्न हुआ जिसकी अमंगलकारी भविष्यवाणी पचास वर्ष पहले ही की जा चुकी थी।

वह एकपक्षीय और निर्दयी फ्राँसिस जोसफ, जो ऑस्ट्रिया का सम्राट और हंगरी का राजा था, जिसे *किताब–ए–अक़दस* में इसलिए फटकार लगाई गई थी क्योंकि उसने पावन भूमि में अपने तीर्थ के दौरान बहाउल्लाह के बारे में जानने के कर्त्तव्य की उपेक्षा की थी, वह इतने दुर्भाग्य और दुःखान्त घटनाओं से घिर गया कि देश पर विपत्तियाँ बरसाने में उसकी सत्ता को किसी भी अन्य सत्ता से कहीं अधिक बढ़कर समझा जाता था। उसके भाई,

मैक्सिमिलियन की मेक्सिको में हत्या कर दी गई; युवराज रूडोल्फ बड़ी अपमानजनक परिस्थितियों में खत्म हो गया; सम्राट की भी हत्या कर दी गई; आर्चड्यूक फ्राँसिस फर्ड़िनेन्ड और उसकी पत्नी की सारायेवो में हत्या कर दी गई; वह *"जीर्ण–शीर्ण साम्राज्य"* भी टूटकर बिखर गया, उसके टुकड़े–टुकड़े कर दिए गए और उस पावन रोमन साम्राज्य के खंडहर पर, जो कि अब नष्ट हो चुका था, एक सिकुड़ा हुआ प्रजातंत्र स्थापित किया गया, ऐसा प्रजातंत्र जिसे एक संक्षिप्त और अनिश्चित अस्तित्व के बाद, यूरोप के राजनीतिक नक्शे से ही हटा दिया गया।

निकोलेविच ऐलेक्ज़ेन्डर द्वितीय, जो रूस का सर्वशक्तिशाली जार था, जिसे उसके नाम से सम्बोधित की गई एक पाती में बहाउल्लाह द्वारा तीन बार चेतावनी दी गई थी, उसे आदेश दिया गया था कि वह *"राष्ट्रों को ईश्वर की ओर बुलाए"*, साथ ही उसे सावधान किया गया था कि वह अपनी सत्ता के कारण, कहीं उसे पहचानने से वंचित न रह जाए जो *"सर्वोच्च सत्ताधारी"* है। इस जार पर कई जानलेवा हमले किए गए और अन्त में वह एक हत्यारे के हाथों मारा गया। दमन की एक कठोर नीति, जो उसने स्वयं शुरू की थी और जो उसके उत्तराधिकारी, ऐलेक्ज़ेन्डर तृतीय द्वारा जारी रखी गई थी, ने उस क्रान्ति के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया, जो निकोलस द्वितीय के शासन के एक खूनी ज्वार में जारों के उस साम्राज्य को बहा ले गई, जिसके परिणामस्वरूप युद्ध, बीमारियाँ और भुखमरी फैल गई और जिसने एक ऐसा आतंकवादी सर्वहारा वर्ग स्थापित किया जो अमीर वर्ग के लोगों का कत्ल करता था, पादरियों को सताता था, जिसने बुद्धिजीवियों को खदेड़ दिया था, राष्ट्रीय धर्म को आर्थिक सहायता से वंचित कर दिया था और जार को, उसकी पत्नी एवं परिवार को खत्म करके रोमनोफ्स के वंश का अन्त कर दिया था।

नौंवा पोप पायस, जो ईसाईयत के सबसे शक्तिशाली गिरजाघर का निर्विवाद प्रधान था और जिसे बहाउल्लाह द्वारा सम्बोधित की गई एक पाती में आदेशित किया गया था कि वह अपने *"महलों को उनके लिए छोड़ दे जो इनकी चाह रखते हैं"* और उसके पास मौजूद *"सजावट की सभी कीमती वस्तुएँ बेच दे"*, *"इन्हें ईश्वर की राह में खर्च कर दे"* और *"प्रभु–साम्राज्य"* की ओर आने

की शीघ्रता करे, उसी पोप को बड़ी व्यथा भरी परिस्थितियों में सम्राट विक्टर इमान्युएल की घेरा डालने वाली सेना के आगे आत्मसमर्पण करना पड़ा और पोप की सत्ता के अधीन आने वाले राज्यों, यहाँ तक की खुद रोम से भी हाथ धोना पड़ा। उस *"अनन्त नगरी"* के हाथ से चले जाने से, जिस पर एक हज़ार वर्षों तक पोप का झण्डा फहराता रहा था और उसके कार्यक्षेत्र के अधीन आने वाले धार्मिक कर्मों के अपमान के कारण उसकी शारीरिक कमज़ोरियों में मानसिक पीड़ा भी जुड़ गई, जिससे उसके जीवन के अन्तिम दिन कड़वाहट से भर गए। आगे चलकर, वेटिकन में उसके एक उत्तराधिकारी से छीने गए इटली के साम्राज्य को दी जाने वाली औपचारिक मान्यता ने पोप की भौतिक सत्ता के व्यवहारिक अन्त की पुष्टि कर दी।

परन्तु ओटोमन, नेपोलियन, जर्मनी, आस्ट्रियाई और रूसी साम्राज्यों का त्वरित अन्त, काजार वंश की समाप्ति तथा रोम के पोप की भौतिक सत्ता का व्यवहारिक अन्त, उस सुरीय–ए–मुलुक के प्रारम्भिक उद्धरणों में दी गई बहाउल्लाह की चेतावनियों पर ध्यान न देने वाले विश्व के राज्य शासनों पर आने वाली तबाहियों की कहानी का अन्त नहीं है। पुर्तगाल और स्पेन के राज्य के साथ–साथ चीन के साम्राज्य का प्रजातंत्र में बदल जाना; हाल ही में हॉलैंड, नॉर्वे, ग्रीस, युगोस्लाविया और अल्बेनिया के उन सम्राटों का पीछा करने वाला दुर्भाग्य, जो वर्तमान में निर्वासित हैं; डेनमार्क, बेल्जियम और बल्गेरिया, रूमेनिया और इटली के सम्राटों द्वारा प्रयोग किए गए प्राधिकारों का व्यवहारिक पदत्याग, वह डर जिसके साथ उनके साथी सम्राट उन गड़बड़ियों को देख रहे होंगे जिसके कारण इतने सिंहासन छीन लिए गए हैं; पूरब और पश्चिम के कुछ सम्राटों के शासन के इतिहास पर कालिख पोत देने वाले शर्मनाक और हिंसक कृत्यों की कुछ घटनाएँ, फारस में नव स्थापित राजवंश के संस्थापक का आकस्मिक पतन, ये सब वह *"दिव्य दण्ड"* दिए जाने के प्रमाण हैं जिनकी भविष्यवाणी बहाउल्लाह द्वारा उस अमर सूरा में की गई थी। यह उनके द्वारा अपने पावनतम ग्रंथ में धरती के शासकों के विरूद्ध घोषित की गई दिव्य दण्ड की वास्तविकता को प्रदर्शित करते हैं।

उस सर्वव्यापी प्रभाव का अन्त भी कुछ कम विचारणीय नहीं है, जो शिया और सुन्नी मुसलमान धर्मगुरूओं द्वारा उन दो देशों पर डाला जाता था जिनमें

इस्लाम की सबसे शक्तिशाली संस्थाओं को बढ़ावा मिला था और जो, बहाउल्लाह और बाब पर लादी गई विपत्तियों के लिए सीधे तौर पर उत्तरदायी था।

वह खलीफा, जो अपने आप को इस्लाम के पैगम्बर का प्रतिनिधि मानता था, जो "वफादारों के कमान्डर", के नाम से और मक्का एवं मदीना के पावन नगरों के रक्षक के रूप में भी जाना जाता था, जिसका आध्यात्मिक कार्यक्षेत्र बीस करोड़ मुसलमानों से भी अधिक दायरे में था, उसी खलीफा से, तुर्की की सल्तनत के अन्त होने के कारण, उसके भौतिक अधिकार छीन लिए गए, जिन्हें इससे पहले उसके उच्च पद के कारण अविभाज्य समझा जाता था। एक अल्प अवधि तक, एक असामान्य और असुरक्षित पद पर बने रहने के पश्चात स्वयं खलीफा भी यूरोप पलायन कर गया; उस खलीफत को, जो कि इस्लाम की पावनतम और शक्तिशाली संस्था मानी जाती थी, सुन्नी जगत के किसी भी समुदाय से परामर्श किए बगैर, समाप्त कर दिया गया; इसके कारण, इस्लाम की सबसे शक्तिशाली शाखा की एकता भंग हो गई; तुर्की राज्य के साथ सुन्नी धर्म का एक सम्पूर्ण और स्थाई अलगाव घोषित कर दिया गया; शारियाह धर्म के वैधानिक कानून को निष्फल कर दिया गया; धर्माधिकारियों की संस्थाओं को आर्थिक सहायता देना बन्द कर दिया गया; एक वैधानिक आचारसंहिता घोषित कर दी गई। धार्मिक कर्मों को दबा दिया गया; सुन्नी धर्माचार्य पद को समाप्त कर दिया गया; अरबी भाषा, जो कि इस्लाम के पैग़म्बर की भाषा थी, का उपयोग बन्द कर दिया गया और इसकी लिपि के स्थान पर लातिन वर्णाक्षर का उपयोग किया जाने लगा; कुरान का भी तुर्की भाषा में अनुवाद कर दिया गया; कॉन्सटैन्टिनोपल, जो कि "इस्लाम का गुम्बद" माना जाता था, एक संकीर्ण शहर के स्तर पर उतर आया और इसका अतुलनीय रत्न सेंट सोफिया की मस्जिद को एक संग्रहालय में परिवर्तित कर दिया गया। ये उन अपमानों की याद दिलाने वाली श्रृंखला है, जो ईसाई युग की पहली शताब्दी में, यहूदियों, जेरूसलम शहर, पावनों में पावन सोलोमन के मंदिर और उस धर्माधिकारी वर्ग को सहने पड़े थे जिसके सदस्य ईसा मसीह के धर्म के लिए अत्याचारी सिद्ध हुए थे।

फारस में भी इसी प्रकार की उथलपुथल ने पूरे धर्माधिकारी वर्ग की नींव को हिलाकर रख दिया था, यद्यपि फारस राज्य से धर्माधिकारी वर्ग के अलगाव

की, अब तक औपचारिक घोषणा नहीं की गई थी। इस राष्ट्र के जीवन में "गिरजाघर वाला राज्य" की जड़ें बहुत गहरी जम चुकी थीं और शाखाएँ इस देश के जीवन के हर क्षेत्र में फैल चुकी थीं, अब वे वास्तव में बाधित हो गईं थीं। उस भूमि की, शिया इस्लाम की चट्टान की दीवार, अर्थात वहाँ के धर्माधिकारी वर्ग को लकवा मार गया था और वह बदनाम हो गया था। इसके धर्मगुरूओं की संख्या, अर्थात उस रहस्यमय इमाम के पसंदीदा मंत्रियों की संख्या अब नगण्य हो चुकी थी, चन्द मुट्ठीभर लोगों को छोड़कर, इसके सभी पगड़ी वाले अधिकारियों को बड़ी बेरहमी के साथ अपनी पगड़ियों और अपने वस्त्रों के स्थान पर वे यूरोपीय वस्त्र पहनने के लिए बाध्य किया गया जिनसे वे स्वयं घृणा करते थे; उनके समारोहों को चिन्हित करने वाला धूमधाम और आडम्बर गायब हो गया; उनके फतवों (निर्णयों) को निष्प्रभावी कर दिया गया; उनकी सम्पत्तियाँ नागरिक प्रशासन को सौंप दी गई; उनकी मस्जिदें और सेमिनार सूने हो गए; उनकी समाधियों को दिए गए शरण के अधिकारों की वैधता समाप्त कर दी गई, उनके धार्मिक नाटकों को निषिद्ध कर दिया गया, उनके 'तकिया' बन्द कर दिए गए, यहाँ तक कि नज़फ और करबला में उनके तीर्थों को प्रोत्साहन नहीं दिया गया और इन्हें घटा दिया गया; इसके अतिरिक्त, नकाब का उपयोग न किया जाना; स्त्री–पुरुष की समानता को स्वीकृति प्रदान करना; नागरिक न्यायालयों की स्थापना; रखैल प्रथा का अन्त; अरबी भाषा, जो इस्लाम और कुरान की भाषा थी, के उपयोग की निन्दा और इसे फारसी से अलग करने के लिए किए गए प्रयास, ये सभी, उस बदनाम दल द्वारा भुगते गए अपमान को दर्शाते हैं और अन्त में उसकी समाप्ति की भविष्यवाणी करते हैं, जिसके नेताओं ने स्वयं को "साधुत्व के स्वामी के सेवक" (इमाम अली) नामित करने का दुस्साहस किया था, जिन्हें, बार–बार सफावी राजवंश के धर्मनिष्ठ सम्राटों का सत्कार प्राप्त हुआ था। बाब के धर्म के जन्म से ही, खून की जो धार बहायी गई थी उसके लिए इनका अभिशाप ही मुख्य रूप से उत्तरदायी था और जिनके कर्मों ने उनके धर्म और राष्ट्र, दोनों पर ही कालिख पोत दी है।

इसके अतिरिक्त, एक ऐसे संकट ने ईसाई धर्माधिकारियों की संस्थाओं को घेर लिया था, जो वास्तव में उतना गम्भीर नहीं था जितना कि वह संकट

था जिसने इस्लाम के धर्माधिकारी वर्ग को, अर्थात प्रभुधर्म के कट्टर शत्रुओं को हिला कर रख दिया था। जब से बहाउल्लाह के विधान जारी हुए और उनकी चेतावनियाँ घोषित की गईं, तब से, ईसाई धर्माधिकारियों की संस्थाओं का प्रभाव स्पष्ट रूप से बिगड़ता चला गया, इनकी प्रतिष्ठा को गम्भीर हानि उठानी पड़ी, इनके प्राधिकार का स्थाई पतन हुआ और इनके बल, प्राधिकार और विशेषाधिकार धीरे–धीरे सीमित होते चले गए। रोम के पोप की भौतिक सत्ता का व्यवहारिक अन्त, जिसके बारे में पहले भी उल्लेख किया जा चुका है; धर्माधिकारी वर्ग के प्रति विरोधी लहर के मद्देनज़र, फ्रांसिसी प्रजातंत्र और कैथोलिक चर्च का अलग होना; एक विजयी साम्यवादी राज्य द्वारा रूस के ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च पर किया गया संगठित आक्रमण और इसके परिणामस्वरूप राज्यधर्म की व्यवस्था का भंग होना, इसका निधि से वंचित किया जाना और इसका उत्पीड़न; ऑस्ट्रो–हंगेरियन के उस शाहीराज का बहिष्कार, जो रोम के चर्च के प्रति निष्ठावान था और पूरी ताकत के साथ इसकी संस्थाओं का समर्थन करता था; इसी चर्च का, स्पेन और मेक्सिको में विपत्ति में पड़ जाना; गैर ईसाई देशों के कैथोलिक, ऐन्गलिकन और प्रेसबिटेरियन ध्येयों पर वर्तमान में आने वाली धर्मनिर्पेक्षता की लहर; एक आक्रामक पेगानिस्म की ताकतों द्वारा बल्कान, बाल्टिक, और स्केन्डीनेवियाई राज्यों के पश्चिमी, केन्द्रीय और पूर्वी, कैथोलिक, ग्रीक एवं लुथेरन चर्चों के प्राचीन गढ़ों पर आक्रमण, ये सभी, ईसाई धार्मिक नेताओं के भाग्य के पतन के बिल्कुल स्पष्ट दिखाई देने वाले प्रमाण हैं, जिन्होंने, बहाउल्लाह की घोषणा की उपेक्षा करते हुए सम्बन्धित समूहों के एवं उस परम पिता के रूप में लौटने वाले ईसा मसीह के बीच हस्तक्षेप किया है।

स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा करती हुई बहाउल्लाह की यह आवाज जब से उठी कि, *"वह सर्वमहान विधान आ चुका है"*, कि वह युगप्राचीन सौन्दर्य *"डेविड के सिंहासन पर शासन कर रहा है"* और *"जो कुछ भी ग्रंथों में (पारसी पावन लेखों में) घोषित किया गया था, वह प्रकट हो चुका है"*, तब से यहूदी और पारसी धर्मों के धार्मिक नेताओं की सत्ता में आने वाली भारी गिरावट को भी हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। धर्माधिकारी वर्ग सत्ता के खिलाफ बढ़ते हुए विद्रोह के प्रमाण; एक लम्बे समय से सम्मानित किए गए अनुपालनों, अनुष्ठानों

और विधि–विधानों के प्रति दर्शाया गया अनादर एवं उदासीनता; आक्रामक और शत्रुतापूर्ण राष्ट्रवाद की ताकतों द्वारा धर्माधिकारियों के कार्यक्षेत्र में बार–बार किया गया हस्तक्षेप और वह आम उदासीनता जिसके साथ ऐसे हस्तक्षेपों को देखा जाता है, विशेषकर जरथोस्ती धर्म के अनुयायियों के मामले में, ये सभी बातें, निश्चित रूप से विश्व के धर्माधिकारी वर्ग के नेताओं को बहाउल्लाह के ऐतिहासिक सम्बोधनों में कही गईं चेतावनियों और भविष्यवाणियों को और भी न्यायसंगत ठहराती हैं।

ये हैं उस ईश्वर के न्याय द्वारा लिए गए बदले के वे कुछ भयानक प्रमाण जिसने पूरब और पश्चिम, दोनों ही के सम्राटों और धर्माधिकारियों को, या तो बहाउल्लाह के धर्म का सक्रिय विरोध करने के परिणामस्वरूप, या उनके आह्वान का उत्तर देने में, उनके सन्देश के बारे में पूछताछ करने में, उनके द्वारा सहन की गई यातनाओं को दूर करने में, या उन विस्मयकारी चिन्हों और विलक्षणताओं पर ध्यान देने में शोकजनक रूप से विफल रहे, जो उनके प्रकटीकरण के जन्म और विकास के सौ वर्षों के दौरान उसके साथ जुडीं रहीं। उनका सूक्ष्म और भविष्यसूचक कथन है *"मनुष्यों के बीच से दो श्रेणियों –'सम्राटों और धर्माधिकारियों –से बल छीन लिया गया है।"* धरती के सम्राटों को उन्होंने यह चेतावनी दी थी कि *"यदि तुम उन सलाहों पर ध्यान नहीं दोगे जो.....हमने इस पाती में प्रकट की हैं, तो हर तरफ से तुम पर दिव्य–दण्ड टूट पड़ेगा.....। उस दिन तुम स्वयं अपनी दुर्बलता को समझोगे।"* और एक बार पुनः *"यद्यपि तुम्हें हमारे अधिकांश कष्टों की जानकारी है, फिर भी तुम अत्याचारी के हाथ को रोकने में विफल रहे हो।"* और आगे यह आक्षेप कि : *"ओ सम्राटों के समूह! .....हम.....धैर्य रखेंगे, जिस तरह हमने तुम्हारे हाथों उत्पीड़ित किए जाने पर धैर्य रखा था।"*

विश्व के धर्माधिकारी वर्ग को दोषी ठहराते हुए उन्होंने लिखा है कि :*"धर्माधिकारी अन्याय के उद्गम और स्रोत रहे हैं.....। ईश्वर ने उनसे अपने हाथ समेट लिए हैं और हमने भी उनसे हाथ खींच लिए हैं।"* वे खुलकर इस बात की पुष्टि करते हैं *"जब हमने ध्यान दिया तो हमने यह पाया कि अधिकांश धर्माधिकारी हमारे शत्रु हैं।"* बहाउल्लाह इन्हें इस प्रकार सम्बोधित करते

हैं, *"ओ धर्माधिकारियों के समूह ! अब से तुम स्वयं को सामर्थ्यहीन पाओगे क्योंकि हमने इसे तुमसे छीन लिया है..... ।"* वे स्पष्ट करते हैं कि *"यदि तुमने ईश्वर में तब विश्वास किया होता जब उसने स्वयं को प्रकट किया था, तो लोग उससे विमुख न होते, न ही जो तुम आज देख रहे हो, वह हम पर बीती होती।"* विशेष रूप से मुसलमान धर्माचार्यों के बारे में वे ज़ोर देकर कहते हैं, *"ऐसी क्रूरता के साथ वे हमारे विरूद्ध उठ खड़े हुए कि इस्लाम की शक्ति की जड़ें उखड़ गईं..... ।"* वे पुष्टि करते हैं कि,*"फारस के धर्माचार्यों ने वह किया जो दुनिया के लोगों में से किसी ने नहीं किया है।"* और एक बार फिर :*".....फारस के धर्माचार्यों ने.....वह किया है जो यहूदियों ने उसके विधान के दौरान नहीं किया जो महान चेतना (ईसा मसीह) है।"* और अन्त में, ये अनिष्टसूचक भविष्यवाणियाँ : कि *"तुम्हारे कारण ही लोग अवनत हुए, इस्लाम का ध्वज नीचे झुक गया और उसका शक्तिशाली सिंहासन उलट गया।" "शीघ्र ही तुम्हारी सम्पूर्ण सम्पत्ति नष्ट हो जायेगी, तुम्हारा यश, अधम अवनति में बदल जायेगा, और जो तुमने किया है, उसकी सज़ा तुम स्वयं भोगोगे..... ।"* स्वयं बाब और भी खुलकर भविष्यवाणी करते हैं कि,*"हम सत्य ही, एक सबसे अधिक दुःखदायी पीड़ा के साथ उन लोगों को यातना देंगे जिन्होंने हुसैन (इमाम हुसैन) के साथ युद्ध किया है..... ।" "शीघ्र ही हमारे लौटने पर, ईश्वर उनसे बदला लेगा और सत्य ही उसने, उस आने वाले लोक में उनके लिए घोर पीड़ा का प्रबन्ध किया है।"*

इस प्रकार की समीक्षा में उन राजकुमारों, मंत्रियों और धर्माचार्यों का उल्लेख करना भी आवश्यक है जो उन कष्टदायक विपत्तियों के लिए व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी थे जो बहाउल्लाह और उनके अनुयायियों ने सही थीं। फुआद पाशा, जो तुर्की के विदेशी मामलों का मंत्री था, जिसे बहाउल्लाह द्वारा महानतम बन्दीगृह में उनके निर्वासन का *"उकसाने वाला"* कहा गया था और जिसने अपने सहयोगी अली पाशा के साथ मिलकर उस तानाशाह के डर और सन्देह को भड़काने के प्रयास किए थे, जो प्रभुधर्म और इसके नेतृत्व करने वालों के विरूद्ध पहले ही मन बना चुका था, इसी फुआद पाशा को, उसके षड़यन्त्र में सफल होने के एक साल बाद, पेरिस की यात्रा के दौरान ईश्वर के उस बदला लेने वाले क्रोध ने नाइस में (1869 ई.) मार गिराया। अली पाशा, जो

सद्र–ए–आज़म, अर्थात प्रधानमंत्री था, जिसे, लौह–ए–रईस में इतनी शक्तिशाली भाषा में निन्दित किया गया था और लौह–ए–फुआद में जिसके पतन की निश्चित भविष्यवाणी की गई थी, उसी फुआद पाशा को बहाउल्लाह के अक्का निर्वासन के कुछ ही वर्षों पश्चात उसके पद से हटा दिया गया, उसके हाथों से सभी प्रकार के अधिकार और सत्ता छीन ली गई और वह पूरी तरह गुमनामी में डूब गया। वह अन्यायी राजकुमार, मसूद मिर्ज़ा, जो कि ज़िल्लु सुल्तान, नसीरूद्दीन शाह का सबसे बड़ा बेटा और उसके राज्य के पाँच में से दो से भी अधिक भागों का शासक था जिसे बहाउल्लाह ने *"नारकीय वृक्ष"* कह कर निन्दा की थी, वह अपमानित हो गया, इस्फहान को छोड़कर उसे सभी प्रांतों के राज्यपाल के पद से हटा दिया गया और वह अपनी भावी प्रतिष्ठा या पदोन्नति के सभी अवसर गवाँ बैठा। उस लालची राजकुमार जलालुद–दौलिह को, जिसे उस सर्वोच्च लेखनी ने *"यज़्द का अत्याचारी"* कहा था, उसके अधार्मिक कृत्यों के लगभग एक साल बाद, उसे उसके पद से वंचित कर दिया गया, उसे वापस तेहरान बुला लिया गया तथा उसे उसकी लूट के शिकार बनने वाले लोगों की सम्पत्ति का कुछ भाग लौटा देने के लिए बाध्य किया गया।

उस षड़यन्त्रकारी, महत्वाकांक्षी और चरित्रहीन मिर्ज़ा बुज़ुर्ग खान को, जो कि बग़दाद में फारस का कॉन्सुल जनरल था, अन्त में जब उसे पद से मुक्त कर दिया गया वह "तबाही से बौखलाया हुआ, पश्चाताप से भरा हुआ और व्याकुल" था। वह बदनाम मुजतहिद सैय्यद सादिक़–ए–तबातबाई, जिसे बहाउल्लाह ने *"तेहरान का झूठ बोलने वाला"* कह कर निन्दित किया था और जो उस राक्षसी आदेश का उत्तरदायी था जिसके तहत फारस के बहाई समुदाय के प्रत्येक जवान या वृद्ध, उच्च या दीन पुरुष सदस्य को मौत के घाट उतार देने की और सभी स्त्रियों को निर्वासित करने की सज़ा दी गई थी, यही बदनाम मुजतहिद अचानक बीमार पड़ गया और एक ऐसे रोग से ग्रस्त हो गया जिसने उसके हृदय, मस्तिष्क और अंगों को नष्ट कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप अन्त में उसकी मौत हो गई। तानाशाह सुभी पाशा, जिसने बहाउल्लाह को अक्का के सरकारी निवास में उपस्थित होने के अनुलंघनीय आदेश जारी किए थे, उसे उस पद से ही हटा दिया गया जिस पर वह बैठा

था और उसे ऐसी परिस्थितियों में वापस बुलवा लिया गया जो उसकी प्रतिष्ठा के लिए हानिकारक थी। उस शहर के अन्य गवर्नरों पर भी कुछ ऐसा ही दुर्भाग्य टूट पड़ा, जिन्होंने उस उदात्त कैदी के साथ जो उनकी निगरानी में था और उसके सह–निर्वासितों के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार किया था। नबील अपने इतिहास में लिखते हैं कि "अक्का का वह प्रत्येक पाशा, जिसका आचरण प्रशंसनीय था, एक लम्बे समय तक अपने पद पर बना रहा और ईश्वर की कृपा द्वारा अनुग्रहित किया गया, जबकि प्रबल शत्रु मुतिसर्रिफ (राज्यपाल) को दिव्य शक्ति के हाथ ने बड़ी तेज़ी के साथ ठीक उसी तरह पद से गिरा दिया जैसे अब्दुर–रहमान पाशा और मुहम्मद–यूसुफ पाशा को गिराया था, जिन्हें उसी रात की अगली सुबह को तार द्वारा उनकी पदमुक्ति की सूचना पहुँचा दी गई, जिस रात उन्होंने बहाउल्लाह के प्रियजनों को पकड़ने की ठानी थी। उनका दुर्भाग्य ऐसा था कि उन्हें फिर कभी पद नहीं सौंपा गया।

शेख मुहम्मद बाक़िर, जिसे *"भेड़िया"* कहा गया था, और बहाउल्लाह ने अपनी एक पाती लौह–ए–बुरहान में जिसकी कड़ी निन्दा की थी, उसी मुहम्मद बाक़िर ने अपनी प्रतिष्ठा को धीरे–धीरे धूल में मिलते हुए देखा और वह घोर पश्चाताप की अत्यन्त दुःखभरी अवस्था में मर गया। उसी दौरान, उसका सह–अपराधी, मीर मुहम्मद हुसैन, जिसे *"नागिन"* का उपनाम दिया गया था और बहाउल्लाह ने जिसका वर्णन *"करबला के दुष्ट से भी अधिक दुष्ट"* के रूप में किया था, उसी मीर मुहम्मद हुसैन को, इस्फहान से निष्कासित कर दिया गया, वह गाँव–गाँव भटकता रहा और एक ऐसे रोग से ग्रस्त हो गया जिसके कारण उसके शरीर से इतनी बद्बू आती थी कि उसकी पत्नी और बेटी तक को उसके करीब जाना सहन नहीं होता था और अन्त में वह स्थानीय अधिकारियों की दृष्टि से इतना गिर गया कि कोई भी उसके अन्तिम क्रिया कर्म में शामिल नहीं हुआ और उसके शव को कुछ कुलियों द्वारा अपमानजनक स्थिति में दफन कर दिया गया।

इसके अतिरिक्त, नेक बदी को यातनाएँ देकर मार दिए जाने के लगभग एक वर्ष पश्चात पड़ने वाले उस सूखे का भी उल्लेख किया जाना उचित होगा जिसने फारस को उजाड़ कर रख दिया और लोगों को उस परम संकट का

शिकार बना दिया जिसमें अमीर भी भूखों मरे और हज़ारों माताओं ने अपने ही बच्चों को राक्षस की तरह खा लिया।

उस मुख्य संविदाभंजक, मिर्ज़ा याह्या का उल्लेख किए बगैर इस अध्याय को समाप्त नहीं किया जा सकता, जो इतने वर्ष जीवित रहा कि साइप्रस में उसे तुर्की लोग *"शैतान का द्वीप"* कहने लगे थे। एक अत्यन्त अधम और कठिन जीवन गुजारते हुए उसने अपनी प्रत्येक आशा को शून्य में बदलते देखा। पहले तुर्की और बाद में अंग्रेज़ सरकार से पेंशन प्राप्त करने के साथ–साथ उसे और भी अपमान झेलना पड़ा जब ब्रिटेन की नागरिकता के लिए उसकी अर्ज़ी को अस्वीकृत कर दिया गया। वह स्वयं ही एक ऐसे काण्ड में शामिल हो गया जिसने उसकी और उसके सबसे बड़े बेटे की प्रतिष्ठा को धूल में मिला दिया, उस बेटे को और उसके वंशजों को उस उत्तराधिकार से वंचित कर दिया गया जो पूर्व में उसे दिया गया था और उसके स्थान पर उस धोखेबाज मिर्ज़ा हादी–ए–दौलत–आब्दी, एक ऐसा बदनाम अज़ाली, जो पूर्वोल्लिखित मिर्ज़ा अशरफ की शहादत के समय इतना डर गया था कि लगातार चार दिनों के दौरान वह अत्यन्त निंदापूर्ण भाषा में धर्माचार्य पद से बाबी धर्म और उस अपने संरक्षक मिर्ज़ा याह्या को, जिसने उस पर इतना विश्वास किया था, पूरी तरह अस्वीकार करने की अपनी घोषणा करता रहा। उसका सबसे बड़ा बेटा था जिसने, नियति के अजीब चलन के माध्यम से, कई वर्षों बाद अपने भतीजे और भतीजी के साथ अब्दुल बहा की उपस्थिति में प्रवेश किया, जो बहाउल्लाह के नियुक्त उत्तराधिकारी और उनकी संविदा के केन्द्र थे और पश्चाताप व्यक्त कर क्षमा माँगी, जो उनके द्वारा कृपापूर्वक स्वीकार की गई और अपनी मृत्यु की घड़ी तक वह प्रभुधर्म का वफादार अनुयायी बना रहा जिसे उसके पिता ने इतनी मूर्खता, बेशर्मी और निर्दयता के साथ समाप्त करने का प्रयास किया था।

तीसरा कालचक्र

अब्दुल बहा का धर्मकाल

1892&1921

बहाउल्लाह की संविदा

पिछले अध्यायों में मैंने बाब और बहाउल्लाह से जुड़े प्रभुधर्म के पहले पचास वर्षों के विकास और प्रगति का इतिहास देने का प्रयास किया है। यदि मैंने बहाई प्रकटीकरण के इन दो प्रकाशपुंजो के जीवन और उनके उद्देश्य से जुड़ी घटनाओं की बहुत लम्बी चर्चा की है, यदि कभी–कभी मैंने उनके धर्मकाल से सम्बद्ध कुछ प्रकरणों का बहुत परिस्थितिजन्य वर्णन किया है, तो यह केवल इसलिए कि ये घटनाएँ एक ऐसे युग के जन्म की घोषणा करती हैं और एक ऐसे युग की स्थापना का संकेत देती हैं, जिसे भविष्य के इतिहासकार, बहाई विधान देने वाले ईश्वरीय दूतों की सबसे वीरतापूर्ण, सबसे दुःखद और सबसे निर्णायक काल मानकर इसकी प्रशंसा करेंगे। वास्तव में, जिस शताब्दी की समीक्षा की जा रही है, उसके आगे के दशक जिस कहानी को हमारी आँखों के सामने प्रकट करते हैं, वह केवल उन सृजनात्मक शक्तियों के अदम्य संचालन के असंख्य प्रमाणों का विवरण है जो लगभग पचास वर्ष के अविरल प्रकटीकरण की क्रान्ति से लिखी गई हैं।

शीराज़ शहर के एक साधारण से कोने में, उस स्मरणीय रात्रि को, जब बाब ने मुल्ला हुसैन को अपने आगमन के उद्देश्य से अवगत कराया था, तब से एक ऐसी गत्यात्मक प्रक्रिया आरम्भ हो गई है, जो दिव्य रूप से प्रगति कर रही है, अकल्पनीय क्षमताओं से सम्पन्न है, अपनी व्यापकता में विश्वव्यापी है और अपने अन्तिम परिणामों में विश्व को परिवर्तित करने वाली है। बहाउल्लाह के उस प्रकटीकरण की प्रथम प्रेरणा से, जिसका उद्‌गम तेहरान के सियाहचाल

के अंधकार में हुआ था, बग़दाद से उनके निर्वासन की शाम को उनके उद्देश्य की घोषणा से इसकी गति और भी बढ़ गई। एड्रियानोपल में उनके निर्वासन के तूफानी वर्षों के दौरान की गई इसकी घोषणा से यह अपनी चरम सीमा पर पहुँची। इसका पूरा महत्व तब प्रकट हुआ जब इस लक्ष्य के संस्थापक ने धरती के सम्राटों और विश्व के धार्मिक नेताओं को अपने ऐतिहासिक सम्मन, अपनी अपीलें और चेतावनियाँ जारी कीं। अक्का के कारागार में अपने सेवाकाल के अंतिम वर्षों के दौरान बहाउल्लाह द्वारा प्रकट किए गए नियमों, विधानों और सिद्धान्तों और उन संस्थाओं के माध्यम से, जिनका विधान अपने जीवनकाल के अन्तिम वर्षों के दौरान अक्का के कारागार में किया था, इसे पूर्णता प्राप्त हुई।

स्वर्ग से भेजी गई इस प्रक्रिया द्वारा उत्पन्न की गई शक्तियों को निर्देशित और क्रमबद्ध करने के लिए और बहाउल्लाह के स्वर्गवास के पश्चात उनका सामंजस्यपूर्ण एवं सतत् संचालन सुनिश्चित करने के लिए एक ऐसे माध्यम की आवश्यकता थी जो दिव्यरूप से विहित हो, जो निर्विवाद अधिकार से सम्पन्न हो और इस प्रकटीकरण के संस्थापक से सीधा सम्बद्ध हो। संविदा की स्थापना करके बहाउल्लाह ने एक ऐसा माध्यम स्पष्ट रूप से प्रदान कर दिया था। यह एक ऐसी व्यवस्था थी जो उन्होंने अपने स्वर्गवास के पूर्व से ही स्थापित कर दी थी। उन्होंने *किताब–ए–अक़दस* में इसी संविदा की कल्पना की थी, अपने देहांत के कुछ ही दिन पहले, जब वे अपने परिवार के उन सदस्यों से अन्तिम विदा ले रहे थे, जिन्हें उन्होंने अपने पास बुलाया था, तब उन्होंने इस संविदा की ओर संकेत किया था और इसे एक ऐसे विशेष दस्तावेज़ में शामिल किया था जिसे उन्होंने *"मेरी संविदा की पुस्तक"* का नाम दिया था और जिसे अंतिम बार अस्वस्थ होने के समय उन्होंने अपने सबसे बड़े पुत्र, अब्दुल बहा को सौंप दिया था।

यह पुस्तक पूर्ण रूप से उनके अपने हाथ से लिखी गई थी और उनके स्वर्गवास के नौंवे दिन, उन नौ गवाहों की उपस्थिति में इसकी मुहर खोली गई, जिन्हें बहाउल्लाह के साथियों और परिवार के सदस्यों में से चुना गया

था। बाद में उसी दिन दोपहर को बहाउल्लाह की पावनतम समाधि में एकत्रित होने वाले उस विशाल समूह के समक्ष, जिसमें उनके पुत्र, बाब के कुछ रिश्तेदार, कुछ तीर्थयात्री और स्थानीय अनुयायी शामिल थे, इस अपूर्व और ऐतिहासिक दस्तावेज़ को पढ़ा गया जिसे बहाउल्लाह ने अपनी *"सर्वमहान पाती"* कहा है और *"भेड़िये के पुत्र को सम्बोधित पत्र"* में इसकी ओर संकेत करते हुए उन्होंने इसे वह *"किरमिज़ ग्रंथ"* कहा है, जिसके जैसा कुछ भी, अतीत के किसी भी पावन ग्रंथ में नहीं पाया जा सकता, यहाँ तक कि बाब के ग्रंथ में भी नहीं, क्योंकि विश्व की धार्मिक व्यवस्थाओं से सम्बद्ध ग्रंथों में, कहीं भी, यहाँ तक कि बाबी प्रकटीकरण के संस्थापक के लेखों में भी, हमें ऐसा कोई भी दस्तावेज़ नहीं मिलता जो ऐसे अधिकार से सम्पन्न संविदा स्थापित करता हो जिसकी तुलना उस संविदा से की जा सके जो स्वयं बहाउल्लाह ने स्थापित की है।

इस संविदा के नियुक्त केन्द्र ने यह पुष्टि की है कि *"यह संविदा इतनी दृढ़ और शक्तिशाली है कि समय के प्रारम्भ से लेकर आज तक, किसी भी धार्मिक विधान ने इसके जैसा कुछ भी उत्पन्न नहीं किया।"* उन्होंने आगे कहा है कि *"यह असंदिग्ध रूप से स्पष्ट है कि मानवजाति की एकता की धुरी, सिवाय इस संविदा की शक्ति के, अन्य कुछ नहीं।"* उन्होंने लिखा है, *तुम यह जान लो कि दुनिया के आरम्भ से ही, वह "सुरक्षित दस्तावेज" जिसका उल्लेख पुस्तकों, पातियों और अतीत के पावन ग्रंथों में किया गया था, वह सिवाय इस संविदा और वसीयत के, अन्य कुछ नहीं है।"* और एक बार फिर *"संविदा का दीप ही इस विश्व का प्रकाश है और उस सर्वमहान की लेखनी द्वारा अंकित किए गए शब्द, असीम सिंधु हैं।"* साथ ही उन्होंने यह भी घोषित किया है कि *"उस सर्वमहिमामय स्वामी ने, अनीसा के वृक्ष (जीवन वृक्ष) तले एक नई संविदा स्थापित की है और एक महान वसीयत की है..... । क्या पूर्व के किसी भी विधान, युग, कालचक्र या शताब्दी में ऐसी कोई भी संविदा स्थापित की गई है ? क्या किसी अन्य सर्वमहान की लेखनी से ऐसी कोई भी वसीयत निर्धारित हुई है ? ईश्वर की सौगंध, नही !"* और अन्त में : *"संविदा की शक्ति सूर्य की उस ऊष्मा के समान है जो धरती की सभी सृजित वस्तुओं को जीवन प्रदान*

करती है और उनके विकास में मदद करती है। इसी प्रकार, संविदा का प्रकाश मनुष्यों के मस्तिष्कों, चेतनाओं, हृदयों और आत्माओं का शिक्षक है।" अपने लेखों में उन्होंने इसी संविदा का उल्लेख करते हुए इसे *"निर्णायक प्रमाण", "सार्वलौकिक तुला", "ईश्वर की कृपा का चुम्बक",* वह *"ऊँचा मानक"* वह *"अकाट्य वसीयत", "वह सर्वशक्तिशाली संविदा कहा है जिसके जैसा कुछ भी पूर्व के किसी भी पावन विधान ने कभी नहीं देखा"।* इसे *"सर्वमहान युगचक्र की एक विशेष विशिष्टता" कहा है।*

एपोकेलिप्स के लेखक द्वारा इसकी प्रशंसा *"उसकी (ईश्वर की) वसीयत की नौका"* के रूप में की गई है; इसे *"अनीसा के उस वृक्ष"* (जीवन वृक्ष) के नीचे एकत्रित होने वाली सभा के साथ सम्बद्ध किया गया है जिसका उल्लेख बहाउल्लाह द्वारा निगूढ़ वचन में किया गया है। अपने लेखों के अन्य उद्धरणों में उन्होंने इसे *"मोक्ष की नौका"* और *"आभा साम्राज्य और धरती के बीच खींची गई डोर"* कहकर इसकी प्रशंसा की है; अपने इच्छापत्र और वसीयत के माध्यम से यह संविदा, *किताब–ए–अक़दस* और अन्य कई पातियों सहित आने वाली पीढ़ियों को विरासत में दी गई हैं; इनमें अब्दुल बहा की श्रेणी और उनका स्थान असंदिग्ध रूप से प्रकट किया गया है और यह वह आश्रय है जिसे स्वयं संविदा के उस स्वामी द्वारा अपने देहावसान के पश्चात, अपने धर्म के नियुक्त केन्द्र और इसकी भावी संस्थाओं की रूपरेखा तैयार करने वाले की सुरक्षा एवं समर्थन के लिए रचा है।

इस महत्वपूर्ण और अतुलनीय दस्तावेज़ में, इसके लेखक ने उस *"उत्कृष्ट और अमूल्य धरोहर"* का स्वरूप प्रकट किया है जो उन्होंने अपने *"उत्तराधिकारियों"* को विरासत में दी है; इसमें वे अपने प्रकटीकरण के उस मूलभूत उद्देश्य को एक बार फिर घोषित करते हैं। *"दुनिया के लोगों को"* आदेश देते हैं कि वे उसे कस कर थाम लें जो उनके *"स्थान"* को *"ऊँचा उठाए"* । इसके अतिरिक्त, वे उनके समक्ष यह घोषणा करते हैं कि *"जो बीत चुका है, ईश्वर ने माफ कर दिया है"* ; वे मनुष्य के स्थान की उदात्तता पर बल देते हैं; ईश्वर के धर्म का प्राथमिक उद्देश्य प्रकट करते हैं; वफादारों को निर्देश देते हैं कि वे धरती के

सम्राटों के कल्याण के लिए प्रार्थना करें, जो "ईश्वर की शक्ति के प्रकट रूप और उसकी महानता एवं ऐश्वर्य के सूर्य हैं; उन्हें धरती की सत्ता से विभूषित करते हैं; अपने विशेष राज्य, अर्थात मनुष्यों के हृदयों को चुनते हैं; कलह और विवाद को स्पष्ट रूप से निषिद्ध करते हैं; अपने अनुयायियों को आदेश देते हैं कि वे उन शासकों की सहायता करें जो *"निष्पक्षता और न्याय के आभूषण से विभूषित हैं"* और अग़सानों को (अपने पुत्रों को) विशेष रूप से निर्देशित करते हैं कि वे उस *"महान बल और परम शक्ति के बारे में विचार करें जो अस्तित्व के संसार में छिपी हुई है।"* इसके अतिरिक्त वे अफ़्नानों (बाब के रिश्तेदारों) और अपने स्वयं के रिश्तेदारों सहित उन्हें आदेश देते हैं, कि *"वे सभी उस महानतम शाखा (अब्दुल बहा) की ओर उन्मुख हों"*; जिनकी तुलना *"उस महान के साथ करते हैं जिसे ईश्वर ने भेजा था"*, वह शाखा *"जो इस पूर्व–विद्यमान जड़ से उत्पन्न हुई है"* जिसका उल्लेख *किताब–ए–अक़दस* में किया गया है; वे उस *"महानतर शाखा"* (मिर्ज़ा मुहम्मद–अली) के स्थान को *"महानतम शाखा"* (अब्दुल बहा) के स्थान के अधीन निर्धारित करते हैं; अनुयायियों को निर्देश देते हैं कि वे अग़सानों के साथ आदर और प्रेम का बर्ताव करें; उन्हें सलाह देते हैं कि वे उनके परिजनों और रिश्तेदारों के साथ–साथ बाब के कुटुम्बियों का सम्मान करें; अपने पुत्रों को *"दूसरों की सम्पत्ति पर किसी भी प्रकार के अधिकार से नकारते हैं"*; वे अपने कुटुम्बियों को और बाब के कुटुम्बियों को आदेश देते हैं कि वे *"ईश्वर से डरें, वह करें जो योग्य और प्रशंसनीय है"* और उन बातों का अनुसरण करें जो उनके स्थान को ऊँचा उठाए; सभी मनुष्यों को चेतावनी देते हैं कि वे *"व्यवस्था के माध्यमों को उलझन के कारण न बनने दें और एकता के साधन को अनबन का माध्यम न बनने दें"* और इस सलाह की ओर वफादारों का आह्वान करते हुए अपनी बात समाप्त करते हैं कि वे *"सभी राष्ट्रों की सेवा करें"* और *"विश्व की बेहतरी के लिए"* प्रयत्न करें।

अब्दुल बहा को इतना विलक्षण और उच्च स्थान प्रदान किया गया था कि उन निर्वासित साथियों को, जिन्हें इतने लम्बे समय तक उनके जीवन और आचरण पर ध्यान देने का सौभाग्य मिला था, कोई आश्चर्य नहीं हुआ और वास्तव में हो भी नहीं सकता था। न ही उन तीर्थयात्रियों को कोई आश्चर्य हुआ, जो कुछ

क्षणों के लिए ही सही, उनके साथ व्यक्तिगत सम्पर्क में लाए गए थे, न ही वास्तव में वफादारों के उस विशाल समूह को कोई आश्चर्य हुआ जो, दूरस्थ देशों में उनके नाम का आदर करने लगे थे और उनके प्रयासों का सम्मान करने लगे थे। उनके मित्रों और परिचितों के उस विस्तृत दायरे को भी कोई आश्चर्य नहीं हुआ जो पावन भूमि में और आसपास के देशों में उस स्थान को अच्छी तरह जानते थे जिस पर, अपने पिता के जीवनकाल में वे प्रतिष्ठित थे।

वे अब्दुल बहा ही थे जिनका जन्म उस कभी न भूलने वाली रात को हुआ था जब बाब ने अपने प्रथम शिष्य – मुल्ला हुसैन के समक्ष अपने ध्येय के पारलौकिक स्वरूप को प्रकट किया था। वे अब्दुल बहा ही थे, जिन्होंने, अपनी बाल्यावस्था में ही उस हलचल मचा देने वाली चुनौती का रोमांचक अनुभव प्राप्त किया था। वे अब्दुल बहा ही थे जिनकी कोमल आत्मा अपने पिता को उस समय अत्यन्त कमजोर, बिखरा हुआ और बेड़ियों में जकड़ा हुआ देखकर मुरझा गई थी। तब वे केवल नौ वर्ष के बालक थे और अपने पिता से मिलने के लिए तेहरान के सियाहचाल में गए थे। उनके बचपन में, जब उनके पिता तेहरान के कारागार में कैद थे, तब वे अब्दुल बहा ही थे जिनके खिलाफ अपना द्वेष निकालने के लिए गली के कुछ दुष्ट बच्चों ने उन पर पत्थर फेंके, उन्हें अपशब्द कहे और उनका बहुत मज़ाक उड़ाया। कैद से बहाउल्लाह की रिहाई के शीघ्र बाद अब्दुल बहा भी अपने पिता के साथ अपना देश छोड़कर एक कठोर निर्वासन के घोर कष्ट और दुःख भोगने में सम्मिलित थे और बहाउल्लाह के साथ ऐसी विपत्तियाँ भी सहन कीं जो तब अपनी चरम सीमा पर पहुँची जब बहाउल्लाह कुर्दिस्तान के पहाड़ों पर एकान्तवास में रहने के लिए विवश हो गए। वे अब्दुल बहा ही थे, जिन्होंने अपने पिता से बिछुड़ने के गहरे दुःख में नबील को बताया था कि उन्हें ऐसा लगता है जैसे वे बूढ़े हो गए हों। नबील ने अपने इतिहास में इस बात की पुष्टि की है। अब्दुल बहा में यह विलक्षण विशिष्टता थी कि बाल्यावस्था में ही उन्होंने अपने पिता के स्थान की सम्पूर्ण महिमा को तब ही पहचान लिया था जब बहाउल्लाह का अवतारीय स्थान अप्रकट था। बहाउल्लाह के स्थान को पहचानते ही वे अपने आप को रोक नहीं पाए और उनके चरणों में गिर पड़े और सहज ही उनसे भीख माँगने लगे कि

बहाउल्लाह उन्हें यह सौभाग्य प्रदान करें कि वे उनके लिए अपने प्राण त्याग सकें। जब अब्दुल बहा बग़दाद में अपनी किशोरावस्था में ही थे, तब उन्होंने बहाउल्लाह के सुझाव पर, अपनी लेखनी से एक जानी मानी मुहम्मदी कहावत पर एक शानदार टिप्पणी लिखी थी, जिसे अली शौकत पाशा द्वारा किए गए एक अनुरोध के उत्तर में लिखा गया था, यह टिप्पणी इतनी ज्ञानवर्धक थी कि इसके प्राप्तकर्ता का हृदय अपार प्रशंसा से भर उठा था। बग़दाद में उनके सम्पर्क में आने वाले विद्वानों के साथ अब्दुल बहा की चर्चाओं और वक्तव्यों ने ही उस जनरल के दिल में उनके और उनके ज्ञान के प्रति सर्वप्रथम आदरयुक्त भाव उत्पन्न किया था, आगे चलकर उनके परिचितों के विस्तार के साथ–साथ, पहले एड्रियानोपल में और बाद में अक्का में उनका आदर और सम्मान स्थाई रूप से बढ़ गया। वे अब्दुल बहा ही थे जिन्हें अति निपुण एड्रियानोपल का गवर्नर खुर्शीद पाशा – सार्वजनिक रूप से शानदार सम्मान देने कि लिए तब प्रेरित हुआ, जब उस शहर के बहुत से विशिष्ट धर्माधिकारियों की उपस्थिति में, उसके युवा मेहमान (अब्दुल बहा) ने संक्षिप्त और आश्चर्यजनक रूप से, एक ऐसी समस्या का समाधान कर दिया था जिसने वहाँ एकत्रित सभी लोगों के दिमाग़ को आश्चर्यचकित किया, यह एक ऐसी उपलब्धि थी जिसने इस पाशा के दिल को इतनी गहराई तक छू लिया कि उसी दिन से इस प्रकार की बैठकों में वह अब्दुल बहा की अनुपस्थिति सहन नहीं कर पाता था।

जब बहाउल्लाह के प्रभाव का दायरा बढ़ गया, तब उन्होंने अब्दुल बहा को कई अवसरों पर अपने प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त कर, लोगों के समक्ष अपना पक्ष रखने में समर्थ बनाया और उन्हें अपनी पातियों का अभिलेखन कार्य सौंपकर, उन्हें अपने शत्रुओं को दूर रखने की ज़िम्मेदारी देकर और अपने सह–निर्वासितों की देखभाल करने तथा उनके हितों को आगे बढ़ाने का कार्य सौंपा और धीरे–धीरे उन पर और भी विश्वास करना शुरू कर दिया। वे अब्दुल बहा ही थे जिन्हें परिस्थितियों के अनुकूल होते ही, बाब की स्थाई समाधि के निर्माण के लिए एक ज़मीन खरीदने का, उनके पावन अवशेषों को पवित्र भूमि तक सुरक्षित स्थानान्तरित करने का और उनके लिए एक उचित समाधि बनाने का सबसे महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया था। वे अब्दुल बहा ही थे

जिन्होंने अक्का की कारा नगरी में बहाउल्लाह की नौ साल की कैद के बाद उनकी रिहाई का प्रबंध किया और यह सुनिश्चित किया कि अपने जीवन की शाम में बहाउल्लाह को वह शान्ति और सुरक्षा मिल सके जिनसे उन्हें इतने लम्बे समय तक वंचित रखा गया था। अब्दुल बहा के अथक प्रयासों से ही बहाउल्लाह ने बदी को वे यादगार साक्षात्कार प्रदान किए। उनके व्यक्तित्व के प्रभाव के कारण ही इस निर्वासित समुदाय के प्रति अक्का के कई गवर्नरों की शत्रुता सम्मान और प्रशंसा में बदल गई। गलीली सागर एवं जोर्डन नदी के किनारों से लगी ज़मीनें उन्होंने खरीद ली तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रभुधर्म के प्रारम्भिक इतिहास और सिद्धांतों का सबसे योग्य और बहुमूल्य प्रस्तुतिकरण प्रस्तुत किया। बेरूत में अब्दुल बहा की यात्रा के दौरान उन्हें दिए गए असाधारण और प्रेम भरे स्वागत, तुर्की के एक पूर्व महामंत्री, मिज़ात पाशा के साथ उनके सम्पर्क, उस अज़ीज़ पाशा के साथ उनकी मित्रता, जिसे वे एड्रियानोपल से जानते थे और जिसे बाद में युवराज के पद पर पदोन्नत कर दिया गया था और उनके पिता के सेवाकाल के अन्तिम वर्षों के दौरान बढ़ती हुई संख्या में उनसे मिलने की चाह रखने वाले अधिकारियों, प्रतिष्ठित व्यक्तियों एवं प्रमुख धर्माधिकारियों के साथ उनके सतत् मेलजोल के कारण ही वे उस प्रभुधर्म की प्रतिष्ठा को, जिसके वे शूरवीर थे, उन ऊँचाईयों तक पहुँचाने में सफल हुए जो इसने पहले कभी प्राप्त नहीं की थी।

केवल अब्दुल बहा को ही *"मास्टर"* की उपाधि से सम्बोधित किए जाने का सौभाग्य प्रदान किया गया था। यह एक ऐसा सम्मान था जो उनके पिता ने अपने अन्य किसी भी पुत्र को नहीं दिया था। उन्ही प्रेममय और त्रुटिरहित पिता ने उन्हें *"सीरूल्लाह"* (ईश्वर के रहस्य) की एक अद्वितीय उपाधि से सम्मानित किया था। अब्दुल बहा के लिए यह एक उचित उपाधि थी, यद्यपि वे मनुष्य थे और बहाउल्लाह तथा उनके अग्रदूत के स्थान की तुलना उनसे नहीं की जा सकती, फिर भी उनका एक विशेष स्थान था, वे बहाउल्लाह के धर्म के उदाहरण होने, दैवी–ज्ञान से विभूषित होने और उसके प्रकाश को प्रतिबिम्बित करने वाले निष्कलंक दर्पण होने का दावा कर सकते थे। उन्ही पिता ने, अपने एड्रियानोपल प्रवास के दौरान, सुरीय–ए–गुस्न (शाखा की

पाती) में उनका उल्लेख किया है और उन्हें *"वह पावन और महिमाशाली हस्ती"*, *"पावनता की वह शाखा"*, *"ईश्वर के विधान के अंग"*, मनुष्यों के लिए ईश्वर का *"सर्वमहान अनुग्रह"*, उन्हें प्रदान किया गया *"सम्पूर्ण वरदान"* तथा वह व्यक्ति कहा है जिसके माध्यम से *"प्रत्येक चूर–चूर होने वाली अस्थि भी सजीव हो उठती है।"* बहाउल्लाह घोषित करते हैं, *"जो कोई भी उनकी ओर उन्मुख होता है, वह ईश्वर की ओर उन्मुख होता है"* और *"जो स्वयं को इस शाखा की छाँव से वंचित रखते हैं, वे भ्रम के वीराने में खो चुके हैं।"* उसी शहर में अपने प्रवास के दौरान, बहाउल्लाह ने (हाजी मुहम्मद इब्राहिम–ए–खलील को सम्बोधित की गई एक पाती में) उनकी ओर संकेत करते हुए उन्हें अपने पुत्रों में से वह पुत्र कहा है, *"जिसकी जिह्वा से ईश्वर अपनी शक्ति के चिन्ह प्रवाहित करेगा"* और वह *"जिसे ईश्वर ने विशेष रूप से अपने धर्म के लिए चुना है।"* आगे चलकर *किताब–ए–अक़दस* के एक प्रसिद्ध उद्धरण में, जिसे उन्होंने *"मेरी संविदा की पुस्तक"* में स्पष्ट किया है, बहाउल्लाह ने अब्दुल बहा को अपने पावन लेखों की व्याख्या करने का कार्य प्रदान करने के साथ–साथ उन्हें वह व्यक्ति कहा है *"जो ईश्वर का प्रयोजन है"* और जो *"इस प्राचीन जड़ से उत्पन्न हुआ है।"* उसी अवधि के दौरान प्रकट की गई और मिर्ज़ा मुहम्मद कुली–ए–साब्ज़ीवारी को सम्बोधित की गई एक पाती में उन्होंने उनका उल्लेख *"उस खाड़ी"* के रूप में किया है *"जो इस महासागर से उत्पन्न हुई है और जिसने समस्त सृजित वस्तुओं को अपनी परिधि में समेट लिया है"* उन्होंने अपने अनुयायियों को आदेश दिया है कि वे अपने मुखड़ों को उनकी ओर उन्मुख करें। इसके अतिरिक्त जब अब्दुल बहा बेरूत प्रवास पर थे, तब उनके पिता ने अपने लिपिक को लिखाए गए एक पत्र में उन्हें सम्मान देते हुए कहा है कि अब्दुल बहा वे हैं *"जिनके इर्द–गिर्द सभी नाम परिक्रमा करते हैं"*, वह जो *"ईश्वर की महानतम शाखा है"*, जो *"उनका प्राचीन और निगूढ़ रहस्य हैं।"* वे अब्दुल बहा ही थे जिन्हें ऐसी कई पातियों में, जो स्वयं बहाउल्लाह ने अपने हाथ से लिखी थीं, उन्हें व्यक्तिगत रूप से सम्बोधित करते हुए *"मेरी आँखों का तारा"* कहा है, वह जो *"उन सभी के लिए, जो स्वर्ग में और धरती पर हैं, सुरक्षा की एक ढाल हैं"* जो *"समस्त मानवजाति के लिए एक आश्रय है"* और *"ईश्वर*

में विश्वास करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक दुर्ग हैं।" वे अब्दुल बहा ही थे जिनकी ओर से उनके पिता ने, उनके सम्मान में प्रकट की गई एक प्रार्थना में ईश्वर से याचना की थी कि वे उन्हें *"विजयी बनाएँ"*, और *"उनके लिए एवं उन लोगों को लिए जो उनसे प्रेम करते हैं, उन वस्तुओं का विधान करें जो उस सर्वशक्तिशाली द्वारा अपने प्रकटीकरण के 'अवतारों' और अपने 'न्यासियों' के लिए नियत किया गया है।"* अंत में एक अन्य पाती में भी, ये महत्वपूर्ण शब्द अंकित किए गए हैं: *"ईश्वर की महिमा तुम पर और उस प्रत्येक व्यक्ति पर विराजमान हो, जो तुम्हारी सेवा करता है और तुम्हारे आस–पास परिक्रमा करता है। श्रापित, अत्यन्त श्रापित होगा वह जो तुम्हें चोट पहुँचाता है। कल्याण होगा उसका जो तुम्हारे प्रति निष्ठा में दृढ़संकल्प है; उसे नरक की अग्नि सताएगी, जो तुम्हारा दुश्मन होगा।"*

और अब बग़दाद, एड्रियानोपल और अक्का में अब्दुल बहा के पिता के चालीस वर्ष के सेवाकाल की सम्पूर्ण अवधि के दौरान सदा बढ़ती हुई प्रचुरता में उन्हें प्रदान किए जाने वाले इन सभी अमूल्य सम्मानों, सौभाग्यों और लाभों की ताजपोशी करते हुए, उन्हें बहाउल्लाह की संविदा के केन्द्र के उच्च पद पर प्रतिष्ठित किया गया और स्वयं ईश्वरावतार का उत्तराधिकारी बनाया गया। यह एक ऐसा स्थान था, जिसके माध्यम से वे अपने पिता के धर्म के अन्तर्राष्ट्रीय विस्तार को असाधारण गति प्रदान कर सकते थे, इसके सिद्धांतों की व्याख्या कर सकते थे, इस धर्म की प्रगति में बाधक प्रत्येक अवरोध को दूर कर सकते थे, इसकी उस प्रशासनिक व्यवस्था को अस्तित्व में ला सकते थे और उसकी विशिष्टताओं को रेखांकित कर सकते थे, जो इस संविदा का नवजात शिशु और उस विश्व व्यवस्था का पूर्ण संकेत थी जिसकी स्थापना बहाई धर्म के स्वर्णिम युग के आगमन को चिन्हित करती है।

मिर्ज़ा मुहम्मद अली का विद्रोह

बहाउल्लाह के स्वर्गवास का तात्कालिक असर यह हुआ कि उनके अनुयायियों और साथियों में दुःख और घबराहट फैल गई और पहले से ही सावधान शत्रु प्रेरित हो गए। एक ऐसे समय में, जब एक दुःखद रूप से अपमानित धर्म, ऐसे दो घोरतम संकटों से उबरा ही था, जो इसने पहले कभी नहीं देखे थे, जिनमें से एक था इसके बाहरी शत्रुओं के कृत्य और दूसरा था इसके अन्दर के शत्रुओं के कर्म। यह सब तब हुआ जब इस धर्म की ख्याति ऐसी ऊँचाई तक पहुँच गई जिसकी तुलना इसके पचास साल के जीवन की किसी भी अवधि के साथ नहीं की जा सकती। वह त्रुटिरहित हस्त जिसने इसके आरम्भ से ही इसकी नियति को आकार प्रदान किया था, अचानक हटा दिया गया, जिसके चले जाने से एक ऐसा खालीपन पैदा हो गया था, जिसके बारे में मित्र और शत्रु दोनों का ही यह मानना था कि वह दोबारा कभी नहीं भर पाएगा।

फिर भी, जैसा कि बहाउल्लाह की संविदा के केन्द्र और उनकी शिक्षाओं के अधिकृत व्याख्याता ने स्वयं स्पष्ट किया है, जिस शरीर में ईश्वर के अवतार की आत्मा ने कुछ समय तक निवास किया था, उसका क्षय होना यह संकेत देता है कि अब यह आत्मा उन सीमा–बंधनों से मुक्त हो चुकी है जो एक भौतिक जीवन की आवश्यकताओं ने इस पर डाल दिए थे। अब जबकि इसका प्रभाव किसी भी भौतिक सीमा में सीमित नहीं है और इसका प्रकाश इसके शारीरिक मंदिर के कारण धुंधला नहीं हो रहा है, तब यह आत्मा पूरे विश्व को

उस स्तर तक ऊर्जा प्रदान कर सकती है जो पृथ्वी पर इसके अस्तित्व के किसी भी चरण की अवधि में प्रदान नहीं की थी।

इसके अतिरिक्त, बहाउल्लाह के स्वर्गारोहण के साथ इस भौतिक जगत में उनका अद्भुत कार्य अपने समापन पर पहुँच गया था। किसी भी प्रकार से अपूर्ण होने से बहुत दूर, उनका ध्येय अपने अन्त तक पूरी तरह निष्पादित किया जा चुका था। जो संदेश उन्हें सौंपा गया था उसे समस्त मानवजाति की निगाहों के सामने प्रस्तुत किया जा चुका था। नेताओं और शासकों को जो सम्मन जारी करने का उन्हें आदेश दिया गया था, वे निडरता से जारी किए जा चुके थे। इस धर्म को पुनर्जीवित करने वाले, इसके रोगों को आरोग्य प्रदान करने वाले और इसके बन्धनों और पतन से इसे मुक्त करने वाले सिद्धांतों की आधारभूत बातों को अभेद्य रूप से स्थापित किया जा चुका था। उनके धर्म की डोर को सशक्त करने वाली विपत्तियों का वह ज्वार अबाध्य क्रोध के साथ तेजी से निकल गया था। वह खून जिससे वह मिट्टी उपजाऊ बनने वाली थी जिसमें उनकी विश्व व्यवस्था की संस्थाएँ उगने वाली थीं, काफी बह चुका था। और इन सब से ऊपर, इस धर्म के प्रभाव और इसकी अखण्डता को बनाए रखने वाली, इसे विभाजित होने से बचाने वाली और इसके विश्वव्यापी विस्तार को प्रेरित करने वाली संविदा, एक स्थाई और अनुलंघनीय आधार पर स्थापित की जा चुकी थी।

वह धर्म जो मनुष्य के सपनों और आशाओं से परे था; जो अपने अन्दर बहुमूल्य मोती समाए हुए था और यह विश्व जिसकी प्रतीक्षा कर रहा था; जिसके सामने अकल्पनीय जटिलता और ज़रूरत से भरे कार्य थे, वह धर्म किसी भी संयोग से परे सुरक्षित था। *बहाउल्लाह के अपने पुत्र, उनकी आँखों का तारा, धरती पर उनके प्रतिनिधि, उनके प्राधिकार का निर्वाहक, उनकी संविदा की धुरी, उनके झुंड का चरवाहा, उनके धर्म का उदाहरण, उनकी पूर्णताओं का प्रतिबिम्ब, उनके प्रकटीकरण का रहस्य, उनके अभिप्राय का व्याख्याता, उनकी विश्व व्यवस्था का निर्माता, उनकी सर्वमहान शान्ति का ध्वजधारी, उनके त्रुटिरहित मार्गदर्शन का केन्द्रबिन्दु* और एक शब्द में एक ऐसे

पद का ग्रहणकर्ता, जिसका धार्मिक इतिहास के क्षेत्र में कोई बराबरी करने वाला नहीं है।

इस हलचल मचा देने वाली घोषणा ने, जो अब्दुल बहा ने अपने पिता के स्वर्गवास के दूसरे दिन उनके सभी अनुयायियों को सम्बोधित करते हुए लिखी थी और इसके साथ–साथ उन भविष्यवाणियों ने जो उन्होंने अपनी पातियों में की थीं, एक ऐसा नया दृढ़संकल्प और आत्मविश्वास फूँक दिया जिनका औचित्य उनके तीस साल के सेवाकाल के दौरान एकत्र किए गए फलों और प्राप्त की गई विजयों से व्यक्त होता है।

निराशा का वह बादल जो थोड़े समय के लिए बहाउल्लाह के धर्म के शोकाकुल प्रेमियों पर छा गया था, अब छँट चुका था। उस निरन्तरता का आश्वासन दिया जा चुका था, जो उस त्रुटिरहित मार्गदर्शन ने इसके जन्म से इस धर्म को प्रदान किया था, इस कथन का महत्व कि, *"वह दिन जिसके बाद रात नहीं आयेगी"* अब स्पष्ट रूप से समझ में आ रहा था। एक अनाथ समुदाय को अपनी नितांत आवश्यकता की घड़ी में अब्दुल बहा में ही अपनी सांत्वना, अपना मार्गदर्शक, अपना पूर्ण विश्वास और विजेता दिखाई दिया। जो प्रकाश एशिया के मध्य में इतनी जगमगाती चमक के साथ दमका था और बहाउल्लाह के जीवनकाल में, निकट पूरब में फैल गया था और जिसने यूरोप और अफ्रीका के महाद्वीपों के किनारों को प्रकाशित कर दिया था, वही प्रकाश अब, इस नव–घोषित संविदा के बाध्यकारी प्रभाव के माध्यम से और अपने संस्थापक के स्वर्गवास के लगभग तत्काल बाद उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप और पश्चिम तक पहुँचने वाला था और आगे चलकर अपना प्रकाश दूर–दराज़ पूरब और ऑस्ट्रेलेशिया पर फैलाने वाला था।

परन्तु, उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप में प्रभुधर्म अपनी ध्वजा फहरा सके और वहाँ से इतने विशाल पश्चिमी भाग में अपनी चौकियाँ स्थापित कर सके इससे पहले, बहाउल्लाह की नवजात संविदा को एक ऐसी अग्नि से प्रज्वलित किया जाना था जिसे एक अविश्वासी दुनिया के सामने अपनी दृढ़ता प्रदर्शित करनी थी और अपनी अनश्वरता घोषित करनी थी, जैसा उस धर्म के प्रकरण में किया

गया था जिसने इसे जन्म दिया था। इस संविदा के जन्म लेते ही इसकी नींव को एक ऐसा संकट हिलाने वाला था जो उतना ही गम्भीर था जितना कि वह संकट जो प्रभुधर्म की बाल्यावस्था में ही बग़दाद में इस पर छाया था।

इस संकट को गलती से बहाई धर्म के बीच आई दरार समझ लिया गया था। राजनीतिक कारणों से और धर्म के शत्रुओं ने, जिनमें मिर्ज़ा याह्या के तेज़ी से कम होने वाले अनुयायियों का समूह सम्मिलित था, इस विभाजन को एक ऐसा संकेत समझकर प्रसन्नता व्यक्त करने लगा था। उनके विचार में, बहाउल्लाह द्वारा स्थापित की गई व्यवस्था का विनाश और अन्तिम क्षय निश्चित था। यह संकट बहाउल्लाह के धर्म के केन्द्र में उत्पन्न हुआ था और इसे उकसाने वाला व्यक्ति, स्वयं बहाउल्लाह के ही परिवार का एक सदस्य, अर्थात अब्दुल बहा का वह सौतेला भाई था जिसका नाम संविदा की पुस्तक में विशेष रूप से दिया गया है और जिसे एक ऐसा पद प्रदान किया गया था जो उनकी तुलना में द्वितीय स्थान पर था, जिन्हें संविदा का केन्द्र नियुक्त किया गया था। यह संकट कम से कम चार साल तक पूरब में बसने वाले अधिकांश वफादार अनुयायियों के मन–मस्तिष्क में भयानक हलचल मचाता रहा, कुछ समय के लिए इसने संविदा के सूर्य को ग्रहण लगा दिया, स्वयं बहाउल्लाह के कुटुम्बियों के बीच खाई पैदा कर दी, उनके परिवार के अधिकांश सदस्यों के दुर्भाग्य पर मुहर लगा दी और प्रभुधर्म की ख्याति को बहुत गम्भीर हानि पहुँचाई, लेकिन प्रभुधर्म के ढ़ाँचे में एक स्थाई दरार पैदा करने में यह कभी सफल न हो सका। इस संकट का वास्तविक कारण थी वह सुलगती हुई, नियंत्रणहीन और आत्मा को नष्ट कर देने वाली ईर्ष्या, जो न केवल प्रभुधर्म के मुख्य संविदाभंजक मिर्ज़ा मुहम्मद–अली के दिल में, बल्कि उसके कुछ निकट के रिश्तेदारों के दिलों में भी इसलिए भड़क उठी थी क्योंकि सभी लोग अब्दुल बहा के स्थान, सामर्थ्य, योग्यता, ज्ञान और गुणों की श्रेष्ठता को मानने लगे थे। बहाउल्लाह के स्वर्गारोहण के कई वर्ष पहले से ही मिर्ज़ा मुहम्मद अली के दिल में जो ईर्ष्या सुलग रही थी, वह मिर्ज़ा याह्या की आत्मा पर हावी होने वाली ईर्ष्या के समान थी, जो उतनी ही घातक थी जितनी कि वह ईर्ष्या जो यूसुफ की उत्कृष्टता के कारण उसके भाईयों के दिलों में भड़क उठी थी और उतनी

ही गहराई से मन में उतरने वाली, जितनी कि कैन के सीने में सुलगने वाली वह ईर्ष्या थी, जिसने उसे अपने भाई ऐबेल की हत्या करने के लिए उकसाया था। अब्दुल बहा द्वारा बचपन से ही प्रदर्शित की गई महानता के कारण, स्वयं बहाउल्लाह, उनके साथियों एवं अनुयायियों के द्वारा ही नहीं अपितु असंख्य अविश्वासियों द्वारा भी अब्दुल बहा के प्रति दर्शाए गए सम्मान, प्रेम और अनुग्रह के उन असंख्य प्रमाणों के कारण मिर्ज़ा मुहम्मद अली के दिल की गहराईयों में सुलगने वाली ईर्ष्या, अन्दर ही अन्दर भड़कने लगी थी।

जैसे ही मिर्ज़ा मुहम्मद अली को उस दस्तावेज का पूरा–पूरा अर्थ समझ में आया, जिसमें उसे वफादारों में दूसरा स्थान प्रदान किया गया था वैसे ही इस प्रावधान से शांत होने की अपेक्षा उसके सीने में सुलगने वाली और कभी न बुझने वाली शत्रुता की आग और भी भयानक रूप से जलने लगी। चार दुःखभरे वर्षों के दौरान, अब्दुल बहा के सभी प्रयास, विफल हो गए, उनके सतत् परामर्श, उनकी सच्ची याचनाएँ, उनके द्वारा मुहम्मद अली पर बरसाए गए अनुग्रह, उनके द्वारा दी गई सलाहें और चेतावनियाँ, यहाँ तक कि एक भयानक तूफान को रोकने के लिए लिया गया उनका स्वैच्छिक एकान्तवास भी किसी काम न आ सका। धीरे–धीरे, झूठ–सच, मिथ्यापवाद और अतिशयोक्ति के माध्यम से "विद्रोह के इस अगुआ" ने बहाउल्लाह के लगभग पूरे परिवार को और अपने गिरोह के सदस्यों की एक बड़ी संख्या को अपनी तरफ कर लिया। बहाउल्लाह की दो जीवित पत्नियाँ, उनके दो पुत्र, मिर्ज़ा दियाउल्लाह और विश्वासघाती मिर्ज़ा बदीउल्लाह, उनकी एक सगी और एक सौतेली बहन, बहन के पति, जिनमें एक वह बदनाम सैय्यद अली भी था, जो बाब का रिश्तेदार था और दूसरा था वह धूर्त मिर्ज़ा मजीद–दिन, उसकी बहन, एवं वे सौतेले भाई, जो कि प्रतिष्ठावान, वफादार और अब स्वर्गवासी आग़ा–ए–कलीम की संतान थे – इन सभी ने मिलकर उस संविदा की नींव को उखाड़ फेंकने का प्रयास किया जो उस नवघोषित दस्तावेज ने स्थापित की थी। यहाँ तक कि मिर्ज़ा आक़ा जान, जिसने चालीस वर्ष बहाउल्लाह के लिपिक का कार्य किया था, मुहम्मद–जावाद–ए–काज़वीनी जो एड्रियानोपल के दिनों से ही उन असंख्य पातियों का प्रतिलेखन करता आया था जो सर्वोच्च लेखनी द्वारा प्रकट की गईं

थी और उसके पूरे परिवार ने संविदाभंजकों का साथ दिया और स्वयं को उनके षड़यंत्रों के जाल में फँसा लिया।

इस प्रकार अपने ही लोगों द्वारा त्याग दिए जाने, धोखा खाने और उन सभी रिश्तेदारों का विरोध सहन करने के बाद, जो अब उस भवन में तथा पावनतम समाधि के आसपास के घरों में निवास कर रहे थे, अब्दुल बहा, जो अपनी माता और पुत्रों से वंचित हो चुके थे और जिनकी, एक अविवाहित बहन, अपनी चार अविवाहित बेटियों, अपनी पत्नी और अपने चाचा (बहाउल्लाह के सौतेले भाई) के सिवाय अन्य कोई समर्थक नहीं था। अन्दर और बाहर के असंख्य शत्रुओं के सामने उन गम्भीर उत्तरदायित्वों का पूरा–पूरा निर्वहन करने में वे अकेले पड़ गए थे जो उनके उदात्त पद ने उन पर डाल दी थी।

इस दिव्य रूप से स्थापित धर्म का खण्डन और विरोध करने वाले लोग, दुर्व्यवहार करने एवं कलंक लगाने का एक ऐसा अभियान चलाने के लिए एकजुट होकर उठ खड़े हुए, जिसकी तुलना उन दुष्ट आरोपों के विषैलेपन से की जा सकती है जो मिर्ज़ा याह्या और सैय्यद मुहम्मद ने मिलकर बहाउल्लाह पर लगाए थे। चूँकि इन लोगों की एक ही इच्छा और उद्देश्य था, इसलिए ये आपस में जुड़ गए थे, ये अपने प्रयासों में परिश्रमी थे; उन्हें जमाल–ए–बुरूजिर्दि और उसके उन तीन शक्तिशाली और विश्वासघाती साथियों के समर्थन का आश्वासन था, जिनके नाम थे हाजी हुसैन–ए–काशी, खलील–ए–खुई और जलील–ए–तबरीज़ी, जिन्होंने उनका धर्म स्वीकार कर लिया था; ये लोग पत्राचार की एक विशाल व्यवस्था के माध्यम से प्रत्येक ऐसे केन्द्र और व्यक्ति के साथ सम्पर्क में रहते थे जिस तक पहुँचा जा सकता था; उन्हें अपने कार्य में ऐसे गुप्तचरों का समर्थन प्राप्त था जिन्हें वे फारस, इराक, भारत और मिस्र भेजा करते थे; अपने षड़यन्त्रों में वे ऐसे अधिकारियों के आचरण के कारण दुस्साहसी हो चुके थे जिन्हें वे रिश्वत दिया करते थे या बहलाते– फुसलाते थे। मित्र और अजनबी, विश्वासी और अविश्वासी, तथा उच्च और निम्न स्तर के अधिकारियों के समक्ष, खुलेआम और इशारों में, मौखिक और लिखित रूप से उन्होंने अब्दुल बहा को एक महात्वाकांक्षी, स्वेच्छाचारी, अनैतिक व्यक्ति एवं ऐसा निर्दयी और हड़पने वाला बताया, जिसने

जानबूझकर अपने पिता के इच्छापत्र के निर्देशों पर ध्यान नहीं दिया और रहस्यमय एवं अस्पष्ट भाषा में एक ऐसा पद ग्रहण कर लिया जो स्वयं ईश्वरावतार के बराबर था; जिसने पश्चिम के साथ अपने पत्रव्यवहार में यह दावा करना शुरू कर दिया था कि वह ईश्वर के पुत्र ईसा मसीह का वह रूप हैं जो *"अपने पिता की महिमा में"* लौट आया है; जो भारत के अनुयायियों को सम्बोधित किए गए अपने पत्रों में स्वयं को वह प्रतिज्ञापित शाह बेहराम घोषित कर रहा था और वे अधिकार ग्रहण कर रहा था जिनके माध्यम से वह अपने पिता के लेखों की व्याख्या कर सकता था, एक नए विधान का शुभारम्भ कर सकता था और उस सर्वमहान अचूकता का अधिकार ग्रहण कर सकता था जो केवल ईश्वरावतार के पद का परमाधिकार है। उन्होंने आगे इस बात की भी पुष्टि की, कि अब्दुल बहा ने अपने निजी स्वार्थ के लिए अनबन पैदा की, शत्रुता को बढ़ावा दिया और वे किसी भी व्यक्ति को धर्म से बहिष्कृत करने के शस्त्र का उपयोग कर रहे थे; कि उन्होंने एक ऐसे इच्छापत्र के उद्देश्य को, विश्व के महत्व की, युगप्राचीन और सभी धर्मों के इतिहास में अद्वितीय संविदा कहकर घुमा दिया था, जो इन लोगों के अनुसार, मुख्य रूप से बहाउल्लाह के परिवार से सम्बद्ध थी; उन्होंने अपने भाईयों और बहनों को उनके वैध भत्ते से वंचित रखा था और इसे स्वयं की व्यक्तिगत प्रगति के लिए अधिकारियों पर खर्च कर दिया; उन्होंने बार–बार दोहराये गए उन सभी आमंत्रणों को ठुकरा दिया था जो उठने वाली समस्याओं पर विचार–विमर्श करने के लिए तथा प्रचलित मतभेदों का समाधान करने के लिए दिए गए थे; उन्होंने वास्तव में पावन पुस्तक को विकृत कर दिया था और इसके उद्धरणों के बीच में स्वयं द्वारा लिखे गए उ़द्धरण समाविष्ट कर दिए थे, अपने पिता की लेखनी द्वारा प्रकट की गईं कुछ सबसे महत्वपूर्ण पातियों के उद्देश्य और अर्थ को बदल दिया था और अन्त में, उनके ऐसे आचरण से पूरब के अनुयायियों द्वारा विद्रोह किया गया था, जिससे विश्वासियों का समुदाय टुकड़े–टुकड़े हो गया था, यह बड़ी तेज़ी से पतन की ओर जा रहा था और इसका विनाश निश्चित था।

यह वही मिर्ज़ा मुहम्मद अली था जिसने अपने आपको स्वामीभक्ति का प्रतिरूप, "एक परमेश्वर को मानने वाले लोगों का ध्वजधारी", "अपने स्वामी की ओर संकेत करने वाली अँगुल", पावन परिवार का सूरमा, अग़सानों का वक्ता,

और पावन लेखों का समर्थक मानते हुए, बहाउल्लाह के जीवनकाल में ही, इतने खुले रूप से और बड़ी बेशर्मी के साथ स्वयं द्वारा हस्ताक्षरित और मुहरबन्द किए हुए एक लिखित वक्तव्य में वे ही दावे प्रस्तुत किए थे जिनके झूठे आरोप उसने अब अब्दुल बहा पर लगाये थे, कि उनके पिता ने, अपने ही हाथों से उन्हें दण्ड दिया था। इसी मिर्ज़ा मुहम्मद अली को जब एक उदेश्य के तहत भारत भेजा गया था, तो उसने उन पावन लेखों की विषय–वस्तु के साथ छेड़–छाड़ की, जो प्रकाशन के लिए उसके सुपुर्द किए गए थे। यह वही था जिसके अन्दर, अब्दुल बहा के मुँह पर यह कहने की बेशर्मी और दुःसाहस था कि जिस प्रकार पैग़म्बर मुहम्मद का उत्तराधिकार हड़पने में ओमार सफल हो गया था, उसी प्रकार वह भी अपने आपको ऐसा करने के योग्य समझता है। इसी मिर्ज़ा मुहम्मद अली को यह डर था कि कहीं वह अब्दुल बहा से पहले ही इस दुनिया से न उठ जाए, इसलिए उसने अब्दुल बहा से यह आश्वासन ले लिया कि जिस सम्मान की उसे इतनी लालसा थी, वह समय आने पर उसे प्राप्त हो जायेगा। इस आश्वासन को प्राप्त कर लेने के बाद उसने तुरन्त उन्हें यह उत्तर दिया था कि उसे इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि वह अब्दुल बहा से अधिक जियेगा। मिर्ज़ा बदिउल्लाह के पश्चाताप और अब्दुल बहा के साथ उसकी अल्पकालिक सुलह के अवसर पर लिखे और प्रकाशित किए गए उसके अपराध–स्वीकरण में दी गई साक्षी के अनुसार, वह मिर्ज़ा मुहम्मद अली ही था जिसने, उस समय, जब बहाउल्लाह के पार्थिव शरीर को समाधिस्थ किया जाना था, एक चाल चलकर उन दो बक्सों को चुरा लिया जिनमें उसके पिता के वे सबसे बहुमूल्य दस्तावेज़ रखे हुए थे, जो उन्होंने अपने स्वर्गवास से पहले अब्दुल बहा के सुपुर्द किए थे। इसी मिर्ज़ा मुहम्मद अली ने सर्वोच्च लेखनी द्वारा मिर्ज़ा याह्या को सम्बोधित किए गए कुछ निन्दात्मक उद्धरणों में बार–बार आने वाले एक शब्द को अत्यन्त चतुर और सामान्य जालसाज़ी के द्वारा, एक ऐसे भाई (अब्दुल बहा) पर लागू कर दिया, जिसके लिए उसके दिल में भस्म कर देने वाली घृणा थी। और अन्त में, जैसा कि अब्दुल बहा ने अपने इच्छापत्र में वर्णन किया है, इसी मिर्ज़ा मुहम्मद अली ने, सावधानी और चतुराई के साथ, उनकी जान लेने का षड़यंत्र रचा था, जो एक

ऐसा कृत्य था जिसका संकेत शुआउल्लाह (मिर्ज़ा मुहम्मद अली के पुत्र) द्वारा लिखे गए एक पत्र में दिया गया था और जिसकी मूल प्रति, अब्दुल बहा ने अपने इच्छापत्र में संलग्न की थी।

ऐसे कृत्य और उन अन्य असंख्य कृत्यों के कारण, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता, बहाउल्लाह की संविदा प्रत्यक्ष रूप से भंग की गई थी। प्रभुधर्म को एक और आघात पहुँचाया गया था जो अपने प्रारम्भिक प्रभाव में चकरा देने वाला सिद्ध हुआ। क्षणिक रूप से इसने संविदा के ढाँचे को हिला कर रख दिया। प्रकटीकरण के लेखक द्वारा जिस तूफान की भविष्यवाणी की गई थी, वह आ चुका था। वह *"बिजलियाँ"*, वे *"गड़गड़ाहट,* वह *"भूकम्प"*, जिसका *"उनके इच्छापत्र के जहाज़"* के साथ आना निश्चित था, वे सभी घटित हो चुके थे।

अपने पिता के स्वर्गवास के तुरन्त पश्चात घटित हुई इतनी दुःखान्त घटना के कारण अब्दुल बहा का दुःख इतना गहरा हो गया था कि उनके सेवाकाल में देखी गई विजय के बावजूद, यह दुःख उनके जीवन के अन्त तक उन पर अपने निशान छोड़ गया। इस निराशापूर्ण घटना ने जो भावनाएँ उनके मन में उत्पन्न कीं थीं उनकी छवि बिल्कुल वैसी ही थी जैसी कि बहाउल्लाह पर उन घटनाओं के प्रभाव की थी जो मिर्ज़ा याह्या के विद्रोह के कारण घटित हुईं थीं। अपनी एक पाती में उन्होंने लिखा, *"मैं उस आशीर्वादित सौन्दर्य की सौगंध खाता हूँ ! मेरा दुःख और खेद इतना गहरा है कि मेरी लेखनी मेरी उँगलियों के बीच थम कर रह गई है।"* अपने इच्छापत्र में अंकित की गई एक प्रार्थना में वे यह शोक व्यक्त करते हुए लिखते हैं *"तू मुझे आत्मा को अभिभूत कर देने वाली विपत्तियों, हृदय को दुःख से भर देने वाली यातनाओं के सागर में डूबा हुआ देखता है..... । घोर परीक्षाओं ने मुझे घेर लिया है और चारों ओर से मुझ पर संकट टूट पड़े हैं। तू मुझे अपार विपत्तियों के सागर में निमज्जित, अतल गहराईयों में डूबा हुआ, मेरे शत्रुओं द्वारा उत्पीड़ित और मेरे उन कुटुम्बियों द्वारा लगायी गई घृणा की अग्नि में झुलसते हुए देख रहा है, जिनके साथ तूने अपनी शाश्वत संविदा और शक्तिशाली वसीयत की है..... ।"* और एक

बार फिर उसी इच्छापत्र में : *"स्वामी ! तू देख रहा है कि समस्त जीव मेरे लिए आँसू बहा रहे हैं, और मेरे सगे–सम्बन्धी, मेरे कष्टों को देखकर खुशियाँ मना रहे हैं। तेरी महिमा की सौगंध, हे मेरे ईश्वर ! मेरे कुछ शत्रुओं ने भी मेरे कष्टों और दुःखों पर आँसू बहाये हैं।"* अपनी अन्तिम पातियों में से एक में वे पुकार उठते हैं, *"हे तू महिमाओं की महिमा ! मैंने संसार और इसके लोगों को त्याग दिया है, विश्वासघातियों के कारण मेरा दिल टूट गया है और दुःखी है। इस संसार के पिंजरे में, मैं एक डरे हुए पंछी की तरह फड़फड़ा रहा हूँ और हर दिन तेरे साम्राज्य की ओर अपनी उड़ान भरने के लिए तरसता हूँ।"*

इस पूरी घटना पर प्रकाश डालने वाली अपनी एक पाती में स्वयं बहाउल्लाह ने निर्णायक रूप से यह प्रकट किया था, *"ईश्वर की सौगंध, हे लोगों ! स्वर्गदूतों के बीच मेरी आँखें रो रहीं हैं और अली (बाब) की आँखें आँसू बहा रहीं हैं और उस सर्वमहिमामय मन्दिर में मेरा और मुहम्मद का हृदय पुकार उठता है और उनके समक्ष जिन्हें समझ प्रदान की गई है, मेरी आत्मा और पैग़म्बरों की आत्मा चीत्कार कर उठती है..... । मेरा दुःख अपने लिए नहीं है, अपितु उसके लिए है जो प्रत्यक्ष और असंदिग्ध प्रभुसत्ता के साथ मेरे धर्म के साये में मेरे बाद आयेगा, क्योंकि वे उसके आगमन का स्वागत नहीं करेंगे, उसके चिन्हों को अस्वीकार करेंगे, उसकी प्रभुसत्ता का विरोध करेंगे, उसके साथ विवाद करेंगे और उसके धर्म के साथ विश्वासघात करेंगे..... ।* बहाउल्लाह ने एक उतनी ही निर्णायक पाती में कहा था, *"क्या यह सम्भव है कि तेरी सर्वमहान पाती के क्षितिज से तेरी वसीयत के सूर्य के उदय होने के बाद, तेरे पथ में किसी के भी कदम डगमगा जाएँ ? इस पर हमने उत्तर दिया : 'हे मेरी उदात्त लेखनी ! तुम्हें यही शोभा देता है कि तुम स्वयं को उसमें व्यस्त कर लो जिसके लिए तुम्हें उस उदात्त, उस महान ईश्वर ने आदेशित किया है। वह न पूछो जो तुम्हारे दिल को और स्वर्ग के उन निवासियों के दिलों को भस्म कर दे, जिन्होंने मेरे अद्‌भुत धर्म की परिक्रमा की है। तुम्हारे लिए यही उचित है कि तुम उससे बेखबर रहो जो हमने तुमसे छिपाया है। वस्तुतः, तुम्हारा स्वामी, जो सब पर परदा डालने वाला है, सर्वज्ञाता है!"* मिर्ज़ा मुहम्मद अली का उल्लेख करते हुए, बहाउल्लाह ने स्पष्ट और असंदिग्ध भाषा में यह पुष्टि

की थी : *"वस्तुतः वह मेरा एक सेवक मात्र है..... । यदि वह पल भर के लिए भी इस धर्म के साये से बाहर हो जाए, तो वह निश्चित ही मिट जायेगा।"* इसके अतिरिक्त, उन्होंने, एक बार फिर मिर्ज़ा मुहम्मद अली का उल्लेख करते हुए उतनी ही गुरूतापूर्ण भाषा में कहा था : *"उस एक सत्य ईश्वर की सौगंध ! यदि हम एक पल के लिए भी अपने धर्म की वर्षा रोक दें, तो वह मुरझा जायेगा और धूल में मिल जायेगा।"* इसके अतिरिक्त, स्वयं अब्दुल बहा ने यह वर्णन किया है कि : *"इसमें कोई सन्देह नहीं है कि बहाउल्लाह के पावन लेखों के हज़ारों उद्धरणों में, संविदाभजंकों को कोसा गया है।"* इनमें से कुछ उद्धरण तो उन्होंने यह संसार छोड़ने से पहले स्वयं संकलित किए थे और इन्हें अपनी एक अंतिम पाती में शामिल किया था ताकि यह उन लोगों के लिए एक चेतावनी बने और उनसे रक्षा कर सके जिन्होंने उनके सम्पूर्ण सेवाकाल के दौरान उनके प्रति इतनी कठोर घृणा दर्शायी थी और जो एक ऐसी संविदा की नींव उखाड़ने के अत्यन्त करीब आ चुके थे, जिस पर, न केवल स्वयं अब्दुल बहा का प्राधिकार, बल्कि प्रभुधर्म की अखण्डता तक निर्भर करती थी।

पश्चिम में प्रभुधर्म का उदय और इसकी स्थापना

यद्यपि मिर्ज़ा मुहम्मद अली का विद्रोह कई निराशाजनक और दुःखदायी घटनाओं का कारण बना और इसके खतरनाक परिणामों ने कई वर्षों तक संविदा के प्रकाश को धुँधला कर दिया और इसके नियुक्त केन्द्र (अब्दुल बहा) के जीवन के लिए संकट पैदा कर दिया, पूरब और पश्चिम – दोनों में इसके समर्थकों की गतिविधियों की गति को धीमा कर दिया और उनके विचारों को विचलित कर दिया, फिर भी, यदि इस पूरे वृत्तांत को उचित परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो ये घटनाएँ उन नियतकालीन संकटों से न तो कम, न ज़्यादा सिद्ध हुई हैं जो बहाउल्लाह के धर्म की शुरूआत से एक पूरी शताब्दी के दौरान, इसके हानिकारक तत्वों को उखाड़ फेंकने, इसके आधार को मज़बूत करने, इसके लचीलेपन को दर्शाने और इसकी अन्तर्निहित शक्तियों की और भी बड़ी मात्रा को प्रकट करने का माध्यम बनी हैं।

अब जबकि दिव्यरूप से नियुक्त संविदा के प्रावधानों को असंदिग्ध रूप से घोषित किया जा चुका था; संविदा के उद्देश्य को स्पष्ट रूप से समझ लिया गया था और प्रभुधर्म के अधिकतम अनुयायियों के दिलों में इसके सिद्धान्त अटल रूप से स्थापित हो चुके थे; इसके भावी विनाशकारियों के आरम्भिक आक्रमणों को सफलतापूर्वक पराजित किया जा चुका था, तब जिस उद्देश्य से उस संविदा को रचा गया था उसकी प्राप्ति के लिए उस पथ पर आगे बढ़ा जा सकता था, जिसे इसके रचनाकार की उँगलियों ने रेखांकित किया था। इस धर्म के चमकते हुए क्रियाकलाप और कभी न भूलने

वाली विजय ने इस धर्म को जन्म से पहले ही चिन्हित कर दिया था और एशियाई महाद्वीप के कई देशों में, विशेषकर इसके संस्थापक की मातृभूमि में इसके उद्‌भव में सहयोग दिया था। इसके नवनियुक्त दिव्य नेता ने जो इसकी महिमा के सेवक और इसके प्रकाश के विस्तारक थे, इस धर्म की बुनियादी शिक्षाओं और मुख्य सिद्धांतों की व्याख्या कर, इसकी उन गतिविधियों को सुगठित कर और इच्छापत्र के प्रावधानों के द्वारा, इसके क्रमिक विकास को रचनात्मक काल में प्रवेश करने के योग्य बनाया।

बहाउल्लाह के स्वर्गवास के एक वर्ष पश्चात, अब्दुल बहा ने स्वयं प्रकटित एक ऐसे उद्धरण में, जिसने संविदाभंजकों के उपहास को उकसा दिया था, पहले ही एक ऐसी शुभ घटना की भविष्यवाणी कर दी थी जिसे भविष्य की पीढ़ियाँ अब्दुल बहा के सेवाकाल की महानतम विजय मानेंगी जो अन्त में पश्चिमी जगत को एक अमूल्य आशीर्वाद प्रदान करने वाली थी और शीघ्र ही उस दुःख और उन संदेहों को दूर करने वाली थी जिन्होंने अक्का में उनके सह–निर्वासितों के समुदाय को घेर लिया था। पश्चिमी जगत के अन्य देशों के ऊपर, ईश्वर के अमूल्य आशीर्वादों को सबसे पहले प्राप्त करने के लिए और धरती के पाँचों महाद्वीपों में बहुत से देशों में प्रभुधर्म के प्रसार का मुख्य संवाहक बनाने के लिए पश्चिम के महान प्रजातंत्र को चुना गया था।

एक ऐसे समय में जब अब्दुल बहा ने हाल ही में अपने शिक्षण अभियान की शुरूआत की थी और जिस दौरान वे एक ऐसे दुःखदायी संकट की पीड़ा सहन कर रहे थे, उसी दौरान बहाउल्लाह के धर्म के क्रमिक विकास में इतनी निर्णायक घटना के घटित हो जाने अर्थात उत्तर अमेरिकी महाद्वीप में उनका धर्म स्थापित हो जाने के महत्व को ज़्यादा नहीं आंका जा सकता था। जिस वर्ष शीराज़ में प्रभुधर्म का जन्म हुआ था, बाब ने क़य्यूमुल अस्मॉ के एक यादगार उद्धरण में पूरब और पश्चिम के लोगों को चेतावनी देने के बाद, *"पश्चिम के लोगों"* को सीधा सम्बोधित किया था और उल्लेखनीय रूप से उन्हें आदेश दिया था कि वे ईश्वर की सहायता करने के लिए, *"अपने शहरों"* से *"बाहर निकलें"* और ईश्वर के *"एक और अविभाज्य धर्म में बंधुओं के समान बन जाएँ।"* स्वयं बहाउल्लाह ने लिखा था, *"पूरब में उसके प्रकटीकरण का प्रकाश उदित हुआ है;*

पश्चिम में उसके प्रभुत्व के चिन्ह प्रकट हुए हैं।" इसके साथ ही वे यह भविष्यवाणी करते हैं, *"यदि वे महाद्वीप पर उसके प्रकाश को छिपाने का प्रयास करेंगे तो यह निश्चित रूप से महासागर के हृदय के बीच से अपना सिर उठा लेगा और अपनी बुलंद आवाज़ में घोषित करेगा कि "मैं विश्व का जीवनदाता हूँ"।* नबील ने अपने इतिहास में बताया है कि अपने देहावसान के कुछ ही समय पहले बहाउल्लाह ने कहा था कि *"यदि हमारे लेख, पश्चिम से फारस और पूरब के अन्य देशों में भेजे गए होते तो यह स्पष्ट हो जाता कि किस प्रकार पश्चिम के लोग हमारे धर्म को अपना लेते हैं। परन्तु, फारस के लोग इसे समझने में विफल हो गए हैं।"* स्वयं अब्दुल बहा कहते हैं, *"समय के प्रारम्भ से लेकर आज तक, दिव्य प्रकटीकरण का प्रकाश पूरब में उदित हुआ है और इसने अपना प्रकाश पश्चिम पर डाला है। लेकिन इस प्रकार डाले गए प्रकाश ने पश्चिम में एक असाधारण चमक प्राप्त की है। ईसा मसीह द्वारा घोषित किए गए धर्म के बारे में विचार करो। यद्यपि सर्वप्रथम यह पूरब में प्रकट हुआ था फिर भी, जब तक इसका प्रकाश पश्चिम पर नहीं पड़ा, तब तक इसकी क्षमताएँ अपनी सम्पूर्णता में प्रकट नहीं हुई।"* उन्होंने पुष्टि की है कि *"वह दिन निकट आ रहा है जब तुम यह देखोगे कि किस प्रकार बहाउल्लाह के धर्म की ज्योति से पूरब का स्थान पश्चिम ने ले लिया है और तब यह दिव्य मार्गदर्शन का प्रकाश विकीर्ण कर रहा होगा।"* और एक बार फिर *"पश्चिम ने पूरब से प्रकाश प्राप्त किया है लेकिन कुछ विषयों में यह प्रकाश पूरब से अधिक पश्चिम में प्रतिबिम्बित हुआ है।"* इसके अतिरिक्त, *"यह धरती, प्रभु–साम्राज्य के प्रकाश से प्रकाशित हो उठी है। शीघ्र ही, यही प्रकाश पश्चिम पर एक महानतर रोशनी डालेगा।"*

बहाई प्रकटीकरण के संस्थापक ने स्वयं अपने पावनतम ग्रंथ, *किताब–ए–अक़दस* में अमेरिकी महाद्वीप के शासकों को विशेष रूप से सम्बोधित किए जाने का अपूर्व सम्मान प्रदान किया है और उन्हें उल्लेखनीय रूप से परामर्श दिया है कि वे *"अधिराज्य के मंदिर को न्याय और ईश्वर के भय के आभूषण से तथा अपने मस्तक को अपने स्वामी के स्मरण के मुकुट से विभूषित करें"* और उन्हें आदेश दिया है कि वे *"टूटे हुओं को न्याय के हाथ से जोड़ें"* और *"अत्याचारी को अपने आदेशकर्ता, सर्वबुद्धिमान स्वामी के आदेशों*

की छड़ी से कुचल दें।" अब्दुल बहा ने लिखा है कि,*"ईश्वर की दृष्टि में अमेरिकी महाद्वीप वह भूमि है जिसमें उसके प्रकाश की भव्यता प्रकट होगी, जहाँ उसके धर्म के रहस्य उजागर किए जायेंगे, सदाचारी निवास करेंगे और मुक्त विचार वाले लोग एकत्रित होंगे।"* उन्होंने आगे यह भविष्यवाणी की है कि*"अमेरिकी महाद्वीप महान प्रगति का संकेत देता है। इसका भविष्य और भी आशाजनक है, क्योंकि, इसके प्रभाव और प्रकाश की पहुँच दूर–दूर तक है। आध्यात्मिक रूप से यह सभी राष्ट्रों का नेतृत्व करेगा।"*

अपने विशेष अनुग्रह के लिए पश्चिम के महान प्रजातंत्र, अमेरिकी महाद्वीप के अग्रणी देश को चुनकर अब्दुल बहा ने स्पष्ट रूप से यह प्रकट किया है कि,*"सर्वमहान शान्ति के मंदिर का निर्माण करने में और मानवजाति की एकता की घोषणा करने में अमेरिकी लोग सत्य ही अगुआ होने के योग्य हैं।"* और एक बार फिर वे कहते हैं :*"इस अमेरिकी राष्ट्र के पास वह सब कुछ है और वह सामर्थ्य है जिसके माध्यम से यह वह कार्य सम्पादित कर सकता है जिससे इतिहास के पृष्ठ अलंकृत हो जायेंगे, यह विश्व की 'ईर्ष्या' बन सकता है और इसके लोगों की विजय के कारण यह पूरब एवं पश्चिम दोनों में ही आशीर्वादित बन सकता है।"* आगे वे कहते हैं :*"अन्तर्राष्ट्रीय समझौते का आधार स्थापित करने में अमेरिकी प्रजातंत्र प्रथम राष्ट्र बने, मानवजाति की एकता की घोषणा करने वाला पहला राष्ट्र बने, सर्वमहान शान्ति का ध्वज फहराने में यह सर्वप्रथम हो।"* इसके अतिरिक्त उन्होंने लिखा है कि *".....इस देश के निवासी.....अपनी वर्तमान भौतिक उपलब्धियों से उठकर ऐसी ऊँचाईयों तक पहुँचें कि स्वर्गिक प्रकाश इस केन्द्र से प्रवाहित होकर दुनिया के सभी लोगों तक पहुँचे।"*

अब्दुल बहा ने उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप के अनुयायियों को इन शब्दों में सम्बोधित किया है,*"ओ तुम बहाउल्लाह के धर्मप्रचारकों ! .....इस पर विचार करो कि कितना उदात्त और ऊँचा है वह स्थान जिसे प्राप्त करना तुम्हारी नियति है..... । तुम्हारी सफलता का सम्पूर्ण परिमाण अब तक प्रकट नहीं हुआ है, इसका महत्व अभी तक नहीं समझाया जा सका है।"* और वे एक बार फिर कहते हैं :*"तुम्हारा उद्देश्य अकथनीय रूप से प्रतापशाली है। यदि तुम्हारे प्रयासों को सफलता मिलती है तो अमेरिका निश्चित रूप से एक ऐसे केन्द्र के रूप में*

विकसित हो जायेगा जहाँ से आध्यात्मिक शक्ति की तरंगें निकलेंगीं और ईश्वर के साम्राज्य का सिंहासन अपने प्रताप और महिमा की प्रचुरता में मजबूती से स्थापित हो जायेगा।" और अन्त में, उनका स्पंदित कर देने वाला कथन: *"अमेरिकी अनुयायियों द्वारा जब यह दिव्य संदेश अमेरिका के तटों से बाहर ले जाया जायेगा और युरोप, एशिया, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलेशिया महाद्वीपों और प्रशान्त महासागर के द्वीपों तक फैलाया जायेगा, तब यह समुदाय स्वयं को अनन्त साम्राज्य के सिंहासन पर सुरक्षित रूप से स्थापित पायेगा, तब यह पूरी धरती इसकी प्रभुता और महानता की प्रशंसा से गूँज उठेगी।"*

कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि इस प्रकार से आशीर्वादित देश का समुदाय, जिसका एक अत्यन्त समृद्ध महाद्वीप में इतना श्रेष्ठ स्थान है, अपने पचास वर्ष के बहाई जीवनकाल में बहाउल्लाह के धर्म के इतिहास में विजय से भरपूर कई पृष्ठ जोड़ सका है। यह वह समुदाय है जो बहाउल्लाह की संविदा की घोषणा द्वारा सृजित की गई सृजनात्मक शक्ति के माध्यम से जब से अस्तित्व में आया है, तब से इसे अब्दुल बहा की छत्रछाया में पोषित किया गया है, असंख्य पातियों के प्रकटीकरण, लौटने वाले तीर्थयात्रियों को दिए गए निर्देशों; उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप में स्वयं अब्दुल बहा की यात्रा और इन यात्राओं के दौरान उनके द्वारा संविदा की स्थापना पर बल और अन्त में, दिव्य योजना की पातियों में निहित उनके आदेशों के माध्यम से अपने अपूर्व उद्देश्य को पूरा करने के लिए उनके द्वारा प्रशिक्षित किया जाना। यही वह समुदाय है जिसने अपने बचपन से लेकर आज तक अथक प्रयास किए हैं और जो बिना किसी सहायता के, स्वयं के प्रयासों द्वारा पूरब और पश्चिम के उन साठ से भी अधिक देशों में बहाउल्लाह का ध्वज फहराने में सफल हुआ है। अब यह समुदाय बहाउल्लाह के धर्म की परिधि में सम्मिलित किए जाने के सम्मान का दावा कर सकता है। बहाउल्लाह की विश्व व्यवस्था की घोषणा करने वाली प्रशासनिक संस्थाओं की प्रणाली विकसित करने और इसके ढाँचे का निर्माण करने में सर्वप्रथम होने की विशिष्टता इसी समुदाय को प्राप्त है। इसके सदस्यों के प्रयासों द्वारा उस विश्व व्यवस्था का अग्रणी पश्चिम का मातृ उपासना मंदिर, जो कि *किताब–ए–अक़दस* में विहित की गई श्रेष्ठतम संस्थाओं में से एक है, इसका निर्माण उत्तरी अमेरिकी

महाद्वीप के मध्य में ही हुआ है। इसके पायनियरों, शिक्षकों और प्रशासकों के प्रयासों के कारण प्रभुधर्म के साहित्य में वृद्धि हुई है, इसके लक्ष्यों और उद्देश्यों की से रक्षा की गई है और इसकी नवजात संस्थाएँ दृढ़ता से स्थापित हुई हैं। इसके सबसे विशिष्ट भ्रमणशील शिक्षकों में से कुछ के अकेले और अदम्य प्रयासों के परिणामस्वरूप शाही परिवार की एक सदस्या ने बहाउल्लाह का धर्म स्वीकार किया और आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वयं की लेखनी से कई बयानों में इसकी स्पष्ट घोषणा की है। और अन्त में, इस समुदाय के सदस्यों को अर्थात बहाई विधान के शौर्यकाल की सुबह लाने वालों के इन आध्यात्मिक वंशजों को इस बात के लिए सदा सम्मानित किया जाना चाहिए कि ये अनेक अवसरों पर आश्चर्यजनक तत्परता, उत्साह और दृढ़संकल्प के साथ, अत्याचार पीड़ितों के हितों की रक्षा करने के लिए, अभावग्रस्तों को राहत पहुँचाने के लिए और फारस, रूस, मिस्र, इराक और जर्मनी जैसे देशों में जहाँ इस धर्म के अनुयायियों को अलग–अलग संख्या में जातीय और धार्मिक उत्पीड़न सहन करना पड़ा है वहाँ अपने इन भाई–बहनों द्वारा निर्मित किए गए भवनों और संस्थाओं के हितों की रक्षा करने के लिए उठ खड़े हुए हैं।

वास्तव में, बड़ी विचित्र बात है कि एक ऐसे देश में जिसे पश्चिम में उसके सभी साथी राष्ट्रों के बीच इतना बेमिसाल कार्य सौंपा गया हो उस देश में, इतने महिमाशाली धर्म के संस्थापक का उल्लेख उस धर्माधिकारी वर्ग के एक प्रमुख सदस्य द्वारा किया गया हो, जिसके साथ इस धर्म को इतने लम्बे समय तक संघर्ष करना पड़ा है और जिसके हाथों इसने बार–बार यातनाएँ झेली हैं। और भी अजीब बात यह है कि वह व्यक्ति जिसने बाब द्वारा अपने ध्येय की घोषणा के पचास साल बाद, शिकागो में सर्वप्रथम इसकी स्थापना की, उसी ने कुछ साल बाद स्वयं उस ध्वज को त्याग दिया जो उसने अकेले ही उस शहर में फहराया था।

23 सितम्बर, 1893 को, बहाउल्लाह के स्वर्गवास के कोई एक साल बाद, शिकागो में आयोजित वर्ल्ड पार्लियामेंट ऑफ रिलीजन्स में उस लेखपत्र में यह घोषित किया गया कि हाल ही में अक्का में *"फारस के एक प्रख्यात महापुरूष" "बाबी संत"* की मृत्यु हो गई और उनके स्वर्गवास के दो वर्ष पहले "कैम्ब्रिज के

एक विद्वान" ने उनसे भेंट की थी, जिनके समक्ष इस महापुरूष ने "इतनी श्रेष्ठ, बिल्कुल ईसा मसीह जैसी भावनाएँ" व्यक्त की थीं। एक साल से भी कम समय के बाद, फरवरी 1894 में, इब्राहिम खैरूल्लाह नाम के एक सीरियाई डॉक्टर, जिन्होंने कॉयरो में निवास करने के दौरान हाजी अब्दुल–करीम–ए–तेहरानी के माध्यम से प्रभुधर्म को स्वीकार किया था, जिन्हें बहाउल्लाह की ओर से एक पाती प्राप्त हुई थी, जिन्होंने अब्दुल बहा के साथ पत्र व्यवहार किया था और जो दिसम्बर सन् 1892 में न्यूयॉर्क पहुँचे थे, वह अब शिकागो में निवास करने लगे थे और सक्रिय एवं व्यवस्थित रूप से उस धर्म की शिक्षा देने लगे थे जिसे उन्होंने अपनाया था। दो साल के अन्दर उन्होंने अब्दुल बहा को अपनी राय लिख कर भेजी और उन्हें अपने प्रयासों को मिलने वाली उल्लेखनीय सफलता के बारे में बताया था। सन् 1895 में उन्हें केनोशा में एक अवसर मिला, जहाँ उन्होंने अपनी शिक्षण गतिविधियों के दौरान सप्ताह में एक बार जाना जारी रखा। बताया जाता है कि अगले साल तक, इन दो शहरों के अनुयायियों की गिनती सैंकड़ों में की गई। सन् 1897 में उन्होंने 'बाबुद्दीन' नाम की अपनी पुस्तक प्रकाशित की और कन्सास, न्यूयॉर्क, इथाका और फिलाडेल्फिया शहर का दौरा किया जहाँ उन्होंने बड़ी संख्या में प्रभुधर्म के समर्थक जुटाने में सफलता प्राप्त की। उस साहसी दिल वाले थोर्नटन चेस ने, जिन्हें अब्दुल बहा ने थॉबित (दृढ़) के उपनाम से सम्मानित किया था, सन् 1894 में प्रभुधर्म को स्वीकार किया, पश्चिम की मातृ शिक्षक अमर लुईसा ए. मूर, डॉ. एडवर्ड गेटसिंगर, (जिनसे बाद में उनका विवाह हुआ) हावर्ड मेकनट, आर्थर पी. डोज, इसाबेल्ला डी. ब्रिटिंगहम, लिलियन एफ. केप्स, पॉल के. डीली, चेस्टर आइ. थेचर और हेलेन एस. गुडॉल, जिनके नाम उत्तर अमेरिकी महाद्वीप में बहाउल्लाह के धर्म की स्थापना के साथ सदा जुड़े रहेंगे, वे उन लोगों में सबसे प्रधान हैं, जो उन आरम्भिक वर्षों में इस नए दिवस के आह्वान पर जाग उठे थे और जिन्होंने इस नवघोषित संविदा की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था।

सन् 1898 तक, जानी मानी समाजसेविका, श्रीमती फोइबी हर्स्ट(सेनेटर जॉर्ज एफ. हर्स्ट की पत्नी) ने, जिन्हें कैलिफोर्निया के अपने प्रवास के दौरान श्रीमती गेटसिंगर ने प्रभुधर्म की ओर आकर्षित किया था, उन्होंने पावन भूमि में

अब्दुल बहा से भेंट करने का अपना इरादा व्यक्त किया और कई अनुयायियों को अपने साथ चलने के लिए आमंत्रित किया, जिनमें डॉ. एवं श्रीमती गेटसिंगर, डॉ. खैरूल्लाह और उसकी पत्नी भी शामिल थी। श्रीमती हर्स्ट ने अक्का की उनकी ऐतिहासिक तीर्थयात्रा के लिए आवश्यक प्रबन्ध पूरे किए। पेरिस में कई अमेरिकी मूल निवासियों को भी उस दल में शामिल कर लिया गया जिनमें, एलिस बोल्स, जिन्हें श्रीमती गेटसिंगर ने प्रभुधर्म का संदेश दिया था, मिस पियर्सन और ऐन एपर्सन, श्रीमती हर्स्ट की दोनों भांजियों सहित श्रीमती थोर्नबरह और उनकी बेटियाँ शामिल थीं। आगे चलकर जब मिस्र में डॉ. खैरूल्लाह की बेटियाँ और उनकी दादी भी इस दल में शामिल हो गईं जिन्हें डा. खैरूल्लाह ने हाल ही में प्रभुधर्म का अनुयायी बनने में सहायता की थी, तो इनकी संख्या और भी बढ़ गई।

ये पन्द्रह तीर्थयात्री, एक के बाद एक तीन दलों में आये। इनमें सबसे पहला दल, जिसमें डॉ. और श्रीमती गेटसिंगर शमिल थे, 10 दिसम्बर 1898 को अक्का की कारा नगरी पहुँचा। बहाउल्लाह की संविदा के केन्द्र और हाल ही में उठ खड़े होने वाले उनके प्रकटीकरण के पश्चिमी अग्रदूतों के बीच एक अंतरंग सम्बन्ध स्थापित हो चुका था; बहाउल्लाह की समाधि पर जाते समय उत्पन्न होने वाली परिस्थितियाँ हृदयस्पर्शी थीं और इन तीर्थयात्रियों को यह महान सम्मान प्रदान किया गया कि बहाउल्लाह की समाधि के अंतरतम कक्ष तक उन्हें स्वयं अब्दुल बहा द्वारा ले जाया गया। उनके कम समय तक ठहरने के बावजूद, उस प्रेममय और उदार अतिथेय (अब्दुल बहा) ने सिद्धान्त और उदाहरण के द्वारा शक्तिशाली रूप से उनके अन्दर बहुत जोश भर दिया था और उनके प्रेरणादायक परामर्शों, उनके ज्ञानवर्धक निर्देशों तथा उनके दिव्य प्रेम के असंख्य प्रमाणों ने इन तीर्थयात्रियों के हृदयों में उत्साह और अटल दृढ़संकल्प की ज्वाला प्रज्वलित कर दी। इन सभी बातों ने, पश्चिम में प्रभुधर्म के विकास के एक नए दौर की शुरूआत की, एक ऐसा दौर जिसका महत्व उन कार्यों द्वारा पर्याप्त रूप से प्रदर्शित किया गया है जो, इन्हीं तीर्थयात्रियों में से कुछ ने और उनके सह–अनुयायियों ने आगे चलकर किए।

इनमें से एक तीर्थयात्री ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए लिखा है, "उस पहली मुलाकात के बारे में न तो मुझे खुशी याद है, न गम, न ही ऐसा कुछ भी जिसके बारे में मैं बता सकूँ। मुझे अचानक ही बड़ी ऊँचाईयों पर ले जाया

गया था, मेरी आत्मा उस दिव्यात्मा के सम्पर्क में आ चुकी थी और एक पवित्र, और महान शक्ति ने अपने दर्शन देकर मुझे अभिभूत कर दिया था.....। हम उनके प्रतापशाली चेहरे से अपनी दृष्टि हटा नहीं पा रहे थे; उन्होंने जो कुछ भी कहा, हमने सुना; उनके आदेश पर हमने उनके साथ चाय पी; लेकिन अस्तित्व जैसे थम–सा गया था और जब वे उठकर अचानक चले गए तो हम एक झटके के साथ जीवन में लौट आए; लेकिन इस धरती के उसी जीवन में फिर कभी नहीं, ओह ! ईश्वर का शुक्र है कि फिर कभी नहीं।" यह तीर्थयात्री जिस दल की एक सदस्या थी उसी दल को प्रदान किए गए एक अन्तिम साक्षात्कार का वर्णन करते हुए उसने बताया है कि, "हमारा डर, पूर्ण आस्था में बदल गया, हमारी दुर्बलता बल में, हमारा दुःख आशा में और उनके प्रति अपने प्रेम में हम अपने आप को भी भूल चुके थे। जब हम सब उनके सामने बैठे थे और उनकी बात सुनने की प्रतीक्षा कर रहे थे तब कुछ अनुयायी बहुत रोने लगे। उन्होंने उन्हें आदेश दिया कि वे अपने आँसू पोंछ लें, लेकिन वे लोग एक पल के लिए भी रूक नहीं पा रहे थे। तब उन्होंने एक बार फिर उनसे कहा कि वे उनकी खातिर रोना बन्द कर दें अन्यथा जब तक सभी अपने आँसू नहीं पोछेंगे, तब तक वे हमसे बात नहीं करेंगे और हमें बहाउल्लाह की शिक्षाओं के विषय में नहीं बतलायेंगे।"

श्रीमती हर्स्ट ने स्वयं, अपने एक पत्र में बताया है कि, "वे तीन दिन मेरे जीवन के सबसे यादगार दिन थे.....। मैं मास्टर (अब्दुल बहा) का वर्णन करने का प्रयास नहीं करूँगीः मैं बस इतना कहूँगी कि मैं अन्तर्रात्मा से यह मानती हूँ कि वे ही मास्टर हैं और इस संसार में मुझे प्राप्त महानतम आशीर्वाद है कि मुझे उनकी उपस्थिति में रहने का और उनके पावन मुखड़े के दर्शन करने का सौभाग्य मिला.....। इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि अब्बास एफेन्दी इस दिवस और पीढ़ी के मसीहा हैं और हमें अन्य किसी की खोज करने की आवश्यकता नहीं है।" एक अन्य पत्र में वे आगे लिखती हैं, "मैं यह कहना चाहूँगी कि इस दुनिया में मैंने उन जैसी अद्‌भुत विभूति नहीं देखी है और न देखने की उम्मीद है.....। जिस आध्यात्मिक वातावरण से वे घिरे रहते हैं और जिससे वे सभी प्रभावित होते है जिन्हें उनके निकट रहने का सौभाग्य मिला है, उस वातावरण का वर्णन नहीं किया जा सकता.....। मैं अपनी अन्तर्रात्मा से उनमें विश्वास करती हूँ और मैं

आशा करती हूँ कि वे सभी जो अपने आप को विश्वासी कहते हैं, समस्त महानता, महिमा और प्रशंसा का श्रेय उन्हें देंगे क्योंकि, निश्चित रूप से वे ही ईश्वर के पुत्र हैं और उस परम पिता की आत्मा उनमें निवास करती है।"

यहाँ तक कि बहाउल्लाह के धर्म को स्वीकार करने वाले अपनी जाति के प्रथम पश्चिमी सदस्य अर्थात श्रीमती हर्स्ट के अफ्रीकी रसोईये रोबर्ट टर्नर ने भी उस ऐतिहासिक तीर्थयात्रा के दौरान अब्दुल बहा के प्रभाव से परमानंद प्राप्त किया। उसकी आस्था की दृढ़ता ऐसी थी कि आगे चलकर जब उसकी मालकिन ने प्रभुधर्म को त्याग दिया, तब भी उसकी आस्था की चमक धुंधली नहीं पड़ी या उन भावनाओं की गहराई कम नहीं हुई जो अब्दुल बहा द्वारा उस पर बरसाई प्रेममयी दया के कारण उसके दिल में उत्पन्न हुई थी।

ईश्वर के ध्यान में मदहोश इन तीर्थयात्रियों में से कुछ का फ्राँस और अन्य का संयुक्त राष्ट्र लौटना ऐसी सुनियोजित एवं सतत् चलने वाली गतिविधि के शुरू होने का संकेत था, जो जैसे–जैसे गतिशील होती गई और पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप के राज्यों में अपनी शाखाएँ फैलाने लगी, वैसे–वैसे इतनी विकसित हो गई कि स्वयं अब्दुल बहा ने निश्चय किया कि जैसे ही वे अक्का में अपनी लम्बी कैद से रिहा होंगे, पश्चिम जाने का अपना व्यक्तिगत लक्ष्य पूरा करेंगे। इस बात से विचलित हुए बगैर कि पावन भूमि से लौटने के बाद डॉ. खैरूल्लाह की महत्वाकांक्षा ने जो विनाशकारी संकट पैदा किया था उन आक्रमणों का जो उसने और प्रभुधर्म से निकाले गए उसके अन्य साथियों के साथ–साथ उन ईसाई धर्माधिकारियों ने किए थे, जो प्रभुधर्म की बढ़ती हुई ताकत से तथा विस्तार पा रहे इसके प्रभाव से ईर्ष्या करने लगे थे; ये तीर्थयात्री लगातार आते रहे। पावन भूमि से होकर लौटने वाले उन तीर्थयात्रियों को लगातार अब्दुल बहा का मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा जो असंख्य पातियों में दर्ज किया गया था। इस समुदाय के मार्गदर्शन, इसके नैतिक विकास और सुगठन के लिए अब्दुल बहा के आदेश पर लगातार भेजे जाने वाले संदेशवाहकों और शिक्षकों के माध्यम से अमेरिकी अनुयायियों का यह समुदाय, अपने कठिन कार्य की एक ऐसी श्रृँखला को प्रारम्भ करने के लिए उठ खड़ा हुआ, जिसे एक दशक के बाद, स्वयं अब्दुल बहा ने आशीर्वादित

और प्रेरित किया था तथा यह उन अद्वितीय सेवाओं का केवल एक शुभारम्भ था जो उनके पिता के विधान के रचनात्मक काल के दौरान इस समुदाय के सदस्य अर्पित करने वाले थे।

जैसे ही, इनमें से एक तीर्थयात्री, श्रीमती मे बोल्स पेरिस लौटीं, वैसे ही उन्होंने अब्दुल बहा के दृढ़ निर्देशों का पालन करके उस शहर का सबसे पहला बहाई केन्द्र स्थापित करने में सफलता प्राप्त कर ली, जो यूरोपीय महाद्वीप पर स्थापित किया जाने वाला सबसे पहला बहाई केन्द्र था। उनके आगमन के कुछ ही समय बाद सबसे पहले अंग्रेज़ अनुयायी, थॉमस ब्रेकवेल द्वारा प्रभुधर्म स्वीकार किए जाने से इस केन्द्र को और भी बल प्राप्त हुआ। थोमस ब्रेकवेल की याद में अब्दुल बहा द्वारा प्रकट की गई उत्कट प्रशंसा के कारण वे अमर हो गए। हिप्पोलाईट ड्रेफस प्रभुधर्म को स्वीकार करने वाले सबसे पहले फ्राँसिसी व्यक्ति द्वारा प्रभुधर्म स्वीकार किए जाने से इस केन्द्र को और भी समर्थन मिला। जैसे–जैसे समय बीतता गया, वैसे–वैसे हिप्पोलाईट ड्रेफस बहाउल्लाह के लेखों के अनुवादों, यात्राओं और अन्य पायनियर सेवाओं के माध्यम से उस कार्य का सुगठन कर सके जो उनके देश में शुरू किया गया था। लौरा बारनी जिनकी अमर सेवा यह थी कि उन्होंने पावन भूमि में उनकी लम्बी तीर्थयात्रा के दौरान अब्दुल बहा द्वारा कई विषयों पर उन्हें प्रदान की गईं उन अमूल्य व्याख्याओं को एकत्रित किया और आने वाली पीढ़ियों के लिए इन्हें *"सम आन्सर्ड क्वेश्चंस"* को एक पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया। तीन साल बाद 1902 में, मे बोल्स ने जिनका अब एक कनाडाई व्यक्ति से विवाह हो चुका था, अपना निवास मॉन्ट्रियल में स्थानान्तरित कर लिया और वे उस राज्य में प्रभुधर्म की नींव स्थापित करने में सफल रहीं।

ऐसे कभी न भूलने वाले तीर्थ से उत्पन्न होने वाले सृजनात्मक प्रभावों के सीधे परिणामस्वरूप श्रीमती थार्नबरह–क्रॉपर लंदन में ऐसी गतिविधियाँ शुरू करने में सफल हो गईं जिन्होंने उन प्रथम अंग्रेज़ अनुयायियों, विशेषकर एथेल जे रोज़ेनबर्ग जिन्होंने सन् 1899 में प्रभुधर्म को स्वीकार किया था, के प्रयासों के माध्यम से प्रेरणा और विस्तार पाकर उन्हें ब्रिटिश आईल्स में अपनी प्रशासनिक संस्थाओं का ढाँचा तैयार करने योग्य बनाया। उत्तर अमेरिकी

महाद्वीप में डॉ. खैरूल्लाह के धर्मत्याग और निन्दात्मक प्रकाशनों ने एक नवजात समुदाय की वफादारी की कड़ी से कड़ी परीक्षा ली (डॉ. खैरूल्लाह को मिर्ज़ा मुहम्मद अली और उसके बेटे शुआउल्लाह का प्रोत्साहन प्राप्त था, जो उसके माध्यम से अमेरिका पहुँच गए थे); फिर भी, अब्दुल बहा द्वारा लगातार भेजे गए उन संदेशवाहकों ने (जिनमें हाजी अब्दुल–करीम–ए–तेहरानी, हाजी मिर्ज़ा हसन–ए–खुरासानी, मिर्ज़ा असदुल्लाह और मिर्ज़ा अबुल फज़ल शामिल थे) बड़ी तेज़ी के साथ अनुयायियों के सन्देहों को दूर करने और समुदाय की एकता को बनाए रखने एवं उन प्रशासनिक संस्थाओं का नाभिक तैयार करने के विषय में अनुयायियों की समझ को और गहरा कर दिया, जिनका औपचारिक शुभारम्भ दो दशकों के बाद अब्दुल बहा की संविदा और इच्छापत्र के स्पष्ट प्रावधानों के माध्यम से होने वाला था। 1899 में सात अधिकारियों का एक परिषद मण्डल नोशा शहर में स्थापित किया गया। यह परिषद मण्डल उन सभाओं की एक श्रृंखला का पूर्वसूचक था जो प्रथम बहाई शताब्दी के समाप्त होने से पहले, पूरे उत्तर अमेरिकी महाद्वीप के एक तट से दूसरे तट तक स्थापित होने वाली थी। सन् 1902 में, शिकागो में एक बहाई पब्लिशिंग सोसायटी गठित की गई जिसका उद्देश्य था इस धीरे–धीरे विकास कर रहे समुदाय में साहित्य का प्रसार करना। प्रभुधर्म की शिक्षाओं को फैलाने के लिए न्यूयॉर्क में एक बहाई बुलेटिन का शुभारम्भ किया गया। आगे चलकर, शिकागो में "बहाई न्यूज़" नाम की एक अन्य पत्रिका प्रकाशित हुई और शीघ्र ही यह एक ऐसी पत्रिका में विकसित हो गई जिसका नाम "स्टार ऑफ द वेस्ट" था। *"निगूढ़ वचन", "किताब–ए–ईक़ान", "सम्राटों को सम्बोधित पातियाँ" और "सात घाटियाँ"* जैसे बहाउल्लाह के कुछ सबसे महत्वपूर्ण लेखों के साथ–साथ अब्दुल बहा की पातियों और मिर्ज़ा अबुल फज़ल द्वारा लिखे गए अनेक लेखों और प्रसार पुस्तिकाओं का बड़े उत्साह के साथ अनुवाद किया गया। पूरब के विभिन्न केन्द्रों के साथ बड़े पैमाने पर पत्र–व्यवहार शुरू किया गया जिसका विस्तार और महत्व धीरे–धीरे बढ़ने लगा। इसी प्रकार, प्रभुधर्म का संक्षिप्त इतिहास, इसके पक्ष में लिखी गईं पुस्तकें और पैम्फलैट, प्रेस के लिए लिखे गए लेख, यात्राओं और तीर्थों के वर्णन, स्तुतियाँ और कविताएँ भी प्रकाशित की गईं जो व्यापक रूप से प्रचारित हुईं।

इसके साथ–साथ, वे यात्री और शिक्षक, जो अपने प्रिय धर्म को निगल जाने का खतरा बनने वाले तूफान की परीक्षाओं और विपत्तियों से विजयी होकर निकले थे, प्रभुधर्म के दुर्गों को सुदृढ़ करने और उनकी संख्या बढ़ाने के लिए स्वेच्छा से उठ खड़े हो गए। वॉशिंगटन, बोस्टन, सेन फ्रैंसिस्को, लॉस एन्जिल्स, क्लेवलैंड, बाल्टिमोर, मिनियापोलिस, बफेलो, रॉचेस्टर, पिट्सबर्ग, सिएटल और सैंट पॉल जैसे शहरों में एवं अन्य स्थानों पर भी केन्द्र खोले गए। इस नवजात धर्म को अपने मूल निवासी देश की सीमाओं से बाहर ले जाने के उत्सुक साहसी पायनियरों ने या तो भ्रमणकारी शिक्षकों के रूप में या नए निवासियों के रूप में ऐसी यात्राएँ कीं और ऐसी योजनाओं से वे जुड़ गए जिनके माध्यम से इस धर्म का प्रकाश यूरोप के मध्य में, दूर–दराज़ पूरब में और प्रशान्त महासागर के द्वीपों में फैल गया। मेसन रेमी ने रूस और फारस की यात्रा की और बाद में, होवर्ड स्ट्रूवेन के साथ बहाई इतिहास में पहली बार पूरी दुनिया का दौरा किया और अपनी इस यात्रा के दौरान हवाईयन द्वीपों, जापान, चीन, भारत और बर्मा की भी यात्रा की। हूपर हैरिस और हारलन ऑबर ने कम से कम सात माह के दौरान, भारत और बर्मा का भ्रमण किया और इनके पूना, लाहौर, कलकत्ता, रंगून और मन्डालय शहरों का दौरा किया। डॉ. के. ई. फिशर की तरह, आल्मा नोब्लोच ने जर्मनी में प्रभुधर्म का ध्वज स्थापित किया और इसका प्रताप ऑस्ट्रिया तक पहुँचाया। तेहरान शहर के बहाइयों के सहयोग से प्रभुधर्म के अनेक हितों को बढ़ावा देने के लिए डॉ. सुसेन आई. मूडी, सिडनी स्प्रेग, लिलियन एफ. केप्स, डॉ. सेराह क्लॉक और एलिज़ाबेथ स्टुअर्ट ने अपना निवास तेहरान में स्थानांतरित कर लिया। सेराह फार्मर, जिन्होंने मैन राज्य के ग्रीन एकर शहर में सन् 1894 में पहले ही ग्रीष्मकालीन सम्मेलनों की शुरूआत कर दी थी उन्होंने, सन् 1900 में अक्का की अपनी तीर्थयात्रा के बाद, इन सम्मेलनों में दी गई सुविधाओं को उस धर्म के अनुयायियों की सेवा में प्रस्तुत कर दिया जिसे उन्होंने स्वयं भी हाल ही में अपनाया था।

अन्तिम किन्तु उतनी ही महत्वपूर्ण बात यह है कि इश्क़ाबाद में अपने सह–अनुयायियों द्वारा प्रस्तुत किए गए उदाहरण से प्रेरित होकर, जो पहले ही बहाई विश्व के प्रथम मश्रिकुल–असकार का निर्माण शुरू कर चुके थे, शिकागो

के बहाईयों ने एक उपासना मंदिर का निर्माण करने की अनुमति के लिये अब्दुल बहा को एक प्रार्थनापत्र भेजा। जून 1903 में प्रकट की गई एक पाती में अब्दुल बहा का उत्साह भरा अनुमोदन प्राप्त करके अपनी सीमित संख्या और संसाधनों के बावजूद, उन्होंने एक ऐसा कठिन कार्य शुरू कर दिया जिसे बहाउल्लाह के धर्म के प्रति अमेरिका के बहाईयों का और वास्तव में पूरे पश्चिम का अब तक का सबसे बड़ा योगदान समझा जाना चाहिए। आगे चलकर, अब्दुल बहा द्वारा उन्हें दिया गया प्रोत्साहन और विभिन्न सभाओं द्वारा एकत्रित किए गए अंशदान के परिणामस्वरूप इस सभा के सदस्यों ने यह निर्णय लिया कि जिस अदभुत् कार्य की योजना उन्होंने बनाई थी उसे शुरू करने के लिए वे देशभर के अनुयायियों के प्रतिनिधियों को शिकागो में मिलने के लिए आमंत्रित करेंगे। इस उद्देश्य से 26 नवम्बर, 1907 को एकत्रित होने वाले प्रतिनिधियों ने मंदिर के लिए एक उपयुक्त स्थान खोजने के लिए एक समिति नियुक्त की। 9 अप्रैल, 1908 तक, दो ऐसे प्लाट खरीदने के लिए दो हजार डॉलर की रकम अदा की जा चुकी थी जो मिशिगन झील के निकट स्थित थे। अब्दुल बहा के निर्देशों के अनुपालन में मार्च 1909 में, विभिन्न बहाई केन्द्रों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें छत्तीस शहरों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया जो उसी दिन शिकागो में एकत्रित हुए थे जिस दिन अब्दुल बहा ने बाब के पावन अवशेषों को कार्मल पर्वत पर निर्मित की गई विशेष समाधि में समाधिस्थ किया था। इन प्रतिनिधियों ने बहाई टेम्पल युनिटी के नाम से एक स्थाई राष्ट्रीय संगठन स्थापित किया जिसे इलिनोईस राज्य के नियमों के अधीन कार्य करने वाले एक संघ के रूप में शामिल किया गया और जिसे मंदिर की सम्पत्ति को अपने नाम करने और इसके निर्माण के लिए तकनीक और साधन प्रदान करने का पूरा अधिकार प्रदान किया गया। इसी सम्मेलन में एक विधान रचा गया, बहाई उपासना मंदिर के लिए कार्यकारिणी मण्डल का चुनाव किया गया और इन प्रतिनिधियों ने पिछले सम्मेलन में सुझाई गई भूमि खरीदने का काम पूरा करने का अधिकार इस मण्डल को प्रदान किया। इस ऐतिहासिक कार्य के लिए भारत, फारस, तुर्की, सीरिया, फिलीस्तीन, रूस, मिस्र, जर्मनी, फ्राँस, इंग्लैंड, कनाडा, मैक्सिको, हवाईयन द्वीपों और यहाँ तक कि मॉरीशस से और कम से कम साठ

अमेरिकी देशों से भी अंशदान प्राप्त हुआ, जो अब्दुल बहा के आगमन के दो साल पहले 1910 तक कम से कम बीस हजार डॉलर के कुल योग तक पहुँच गया था और जो पूरब और पश्चिम दोनों में बहाउल्लाह के अनुयायियों की एकता का एवं उन अमेरिकी अनुयायियों के आत्मत्यागी प्रयासों का उल्लेखनीय प्रमाण है जिन्होंने कार्य की प्रगति के साथ–साथ मंदिर के ढाँचे के निर्माण और इसकी बाहरी सजावट के लिए ज़रूरी एक मिलियन डॉलर से भी अधिक बड़ी रकम का एक विशाल हिस्सा देने का दायित्व उठाया।

अब्दुल बहा के कारावास की पुनरावृत्ति

घोर कष्टों से परखे जाने वाले एक साहसी समुदाय की उल्लेखनीय उपलब्धियों के कारण इतनी मजबूत नींव स्थापित हो गई थी कि इसने संविदा के केन्द्र (अब्दुल बहा) को आमंत्रित करने में सफलता प्राप्त की जिन्होंने उस समुदाय को अस्तित्व दिया था और जिन्होंने अपार देखभाल एवं दूरदर्शिता के साथ इसके भाग्य की निगरानी की थी। इस समुदाय की ये उल्लेखनीय उपलब्धियाँ पश्चिमी जगत में बहाउल्लाह की नव–स्थापित संविदा का पहला परिणाम थीं। फिर भी, जब तक अब्दुल बहा उस घोर संकट से मुक्ति नहीं पाते जिसने पहले ही उन्हें कई वर्षों तक कष्टपूर्ण बंधन में रखा था तब तक वे उस महाद्वीप की अपनी यात्रा नहीं कर सकते थे जहाँ इतनी शानदार और स्थाई उपलब्धियों ने उनके पिता के धर्म के उदय और स्थापना को चिन्हित किया था।

उनके सेवाकाल का यह दूसरा बड़ा संकट अपने स्वरूप में बाहरी था, लेकिन मिर्ज़ा मुहम्मद अली के विद्रोह से उत्पन्न होने वाले संकट से कुछ कम गम्भीर नहीं था। इस संकट ने अब्दुल बहा के जीवन को बड़े संकट में डाल दिया। कुछ सालों तक अब्दुल बहा को उस अपेक्षाकृत आज़ादी से वंचित रखा गया जो उन्हें प्राप्त हुई थी, इसने उनके परिवार के साथ–साथ पूरब और पश्चिम में प्रभुधर्म के अनुयायियों को गहरे दुःख में डुबो दिया तथा उनके निर्दयी शत्रुओं की नीचता और दुष्टता को इस तरह खोल कर रख दिया था जैसा पहले कभी नहीं देखा गया था। यह संकट अमेरिकी तीर्थयात्रियों के प्रथम दल के पावन भूमि से चले जाने के दो साल बाद उत्पन्न हुआ और सात

वर्ष से भी अधिक समय तक भिन्न–भिन्न रूप में जारी रहा। यह बहाउल्लाह की संविदा के मुख्य संविदाभंजक के साथ–साथ उसके समर्थकों द्वारा लगातार किए जा रहे षड़यंत्रों और मिथ्या वक्तव्यों का परिणाम था।

मिर्ज़ा मुहम्मद अली ने अपने भाई और जीजा की सहायता से तुर्की सरकार और उसके अधिकारियों के दिलों में संदेह पैदा करने में और अब्दुल बहा को दोबारा कैद में डालने के लिए उकसाने में सफलता प्राप्त की। पहले मिर्ज़ा मुहम्मद अली ऐसा प्रयास कर चुका था लेकिन तब असफल रहा था। तब उसकी लाख कोशिशों के बावजूद संविदा में अडिग आस्था रखने वालों ने उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप में प्रभुधर्म का प्रसार करने में सफलता पाई थी। मिर्ज़ा मुहम्मद अली की ईर्ष्या तब और भी बढ़ गई थी जब अक्का के बन्दीगृह में पश्चिम से आने वाले तीर्थयात्रियों की संख्या में लगातार वृद्धि होती जा रही थी और कार्मल पर्वत पर बाब की समाधि का निर्माण–कार्य आरम्भ किया जा चुका था। इस कैद ने अब्दुल बहा को एक बार फिर यातनाओं के भँवर में डाल दिया।

मिर्ज़ा मुहम्मद अली के मुख्य सहायक उसके इसी भाई ने अब्दुल बहा के साथ संधि करते समय स्व–लिखित, हस्ताक्षरित और मुहर लगाकर प्रकाशित किए गए एक बयान में उन षड़यंत्रों के रचे जाने की साक्षी दी है। मिर्ज़ा बदीउल्लाह नाम से जाने जाने वाले उस भाई ने लिखा है कि, "मैं उन बातों को अनदेखा करुँगा जो मैंने दूसरों से सुनी हैं। मैं केवल वही कहूँगा जो मैंने अपनी आँखों से देखा है और उसके (मिर्ज़ा मुहम्मद अली के) मुख से सुना है।" उसने आगे बताया है कि, "उसने (मिर्ज़ा मुहम्मद अली ने) यह व्यवस्था की है कि दमस्कस के वली (गवर्नर) नज़ीम पाशा को फारसी में सम्बोधित किए गए एक पत्र और एक उपहार के साथ मिर्ज़ा मजदिद्दीन को रवाना किया जाए और उसकी सहायता प्राप्त की जाए.....। स्वयं मिर्ज़ा मजदिद्दीन ने हाईफा में मुझे बताया था कि उसने कार्मल पर्वत पर चल रहे निर्माण कार्य, अमेरिकी अनुयायियों के आने–जाने और अक्का में होने वाले सम्मेलनों से गवर्नर को अवगत कराने के हर सम्भव प्रयास किए थे। सभी तथ्यों की जानकारी प्राप्त करने की इच्छा में पाशा ने उसके प्रति बड़ी दयालुता दिखाई

और उसे अपनी सहायता का आश्वासन दिया। मिर्ज़ा मजदिद्दीन के लौटने के कुछ ही दिनों बाद, सब्लाईम पोर्ट से सुल्तान के आदेश प्रसारित करने वाला एक गुप्त टेलीग्राम प्राप्त हुआ जिसमें अब्दुल बहा को, मुझे और कुछ अन्य लोगों को कैद में डालने का आदेश दिया गया था।" उसी दस्तावेज़ में उसने आगे बताया है कि "दमस्कस से अक्का आने वाले एक आदमी ने बाहर के लोगों को यह बताया कि नज़ीम पाशा ही अब्बास एफेन्दी की कैद का कारण था। इन सब में सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि कैद किए जाने के बाद मिर्ज़ा मुहम्मद अली ने अपनी मुक्ति के उद्देश्य से नज़ीम पाशा को एक पत्र लिखा था.....। लेकिन पाशा ने उसके पहले या दूसरे पत्र के उत्तर में एक शब्द भी नहीं लिखा।"

20 अगस्त सन् 1901 में जब अब्दुल बहा बहजी में बाब की घोषणा के वार्षिकोत्सव में भाग लेने के बाद लौटे तब उन्हें अक्का के गवर्नर के साथ एक साक्षात्कार के दौरान सुल्तान अब्दुल हमीद के उन निर्देशों की जानकारी दी गई जिनके तहत यह आदेश दिए गए थे कि अब्दुल बहा को दी गई छूट पर दोबारा प्रतिबंध लागू किए जाएँ और उनके तथा उनके भाईयों को उस नगर की सीमाओं के अन्दर कड़ी कैद में रखा जाए। प्रारम्भ में सुल्तान के इस आदेश का कड़ाई से पालन किया गया और इस समुदाय की स्वतंत्रता पर कठोर प्रतिबंध लगाए गए, जबकि अब्दुल बहा को अकेले और निःसहाय ही उन न्यायाधीशों और अधिकारियों की लम्बी पूछताछ का सामना करना पड़ा जिन्हें अपनी जाँच पूरी करने के लिए सरकारी मुख्यालय में लगातार कई दिनों तक उनकी उपस्थिति की आवश्यकता थी। अब्दुल बहा का सबसे पहला काम था अपने उन भाईयों की ओर से अनुनय करना जिन्हें गवर्नर के आदेशों के तहत बुलाया गया था और सुल्तान के आदेशों से अवगत कराया गया था। अब्दुल बहा के इस प्रयास के बाद भी उनके भाईयों की शत्रुता शांत नहीं हुई और उनकी गतिविधियाँ कम नहीं हुईं। अन्त में, नागरिक और सैन्य अधिकारियों के साथ बीच–बचाव करके उन्होंने अक्का में निवास करने वाले अपने अनुयायियों को मुक्त करवा लिया और उन्हें इतना सक्षम कर दिया कि वे बगैर हस्तक्षेप के अपनी आजीविका जुटाना जारी रख सकें।

जिसने उदारतापूर्वक बीच–बचाव किया था, उस महान के खिलाफ शासन द्वारा उठाए गए कदमों से भी ये संविदाभंजक संतुष्ट नहीं हुए। पुलिस के उस बदनाम मुखिया, याह्या बे और ऐसे अन्य नागरिक तथा सैन्य अधिकारियों की सहायता से, जिन्होंने इन लोगों के आवेदनों के परिणामस्वरूप, उन लोगों को हटा दिया था जो अब्दुल बहा के साथ मित्रता का व्यवहार करते थे और ऐसे गुप्तचरों के माध्यम से जिनका अक्का और कॉन्सटैन्टिनोपल के बीच आना–जाना लगा रहता था, यहाँ तक कि जो उनके घर–परिवार की हर बात पर सतर्क नज़र रखते थे वे उन्हें तबाह करने के लिए उठ खड़े हुए। उन्होंने इन अधिकारियों पर ऐसे उपहार लुटाए जो बहाउल्लाह की यादों से जुड़े होने के कारण पावन थे और ऊपर से नीचे तक प्रत्येक स्तर के अधिकारियों को वे बड़ी बेशर्मी के साथ रिश्वतें देते थे। अपने प्रयासों में किसी भी प्रकार की ढील न देते हुए वे अपनी अतिदुष्ट गतिविधियों के रास्ते पर लगातार चलते रहे और यह दृढ़ निश्चय किया कि जब तक अब्दुल बहा को मृत्युदण्ड न मिल जाए या उन्हें किसी ऐसे स्थान पर न भेज दिया जाए जो इतना दूर हो कि वे प्रभुधर्म को उनकी गिरफ्त से छुड़ा लें, तब तक वे किसी भी मौके को हाथ से नहीं जाने देना चाहते थे। उन्होंने अपने घृणित षड़यन्त्रों के निष्पादन के लिए दमस्कस के वली, बेरूत के मुफ्ती, अक्का और सीरिया में स्थापित प्रोटेस्टेन्ट ध्येयों के सदस्यों, यहाँ तक कि कॉन्सटैन्टिनोपल के उस प्रभावशाली शेख अबुल–हुदा से भी अनुरोध किया, अपील और आग्रह किया, जो सुल्तान की दृष्टि में उतना ही गहन रूप से सम्मानित था जितना कि मुहम्मद शाह की नज़र में उसका महामंत्री, हाजी मिर्ज़ा अक़ासी था।

इन संविदाभंजकों ने मौखिक संदेशों, औपचारिक पत्रव्यवहार और व्यक्तिगत साक्षात्कारों के माध्यम से, इन प्रतिष्ठित व्यक्तियों को उनके प्रति तत्काल कदम उठाने की आवश्यकता बताई और बड़ी चालाकी से अपने प्रमाणों को उन लोगों के खास हितों और पूर्वाग्रहों से जोड़ दिया जिनसे वे सहायता माँग रहे थे। उन्होंने कुछ लोगों को बताया कि अब्दुल बहा एक ऐसे निर्दयी व्यक्ति हैं, जिन्होंने उनके अधिकारों का हनन किया था, उनसे उनकी पुश्तैनी सम्पत्ति छीन ली थी, उन्हें दरिद्र बना दिया था, फारस में उनके मित्रों

को उनका शत्रु बना दिया था, स्वयं के लिए विशाल सम्पत्ति एकत्रित कर ली थी और हाईफा की दो–तिहाई ज़मीन खरीद ली थी। अन्य लोगों को उन्होंने बताया कि अब्दुल बहा, अक्का और हाईफा को एक नया मक्का और मदीना बनाने की सोच रहे थे। कुछ और अन्य लोगों के समक्ष उन्होंने इस बात की पुष्टि की कि बहाउल्लाह एक ऐसे दरवेश से बढ़कर अन्य कुछ नहीं थे, जो इस्लाम धर्म को मानते थे और इसे बढ़ावा देते थे और उनके पुत्र अब्बास एफेन्दी (अब्दुल बहा) ने स्वयं को यशस्वी बनाने के उद्देश्य से, उन्हें ईश्वर अवतार का दर्जा दे दिया था, जबकि स्वयं को ईश्वर का पुत्र बता रहे थे। उन्होंने अब्दुल बहा पर यह आरोप भी लगाया कि वे ऐसे षड़यंत्र रच रहे थे जो राज्य के हितों के लिए हानि पहुँचाने वाले थे। वे सुल्तान के खिलाफ विद्रोह करने की योजना बना रहे थे, फिलिस्तीन और सीरिया के दूर–दराज़ गाँवों में पहले ही या–बहाउल–आभा का वह ध्वज फहरा चुके थे। उन्होंने छल से, तीस हजार लोगों की एक सेना तैयार कर ली थी और कार्मल पर्वत पर एक गढ़ और गोले बारूद के विशाल गोदाम का निर्माण कर रहे थे। साथ ही उन्होंने ऐसे अंग्रेज़ और अमेरिकी मित्रों के एक विशाल समूह का नैतिक और भौतिक समर्थन प्राप्त कर लिया था, जिनमें विदेशी ताकतों के वे अधिकारी शामिल थे जो बड़ी संख्या में, एवं भेष बदलकर उन्हें अपना सम्मान अर्पित करने के लिए आने लगे थे, जिनके साथ मिलकर उन्होंने पहले ही आसपास के प्रांतों को अपने अधीन करने की, वर्तमान शासकों को देशनिकाला देने की और अन्त में स्वयं सुल्तान के अधिकार हड़पने की अपनी योजनाएँ तैयार कर लीं थीं। इन संविदाभंजकों ने गलतबयानियाँ करके और रिश्वत देकर कुछ लोगों को अपना गवाह बना लिया और उन दस्तावेज़ों पर उनके हस्ताक्षर करवा लिए जो उन्होंने तैयार किए थे और जो अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से उन्होंने सब्लाईम पोर्ट भेज दिए थे।

अपनी प्रजा के भावी विद्रोह के डर से पहले ही घबराया हुआ वह प्रजापीड़क सुल्तान, इन असंख्य रिपोर्टों में दर्ज अत्यन्त गम्भीर आरोपों के कारण व्याकुल हो उठा। उसने मामले की जाँच करने और अपनी खोजबीन की रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए एक आयोग नियुक्त किया। जब पूछताछ के

लिए अब्दुल बहा को कई बार अदालत में बुलवाया गया तब उन्होंने बड़ी सावधानी से प्रत्येक आरोप का खण्डन किया, इन आरोपों के बेतुकेपन का खुलासा कर दिया, अपनी सफाई के समर्थन में आयोग के सदस्यों को बहाउल्लाह की वसीयत के प्रावधानों से अवगत कराया, अपने मामले में कोर्ट द्वारा लिए गए किसी भी निर्णय के प्रति अपना समर्पण व्यक्त किया और बड़ी वाक्पटुता के साथ इस बात की पुष्टि की कि यदि वे उन्हें जंजीरों में जकड़ लें, गलियों में घसीटें, कोसें या उनका मज़ाक उड़ाएँ, उन पर पत्थर फेंकें या थूकें, उन्हें चौक में टाँग दें और गोलियों से छलनी कर दें, फिर भी वे इसे अपना सम्मान ही समझेंगे, क्योंकि इस प्रकार से वे अपने प्रिय अग्रदूत, बाब के नक्शेकदम का अनुसरण कर सकेंगे और उनके कष्टों के हिस्सेदार बन सकेंगे।

जिस परिस्थिति का सामना अब्दुल बहा कर रहे थे उसकी गम्भीरता के कारण और जनता द्वारा फैलायी जा रही ऐसी अफवाहों के कारण भी जिससे अत्यन्त गम्भीर परिस्थितियों के उत्पन्न होने की आशंका थी; मिस्र और सीरिया में प्रकाशित समाचार पत्रों में दिए जा रहे खतरों के उन संकेतों के कारण जो अब्दुल बहा को संकट में डाल सकते थे और अक्का एवं हाईफा के कुछ ऐसे निवासियों के आक्रामक व्यवहार के कारण, जिन्हें इस समुदाय और इसके नेता के भावी दुर्भाग्य के बारे में इन शत्रुओं की भविष्यवाणियों ने दुःसाहसी बना दिया था, अब्दुल बहा को पावन भूमि में आने वाले तीर्थयात्रियों की संख्या घटानी पड़ी और यहाँ तक कि कुछ समय तक उनके भ्रमण कार्यक्रम को भी रद्द करना पड़ा साथ ही, उन्हें ये विशेष निर्देश जारी करने पड़े कि हाईफा के स्थान पर, उनकी डाक की देखरेख मिस्र में एक एजेंट द्वारा की जाए; उन्होंने आदेश दिए कि कुछ समय के लिए उनकी डाक को तब तक मिस्र में रोके रखा जाए जब तक कि वे आगामी कार्यवाही की सलाह नहीं देते। इसके अतिरिक्त उन्होंने अनुयायियों के साथ–साथ अपने सचिवों को भी निर्देश दिए कि वे अपने पास उपलब्ध समस्त बहाई लेखों को एकत्रित करके एक सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दें और उनसे आग्रह किया कि वे अपने–अपने निवासों को मिस्र में स्थानान्तरित कर लें। यहाँ तक कि जो अनुयायीगण अब्दुल बहा के निवास पर एकत्रित

होने के आदी थे, अब्दुल बहा ने उन्हें भी रोक दिया। इस अवधि के सबसे उथल–पुथल भरे दिनों में अब्दुल बहा के असंख्य मित्रों और चाहने वालों ने भी फँस जाने के और अधिकारियों के मन में सन्देह पैदा करने के डर से उनसे मिलना बंद कर दिया। कुछ दिनों और रातों को जब हालात अत्यन्त गम्भीर हो जाते थे तब अब्दुल बहा का वह घर जो कई सालों तक हलचल का केंद्र बना रहता था, अब बिल्कुल सुनसान हो गया था। जासूस इस पर चुपके से नज़र रख रहे थे, अब्दुल बहा की सभी गतिविधियों पर ध्यान दे रहे थे और उनके परिवार की आज़ादी को सीमित कर रहे थे।

लेकिन अब्दुल बहा ने बाब की समाधि के उस निर्माण कार्य को एक पल भी रोकने या देर करने से इन्कार कर दिया, जिसकी नींव का पत्थर उन्होंने स्वयं उस स्थान पर रखा था जिसे बहाउल्लाह ने चुना था। उन्होंने यह भी नहीं होने दिया कि कोई भी रुकावट, चाहे वह कितनी ही भयानक क्यों न हो, उन पातियों के दैनिक प्रकटीकरण के प्रवाह को रोक सके जो लगातार बढ़ती हुई संख्या में उनकी अदम्य लेखनी से, उन पत्रों, रिर्पोटों, प्रश्नों, प्रार्थनाओं, प्रभुधर्म की स्वीकारोक्तियों, क्षमा–प्रार्थनाओं और स्तुतियों के उत्तर में प्रवाहित हो रहीं थीं, जो पूरब और पश्चिम के असंख्य अनुयायियों और प्रशंसकों की ओर से प्राप्त हुए थे। एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि अब्दुल बहा के जीवन की उस संकट भरी अवधि के दौरान, उन्होंने पाया कि अब्दुल बहा एक दिन में स्वयं अपने हाथों से, कम से कम 90 पातियाँ लिखते थे और कई रातों को, शाम से लेकर सुबह तक, अपने शयन कक्ष में अकेले ही ऐसे पत्राचार में संलग्न रहते थे जिसे वे अपनी असंख्य ज़िम्मेदारियों के बोझ के कारण दिन में पूरा नहीं कर सकते थे।

इसी कष्टदायक समय में, जो उनके सेवाकाल का सबसे उथल–पुथल भरा दौर था, जब वे अपने यौवन की चरम सीमा और अपनी शक्ति के पूरे ज्वार पर थे, तब उन्होंने असीम ऊर्जा, आश्चर्यजनक धैर्य और अटल आत्मविश्वास के साथ, उन विभिन्न कार्यों को शुरू किया और इन्हें बगैर किसी अवरोध के सम्पादित किया जो उस सेवाकाल के साथ जुड़े थे। इन्हीं दिनों उन्होंने बहाई जगत के सबसे पहले मश्रिकुल–असकार की योजना बनाई थी और तुर्किस्तान

के अश्काबाद शहर में उनके अनुयायियों ने इसका निर्माण किया था। इन्हीं दिनों में उन्होंने शीराज़ में बाब के पावन और ऐतिहासिक निवास की मरम्मत के निर्देश जारी किए थे और मुख्य रूप से अब्दुल बहा के प्रोत्साहन के कारण ही वे प्रारम्भिक कदम उठाए गए जिनके द्वारा आगामी वर्षों में मिशिगन झील के किनारे पश्चिम के मातृ उपासना मंदिर के निर्माण के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ जिसकी नींव का पत्थर स्वयं अब्दुल बहा ने इस स्थान के अपने दौरे के समय अपने हाथों से रखा था। इसी दौरान, अब्दुल बहा के उन अनौपचारिक वक्तव्यों का प्रसिद्ध संकलन प्रकाशित किया गया था जिसका शीर्षक था *"सम आन्सर्ड क्वेश्चंस"*। ये वक्तव्य तब दिए गए थे जब अब्दुल बहा ने अपनी व्यस्तताओं से थोड़ा–बहुत समय निकाल कर अपने पिता के धर्म के कुछ आधारभूत पहलुओं को स्पष्ट किया था, इस धर्म की वैधता के पारम्परिक और तार्किक प्रमाण प्रस्तुत किए थे और ईसाई विधान, ईश्वर के अवतार, बाईबिल की भविष्यवाणियाँ, मनुष्य की उत्पत्ति और उसका स्थान और इनसे जुड़े अन्य विषयों को प्रमाणिकता से समझाया था।

यही वह अवधि थी जिसके सबसे अंधकारमय पलों में, अब्दुल बहा ने बाब के चचेरे भाई और अश्काबाद के मंदिर के मुख्य निर्माता, आदरणीय हाजी मिर्ज़ा मुहम्मद–तक़ी को सम्बोधित अपने एक पत्र में हृदयस्पर्शी शब्दों में बहाउल्लाह के प्रकटीकरण की अगाध महानता की घोषणा की थी, इसमें दूर और पास के शत्रुओं द्वारा दुनिया भर में मचाये जाने वाले भावी उत्पात की भविष्यवाणी करती हुई चेतावनियाँ लिखीं थीं और हृदयस्पर्शी भाषा में उस प्रभुता की भविष्यवाणी की थी जो अन्त में इस संविदा के मशालधारी उन से प्राप्त करेंगे। इसी अवधि के दौरान, गम्भीर अनिश्चितता की घड़ी में अब्दुल बहा ने अपनी वसीयत और इच्छापत्र लिखे थे, जो वह अमर दस्तावेज़ है जिसमें उन्होंने उस प्रशासनिक व्यवस्था की विशेषताओं का वर्णन किया था जो उनके देहावसान के पश्चात उदित होगी और जो उस विश्व व्यवस्था की स्थापना की पूर्व–सूचना देगी, जिसके आगमन की घोषणा बाब ने की थी और जिसके नियमों और विधानों की रचना स्वयं बहाउल्लाह पहले ही कर चुके थे। तूफानी विद्रोह के इन्ही वर्षों के दौरान ही, दृढ़ता से स्थापित की गई संविदा के अग्रदूतों और विजेताओं के माध्यम से अब्दुल बहा ने इस धर्म का और इसकी

प्रशासनिक व्यवस्था का पलना कहलाये जाने वाले पश्चिम के महान प्रजातंत्र में, कनाडा के राज्य में, फ्राँस, इंग्लैंड, जर्मनी, मिस्र, इराक, रूस, भारत, बर्मा, जापान और दूर–दराज़ प्रशांत महासागर के द्वीपों तक में एक स्थाई रूप से विस्तार पा रहे धर्म की प्रशासनिक, आध्यात्मिक और शैक्षणिक संस्थाएँ विकसित की थीं। उथल–पुथल की इस अवधि के दौरान ही उन्होंने बहाई साहित्य के अनुवाद, इसके प्रकाशन और वितरण के कार्य को अत्याधिक बढ़ावा दिया था। इस साहित्य में अब फारसी, अरबी, अंग्रेज़ी, तुर्की, फ्राँसिसी, जर्मनी, रूसी और बर्मी भाषाओं में लिखी विभिन्न प्रकार की पुस्तकें और लेख शामिल हो चुके थे। उन दिनों, उनके आसपास उठने वाला तूफान जब भी शान्त होता, तब अब्दुल बहा की मेज़ के इर्द–गिर्द उपरोक्त देशों के तीर्थयात्री, मित्रगण, जानकारी प्राप्त करने वाले लोग तथा ईसाई, मुसलमान, यहूदी, पारसी और बौद्ध धर्म के प्रतिनिधि एकत्रित होते थे। उन्हें निरन्तर घेरे रहने वाले संकट के बावजूद, प्रत्येक शुक्रवार की सुबह को उनके दरवाज़े पर भीड़ लगाने वाले और उनके घर के आँगन में जमा होने वाले ज़रूरतमंदों को वे अपने हाथों से ऐसी उदारता से दान दिया करते थे कि उन्हें *"निर्धनों का पिता"* कहा जाने लगा था। उन तूफानी दिनों में भी अब्दुल बहा के विश्वास को हिलाया नहीं जा सकता था; बेसहारों, अनाथों, बीमारों और दीनजनों के प्रति उनकी सेवा में कोई भी हस्तक्षेप नहीं कर सकता था; उनकी सहायता मांगने में या असमर्थ लोगों के पास व्यक्तिगत रूप से पहुँचने में उन्हें कुछ भी रोक नहीं सकता था। बाब और बहाउल्लाह दोनों ही के उदाहरण का अनुसरण करने के अपने दृढ़संकल्प में वे इतने अटल थे कि न तो अक्का के निर्वासित समुदाय के प्रमुख सदस्यों द्वारा दी गई सलाह, न ही स्पेन के उस सलाहकार के आग्रहपूर्ण अनुरोध उन्हें उनके शत्रुओं के सामने से पलायन करने या कैद से भागने के लिए मजबूर कर सकते थे, जबकि स्पेन का यह सलाहकार एक इटालियन स्टीमर कम्पनी के प्रतिनिधि का नातेदार था और उसने अब्दुल बहा के प्रति अपने प्रेम के कारण और उन पर मंडराने वाले खतरे को दूर करने की कोशिश में उनकी सेवा में एक इटालियन मालवाही पोत तक रख दिया था, जो उन्हें उनकी इच्छानुसार किसी भी विदेशी बन्दरगाह तक सुरक्षित पहुँचाने के लिए तैयार था।

अब्दुल बहा का धैर्य इतना दृढ़ था कि जब चारों ओर ये अफवाहें फैलायी जा रहीं थीं कि शायद उन्हें समुद्र में फेंक दिया जायेगा या त्रिपोलितानिया के फिज़ान में निर्वासित कर दिया जायेगा या फाँसी पर लटका दिया जाएगा, तब उन्हें अपने निवास के आँगन में पौधे और बेलें लगाते हुए देखकर उनके मित्रों के आश्चर्य का और उनके शत्रुओं के कौतुक का ठिकाना न रहा। तूफान थमने के बाद, अब्दुल बहा अपने वफादार माली, इस्माइल आग़ा को फल समेटने के आदेश देते ताकि वे इन्हें अपने उन मित्रों और शत्रुओं को तब प्रस्तुत कर सकें जब वे उनसे मिलने के लिए आयें।

1907 की शीत ऋतु के आरम्भ में, सुल्तान के आदेश से, आरिफ बेग़ के नेतृत्व में और पूर्ण अधिकारों से सम्पन्न चार अधिकारियों के एक आयोग को अचानक अक्का भेजा गया। इस आयोग के आने के कुछ ही दिनों पहले अब्दुल बहा ने एक सपना देखा जो उन्होंने अनुयायियों को सुनाया, जिसमें उन्होंने अक्का के बाहर एक ऐसे जहाज़ को लंगर डालते देखा जिसमें से कुछ ऐसे पक्षी उड़कर बाहर आए जो बारूद की छड़ों जैसे थे और शहर के डरे हुए निवासियों की भीड़ के बीच खड़े अब्दुल बहा के सिर के आसपास चक्कर लगाकर विस्फोट किए बिना जहाज़ में वापस लौट गए।

जैसे ही आयोग के सदस्य अक्का पहुँचे, उन्होंने अक्का के तारघर और डाक सेवाओं को सीधे अपने अधिकार और विशेष नियंत्रण में कर लिया; अब्दुल बहा के साथ मित्रता का व्यवहार करने के शक में कुछ ऐसे अधिकारियों को सेवामुक्त कर दिया, जिनमें शहर का गवर्नर भी शामिल था। कॉन्सटैन्टिनोपल की सरकार के साथ सीधा और गुप्त सम्पर्क साध लिया; वे संविदाभंजकों के पड़ोसियों और अंतरंग साथियों के घरों में ठहर गए; उन्होंने अब्दुल बहा के घर पर पहरेदार लगा दिए ताकि कोई भी उनसे भेंट न कर सके और एक अजीब कार्यवाही शुरू की जिसके तहत उन्हीं लोगों को गवाहों के रूप में बुलाया गया जिनमें ईसाई और मुसलमान, पूरब और पश्चिम के वे निवासी शामिल थे, जिन्होंने पूर्व में उन दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर किए थे जो कॉन्सटैन्टिनोपल भेजे गए थे और जिन्हें वे अधिकारी पूछताछ के लिए अपने साथ लाए थे।

घोर संकट की इस घड़ी में खुशियाँ मनाने वाले और आशा से भरे संविदाभंजकों और विशेषकर मिर्ज़ा मुहम्मद अली की गतिविधियाँ अब चरम सीमा पर पहुँच गई। अब उन्हें विजय नज़दीक दिखाई दे रही थी, तो बड़े उत्साह से भरे वातावरण में मुलाकातों, साक्षात्कारों और मनोरंजन की संख्या बढ़ गईं। जनता के बीच निम्न स्तर के कुछ लोगों को यह विश्वास था कि देश निकाला दिए जाने वाले निर्वासितों की पीछे छूटने वाली सम्पत्ति उनके हाथ लगना निश्चित है। अपमान और निन्दा में उल्लेखनीय वृद्धि हो गई। यहाँ तक कि कुछ ऐसे गरीब लोगों ने भी जिनकी अब्दुल बहा ने इतने लम्बे समय तक उदारतापूर्वक सहायता की थी, बदले के डर से उन्हें त्याग दिया।

जिस दौरान आयोग के सदस्य अपनी तथाकथित जाँच पूरी कर रहे थे, उसी दौरान अक्का में उनके प्रवास के लगभग एक माह के अंदर उनके एक संदेशवाहक द्वारा उन्हें दी गईं अप्रत्यक्ष धमकियों के बावजूद अब्दुल बहा ने उनसे मिलने से या उनके साथ कुछ भी लेनदेन रखने से इन्कार करते रहे। अब्दुल बहा के इस व्यवहार पर आयोग के सदस्यों को बड़ा आश्चर्य हुआ और इसके कारण उनकी शत्रुता और भी भड़क उठी और उनके दुष्ट षड़यंत्रों को अपने परिणाम तक पहुँचाने के उनके दृढ़संकल्प को और भी बल मिल गया। यद्यपि उन्हें घेरने वाले संकट और विपत्तियाँ अब अपनी चरम सीमा पर थीं और आयोग के सदस्यों के साथ जिस जहाज़ पर उन्हें सवार होना था वह कभी अक्का में तो कभी हाईफा में तैयार खड़ा था। चारों ओर उनके बारे में मनगढ़ंत अफवाहें फैलायी जा रहीं थी, उन्होंने अपने कारावास के आरम्भ से ही जो धैर्य बनाए रखा था, वह पुनः दिखाई देने लगा, उनकी आस्था कभी धुँधली नहीं पड़ी और न ही उनका आत्मविश्वास डगमगाया। उन दिनों अक्का में रुकने वाले अनुयायियों को उन्होने बताया था कि *"जो स्वप्न मैंने देखा था, उसका अर्थ अब स्पष्ट और प्रमाणित है। ईश्वर करे इस बारूद का विस्फोट नहीं हो।"*

इस बीच, एक ख़ास शुक्रवार को इस आयोग के सदस्य हाईफा गए और कार्मल पर्वत पर बाब की समाधि का निरीक्षण किया, जिसका निर्माण बगैर किसी रुकावट के आगे बढ़ रहा था। इसकी मज़बूती से प्रभावित होकर,

उन्होंने एक सेवक से उन कक्षों की संख्या के बारे में पूछा जो इस विशाल ढाँचे के नीचे बनाये गए थे।

इस निरीक्षण के पूरा होने के कुछ ही समय बाद एक दिन लगभग सूर्यास्त के समय अचानक देखा गया कि हाईफा के बाहर खड़े उस जहाज़ ने लंगर उठा लिया था और वह अक्का की दिशा में आ रहा था। उत्तेजित जनता में बड़ी तेज़ी के साथ खबर फैल गई कि आयोग के सदस्य इस जहाज़ पर सवार हो चुके थे। यह अपेक्षा की जा रही थी कि यह जहाज़ अब्दुल बहा को लेने के लिए कुछ समय ठहरने के बाद अपने गंतव्य की ओर आगे बढ़ जायेगा। अब्दुल बहा का परिवार आतंक और वेदना में डूब गया। पीछे छूटने वाले कुछ गिने चुने अनुयायी, अपने मास्टर (अब्दुल बहा) से बिछुड़ने के दुःख में रो रहे थे। उस दुःखद घड़ी में अब्दुल बहा को उनके घर के आँगन में अकेले और चुपचाप चहलकदमी करते हुए देखा जा सकता था।

जब शाम हुई तो अचानक देखा गया कि जहाज़ की बत्तियाँ घूम गईं और जहाज़ ने अपनी दिशा बदल ली। अब यह स्पष्ट हो गया कि यह सीधा कॉन्सटैन्टिनोपल जा रहा था। इसकी जानकारी तत्काल अब्दुल बहा को दी गई जो ढलती हुई शाम के अंधेरे में अब भी अपने घर के आँगन में चहलकदमी कर रहे थे। कुछ अनुयायी, जो जहाज़ की हरकत पर नज़र रखने के लिए अलग–अलग स्थानों पर खड़े थे, इस शुभ समाचार की पुष्टि करने के लिए दौड़ पड़े। उस ऐतिहासिक दिन, अब्दुल बहा के अनमोल जीवन के लिए सबसे ख़ौफनाक सिद्ध होने वाला संकट अचानक ईश्वर की कृपा से हमेशा के लिए टल गया।

उस जहाज़ के इस अप्रत्याशित मुड़ जाने के बाद समाचार मिला कि एक मस्जिद में शुक्रवार की अपनी प्रार्थना पूरी करके अपने महल लौटते समय सुल्तान के रास्ते में एक बम विस्फोट हुआ था।

सुल्तान पर किए गए प्राणघातक हमले के कुछ ही दिनों बाद इस आयोग ने उसे अपनी रिपोर्ट दी; लेकिन सुल्तान और उसकी सरकार दोनों ही इतने व्यस्त थे कि उन्होंने इस मामले पर ध्यान नहीं दिया और इस प्रकरण को

दरकिनार कर दिया गया। कुछ माह बाद जब इसे दोबारा सामने लाया गया तो यह एक ऐसी घटना के कारण हमेशा के लिए समाप्त हो गया जिसने अक्का के इस कैदी को अपने शाही दुश्मन की ताकत से सदासर्वदा के लिए परे कर दिया। 1908 में बड़ी तेज़ी के साथ फूट पड़ने वाले "यंग टर्क" क्रांति ने इस अनिच्छुक प्रजापीड़क शासक को एक ऐसे संविधान की घोषणा करने के लिए विवश कर दिया, जिसे उसने परे हटा दिया था। साथ ही, पुराने शासन के अधीन कैद किए गए सभी राजनीतिक कैदियों को रिहा करने पर बाध्य कर दिया। इसके बावजूद, विशेष रूप से यह जानकारी प्राप्त करने के लिए कि इस वर्ग के कैदियों में अब्दुल बहा शामिल हैं या नहीं, एक टेलीग्राम कॉन्सटैन्टिनोपल भेजा गया जिसका उत्तर "हाँ" में मिला।

कुछ ही महीनों के बाद सन् 1909 में, 'यंग टर्क्स' ने शेखुल–इस्लाम से उस सुल्तान के लिए ही दण्ड पारित करवा लिया जिसे संविधान को उलट देने की नई कोशिश के परिणामस्वरूप अन्त में, बड़े अपमानजनक ढंग से राजसिंहासन से उतारकर निष्कासित कर दिया गया और राज्य का कैदी बना दिया गया। उस वर्ष केवल एक ही दिन में कम से कम इकत्तीस प्रमुख मंत्रियों, पाशाओं और अधिकारियों को मौत के घाट उतार दिया गया था, जिनमें प्रभुधर्म के दुष्ट और बदनाम शत्रु भी शामिल थे। अब्दुल बहा के भावी निर्वासन का स्थान, अर्थात ट्रिपोलिटानिया तक को इटली ने तुर्कियों के हाथों से छीन लिया। इस प्रकार उस "कुख्यात हत्यारे", उस्मान के सदियों से चले आ रहे लम्बे राजवंश के सबसे निकृष्ट, सबसे कपटी, अविश्वसनीय और क्रूर षड़यंत्रकारी सुल्तान के शासन का अन्त हुआ। एक ऐसा शासन जो "अपने राज्य को गवाँ बैठने के तात्कालिक नुकसानों के कारण और इसके बाद निश्चित रूप से होने वाली अन्य क्षति के कारण सबसे विनाशकारी था तथा उस सुलेमान की मृत्यु के बाद, अपने तेईस पूर्वाधिकारियों की तुलना में प्रजा की हालत बिगाड़ने में सबसे ज़्यादा प्रमुख था।"

कार्मल पर्वत पर बाब के पावन अवशेषों का समाधिस्थीकरण

चालीस वर्ष के कारावास के बाद अब्दुल बहा की मुक्ति से संविदाभंजकों की महत्वाकांक्षाओं को वैसा ही करारा झटका लगा जैसा दस साल पहले अब्दुल बहा के प्रभुत्व को हानि पहुँचाने और उन्हें उनके ईश्वरप्रदत्त स्थान से हटाने की उनकी आशाओं को लगा था। अब, उनके स्वतंत्र होने के दूसरे दिन ही, उन्हें वैसा ही तीसरा झटका लगा जो पहले दो झटकों से कम प्रभावपूर्ण नहीं था। अब्दुल बहा को मुक्त करने वाले आदेश के कुछ ही माह के अन्दर, उसी दिव्यशक्ति, जिसने उन अधिकारों की रक्षा करने में और उत्तरी अमेरिका के महाद्वीप में अपने पिता के धर्म की स्थापना करने में अब्दुल बहा की सहायता की थी, उन्हें अपने सेवाकाल का सबसे उल्लेखनीय कार्य निष्पादित करने में समर्थ बनाया था। यह कार्य था तेहरान में एक गुप्त स्थान पर रखे गए बाब के पावन अवशेषों को हटाकर कार्मल पर्वत पर लाना। उन्होंने स्वयं कई बार यह बताया था कि इन पावन अवशेषों का स्थानान्तरण, इन्हें समाधिस्थ करने के लिए एक शोभनीय समाधि स्थल का निर्माण और अपने ही हाथों इनको एक स्थाई समाधि में रखा जाना, उन तीन मुख्य लक्ष्यों में से एक था, जिनकी प्राप्ति को अपने ध्येय की शुरूआत से ही उन्होंने अपना प्रधानतम कर्त्तव्य माना था। सत्य ही यह कार्य, पहली बहाई शताब्दी के सबसे उत्कृष्ट कार्यों में से प्रथम स्थान प्राप्त करने योग्य है।

जैसा कि पिछले अध्याय में देखा गया है, बाब और उनके साथ शहीद होने वाले मिर्ज़ा मुहम्मद अली की शहादत के बाद की दूसरी मध्यरात्रि में हाजी सुलेमान खान के हस्तक्षेप के कारण उनके छलनी किए गए शरीर को उस खन्दक से हटा लिया गया था जहाँ उन्हें फेंक दिया गया था और वहाँ से मिलान के एक अनुयायी के रेशम के कारखाने में ले जाया गया था। अगले दिन उनके पार्थिव अवशेषों को एक लकड़ी के बक्से में रख दिया गया और वहाँ से एक सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया गया। इसके बाद, बहाउल्लाह के निर्देशों के अनुसार इन्हें तेहरान ले जाया गया और वहाँ इमाम ज़ादिह हसन की समाधि में रखा गया। आगे चलकर, इन्हें शहर के सार–चाश्मेह इलाके में स्थित हाजी सुलेमान खान के निवास में रखा गया और उनके घर से इमाम ज़ादिह मासूम की समाधि पर ले जाया गया, जहाँ इन्हें हि.स. 1284 (1867–1868) तक छिपाकर रखा गया। इसके बाद एड्रियानोपल में बहाउल्लाह द्वारा प्रकट की गई एक पाती में मुल्ला अली अकबर–इ–शामिर्ज़ादी और जमाल–इ–बुरूजिर्दि को निर्देश दिए गए कि वे उन्हें तत्काल किसी अन्य स्थान पर पहुँचा दें। यह एक ऐसा निर्देश था जो ईश्वर द्वारा दिया गया सिद्ध हुआ क्योंकि इसके बाद उस समाधि का पुनः निर्माण किया गया।

शाह अब्दुल अज़ीम के आसपास कोई उपयुक्त स्थान न मिलने पर, मुल्ला अली अकबर और उनके साथी ने तब तक अपनी खोज जारी रखी जब तक चाश्मेह अली की ओर जाने वाले मार्ग पर उन्हें वह निर्जन और टूटीफूटी मस्जिद–ए–माशाउल्लाह दिखायी न दी जिसकी एक दीवार में उन्होंने अपनी बहुमूल्य धरोहर को उस रेशमी चादर में दोबारा लपेटकर सुरक्षित रख दिया, जिसे वे इसी काम के लिए अपने साथ लाये थे। अगले दिन जब उन्हें पता चला कि लोगों को उस गुप्त स्थान के बारे में पता चल चुका है तब वे गुप्त रूप से उस बक्से को राजधानी के मुख्य द्वार से बाहर निकालकर सीधे मिर्ज़ा हसन वज़ीर के घर ले गए, जो एक अनुयायी था। इस बक्से को 14 माह तक यहाँ रखा गया। एक लम्बे समय तक गुप्त रखने के बाद जैसे ही मित्रों को इसके ठिकाने के बारे में पता चला, तब वे इतनी बड़ी संख्या में इस घर में आने लगे कि मुल्ला अली अकबर को विवश होकर बहाउल्लाह को एक पत्र लिखना

पड़ा और इस मामले में मार्गदर्शन का अनुरोध करना पड़ा। तदनुसार अमिनुल–बयान की उपाधि से सम्मानित हाजी शाह मुहम्मद–इ–मन्शादी को यह ज़िम्मेदारी सौंपी गई कि वह इस अमानत को उससे प्राप्त कर ले और उसे आदेश दिए गए कि इस स्थान के बारे में अत्यन्त गोपनीयता बनाए रखे।

हाजी शाह मुहम्मद ने एक अन्य धर्मानुयायी के सहयोग से इमाम जादिह जैद के मकबरे के आंतरिक पवित्र गृह की सतह के नीचे उस मंजूषा को रखा। वे अवशेष वहाँ तब तक रखे रहे जब तक बहाउल्लाह द्वारा भेजे गए एक चार्ट के माध्यम से मिर्ज़ा असदुल्लाह–ए–इस्फहानी को उसकी सही जगह की जानकारी नहीं दे दी गई। बहाउल्लाह द्वारा उसे कहीं अन्यत्र छुपाने की हिदायत दिए जाने के बाद मिर्ज़ा असदुल्लाह ने उन अवशेषों को तेहरान में अपने ही घर में रखा और उसके बाद उन्हें अन्य कई जगहों पर रखा गया, जैसे हुसैन अली–ए–इस्फहानी तथा मुहम्मद करीम–ए–अत्तार के घरों पर जहाँ 1899 तक वे छिपा कर रखे रहे। इसके बाद, अब्दुल बहा के निर्देशानुसार, उसी मिर्ज़ा असदुल्लाह द्वारा, अन्य कई धर्मानुयायियों के साथ मिलकर उन अवशेषों को इस्फहान, किरमानशाह, बगदाद और दमिश्क तथा बेरुत होते हुए समुद्र–मार्ग से अक्का ले जाया गया। हिजरी वर्ष 1316 के रमजान महीने के 19वें दिन (31 जनवरी 1899) वे अवशेष अक्का पहुँचे – तबरीज में बाब की शहादत के पचास चंद्र वर्षों के पश्चात।

जिस वर्ष ये बहुमूल्य धरोहर पावन भूमि के किनारों पर पहुँची और अब्दुल बहा के सुपुर्द की गई थी, उसी साल, वे डॉ. इब्राहिम खैरूल्लाह के साथ, जिसे वे पहले ही *"बहा के पीटर"*, *"दूसरे कोलम्बस"* और *"अमेरिका के विजेता"* जैसी उपाधियों से सम्मानित कर चुके थे, कार्मल पर्वत के उस स्थान पर गए जिसे बहाउल्लाह द्वारा चुना गया था और वहाँ अपने हाथों से उस इमारत की नींव का पत्थर रखा, जिसका निर्माण वे कुछ माह बाद शुरू करने वाले थे। लगभग इसी दौरान, बाब के पावन अवशेषों के लिए बनाए गए संगमरमर के उस ताबूत को, अब्दुल बहा के सुझाव पर पूरा करके जहाज़ से हाईफा भेज दिया गया। यह ताबूत रंगून के बहाईयों की ओर से भेंट किया गया था।

इन अनेक समस्याओं पर विचार करने की ज़रूरत नहीं है जो लगभग दस वर्ष तक अब्दुल बहा को उस समय तक घेरे रहीं जब तक उन्होंने उस ऐतिहासिक कार्य को जो उनके पिता ने उन्हें सौंपा था, उसके परिणाम तक नहीं पहुँचा दिया। पचास वर्षों तक उन पावन अवशेषों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के अपने प्रयासों में बहाउल्लाह को और आगे चलकर उनके पुत्र को जिन संकटों और जोखिमों का सामना करना पड़ा, वे उन गम्भीर संकटों के केवल पूर्वसूचक थे जिनका सामना स्वयं संविदा के केन्द्र को तब करना पड़ा था जब वे इन पावन अवशेषों को रखने के लिए निर्मित की जा रही इमारत का निर्माण करवा रहे थे।

इस पावन इमारत के निर्माण की ज़मीन के उस चालाक और स्वार्थी मालिक के साथ की गई लम्बी सौदेबाज़ी के कारण, जो संविदाभंजकों के प्रभाव में पड़कर, एक लम्बे समय तक ज़मीन बेचने से इन्कार करता रहा; इस इमारत के स्वरूप और उद्देश्य के बारे में मिर्ज़ा मुहम्मद अली और उसके साथी द्वारा लगाये गए आरोपों के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली खतरनाक परिस्थिति के कारण; हाईफा में अब्दुल बहा की लम्बी अनुपस्थिति के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले विलम्ब और जटिलताओं और इसके फलस्वरूप उनके द्वारा आरम्भ किए गए इस विशाल कार्य की व्यक्तिगत रूप से देखभाल करने में उनकी असमर्थता उन मुख्य अवरोधों में शामिल हो गईं जिनका सामना उन्हें अपने सेवाकाल के इतने संकटपूर्ण समय में करना पड़ा।

कई बार उन्हें यह कहते हुए सुना गया था कि, *"इस इमारत के एक–एक पत्थर और इसकी ओर ले जाने वाली सड़क के प्रत्येक पत्थर को मैंने असीम आँसुओं के साथ एवं असाधारण कीमत पर हासिल किया है और इस स्थान पर लगाया है।"* एक प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार, उन्होंने एक बार बताया था कि, *"एक रात, मैं अपनी चिन्ताओं से इतना घिर गया कि मेरे पास और कोई उपाय नहीं था सिवाय इसके कि मैं बाब की उस प्रार्थना को बार–बार दोहराऊँ जो मेरे पास थी, जिसे पढ़ने से मुझे बहुत शान्ति मिली। अगले दिन सुबह भूमि स्वामी स्वयं मेरे पास आया, क्षमा माँगी और मुझसे भीख माँगी कि मैं उसकी ज़मीन खरीद लूँ।"*

जिस वर्ष में उनके शाही दुश्मन ने अपनी राजगद्दी गवाँ दी और मश्रिकुल–असकार (बहाई उपासना मंदिर) के निर्माण के लिए एक स्थाई राष्ट्रीय संगठन बनाने के उद्देश्य से शिकागो में आयोजित किया गया प्रथम अमेरिकी बहाई अधिवेशन प्रारम्भ हुआ, उसी समय अब्दुल बहा ने प्रभुधर्म के अन्दर और बाहर के शत्रुओं के अन्तहीन षड़यंत्रों के बावजूद अपने कार्य को सफलतापूर्वक पूरा किया। सन् 1902 के उस प्रथम नवरोज़ के दिन जो उन्होंने कैद से अपनी मुक्ति के बाद मनाया था, अब्दुल बहा ने कड़ी मेहनत से उस संगमरमर के ताबूत को उसके लिए तैयार किए गए कोष्ठ तक पहुँचा दिया और उसी दिन शाम को, केवल एक दीप की रोशनी में स्वयं अपने हाथों से पूरब और पश्चिम के अनुयायियों की उपस्थिति में, गम्भीर एवं हृदयस्पर्शी परिस्थितियों में, इसमें लकड़ी के उस बक्से को रख दिया जिसमें बाब और उनके साथी के पावन अवशेष थे।

जब सब काम पूरा हो गया और शीराज़ के शहीद पैग़म्बर के भौतिक अवशेषों को उनके अनन्त विश्राम के लिए अंततः सुरक्षित रख दिया गया, तब अब्दुल बहा ने जो पहले ही अपना ताज उतार चुके थे, अपने जूते और अपना कोट उतार कर रखा। उनके बदले हुए और तेजस्वी मस्तक एवं चेहरे पर उनके चांदी से चमकते हुए केश लहरा रहे थे। वे उस खुले ताबूत पर झुक गए और बिलख–बिलख कर इतना रोये कि उनके साथ वहाँ उपस्थित सभी अनुयायी रो दिए। वे इतने भावविभोर हो गए कि उस रात वे सो न सके।

बाद में, अपने अनुयायियों के समक्ष इस प्रतापशाली विजय की घोषणा करते हुए अब्दुल बहा ने एक पाती में लिखा, *"सबसे आनन्दमय समाचार यह है कि .....शत्रुओं के प्रभाव के कारण और बुरा चाहने वालों के डर से तथा विश्राम या शान्ति देखे बगैर साठ साल तक एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित किए जाने के पश्चात, आभा सौन्दर्य की दया के माध्यम से बाब के पावन, तेजस्वी शरीर को नवरोज़ के दिन उचित सम्मान के साथ कार्मल पर्वत पर बनी उस उदात्त समाधि में एक पावन ताबूत में रख दिया गया है..... । विचित्र संयोग से नवरोज़ के उसी दिन, शिकागो से एक टेलीग्राम मिला जिसमें बताया गया था कि प्रत्येक अमेरिकी केन्द्र के अनुयायियों द्वारा एक प्रतिनिधि चुनकर उस*

शहर में भेजा गया था..... और मश्रिकुल असकार के स्थान एवं निर्माण सम्बन्धी ठोस निर्णय लिया जा चुका था।"

बाब, जिनका अवतरण कार्मल पर्वत पर पैग़म्बर एलाईजा की वापसी को चिन्हित करता है, के पावन अवशेषों का स्थानान्तरण तथा स्वयं पैग़म्बर एलाईजा की गुफा के निकट स्थित उस पावन पर्वत में बाब की समाधि की जिस योजना की कल्पना बहाउल्लाह ने अपने जीवन की शाम के दौरान की थी, अन्ततः कार्यान्वित हुई और उनकी संविदा के केन्द्र की नियुक्ति के सेवाकाल के आरम्भिक और उथल–पुथल भरे वर्षों के साथ जुड़े कठिन परिश्रम ने अमिट सफलता का मुकुट पहना। दिव्य प्रकाश और शक्ति का यह केन्द्र, जिसकी धूल ने भी, अब्दुल बहा के कथनानुसार उन्हें प्रेरित किया था, अपनी पावनता में बहाई प्रकटीकरण के संस्थापक (बहाउल्लाह) की समाधि को छोड़कर, बहाई जगत की अन्य किसी भी समाधि से श्रेष्ठ, अब स्थाई रूप से उस पर्वत पर स्थापित हो चुका था, जिसे अनन्तकाल से पावन माना गया है। यह भवन विशाल, सादगी लिए हुए और भव्य है; कार्मल के हृदय में बसी हुई *"ईश्वर की बगिया"* है; इसके पश्चिम में एलाईजा की गुफा है और पूरब में गलीली की पहाड़ियाँ हैं; इसके पीछे शेरोन का मैदान है और इसके सामने अक्का का चाँदी सा जगमगाता हुआ शहर है और इसके उस पार वह पावनतम समाधि है जो बहाई विश्व का हृदय और केन्द्र है, इसके साये में जर्मनी के उन ईसाइयों की बस्ती है, जिन्होंने, *"उस स्वामी के आगमन"* की प्रतीक्षा में अपने घरबार छोड़ दिए और उसी वर्ष (1863) इस पर्वत के नीचे आ बसे थे जब बहाउल्लाह ने बगदाद में स्वयं को ईश्वरावतार घोषित किया था। बाब की यह समाधि, बड़े साहसी प्रयासों और अभेद्य शक्ति के साथ *"उस स्थान के रूप में स्थापित हो चुकी थी, जिसकी आराधना में देवदूत परिक्रमा करते हैं।"* उन घटनाओं के माध्यम से जो इस भवन के विस्तार से, इसके आसपास की सुन्दर सजावट से इसके आसपास फैली हुई ज़मीन के क्रय से तथा स्वयं बहाउल्लाह की पत्नी, पुत्र और बेटी की समाधियों के साथ इतनी निकटता से जुड़ी हैं, कि इसने पहले ही सिद्ध कर दिया है कि समय के बीतने के साथ–साथ यह ऐसी प्रसिद्धि और महिमा प्राप्त करती चली जायेगी जो उतनी ही उच्च होगी जितना कि वह उद्देश्य था जिसने इसकी स्थापना को प्रेरित किया

था। जैसे–जैसे इसके महिमामय वर्ष बीतते जायेंगे और भविष्य के बहाई युग के विश्व प्रशासनिक केन्द्र के इर्द–गिर्द घूमने वाली संस्थाएँ धीरे–धीरे स्थापित होने लगेंगी, वैसे–वैसे यह अपनी उन अन्तर्निहित क्षमताओं को प्रकट करती रहेगी, जिनसे उस अपरिवर्तनीय उद्देश्य ने इसे सम्पन्न बनाया है। भले ही इसके भविष्य के शत्रुओं द्वारा दिखाई जाने वाली शत्रुता कितनी ही भीषण क्यों न हो, यह दिव्य संस्था बगैर किसी बाधा के फलेगी–फूलेगी एवं फैलेगी, जब तक कि मनुष्य की दृष्टि के सामने इसकी सम्पूर्ण भव्यता प्रकट नहीं हो जाती।

इस पावन पर्वत को निर्णायक रूप से सम्बोधित करते हुए बहाउल्लाह ने लिखा है, *"हे कार्मल (पर्वत) तू शीघ्रता कर, देख ! ईश्वर के मुखमंडल का प्रकाश, नामों के साम्राज्य के सम्राट और स्वर्गों के रचयिता का पदार्पण यहाँ हुआ है।".....खुशियाँ मनाओ, क्योंकि इस युग में ईश्वर ने तुम पर अपना सिंहासन स्थापित किया है, तुम्हें अपने चिन्हों का उद्‌गम स्थल बनाया है और अपने प्रकटीकरण के प्रमाणों का दिवानक्षत्र माना है। उसका सौभाग्य है जो तुम्हारी परिक्रमा करता है, जो तुम्हारी महिमा के प्रकटीकरण का उद्‌घोष करता है और उस आशीष का स्मरण करता है जो तुम्हारे स्वामी ने कृपापूर्वक तुम पर बरसाये हैं। उसी पाती में उन्होंने आगे प्रकट किया है, "हे कार्मल, जिऑन को गुहार लगा और यह शुभ संदेश दे : वह जो नश्वर नेत्रों से ओझल था, प्रकट हो गया है ! उसकी सर्वविजयी प्रभुसत्ता स्थापित हुई है, उसकी सर्वग्राही भव्यता प्रकट हुई है। सावधान! कहीं तुम संकोच न कर बैठो या अपने कदम रोक न लो। शीघ्रता करो और आगे बढ़ कर ईश्वर के नगर की परिक्रमा करो जो स्वर्गिक काबा से अवतरित हुआ है, जिसके इर्द–गिर्द ईश्वर के प्रिय पात्रों ने, शुद्ध हृदय के लोगों ने और देवदूतों ने परिक्रमा की है।"*

अब्दुल बहा की यूरोप और अमेरिका यात्रा

जैसा कि पिछले पृष्ठों में देखा गया है, पश्चिमी देशों में बहाउल्लाह के धर्म की स्थापना ने ऐसी शक्तिशाली ताकतों को गतिशील कर दिया और इतने दूरगामी परिणाम उत्पन्न किए कि संविदा को आगे बढ़ाने वाली शक्ति के माध्यम से उनके पश्चिमी देशों के शिष्यों द्वारा साहसपूर्वक आरम्भ की गई उन ऐतिहासिक गतिविधियों ने, जिनमें वे बड़ी दृढ़ता के साथ जुटे हुए थे, स्वयं संविदा के केन्द्र (अब्दुल बहा) की सक्रिय और व्यक्तिगत भागीदारी आकर्षित कर ली जो कि अब्दुल बहा के सेवाकाल से जुड़ी सबसे उल्लेखनीय उपलब्धि है।

संविदाभंजकों के अन्धेपन और पथभ्रष्टता के कारण उत्पन्न होने वाला वह संकट जो कई सालों तक अब्दुल बहा के उद्देश्य में इतने दुःखदायी रूप से हस्तक्षेप करता रहा, अब दैवी रूप से दूर हो चुका था। अब्दुल बहा के पथ से अचानक एक ऐसी बाधा हटा दी गई थी जिसे दूर करना सम्भव नहीं था। उनकी बेड़ियाँ खोल दी गईं और ईश्वर के बदला लेने वाले प्रकोप ने इन बेड़ियों को उनकी गरदन से हटाकर उस अब्दुल हमीद के गले में डाल दिया जो उनका विरोधी था। इसके अतिरिक्त, उनके स्वर्गवासी पिता द्वारा उनके हाथों में सौंपे गए बाब के पावन अवशेषों को बड़ी कठिनाई से दूरस्थ तेहरान में स्थित एक गुप्त स्थान से पावन भूमि तक स्थानान्तरित किया गया और उचित सम्मान एवं आदर के साथ अब्दुल बहा द्वारा कार्मल पर्वत की गोद में सुरक्षित समाधिस्थ कर दिया गया।

अब तक अब्दुल बहा का शरीर कमज़ोर हो चुका था। लगभग पूर्ण रूप से निर्वासन और कैद में बिताये गए एक दुःख भरे जीवन के दबाव और तनाव के कारण वे कई बीमारियों से ग्रस्त हो चुके थे। अब्दुल बहा सत्तर वर्ष की आयु में अपनी चालीस वर्ष लम्बी कैद से रिहा हुए, तब बाब के पावन अवशेषों को एक सुरक्षित और स्थाई समाधि में समाधिस्थ कर देने के बाद अब उनका मन उस अमूल्य धरोहर के साथ जुड़े कार्यों के निष्पादन से जुड़ी हर प्रकार की चिन्ताओं से मुक्त हो चुका था और बड़े साहस, आत्मविश्वास तथा दृढ़संकल्प से अपनी बची हुई शक्ति के साथ वे अपने जीवन की शाम में वीरों के समान एक ऐसी सेवा करने के लिए उठ खड़े हुए जिसका, प्रथम बहाई शताब्दी के इतिहास में कोई उदाहरण नहीं है।

वास्तव में, यदि हम अब्दुल बहा की, पहले मिस्र, फिर यूरोप और बाद में अमेरिका की यात्रा के तीन वर्षों के ऐतिहासिक महत्व का ठीक प्रकार से मूल्यांकन करें, तो ये उस शताब्दी में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण परिवर्तन के सूचक हैं। 66 वर्ष पहले, प्रभुधर्म के प्रारम्भ से ही, इसके प्रधान और सर्वोच्च प्रतिनिधि ने उन बेड़ियों को तोड़ दिया था जिनमें बाब और बहाउल्लाह की स्वतंत्रता इतनी दुःखदायी रूप से जकड़ी हुई थी। यद्यपि, दमनकारी अनुशासनिक उपायों के कारण इसकी जन्मभूमि में इसकी गतिविधियाँ अब भी सीमित थीं, फिर भी इसके स्वीकृत संविदा के केन्द्र (अब्दुल बहा) को अब कार्य करने की वह स्वतंत्रता दे दी गई थी, जो 1914–18 के एक छोटे अन्तराल को छोड़कर उनके जीवन के अन्त तक बनी रही और जिसे विश्व केन्द्र में स्थित इसकी संस्थाओं से कभी नहीं छीना गया।

प्रभुधर्म के भाग्य में इतने निर्णायक परिवर्तन का आना, अब्दुल बहा की ओर से इतनी सक्रिय गतिविधि का संकेत बन गया कि इसने पूरब और पश्चिम के उनके अनुयायियों को आश्चर्यचकित कर दिया और प्रभुधर्म के भावी इतिहास के पथ पर अमिट प्रभाव डाल गया। उनके ही शब्दों में, वह, जिसने अपनी युवावस्था से कैद में प्रवेश किया था और एक वृद्ध के रूप में इसे छोड़ा था, जो अपने जीवन में कभी श्रोताओं के सामने खड़ा तक नहीं हुआ था, जिसने किसी भी प्रकार की स्कूली शिक्षा प्राप्त नहीं की थीं, जो कभी पश्चिमी

लोगों के बीच नहीं रहा था और जो पश्चिमी रीति–रिवाज़ों और भाषा से अपरिचित था, वह अब न केवल यूरोप की मुख्य राजधानियों और उत्तर अमेरिकी महाद्वीप के प्रमुख शहरों में मंचों से अपने पिता (बहाउल्लाह) के धर्म में निहित सच्चाईयों की घोषणा करने, बल्कि बहाउल्लाह के पहले प्रकट होने वाले अवतारों के दिव्यस्रोत का प्रमाण देने के लिए तथा उन्हें इस धर्म से जोड़ने वाले बन्धन का स्वरूप प्रकट करने के लिए उठ खड़ा हुआ था।

अपने स्वास्थ्य की कीमत पर, अपने जीवन को किसी भी प्रकार के संकट में डालने के लिए तैयार अब्दुल बहा ने यह कठिन यात्रा करने का अटल निश्चय कर लिया था। बगैर किसी प्रकार की घोषणा किए सितम्बर 1910 की दोपहर को, सुल्तान अब्दुल हमीद के पतन और कार्मल पर्वत पर बाब के पावन अवशेषों को समाधिस्थ करने के अगले ही वर्ष अब्दुल बहा मिस्र के लिए रवाना हो गए। वे लगभग एक माह तक पोर्टसेड में रहे और वहाँ से यूरोप जाने के इरादे से जहाज़ में सवार तो हुए लेकिन यह पाया कि उनके स्वास्थ्य के कारण उनका एलक्ज़ेन्ड्रिया में उतरना और अपनी यात्रा को विलम्बित करना बहुत आवश्यक है। कुछ दिनों के लिए एलक्ज़ेन्ड्रिया के बाहरी इलाके में स्थित रामलेह को अपना निवास स्थान निर्धारित करते हुए और बाद में ज़ैतून एवं कायरो का भ्रमण करते हुए अगले वर्ष 11 अगस्त को, वे चार लोगों के एक दल के साथ एस. एस. कोरसिका नाम के एक जहाज़ से मारसेल्स के लिए रवाना हो गए और थोनोन–लेस–बैन्स में कुछ दिन ठहर कर लंदन के लिए निकल गए, जहाँ वे 4 सितम्बर, 1911 को पहुँचे। लगभग एक माह के प्रवास के बाद वे पेरिस पहुँचे जहाँ वे 9 सप्ताह तक रहे और दिसम्बर, 1911 में मिस्र लौट आए। उन्होंने एक बार फिर रामलेह को अपना निवास स्थान बनाया, जहाँ उन्होंने पूरी शीत ऋतु बिताई। 25 मार्च, 1912 को उन्होंने पश्चिम की अपनी दूसरी यात्रा शुरू की और नेपल्स से होते हुए सीधे न्यूयॉर्क के लिए रवाना हुए, जहाँ वे 11 अप्रैल को पहुँचे। आठ महीनों की इस लम्बी यात्रा में, वॉशिंगटन, शिकागो, क्लेवलैंड, पिट्सबर्ग, मोन्टक्लेर, बोस्टन, वोरसेस्टर, ब्रुकलिन, फेनवुड, मिलफोर्ड, फिलाडेल्फिया, वेस्ट एंगलवुड, जर्सी सिटी, केम्ब्रिज, मेडफोर्ड, मोरिसटाउन, डब्लिन, ग्रीन एकर, मोन्ट्रियल, मॉल्डेन, बफेलो, केनोशा, मिनियापोलिस,

सेंट पॉल, ओमाहा, लिन्कन, डेनवर, ग्लेनवुड स्प्रिंग्स, सॉल्ट लेक सिटी, सेन फ्रैन्सिस्को, ऑकलैंड, पालो आल्टो, बर्केली, पासाडिना, लॉस एन्जिलिस, साक्रामेन्टो, सिनसिन्नाटी, और बाल्टिमोर का भ्रमण करने के बाद 5 दिसम्बर को वे एस. एस. सेल्टिक नामक जहाज़ में न्यूयॉर्क से लिवरपूल के लिए रवाना हुए और वहाँ उतरकर वे ट्रेन से लंदन गए। बाद में उन्होंने ऑक्सफोर्ड, एडिनबर्ग और ब्रिस्टल का दौरा किया और वहाँ से 9 अप्रैल को बुडापेस्ट पहुँचे। 9 दिन बाद उन्होंने विएना का दौरा किया, 25 अप्रैल को स्टुटगार्ट लौटे और 1 मई को पेरिस पहुँचे, जहाँ वे 12 जून तक रहे अगले दिन एस.एस हिमालय नामक जहाज़ में वे मारसैल्स से मिस्र के लिए रवाना हुए और चार दिन के बाद पोर्ट सैड पहुँचे, जहाँ इस्मालिय्येह और अबुक़िर में थोड़े–थोड़े दिनों और रामलेह में एक लम्बे प्रवास के बाद, अपनी ऐतिहासिक यात्राएँ पूरी करके 5 दिसम्बर, 1913 को अब्दुल बहा हाईफा लौट आये।

ये ही वे ऐतिहासिक यात्राएँ थीं जिनके दौरान, श्रोताओं की ऐसी बड़ी संख्या के सामने जो कभी–कभी हज़ार से ऊपर होती थी, अब्दुल बहा ने शानदार सादगी के साथ, प्रेरणा और शक्ति से, अपने सेवाकाल में पहली बार, अपने पिता के धर्म के उन आधारभूत सिद्धांतों की व्याख्या की जो *किताब–ए–अक़दस* में प्रकट किए गए नियमों और विधानों सहित, मानवजाति के लिए ईश्वर का नवीन प्रकटीकरण है। अब्दुल बहा ने अपनी इन यात्राओं के दौरान बुद्धिजीवियों, नेताओं और आम जनता के समक्ष उस दिव्य राजतंत्र के इन आवश्यक तत्वों की घोषणा की – सत्य की ऐसी स्वतंत्र खोज जो अंधविश्वास या परम्परा की बेड़ियों में जकड़ी न हो; सम्पूर्ण मानवजाति की एकता; सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों का त्याग, चाहे वे धार्मिक हों, जातीय हों या राष्ट्रीय; धर्म और विज्ञान में आवश्यक समरूपता; स्त्री और पुरूष – वे दो पंख जिनके सहारे मानवजाति रूपी पक्षी उड़ान भर सकता है, की समानता; अनिवार्य शिक्षा की शुरूआत; एक विश्व भाषा अपनाना; अत्याधिक गरीबी और अमीरी का अन्त; राष्ट्रों के बीच विवाद की स्थिति में न्याय पारित करने के लिए एक विश्व न्यायालय की स्थापना; सेवा की भावना से किए गए कार्यों को प्रार्थना का स्थान प्रदान करना; न्याय को मानव समाज पर शासन करने वाले

सिद्धान्त के रूप में महिमा–मण्डित करना और धर्म के माध्यम से लोगों और राष्ट्रों की सुरक्षा के उपाय समझना; समस्त मानवजाति के सर्वोच्च लक्ष्य के रूप में ऐसी शान्ति की स्थापना करना जो स्थाई और विश्वव्यापी हो। बहाउल्लाह की इन अनुप्राणित करने वाली सच्चाईयों, जिन्हें उन्होंने *"इस युग की आत्मा"* कहा था की व्याख्या का समर्थन उन्होंने उस भावी उथल–पुथल के अग्निकाण्ड की गम्भीर और बार–बार दोहराई गई चेतावनियों से किया, जिसे यदि विश्व के राजनीतिज्ञ रोकने में विफल रहे तो यह सम्पूर्ण यूरोपीय महाद्वीप में आग लगा देगा। इसके अतिरिक्त, इन यात्राओं के दौरान उन्होंने उस महाद्वीप में आने वाले मौलिक परिवर्तन और राजनैतिक ताकत के उस विकेन्द्रीकरण की भविष्यवाणी की जिसका आरम्भ निश्चित रूप से होने वाला था। तुर्की में उत्पन्न होने वाली समस्याओं की ओर संकेत किया, यूरोपीय महाद्वीप में यहूदियों के सताए जाने का पूर्वानुमान लगाया और स्पष्ट रूप से कहा कि, *"मानवजाति की एकता का ध्वज फहराया जायेगा, विश्व शान्ति के मन्दिर की स्थापना होगी और यह दुनिया एक अलग दुनिया बन जायेगी।"*

इन यात्राओं के दौरान, अब्दुल बहा ने ऐसी जीवन शक्ति, ऐसा साहस, ऐसी एकाग्रता और उस कार्य की प्राप्ति के प्रति, जिसके लिए वे उठ खड़े हुए थे, ऐसा समर्पण दिखाया कि वे लोग जिन्हें उनके दैनिक कार्यों को निकट से देखने का सौभाग्य मिला था आश्चर्य और प्रशंसा से भर गए। वे ऐसे दृश्यों एवं आकर्षणों के प्रति उत्सुक रहते थे जो यात्रियों को अक्सर आकर्षित करते हैं और जो उनके दल के सहयात्री उन्हें दिखाना चाहते थे; अपने आराम और स्वास्थ्य के प्रति बेपरवाह; वे हर दिन भोर से लेकर देर रात तक, अपनी ऊर्जा के हर कतरे को काम में लगा देते थे; अपनी यात्रा के व्यय के लिए किसी भी प्रकार की भेंट या अंशदान को वे निरन्तर अस्वीकार करते रहते थे; वे बीमारों, दुःखीजनों और दीनजनों के प्रति करूणामय और अल्पाधिकार प्राप्त जातियों और वर्गों के हितों के प्रति समर्पित थे; गरीबों के प्रति अपनी उदारता में वर्षा के समान प्रचुर; कट्टरपंथियों और साम्प्रदायिकता के सतर्क एवं कट्टर प्रतिपादकों द्वारा उन पर किए गए हमलों को अनदेखा कर देते थे; मंच और आसन से यहूदियों को ईसा मसीह के दैवी ध्येय के प्रमाण देने में, चर्चों एवं

यहूदियों के मन्दिरों में इस्लाम के दिव्यस्रोत के अथवा दिव्य प्रकटीकरण के सत्य के प्रमाण देने में और भौतिकवादियों, नास्तिकों या अज्ञेयवादियों के लिए धर्म की आवश्यकता के प्रमाण देने में वे अद्‌भुत रूप से स्पष्टवादी थे; विभिन्न सम्प्रदायों एवं पंथों के आराधना स्थलों में और बहाउल्लाह के महिमागान में वे सदा स्पष्ट रहते थे; इंग्लैंड और यूनाईटेड स्टेट्स, दोनों में कई अवसरों पर नामचीन और धनी लोगों का एहसान लेने से इंकार करने में वे सदा दृढ़ रहते थे और अन्तिम किन्तु उतना ही महत्वपूर्ण था उनकी सहजता, सच्चाई और सहानुभूति का वह अपनापन और उनकी वह प्रेममयी दया जो वे उस प्रत्येक मित्र और अजनबी, विश्वासी और अविश्वासी, अमीर और गरीब, उच्च और दीन के प्रति समान रूप से दिखाते थे, जिससे वे जहाज़ पर या सड़कों पर, चहलकदमी करते समय, बाग में या चौक में, स्वागत समारोह में या भोज के अवसरों पर, मलिन बस्तियों में या हवेलियों में, अपने अनुयायियों की सभाओं में या ज्ञानियों के सम्मेलन में, अंतरंग रूप से मिलते थे। प्रत्येक बहाई गुण के साकार रूप और प्रत्येक बहाई आदर्श के धारणकर्ता अब्दुल बहा, व्यस्तताओं से भरे तीन वर्षों में एक ऐसी दुनिया के समक्ष उन आरोग्यदायी, उन ईश्वरप्रदत्त सच्चाईयों की घोषणा करते रहे जो दुनिया भौतिकवाद में डूबी हुई थी और जिस पर पहले ही युद्ध का साया था।

उन्होंने मिस्र का कई बार दौरा किया जिसके अन्तर्गत उन्होंने वहाँ के खेदिव, अब्बास हिल्मी पाशा–द्वितीय के साथ कई बार भेंट की, लॉर्ड़ किचेनर के साथ उनका परिचय कराया गया, उन्होंने मुफ्ती शेख मुहम्मद बाख़ित के साथ–साथ खेदिव के इमाम, शेख मुहम्मद रशीद से भी भेंट की तथा कई उलेमाओं, पाशाओं, फारस के प्रतिष्ठित जनों, तुर्की सांसद, काइरो और एलेक्ज़ेन्ड्रिया के प्रमुख समाचार पत्रों के सम्पादकों एवं प्रसिद्ध धार्मिक एवं धर्मनिर्पेक्ष संस्थाओं के नेताओं एवं प्रतिनिधियों के साथ सम्बन्ध बनाए रखा।

अब्दुल बहा के इंग्लैंड प्रवास के दौरान काडोगन गार्डन्स में उनकी सेवा में प्रस्तुत किया गया घर, उन सभी प्रकार के लोगों के लिए एक यथार्थ मक्का बन चुका था, जहाँ ये लोग अक्का के उस कैदी से मिलने के लिए जमा होते थे जिसने पश्चिम में अपने प्रयासों की शुरूआत के लिए सबसे पहले उनके

महान शहर को चुना था। उनके द्वारा लंदन में बिताये गए समय के बारे में बताते हुए उनके समर्पित अतिथेय ने वर्णन किया "ओह, ये तीर्थयात्री, ये मेहमान, ये मिलने वालों की भीड़ ! उन दिनों को याद करते हुए हमारे कान उन लोगों के कदमों की आहट से गूँजने लगते हैं जो प्रत्येक देश से आ रहे हैं। प्रतिदिन, मिलने वालों का एक ताँता, एक अन्तहीन झुण्ड लगा रहता था ! जिसमें मंत्रियों, मिशनरियों, पूरब के विद्वानों एवं छात्रों, रहस्यवादियों, एंगलिकन, कैथोलिक एवं गैर कन्फर्मिस्ट चर्चों के सदस्यों, ब्रह्म विद्यावादियों और हिन्दुओं, ईसाई वैज्ञानिकों एवं डॉक्टरों तथा मुसलमान, बौद्ध, एवं ज़ोरोस्थियन लोगों को सम्मिलित होते हुए देखा जा सकता था। उनसे मिलने के लिए विशेष आग्रह करने वालों में राजनीतिज्ञ, साल्वेशन आर्मी के सैनिक, मानव हितों के अन्य कार्यकर्ता, महिला मताधिकार के कार्यकर्ता, पत्रकार, लेखक, कवि, आरोग्यसाधक, बुनकर, महान महिलाएँ, कलाकार एवं शिल्पी, गरीब बेरोज़गार लोग एवं समृद्ध व्यापारी, नाट्यकला एवं संगीत जगत के सदस्य शामिल थे"।

यह महत्वपूर्ण बात है कि पश्चिमी श्रोताओं के सामने अब्दुल बहा की सबसे पहली उपस्थिति एक ईसाई उपासना मंदिर में तब हुई जब 10 सितम्बर, 1911 को, उन्होंने सिटी टेम्पल के मंच से एक विशाल सभा को सम्बोधित किया। आदरणीय आर. जे. कैंपबेल द्वारा उनका परिचय दिए जाने के बाद उन्होंने बड़ी सरल और हृदयस्पर्शी भाषा और गुँजायमान आवाज़ में ईश्वर की एकता की घोषणा की, धर्मों की आधारभूत एकता की पुष्टि की और यह घोषित किया कि समस्त जातियों, धर्मों और वर्गों के मनुष्यों की संतानों की एकता की घड़ी आ चुकी है। एक अन्य अवसर पर 17 सितम्बर को, आदरणीय आर्चडेकन विल्बरफोर्स के अनुरोध पर, उस चर्च की शाम की सेवा के समापन के बाद उन्होंने, सेंट जॉन द डिवाइन के शिष्यों की सभा को सम्बोधित किया और जैसी कि बहाउल्लाह द्वारा *किताब–ए–ईक़ान* में पुष्टि और व्याख्या की गई है उन्होंने ईश्वरावतार की महानता को अपने सम्बोधन के विषय के रूप में चुना। उस घटना पर की गई एक टिप्पणी में लिखा गया कि "आर्चडेकन ने अपने मेहमान के लिए वेदी की सीढ़ियों पर सबसे बड़े पादरी की कुर्सी रखी और उनके पास खड़े रहकर, अब्दुल बहा के उस सम्बोधन का अनुवाद स्वयं

किया, जिसका उस सभा पर गहरा प्रभाव पड़ा और आर्चडेकन के उदाहरण का अनुसरण करते हुए सभी ने ईश्वर के उस सेवक के आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए घुटने टेक दिए, जो बाँहें पसारे खड़ा था और उस शांत वातावरण में जिसकी स्तुति की शक्ति से उसकी अद्‌भुत आवाज़ गूंजती रही।"

लंदन के लॉर्ड मेयर के आमंत्रण पर अब्दुल बहा ने उनकी हवेली में उनके साथ सुबह का नाश्ता किया; थियोसोफिकल सोसाईटी के सभापति के स्पष्ट अनुरोध पर उन्होंने मुख्यालय में सोसाईटी कार्यकर्ताओं को सम्बोधित किया, साथ ही उन्होंने लंदन में 'हायर थॉट' की एक मीटिंग को भी सम्बोधित किया; ब्रह्म समाज सोसाईटी के एक प्रतिनिधि दल द्वारा उन्हें सोसाईटी के तत्वावधान में एक व्याख्यान प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया। ग्रेट ब्रिटेन के मुसलमान समुदाय के आमंत्रण पर उन्होंने शहर की एक मस्जिद का दौरा किया और वहाँ विश्व एकता पर एक वक्तव्य प्रस्तुत किया, साथ ही फारस के राजकुमारों, प्रतिष्ठित व्यक्तियों, पूर्व मंत्रियों और लंदन में परशियन लिगेशन के सदस्यों द्वारा उनका अतिथि सत्कार भी किया गया। ऑक्सफोर्ड़ में वे डॉ. टी. के. चैयिन के घर में उनके अतिथि बनकर रहे और उन्होंने "उस विशाल और शैक्षणिक गतिविधियों में रुचि रखने वाली सभा" को सम्बोधित किया जो अपने स्वरूप में उच्च स्तरीय शिक्षा के लिए विख्यात थी और उस शहर के मैनचेस्टर कॉलेज में आयोजित की गई थी जिसकी अध्यक्षता डॉ. एस्अलिन कार्पेन्टर ने की थी। एक कॉन्ग्रिगेशनल चर्च के पादरी के अनुरोध पर अब्दुल बहा ने लंदन के पूर्वी छोर पर स्थित उस चर्च के धर्मासन से एक वक्तव्य प्रस्तुत किया; उन्होंने कैक्सटन हॉल में, सर थॉमस बर्केली की अध्यक्षता में, वेस्टमिनिस्टर हॉल में भी सभाओं को सम्बोधित किया तथा वेस्टमिनिस्टर के एक चर्च हाउस में "ईगर हार्ट" नाम की एक रहस्यमय ईसाई नाटिका की प्रस्तुति देखी। यह उनके जीवन में उनके द्वारा देखी गई पहली नाट्य प्रस्तुति थी और इस प्रस्तुति में दर्शाए गए ईसा मसीह के जीवन और दुःखों को देखकर अब्दुल बहा की आँखों में आँसू आ गए। टेविस्टॉक प्लेस के पासमोर एडवर्ड्स सेटलमेंट हॉल में उन्होंने लगभग चार सौ साठ जनप्रतिनिधियों की उस सभा को सम्बोधित किया जिसकी अध्यक्षता प्रोफेसर माईकल सेडलर द्वारा की गई

थी। उन्होंने इस सेटलमेंट की कुछ ऐसी महिलाओं से भी भेंट की जो लंदन से लगभग बीस मील की दूरी पर अवकाश पर प्रवास कर रही थी। अब्दुल बहा ने एक बार फिर उस स्थान का भ्रमण किया और उस अवसर पर उनसे विशेष रूप से मिलने के लिए वहाँ एकत्रित होने वाले लोगों में हर प्रकार के व्यक्तियों से भेंट की। इन व्यक्तियों में विभिन्न स्तरों के पादरी, लड़कों के एक पब्लिक स्कूल के हेडमास्टर, एक संसद सदस्य, एक डॉक्टर, एक प्रसिद्ध राजनीतिक लेखक, एक विश्वविद्यालय के कुलपति, कई पत्रकार, एक जाने–माने कवि तथा लंदन के एक मजिस्ट्रेट शामिल थे।" इस घटना का वर्णन करते हुए इंग्लैंड में अब्दुल बहा की यात्रा के एक इतिहासकार ने लिखा है, "उस दृश्य को एक लम्बे समय तक याद किया जायेगा जब दोपहर की धूप में वे खिड़की के पास उस चिथड़े पहने हुए किन्तु खुशहाल बालक को अपनी बाँहों में समेटे हुए बैठे थे जो अपनी गुल्लक और अपनी असमर्थ माँ के लिए दो आने माँगने के लिए अब्दुल बहा के पास आया था जबकि इस दौरान कमरे में अब्दुल बहा के आसपास उपस्थित स्त्री और पुरूष – शिक्षा, समाजवाद, प्रथम रिफॉर्म बिल जैसे विषयों तथा पनडुब्बियों एवं वायरलेस टेलीग्राफी के उस नए युग की चर्चा कर रहे थे जिसमें मानव प्रवेश कर रहा था।"

अब्दुल बहा द्वारा इंग्लैंड और स्कॉटलैंड में बिताये गए यादगार दिनों के दौरान उनसे मुलाकात का अनुरोध करने वालों में रेवरेन्ड आर्चडेकन विल्बरफोर्स, रेवरेन्ड आर. जे. कैंम्पबेल, रेवरेन्ड रोंद्धा विलियम्स, रेवरेन्ड रोनाल्ड कोर्बेट, लॉर्ड लेमिंग्टन, सर रिचर्ड एवं लेडी स्टेपली, सर माईकल सेडलर, ज़िलुस–सुल्तान का पुत्र जलालुद–दौलिह, जलावर के महाराजा सर अमीर अली, जिन्होंने अब्दुल बहा से कई बार भेंट की थी और उनके सम्मान में शानदार भोज और स्वागत आयोजित किया था, राजपुताना के महाराजा, सारावाक की महारानी, राजकुमारी काराद्जा, बैरोनेस बार्नेकोव, लेडी वैमिस और उनकी बहन लेडी ग्लेनकोमर, लेडी एगन्यू, मिस कोन्स्टेन्स मौड, प्रोफेसर ई.जी. ब्राउन, प्रोफेसर पैट्रिक गिड्स, क्रिस्चन कॉमनवेल्थ के सम्पादक श्री एलबर्ट डौसन, श्री डेविड ग्रेहम पोल, श्रीमती एनी बेसेन्ट, मिसेस पैंखर्स्ट और मिस्टर स्टेड शामिल थे, जिन्होंने उनके साथ लम्बी और गम्भीर बातचीत की। जिन लोगों को

अब्दुल बहा ने उनसे अकेले में मिलने का सौभाग्य प्रदान किया था, उन पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन करते हुए उनके अतिथेय ने लिखा है, "इतने बेमिसाल अनुभव के लिए आवेदन करने वाले लोग असंख्य थे, लेकिन यह अनुभव कितना अतुलनीय था, यह वे केवल तब जान पाते थे जब वे मास्टर (अब्दुल बहा) की उपस्थिति में होते थे। अब्दुल बहा से मिलने के बाद इन लोगों के बाहर आने पर उनके चेहरों के हावभाव देखकर हमें थोड़ा–बहुत अन्दाज़ा हो जाता था कि उनके अनुभव में विस्मय, आश्चर्य और एक प्रकार की शान्ति से भरे आनन्द का सम्मिश्रण था। कभी–कभी हमें इन लोगों के अन्दर इस बाहरी दुनिया में दोबारा न लौटने की इच्छा दिखाई देती थी मानो वे अब्दुल बहा से भेंट करने से उत्पन्न होने वाले परमानन्द को कस कर थामे रखना चाहते हों, ताकि कहीं इस भौतिक जगत की वस्तुओं में दोबारा लौटने से यह आनन्द उनसे छिन न जाये।" उस यादगार भेंट से उत्पन्न होने वाले परिणामों की समीक्षा करते हुए उसी इतिहासकार ने वर्णन किया है कि, "सभी तरह के स्त्री–पुरूषों के मन–मस्तिष्क में एक गहरा प्रभाव घर कर गया.....। अब्दुल बहा के लंदन प्रवास की अत्यन्त प्रशंसा की गई; उनके चले जाने पर अत्यन्त खेद महसूस किया गया। वे अपने पीछे असंख्य मित्र छोड़ गए। उनके स्नेह ने प्रेम का दीप प्रज्वलित किया था। उनका दिल पश्चिम के लिए खुल चुका था और पश्चिम का दिल, पूरब के इस आदरणीय महापुरूष के दिल में घर कर गया था। उनके शब्दों में ऐसा कुछ था जो न केवल उनके तात्कालिक श्रोताओं को बल्कि आमरूप से स्त्री–पुरूष सभी को प्रभावित कर गया।"

पेरिस जहाँ उन्होंने एवेन्यू डी केमन्स में स्थित एक अपार्टमेंट में कुछ दिन बिताए थे की उनकी यात्रा भी प्रेम भरे स्वागत के लिए उतने ही उल्लेखनीय चिन्हों के कारण विशेष थी जितना कि लंदन का उनके मित्रों और अनुयायियों द्वारा उन्हें दिया गया स्वागत। उसी समर्पित अंग्रेज़ मेज़बान, लेड़ी ब्लॉमफील्ड ने जो उनके पीछे पीछे पेरिस आ गईं थीं, ने यह वर्णन किया है कि, "लंदन की तरह ही, पेरिस प्रवास के दौरान भी, दैनिक क्रियाकलापों ने आध्यात्मिक घटनाओं का वातावरण धारण कर लिया था.....। जैसा कि मास्टर (अब्दुल बहा) का दस्तूर था, हर सुबह वे अपने आसपास एकत्रित होने वाले

शिक्षित और अशिक्षित सभी के समक्ष बहाउल्लाह की शिक्षाओं के सिद्धान्तों की व्याख्या करते। वहाँ सभी राष्ट्रों एवं जातियों के, पूरब और पश्चिम के वे लोग उपस्थित थे जिनमें ब्रह्मविद्यावादी, अज्ञेयवादी, भौतिकवादी, आध्यात्मवादी, ईसाई वैज्ञानिक, समाज सुधारक, हिन्दू, सूफी, मुसलमान, बौद्ध, जरथोस्ती एवं अन्य कई लोग शामिल थे।" और एक बार फिर वे वर्णन करती हैं : "साक्षात्कार पर साक्षात्कार होते रहे। ईसाई धर्माधिकारी और व्यवस्था की विभिन्न शाखाओं के चर्चों के पदाधिकारी आए, जिनमें कुछ ऐसे व्यक्ति भी थे जो वास्तव में सत्य के नए पहलुओं की खोज करने के इच्छुक थे.....। अन्य ऐसे थे जिन्होंने बातों को अनसुना कर दिया, ताकि वे सब कुछ सुनकर समझ न लें।"

अब्दुल बहा से भेंट करने वालों में फारस के राजकुमार, प्रतिष्ठित जन और पूर्व के मंत्री, ज़िल्लुस–सुल्तान, फारस के मंत्री, पेरिस में तुर्की का राजदूत रशीद पाशा, बेरूत का एक राजकुमार, तुर्की के पाशा एवं वाइकाउंट आरावाका, और स्पेन के कोर्ट में पदस्थ जापान के राजदूत शामिल थे। अब्दुल बहा ने एस्परान्ति, और ब्रह्मविद्यावादी वेदांत विभाग के छात्रों के विशाल समूहों को भी सम्बोधित किया; एक पादरी के आमंत्रण पर उन्होंने शहर के एक अत्यन्त गरीब इलाके में एक सभा को सम्बोधित किया, जबकि उनके अनुयायियों की बैठकों में, उन लोगों को, जो उनकी शिक्षाओं से पहले ही परिचित थे, अब्दुल बहा के मुख से उनके पिता के धर्म के कुछ पहलुओं पर विस्तृत और बार–बार दोहराई जाने वाली व्याख्याएँ सुनने का सौभाग्य मिला।

हालाँकि स्टटगार्ट में अब्दुल बहा बहुत कम समय तक ठहरे थे, फिर भी वहाँ का उनका प्रवास यादगार रहा। अपने नाजुक स्वास्थ्य के बावजूद उन्होंने यहाँ तक की यात्रा इसलिए तय की थी, ताकि जर्मनी के उत्साही और स्पष्ट रूप से उनके प्रिय मित्रों के समुदाय के सदस्यों के साथ वे व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित कर सकें। अपने समर्पित अनुयायियों की सभाओं में भाग लेने के अलावा, उन्होंने एसेलिन्जिन में एकत्रित होने वाले युवा दल के सदस्यों को अक्षय आशीर्वाद प्रदान किए और यूरोप के एस्पेरेन्तिस्तों के अध्यक्ष प्रोफेसर क्रिस्टेल के आमंत्रण पर, एस्पेरेन्तिस्तों की एक विशाल बैठक को उन्हीं के क्लब में सम्बोधित किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने वर्टेम्बर्ग में बैड मेरजेंथियम का भ्रमण किया, जहाँ कुछ वर्षों बाद

उनके भ्रमण की याद में उनके एक आभारी शिष्य द्वारा भवन का निर्माण कराया गया। एक प्रत्यक्षदर्शी ने लिखा है "जर्मनी के अनुयायियों की विनम्रता, प्रेम और समर्पण देखकर अब्दुल बहा का हृदय आनन्द से भर उठा। उनके आशीर्वादों और प्रोत्साहन भरे परामर्श के शब्दों को मित्रों ने पूरी विनम्रता के साथ प्राप्त किया। .....मास्टर (अब्दुल बहा) से मिलने के लिए दूर और पास से मित्र आए थे। होटल मारक्वार्ट में आगन्तुकों का तांता लगा रहा। वहाँ अब्दुल बहा ने इतने प्रेम और दयालुता के साथ उनका स्वागत किया कि वे आनन्द और उल्लास से दीप्तिमान हो उठे।"

विएना में, जहाँ अब्दुल बहा कुछ दिन रुके थे, उन्होंने ब्रह्मविद्यावादियों की एक सभा को सम्बोधित किया, जबकि बुडापेस्ट में उन्होंने विश्वविद्यालय के अध्यक्ष को साक्षात्कार प्रदान किया, कई अवसरों पर वे प्रसिद्ध ऑरियेन्टलिस्ट प्रोफेसर आरमिनियस वैमबेरी से मिले और थियोसोफिकल सोसाइटी को सम्बोधित किया। उनसे मिलने के लिए आने वालों में तुरेनियन के प्रेसिडेन्ट, तुर्की सोसाईटियों के प्रतिनिधिगण, सेना के अधिकारी, कई संसद सदस्य और यंग टर्क्स का वह प्रतिनिधि दल शामिल था जिसका नेतृत्व प्रोफेसर जूलियस जर्मेनस द्वारा किया गया था जिन्होंने अब्दुल बहा के आने पर शहर में उनका हार्दिक स्वागत किया था। डॉ. रूस्तम वैम्बेरी का लिखित वर्णन है कि "इस दौरान डूनापलोटा होटल में उनका (अब्दुल बहा) कमरा, उन सभी के लिए एक यथार्थ तीर्थ बन चुका था, जिन्हें पूरब का रहस्यवाद और इसके मास्टर (अब्दुल बहा) की विद्वता ने अपने चमत्कारी घेरे में आकर्षित कर लिया था। उनसे मिलने के लिए आने वालों में काउंट एलबर्ट एप्पोन्यी, प्रिलेट एलेक्ज़ेन्डर गीसविन, विश्व भर में प्रख्यात ऑरियेन्टलिस्ट प्रोफेसर इगनेटियस गोल्डज़िहर, तथा बुडापेस्ट के प्रख्यात चित्रकार, एवं हंगरी की थियोसोफिकल सोसाईटी के लीडर प्रोफेसर रोबर्ट ए. नैडलर सम्मिलित थे।

इन यात्राओं में अब्दुल बहा द्वारा प्रदर्शित की गई अपार जीवनशक्ति का अत्यन्त आश्चर्यजनक स्वरूप देखने का सौभाग्य उत्तरी अमेरिका के महाद्वीप के लिए नियत था। कनाडा में अब्दुल बहा के अनुयायियों के संगठित समुदाय द्वारा प्राप्त की गई उल्लेखनीय प्रगति और उनके सन्देश के प्रति अमेरिका की

जनता की ग्रहणशीलता देखने लायक थी। अब्दुल बहा ने अपनी समस्त शक्ति और ऊर्जा अपनी यात्रा के इस सबसे महत्वपूर्ण दौरे को समर्पित की थी। यह एक ऐसा दौरा था जिसके लिए पाँच हजार मील की यात्रा तय करनी थी जो अप्रैल से दिसम्बर तक चली और जो अब्दुल बहा को अटलांटिक से प्रशांत महासागर के तटों तक और उतनी ही दूर वापस ले आई। न्यूयॉर्क में अपनी प्रथम बैठक के अवसर पर एकत्रित होने वाले अनुयायियों से उन्होंने कहा, *"यह लम्बी यात्रा सिद्ध करती है कि आपके प्रति मेरा प्रेम कितना गहरा है। बहुत सी मुश्किलें और उतार–चढ़ाव आये, लेकिन ये सब कुछ आपसे मिलने के विचार से मिट गए और भुला दिए गए।"*

अब्दुल बहा के व्यवहार और सेवाभाव ने यह प्रदर्शित कर दिया था कि वे अपनी इस यात्रा को कितना महत्वपूर्ण मानते थे। मिशिगन झील के किनारे, शिकागो शहर के निकट हाल ही में खरीदी गई ज़मीन पर पूरब एवं पश्चिम के बहाइयों की सभा की उपस्थिति में वहाँ के मश्रिकुल–असकार की आधारशिला का पहला पत्थर स्वयं अब्दुल बहा के हाथों रखा जाना; *"संविदा के शहर"* के नाम से भविष्य में प्रख्यात होने वाले न्यूयॉर्क शहर में अपने अनुयायियों की एक आम सभा में हाल ही में अनुवादित की गई पाती के पढ़े जाने के बाद, अब्दुल बहा द्वारा बहाउल्लाह की संविदा के अर्थों की शक्तिशाली पुष्टि करना; कैलिफोर्निया के इंगलवुड शहर में अमेरिका के प्रथम अनुयायी और वास्तविक रूप से सम्पूर्ण पश्चिम में बहाउल्लाह के धर्म को अपनाने वाले सबसे पहले व्यक्ति, थोर्नटन चेस की समाधि पर अब्दुल बहा की विशेष तीर्थयात्रा को चिन्हित करने वाले हृदयस्पर्शी समारोह का आयोजन; न्यू जर्सी के वेस्ट इंगलवुड के हरे–भरे वातावरण में जून माह के एक दिन खुली हवा में एकत्रित होने वाले उनके अनुयायियों की एक बड़ी सभा को स्वयं अब्दुल बहा द्वारा एक प्रतीकात्मक भोज दिया जाना; पिस्काटाकुआ नदी के किनारे स्थित ग्रीन एकर में – जो पश्चिम का सबसे पहला ग्रीष्मकालीन बहाई स्कूल के रूप में विकसित होने वाला था और जहाँ उनके कई अनुयायी एकत्रित हुए थे, उस ग्रीन एकर के खुले मंच को अब्दुल बहा द्वारा प्रदान किए गए आशीर्वाद; शिकागो में नवस्थापित बहाई टेम्पल युनिटी के अन्तिम सत्र में उपस्थित सैंकड़ों

श्रोताओं को उनका सम्बोधन और अन्त में लेकिन उतना ही महत्वपूर्ण, उनका वह अनुकरणीय कार्य, जिसमें उनके द्वारा एक श्वेत और दूसरे अफ्रीकी जाति की भिन्न राष्ट्रीयता वाले अपने दो अनुयायियों को विवाह के बंधन में बाँधा जाना, इन सभी कार्यों को अमेरिका के अनुयायियों के समुदाय के साथ अब्दुल बहा के मिलन से जुड़े सर्वोत्कृष्ट कार्य माने जाने चाहिए, वे कार्य जो उनके केन्द्रीय उपासना मंदिर के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करने के लिए उन्हें उन परीक्षाओं का सामना करने में दृढ़ बनाने के लिए जिन्हें वे शीघ्र ही सहन करने वाले थे, उनकी एकता को मजबूत बनाने के लिए और उस प्रशासनिक व्यवस्था को आशीर्वाद देने के लिए किए गए थे जिसका वे शीघ्र ही शुभारम्भ करने वाले थे और जिसके भावी समर्थक बनने वाले थे।

उस सम्पूर्ण महाद्वीप के उनके भ्रमण और उनके सम्पर्क में आने वाले असंख्य लोगों के साथ उनके मेलजोल के दौरान अब्दुल बहा की सार्वजनिक गतिविधियाँ भी कुछ कम उल्लेखनीय नहीं थीं। कम से कम आठ माह तक उनके दिन और रातों को घेर लेने वाली इन विविध गतिविधियों का सम्पूर्ण विवरण इस सर्वेक्षण की सीमा से बाहर है। इतना कहना काफी होगा कि केवल न्यूयॉर्क शहर में ही उन्होंने कम से कम 55 अलग–अलग स्थानों पर सार्वजनिक वक्तव्य प्रस्तुत किये और औपचारिक यात्राएँ की। शान्ति से सम्बन्धित संगठनों, ईसाई और यहूदी सभाओं, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों, कल्याण एवं परोपकारी संगठनों, नैतिक पंथों के सदस्यों, 'न्यू थॉट' के केन्द्रों, आध्यात्मिक समूहों, महिलाओं के क्लबों, वैज्ञानिक संघों, एस्पेरेन्टिस्टों की सभाओं, ब्रह्मविद्यावादियों, मोर्मोनों, अज्ञेयवादियों, श्वेत वर्ण के लोगों के विकास से सम्बद्ध संस्थाओं, सीरियाई, आर्मीनियाई, यूनानी, चीनी, और जापानी समुदायों के प्रतिनिधियों को अब्दुल बहा की गरिमामय उपस्थिति में लाया गया और उन्हीं की जिह्वा से उनके पिता का संदेश सुनने का उन्हें सौभाग्य प्राप्त हुआ। अब्दुल बहा की दूरदर्शिता या उनके सम्मानो के स्वरूप को समझने में, प्रेस ने अपनी सम्पादकीय टिप्पणी में या अब्दुल बहा के वक्तव्यों की रिपोर्टों के प्रकाशन में कभी भी धीमी गति नहीं अपनाई।

लेक मोहोंक झील के पास होने वाले शान्ति सम्मेलन में उनका वक्तव्य; कोलम्बिया, हावर्ड और न्यूयॉर्क विश्वविद्यालयों में विशाल सभाओं में उनके

सम्बोधन; श्वेत वर्ण के विकास से सम्बद्ध राष्ट्रीय संघ के चौथे वार्षिक सम्मेलन में उनकी भागीदारी; सेन फ्रैंसिस्को में टेम्पल इमान्युएल नाम के एक यहूदी उपासनागृह में ईसा मसीह और मुहम्मद के पैग़म्बरी उद्देश्यों की सत्यता पर उनका वह निडर व्याख्यान, जहाँ कम से कम दो हजार व्यक्ति उपस्थित थे; लेलैंड स्टनेफोर्ड विश्वविद्यालय में 1800 छात्रों, 180 शिक्षकों एवं प्राध्यापकों की सभा के समक्ष उनका ज्ञानवर्धक संवाद; न्यूयॉर्क की झुग्गियों में बावेरी ध्येय में उनका दौरा; वॉशिंगटन में उनके सम्मान में आयोजित किया गया वह भव्य स्वागत समारोह जिसमें सामाजिक जगत की कई विशिष्ट हस्तियाँ उपस्थित हुई। ये सभी, उस स्मरणीय ध्येय के मुख्य आकर्षणों के रूप में सामने आते हैं जो अब्दुल बहा ने अपने पिता के धर्म की सेवा में प्रारम्भ किया था। राज्य के सचिवों, राजदूतों, कांग्रेसियों, विशिष्ट यहूदी पुजारियों और चर्च के पदाधिकारियों सहित अन्य प्रतिष्ठित लोगों ने उनकी उपस्थिति में प्रवेश किया, इनमें लेलैंड स्टेनफोर्ड़ यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. डी. एस जोर्डन, कोलम्बिया यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर जैक्सन, ऑक्सफोर्ड़ यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर जैक, न्यूयॉर्क के रब्बी स्टीफन वाईज़, डॉ. मार्टिन ए. मेयर, रब्बी जोसेफ एल लेवी, रब्बी एब्राम सायमन, एलेक्ज़ेन्डर ग्रेहम बेल, रविन्द्रनाथ टैगोर, होन. फ्रैंकलिन केलेन, श्रीमती विलियम जेनिंगस ब्रायन, एन्ड्रू कार्निगी, सेक्रेटरी ऑफ द यूनाईटेड स्टेट्स ट्रेज़री, होन. फ्रैंक्लिन मैक वॉघ, ली मैकलंग, मिस्टर रूज़वेल्ट, एडमिरल वैन राईट, वॉशिंगटन में पदस्थ ब्रिटेन, डच और स्विस मंत्री, उस शहर में पदस्थ तुर्की राजदूत युसुफ दिया पाशा, थॉमस सीटन, होन. विलियम सल्ज़र और खेदिव के भाई मिस्र के राजकुमार मुहम्मद अली जैसी हस्तियाँ सम्मिलित थीं।

अमेरिका में अब्दुल बहा की यात्राओं के बारे में एक टीकाकार ने लिखा है : "1912 में जब अब्दुल बहा ने पहली बार इस देश की यात्रा की तब, उन्होंने पाया कि सहानुभूति से भरे श्रोताओं का एक विशाल समूह उनकी प्रतीक्षा कर रहा था ताकि वह व्यक्तिगत रूप से उनका अभिनन्दन कर सकें और उनका प्रेममय एवं आध्यात्मिक संदेश उनके स्वयं के मुखश्री से प्राप्त कर सकें।"....अब्दुल बहा द्वारा कहे गए शब्दों से परे, उनके व्यक्तित्व में कुछ ऐसा था, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता और जिसके कारण उनकी उपस्थिति में

प्रवेश करने वाले सभी लोग गहन रूप से प्रभावित हो जाते थे। उनका गुंबदनुमा ताज, उनकी बड़े–बुजुर्गों सी दाढ़ी, आँखें ऐसी जो समय और किसी भी अवरोध की पहुँच के परे देख चुकी हों, उनकी धीमी किन्तु स्पष्ट रूप से गहराई तक उतर जाने वाली वाणी, उनकी पारदर्शी विनम्रता, उनका कभी न भूल सकने वाला प्रेम और इन सब के ऊपर उनके अन्दर कोमलता के साथ मिला हुआ शक्ति का एक ऐसा बोध था जिसने उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को आध्यात्मिक उमंग के एक ऐसे दुर्लभ तेज से विभूषित कर दिया था जो उन्हें न केवल दूसरों से अलग कर देता था, बल्कि इसके साथ–साथ उन्हें दीनतम व्यक्ति के निकट भी ले आता था। इन्हीं सब बातों के कारण और इनसे अधिक अन्य बहुत सी ऐसी बातों के कारण जिन्हें कभी परिभाषित नहीं किया जा सकता, जिन्होंने उनके कई मित्रों के दिलों में ऐसी यादें छोड़ दी हैं जिन्हें मिटाना असम्भव है और जो इतनी बहुमूल्य हैं कि शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।"

यूरोप और अमेरिका में अब्दुल बहा के भ्रमण की विविध और अपरिमित गतिविधियों का कितना ही सर्वेक्षण क्यों न किया जाये, फिर भी उसमें उन अजीब घटनाओं का उल्लेख नहीं छोड़ा जा सकता जो अक्सर अब्दुल बहा के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क से जुड़ी रहती थीं। उदाहरण के लिए एक ऐसे अदम्य युवक का वह दिलेर दृढ़संकल्प, जिसने अब्दुल बहा से मिलने के लिए ट्रेन के पहियों के बीच की छड़ों पर लेटकर मिनियापोलिस से मैंन तक की यात्रा इसलिए तय की थी क्योंकि उसे डर था कि अब्दुल बहा पश्चिमी राज्यों की यात्रा नहीं करेंगे और वह स्वयं भी इस स्थिति में नहीं था कि न्यू इंग्लैंड तक की ट्रेन की यात्रा का खर्च उठा सके; इंग्लैंड के एक ग्रामीण शिक्षक के उस बेटे के जीवन में आने वाला वह परिवर्तन, जिसने अपने रंज और गरीबी के कारण थेम्स नदी के किनारे पर टहलते समय आत्महत्या करने का निश्चय कर लिया था और जिसने एक दुकान की खिड़की में प्रदर्शित की गई अब्दुल बहा की तस्वीर को देखते ही उनके बारे में पूछकर तत्काल उनके घर पहुँचने की शीघ्रता की थी और उनके आनन्द एवं दिलासा देने वाले शब्दों को सुनकर इतना जीवंत हो उठा था कि उसने अपने आपको खत्म करने का

विचार ही त्याग दिया। उस महिला का असाधारण अनुभव जिसकी नन्ही बच्ची ने अपने एक स्वप्न के परिणामस्वरूप यह ज़िद पकड़ ली थी कि ईसा मसीह इस दुनिया में हैं और जिसने एक पत्रिका की दुकान की खिड़की में सजायी गई अब्दुल बहा की तस्वीर को देखते ही तुरन्त उन्हें अपने स्वप्न के ईसा मसीह के रूप में पहचान लिया था। इस घटना के बाद, जब उसकी माँ ने यह खबर पढ़ी कि वे पेरिस में हैं, तब वह यूरोप जाने वाली अगली नाव में बैठकर उनकी उपस्थिति में पहुँचने की शीघ्रता करने के लिए प्रेरित हो गई। जापान में छपने वाली एक पत्रिका के सम्पादक ने टोकियो की अपनी यात्रा को कॉन्सटैन्टिनोपल में ही समाप्त करते हुए लंदन जाने का निर्णय ले लिया ताकि वह अब्दुल बहा की उपस्थिति में "एक शाम बिताने का सुख प्राप्त कर सके"। एक हृदयस्पर्शी दृश्य वह भी था जब अब्दुल बहा ने हाल ही में इश्कॉबाद से लंदन आने वाले फारस के एक मित्र के हाथों से एक सूती रुमाल में लिपटी एक काली सूखी ब्रेड और एक मुरझाया हुआ सेव स्वीकार किया। यह इश्काबाद शहर के एक गरीब बहाई मज़दूर की भेंट थी। अब्दुल बहा ने वहाँ एकत्रित मेहमानों के सामने उस रुमाल को खोला और अपना भोजन अनछुआ छोड़ते हुए उस सूखी ब्रेड को तोड़कर खाया और वहाँ उपस्थित लोगों के साथ भी बाँटा। ये उन असंख्य घटनाओं में से कुछ थीं जो अब्दुल बहा की यादगार यात्राओं के कुछ व्यक्तिगत पहलुओं पर प्रकाश डालती हैं।

यूरोप और अमेरिका के शहरों में घूमती हुई उस तेजस्वी और पितृ–तुल्य विभूति से जुड़े हुए कुछ दृश्यों को कभी नहीं भुलाया जा सकेगा। वह असाधारण साक्षात्कार जिसमें अब्दुल बहा ने आर्चडेकन विल्बरफोर्स के सिर पर प्यार से हाथ रख कर उनके बहुत से प्रश्नों के उत्तर दिए थे, जिस दौरान चर्च का यह विख्यात पादरी एक नीची कुर्सी पर उनके पास बैठा था; इससे भी अधिक अनूठा वह दृश्य जिसमें इसी आर्चडेकन ने सेंट जॉन द डिवाईन चर्च में अब्दुल बहा से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए अपनी सम्पूर्ण सभा के साथ घुटने टेके और इसके बाद वे अपने मेहमान (अब्दुल बहा) का हाथ पकड़कर गलियारे से होते हुए उन्हें बैठक कक्ष तक ले गए, जिस दौरान वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने खड़े होकर स्तुति गीत गाया; पूर्व के अपने अन्यायों के लिए

अत्याधिक खेद व्यक्त करते हुए एवं अब्दुल बहा से क्षमा की याचना करते हुए उनके चरणों में गिरे हुए जलालुद–दौलिह का वह दृश्य और लेलैंड स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी में अब्दुल बहा का वह उत्साही स्वागत जहाँ लगभग दो हजार विद्यार्थियों और प्राध्यापकों के सामने उन्होंने अपने संदेश के आधार में निहित चन्द श्रेष्ठतम सच्चाईयों पर चर्चा की थी; बॉवेरी मिशन का वह हृदयस्पर्शी दृश्य जब न्यूयॉर्क के चार सौ गरीब तबके के लोग अब्दुल बहा के पास से श्रृंखला में गुज़रते रहे और प्रत्येक को उनके आशीर्वादित हाथों से चाँदी का एक सिक्का प्राप्त हुआ। बोस्टन में सीरियाई महिला का वह दावा, जिसने अब्दुल बहा के आसपास जमा हुई भीड़ को हटाकर स्वयं को उनके चरणों में गिरा दिया और पुकार उठी : "मैं स्वीकार करती हूँ कि आप में मैंने ईश्वर की आत्मा और स्वयं ईसा मसीह को देखा है"; अब्दुल बहा को उन दो अरबी प्रशंसकों द्वारा दी गई वह श्रद्धांजलि भी कुछ कम नहीं थी जब अब्दुल बहा उस शहर को छोड़कर डब्लिन एन.एच. जा रहे थे तब वे उनके चरणों में गिर गए और ज़ोर–ज़ोर से बिलखते हुए कहने लगे कि अब्दुल बहा मानवजाति के लिए स्वयं ईश्वर के संदेशवाहक हैं। दो हजार यहूदियों की उस विशाल सभा का दृश्य जो सेन फ्रेन्सिस्को के एक यहूदी उपासना मंदिर में एकत्रित हुए थे, जब अब्दुल बहा, ईसा मसीह और मुहम्मद के दावों की वैधता सिद्ध कर रहे थे तब वे उनके वक्तव्य को बड़े ध्यान से सुन रहे थे; वह सभा जिसे उन्होंने एक रात मॉन्ट्रियल में सम्बोधित किया था और जिसमें अपने वक्तव्य के दौरान, वे जिस विषय की व्याख्या कर रहे थे उसमें इतने खो गए कि उनके सिर से उनका ताज गिर गया। जब अब्दुल बहा उस हॉल से लौट रहे थे तब पेरिस के एक अत्यन्त गरीब इलाके की भीड़ ने पूर्ण श्रद्धाभाव से तथा बड़े सम्मान और मौन के साथ उन्हें अपने बीच से निकलने का रास्ता दिया। उस यहूदी डॉक्टर का अनोखा भाव जो लंदन से अब्दुल बहा के प्रस्थान की सुबह उन्हें अलविदा कहने के लिए बड़ी तेज़ी से वहाँ पहुँचा और पहले तो उनके सिर और छाती पर खुशबूदार इत्र लगाकर उनका अभिषेक किया और फिर, वहाँ उपस्थित सभी के हाथ छूकर अब्दुल बहा के गले में गुलाब और नरगिस की कलियों की एक माला पहना दी; उनके केडेगोन गार्डन्स में स्थित घर के

दरवाज़े की सीढ़ियों पर भोर के तत्काल बाद आने वाले आगन्तुकों को प्रवेश मिलने तक धैर्यपूर्वक इन्तज़ार करना; उनका वह तेजस्वी रूप जब वे अपने फुर्तीले कदमों से प्लेटफार्म पर चहलकदमी करते थे अथवा चर्चों और यहूदी उपासना मंदिरों में आदरपूर्ण श्रोताओं की विशाल सभाओं के सामने हाथ उठाकर आशीर्वाद देने के लिए खड़े होते थे; लंदन के प्रतिष्ठित समाज की महिलाओं द्वारा उन्हें दिया गया अनापेक्षित सम्मान जो उनकी उपस्थिति में बुलाये जाने पर बड़े स्वाभाविक रूप से झुक जाती थीं; वह मार्मिक दृश्य जब अब्दुल बहा ने इंगलवुड के समाधि–क्षेत्र में अपने प्रिय शिष्य थोर्नटन चेस की समाधि पर झुककर उनकी समाधि के पत्थर को चूमा था, यह एक ऐसा उदाहरण था जिसका वहाँ उपस्थित सभी ने अनुसरण किया था। वर्किंग की एक मस्जिद में विश्व एकता पर उनका एक वक्तव्य सुनने के लिए पूरब और पश्चिम के प्रतिष्ठित ईसाई, यहूदी और मुसलमान स्त्री और पुरूषों का एकत्र होना, ऐसे दृश्य एक छपे हुए पृष्ठ के निर्जीव रिकार्ड में अब भी अपनी मूल प्रभावशीलता और शक्ति कायम रखते हैं।

कौन जानता है कि जब अब्दुल बहा ने स्वयं को ऐसे यादगार दृश्यों के केन्द्र में पाया होगा तो उनके मन में क्या–क्या विचार आए होंगे? कौन जानता है कि जब वे लंदन के लॉर्ड मेयर के साथ सुबह के नाश्ते के लिए बैठे थे, या जब स्वयं खेदिव ने उनका बड़े आदर के साथ अपने महल में स्वागत किया था या जब वे *"अल्लाह–ओ–आभा"* की पुकार सुनते थे अथवा जब उनके उत्साही अनुयायियों और मित्रों द्वारा अमेरिका के इतने शहरों में आयोजित की गई शानदार सभाओं में वे आभार एवं प्रशंसा के स्तुति गीत सुनते थे जिनसे उनका स्वागत किया जाता था, तब उनके मन में कौन से विचार सबसे ऊपर रहे होंगे? कौन जानता है कि जब वे एक दूरस्थ देश की ताज़ी हवा में साँस लेते हुए नियागरा के झरने के गरजते पानी के सामने खड़े होते थे या एक अल्पावधिक और बहुत ज़रूरी आराम के दौरान ग्लेनवुड स्प्रिंग्स में हरे–भरे जंगलों और देहातों को देखते थे या जब वे पेरिस के ट्रोकाडेरो बाग में पूरब के अनुयायियों के साथ घूम रहे होते थे या जब वे न्यूयॉर्क में शानदार हडसन नदी के पास रिवर साइड ड्राईव पर शाम को अकेले टहल रहे होते थे या जब

वे थोनोन–ले–बैंन्स में लेक ऑफ जेनेवा के सामने स्थित होटल डू पार्क के चबूतरे पर टहल रहे होते थे या जब वे लंदन में सरपेन्टाईन ब्रिज के ऊपर से, आसमान को छूते हुए प्रतीत होने वाले पेड़ों के नीचे लगी मोतियों जैसी रोशनी की माला को देख रहे होते थे, तब उनके मन में कौन सी यादें उठ रहीं होंगीं ? अपने बीते हुए वर्षों के दुःख, गरीबी और दण्डाज्ञा की यादें; उनकी माता की यादें जिन्होंने उनके, उनके भाई और बहन के भोजन के लिए अपने सोने के बटन बेच दिए थे और जो अपने जीवन की सबसे अंधकारमय घड़ी में उनकी भूख मिटाने के लिए उनकी हथेली में सूखा आटा रखने के लिए बाध्य हो गईं थीं; उनके अपने बचपन की यादें जब बदमाशों की भीड़ ने तेहरान की गलियों में उनका पीछा किया था और उनका मज़ाक उड़ाया था; अक्का की बैरेकों के उस नम और अंधेरे कमरे की यादें जो कभी एक मुर्दाघर हुआ करता था और जो उन्हें रहने के लिए दिया गया था और उस शहर के कारागार में उनके कारावास की स्मृतियाँ, इन यादों ने उनके मन को अवश्य ही घेरा होगा। उन्हें अज़रबैजान के पहाड़ों में बाब के उस कारावास का भी स्मरण हो आया होगा जब रातों को उन्हें एक दीपक भी नहीं दिया जाता था और उनकी वह क्रूर और दुःखद हत्या जब सैंकड़ों गोलियों ने बाब के सीने को छलनी कर दिया था। इन सब से ऊपर, उनके विचार बहाउल्लाह पर केन्द्रित हुए होंगे, जिन्हें वे अपने दिल की गहराईयों से चाहते थे, जिनकी यातनाओं को उन्होंने बचपन से देखा था और उनके साथ भुगता था। तेहरान का वह कीड़ों से भरा सियाहचाल; आमुल में बहाउल्लाह के पैरों पर बेतों की मार की वह सज़ा; कुर्दिस्तान के पहाड़ों में दो वर्षों तक दरवेश का जीवन व्यतीत करने के दौरान बहाउल्लाह का वह सादा भोजन; बग़दाद के वे दिन जब उनके पास पहनने को केवल एक ही जोड़ी कपड़े थे और जब उनके अनुयायी केवल मुट्ठी भर खजूर पर गुज़ारा करते थे; अक्का की दीवारों में बहाउल्लाह का वह कारावास, जब नौ साल तक उन्हें हरियाली की झलक तक देखने नहीं दी गई और उस शहर के सरकारी मुख्यालय में सबके सामने बहाउल्लाह का वह अपमान, ऐसे दुःखद अतीत की तस्वीरों ने अब्दुल बहा को आभार और दुःख की मिलीजुली भावनाओं के साथ तब कई बार घेरा होगा जब वे उस धर्म के प्रति, जिसका वे प्रतिनिधित्व कर रहे थे और स्वयं के प्रति लोगों के आदर, सम्मान और गौरव

के भाव से किस प्रकार आत्मविभोर होते होंगे। जैसा कि अब्दुल बहा की यात्राओं के इतिहासकार ने वर्णन किया है कि एक शाम जब वॉशिंगटन में उनके एक ही दिन में तीसरे कार्यक्रम के लिए उन्हें गाड़ी तेज़ रफ्तार से ले जा रही थी तब उन्हें यह कहते हुए सुना गया था, *"ओ बहाउल्लाह ! ये आपने क्या किया ? ओ बहाउल्लाह ! मेरा जीवन आपके लिए कुरबान हो जाए ! ओ बहाउल्लाह ! मेरी आत्मा आपकी खातिर बलि चढ़ जाए! कितनी यातनाओं और विपत्तियों से भरे थे आपके दिन ! आपके द्वारा सहन की गईं परीक्षाएँ कितनी कठोर थीं ! कितनी मजबूत है यह नींव जो आपने रखी है और कितना प्रतापशाली है यह ध्वज जो आपके द्वारा फहराया गया है। उसी इतिहासकार ने वर्णन किया है,* "एक दिन जब वे टहल रहे थे, तब उन्होंने बहाउल्लाह के दिनों को याद करते हुए सुलेमानिया में उनके द्वारा बिताए गए दिनों, उनके अकेलेपन और उनके साथ किए गए अन्याय का बड़े दुःख के साथ उल्लेख किया। यद्यपि उन्होंने कई बार उस घटना को व्यक्त किया था फिर भी उस दिन वे इतने भावविभोर हो गए कि अपने दुःख के कारण ज़ोर–ज़ोर से बिलखने लगे.....। उनके साथ उनके सभी सेवक भी बिलखने लगे और प्राचीन सौंन्दर्य द्वारा सहन की गई यातनाओं की कहानी सुनकर शोक में डूब गए। यह है ईश्वरीय अवतार के पुत्र के हृदय की कोमलता।"

सौ वर्ष पुराने नाटक के एक अत्यन्त निर्णायक दृश्य को अभिनीत किया जा चुका था। प्रथम बहाई शताब्दी का एक प्रतापशाली अध्याय लिखा जा चुका था। पश्चिमी जगत के कुछ ग्रहणशील क्षेत्रों में स्वयं संविदा के केन्द्र के हाथों अकल्पनीय क्षमता से भरे बीज बोए जा चुके थे। सम्पूर्ण धार्मिक इतिहास की परिधि में, अतुलनीय महत्ता की कोई भी ऐसी विभूति इतने विशाल और अविनाशी मूल्य के कठिन कार्य को परिणाम तक पहुँचाने के लिए कभी आगे नहीं आई। अब्दुल बहा की इन निर्णायक यात्राओं के माध्यम से ऐसी शक्तियाँ उत्पन्न हुईं जिनका हम आज भी न तो अनुमान लगा सकते हैं, न ही इन्हें समझ सकते हैं। अपने वक्तव्यों के दौरान अब्दुल बहा द्वारा प्रस्तुत किए गए शक्तिशाली तर्कों से प्रेरित होकर एक महारानी पहले ही बहाउल्लाह में अपनी आस्था घोषित कर चुकी हैं और इस्लाम के पैग़म्बर के दिव्य मूल की

सार्वजनिक रूप से साक्ष्य दे चुकी हैं। अपने वक्तव्यों में अब्दुल बहा द्वारा इतने स्पष्ट रूप से समझाये गए सिद्धान्तों में से कुछ को ग्रहण करते हुए अमेरिका के एक राष्ट्रपति पहले ही इन्हें उस *शांति कार्यक्रम* में शामिल कर चुके हैं जो मानवजाति के कल्याण और सुरक्षा के लिए अब तक तैयार किए गए प्रस्तावों में सबसे सुस्पष्ट और श्रेष्ठतम है। और हाय ! जो दुनिया उनकी चेतावनियों के प्रति बहरी सिद्ध हुई और जिसने उनके आह्वान पर ध्यान देने से इंकार कर दिया, वह अब स्वयं को अपूर्व गाम्भीर्यपूर्ण दो ऐसे विश्व युद्धों में डूबो चुकी है, जिनके प्रतिघातों की एक धुँधली सी कल्पना भी कोई नहीं कर सकता।

पूरब और पश्चिम में प्रभुधर्म का विकास और विस्तार

यह कहा जा सकता है कि अब्दुल बहा की पश्चिम की ऐतिहासिक यात्राओं ने और विशेषकर अमेरिका के संयुक्त राज्यों में उनके आठ माह के दौरे ने उनके सेवाकाल के चरम बिन्दु को चिन्हित किया, एक ऐसा कालखण्ड जिसके अनकहे आशीर्वादों और अद्‌भुत उपलब्धियों का मूल्य केवल भविष्य की पीढ़ियाँ ही पर्याप्त रूप से आँक सकती हैं। जिस प्रकार बहाउल्लाह के प्रकटीकरण का दिवानक्षत्र अपने तेज की पराकाष्ठा में तब चमका था जब उन्होंने एड्रियानोपल शहर से धरती के शासकों को अपने संदेश प्रेषित किए थे, उसी प्रकार उनकी संविदा का सूर्य अपने शीर्षबिन्दु पर तब पहुँचा था और अपनी सबसे तेज किरणें तब बिखेरी थीं जब इस संविदा का नियुक्त केन्द्र पश्चिम के लोगों के बीच अपने पिता के धर्म की महिमा और महानता की घोषणा करने के लिए उठ खड़ा हुआ था।

दैवीय रूप से स्थापित की गई इस संविदा ने अपनी स्थापना के कुछ ही समय बाद उन अंधकारमय शक्तियों पर निर्णायक विजय पाकर जो इसके मुख्य भंजक द्वारा बड़ी मजबूती से इसके विरोध में खड़ी की गई थीं – किसी भी प्रकार के सन्देह की परछाई से भी परे, अपनी अजेय शक्ति प्रदर्शित कर दी थी। इसके तुरन्त बाद पश्चिमी यूरोप और अमेरिका के संयुक्त राज्यों के दूरस्थ शहरों में इसके मशालधारियों द्वारा बड़ी तेज़ी और साहस के साथ प्राप्त की गई सांकेतिक विजय के माध्यम से इसकी ओजस्वी शक्ति प्रकट हुई।

इसके अतिरिक्त, पूरब और पश्चिम, दोनों में प्रभुधर्म की एकता और अखण्डता की रक्षा करने की इसकी क्षमता के माध्यम से इसके ऊँचे दावों की भी पूर्णरूप से पुष्टि हो गई। आगे चलकर, सुल्तान अब्दुल हमीद के पतन के परिणामस्वरूप इसके नियुक्त केन्द्र को चालीस वर्ष की कैद के बाद मुक्त किया गया। इस यादगार विजय के द्वारा इसने अपनी अदम्य शक्ति का एक और प्रमाण प्रस्तुत कर दिया। दुर्जेय बाधाओं के बावजूद बाब के पावन अवशेषों के स्थानान्तरण और कार्मल पर्वत पर इन्हें अन्तिम बार सम्मानपूर्वक समाधिस्थ करने में अब्दुल बहा को समर्थ बनाकर, इस संविदा ने अपने दिव्य मूल पर अब भी संदेह करने वालों को अपनी दृढ़ता का एक और स्पष्ट प्रमाण दे दिया था। साथ ही, पश्चिमी जगत की तीन वर्ष की यात्रा करने में अब्दुल बहा को समर्थ बनाकर इतनी शक्ति के साथ और इस हद तक पूरी मानवजाति के सामने इसने अपनी विशाल क्षमताओं को प्रदर्शित कर दिया।

यद्यपि उपरोक्त उपलब्धियाँ अत्यन्त महान थीं, फिर भी केवल ये ही संविदा के केन्द्र के इतने वीरतापूर्ण और अदम्य प्रयासों के फल नहीं थीं। पूरब में उनके पिता के धर्म का विस्तार; ऐसी गतिविधियों और उद्यमों का प्रारम्भ था जिनके बारे में कहा जा सकता है कि ये भावी प्रशासनिक व्यवस्था की शुरूआत की सूचक थीं; रूसी तुर्किस्तान के इश्काबाद शहर में बहाई जगत के प्रथम मश्रिकुल–असकार का निर्माण; बहाई साहित्य का विस्तार; दिव्य योजना की पातियों का प्रकटीकरण और ऑस्ट्रेलियाई महाद्वीप में प्रभुधर्म का प्रवेश, इन सभी को प्रमुख उपलब्धियाँ माना जा सकता है जिन्होंने अब्दुल बहा के अद्वितीय जीवनकाल की शानदार उपलब्धियों को अलंकृत किया है।

अब्दुल बहा के सम्पूर्ण जीवनकाल में कभी कम न होने वाले हिंसक अत्याचारों के बावजूद, प्रभुधर्म का पालना कहलाए जाने वाले फारस में स्पष्ट रूप से एक ऐसा परिवर्तन देखा जा सकता था जो इस निषिद्ध और अब तक भूमिगत रहने वाले समुदाय के अस्तित्व के क्रमिक उत्थान को अंकित करता है। बहाउल्लाह के स्वर्गवास के चार वर्ष पश्चात, देश के हालातों को एक ऐतिहासिक मोड़ देने वाले अवसर का उत्सव मनाने के लिए आयोजित की गई नसीरूद्दीन शाह की जयंती वाली शाम को ही मिर्ज़ा रिदा नाम के व्यक्ति के हाथों

नसीरूद्दीन शाह की मृत्यु हो गई। मिर्ज़ा रिदा सैय्यद जमालुद्दिन–ए–अफघानी का अनुयायी था जो प्रभुधर्म का शत्रु और उस संवैधानिक आंदोलन को प्रारम्भ करने वालों में से एक था, जो शाह के पुत्र एवं उत्तराधिकारी के शासनकाल के अंतर्गत उस समुदाय के लिए और भी कठिनाइयाँ खड़ी करने वाला था, शाह की हत्या के लिए भी इसी समुदाय को उत्तरदायी मान लिया गया था जैसा कि शाह की हत्या के तत्काल बाद उस प्रख्यात शिक्षक और कवि, मिर्ज़ा अली–मुहम्मद की क्रूर हत्या से प्रमाणित होता है जिन्हें बहाउल्लाह ने वर्क़ा (कपोत) की उपाधि से सम्मानित किया था और जिन्हें उनके बारह वर्षीय बेटे, रूहुल्लाह के साथ उस क्रूर हाजीबुद्दोलिह ने तेहरान के कारागार में अमानवीयता से मौत के घाट उतार दिया, जिसने रूहुल्लाह के पिता के पेट में कटार से शक्तिशाली वार करके उनके पुत्र के सामने ही उनके टुकड़े–टुकड़े कर दिए और उनके पुत्र को उसका धर्म त्यागने को कहा गया किन्तु साफ इंकार सुनने के बाद एक रस्सी से उसका भी गला घोंट दिया गया।

तीन साल पहले, यज़्द में मुहम्मद–रिज़ा–ए–यज़्दी नाम के एक युवा को उसके विवाह की रात को ही तब गोली मार दी गई जब वह एक सार्वजनिक स्नानागार से अपने घर लौट रहा था। अब्दुल बहा के धर्मकाल के दौरान शहीद होने वाला यह पहला व्यक्ति था। तुरबत–ए–हैदरियेह में, शाह की हत्या के परिणामस्वरूप, शुहादेय–ए–खम्सी (पाँच शहीद) नाम से जाने जाने वाले पाँच लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। मशहद में एक प्रख्यात व्यापारी, हाजी मुहम्मद–ए–तबरीज़ी की हत्या कर दी गई और उसके शव को आग लगा दी गई। पेरिस (सन् 1902) में नए शाह और उसके महामंत्री, उस अनैतिक और प्रतिक्रियावादी अताबिक–ए–आज़म मिर्ज़ा अली–असगर खान ने प्रभुधर्म के दो अनुयायी प्रतिनिधियों को एक साक्षात्कार की अनुमति दी, लेकिन इसका कोई वास्तविक परिणाम नहीं निकला बल्कि इसके विपरीत, कुछ वर्ष पश्चात उत्पीड़न का एक ताज़ा तूफान उठा, जो देश के संवैधानिक आन्दोलन के विकास के साथ–साथ एक भीषण रूप लेता गया। प्रतिक्रियावादियों ने बहाइयों पर बेबुनियाद आरोप लगाए और उन्हें राष्ट्रीयता के समर्थक और प्रेरक कहकर सार्वजनिक रूप से निन्दित किया।

इस्फहान के मुहम्मद–जवाद को निर्वस्त्र करके घुमावदार तारों से गुंथे हुए कोड़े से बुरी तरह पीटा गया, जबकि काशान में मुस्लिम और यहूदी धर्माधिकारियों को भड़काए जाने पर यहूदी पृष्ठभूमि वाले प्रभुधर्म के अनुयायियों पर जुर्माना लगाया गया, उन्हें पीटा गया और बेड़ियों में बांधा गया। लेकिन अब्दुल बहा के समय में सबसे खूनी उपद्रव यज़्द और इसके आसपास के क्षेत्रों में हुआ। इस शहर में हाजी मिर्ज़ा–ए–हालाबी–सॉज़ को जब बेरहमी से बेंतों से मारा गया तब उसकी पत्नी ने खुद को उसके शरीर पर फेंक दिया, लेकिन उसे भी बुरी तरह पीटा गया, जिसके बाद माँस काटने वाले चाकू से उसके पति के सिर को फाड़ दिया गया। उसके ग्यारह वर्षीय बेटे को भी बड़ी बेरहमी से पीटा गया, एक छोटे चाकू से उस पर बार–बार वार किए गए और उसे भी यातनाएँ देकर मार डाला गया। आधे दिन के अन्दर नौ लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। लगभग छः हजार लोगों की भीड़ ने इन असहाय और विपत्तिग्रस्त लोगों पर अपना क्रोध दर्शाया। कुछ तो इस हद तक गए कि उनका खून पी लिया, जैसा कि मिर्ज़ा असदुल्लाह–ए–साब्बाघ नाम के एक व्यक्ति के साथ हुआ था। कुछ घटनाओं में तो लोगों ने उनकी सम्पत्ति को लूट लिया और उसके कब्ज़े के लिए आपस में लड़ बैठे। उन्होंने इतनी क्रूरता दिखलाई कि वहाँ उपस्थित कुछ सरकारी अफसरों की आँखें भी भर आईं। सबसे शर्मनाक बात यह थी कि क्रूरता भरे इन कारनामों में कुछ महिलाएँ भी सम्मिलित थीं।

तफ्त में कई लोगों की हत्या कर दी गई, जिनमें से कुछ को गोली मार दी गई और उनके शवों को गलियों में घसीटा गया। हाल ही में प्रभुधर्म को स्वीकार करने वाले हुसैन नाम के एक अट्ठारह वर्षीय युवक को उसके अपने ही पिता द्वारा दोषी ठहराया गया और उसकी माँ की आँखों के सामने उसके टुकड़े–टुकड़े कर दिए, जबकि मुहम्मद–कमाल को चाकू, कुदाल और कुल्हाड़ी से गोद दिया गया। मांशाद शहर, जहाँ ये ज़ुल्म उन्नीस दिन तक होते रहे, में भी ऐसी ही क्रूरता देखी गई। सैय्यद मिर्ज़ा नाम के एक अस्सी वर्ष के सोते हुए वृद्ध व्यक्ति पर फेंके गए दो बड़े पत्थरों से नींद में ही उसकी तत्काल मृत्यु हो गई; मिर्ज़ा सादिक़ के सीने में चाकू घोंप दिया गया, जबकि एक अन्य विपत्तिग्रस्त

व्यक्ति शातिर हसन को उसकी मृत्यु से पहले उसके जल्लादों के बीच मिठाईयाँ और कपड़े बाँटते हुए देखा गया था। 65 वर्ष की महिला, खदीजा सुल्तान को एक घर की छत से गिरा दिया गया; मिर्ज़ा मुहम्मह नाम के एक अनुयायी को एक पेड़ से बाँधकर सैंकड़ों गोलियों का निशाना बनाकर उसके शव को आग लगा दी गई, जबकि उस्ताद–रेज़ा–ए–सफ्फार नाम के एक अन्य व्यक्ति को उसके हत्यारों के हाथों को चूमते हुए देखा गया था, जिसके बाद उसे गोली मार दी गई और उसके शव को अपमानित किया गया।

बनादुक, दिहबाला, फाराशाह, अब्बासाबाद, हांज़ा, आर्दिकान, दौलताबाद और हमदान में भी इसी प्रकार के अपराध किए गए, जिनमें फातिमा बेग़म नाम की उस अत्यन्त आदरणीय और साहसी महिला के साथ की घटना सबसे उल्लेखनीय है, जिसे बड़े अपमानजनक रूप से उसके घर से घसीटकर बाहर लाया गया और उसके सिर से नकाब खींच कर फाड़ दिया गया, उसका गला काट दिया गया, उसका पेट काटकर खोल दिया गया और एक जंगली भीड़ के हाथ में आने वाली हर वस्तु से मारे जाने के बाद उसे एक पेड़ से लटका कर उसके शरीर को आग लगा दी गई।

सारी में, जिन दिनों संविधान के लिए किया गया आंदोलन अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच रहा था, पाँच जाने माने अनुयायी, जिन्हें आगे चलकर शुहादाये खम्सी (पाँच शहीद) के नाम से जाना गया की हत्या कर दी गई, नायरीज़ में शत्रुओं द्वारा यज़्द जैसा ही एक खूँखार हमला किया गया, जिसमें 19 लोग अपनी जान गवाँ बैठे। इनमें 65 वर्षीय मुल्ला अब्दुल हमीद भी शामिल थे, जिन्हें गोली मार दी गई और उनके शव के साथ दुर्व्यवहार किया गया। इस हमले में बहुत सी सम्पत्ति लूट ली गई और असंख्य स्त्रियों और बच्चों को अपनी जान बचाकर मस्जिदों, अपने घरों के खंडहर में शरण लेनी पड़ी अथवा सड़क के किनारे आश्रयहीन अवस्था में रहना पड़ा।

सिरजान, दुग़ाबाद, तबरीज़, आविह, कुम, नजफाबाद, सांगसार, शाहमिर्ज़ाद, इस्फहान और जाहरुम में बेरहम धार्मिक एवं राजनीतिक शत्रुओं ने सन् 1906 में शाह द्वारा संविधान पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद और

मुहम्मद अली एवं अहमद शाह जैसे उत्तराधिकारियों के शासनकाल के दौरान अलग–अलग बहाने से इस समुदाय के ऐसे सदस्यों की हत्या करना, उन्हें यातनाएँ देना, लूटना और उनके साथ दुर्व्यवहार करना जारी रखा जिन्होंने इस धर्म को त्यागने से या उससे तिलभर भी हटने से इंकार कर दिया था। पश्चिम में अब्दुल बहा की यात्राओं के दौरान, पावन भूमि में उनकी वापसी के समय और वास्तव में उनके जीवन के अन्त तक, अब्दुल बहा को अपने अनुयायियों की शहादत और शत्रुओं द्वारा उप पर किए गए अत्याचारों की दुःखद जानकारी मिलती रही। दौलताबाद में, शाही खानदान से सम्बन्ध रखने वाले हबीबुल्लाह मिर्ज़ा नाम के उस राजकुमार – जिसने प्रभुधर्म को स्वीकार करके अपना जीवन इसकी सेवा में समर्पित कर दिया था की कुल्हाड़ी मारकर हत्या कर दी गई और उसके शव को आग लगा दी गई। मशहद में उस ज्ञानी और धर्मनिष्ठ शेख अली–अकबर–ए–कूचानी की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। सुल्तानाबाद में, मिर्ज़ा अली अकबर और उनके परिवार के सात सदस्यों का बर्बरतापूर्वक कत्ल कर दिया गया जिनमें एक चालीस दिन का शिशु भी शामिल था। नाइन, शाहमिर्ज़ाद, बन्दर–इ–जाज़ और क़म्सर में क्रूरता के अलग–अलग परिमाणों में यातनाएँ दी जाने लगीं। अब्दुल बहा के धर्मकाल में अपने प्राणों की आहुति देने वाला अन्तिम व्यक्ति वह उत्कट 28 वर्षीय यहूदी युवा शहीद था, जिसका नाम मिर्ज़ा याकूब–ए–मुत्ताहिदिह था और जिसने किरमानशाह में प्रभुधर्म को स्वीकार किया था। मिर्ज़ा याकूब–ए–मुत्ताहिदिह के निर्देशानुसार उनकी माँ ने अनुकरणीय सहनशीलता के साथ हमदान में उनकी शहादत का जश्न मनाया। प्रत्येक दृष्टांत में अनुयायियों के आचरण ने उस अदम्य साहस और अटल दृढ़ता को प्रमाणित किया जो बहाउल्लाह के धर्म के फारसी अनुयायियों के जीवन और सेवाओं को एक अलग पहचान देते रहे।

समय–समय पर दी जाने वाली इन कठोर यातनाओं के बावजूद, जिस धर्म ने अपने शूरवीरों में बलिदान की इतनी दुर्लभ भावनाएँ उत्पन्न की थीं, वह धर्म स्थाई रूप से बढ़ता जा रहा था। बाब की शहादत के बाद के अंधकारमय दिनों में यह कुछ समय के लिए ओझल अवश्य हो गया था और लगभग बुझ

गया था तथा बहाउल्लाह के धर्मकाल की सम्पूर्ण अवधि के दौरान यह भूमिगत होने के लिए मजबूर हो गया था, लेकिन उनके स्वर्गवास के बाद, एक बुद्धिमान, सतर्क और स्नेही मास्टर की अचूक छत्रछाया के परिणामस्वरूप, इसने अपनी शक्ति को एकत्रित करना आरम्भ कर दिया और धीरे–धीरे उन भ्रूणीय संस्थाओं की स्थापना शुरू की जो आगे चलकर इसकी प्रशासनिक व्यवस्था के लिए मार्ग प्रशस्त करने वालीं थीं। इसी अवधि के दौरान इसके अनुयायियों की संख्या में बड़ी तेज़ी से वृद्धि हुई, उस राज्य के प्रत्येक प्रांत में फैला हुआ इसका आकार निरन्तर फैलता चला गया और इसकी भावी सभाओं के प्रारम्भिक रूप का शुभारम्भ हुआ। इसी अवधि में एक ऐसे समय में जबकि देशभर में लगभग एक भी सरकारी स्कूल और कॉलेज नहीं थे, तब इसका सबसे पहला स्कूल स्थापित किया गया, जिनका शुभारम्भ तेहरान में तरबियत स्कूल से हुआ जो लड़के और लड़कियों, दोनों के लिए था। हमदान में ताईद और मौहिबात स्कूलों, काशान में वाहदात–ए–बशर स्कूल और बारफुरूश एवं काज़वीन में इनके जैसी अन्य शैक्षिक संस्थाओं से शुरूआत की गई। इन्ही वर्षों के दौरान उस देश के बहाई समुदाय को पहली बार यूरोप और अमेरिका दोनों की ओर से, भ्रमणकारी शिक्षकों, नर्सों, प्रशिक्षकों और डॉक्टरों के रूप में आध्यात्मिक और भौतिक दोनों ही प्रकार की ठोस और प्रभावशाली सहायता प्रदान की गई। ये कार्यकर्ता, उन सहायकों की सेना के अग्रदल थे जिसके बारे में अब्दुल बहा ने वादा किया था कि एक समय ऐसा आयेगा जब प्रभुधर्म के साथ–साथ उस देश के भी हितों को बढ़ावा देने के लिए, जिसमें इस धर्म ने जन्म लिया है, ऐसी ही एक सेना उठ खड़ी होगी। इन्ही वर्षों के दौरान उस देश में बहाउल्लाह के अनुयायियों को पहचान देने वाले बाबी शब्द को अनुयायियों द्वारा सार्वभौमिक रूप से त्याग दिया गया और इसके स्थान पर बहाई शब्द को अपना लिया गया। अब बाबी शब्द केवल मिर्ज़ा याह्या के घटते जा रहे चन्द अनुयायियों के लिए उपयोग में लाया जाने लगा। इसके अतिरिक्त, इसी अवधि के दौरान, फारस के अनुयायियों द्वारा शुरू किए गए शिक्षण कार्य को संगठित और प्रेरित करने के प्रथम सुव्यवस्थित प्रयास किए गए। ऐसे प्रयास, जिन्होंने इस समुदाय की नींव को मजबूत करने के

साथ–साथ, उस देश के सार्वजनिक जीवन की कई प्रतिष्ठित हस्तियों को भी अपने उद्देश्य की ओर आकर्षित कर लिया। इन व्यक्तियों में शिया धर्माधिकारी वर्ग के कुछ प्रमुख सदस्य और प्रभुधर्म के दुष्टतम अत्याचारियों के वंशज भी शामिल थे। अब्दुल बहा के धर्मकाल के वर्षों के दौरान ही शीराज़ में बाब के उस घर को अब्दुल बहा के आदेशों और उनकी सहायता से उसकी पूर्वावस्था में लाया गया। बाब के इस घर को बहाउल्लाह ने अपने अनुयायियों के लिए तीर्थ का केन्द्र कहा है और इसे अब इसी रूप में स्वीकारा जा चुका है। यह घर अब उन लोगों के लिए बहाई जीवन और गतिविधि का केन्द्र बन गया है जो हालातों के कारण बग़दाद में स्थित महानतम निवास का या अक्का में स्थित पावनतम समाधि का तीर्थ करने से वंचित हैं।

परन्तु इन सभी कार्यों मे सबसे प्रत्यक्ष था इश्काबाद शहर में बहाई जगत के पहले मश्रिकुल असकार (बहाई मन्दिर) का निर्माण। इश्काबाद वह केन्द्र था जिसकी स्थापना बहाउल्लाह के दिनों में की गई थी और जहाँ उनके जीवनकाल के दौरान ही इस मश्रिकुल असकार के निर्माण की तैयारी का प्रारम्भिक कार्य पूरा किया जा चुका था। इस कार्य को अब्दुल बहा के धर्मकाल के पहले के दस वर्षों के अन्त में शुरू किया गया था; इसके विकास के प्रत्येक चरण में अब्दुल बहा ने इसे प्रोत्साहन दिया था; बाब के एक आदरणीय चचेरे भाई, वकीलुद्दौलिह हाजी मिर्ज़ा मुहम्मद तक़ी ने व्यक्तिगत रूप से इसका निरीक्षण किया था और इसकी स्थापना के लिए अपना सब कुछ समर्पित कर दिया था। आज उनकी समाधि कार्मल पर्वत पर उनके परमप्रिय कुटुम्बी (बाब) की समाधि की छाया में स्थित है; इश्काबाद के मश्रिकुल असकार का निर्माण स्वयं संविदा के केन्द्र के निर्देशों के अनुसार किया गया; यह पूरब के उन अनुयायियों की आस्था और आत्मत्याग का चिरस्थाई साक्ष्य था जो बहाउल्लाह द्वारा *किताब–ए–अक़दस* में प्रकट किए आदेशों का पालन करने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। इस कार्य को न केवल बहाउल्लाह के धर्म के शौर्यकाल में उनके अनुयायियों के संगठित प्रयासों द्वारा किया गया सबसे पहला बड़ा कार्य माना जाना चाहिए, अपितु प्रथम बहाई शताब्दी के इतिहास की सबसे शानदार और स्थाई उपलब्धियों में से एक समझा जाना चाहिए।

इस उपासना मन्दिर की नींव का पत्थर, तुर्किस्तान के उस गवर्नर जनरल क्रुपात्किन की उपस्थिति में रखा गया था जिसे जार ने इसके समारोह में अपने प्रतिनिधि के रूप में भेजा था। पश्चिम के एक बहाई ने इस इमारत का बड़े विस्तार से वर्णन करते हुए कहा है : "यह उपासना मन्दिर शहर के मध्य में स्थित है, इसके ऊँचे गुम्बद को पेड़ों और घरों की छतों के बीच स्पष्ट देखा जा सकता है इसलिए शहर के नज़दीक पहुँच रहे यात्री इसे मीलों दूर से देख सकते हैं। यह एक ऐसे बगीचे के बीच में स्थित है जिसके चारों ओर सड़कें हैं। इस इमारत के चारों कोनों में चार अन्य इमारतें बनाई गईं हैं; एक बहाई स्कूल है; एक यात्री निवास है जहाँ तीर्थयात्रियों को ठहराया जाता है; एक इमारत इसके रक्षकों के लिए है और चौथी इमारत एक अस्पताल के रूप में उपयोग में लाने के लिए है। मैदान के कई भागों से नौ रास्ते किरणों के समान इस उपासना मंदिर की ओर आते हैं इनमें से एक मुख्य रास्ता जो इमारत की ओर मैदान के मुख्य द्वार से लेकर मंदिर के मुख्य द्वार तक आता है।" इसी व्यक्ति ने आगे बताया है कि "योजना के अनुसार इस इमारत के तीन भाग हैं, इसका केन्द्रीय वर्गाकार मकान, इसे घेरने वाला एक बन्द गलियारा या रास्ता और एक खुला बरामदा जो पूरी इमारत को घेरे हुए है। एक तरफ का पूरा हिस्सा एक बड़े मुख्य द्वार से घिरा है इसके दोनों ओर मीनारें हैं, दो मंज़िल ऊँची मीनारों वाला यह धनुषाकार बरामदा अपनी बनावट में भारत के आगरा में स्थित ताजमहल की याद दिलाता है जो दुनियाभर के यात्रियों के लिए प्रसन्नता का स्रोत है, कई लोग इसे विश्व का सबसे खूबसूरत मंदिर कहते हैं। इश्काबाद के मंदिर की इस इमारत का मुख्य द्वार पावन भूमि की दिशा की ओर खुलता है। यह पूरी इमारत बरामदों की दो श्रृंखलाओं से घिरी हुई है, एक ऊपर है और एक नीचे है। ये बरामदे बगीचे में खुलते हैं और इसके घने अर्द्ध–उष्णदेशीय पौधों के साथ एक खूबसूरत वास्तुशिल्पीय सामंजस्य स्थापित करते हैं। सबसे पहले नौ मेहराबों और खम्भों की एक श्रृंखला है जो वृत्ताकार मकान को गलियारे से अलग करती है (जो बन्द गलियारे के ऊपर है और वहाँ पहुँचने के लिए बरामदे के मुख्य द्वार के दोनों तरफ बनी सीढ़ियों का उपयोग किया जाता है)। दूसरा, ऐसा ही उन कटघरों के साथ भी किया गया है जो धनुषाकार मेहराबों वाले बरामदे को गोलघर के गुम्बद से अलग

करते हैं। तीसरा, नौ सादे मेहराबों की एक श्रृंखला है जिन पर नक्काशीदार सजावट है और जिनके बीच में ऐसे सजावटी तख्ते हैं जिन पर महानतम नाम लिखा हुआ है। चौथा, नौ मेहराबदार खिड़कियों की एक श्रृंखला है। पाँचवा, अट्ठारह छोटी गोल खिड़कियों की एक श्रृंखला है। इस आखिरी मंज़िल के ऊपर एक कँगनी पर इस गुम्बद के आन्तरिक गोलार्द्ध का हिस्सा टिका हुआ है। इसके भीतरी भाग को प्लास्टर की कारीगरी से अलंकृत किया गया है.....। अपनी विशालता और शक्ति के कारण यह सम्पूर्ण ढाँचा सभी को प्रभावित करता है।"

उस शहर में स्थापित किए गए लड़के और लड़कियों के दो स्कूलों का, उपासना मंदिर के निकट स्थापित किए गए यात्री निवास का, बढ़ते हुए समुदाय के क्रियाकलापों के प्रशासन के लिए आध्यात्मिक सभा और सहायक संस्थाओं की स्थापना का तथा गतिविधि के उन नए केन्द्रों का उल्लेख किया जाना भी आवश्यक है जो तुर्किस्तान के प्रांतों के विभिन्न नगरों और शहरों में खोले गए थे। ये सभी उस जीवन शक्ति का प्रमाण देते हैं जो इस धर्म ने अपने आरम्भिक काल से फारस में प्रदर्शित की थी।

कौकेशस में इससे कम भव्य किन्तु इसके समान विकास देखा गया। तुर्की से होते हुए पावन भूमि को जाने वाले फारस के तीर्थयात्रियों की बढ़ती हुई संख्या द्वारा जिस शहर का भ्रमण किया जाता था, उस बाकू शहर में सबसे प्रथम केन्द्र और एक आध्यात्मिक सभा की स्थापना के बाद ऐसे नए दल तैयार होने लगे जिन्होंने आगे चलकर सुस्थापित समुदायों का रूप ले लिया और तुर्किस्तान तथा फारस में अपने साथियों का अधिक से अधिक सहयोग करने लगे।

मिस्र में प्रभुधर्म के अनुयायियों की संख्या में स्थाई वृद्धि के साथ–साथ इसकी गतिविधियों का सर्वत्र विस्तार हुआ। नए केन्द्रों की स्थापना; कैअरो में स्थापित किए गए मुख्य केन्द्र का सुगठन; मुख्यतः मिर्ज़ा अबुल–फज़ल जैसे ज्ञानवान व्यक्ति के अथक प्रयासों के कारण अज़हर विश्वविद्यालय के कई प्रमुख विद्यार्थियों और शिक्षकों का प्रभुधर्म में प्रवेश जो उस प्रतिज्ञापित दिवस के आगमन की भविष्यवाणी करता है, जब अब्दुल बहा के अनुसार, इस्लाम की उस चिरकाल से सम्मानित पीठ के केन्द्र में प्रभुधर्म का ध्वज और चिन्ह रोपा

जायेगा; बहाउल्लाह द्वारा फारसी में प्रकट किए गए कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण लेखों एवं अन्य बहाई साहित्य का अरबी भाषा में अनुवाद और इनका वितरण; बहाई लेखकों और विद्वानों द्वारा लिखी गई किताबों, निबंधों और पैम्फ्लेटों की छपाई; प्रभुधर्म के पक्ष और इसकी रक्षा के लिए एवं इसके संदेश को प्रसारित करने के उद्देश्य से लिखे गए लेखों का प्रकाशन; राजधानी में और आसपास के केन्द्रों में नवजात प्रशासनिक संस्थाओं की स्थापना; कुर्दी, कोप्टिक और आर्मेनियाई पृष्ठभूमि वाले अनुयायियों के जुड़ने से सामुदायिक जीवन में आने वाली समृद्धि, इन सभी को एक ऐसे देश में उपजाए गए फल समझा जा सकता है जो अब्दुल बहा के कदमों द्वारा आशीर्वादित होने के बाद, प्रभुधर्म के उद्धार में आगे चलकर एक ऐतिहासिक भूमिका निभाने वाले हैं और जो अरब एवं इस्लाम जगत के बौद्धिक केन्द्र के रूप में अपने अद्वितीय स्थान के कारण, अनिवार्य रूप से पूरे पूरब में प्रभुधर्म की पूर्ण स्थापना की ज़िम्मेदारी का एक उल्लेखनीय और निर्णायक हिस्सा ग्रहण करेगें।

भारत और बर्मा में बहाई गतिविधि का विस्तार और भी उल्लेखनीय था। यहाँ एक स्थाई रूप से विकसित हो रहे समुदाय ने, जिसके सदस्यों में अब जरस्थोस्ति, मुसलमान, हिन्दू और बौद्ध धर्मों के साथ–साथ सिख समुदाय के भी प्रतिनिधि शामिल थे। मन्डालय एवं बर्मा के हंथावाड़ी ज़िले के उस डैडानाव कालाजू गाँव में अपने केन्द्र स्थापित करने में सफलता प्राप्त कर ली थी, जहाँ कम से कम आठ सौ बहाई रहते थे और जहाँ गाँव के अपने ही एक स्कूल, एक न्यायालय और एक अस्पताल के साथ–साथ सामुदायिक खेती की ज़मीन भी थी, जिसकी उपज को उन्होंने अपने धर्म के हितों को आगे बढ़ाने के लिए समर्पित कर दिया था।

इराक में स्थित बहाउल्लाह के निवास को पूर्णरुप से उसकी पूर्वावस्था में लाकर नया जैसा बना दिया गया। यहाँ एक छोटा किन्तु निडर समुदाय, सतत् विरोध के सामने अपने क्रियाकलापों का संचालन और प्रशासन करने के लिए संघर्ष कर रहा था; कॉन्सटैन्टिनोपल में एक बहाई केन्द्र स्थापित कर दिया गया था; टूनिस में एक स्थानीय समुदाय की नींव को बड़ी दृढ़ता से स्थापित किया गया; जापान, चीन, और होनोलुलु में बहाई शिक्षकों ने दौरा

किया और यहाँ स्थापित होकर उन्होंने शिक्षण किया था। इन सभी स्थानों में अब्दुल बहा के मार्गदर्शित करने वाले हाथों को और उनकी अति सतर्कता एवं अचूक देखभाल के ठोस प्रभाव के असंख्य प्रमाणों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता था।

फ्राँस, इंग्लैंड, जर्मनी और यूनाईटेड स्टेट्स में अब्दुल बहा की स्मरणीय यात्राओं के बाद इन देशों में स्थापित किए गए बहाई समुदायों को अपने कल्याण और आध्यात्मिक विकास के लिए अब्दुल बहा की विशेष रुचि और छत्रछाया के संकेत मिलते रहे। इन समुदायों के सदस्यों को सम्बोधित किए गए अब्दुल बहा के निर्देशों और पातियों के निरन्तर प्रवाह तथा इनके द्वारा किए गए निरंतर प्रयासों के लिए उनके सतत् प्रोत्साहन के परिणामस्वरूप, बहाई केन्द्रों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती रही, सार्वजनिक बैठकें आयोजित की जाने लगीं, नई पत्रिकाएँ प्रकाशित होने लगीं, बहाउल्लाह के कुछ प्रसिद्ध लेखों और अब्दुल बहा की पातियों के अंग्रेज़ी, फ्राँसिसी और जर्मन अनुवादों का मुद्रण किया गया और उन्हें वितरित किया गया, साथ ही इन नवस्थापित समुदायों के क्रियाकलापों को सुव्यवस्थित करने और इनकी नींव मज़बूत करने के प्राथमिक प्रयास किए जाने लगे।

विशेषतौर पर उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप में इस फलते–फूलते समुदाय के सदस्यों ने अब्दुल बहा द्वारा प्रदान किए गए आशीर्वादों, उनके जीवन के उदाहरण और अपने देश में उनकी लम्बी यात्रा के दौरान उनके कार्यों से प्रेरित होकर उस भव्य उद्यम को अपना पूरा समर्पण दिया जिसे वे आगामी वर्षों में पूरा करने वाले थे। उन्होंने अपने अनुमानित मंदिर की ज़मीन के लिए बाकी बारह भूखण्ड भी खरीद लिए, 1920 के अपने सम्मेलन के सत्रों के दौरान फ्राँसिसी–केनेडियन बहाई आर्किटेक्ट लुई बर्जिस के रूपांकन का चयन किया गया, मंदिर की ज़मीन की खुदाई और इसकी नींव के निर्माण का ठेका दे दिया गया तथा इसके तुरन्त पश्चात इसके बेसमेंट के निर्माण के लिए आवश्यक व्यवस्था कर ली गई, ये कुछ ऐसे कदम थे जो उन प्रयासों के पूर्व–सूचक थे जो अब्दुल बहा के देहान्त के बाद, इस मंदिर के भवन के निर्माण के उपयोग में लाए गए और इस प्रकार इसका बाहरी अलंकरण सम्पन्न हुआ।

अपनी पश्चिम की यात्रा के समय, अब्दुल बहा द्वारा सन् 1914–1918 के जिस युद्ध की भविष्यवाणियाँ बार–बार की गई थीं वह उनके पावन भूमि लौटने के आठ माह पश्चात आरम्भ हुआ था। युद्ध के बाद उनके जीवन पर एक बार फिर संकट का साया मंडराने लगा जो उनके उथल–पुथल भरे वर्षों को अंधकारमय बना देने वाला अन्तिम संकट था।

पूरे विश्व को हिला देने वाले इस युद्ध में विलम्ब से अमेरिका के संयुक्त राज्यों का प्रवेश, फारस की तटस्थता, युद्ध की कार्यवाही के क्षेत्र से भारत और दूर दराज़ पूरब के देशों के अलग रहने के कारण उनके वे अधिकतम अनुयायी सुरक्षित रहे जो यद्यपि अपने धर्म के आध्यात्मिक केन्द्र से कई वर्षों तक सम्पर्क में नहीं रह सके थे फिर भी अपेक्षाकृत सुरक्षा और स्वतंत्रता से अपने क्रियाकलापों का संचालन करते रहे और अपनी उपलब्धियों की रक्षा कर पाए।

यद्यपि उस भीषण संघर्ष ने पावन भूमि में प्रभुधर्म के हृदय और केन्द्र को उस तुर्की कैद से हमेशा के लिए स्वतंत्र कर दिया था जिसने इसके संस्थापक और इसके उत्तराधिकारी पर इतने लम्बे समय तक अत्यन्त दमनकारी और अपमानजनक प्रतिबंध लगाए थे फिर भी, इस युद्ध के अधिकांश समय तक कैद में रहने वाले, कठोर अभावों से घिरे रहे और कुछ समय के लिए इस युद्ध ने उन खतरों को दोबारा ताज़ा कर दिया जिनका सामना अब्दुल बहा को अक्का की अपनी कैद के वर्षों के दौरान करना पड़ा था। नागरिक एवं सैन्य अधिकारियों की भारी अक्षमता, शर्मनाक उपेक्षा, क्रूरता और बेदर्द उदासीनता के कारण इन निवासियों द्वारा झेले गए अभाव, हालाँकि अब्दुल बहा की भरपूर उदारता, दूरदर्शिता और कोमल देखभाल से बहुत हद तक कम हो गए थे, फिर भी एक कठोर नाकाबंदी की कठिनाईयों के परिणामस्वरूप ये अभाव बढ़ गए थे। सहयोगी राष्ट्र द्वारा हाईफा में बमबारी का खतरा लगातार बना रहता था। एक बार तो यह खतरा इतना वास्तविक हो गया कि अब्दुल बहा, उनके परिवार और स्थानीय समुदाय के सदस्यों को कुछ समय के लिए पूर्वी अक्का की पहाड़ियों तले स्थित अबु–सिनान नाम के एक गाँव में भेजना पड़ा। प्रभुधर्म का कट्टर शत्रु और तुर्की का क्रूर, शक्तिशाली एवं बेईमान कमान्डर–इन–चीफ जमाल पाशा, अपने ही निराधार संदेह के आधार पर तथा प्रभुधर्म के शत्रुओं

के भड़कावे में आकर पहले ही अब्दुल बहा को घोर कष्ट दे चुका था, यहाँ तक कि वह उन्हें सूली पर चढ़ाने का और बहाउल्लाह की समाधि को नष्ट करने का अपना मंतव्य भी प्रकट कर चुका था। अब्दुल बहा अब स्वयं भी अपने खराब स्वास्थ्य से ग्रस्त थे जो उनकी तीन वर्ष की यात्राओं का परिणाम था। दुनियाभर में स्थित बहाई केन्द्रों के साथ सम्पर्क के लगभग टूट जाने का उन्हें गहरा दुःख था। उनके द्वारा जारी किए गए सम्मन का उत्तर देने में या उनके द्वारा दी गई चेतावनियों पर ध्यान देने में मानवजाति की विफलता के कारण उत्पन्न होने वाले मानव संहार के दृश्य ने उनकी आत्मा को तीव्र व्यथा से भर दिया। बचपन से ही अपने पिता के धर्म और इसकी सेवा के लिए अब्दुल बहा द्वारा इतनी वीरता से सहे गए कष्टों और अन्याय के बोझ में दुःख पर दुःख जुड़ते चले गए। फिर भी इन अंधकारमय दिनों में जिनका अंधेरा उन विपत्तियों की याद दिलाता था जो उन्होंने अक्का के दुर्ग के कारावास में अपनी कैद के सबसे खतरनाक समय में सही थीं, जब अब्दुल बहा अपने पिता की समाधि स्थल पर होते या जब वे अक्का के अपने निवास में होते अथवा जब वे कार्मल पर्वत पर बाब की समाधि के साये में होते, उस दौरान उन्होंने दोबारा तथा अपने जीवन में अन्तिम बार अपने अमेरिकन अनुयायियों के समुदाय को अपने विशेष अनुग्रह का एक यादगार चिन्ह प्रदान करते हुए अपने भौतिक धर्मकाल के अन्तिम दौर में दिव्य योजनाओं की पातियाँ प्रकट कीं और उन्हें एक ऐसा विश्व–स्तरीय लक्ष्य प्रदान किया, जिसका सम्पूर्ण आशय, पच्चीस वर्ष बीत जाने के बाद आज भी अप्रकट है और हालाँकि जिसका अब तक का प्रकटीकरण अपने प्राथमिक चरणों में है फिर भी यह उस प्रथम बहाई शताब्दी के आध्यात्मिक और प्रशासनिक इतिहास को अत्यन्त समृद्ध बना चुका है।

जिस विशाल हिंसक उथल–पुथल की बहाउल्लाह द्वारा बहुत पहले भविष्यवाणी की जा चुकी थी उसके पहले चरण अर्थात् इस भयानक युद्ध ने, न केवल पावन भूमि में तुर्की शासन का अन्त कर दिया और उस सैन्य तानाशाह की बर्बादी पर मुहर लगा दी जिसने अब्दुल बहा को खत्म करने की कसम खाई थी, बल्कि इसने उन चन्द संविदाभंजकों की बची–खुची उम्मीदों को भी हमेशा के लिए समाप्त कर दिया जिन्होंने उन घोर दण्डों से सबक नहीं

लिया जो उन्हें पहले ही बरबाद कर चुके थे और जो अब भी बहाउल्लाह की संविदा के प्रकाश को बुझते हुए देखने की तमन्ना रखते थे। इसके अलावा इस युद्ध ने ऐसे क्रान्तिकारी परिवर्तन किए जिनसे, एक ओर जहाँ बहाउल्लाह द्वारा *किताब–ए–अक़दस* में की गई भविष्यवाणियाँ पूरी हुईं और दूसरी ओर *"इज़राईल के निर्वासितों"* का इतना बड़ा समूह, पावन भूमि में *"एकत्रित"* होने में और *"अपने बाड़े"* में *"अतुल्य शाखा"* की छत्रछाया तले लौटने में समर्थ बना। इसके अलावा इस युद्ध ने लीग ऑफ नेशंस (राष्ट्रसंघ) की उस संस्था को जन्म दिया जो उस विश्व न्यायालय का अग्रदूत है, जिसके बारे में भविष्यवाणी करते हुए उस *"अतुल्य शाखा"* ने कहा था कि पृथ्वी के लोग एक होकर इसकी स्थापना करेंगे।

जैसे ही अंग्रेज़ अनुयायियों को उस भयानक संकट के बारे में पता चला कि अब्दुल बहा की जान को खतरा है, वैसे ही अब्दुल बहा की सुरक्षा के लिए उनके द्वारा सशक्त कदम उठाए गए। अंग्रेज़ अनुयायियों द्वारा स्वतंत्र रूप से ऐसी कार्यवाही की गई जिसके द्वारा ब्रिटेन की केबिनेट के लॉर्ड कर्ज़न एवं अन्य सदस्यों को हाईफा की संकटपूर्ण स्थिति की जानकारी मिली; इस मामले में लॉर्ड लैमिंगटन ने त्वरित हस्तक्षेप करते हुए विदेशी कार्यालय को तत्काल पत्र लिखकर उन्हें "अब्दुल बहा के स्थान के महत्व के बारे में समझाया था"। इस पत्र के प्राप्त होते ही विदेश सचिव लॉर्ड बेल्फोर ने जनरल एलेंबी को एक पत्र लिखा था जिसमें उन्हें ये आदेश दिए गए थे कि वे "अब्दुल बहा, उनके परिवार के सदस्यों और उनके मित्रों को पूरी–पूरी सुरक्षा और सहायता प्रदान करें"। हाईफा पर अधिकार करने के बाद इसी जनरल ने एक टेलीग्राम लंदन भेजा और अधिकारियों से यह अनुरोध किया कि वे "दुनिया को खबर कर दें कि अब्दुल बहा सुरक्षित हैं"। हाईफा सम्बन्धी कार्यवाही के लिए ज़िम्मेदार जनरल कमान्डिंग ऑफिसर को इसी जनरल ने अब्दुल बहा की सुरक्षा सुनिश्चित करने के आदेश दिए थे और इस प्रकार तुर्की के मुख्य कमान्डर के उस इरादे को नाकाम कर दिया था कि यदि तुर्की सेना को हाईफा छोड़ कर उत्तर दिशा में जाने के लिए विवश किया गया तो वे अब्दुल बहा और उनके परिवार के सदस्यों को कार्मल पर्वत पर सूली पर चढ़ा देंगे (इस स्पष्ट इरादे की जानकारी ब्रिटेन की खुफिया सेवाओं को पहुँच चुकी थी)।

ब्रिटेन की सेना द्वारा फिलिस्तीन की स्वतंत्रता और अब्दुल बहा के स्वर्गवास के बीच तीन वर्षों के अन्तराल में प्रभुधर्म के सम्मान में वृद्धि हुई और जो इस स्थान पर किए गए अत्याचारों के बावजूद इसने विश्व केन्द्र में प्राप्त कर लिया था वह अपनी गतिविधियों के विस्तार के माध्यम से दुनिया के विभिन्न भागों में भी फैल चुका था। प्रभुधर्म के संस्थापकों और इसकी संविदा के केन्द्र के जीवन के लिए पैंतीस साल तक खतरा बनने वाला संकट अब आखिरकार, उस युद्ध के माध्यम से पूर्ण रूप से और हमेशा के लिए टल गया था। पूर्व के भ्रष्ट शासन के स्थान पर नए और स्वतंत्र शासन के आने से, अक्का के मैदानी क्षेत्रों, कार्मल पर्वत पर स्थित प्रभुधर्म की दो पावन समाधियों को और इसके प्रधान को अब पहली बार प्रतिबंधों से एक ऐसी स्वतंत्रता मिलने वाली थी जो भविष्य में प्रभुधर्म की संस्थाओं की और भी स्पष्ट पहचान का कारण बनने वाली थी। उस दुःखदायी युद्ध के अंधकार भरे दिनों के अन्तर्गत पावन भूमि के निवासियों को पीड़ित करने वाले कष्टों के बोझ को कम करने में अब्दुल बहा द्वारा निभाई गई भूमिका को ब्रिटेन प्रशासन ने तत्काल सराहा। अब्दुल बहा को 'नाईट' की उपाधि से सम्मानित करने के लिए आयोजित किए गए समारोह में विभिन्न समुदायों के प्रतिष्ठित लोगों का एकत्रित होना; बहजी में दोपहर के भोजन पर जनरल एलेंबी और उनकी पत्नी का अब्दुल बहा का अतिथि बनकर आना, जिन्हे वे स्वयं बहाउल्लाह की समाधि पर ले गए; अब्दुल बहा के हाईफा निवास पर उनके और राजा फैज़ल के बीच होने वाला वह साक्षात्कार जिसके शीघ्र बाद राजा फैज़ल इराक का शासक बना; फिलिस्तीन के उच्चायुक्त नियुक्त किए जाने से पहले और इसके बाद सर हरबर्ट सैम्युएल का उनसे कई बार मिलना; लॉर्ड़ लैमिंग्टन, जो हाईफा में भी उनसे मिलने आए थे के साथ उनकी भेंट, साथ ही येरूशलम के गवर्नर सर रोनल्ड स्टोर्स के साथ उनका साक्षात्कार; सभी धार्मिक समुदायों, चाहे वे मुस्लिम हो, ईसाई हो या यहूदी, सब के द्वारा अब्दुल बहा के उच्च और अद्वितीय स्थान को पहचाने जाने के बढ़ते हुए प्रमाण; पूरब और पश्चिम से आने वाले उन तीर्थयात्रियों का तांता, जो अक्का और हाईफा की पावन समाधियों पर अब्दुल बहा के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित करने, ईश्वर द्वारा प्रभुधर्म और इसके अनुयायियों को प्रदान की गई उल्लेखनीय सुरक्षा का उत्सव मनाने और इसके प्रधान और विश्व केन्द्र की तुर्की कैद से अन्तिम स्वतंत्रता का आभार व्यक्त करने

के लिए अपेक्षाकृत आराम और सुरक्षा के साथ पावन भूमि पहुँचने लगे थे। इन सभी बातों के कारण प्रत्येक ने अपने ही ढंग से प्रभुधर्म के उस सम्मान को बढ़ाने में योगदान दिया जो अब्दुल बहा के नेतृत्व में इसे धीरे–धीरे किन्तु स्थाई रूप से प्राप्त हो रहा था।

जब अब्दुल बहा का काल समाप्त होने लगा तब पूरब और पश्चिम दोनों में प्रभुधर्म की संस्थाओं को आकार देने और दृढ़ करने सम्बन्धी तथा इसकी गतिविधियों और प्रभाव के फैलने से जुड़े अवरोधहीन विकास के चिन्ह बढ़ने लगे। इश्काबाद शहर में मश्रिकुल–असकार का वह निर्माण, जो स्वयं अब्दुल बहा ने आरम्भ किया था सफलतापूर्वक पूरा हुआ। विलमेट में पश्चिम के मातृ मंदिर के लिए की गई खुदाई पूरी की गई और भवन के बेसमेंट के निर्माण का ठेका दे दिया गया। बग़दाद में, अब्दुल बहा के विशेष निर्देशों के अनुसार उनके पिता की स्मृति के साथ जुड़े महानतम निवास की नींव को मज़बूत करने और इसे इसकी पूर्वावस्था में लाने के लिए प्रारम्भिक कदम उठाये गए। पूरब और पश्चिम के बहाईयों की ओर से दिए गए अंशदान की सहायता से पावन भूमि में बाब की समाधि की पूरब दिशा में एक बड़ी ज़मीन खरीदी गई जो प्रभुधर्म के विश्व प्रशासनिक केन्द्र में भविष्य में स्थापित किए जाने वाले प्रथम बहाई स्कूल के निर्माण के लिए थी। अब्दुल बहा के निवास के पड़ोस में पश्चिमी तीर्थयात्री निवास के लिए ज़मीन खरीदी गई। यह भवन अब्दुल बहा के स्वर्गवास के शीघ्र बाद अमेरिकन अनुयायियों द्वारा निर्मित किया गया। इश्काबाद के एक अनुयायी द्वारा कार्मल पर्वत पर निर्मित किए गए पश्चिमी तीर्थयात्री निवास को, बाब के पावन अवशेषों को समाधिस्थ करने के शीघ्र बाद, तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए नागरिक प्रशासन द्वारा कर से छूट दे दी गई (पावन भूमि में प्रभुधर्म की स्थापना से लेकर अब तक पहली बार ऐसा विशेषाधिकार दिया गया था)। अब्दुल बहा द्वारा उन्हें भेजी गई एक पाती के प्रभाव से जान–माने कीटविज्ञानी, डॉ. ऑगस्ट फोरेल ने प्रभुधर्म को स्वीकार कर लिया। यह पाती अब्दुल बहा द्वारा लिखी गई सबसे महत्वपूर्ण पातियों में से एक है। "सेन्ट्रल ऑर्गेनाईज़ेशन फॉर ड्योरेबल पीस" की एक्ज़ीक्यूटिव कमेटी द्वारा उन्हें सम्बोधित किए गए एक पत्र के उत्तर में भी अब्दुल बहा ने एक व्यापक महत्व वाली पाती प्रकट की थी जो उन्होंने 'दी हेग' में एक विशेष

प्रतिनिधि दल के हाथों भिजवाई। युद्ध के पश्चात आयोजित किए गए प्रथम सम्मेलन के दौरान प्रस्तुत की गईं दिव्य योजनाओं की पातियों के उत्तर में जब एक नए महाद्वीप में प्रभुधर्म की स्थापना हुई, तब वह महान हृदयवान और वीर हाईड डुन, बासठ वर्ष की परिपक्व उम्र में केलिफोर्निया में स्थित अपने निवास को तत्काल त्याग कर अपनी पत्नी के साथ ऑस्ट्रेलिया में पायनियर के रूप में बस गए, जहाँ वे उस सम्पूर्ण राष्ट्रमण्डल के कम से कम सात सौ नगरों में प्रभुधर्म का संदेश पहुँचाने में सफल रहे। यह एक नए प्रसंग का शुभारम्भ था, जब इन्हीं पातियों के और इनके आदेशों के त्वरित उत्तर में बहाउल्लाह की वह तारक–सेविका, वह अदम्य और अमर मार्था रूट, जिसे उसके मास्टर (अब्दुल बहा) ने *"प्रभुसाम्राज्य की अग्रदूत"* और *"संविदा की हरकारा"* की उपाधियों से सम्मानित किया था, अपनी पहली ऐतिहासिक यात्राओं पर निकलीं जो बीस वर्ष की अवधि तक जारी रहने वालीं थीं और जिनके द्वारा वे कई बार पूरी पृथ्वी का भ्रमण करने वालीं थीं तथा जिनका स्वर्गवास उनके घर से दूर प्रभुधर्म की सक्रिय सेवा में हुआ था, जिसे वे इतना अधिक प्यार करती थीं। ये घटनाएँ एक ऐसे धर्मकाल के अन्तिम चरण को चिन्हित करती हैं जिन्होंने बहाई विधान के शौर्यकाल की विजय पर मुहर लगा दी और जिन्हें पहली बहाई शताब्दी के सबसे महिमामय एवं फलदायी समय के रूप में इतिहास में अंकित किया जायेगा।

अब्दुल बहा का स्वर्गवास

अब्दुल बहा का महान कार्य अब समाप्त हो गया था। जिस ऐतिहासिक ध्येय के साथ उनके पिता ने 29 वर्ष पूर्व उन्हें विभूषित किया था उसे कुशलतापूर्वक पूरा किया जा चुका था। प्रथम बहाई शताब्दी के इतिहास में एक यादगार अध्याय लिखा जा चुका था। बहाई धार्मिक व्यवस्था का वह शौर्यकाल जिसमें प्रारम्भ से ही भाग लेकर उन्होंने एक अद्वितीय भूमिका निभाई थी वह अब समाप्त हो चुका था। जितने दुःख और कष्ट उन्होंने उठाये उतने प्रभुधर्म के किसी भी अनुयायी, जिसने शहादत का प्याला पिया था ने नहीं उठाये थे। जो श्रम उन्होंने किया उतना इसके महानतम शूरवीरों ने भी नहीं किया था। उन्होंने ऐसी विजय देखी थी जो न तो प्रभुधर्म के अग्रदूत ने और न ही इसके संस्थापक ने कभी देखी थी।

पश्चिम के अपने उस दौरे के अन्त में, जिसके लिए उन्होंने अपनी ढलती हुई शक्ति के अन्तिम कतरे तक का उपयोग किया था, अब्दुल बहा ने लिखा : *"मित्रों, वह समय आ रहा है जब मैं तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा। मैंने वह सब कुछ किया है जो किया जा सकता था। मैंने अपनी पूरी क्षमता से बहाउल्लाह के धर्म की सेवा की है। मैंने जीवनभर दिन–रात श्रम किया है। ओह ! मेरी कितनी गहन इच्छा है कि मैं अनुयायियों को प्रभुधर्म के दायित्व उठाते हुए देखूँ ! मेरे पास गिनती के दिन बचे हुए हैं, इसके अलावा मेरे पास और कोई खुशी बाकी नहीं रह गई है।"* अपने देहान्त के बारे में कई वर्षों पहले उन्होंने संकेत करते हुए कहा था : *"ओ तुम जो मेरे वफादार प्रिय हो ! यदि पावन भूमि में कभी दुःखद घटनाएँ*

घटित हो जाएं तो कभी परेशान या उत्तेजित न होना। न कभी डरना और न ही दुःखी होना। क्योंकि जो कुछ भी होगा वह ईश्वर के शब्द को गौरवान्वित करेगा और उसकी दिव्य सुरभि को फैलायेगा।" एक बार फिर उन्होंने कहा था : *"याद रखना, चाहे मैं धरती पर रहूँ या न रहूँ, मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगा।"* अपनी अन्तिम पातियों में से एक में उन्होंने अपने मित्रों को सलाह देते हुए कहा था : *"अब्दुल बहा के शरीर की ओर न देखो क्योंकि अन्त में यह तुम सब से विदा लेकर चला जायेगा; बल्कि अपनी दृष्टि ईश्वर के शब्द पर केन्द्रित करो..... । ईश्वर के प्रियजनों को ऐसी दृढ़ता के साथ उठ खड़ा होना चाहिए कि यदि एक पल में, स्वयं अब्दुल बहा की तरह सैकड़ों आत्माएँ दुःखों के तीरों का निशाना बन जाएं तब भी, ऐसा कुछ भी न हो जो ईश्वर के धर्म के प्रति उनकी सेवा को कम या नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सके।"*

अपने स्वर्गवास के कुछ ही दिन पहले अमेरिका के अनुयायियों को सम्बोधित की गई एक पाती में इस संसार से चले जाने की बात अब्दुल बहा ने इस प्रकार व्यक्त की थी : *"मैंने संसार और इसके लोगों को त्याग दिया है..... । इस संसार के पिंजरे में मैं एक डरे हुए पंछी की तरह फड़फड़ाता हूँ और हर दिन तेरे साम्राज्य में अपनी उड़ान भरने के लिए उत्सुक रहता हूँ। या–बहा–उल–आभा ! मुझे बलिदान के प्याले से पान करने दीजिये और मुझे स्वतंत्र कीजिये।"* अपने देहान्त से छः माह से भी कम समय से पहले बाब के परिवार के एक सदस्य के सम्मान में उन्होंने एक प्रार्थना प्रकट की और इसमें लिखा है कि : *"हे स्वामी ! मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गईं हैं, मेरे सिर पर सफेद बाल चमकते हैं.....अब मैं वृद्धावस्था में पहुँच गया हूँ और मेरी शक्तियाँ जवाब दे गईं हैं। .....मेरे अन्दर वह ताकत नहीं रह गईं है जिससे मैं उठ खड़ा होकर तेरे प्रियजनों की सेवा कर सकूँ..... । हे स्वामी, मेरे स्वामी ! तेरी सर्वोच्च दहलीज़ तक मुझे उठाने की एवं तेरी सर्वमहान दयालुता की छाँव तले तेरी कृपा के द्वार पर मेरे पहुँचने की शीघ्रता कर....."*

अब्दुल बहा द्वारा देखे गए स्वप्नों के माध्यम से, उनकी बातों से, उनके द्वारा प्रकट की गईं पातियों से, यह स्पष्ट होने लगा था कि उनका अन्तिम समय तेज़ी से निकट आ रहा है। अपने स्वर्गारोहण के दो माह पहले उन्होंने

अपने परिवार को अपने एक स्वप्न के बारे में बताया था। उन्होंने कहा था : *"ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे मैं किसी बड़ी मस्जिद की अंतरतम समाधि में क़िब्ले की ओर मुँह करके स्वयं इमाम के स्थान पर खड़ा हुआ था। मैंने देखा कि बड़ी संख्या में लोग इस मस्जिद के अन्दर प्रवेश कर रहे थे। अधिक से अधिक लोग अन्दर भीड़ लगाते गए और मेरे पीछे की कतारों में बैठते गए और देखते–देखते एक विशाल भीड़ जमा हो गई। मैंने खड़े होकर प्रार्थना के लिए आह्वान किया। अचानक मेरे मन में मस्जिद से बाहर चले जाने का विचार आया। जब मैंने स्वयं को बाहर पाया तो मैंने अपने आप से कहा : "मैं बगैर प्रार्थना करवाए बाहर क्यों आ गया ? लेकिन कोई बात नहीं; अब जबकि मैंने प्रार्थना का आह्वान कर ही दिया है तो यह विशाल भीड़ अपने आप प्रार्थना कर लेगी।"* कुछ सप्ताह पश्चात, जिस दौरान वे अपने निवास के बगीचे में एक एकान्त कमरे में रह रहे थे, तब उन्होंने अपने आसपास उपस्थित लोगों को एक अन्य स्वप्न के बारे में बताया। उन्होंने कहा, *"मैंने एक स्वप्न देखा और देखता हूँ कि आशीर्वादित सौन्दर्य (बहाउल्लाह) मेरे पास आये और उन्होंने मुझसे कहाः 'इस कमरे को नष्ट कर दो।'"* वहाँ उपस्थित किसी ने भी इस स्वप्न के महत्व को तब तक नहीं समझा जब तक कि इसके शीघ्र बाद अब्दुल बहा का स्वर्गवास नहीं हो गया, तब उन सभी के लिए यह स्पष्ट हो गया कि *"कमरे"* का अर्थ था उनका शरीर रूपी मन्दिर।

अपने स्वर्गवास के एक माह पहले (उनका स्वर्गवास उनकी आयु के 78वें वर्ष में, 28 नवम्बर, 1921 की भोर को हुआ था) उस अनुयायी को सम्बोधित किए गए सांत्वना भरे शब्दों में जो अपने भाई की मृत्यु के कारण बहुत दुःखी था, उन्होंने इसका स्पष्ट उल्लेख किया था। अपने देहान्त के दो सप्ताह पहले उन्होंने अपने वफादार माली के साथ इस तरह बात की जिससे यह स्पष्ट हो गया था कि उन्हें मालूम था कि उनका अन्त निकट है। उन्होंने उस माली से कहा था *"मैं बहुत थक गया हूँ, वह घड़ी आ चुकी है जब मुझे सब कुछ छोड़कर अपनी उड़ान भरनी होगी। मैं इतना थक गया हूँ कि चल भी नहीं सकता।"* वे आगे बोले : *आशीर्वादित सौन्दर्य के अन्तिम दिनों में जब मैं उनके उन दस्तावेज़ों को समेट रहा था जो बहजी में उनके लेखन कक्ष के सोफे पर बिखरे पड़े थे, तब वे मेरी*

ओर मुड़े और बोले : "इन्हें समेटने का कोई लाभ नहीं, मुझे इन्हें छोड़कर जाना होगा। मैंने भी अपना काम पूरा कर लिया है, मैं और कुछ नहीं कर सकता। इसलिए मुझे इसे छोड़ना होगा और प्रस्थान करना होगा।"

अपने जीवन के अन्तिम दिन तक अब्दुल बहा, उच्च और निम्न वर्ग के सभी लोगों पर समान रूप से प्यार बरसाते रहे, गरीबों और अत्याचार–पीड़ितों को सहायता प्रदान करते रहे और अपने पिता के धर्म की सेवा करते रहे जो उनकी किशोरावस्था से उनकी आदत–सी बन गई थी। अपने स्वर्गवास के ठीक पहले वाले शुक्रवार को भारी थकावट के बावजूद वे दोपहर की प्रार्थना के लिए मस्जिद में उपस्थित हुए और इसके बाद, जैसी कि उनकी आदत थी उन्होंने गरीबों को दान दिया; कुछ पातियाँ लिखवाईं, जो उनके द्वारा प्रकट की गईं अन्तिम पातियाँ थीं.....; उसी दिन उन्होंने एक विश्वसनीय सेवक के विवाह का आशीर्वाद दिया था और इस बात पर बल दिया था कि यह विवाह उसी दिन सम्पन्न होना चाहिए। इसके बाद उन्होंने अपने निवास पर मित्रों की नियमित बैठक में भाग लिया; अगले दिन उन्हें बुखार आ गया और इसी के अगले रविवार को स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण वे अपना निवास छोड़ने की स्थिति में नहीं थे, इसलिए उन्होंने सभी अनुयायियों को संविदा की घोषणा के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित सहभोज में भाग लेने के लिए बाब की समाधि पर भेज दिया; उसी दोपहर को उन्होंने पूर्ण शिष्टाचार और दयालुता के साथ तथा बढ़ती हुई कमज़ोरी के बावजूद, हाईफा के मुफ्ती, मेयर और पुलिस प्रमुख का स्वागत किया और उस रात जो कि उनके जीवन की अन्तिम रात थी, सोने से पहले उन्होंने अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य, हाईफा में मौजूद तीर्थयात्रियों और अपने मित्रों के स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ की।

भोर के 1:15 बजे वे उठे, *".....और टहलते हुए अपने कमरे की एक मेज़ के पास गए थोड़ा पानी पिया और अपने बिस्तर पर चले गए। बाद में, उन्होंने अपनी दो बेटियों में से एक जो उनकी देखभाल के लिए जाग रही थी से कहा कि वह मच्छरदानी को उठा दे, क्योंकि उन्हें साँस लेने में कठिनाई हो रही थी। उन्हे थोड़ा गुलाब जल दिया गया, जिसे पीकर वे दोबारा लेट गए और जब उन्हें कुछ खाने*

को कहा गया, तब उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा : "मैं जा रहा हूँ और तुम चाहती हो कि मैं कुछ खा लूँ ?" एक पल के बाद उनकी आत्मा अपने अनन्त निवास की ओर उड़ गई, वह अपने परम प्रिय पिता के प्रकाश में सिमट गए और उनके साथ अनन्त पुनर्मिलन का आनन्द ले सके।"

अब्दुल बहा के इतने आकस्मिक और इतने अनापेक्षित स्वर्गवास का समाचार जंगल में आग की तरह पूरे शहर में फैल गया। इसकी सूचना तार द्वारा विश्व के विभिन्न भागों में पहुँचा दी गई, परिणामस्वरूप पूरब और पश्चिम में बहाउल्लाह के अनुयायी दुःख से अवाक रह गए। उस दुःख से दुःखी और आहत परिवार के सदस्यों पर, दूर और पास से, उच्च और निम्न की ओर से, तार और पत्रों के माध्यम से, प्रशंसा, भक्ति, शोक और सहानुभूति के संदेशों की वर्षा होने लगी।

कॉलोनियों के लिए उत्तरदायी ब्रिटेन के राज्य सचिव श्री विनस्टन चर्चिल ने फिलिस्तीन के उच्चायुक्त, सर हरबर्ट सैम्युएल को तत्काल तार भेजा और यह निर्देश दिए कि वे "बहाई समुदाय को महामहिम की सरकार की ओर से सहानुभूति और शोक संदेश भेजें।" मिस्र के उच्चायुक्त, वायकाउन्ट एलेन्बी ने फिलिस्तीन के उच्चायुक्त को तार भेजा और उनसे कहा कि वे "स्वर्गीय सर अब्दुल बहा अब्बास एफेन्दी के परिवार के सदस्यों और बहाई समुदाय" को "उनके प्रतिष्ठित अग्रणी के चले जाने से होने वाली क्षति के लिए" उनकी ओर से "हार्दिक सहानुभूति व्यक्त करें"। बग़दाद की मंत्री–परिषद ने प्रधान मंत्री सैय्यद अब्दुर–रहमान को निर्देश दिए कि वे "पूज्यनीय अब्दुल बहा के परिवारजनों को उनकी इस शोक की घड़ी में" हमारी "सहानुभूति पहुँचाएँ"। इजिप्शन एक्सपिडिशनरी फोर्स के मुख्य कमान्डर, जनरल कॉन्ग्रीव ने फिलिस्तीन के उच्चायुक्त को एक संदेश भेजकर उनसे अनुरोध किया कि वे "स्वर्गीय सर अब्बास बहाई के परिवार को उनकी हार्दिक सहानुभूति दें"। फिलिस्तीन के पूर्व मुख्य प्रशासक, जनरल सर आर्थर मोनी ने अब्दुल बहा के लिए अपना दुःख, गहन आदर और अपनी प्रशंसा व्यक्त करते हुए और उनके परिवार द्वारा सहन की गई क्षति के लिए अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हुए एक पत्र लिखा।

ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के शैक्षिक जीवन के एक विशिष्ट व्यक्तित्व, एक जाने–माने प्रोफेसर और विद्वान ने अपनी और अपनी पत्नी की ओर से लिखा : "जिस व्यक्ति ने अपने विचार उस उच्च साम्राज्य पर केन्द्रित किए हैं और जिसने इस भौतिक संसार में एक उच्च जीवन जीने का प्रयास किया है, उसके लिए परदे के परे उस पूर्ण जीवन में प्रवेश करना विशेष रूप से अद्भुत और आशीर्वादित होगा।"

"लंदन टाइम्स", "मॉर्निंग पोस्ट", "डेली मेल", "न्यूयॉर्क वर्ल्ड", "ले टेम्पस", "टाईम्स ऑफ इन्डिया" एवं अन्य बहुत से समाचार पत्रों ने विभिन्न भाषाओं और देशों में उस महान को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की जिसने मानवजाति में भातृभाव और शान्ति के उद्देश्य के लिए इतनी उल्लेखनीय और अमिट सेवाएँ अर्पित की थीं।

उच्चायुक्त, सर हरबर्ट सेम्युएल ने अब्दुल बहा के अन्तिम संस्कार में व्यक्तिगत रूप से सम्मिलित होने की अपनी इच्छा व्यक्त करते हुए एक संदेश भेजा, जैसा कि बाद में उन्होंने स्वयं लिखा है, "मैं उनके धर्म के लिए सम्मान और उनके व्यक्तित्व के प्रति अपना आदर व्यक्त करता हूँ।" जहाँ तक अंतिम संस्कार का प्रश्न है जो कि मंगलवार की सुबह किया गया था, ऐसा अंतिम संस्कार फिलिस्तीन में पहले कभी नहीं देखा गया, उस देश के प्रत्येक वर्ग, धर्म और जाति के कम से कम दस हज़ार लोग इसमें सम्मिलित हुए थे। बाद में स्वयं उच्चायुक्त ने अपने वक्तव्य में इस बात की साक्षी दी कि इस अवसर पर एक विशाल भीड़ एकत्रित हो गई थी जो उनके स्वर्गवास से दुःखी थी लेकिन जो उनके जीवन के लिए खुश थी।" उस समय के येरूसलम के गवर्नर सर रोनल्ड स्टॉर्स ने अंतिम संस्कार का वर्णन करते हुए लिखा है : "इस सादगी भरे संस्कार द्वारा जिस दुःख और आदर की अपेक्षा की गई थी ऐसी एकजुट अभिव्यक्ति मैंने पहले कभी नहीं देखी थी।"

अब्दुल बहा के पावन अवशेषों के ताबूत को उनके प्रियजनों के कंधों पर इसके अन्तिम विश्राम स्थल पर ले जाया गया। इसके आगे चलने वाले जुलूस का नेतृत्व सिटी कॉनस्टेब्यूलरी फोर्स द्वारा किया गया था जो सम्मानार्थ

सेना–प्रदर्शक के रूप में कार्य कर रही थी, इनके पीछे–पीछे मुस्लिम और ईसाई समुदायों के बॉय स्काउट्स अपने ध्वज उठाए हुए एक व्यवस्थित क्रम में चल रहे थे। मुफ्ती के नेतृत्व में कुरान के श्लोक उच्चारित करते हुए मुस्लिम समुदाय के धर्मगुरू और कुछ ईसाई, लेटिन, यूनानी और एंगलिकन धर्माधिकारी चल रहे थे। ताबूत के पीछे चलने वालों में शामिल थे उनके परिवार के सदस्य, ब्रिटेन के उच्चायुक्त सर हरबर्ट सेम्युएल, येरूसलम के गवर्नर सर रोनल्ड स्टोर्स, फिनिशिया के गवर्नर सर स्टुवर्ट साईम्स, सरकारी अधिकारीगण, हाईफा में निवास करने वाले विभिन्न देशों के कॉन्सोल, फिलिस्तीन के कुलीन लोग, मुसलमान, यहूदी, ईसाई और ड्रूज़, मिस्र, यूनान, तुर्किस्तान, अरब, कुर्दिस्तान, यूरोप और अमेरिका के निवासी स्त्री, पुरूष और बच्चे। कई दुःखी हृदय वालों की सिसकियों और विलाप के बीच शोकमग्न लोगों की लम्बी कतारें धीरे–धीरे कार्मल पर्वत पर स्थित बाब की समाधि की ओर बढ़ती गईं।

इस पावन ताबूत को समाधि के पूर्वी प्रवेश के निकट एक साधारण मेज़ पर रखा गया, उस विशाल समूह की उपस्थिति में, मुस्लिम, यहूदी और ईसाई धर्मों का प्रतिनिधित्व करने वाले नौ वक्ताओं ने अपनी–अपनी ओर से श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं, जिनमें हाईफा के मुफ्ती भी शामिल थे। इसके पश्चात, उच्चायुक्त ताबूत के पास आए और समाधि के सामने सिर झुकाते हुए उन्होंने अब्दुल बहा को अपनी अन्तिम विदाई की श्रद्धाँजलि अर्पित की; सरकार के अन्य पदाधिकारियों ने भी उनका अनुसरण किया। इसके बाद ताबूत को समाधि के एक कक्ष में ले जाया गया और वहाँ, बड़े दुःखी हृदय और सम्मान के साथ इसके अन्तिम विश्राम स्थल में उस मेहराब के नज़दीक उतार दिया गया जहाँ बाब के पावन अवशेष रखे गए हैं।

अब्दुल बहा के स्वर्गारोहण के अगले सप्ताह उनके निवास पर 50 से 100 गरीबों को प्रतिदिन भोजन कराया गया, जबकि सातवें दिन उनकी याद में लगभग एक हज़ार गरीबों को चाहे वे किसी भी पंथ या जाति के हों मकई बाँटी गई। चालीसवें दिन उनकी स्मृति में एक यादगार भोज दिया गया, जिसमें हाईफा, अक्का तथा फिलिस्तीन एवं सीरिया के आसपास के इलाकों

से लोगों को आमंत्रित किया गया था जिनमें विभिन्न धर्मों एवं जातियों के पदाधिकारी और कुलीन लोग शामिल थे।

उपस्थित मेहमानों में फिनिशिया के गवर्नर ने अब्दुल बहा की याद में निम्नलिखित शब्दों में अपनी अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित की : "मैं समझता हूँ कि यहाँ उपस्थित हममें से अधिकांश लोगों के मन में सर अब्दुल बहा अब्बास की, उनके प्रभावी व्यक्तित्व के हमारी गलियों से गुज़रने की, उनके शिष्ट और दयालु स्वभाव की, छोटे बच्चों और फूलों के लिए उनके प्रेम की, गरीबों और पीड़ितों के प्रति उनकी उदारता और देखभाल की एक स्पष्ट तस्वीर है। वे इतने विनम्र और इतने सरल थे कि उनकी उपस्थिति में व्यक्ति यह भूल जाता था कि वे एक महान शिक्षक भी हैं और यह कि पूरब और पश्चिम में सैंकड़ों हज़ार लोगों के लिए उनके लेख और उनकी बातें सांत्वना और प्रेरणा का स्त्रोत रही हैं।"

इस प्रकार सम्पन्न हुआ उस महान का जीवन, जो अपने पिता द्वारा प्रदान किए गए स्थान के नाते, उस संस्था के मूर्तरूप थे जिसका सम्पूर्ण धार्मिक इतिहास में कोई उदाहरण नहीं है। अब्दुल बहा का सेवाकाल बहाउल्लाह के विधान के धर्मदूतीय शौर्यकाल और सबसे महिमाशाली काल के अन्तिम चरण को चिन्हित करता है।

अब्दुल बहा के माध्यम से घोषित वह संविदा, वह "सर्वोत्कृष्ट और अमूल्य धरोहर" जो बहाई प्रकटीकरण के संस्थापक द्वारा वसीयत के रूप में दी गई थी, स्थापित और सिद्ध की जा चुकी थी। इस दिव्य साधन के द्वारा उन्हें प्रदान की गई शक्ति के माध्यम से ईश्वर का प्रकाश पश्चिम में फैला, प्रशांत महासागर के द्वीपों तक गया और इससे ऑस्ट्रेलियाई महाद्वीप के सीमांत क्षेत्र प्रकाशित हुए। उनके व्यक्तिगत हस्तक्षेप के कारण वह संदेश, जिसे धारण करने वाले ने एक लम्बी कैद के जीवन की कड़वाहट झेली थी, अब चारों ओर फैल चुका था तथा इसके इतिहास में पहली बार, यूरोप एवं उत्तरी अमेरिकी महाद्वीपों के मुख्य शहरों में उत्साही दर्शकों के सामने इसका स्वरूप और उद्देश्य प्रकट किए गए थे। अब्दुल बहा की अथक सतर्कता के कारण, बाब के पावन अवशेषों को उनके 50 वर्ष के गुप्त प्रवास से अन्ततः बाहर लाया गया, सुरक्षित रूप से पावन भूमि

पहुँचाया गया और उचित सम्मान के साथ हमेशा के लिए उसी स्थान पर समाधिस्थ कर दिया गया जो स्वयं बहाउल्लाह ने इसके लिए नियत किया था और जिस स्थान को उन्होंने अपनी उपस्थिति से आशीर्वादित किया था। अब्दुल बहा की साहसी पहल के माध्यम से केन्द्रीय एशिया के रूसी तुर्किस्तान में बहाई विश्व के प्रथम मश्रिकुल–असकार का निर्माण किया गया था, जबकि उनके उचित प्रोत्साहन के द्वारा और भी विशाल पैमाने पर इसी प्रकार के एक अन्य प्रयास को अंजाम दिया गया तथा उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप के हृदय में स्वयं उनके हाथों से इसकी आधारशिला रखी गई। अब्दुल बहा के युगधर्म के शुभारम्भ से ही उन पर आच्छादित जीवनदायी कृपा के माध्यम से उनके शाही शत्रु को धूल चटाई गई थी, उनके पिता की संविदा के मुख्य भंजक को बिल्कुल खदेड़ दिया गया था और जो संकट बहाउल्लाह को तुर्किस्तान की भूमि पर निर्वासित करने की घड़ी से प्रभुधर्म के हृदय पर मंडरा रहा था, वह हमेशा के लिए टल गया था। अब्दुल बहा के निर्देशों के अनुपालन में और उनके पिता द्वारा प्रकट किए गए सिद्धान्तों एवं विहित किए गए नियमों के अनुसार, उनके स्वर्गवास के पश्चात स्थापित होने वाली प्रशासनिक व्यवस्था के औपचारिक शुभारम्भ की घोषणा करने वाली नवजात संस्थाएँ आकार ले चुकी थीं और स्थापित भी की जा चुकी थीं। उनके अथक प्रयासों के माध्यम से जैसा कि उनके द्वारा लिखे गए लेखों में, उनके द्वारा प्रकट की गईं हज़ारों पातियों में, उनके वक्तव्यों में, उन प्रार्थनाओं, कविताओं और टिप्पणियों में जो उन्होंने आने वाली पीढ़ियों के लिए अधिकांशतः फारसी में, कुछ अरबी और कुछ तुर्की में लिखी थीं। उनके पिता के प्रकटीकरण का ताना–बाना बुनने वाले नियमों और सिद्धान्तों की व्याख्या की गई, इसकी बुनियादी बातों को दोहराया गया और इनके बारे में समझाया गया, साथ ही इसके सिद्धांतों पर विस्तारपूर्वक अमल किया गया एवं इसकी सच्चाईयों की वैधता और अपरिहार्यता को पूरी तरह एवं सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित किया गया। अब्दुल बहा द्वारा दी गई चेतावनियों के माध्यम से उस लापरवाह मानवजाति को जो भौतिकवाद में डूब चुकी थी और जो ईश्वर से अनभिज्ञ थी, उन संकटों से आगाह कर दिया गया था जो उसके व्यवस्थित जीवन को अस्त–व्यस्त करने की धमकी दे रहे थे और जिसे अपनी सतत् भ्रष्टता के

परिणामस्वरूप, उस विश्वव्यापी उथल–पुथल के प्रारम्भिक आघातों को सहन करना पड़ा, जिनसे मानव समाज की नींव आज तक हिल रही है। और अन्त में, अब्दुल बहा द्वारा उस साहसी समुदाय को दिए गए आदेश के माध्यम से, जिसके सदस्यों की संयुक्त उपलब्धियों ने उनके स्वयं के धर्मकाल के इतिहास पर इतनी महान आभा बिखेरी थी, एक ऐसी योजना क्रियान्वित हो चुकी थी जिसने अपने औपचारिक आरम्भ के शीघ्र बाद, उस ऑस्ट्रेलियाई महाद्वीप को खोल दिया था जो आगे चलकर एक शाही अनुयायी के दिल को उनके पिता के धर्म की ओर आकर्षित करने का साधन बनने वाला था और जो अपनी क्षमताओं के निरन्तर प्रकटन के माध्यम से, आज लेटिन अमेरिका के सभी गणराज्यों के आध्यात्मिक जीवन को इतने शानदार ढंग से सजीव बना रही है कि यह एक पूरी शताब्दी के इतिहास का एक शोभनीय समापन बनी है।

इतने आशीर्वादित और फलदायक युगधर्म की प्रमुख विशेषताओं के अवलोकन में उन भविष्यवाणियों को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता जो बहाउल्लाह की संविदा के नियुक्त केन्द्र की लेखनी द्वारा अंकित की गईं हैं। ये उस घातक आक्रमण की भीषणता की भविष्यवाणी करती हैं जो पश्चिम में, भारत में और दूरस्थ पूरब में प्रभुधर्म की अबाधित प्रगति के कारण तब होगा जब यह धर्म ईसाई, बौद्ध और हिन्दू धर्म की पुरातन धर्माचार्य व्यवस्था को चुनौती देगा। ये उस उथलपुथल की भविष्यवाणी करती हैं जो अमेरिकी, यूरोपीय, एशियाई और अफ्रीकी महाद्वीपों में इसलिए उत्पन्न होगी क्योंकि यह धर्म, धार्मिक रूढ़िवादिता की बेड़ियों से स्वतंत्र है। ये भविष्यवाणी करती है कि इज़राईल की संतानों के अपनी प्राचीन मातृभूमि में एकत्रित होने की, सुन्नी इस्लाम के मिस्र के सिंहासन पर बहाउल्लाह के ध्वज की स्थापना की, फारस में शिया धर्माधिकारियों के शक्तिशाली प्रभाव के अन्त की, बहाउल्लाह के धर्म के विश्वकेन्द्र में उनकी संविदा को भंग करने वाले बचे–खुचे दयनीय समूह को पीड़ित करने वाले दुःखों के बोझ की और कार्मल पर्वत की ढलान पर इस विजयी धर्म द्वारा निर्मित की जाने वाली उन संस्थाओं की भव्यता की, जो अक्का से इस प्रकार जुड़ी रहेंगी कि भावी बहाई राष्ट्रमण्डल के आध्यात्मिक और प्रशासनिक केन्द्रों को समाहित करने वाला एक भव्य महानगर तैयार हो

जायेगा। ये भविष्यवाणी करतीं हैं उस प्रत्यक्ष सम्मान की जो दूर भविष्य में बहाउल्लाह के मूल देश के निवासियों को आमतौर पर और इसकी सरकार को विशेष रूप से प्राप्त होगा। यह भविष्यवाणी करती हैं अमेरिकी महाद्वीप में महानतम नाम के समुदाय को प्राप्त होने वाले उस अद्वितीय एवं लाभकारी स्थान की जो अब्दुल बहा द्वारा उन्हें सौंपे गए विश्व ध्येय के कार्यान्वयन के सीधे परिणामस्वरूप वे प्राप्त करेंगे। और अन्त में, इन सभी के योग और चरम सीमा के रूप में ये भविष्यवाणी करती हैं *"सभी राष्ट्रों के समक्ष ईश्वर के उस ध्वज के फहराये जाने"* की जब *"सभी मनुष्य एक धर्म का पालन करेंगे.....एक ही जाति में मिल जायेंगे और एक बन जायेंगे।"*

इस महान विश्व में अब्दुल बहा के धर्मकाल के अंतर्गत देखे गए उन क्रान्तिकारी परिवर्तनों को भी अनेदखा नहीं किया जा सकता जिनमें अधिकांश, उन चेतावनियों का प्रत्यक्ष रूप थे जो शीराज़ में अपने ध्येय की घोषणा की रात को ही बाब ने कय्यूमुल अस्मॉ में उच्चारित की थीं और जिन्हें आगे चलकर, सुरिय–ए–मुलुक और *किताब–ए–अक़दस* में धरती के सम्राटों और विश्व के धार्मिक नेताओं को सम्बोधित किए गए सारगर्भित उद्धरणों को बहाउल्लाह ने बल प्रदान किया था। पुर्तगाली राजवंश और चीनी साम्राज्य का गणराज्यों में परिवर्तित होना; रूसी, जर्मन और आस्ट्रियाई साम्राज्यों का पतन और इनके शासकों का अपमानजनक दुर्भाग्य; नसीरूद्दीन शाह की हत्या, सुल्तान अब्दुल हमीद का पतन, इन सभी बातों ने तबाही की उस प्रक्रिया की कार्यवाही के भावी चरणों को चिन्हित किया है जिसके प्रारम्भिक संकेत बहाउल्लाह के जीवनकाल में सुल्तान अब्दुल अज़ीज़ की हत्या से, नेपोलियन तृतीय के पतन से, तीसरे साम्राज्य के अन्त से तथा पोप द्वारा स्वयं को दी गई कैद एवं उसकी भौतिक सत्ता के प्रत्यक्ष अन्त से प्राप्त हो चुके थे। आगे चलकर अब्दुल बहा के स्वर्गवास के बाद फारस में काजार राजवंश के अन्त से, स्पेनिश राजवंश के पराभव से, तुर्की में सल्तनत और खलीफत के पतन से, पूरब में शिया इस्लाम के भाग्य के और ईसाई लक्ष्यों के तेज़ी से पतन से तथा यूरोप के कई सम्राटों पर अब टूटने वाले दुर्भाग्य से यही प्रक्रिया और भी तेज़ हो गई।

इस विषय को उन श्रेष्ठ एवं विद्वान लोगों के नामों का विशेष उल्लेख किए बिना भी नहीं छोड़ा जा सकता, जिन्होंने अब्दुल बहा के धर्मकाल के विभिन्न चरणों के दौरान न केवल स्वयं अब्दुल बहा को बल्कि बहाउल्लाह के धर्म को भी श्रद्धाँजलियाँ अर्पित कीं। काउंट लिओ टॉलस्टॉय, प्रोफेसर आर्मिनियस वैम्बेरी, प्रोफेसर ऑगस्ट फॉरेल, डॉ. डेविड स्टार जोर्डन, वेनरेबल आर्चडेकन विल्बरफोर्स, प्रोफेसर जोवेट बैल्योल, डॉ. टी. के. चैन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के डॉ. एस्टलिन कार्पेन्टर, कार्मेल के वायकाउंट सैम्युएल, लॉर्ड लैमिन्गटन, सर वेलेन्टाईन चिरोल, रब्बाय स्टीफन वाइज़, मिस्र के प्रिंस मुहम्मद अली, शेख मुहम्मद अब्दु, मिज़ात पाशा और खुर्शीद पाशा जैसे नाम, अपने साथ जुड़ी विशेषताओं के कारण, बहाउल्लाह के महान पुत्र के नेतृत्व में उनके धर्म द्वारा की गई महान प्रगति का प्रमाण देते हैं। इन श्रद्धांजलियों की प्रभावशीलता, महारानी विक्टोरिया की पोती और एक प्रसिद्ध महारानी की उन ऐतिहासिक, बार–बार दोहराई जाने वालीं और लिखित घोषणाओं के कारण और भी बढ़ गई थीं जो बहाउल्लाह के अवतारीय ध्येय को स्वीकार किए जाने के अपने प्रमाण के रूप में इन घोषणाओं को आने वाली पीढ़ियों के लिए विरासत में छोड़ने को प्रेरित हो गई।

जहाँ तक उन शत्रुओं का प्रश्न है जिन्होंने बहाउल्लाह की संविदा के प्रकाश को बुझाने के बड़े श्रमपूर्ण प्रयास किए थे, उन्हें दी गई उचित सज़ा की पीड़ा, उन लोगों की होने वाली बरबादी से कुछ कम स्पष्ट नहीं थी जिन्होंने एक उदित होते हुए धर्म की आशाओं को चूर–चूर करने और इसकी नींव को नष्ट करने के अत्यन्त नीचतम प्रयास किए थे।

उस अत्याचारी नसीरूद्दीन शाह की हत्या और इसके बाद काज़ार राजवंश के अंत का उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। सुल्तान अब्दुल हमीद को उसके पतन के बाद राज्य का कैदी बना दिया गया और पूरी तरह गुमनामी और अपमान से भरे जीवन की सज़ा दे दी गई। उसके साथी–शासक उससे घृणा करने लगे थे और उसकी प्रजा उसे गालियाँ देती थी। उस खून के प्यासे जमाल पाशा को, जिसने अब्दुल बहा को सूली पर चढ़ाने और

बहाउल्लाह की पावन समाधि को नष्ट करने का संकल्प लिया था, अपनी जान बचाकर भागना पड़ा और जब वह कोकेशस में एक शरणार्थी था तब वह एक ऐसे आर्मिनियाई के हाथों मारा गया जिसके साथी देशवासियों को उसने बड़ी बेरहमी से सताया था। वह षड़यंत्रकारी जमालुद्दीन अफगानी, जिसकी निर्दयी शत्रुता और जिसका शक्तिशाली प्रभाव, पूरब के निकट के देशों में प्रभुधर्म की प्रगति के लिए गम्भीर रूप से हानिकारक था, अपने अन्याय से भरे और बहुत उतार–चढ़ाव वाले कार्यकाल के अन्त में कैंसर से ग्रस्त हो गया और एक असफल ऑपरेशन में अपनी जुबान का एक बड़ा हिस्सा कटवा लेने के बाद दुःख से खत्म हो गया। अब्दुल बहा के भाग्य पर मुहर लगाने के लिए कॉन्सटैन्टिनोपल से जाँच–पड़ताल के लिए भेजे गए उस दुर्भाग्यशाली आयोग के चारों सदस्यों को बारी–बारी से ऐसा अपमान सहन करना पड़ा जो उस घोर अपमान से कुछ कम नहीं था जो उन्होंने अब्दुल बहा के लिए निर्धारित किया था। यंग टर्क्स के कोप से बचने के लिए आधी रात को छिपकर पलायन करने का प्रयास करने वाले उस आयोग के अध्यक्ष आरिफ बे की एक संत्री ने गोली मारकर हत्या कर दी। आज़म बे बचकर मिस्र जाने में सफल रहा लेकिन रास्ते में अपने ही नौकर द्वारा लूट लिया गया और अन्त में कायर की भाँति बहाइयों से आर्थिक सहायता माँगने के लिए विवश हो गया और उसके इस अनुरोध को स्वीकार भी किया गया। बाद में उसने अब्दुल बहा से सहायता माँगी, जिन्होंने अनुयायियों को तत्काल निर्देश दिए कि वे अब्दुल बहा की ओर से उसे कुछ राशि भेंट करें। लेकिन उसके अचानक गायब हो जाने से अनुयायी इस निर्देश का पालन नहीं कर सके। बाकी बचे दो सदस्यों में से एक को किसी दूरस्थ स्थान पर निर्वासित कर दिया गया और दूसरा शीघ्र ही नितान्त गरीबी की स्थिति में मर गया। बहाउल्लाह की संविदा के मुख्य भंजक मिर्ज़ा मुहम्मद अली के हाथों का शक्तिशाली हथियार बनने वाले अक्का के उस बदनाम पुलिस–प्रमुख, याह्या बे ने अपनी उन सभी उम्मीदों पर पानी फिरते देखा जिन पर वह आस लगाए बैठा था। वह अपना पद गवाँ बैठा और अन्त में उसे अब्दुल बहा से आर्थिक सहायता की भीख माँगनी पड़ी। कॉन्सटैन्टिनोपल में, उस वर्ष जब अब्दुल हमीद का पतन हुआ, राज्य के कम से कम

31 गणमान्य व्यक्तियों को एक ही दिन के अन्दर गिरफ्तार करके फाँसी दे दी गई, जिनमें मंत्री एवं अन्य शासकीय अधिकारी और प्रभुधर्म के बड़े–बड़े शत्रु भी शामिल थे। एक अत्याचारी शासन को समर्थन देने में और प्रभुधर्म तथा इसकी संस्थाओं को उखाड़ फेंकने के प्रयासों में निभाई गई भूमिका के लिए इन व्यक्तियों को दिया गया यह एक भयानक दण्ड था।

जिस शासक को उसकी भरपूर उम्मीदों के बीच और उसकी सत्ता की चरम सीमा पर इतने चौंका देने वाले ढंग से दृश्य से हटा दिया गया था, उसके अलावा फारस में ऐसे कई राजकुमार, मंत्री और मौलवी थे जिन्होंने इस सताए हुए समुदाय के दमन में सक्रिय भूमिका निभाई थी। इनमें नाईबुस–सल्तनिह जलालुद्दौलिह, कमरान मिर्ज़ा, अताबिक–ए–आज़म मिर्ज़ा अली–असगर खान और वह "भेड़िये का पुत्र" शेख मुहम्मद–तक़ी–ए–नजफी शामिल थे, जिन्होंने एक–एक करके अपनी प्रतिष्ठा और सत्ता गवाँ दी और जो गुमनामी में डूब गए, जिन्होंने अपने दुष्ट उद्देश्यों को पूरा करने की सभी आशाएँ छोड़ दी थीं। इन मौलवियों में से कुछ उस धर्म की प्रभुता के प्रारम्भिक प्रमाण देखने के लिए जीवित रहे जिससे वे इतना अधिक डरते थे और जिससे उन्हें बहुत घृणा थी।

जब हम यह देखते हैं कि पावन भूमि में, फारस में और अमेरिका के संयुक्त राज्यों में ईसाई पादरी वाट्राल्सकी, विल्सन, रिचर्ड्सन या ईस्टन जैसे कुछ व्याख्याता, ईसाई देशों में बहाउल्लाह के धर्म की तेज़ प्रगति को देखकर, तथा कुछ प्रकरणों में इससे डरकर इसकी प्रगति को रोकने के लिए उठ खड़े हुए और जब हम इनके प्रभाव की हाल ही में होने वाली अवनति को, उनके सामर्थ्य के पतन को, उनकी श्रेणियों में होने वाली गड़बड़ी को और यूरोप में, मध्य पूर्वी देशों में तथा पूर्वी एशिया में एक लम्बे समय से चले आ रहे उनके कुछ लक्ष्यों एवं संस्थाओं के अन्त को देखते हैं, तो क्या हम इस पतन को, उस विरोध का परिणाम नहीं मानेंगे जो विभिन्न ईसाई पादरी वर्ग के सदस्यों ने अब्दुल बहा के धर्मकाल के दौरान उस धर्म के अनुयायियों एवं संस्थाओं के प्रति प्रकट करना शुरू कर दिया था जो ईसा मसीह द्वारा किए गए वायदे को पूरा करने का तथा उस दिव्य साम्राज्य की स्थापना करने का दावा करता है,

जिसके लिए स्वयं ईसा मसीह ने प्रार्थना की थी और जिसकी उन्होंने भविष्यवाणी की थी ?

और अन्त में, वह जिसने, उस दिव्य संविदा के जन्म के क्षण से अपने जीवन के अन्त तक ऐसी घृणा दिखाई थी जो अब्दुल बहा के पूर्वोल्लिखित शत्रुओं द्वारा दिखाई गई घृणा से भी अधिक कठोर थी, जिसने उनसे भी अधिक ऊर्जा के साथ अब्दुल बहा के विरूद्ध षड़यंत्र रचे थे और उनके पिता के धर्म को इतना लज्जित किया था जितना कि इसके बाहरी शत्रुओं ने भी नहीं किया था ऐसे व्यक्ति के साथ–साथ संविदाभंजकों के उस बदनाम समूह को जिन्हें उसने भ्रमित किया था और उकसाया था, जिसे अपने दुष्ट षड़यन्त्रों को असफल होते हुए, अपनी आशाओं को हवा होते हुए, अपने वास्तविक इरादों को बेनकाब होते हुए और अपने तत्कालीन सम्मान एवं यश को नष्ट होते हुए देखना पड़ा जिस प्रकार मिर्ज़ा याह्या और उसके आदमियों को देखना पड़ा था। उसके भाई मिर्ज़ा दियाउल्लाह की अकाल मृत्यु हो गई; जिसके तीन साल बाद उसके शिकार मिर्ज़ा आक़ा जान की भी मृत्यु हो गई और उसके मुख्य साथी मिर्ज़ा बदिउल्लाह ने उसे धोखा दे दिया, उसके दुष्ट कर्मों की निन्दा के लिखित प्रमाण पर हस्ताक्षर करके इन्हें प्रकाशित कर दिया, लेकिन बाद में वह उससे दोबारा जा मिला, परन्तु अपनी ही बेटी के निन्दात्मक व्यवहार के कारण उसे उससे नाता तोड़ना पड़ा। मिर्ज़ा मुहम्मद अली की सौतेली बहन, फुरूगिय्येह की कैंसर से मृत्यु हो गई, जबकि उसके पति सैय्यद अली के पास उसके बेटे पहुँच पाते इससे पहले ही, दिल का दौरा पड़ने से उसकी मृत्यु हो गई। उसके सबसे बड़े बेटे की भी इसी बीमारी से युवावस्था में मृत्यु हुई थी। एक बदनाम संविदाभंजक, मुहम्मद–जवाद–ए–काज़वीनी का बड़ा बुरा अन्त हुआ। जैसा कि अब्दुल बहा ने अपने इच्छापत्र में लिखा है, वह शुआउल्लाह, जिसे संविदा के केन्द्र की हत्या का पूरा भरोसा था और जिसे उसके पिता ने इब्राहिम खैरूल्लाह के साथ हाथ मिलाने के लिए अमेरिका भेजा था, अपने अपमान से निरूत्साहित और खाली हाथ लौट आया। फारस में मिर्ज़ा मुहम्मद अली का सबसे योग्य प्रतिनिधि जमाल–ए–बुरूजिर्दि, एक जानलेवा और घृणित बीमारी का शिकार हो गया; सैय्यद–मिहदि–ए–दहाजी, जिसने अब्दुल बहा के साथ विश्वासघात करके

संविदाभंजकों के साथ हाथ मिला लिया था गुमनामी और गरीबी में मर गया, जिसके बाद उसकी पत्नी और दो बेटे भी मर गए; मिर्ज़ा हुसैन–अली–ए–जाहरूमी, मिर्ज़ा हुसैन–ए–शीराज़ी–ए–खुरतुमी और हाजी मुहम्मद–हुसैन–ए–काशानी, जो फारस, भारत और मिस्र में उस मुख्य संविदाभंजक के प्रतिनिधि थे, अपने लक्ष्य में पूरी तरह असफल रहे; जबकि उस लालची और अहंकारी इब्राहिम–ए–खैरूल्लाह, जिसने कम से कम बीस साल तक अमेरिका में अपने विद्रोह के ध्वज को समर्थन देने का निर्णय लिया था और जिसमें इतना दुस्साहस पैदा हो गया था कि उसने लिखित में अब्दुल बहा, "उनकी शिक्षाओं, उनके द्वारा बहाई धर्म के बयानों को गलत बताया और निन्दा" की थी और अमेरिका के उनके दौरे को "ईश्वर के धर्म पर एक घातक वार" बताया था, की इन निन्दात्मक टिप्पणियों के शीघ्र बाद मृत्यु हो गई। जिस समुदाय के संस्थापकों को वह प्रभुधर्म में लाया था, उसी समुदाय के सभी सदस्यों द्वारा उसे पूरी तरह त्याग दिया गया था और उसकी उपेक्षा की गई थी और उसकी मृत्यु भी उसी देश में हुई जो अब्दुल बहा की प्रत्यक्ष श्रेष्ठता के बढ़ते हुए प्रमाणों का साक्षी था, जिनकी प्रभुता को जड़ से खत्म करने की खैरूल्लाह ने अपने बाद के वर्षों में सौगंध खायी थी।

जहाँ तक उन लोगों का प्रश्न है जिन्होंने बहाउल्लाह की संविदा के इस मुख्य संविदाभंजक के उद्देश्य को सरेआम अपनाया था या जो छुप–छुपकर उसके साथ सहानुभूति जताते थे, जबकि बाहरी तौर पर अब्दुल बहा का समर्थन करते थे, उनमें से कुछ को अन्त में पछतावा हुआ, जिससे उन्हें क्षमा कर दिया गया; अन्य लोग भ्रम में पड़ गए और पूरी तरह अपना विश्वास खो बैठे, कुछ ने प्रभुधर्म को त्याग दिया, जबकि अन्य, उसे अकेला और असमर्थ छोड़कर धीरे–धीरे उससे अलग हो गए। अन्त में मुट्ठी भर रिश्तेदारों के अलावा उसके पास कोई नहीं बचा। अब्दुल बहा के बाद बीस वर्ष तक जीवित रहने वाला यह व्यक्ति, जिसने अब्दुल बहा के मुँह पर यह कहने का दुस्साहस किया था कि उसके पास कोई आश्वासन नहीं था कि वह उनसे अधिक समय तक जीवित रहेगा, इतने लम्बे समय तक जीवित रहा कि उसने अपने उद्देश्यों का पूरा दिवालियापन देखा। इस दौरान वह उस हवेली मे एक अति दुःखी जीवन बिताता रहा, जिसके पास एक समय में उसके समर्थकों की भीड़ लगी रहती

थी। अब्दुल बहा के स्वर्गवास के बाद उसके द्वारा मूर्खतावश उत्पन्न किए गए एक संकट के परिणामस्वरूप नागरिक प्रशासन ने उसे बहाउल्लाह की समाधि के औपचारिक रक्षण की ज़िम्मेदारी देने से इन्कार कर दिया; कुछ वर्षों बाद उसे वही हवेली खाली करने को विवश होना पड़ा जो उसकी खुली उपेक्षा के कारण जीर्णशीर्ण अवस्था में पहुँच गई थी; उसे लकवा मार गया जिसके कारण उसका आधा शरीर अपंग हो गया; मरने से पहले कई माह तक वह दर्द में बिस्तर पर पड़ा रहा; उसे एक स्थानीय मुस्लिम समाधि के बिल्कुल निकट, मुस्लिम रीति–रिवाज़ से दफना दिया गया। उसकी कब्र पर आज तक समाधि का एक पत्थर भी नहीं है। यह परिणाम है उसके द्वारा किए गए खोखले दावों का, उस बदनामी की गहराई का, जिसमें वह डूब चुका था तथा उस दण्ड की कठोरता का जिसका ये एक दयनीय स्मारक है जिसके लिए उसके कर्म इस सीमा तक योग्य थे।

चौथा कालचक्र

बहाई धर्म के
रचनात्मक काल की शुरूआत

1921&1944

प्रशासनिक व्यवस्था का उदय और इसकी स्थापना

अब्दुल बहा के स्वर्गवास के साथ बहाई युग की उस पहली शताब्दी का तीन–चौथाई से भी अधिक समय व्यतीत हो चुका था, जिसका आरम्भ उनके जन्म के साथ हुआ था। बाब द्वारा घोषित किए गए धर्म का प्रकाश 77 वर्ष पूर्व, शीराज़ के क्षितिज पर उदित हुआ था और फारस के आकाश में चमका था, जिसके कारण फारस के लोगों को घेरे रहने वाला एक लम्बा अंधकार मिट गया। असाधारण क्रूरता का वह खूनी स्नान जिसमें इस प्रकाश के महत्व के प्रति लापरवाह और इसकी भव्यता के प्रति अंधी सरकार, धर्माधिकारी वर्ग और जनता ने मिलकर भाग लिया था, इसकी जन्म भूमि में इसकी महिमा की चमक बुझा न सका। प्रभुधर्म के भाग्य के सबसे अंधकारमय समय में जब बहाउल्लाह स्वयं तेहरान में कैद थे, तब इस धर्म को दोबारा सजीव करने के लिए उनका आह्वान किया गया और उन्हें इसके अन्तिम लक्ष्य को पूरा करने के लिए अधिकृत किया गया। बग़दाद में, इस ध्येय के जन्म और इसकी घोषणा के बीच 10 वर्ष के अंतराल के अन्त में उन्होंने बाब के भ्रूणीय धर्म में सुरक्षित रखे गए रहस्य को प्रकट कर दिया और वह फल प्रकट किया जो उस धर्म ने उपजाया था। एड्रियानोपल में मानवजाति के समक्ष बहाउल्लाह के उस संदेश की घोषणा की जा चुकी थी जो बाबी विधान सहित पूर्व के सभी विधानों का वचन था तथा पूरब और पश्चिम के शासकों को इसकी चुनौती दी जा चुकी थी। अक्का के कारागार दुर्ग की दीवारों के पीछे ईश्वर के नवजात प्रकटीकरण

के धारक ने उन नियमों और सिद्धांतों की रचना की थी जो उसकी विश्व व्यवस्था का ताना–बाना बनने वाले थे। इसके अतिरिक्त अपने स्वर्गारोहण से पहले उन्होंने उस संविदा की भी स्थापना कर दी थी जो इसकी नींव रखने और इसके निर्माणकर्ताओं की एकता की रक्षा करने में मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करने वाली थी। संविदा के इस अद्वितीय और शक्तिशाली साधन से लैस होकर बहाउल्लाह के ज्येष्ठ पुत्र तथा उनकी संविदा के केन्द्र अब्दुल बहा ने उत्तर अमेरिकी महाद्वीप में अपने पिता के धर्म के ध्वज को लहराया और पश्चिमी यूरोप में, दूरस्थ पूरब में तथा ऑस्ट्रेलिया में इसकी संस्थाओं के लिए एक अभेद्य आधार की स्थापना की। उन्होंने अपने लेखों, पातियों और सम्बोधनों में इसके विधानों पर प्रकाश डाला, इसके नियमों की व्याख्या की और इसकी भावी प्रशासनिक व्यवस्था की मौलिक संस्थाओं का निर्माण किया। उन्होंने रूस में इसके प्रथम उपासना मंदिर का निर्माण कराया, जबकि इसके अग्रदूत के लिए कार्मल पर्वत की ढलान पर एक सुन्दर समाधि तैयार की और उसमें अपने ही हाथों से उनके पावन अवशेषों को समाधिस्थ किया। यूरोप और उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप के कई शहरों का दौरा करके उन्होंने पश्चिम के लोगों के बीच बहाउल्लाह के संदेश का प्रसार किया और इस ऊँचाई तक प्रभुधर्म का गौरव बढ़ाया जिसका अनुभव इस धर्म ने पहले कभी नहीं किया था। अन्त में, अपने जीवन की शाम को उन्होंने दिव्य योजना की पातियों के प्रकटीकरण के माध्यम से उस समुदाय को अपना जनादेश दिया जिसे उन्होंने स्वयं तैयार किया था, प्रशिक्षित एवं पोषित किया था। आने वाले वर्षों में यह योजना इस समुदाय के सदस्यों को इस योग्य बनायेगी कि वे सभी महाद्वीपों में प्रभुधर्म के प्रकाश को फैला सकें और इसके प्रशासनिक ढाँचे का निर्माण कर सकें।

अब समय आ चुका था जब वह अमर और विश्व को सजीव करने वाली चेतना, स्वयं को उन संस्थाओं में परिवर्तित कर दे जिसे उसकी फैली हुई ऊर्जा को निश्चित माध्यमों से प्रवाहित करने एवं उसके विकास को प्रोत्साहित करने के लिये रचा गया था। यह चेतना शीराज़ में जन्मी थी, इसे तेहरान में दोबारा प्रज्वलित किया गया था, बग़दाद और एड्रियानोपल में इसे हवा देकर ज्वाला बना दिया गया था और अब यह पाँच महाद्वीपों की सीमाओं के किनारों को

प्रकाशित कर रही थी। बहाउल्लाह के विधान का वह शौर्यकाल, वह धर्मदूतीय युग, वह प्रारम्भिक दौर अब समाप्त हो चुका था, जिसने प्रभुधर्म के जन्म और इसके उत्कर्ष को देखा था, जिसमें इसके संस्थापक जीवित थे, जिसमें इसका जीवन उदित हुआ था, जिसमें इसके महानतम शूरवीरों ने संघर्ष किया था एवं शहादत का प्याला पिया था और जिसमें इसकी प्रारम्भिक नींव स्थापित की गई थी। इसे बहाउल्लाह के ध्येय की वह कड़ी समझा जा सकता है जिसने उस युग को जिसमें इस नए संदेश का बीज अंकुरित हुआ था, उन युगों के साथ जोड़ा है जिनके लिए इसका प्रस्फुटन और अन्तिम फलन देखना नियत है। यह एक ऐसा दौर था जिसकी भव्यता की बराबरी इस युग की या भविष्य के युग की कोई भी विजय नहीं कर सकती चाहे वह कितनी ही शानदार क्यों न हो।

अब इस विधान का रचनात्मक काल, इसका लौहयुग आरम्भ हो रहा था, वह युग जिसमें स्वर्णिम युग की प्रत्याशा में बहाउल्लाह के धर्म की स्थानीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ आकार लेने वाली थीं, विकसित होने वालीं थीं और पूरी तरह दृढ़ होने वाली थीं। वह युग जब एक ऐसी विश्वव्यापी व्यवस्था उभरेगी जिसमें मानवजाति के लिए ईश्वर के अव्यक्त प्रकटीकरण का वह अन्तिम फल अन्तर्निहित है जिसकी परिपक्वता उस विश्वव्यापी सभ्यता की स्थापना है तथा धरती पर परम पिता के उस साम्राज्य के औपचारिक उद्घाटन की सूचक होगी जिसका वचन स्वयं ईसा मसीह ने दिया था।

अज़रबैजान के पहाड़ों के बीच अपने कारावास के दौरान स्वयं बाब ने बाबी विधान के मातृग्रंथ फारसी 'बयान' में स्पष्ट रूप से इस विश्व व्यवस्था का उल्लेख किया था, इसके आगमन की घोषणा की थी और इसे बहाउल्लाह के नाम से जोड़ा था, जिनके ध्येय की घोषणा उन्होंने स्वयं की थी। इस ग्रंथ के तीसरे वाहिद के सोलहवें अध्याय में उनका उल्लेखनीय कथन है, *"कल्याण होगा उसका जो अपनी दृष्टि बहाउल्लाह की व्यवस्था पर केन्द्रित करता है और अपने स्वामी को धन्यवाद देता है ! क्योंकि वह निश्चित रूप से प्रकट होगा.... ।"* आगे चलकर जब बहाउल्लाह ने वे नियम और सिद्धान्त प्रकट किए

जिनके द्वारा इस व्यवस्था का संचालन किया जायेगा, तब अपने विधान के ग्रंथ में उन्होंने यह उल्लेख किया कि *"इस महानतम व्यवस्था के कम्पनकारी प्रभाव से विश्व का संतुलन अस्त–व्यस्त चुका है। इस अनूठी और अद्‌भुत व्यवस्था के माध्यम से जिसके जैसा कुछ भी नश्वर आँखों ने पहले कभी नहीं देखा, मानवजाति के व्यवस्थित जीवन में क्रान्ति आ गई है।"* अपनी वसीयत और इच्छापत्र में इस व्यवस्था के महान निर्माता अब्दुल बहा ने इसकी विशेषताओं का वर्णन किया है जबकि उनके बाद अब बहाई विधान के इस रचनात्मक काल में पूरब और पश्चिम के उनके अनुयायियों द्वारा इसकी मौलिक संस्थाओं की स्थापना की जा रही है।

पहली बहाई शताब्दी के अन्तिम 23 वर्षों को प्रभुधर्म के रचनात्मक काल का प्रारम्भिक चरण समझा जा सकता है और संक्रमण का एक ऐसा दौर माना जा सकता है जिसकी पहचान उस प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना से की जानी चाहिए, जिस पर अन्त में उस स्वर्णिम युग में जब बहाई विधान अपनी पूर्णता पर पहुँचेगा तब भविष्य का विश्व बहाई राष्ट्रमण्डल तैयार किया जायेगा। इस प्रशासनिक व्यवस्था को जन्म देने वाला, इसकी विशेषताओं को एक ढाँचा प्रदान करने वाला और इसकी प्रक्रियाओं को गति देने वाला घोषणा–पत्र, सिवाय अब्दुल बहा की वसीयत और इच्छापत्र के अन्य कोई नहीं। यह वसीयत जो भावी पीढ़ियों के लिए अब्दुल बहा की सबसे महान विरासत है, जो उनके मस्तिष्क का सबसे तीव्र उत्सर्ग है और उनके पिता के विधान के तीन चरणों की निरन्तरता सुनिश्चित करने के लिए तैयार किया गया सबसे शक्तिशाली साधन है।

बहाउल्लाह की संविदा, केवल उनकी इच्छा और उद्देश्य के सीधे प्रभाव से स्थापित की गई है। दूसरी ओर, अब्दुल बहा की वसीयत और इच्छापत्र को ईश्वर द्वारा दिए गए धर्म की शक्तियों के जनक (बहाउल्लाह) और इसके एकमात्र व्याख्याता एवं इसके आदर्श उदाहरण (अब्दुल बहा) के बीच रहस्यमय संसर्ग का परिणाम समझा जा सकता है। इस युग में ईश्वर के विधान के जन्मदाता द्वारा उन्मुक्त की गई ऊर्जाओं ने इसके त्रुटिरहित व्याख्याता के रूप

में व्यक्ति के मन मस्तिष्क पर डाले गए प्रभाव के माध्यम से उस साधन को जन्म दिया जिसके विशाल अर्थ को समझने में यह वर्तमान पीढ़ी, आज 23 साल बाद भी असमर्थ है। यदि हम इसका सही मूल्यांकन करें तो जिसने इस साधन को उत्पन्न करने वाली प्रेरक तरंग प्रदान की है, उससे इसे अलग करना उतना ही असम्भव है जितना कि उससे जिसने इस साधन को प्रत्यक्ष रूप से जन्म दिया है। जैसा पहले ही देखा जा चुका है, बहाई प्रकटीकरण के संस्थापक का उद्देश्य, अब्दुल बहा के मन मस्तिष्क में इस प्रकार बैठ गया था और उनकी चेतना इतनी गहराई से उनके अस्तित्व में समा गई थी और दोनों के लक्ष्य एवं उद्देश्य पूर्ण रूप से इतने मिश्रित हो गए थे, कि बहाउल्लाह द्वारा विहित किए गए सिद्धान्तों को अब्दुल बहा के ध्येय से जुड़े सर्वोच्च कार्य से अलग कर देना, प्रभुधर्म की सबसे आधारभूत सच्चाईयों में से एक का परित्याग कर देने के समान होगा।

यह ध्यान रखना चाहिए कि इस ऐतिहासिक दस्तावेज़ द्वारा स्थापित की गई प्रशासनिक व्यवस्था अपने मूल उद्भव और स्वरूप के कारण, विश्व की धार्मिक व्यवस्थाओं के इतिहास में अद्वितीय है। यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि बहाउल्लाह के पहले किसी भी अवतार ने आधिकारिक रूप और लिखित में इस प्रशासनिक व्यवस्था जैसा कुछ भी स्थापित नहीं किया है जो बहाउल्लाह की शिक्षाओं के अधिकृत व्याख्याता ने स्थापित किया है, यहाँ तक कि मुहम्मद ने भी नहीं, जिनकी पुस्तक इस्लाम के नियमों और विधानों को स्पष्ट रूप से प्रकट करती है। यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसे अपने संस्थापक द्वारा रचे गए प्रशासनिक सिद्धान्तों, उनके द्वारा स्थापित की गई संस्थाओं और व्याख्या के अधिकार के कारण जो इसके धर्मसंरक्षक को प्रदान किया गया है, पूर्व के किसी भी धर्म की तुलना में अद्वितीय रूप से, उस धर्म को विभाजन से बचायेगी जिससे यह उत्पन्न हुई है। इस व्यवस्था का संचालन करने वाले सिद्धान्त, किसी भी अन्य व्यवस्था के आधारभूत सिद्धान्तों से बिल्कुल भिन्न है, चाहे वे मानव संस्थाओं के प्रबन्ध के लिए मनुष्य के मस्तिष्क द्वारा तैयार किए गए धर्मतंत्र से सम्बन्धित हों या कोई अन्य हों। बहाउल्लाह के धर्म की प्रशासनिक व्यवस्था के बारे में यह कहा जा सकता है कि यह सैद्धान्तिक या

व्यवहारिक रूप से किसी भी प्रकार की लोकतांत्रिक सरकार, निरंकुशता की किसी भी व्यवस्था, किसी भी अभिजातीय व्यवस्था अथवा मानवजाति द्वारा अतीत में देखे गए विभिन्न धर्मतंत्रों में से किसी के भी समान नहीं है। इसकी संरचना में कुछ ऐसे तत्व सम्मिलित हैं जो धर्मनिरपेक्ष शासन के तीनों मान्य रूपों में उपलब्ध हैं। यह उन अशुद्धियों से मुक्त है जो इनमें से प्रत्येक में अन्तर्निहित रूप से अवस्थित है और निःसन्देह, जिन दिव्य वास्तविकताओं पर यह अनिवार्य रूप से स्थापित की गई है उनकी अखण्डता को किसी भी प्रकार से दूषित किए बगैर यह इनमें से प्रत्येक में स्थित लाभदायक सच्चाईयों को सम्मिश्रित करती है। वह वंश–परम्परा सम्बन्धी अधिकार जिसका उपयोग करने के लिए इस प्रशासनिक व्यवस्था के धर्मसंरक्षक का आह्वान किया गया है और पावन लेखों की व्याख्या करने का अधिकार जो केवल उन्हे ही प्रदान किया गया है; परम पावन पुस्तक में स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं किए गए मामलों के लिए कानून रचने का अधिकार रखने वाला विश्व न्याय मंदिर; वह विधान जो इसके सदस्यों को उनके प्रति उत्तरदायी होने से और उनके मतों, धारणाओं या भावनाओं के अनुसार चलने के दायित्व से मुक्त करता है जिनका वे प्रतिनिधित्व करते हैं; वे विशेष प्रावधान, जिनके अन्तर्गत विश्वव्यापी बहाई समुदाय के एकमात्र विधिकारी साधन के लिए अनुयायियों के समूह द्वारा मुक्त और प्रजातांत्रिक चुनाव करना आवश्यक है। ये सभी उन विशेषताओं में से हैं जो मिलकर बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के साथ जोड़ी जाने वाली व्यवस्था को मानव प्रबन्धन की किसी भी वर्तमान व्यवस्था से अलग करती हैं।

इस प्रशासनिक व्यवस्था के प्रारम्भ में और इसके अस्तित्व के 23 साल के अंतर्गत, पूरब और पश्चिम में, अन्दर और बाहर के जिन शत्रुओं ने इसके स्वरूप के बारे में मिथ्या कथन कहे, या इसका मज़ाक उड़ाया और इसे भला–बुरा कहा या इसकी प्रगति को रोकने का प्रयास किया अथवा इसके समर्थकों के समूह में दरार पैदा करने के उपाय निकाले, वे अपने दुष्ट उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल नहीं हुए। एक महत्वाकांक्षी आर्मीनियाई, जिसने मिस्र में इस व्यवस्था की स्थापना के प्रारम्भिक वर्षों में, इसे हटाकर इसका स्थान उस "साइन्टिफिक सोसाईटी" को देने का प्रयास किया था जिसे उसने अपनी

अदूरदर्शिता से उत्पन्न किया था और जिसका वह प्रायोजक था, अपने उद्देश्य में बिल्कुल विफल हो गया। युनाईटेड स्टेट्स और इंग्लैंड दोनों में, इस व्यवस्था को उत्पन्न करने वाले घोषणापत्र की अप्रमाणिकता को प्रदर्शित करने के अथक प्रयास करने वाली और यहाँ तक कि फिलिस्तीन के नागरिक प्रशासन को भी इस मामले में कानूनी कार्रवाई करने के लिए भड़काने वाली, भ्रम में पड़ी उस महिला द्वारा उकसाए गए आन्दोलन का कोई असर नहीं हुआ, जो अपने अनुरोध के अस्वीकार किए जाने के कारण खीज गई थी। जर्मनी के सबसे पहले पायनियर और वहाँ पर प्रभुधर्म की स्थापना करने वालों में से उस व्यक्ति द्वारा किए गए धर्म त्याग का भी कोई असर नहीं हुआ जिसे इसी औरत ने बड़े दुःखद रूप से भ्रमित किया था। उसी दौरान, फारस में इस व्यवस्था को न केवल बाधित करने के, बल्कि इसे जन्म देने वाले धर्म को हानि पहुँचाने के अपने निर्लज्ज प्रयासों में उस बेशर्म पतित द्वारा लिखी गई और प्रसारित की गई पुस्तकें भी इसी प्रकार असफल सिद्ध हुईं। अब्दुल बहा का उद्देश्य प्रकट होते ही, मिर्ज़ा बदीउल्लाह के नेतृत्व में बहाई जगत की पावनतम समाधि को इसके नियुक्त संरक्षक की अभिरक्षा से हथियाने के लिए उठ खड़े होने वाले उन बचे–खुचे संविदाभंजकों द्वारा रचे गए षड़यंत्र भी इसी तरह असफल हो गए तथा उन्हें और भी बदनाम कर गए। इसके पश्चात इसी व्यवस्था के आधार को उखाड़ फेंकने और इसकी विशेषताओं को बिगाड़ने के उद्देश्य से, ईसाई और गैर–ईसाई देशों में, ईसाई रूढ़िवादिता के कुछ समर्थकों द्वारा किए गए हमले भी इसके समर्थकों की वफादारी को समाप्त करने या उन्हें उनके उच्च उद्देश्य से विचलित करने में असमर्थ रहे। यहाँ तक कि अब्दुल बहा का वह पूर्व सचिव जिसने न तो बहाउल्लाह के सचिव को मिलने वाले दण्ड से सबक लिया न ही पूरब और पश्चिम में अपने मास्टर के अन्य कई सचिवों और अनुवादकों पर टूटने वाले दुर्भाग्य से सीख ली और जो अब भी उस अमर दस्तावेज़ के उद्देश्य को बदलने और उसके अत्यावश्यक प्रावधानों को निष्प्रभावी करने पर तुला हुआ है, जिससे यह व्यवस्था अपना अधिकार प्राप्त करती है, उस सचिव के बदनाम और घातक षड़यंत्र, इसकी संस्थाओं को उस मार्ग पर आगे बढ़ने से क्षणभर के लिए भी रोक नहीं पाये हैं जो इसके

संस्थापक ने इसके लिए निर्धारित किया है, न ही ऐसा कुछ भी उत्पन्न कर पाये हैं जो दूर से भी इसके आश्वासित, इसके पूरी तरह जागरूक और दिग्गज समर्थकों के बीच दरार जैसा दिखाई दे।

उस व्यवस्था की स्थापना करने वाला दस्तावेज, एक भावी विश्व सभ्यता का वह चार्टर, अपने कुछ लक्षणों में *"किताब–ए–अकदस"* जैसी महत्वपूर्ण पुस्तक का अनुपूरक माना जा सकता है। अब्दुल बहा ने उसे हस्ताक्षरित कर अपनी मुहर लगायी है। यह पूर्णरूप से उनके अपने हाथ से लिखा गया है। अक्का के कारा–दुर्ग में उनके कारावास के घोर अंधकारमय दिनों में लिखा गया उसका प्रथम खण्ड स्पष्ट और असंदिग्ध रूप से, बहाउल्लाह के धर्म के अनुयायियों के मूलभूत विश्वासों का उद्घोष करता है। यह अचूक भाषा में बाब के ध्येय के दोहरे चरित्र को उजागर करता है। यह बहाई प्रकटीकरण के प्रवर्तक के पूर्ण स्थान का उद्घाटन करता है और दृढ़ शब्दों में कहता है कि "अन्य सभी उनके सेवक हैं और उनकी आज्ञा का पालन करते हैं।" यह *"किताब–ए–अकदस"* के महत्व पर बल देता है। अब्दुल बहा का यह इच्छापत्र एक पैतृक या वंशानुगत अधिकार के रूप में धर्मसंरक्षक पद की संस्था की स्थापना करता है और उसके आवश्यक कार्यों को रेखांकित करता है। यह अन्तर्राष्ट्रीय न्याय मंदिर के चुनाव के उपाय बतलाता है और उसके क्षेत्र को परिभाषित करते हुए धर्मसंरक्षक पद की संस्था के साथ उसके सम्बन्ध का निर्धारण करता है। यह ईश्वरीय धर्म की भुजाओं के अनिवार्य कर्त्तव्य निर्धारित करता है और उनके दायित्वों पर बल देता है। यह बहाउल्लाह की अक्षय संविदा का गुणगान करता है। इसके अतिरिक्त यह दस्तावेज बहाउल्लाह की संविदा के समर्थकों के साहस की भूरि–भूरि प्रशंसा करता है। यह अपने नियुक्त केन्द्र द्वारा सहन किए गए कष्टों का विस्तारपूर्वक वर्णन करता है। यह मिर्ज़ा याह्या के घृणित आचरण और बाब की चेतावनियों को ध्यान में रखने की उसकी विफलता की याद दिलाता है। यह अभियोगों का आरोपण करते हुए मिर्ज़ा मुहम्मद अली के कपट और विद्रोह और उसके पुत्र शुआउल्लाह तथा भाई बदीउल्लाह की सह–अपराधिता का खुलासा करता है। यह उनके बहिष्करण की पुनर्पुष्टि और उनकी सारी आशाओं के कुन्ठित होने की

भविष्यवाणी करता है। यह दस्तावेज अफ़नान (बाब के सम्बन्धी), धर्मभुजाओं तथा बहाउल्लाह के सम्पूर्ण अनुयायी समुदाय का आह्वान करता है कि वे उनके धर्म का प्रचार करने के लिए मिलकर उठ खड़े हों, दूर–दूर तक फैल जायें, अथक परिश्रम करें और ईसा मसीह से प्रेरित लोगों के शौर्यमय आदर्श का अनुसरण करें। यह उनको संविदाभंजकों के संसर्ग के खतरों से सावधान करता है और कुटिल एवं कपटी जनों के आक्रमणों से प्रभुधर्म की रक्षा करने की आज्ञा देता है। यह उनको अपने आचरण द्वारा अपने धर्म की सार्वभौमिकता दर्शाने तथा उसके उच्च सिद्धान्तों को न्याय संगत सिद्ध करने का परामर्श देता है। इसी दस्तावेज में हुकूकुल्लाह (ईश्वर का अधिकार) जो *"किताब–ए–अकदस"* में पहले से ही संस्थापित है, के महत्व एवं प्रयोजन को प्रकट किया गया है। वह न्यायप्रिय शासकों के प्रति सन्निष्ठा और अधीनता का आदेश देता है। वह अब्दुल बहा की शहादत की लालसा व्यक्त करता है और उनके शत्रुओं के पश्चाताप तथा क्षमा के लिए उनकी प्रार्थनाओं को स्वर देता है।

इतने निर्णायक दस्तावेज़ के लेखक (अब्दुल बहा) के आह्वान के उत्तर में अपने कर्त्तव्य के प्रति सचेत होकर; अब्दुल बहा के अनापेक्षित और आकस्मिक स्वर्गवास के आघात से सक्रिय होकर; उस योजना से मार्गदर्शित होकर, जो इस प्रशासनिक व्यवस्था के निर्माता ने उनके हाथों में सौंपी थी; इसकी बढ़ती हुई शक्ति से ईर्ष्या करने वाले और इसके अनूठे महत्व के प्रति अन्धे विश्वासघातियों और शत्रुओं द्वारा इस पर किए गए आक्रमण से विचलित हुए बगैर, पूरब और पश्चिम में दूर–दूर तक फैले हुए बहाई समुदाय के सदस्य, स्पष्ट दृष्टि और दृढ़ संकल्प के साथ उस विश्वव्यापी प्रशासनिक व्यवस्था की नींव स्थापित करके, प्रभुधर्म के उस रचनात्मक काल की शुरूआत करने के लिए उठ खड़े हुए, जो एक ऐसी विश्व व्यवस्था में परिवर्तित होगा जिसे आने वाली पीढ़ियाँ, पूर्व के सभी विधानों की प्रतिज्ञा एवं उनकी महिमा की पराकाष्ठा मानेंगी। एक स्थायी रूप से विस्तार पा रहे समुदाय की एकता बनाए रखने के लिए और इसके क्रियाकलापों के दक्ष संचालन हेतु प्रदान किए गए प्रशासनिक यंत्र के निर्माण और सुदृढ़ीकरण से सन्तुष्ट न होकर, बहाउल्लाह के अनुयायियों ने अब्दुल बहा के स्वर्गवास के बाद के बीस वर्षों में यह दृढ़संकल्प

लिया कि वे अपने कर्मों से अपने धर्म के स्वतंत्र स्वरूप का प्रमाण देंगे और इसे प्रदर्शित करेंगे तथा इसके विस्तार को विकसित एवं इसके स्वीकृत समर्थकों की संख्या में वृद्धि करेंगे।

इस तिगुने विश्वव्यापी प्रयास में यह ध्यान रखना चाहिए कि अब्दुल बहा के स्वर्गवास से लेकर प्रथम बहाई शताब्दी के अन्त तक, अमेरिकी बहाई समुदाय द्वारा अदा की गई भूमिका ने विश्वभर में प्रभुधर्म के विकास को एक प्रबल प्रोत्साहन दिया है, स्वयं अब्दुल बहा ने इसके सदस्यों पर किए गए विश्वास को सिद्ध किया है और उनके द्वारा की गई इनकी प्रशंसा एवं इनके भविष्य के लिए उनकी अपेक्षाओं को उचित ठहराया है। वास्तव में बहाई प्रशासनिक संस्थाओं की शुरूआत और इनके दृढ़ीकरण, दोनों में इसके सदस्यों का प्रभाव इतना प्रबल रहा है, कि उनके देश को उस प्रशासनिक व्यवस्था का पालना मानना उचित होगा जिसकी कल्पना स्वयं बहाउल्लाह ने की थी और जिसे उनकी संविदा के केन्द्र द्वारा इच्छापत्र के रूप में अस्तित्व में लाया गया था।

इस सम्बन्ध में यह ध्यान रखना चाहिए कि अब्दुल बहा और बहाउल्लाह द्वारा वे प्रारम्भिक कदम पहले ही उठा लिए गए थे जिनका उद्देश्य उस प्रशासनिक व्यवस्था की क्षमताओं और इसकी कार्यप्रणाली को प्रकट करना था, जिसे अब अब्दुल बहा के स्वर्गवास के बाद औपचारिक रूप से स्थापित किया जाना था। अब्दुल बहा द्वारा फारस में *"धर्मभुजाओं"* के रूप में कुछ उत्कृष्ट अनुयायियों की नियुक्ति तथा पूरब और पश्चिम के मुख्य बहाई केन्द्रों में उनके द्वारा स्थानीय सभाओं एवं परामर्श मण्डलों का शुभारम्भ; संयुक्त राज्य अमेरिका में बहाई टेम्पल यूनिटी का गठन; बहाई गतिविधियों को प्रोत्साहन देने के लिए स्थानीय कोष की स्थापना; प्रभुधर्म और इसकी भावी संस्थाओं को समर्पित सम्पत्ति को खरीदना; बहाई साहित्य के वितरण के लिए प्रकाशन सोसाइटियों की स्थापना; बहाई जगत के प्रथम मश्रिकुल–असकार का निर्माण; कार्मल पर्वत पर बाब की समाधि का निर्माण; भ्रमणकारी शिक्षकों और तीर्थयात्रियों के लिए आवास की स्थापना। इन सभी कार्यों को उन संस्थाओं का पूर्व–सूचक समझा

जा सकता है जिन्हें शौर्यकाल के अन्त के तत्काल बाद, सम्पूर्ण बहाई विश्व में स्थाई रूप से और व्यवस्थित ढंग से स्थापित किया जाना था।

जैसे ही बहाउल्लाह के अनुयायियों के समक्ष प्रभुधर्म की प्रशासनिक व्यवस्था की विशेषताओं का ढाँचा प्रस्तुत करने वाले इस दिव्य घोषणापत्र के प्रावधान प्रकट किए गए, वैसे ही उन्होंने उस नींव पर जो इसके शूरवीरों, संतों और शहीदों ने रखी थी, इसकी प्रशासनिक संस्थाओं के ढाँचे के पहले चरण का निर्माण करना शुरू कर दिया। वे इस बात के प्रति सजग थे कि सबसे पहले एक ऐसी चौड़ी और ठोस नींव डालने की आवश्यकता है जिस पर उस विशाल ढाँचे के स्तम्भ खड़े किए जा सकें; वे इस बात से भी पूरी तरह अवगत थे कि जब ये स्तम्भ मज़बूती के साथ स्थापित हो चुके होंगे तब अन्त में, पूरी इमारत को ताज पहनाने वाला वह गुम्बद, वह अन्तिम हिस्सा निर्मित किया जायेगा। संविदाभंजकों द्वारा पावन भूमि में उत्पन्न किए गए संकट ने; मिस्र में शरारत करने वालों द्वारा उकसायी गई हलचल ने; बग़दाद के शिया समुदाय द्वारा बहाउल्लाह के पावन निवास को कब्ज़े में कर लेने से उत्पन्न होने वाली अशांति ने; रूस में प्रभुधर्म के सामने आने वाले खतरों ने, कुछ ऐसे लोगों की उस घृणा और उपहास ने, जो इनके उद्देश्य को बिल्कुल ग़लत समझ बैठे थे, इस अमेरिकी बहाई समुदाय को, इस दिव्यरूप से रची गई व्यवस्था के प्रथम निर्माणकर्ताओं को उनके उद्देश्य से विचलित नहीं कर पाई। पूरी तरह एक होकर, तथा इसके बावजूद कि उनके दृष्टिकोण, प्रथाओं और भाषाओं में बड़ी भिन्नताएँ थीं, उन्होंने अपनी उन परिषदों की स्थापना और सुगठन के दोगुने कार्य का बीड़ा उठाया जो वहाँ के अनुयायियों द्वारा चुनी गईं थीं और जिनका उद्देश्य था दूरस्थ क्षेत्रों में धर्म के अनुयायियों की गतिविधियों को निर्देशित और समन्वित करना एवं इन्हें विकसित करना। फारस, संयुक्त राज्य अमेरिका, डोमिनियन ऑफ कनाडा, ब्रिटिश आईल्स, फ्राँस, जर्मनी, ऑस्ट्रिया, भारत, बर्मा, मिस्र, इराक, रूसी तुर्किस्तान, कौकेशस, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, साउथ अफ्रीका, तुर्की, सीरिया, फिलिस्तीन, बल्गेरिया, मेक्सिको, फिलिपीन द्वीपों, जमाईका, कोस्टारिका, ग्वाटेमाला, होन्ड्यूरास, सेन सेल्वाडोर, अर्जेन्टीना, उरूग्वे, चिली, ब्राज़ील, इक्वाडोर, कोलम्बिया, पाराग्वे, पेरू, अलास्का, क्यूबा, हैती, जापान,

हवाईयन द्वीपों, ट्यूनिशिया, प्यूर्टो रिको, बलुचिस्तान, रूस, ट्रान्सजोर्डन, लेबनान और ऐबिसीनिया में इन परिषदों की स्थापना की गई, जो कि एक लम्बे समय तक सताये गए धर्म की निर्मित हो रही व्यवस्था का आधार थीं। इन्हें *"आध्यात्मिक सभाओं"* का नाम दिया गया, यह एक ऐसी उपाधि है जो आगे चलकर, *"न्याय मंदिर"* की उस स्थाई और अधिक वर्णनात्मक उपाधि में बदल दी जायेगी, जिसे बहाई प्रकटीकरण के संस्थापक ने इन्हें प्रदान किया है; बगैर किसी अपवाद के, ये उस प्रत्येक शहर, नगर या गाँव में स्थापित की जायेंगी जहाँ नौ, या नौ से अधिक वयस्क बहाई रहते हों; इनका चुनाव, प्रतिवर्ष एवं प्रत्यक्ष रूप से सभी वयस्क स्त्री और पुरूष बहाइयों द्वारा महानतम बहाई उत्सव (पवर्तराज रिज़वान) के प्रथम दिन को किया जाता है; इन्हें ऐसे अधिकार से विभूषित किया गया है जिसके द्वारा वे अपने कार्यों एवं निर्णयों के लिए उनके प्रति जवाबदेह नहीं हैं जिन्होंने इन्हें चुना है; सभी परिस्थितियों में ये उस *"सर्वमहान न्याय"* की माँग का सत्यनिष्ठा से पालन करने के लिए वचनबद्ध हैं क्योंकि केवल यही उस *"सर्वमहान शान्ति"* का राज ला सकता है जिसकी घोषणा बहाउल्लाह ने की है और जिसे अन्त में वे ही स्थापित करेंगे; अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाले समुदायों के सर्वोत्तम हितों को सदैव बढ़ावा देने की, उन्हें अपनी योजनाओं और गतिविधियों से परिचित कराने की और वे जो भी सुझाव देना चाहें, उनके लिए उन्हें आमंत्रित करने की ज़िम्मेदारी इन सभाओं को दी गई है; सभी स्वतंत्र एवं मानवीय आन्दोलनों से मेलजोल रखने के माध्यम से, अपने धर्म की सार्वभौमिकता और व्यापकता प्रदर्शित करने के अपने उतने ही महत्वपूर्ण कार्य के प्रति भी ये सभाएँ सचेत रहती हैं; ये सभी साम्प्रदायिक संगठनों से दूर रहती हैं, चाहे वे धार्मिक हों या धर्मनिर्पेक्ष; इन्हें ऐसी समितियों की सहायता प्राप्त होती है जो इन्हीं के द्वारा नियुक्त की जाती हैं और इन्हीं के प्रति प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी होती हैं। इनमें से प्रत्येक समिति को, अध्ययन और कार्यवाही के लिये, बहाई गतिविधियों की कोई भी एक विशेष शाखा सौंपी जाती है; इन सभाओं को एक ऐसे स्थानीय कोष का समर्थन प्राप्त होता हैं जिसमें सभी अनुयायी स्वेच्छा से दान देते हैं; बहाउल्लाह के धर्म, जिसके अनुयायियों की वर्तमान संख्या कई हज़ार है और जिसकी सदस्यता

में विविध जातियों, सम्प्रदायों और वर्गों के वे लोग शामिल हैं, जिन्हें मिलाकर विश्वव्यापी बहाई समुदाय बनता है, के प्रतिनिधियों और रक्षकों ने, पिछले बीस वर्षों में अपनी उपलब्धियों के कारण बहुत बड़े पैमाने पर बहाई समाज की प्रबल शक्ति और इसके प्रशासनिक ढाँचे का अंतिम आधार माने जाने का अपना अधिकार प्रदर्शित कर दिया है।

किताब–ए–अक़दस में बहाउल्लाह कहते हैं कि, *"उस स्वामी ने आदेश दिया है कि प्रत्येक शहर में एक न्याय मंदिर स्थापित किया जाये, जिसमें बहा की संख्या (9) के बराबर सलाहकार एकत्रित होंगे और यदि यह संख्या बढ़ जाती है तो इसमें कोई हर्ज़ नहीं है। उन्हें चाहिए कि वे मनुष्यों के बीच उस सर्वदयालु के प्रति विश्वसनीय बनें तथा अपने आपको, धरती पर निवास करने वाले सभी के लिए ईश्वर द्वारा नियुक्त संरक्षक समझें। उनके लिए आवश्यक है कि वे मिलकर परामर्श करें और ईश्वर की खातिर, उसके सेवकों के हितों का उसी प्रकार उचित ध्यान रखें जिस प्रकार वे अपने स्वयं के हितों का रखते हैं और उसका चुनाव करें जो उचित और शोभनीय हो।"* एक अमेरिकी अनुयायी को सम्बोधित की गई पाती में अब्दुल बहा साक्षी देते हैं कि, *"इन आध्यात्मिक सभाओं को ईश्वर की चेतना द्वारा सहायता प्रदान की जाती है। इनके रक्षक अब्दुल बहा हैं। इन पर वे अपने पंख फैलाते हैं। कौन सा अनुग्रह इससे बढ़कर है ?"* उसी पाती में वे घोषित करते हैं कि, *"ये आध्यात्मिक सभाएँ, वे चमकते हुए दीपक और स्वर्गिक उद्यान हैं, जिनसे सभी क्षेत्रों पर पावनता की सुरभि फैलती है तथा चारों ओर सभी सृजित वस्तुओं पर ज्ञान का प्रकाश फैलता है। इनसे प्रत्येक दिशा में जीवन की चेतना प्रवाहित होती है। सत्य ही, सदैव और सभी परिस्थितियों में, ये मनुष्य की प्रगति के शक्तिशाली स्रोत हैं।"* किसी भी सन्देह से परे इनका ईश्वर प्रदत्त अधिकार स्थापित करते हुए उन्होंने लिखा है : कि *"सभी के लिए अनिवार्य है कि वे आध्यात्मिक सभा के साथ परामर्श किए बगैर कोई भी कदम न उठाएँ तथा सभी को इसके आदेश का अन्तर्रात्मा से पालन करना चाहिए और इसके समक्ष झुक जाना चाहिए, ताकि सब कुछ व्यवस्थित हो सके और कर्म में लाया जा सके।"* उन्होंने आगे लिखा है, *"यदि परामर्श के बाद कोई निर्णय सर्वसम्मति से लिया जाता है, तो बहुत*

अच्छा है; लेकिन ईश्वर न करे, यदि मतभेद उत्पन्न हो जायें, तो बहुमत मान्य किया जाना चाहिए।"

स्थानीय सभाओं का ढाँचा स्थापित कर लेने के बाद, पूरब और पश्चिम में अब्दुल बहा के अनुयायियों ने अपने उच्च अभियान के अगले एवं और भी अधिक कठिन चरण में प्रवेश किया। ये स्थानीय सभाएँ उस इमारत का आधार हैं जिसके निर्माण के लिए बहाउल्लाह के धर्म की प्रशासनिक व्यवस्था के निर्माता ने अमेरिका के बहाईयों को निर्देशित किया था। ऐसे देशों में, जहाँ स्थानीय बहाई समुदायों की संख्या में और इनके प्रभाव में पर्याप्त वृद्धि हो चुकी थी, राष्ट्रीय सभाएँ स्थापित करने के लिए कदम उठाये गए, जो ऐसी धुरियाँ हैं जिनके इर्द–गिर्द सभी राष्ट्रीय उपक्रम घूमते हैं। अब्दुल बहा ने अपनी वसीयत और इच्छापत्र में इन राष्ट्रीय सभाओं को "माध्यमिक न्याय मंदिर" कहा है। ये विश्व न्याय मंदिर का गठन करने वाली चुनावी संस्थाएँ हैं और इन्हें अपने क्षेत्र की व्यक्तिगत और स्थानीय सभाओं की गतिविधियों को निर्देशित करने, जोड़ने, समन्वित करने और प्रोत्साहित करने का अधिकार प्राप्त है। संगठित स्थानीय समुदायों के विस्तृत आधार पर खड़ी हुई ये संस्थाएँ जो स्वयं भी उस संस्था का स्तम्भ हैं जिसे बहाई प्रशासनिक व्यवस्था का शीर्ष समझा जाना चाहिए। अनुपातिक प्रतिनिधित्व के सिद्धान्त के आधार पर, स्थानीय बहाई समुदायों के उन प्रतिनिधियों द्वारा चुनी जाती हैं जो रिज़वान पर्व की अवधि के दौरान अधिवेशन में एकत्रित होते हैं; इन सभाओं को अपने–अपने क्षेत्र में बहाई गतिविधियों का कुशल विकास सुनिश्चित करने का आवश्यक अधिकार प्राप्त है; अपनी नीतियों और निर्णयों के लिए ये अपने मतदाताओं के प्रति हर प्रकार की सीधी ज़िम्मेदारी से मुक्त हैं; इनका पावन कर्त्तव्य है कि ये उन प्रतिनिधियों के साथ परामर्श करें, उनके सुझाव आमंत्रित करें और उनका विश्वास एवं सहयोग प्राप्त करें, साथ ही उन्हें अपनी योजनाओं, समस्याओं और कार्यों से अवगत करायें; ये एक राष्ट्रीय कोष से समर्थित होती हैं जिसमें अंशदान देने के लिए सभी अनुयायियों से अपील की जाती है। इन सभाओं की स्थापना, संयुक्त राज्य अमेरिका में सन् 1925 में हुई (इस देश की राष्ट्रीय सभा की स्थापना से बहाई टेम्पल यूनिटी का अस्तित्व समाप्त हो गया जिसकी स्थापना अब्दुल बहा के धर्मकाल के दौरान की गई थी),

ब्रिटिश आईल्स में (1923), जर्मनी (1923), मिस्र (1924), इराक (1931), भारत (1923), फारस (1934) और ऑस्ट्रेलिया में (1934) में हुई; इन सभाओं ने जिनका चुनाव उन प्रतिनिधियों द्वारा प्रति वर्ष किया जाता है जिनकी संख्या राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुसार, 9, 19, 95, अथवा 171 (9 बार 19) निर्धारित की जा चुकी है इन राष्ट्रीय सभाओं ने प्रभुधर्म के रचनात्मक काल के एक नए दौर का संकेत दिया है और इस लगातार विकसित हो रहे समुदाय के क्रमिक विकास, इसके एकीकरण, और इसके सुगठन के अगले चरण को चिन्हित किया है। अपनी गतिविधियों की परिधि के धीरे–धीरे बढ़ने पर, अपनी समितियों की सहायता से, जो इनके प्रति उत्तरदायी होती हैं, जिन्हें ये बिना किसी भेदभाव के, अपने क्षेत्र के अनुयायियों के सम्पूर्ण समूह के बीच से चुनती हैं और जिनमें से प्रत्येक को बहाई सेवा का एक खास क्षेत्र प्रदान करती हैं और अनुशासन की उस भावना के माध्यम से जो इन्होंने अपने अन्दर समाहित की है तथा उन सिद्धांतों का अटल रूप से अनुसरण करके, जिन्होंने इन्हें जाति, राष्ट्र वर्ग और वर्ण सम्बन्धी सभी पूर्वाग्रहों से ऊपर उठने में समर्थ बनाया है। इन सभाओं ने उल्लेखनीय रूप से हाल ही में सुगठित होने वाले धर्म की बढ़ती हुई गतिविधियों का प्रबन्ध करने में स्वयं को सक्षम सिद्ध किया है।

राष्ट्रीय समितियाँ भी कुछ कम ऊर्जावान एवं अपने–अपने कार्यों को पूरा करने में कम समर्पित नहीं हैं। प्रभुधर्म के महत्वपूर्ण हितों की रक्षा करने, इसके सिद्धान्तों को प्रदर्शित करने, इसके साहित्य का प्रसार करने, इसके कोष को मजबूत करने, इसकी शक्ति का निर्माण करने, इसके घटक अंगों की एकजुटता को बढ़ावा देने, इसके ऐतिहासिक स्थलों को खरीदने, इसके पावन स्मारकों, बहुमूल्य वस्तुओं और निशानियों का संरक्षण करने में; जिस समाज का ये एक हिस्सा है उसकी विभिन्न संस्थाओं के साथ सम्पर्क करने, युवाओं की शिक्षा, बच्चों के प्रशिक्षण तथा पूरब में अपनी महिला अनुयायियों के स्तर को सुधारने में, बहाई समुदाय के निर्वाचित राष्ट्रीय प्रतिनिधियों के तत्वावधान में कार्य करने वाली इन विविध संस्थाओं के सदस्यों ने बड़े पैमाने पर इसके महत्वपूर्ण और कई प्रकार के हितों को बढ़ावा देने की अपनी क्षमता प्रदर्शित की है। अधिकांशतया पश्चिम में स्थापित की जाने वाली और संयुक्त राज्य एवं

कनाडा में बड़ी कुशलता के साथ कार्य कर रही इन राष्ट्रीय समितियों की क्षमताओं को प्रकट करने के लिए, इनकी बढ़ती हुई संख्या ही पर्याप्त है। इन सहायक संस्थाओं को उस विकासशील प्रशासनिक व्यवस्था ने गतिमान किया है, जो अभी अपने प्राथमिक चरण में है। अब ये अपनी गतिविधियों को ऐसे जोश एवं उद्देश्य की ऐसी एकता के साथ निष्पादित कर रहीं हैं जो एक मृतप्राय सभ्यता की अशक्त संस्थाओं के स्वभाव के बिल्कुल विपरीत है। पश्चिमी देशों में कार्यरत कुछ कमेटियाँ इस प्रकार हैं: टीचिंग कमेटी, रीजनल टीचिंग कमेटी; इन्टर–अमेरिका कमेटी; पब्लिशिंग कमेटी; रेस यूनिटी कमेटी; यूथ कमेटी; रिव्युइंग कमेटी; टेम्पल मेन्टीनेन्स कमेटी; टेम्पल प्रोग्राम कमेटी; टेम्पल गाईड्स कमेटी; टेम्पल लाइब्रेरियन एन्ड सेल्स कमेटी; ब्यॉज़ एन्ड गर्ल्स सर्विस कमेटीज़; चाईल्ड एज्यूकेशन कमेटी; विमेन्स प्रोग्रेस, टीचिंग एन्ड प्रोग्राम कमेटीज़; लीगल कमेटी; आर्काईव्ज़ एन्ड हिस्ट्री कमेटी; सेन्सस कमेटी; बहाई एक्हीबिट्स कमेटी; बहाई न्यूज़ कमेटी; बहाई न्यूज़ सर्विस कमेटी; ब्रेल ट्रान्सक्रिप्शन्स कमेटी; कॉन्टेक्ट्स कमेटी; सर्विस कमेटी; एडिटोरियल कमेटी; इन्डेक्स कमेटी; लाईब्रेरी कमेटी; रेडियो कमेटी; एकाउन्टेन्ट कमेटी; एन्युअल सोविनियर कमेटी; बहाई वर्ल्ड एडिटोरियल कमेटी; स्टडी आउटलाईन कमेटी; इन्टरनेशनल ऑग्ज़िलरी लेन्गवेज कमेटी; इन्स्टीट्यूट ऑफ बहाई एज्यूकेशन कमेटी; वर्ल्ड ऑईर मेगज़ीन कमेटी; बहाई पब्लिक रिलेशन्स कमेटी; बहाई स्कूल्स कमेटी; समर स्कूल्स कमेटी; इन्टरनेशनल स्कूल कमेटी; पैम्फलेट लिटरेचर कमेटी; बहाई सेमेटरी कमेटी; हज़ीरतुल–कुद्स कमेटी; मश्रिकुल–असकार कमेटी; एसेम्बली डेवेलपमेंट कमेटी; नेशलन हिस्ट्री कमेटी; मिसलेनियस मटेरियल्स कमेटी; फ्री लिटरेचर कमेटी; ट्रान्सलेशन कमेटी; केटेलॉगिंग टेब्लेट्स कमेटी; एडिटिंग टेब्लेट्स कमेटी, प्रॉपर्टीज़ कमेटी; एडजेस्टमेंट्स कमेटी; पब्लिसिटी कमेटी; ईस्ट एन्ड वेस्ट कमेटी; वेल्फेयर कमेटी; ट्रान्सक्रिप्शन ऑफ टेब्लेट्स कमेटी; ट्रेवलिंग टीचर्स कमेटी; बहाई एज्यूकेशन कमेटी; होली साईट्स कमेटी; चिल्ड्रेन्स सेविंग्स बैंक कमेटी।

स्थानीय और राष्ट्रीय सभाओं की स्थापना और इसके बाद, पूरब और पश्चिम के बहाई समुदायों में से निर्वाचित सदस्यों के आवश्यक सहायकों के

रूप में कार्य करने के लिए गठित की गईं ये स्थानीय और राष्ट्रीय समितियाँ, अपने आप में कितनी ही उत्कृष्ट क्यों न रही हों फिर भी ये उन नई राष्ट्रीय सभाओं के कार्यों की श्रृंखला का एक परिचय मात्र देती हैं जिन्होंने बहाई विश्व समुदाय के एकीकरण में और इसकी प्रशासनिक व्यवस्था को मजबूत करने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। इस दिशा में उठाया गया प्रारम्भिक कदम था बहाई राष्ट्रीय संविधान का लिखा जाना और अपनाया जाना। यह संविधान सबसे पहले 1927 में अमेरिकी बहाई समुदाय के चुने हुए सदस्यों द्वारा तैयार और घोषित किया गया था। तब से, इसे कुछ परिवर्तनों के साथ राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुकूल बनाया गया है, जिसे अरबी, जर्मन और फारसी में अनुवादित किया गया है और वर्तमान में यह युनाईटेड स्टेट्स और कनाडा, ब्रिटिश आईल्स, जर्मनी, फारस, इराक, भारत और बर्मा, मिस्र एवं सूडान तथा ऑस्ट्रेलिया एवं न्यूज़ीलैंड के बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं का घोषणापत्र है। भावी विश्व बहाई समुदाय के गठन की पूर्व सूचना देते हुए; सभी स्थानीय सभाओं द्वारा इस पर विचार किए जाने के लिए प्रस्तुत तथा राष्ट्रीय सभाओं वाले देशों के अनुयायियों के पूरे समूह द्वारा स्वीकार किए जाने वाले इस राष्ट्रीय संविधान में ऐसा ही एक और दस्तावेज जोड़ा गया है, जिसमें बहाई स्थानीय सभाओं के उपनियम हैं जो सबसे पहले न्यूयॉर्क के बहाई समुदाय द्वारा नवम्बर 1931 में तैयार किया गया था और जो सभी स्थानीय संविधानों के लिए एक पैटर्न के रूप में अपनाया गया था। इस राष्ट्रीय संविधान की पाठ्य–सामग्री में एक न्यास की घोषणा है, जिसकी धाराएँ, राष्ट्रीय बहाई समुदाय के स्वरूप और उद्देश्य का वर्णन करती हैं, इसके चुने हुए प्रतिनिधियों के कार्य निर्धारित करती हैं, साथ ही वे वह उपनियम निर्धारित करती हैं जो स्थानीय एवं राष्ट्रीय सभाओं की हैसियत, उनकी चुनाव विधि और उनके अधिकार एवं कर्त्तव्यों को परिभाषित करते हैं, विश्व न्याय मंदिर के अलावा स्थानीय सभाओं एवं व्यक्तिगत अनुयायियों के साथ इसके सम्बन्ध का वर्णन करते हैं, राष्ट्रीय अधिवेशन के अधिकार एवं दायित्वों सहित, राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के साथ इसके सम्बन्ध की रूपरेखा प्रस्तुत करते है, बहाई चुनावों का स्वरूप प्रकट करते हैं और सभी बहाई समुदायों में मतदाताओं की सदस्यता की आवश्यकताएँ निर्धारित करते हैं।

स्थानीय और राष्ट्रीय संविधानों की उन संरचनाओं ने, जो अपने प्रावधानों के अर्थ और उद्देश्य में बिल्कुल समान थीं, धार्मिक और व्यापारिक संगठनों को नियंत्रित करने वाले नागरिक कानून के अनुसार इन प्रशासनिक संस्थाओं को कानूनी तौर पर शामिल करने के लिए आवश्यक आधार प्रदान किया। इस प्रकार शामिल किए जाने से इन सभाओं को एक कानूनी अस्तित्व मिला और उनकी शक्ति और क्षमता विकसित हुई और इस सम्बन्ध में युनाईटेड स्टेट्स एवं कनाडा के बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा तथा न्यूयॉर्क की स्थानीय आध्यात्मिक सभा की उपलब्धियों ने एक बार फिर एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया जो पूरब और पश्चिम में उनकी सहयोगी सभाओं द्वारा अनुसरण किए जाने योग्य था। अमेरिका की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को, एक ऐसे स्वयंसेवी ट्रस्ट के रूप में शामिल किए जाने के बाद इसी प्रकार के कानूनी उपाय किए गए। चूँकि ये स्वयंसेवी ट्रस्ट सामान्य विधि के तहत मान्यता प्राप्त संघों के वर्ग में आते हैं, इसलिए आध्यात्मिक सभा अनुबन्ध कर सकती है, सम्पत्ति क्रय कर सकती है। मई सन् 1929 में सेक्रेटरी ऑफ स्टेट, हेनरी एल स्टिमसन के हस्ताक्षर से, डिपार्टमेंट ऑफ स्टेट इन वॉशिंगटन की मुहर द्वारा जारी किए गए एक सर्टिफिकेट के तहत अब यह उत्तरदान भी प्राप्त कर सकती है। इसके परिणामस्वरूप, सन् 1860 के सोसाईटीज़ पंजीयन कानून के तहत पंजाब राज्य के लाहौर शहर में जनवरी सन् 1933 में, भारत और बर्मा के बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इन स्वयंसेवी ट्रस्टों के वर्ग में शामिल किया गया; कैरो की मिलीजुली अदालत की घोषणा के अनुसार दिसम्बर सन् 1934 में, मिस्र और सूडान के बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इस वर्ग में सम्मिलित किया गया। दक्षिण ऑस्ट्रेलिया की स्टेट जनरल रजिस्ट्री ऑफिस के उप रजिस्ट्रार की गवाही में जनवरी 1938 में ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड के बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इस श्रेणी में स्थान दिया गया और अगस्त सन् 1939 में ब्रिटिश आईल्स के बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को सन् 1929 कम्पनीज़ एक्ट के तहत तथा लंदन शहर के असिस्टेंट रजिस्ट्रार ऑफ कम्पनीज़ द्वारा प्रमाणित किए जाने पर एक असीमित गैर–लाभ वाली कम्पनी के रूप में स्वीकृति प्रदान की गई।

इन राष्ट्रीय सभाओं के कानूनी तौर पर शामिल किए जाने के साथ–साथ, फरवरी सन् 1932 में शिकागो की स्थानीय बहाई आध्यात्मिक सभा द्वारा स्थापित किए गए उदाहरण का अनुसरण करते हुए, युनाईटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका, भारत, मेक्सिको, जर्मनी, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, बर्मा, कोस्टारिका, बलुचिस्तान और हवाईयन द्वीप जैसे एक दूसरे से बहुत दूर स्थित देशों में, इनसे भी अधिक बड़ी संख्या में स्थानीय बहाई आध्यात्मिक सभाओं को स्वयंसेवी ट्रस्ट के रूप में इसी प्रकार शामिल किया गया। जर्मनी में एस्लिन्जन शहर, मेक्सिको में मेक्सिको शहर, कोस्टारिका में सेनजोस, ऑस्ट्रेलिया में सिडनी और एडिलेड, न्यूज़ीलैंड में आकलैंड, भारत में दिल्ली, मुंबई, कोलकता, सिकन्दराबाद, बैंगलोर, वेल्लोर, अहमदाबाद, सेरामपुर, अन्धेरी और बड़ौदा, पाकिस्तान में करांची, बलूचिस्तान में टुएटा, बर्मा में रंगून, मन्डालय और डैडानाओ–कालाजू, कनाडा में मोन्ट्रिएल और वैंन्कूवर, हवाईयन द्वीपों में होनोलुलु और अमेरिका के संयुक्त राज्यों में शिकागो, न्यूयॉर्क, वॉशिंगटन, डी. सी., बॉस्टन, सेन फ्राँसिस्को, फिलाडेल्फ़िया, केनोशा, टीनेख, रेसाइन, डेट्रोइट, क्लेवलैंड, लॉस एन्जेलिस, मिलवौकी, मिन्नियापोलिस, सिनसिनाटी, विन्नेटका, फीनिक्स, कोलम्बस, लीमा, पोर्टलैंड, जेरेसी सिटी, विल्मेट, पेओरिया, सिएटल, बिन्घेम्टन, हेलीना, रिचमन्ड हायलैंड्स, मायामी, पासाडेना, ऑकलैंड, इन्डियानापोलिस, सैंट पॉल, बर्केली, अर्बाना, स्प्रिन्गफील्ड, और फ्लिन्ट की स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं ने अपने–अपने राज्यों और प्रान्तों के नागरिक प्रशासनों के समक्ष लगभग एक जैसे स्थानीय संविधान प्रस्तुत करके अपने आपको ऐसी सोसायटियों और संघों के रूप में गठित कर लिया जिन्हें कानूनी मान्यता प्राप्त थी और जो अपने देश के नागरिक कानून द्वारा सुरक्षित थीं।

जिस प्रकार बहाई संविधान बनने से बहाई आध्यात्मिक सभाओं को वह आधार मिला जिससे उन्हें स्वयंसेवी ट्रस्ट के रूप में शामिल किया गया, उसी प्रकार स्थानीय और राष्ट्रीय प्रशासन द्वारा बहाई समुदायों के निर्वाचित प्रतिनिधियों को दी गई मान्यता से स्थानीय और राष्ट्रीय बहाई दान की स्थापना करने का रास्ता साफ हुआ। यह एक ऐसा ऐतिहासिक कार्य था, जो अमेरिकी बहाई समुदाय द्वारा शुरू की गई दूरगामी परिणामों वाली पूर्व की

उपलब्धियों के समान था। अधिकांश प्रकरणों में अपने धार्मिक स्वरूप के कारण, इस दान की सम्पत्ति को कानूनी तौर पर मान्यता प्राप्त इन बहाई संस्थाओं द्वारा नगर प्रशासन के समक्ष प्रस्तुत किए गए अभिवेदनों के परिणामस्वरूप कर–मुक्त किया जा चुका है। एक से अधिक देशों में इस प्रकार कर–मुक्त की गई सम्पत्ति की कुल कीमत बहुत बड़ी है।

युनाईटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका के बहाई समुदाय के अमानतदार के रूप में कार्य कर रही वहाँ की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा द्वारा सन् 1928, 1929, 1935, 1938, 1939, 1941 और 1942 में तैयार किए गए ट्रस्ट के कई अनुबंधों के माध्यम से स्थापित किये गए प्रभुधर्म की राष्ट्रीय सम्पदा में वर्तमान में पौने–दो मिलियन डॉलर की निम्नलिखित सम्पत्ति शामिल है, इलिनोई राज्य के विलमेट शहर में मश्रिकुल–असकार की ज़मीन और भवन और इसके प्रभारी का मकान; इससे लगा हुआ हज़ीरतुल–कुद्स (बहाई राष्ट्रीय मुख्यालय) और इसका पूरक प्रशासनिक कार्यालय; मैने राज्य के ग्रीन एकर शहर में, द इन, फेलोशिप हाउस, बहाई हॉल, आर्ट्स एन्ड क्राफ्ट्स स्टुडियो, एक खेत, कई मकान और अब्दुल बहा के कदमों द्वारा आशीर्वादित किए गए मानसेलवेट के उस पट्टे के अलावा कई भूखण्ड; कैलिफोर्निया के गीसरविल में बोश हाउस, बहाई हॉल, एक फलों का बाग, रेडवुड ग्रोव, एक डॉर्मिटरी और रेन्च के भवन; न्यू जर्सी के वेस्ट एंगलवुड में विलहेल्म हाउस, एवरग्रीन केबिन, देवदार वृक्षों का ग्रोव और कुछ भवनों सहित सात भूखण्ड, वह यादगार स्थान हैं जहाँ अब्दुल बहा द्वारा जून, 1912 में न्यूयॉर्क मेट्रोपोलिटन जिले के बहाइयों को एकता–सहभोज दिया गया था; मेसेच्यूसेट्स के माल्डेन शहर में उनकी उपस्थिति द्वारा आशीर्वादित विल्सन हाउस और एक ज़मीन; कोलोरेडो के पाइन वैली में मैथ्यूस हाउस और रैन्च बिल्डिंगें; मिशिगन के मस्केगॉन शहर में एक ज़मीन तथा एन. एच के पोर्ट्समाउथ में समाधि क्षेत्र के लिए एक भूखण्ड।

यद्यपि फारस का बहाई समुदाय अपनी राष्ट्रीय और स्थानीय सभाओं को कानूनी तौर पर मान्यता नहीं दिला सकता था, इसलिए यहाँ प्रभुधर्म के

क्रियाकलापों के संचालन का स्वामित्व कुछ बहाई मित्रों के हाथों में सौंपकर उन्हें इसका अमानतदार बना दिया गया है। प्रभुधर्म के पास अपनी जन्मभूमि में जो परिसम्पत्ति है, उसका महत्व अमेरिकी बहाई समुदाय की परिसम्पत्ति से महानतर है और इसकी कुल कीमत भी उससे कहीं अधिक है। शीराज़ में बाब का घर और अब्दुल बहा के समय से ही बहाई समुदाय के अधिकार में रहने वाले माज़िन्दरान प्रांत के ताकुर गाँव में स्थित बहाउल्लाह का पुश्तैनी मकान, वे सम्पत्तियाँ हैं, जिनमें अब्दुल बहा के स्वर्गवास के बाद अब उन विशाल सम्पत्तियों को भी जोड़ दिया गया है जो राजधानी के बाहर एलबुर्ज पर्वत की ढलान पर बहाउल्लाह के मूल शहर के सामने स्थित हैं। इनमें एक खेत, एक बगीचा और अंगूर का एक बाग शामिल हैं। इस पूरी ज़मीन का क्षेत्र, तीस लाख वर्गमीटर है और इसे फारस के मश्रिकुल–असकार के भावी स्थान के रूप में संरक्षित रखा गया है। फारस में बहाई धर्म के विस्तार को बहुत अधिक बढ़ा देने वाली अन्य सम्पत्तियों में निम्नलिखित शामिल हैं; तेहरान में स्थित वह मकान जिसमें बहाउल्लाह का जन्म हुआ था; शीराज़ में बाब के घर से लगे हुए कई भवन, जिनमें उनके मामा का घर शामिल है; तेहरान का हज़ीरतुल–कुद्स; बुशहिर शहर में जिस दौरान बाब एक व्यापारी के रूप में कार्य करते थे, तब उनके द्वारा उपयोग में लाई गई वह दुकान; चिहरिक गाँव का वह हिस्सा जिसमें उन्हें कैद किया गया था; तबरीज़ के मार्ग में स्थित मिर्ज़ा जानी का वह घर जिसमें वे कुछ दिन ठहरे थे; शीराज़ में उनके द्वारा उपयोग में लाया गया वह सार्वजनिक स्नानागार और उसके आसपास के कुछ मकान; नायरीज़ में वाहीद के मकान का आधा हिस्सा और ज़नजान में हुज्जत के मकान का कुछ भाग; बदश्त गाँव में बहाउल्लाह द्वारा किराये पर लिए गए तीन बगीचे; बारफुरूश में कुद्दूस की समाधि; तेहरान में कलन्तर का वह मकान जिसमें ताहिरा को कैद किया गया था; अज़रबैजान के ऊरूमियेह शहर में बाब के प्रवास के समय उनके द्वारा उपयोग में लाया गया सार्वजनिक स्नानागार; मिर्ज़ा हुसैन–अली–ए–नूर का वह मकान जिसमें बाब के पावन अवशेषों को छिपाकर रखा गया था; बाबीय्येह और मशहद में मुल्ला हुसैन का मकान; इस्फहान शहर में सुल्तानुश–शुहादा (शहीदों के सम्राट) का और माहबुबुश–शुहादा

(शहीदों के प्रिय) का निवास और बहुत से ऐसे स्थल एवं मकान, जिनमें प्रभुधर्म के शूरवीरों और शहीदों से जुड़े समाधि–स्थल शामिल हैं। फारस की ये सम्पत्तियाँ, जिनमें से कुछ को छोड़कर अन्य सभी को हाल ही में खरीदा गया है, अब संरक्षित रखी जा रहीं हैं और हर वर्ष बढ़ाया जा रहा हैं। आवश्यकता पड़ने पर एक विशेष रूप से नियुक्त की गई राष्ट्रीय समिति के परिश्रमपूर्ण प्रयासों के माध्यम से बड़ी सावधानी से इन्हें अपनी मूल अवस्था में लाने के प्रयास किए जा रहे हैं। यह समिति फारस के अनुयायियों के निर्वाचित प्रतिनिधियों की देखरेख में निरन्तर और व्यापक देखभाल के कार्य करती है।

उन विविध और लगातार बढ़ती जा रही राष्ट्रीय परिसम्पत्तियों का उल्लेख करना भी आवश्यक है, जो बहाउल्लाह के धर्म की प्रशासनिक व्यवस्था के प्रारम्भ से ही भारत, बर्मा, ब्रिटीश आईल्स, जर्मनी, मिस्र, ऑस्ट्रेलिया, ट्रान्सजोर्डन और सीरिया जैसे अन्य देशों में लगातार प्राप्त की जा रही हैं। इनमें इराक, मिस्र, भारत और ऑस्ट्रेलिया के बहाइयों के हज़ीरतुल–कुद्स, एस्लिन्गन का बहाई होम, ब्रिट्रिश आईल्स के पब्लिशिंग ट्रस्ट, बग़दाद के बहाई तीर्थयात्री निवास, और फारस, मिस्र, एवं तुर्किस्तान में स्थापित किए गए बहाई समाधि–स्थलों का विशेष उल्लेख किया जा सकता है। ज़मीनों, स्कूलों, प्रशासनिक मुख्यालयों, सचिवालयों, पुस्तकालयों, समाधि–स्थलों, हॉस्टलों या प्रकाशन कम्पनियों के रूप में व्यापक रूप से बिखरी हुईं इन परिसम्पत्तियों ने हाल ही के वर्षों में, राष्ट्रीय स्तर पर बहाई धर्म का निरन्तर विस्तार करने में एवं इसके आधार को मजबूत करने में अपना योगदान दिया है। इन सम्पत्तियों में से कुछ, आंशिक रूप से उन राष्ट्रीय सभाओं के नाम पर हैं जिन्हें कानूनी तौर पर शामिल किया गया है और कुछ को उन मान्यता प्राप्त व्यक्तियों के सुपुर्द किया गया है जो इसके अमानतदार हैं। इसके अतिरिक्त, वह स्थानीय धार्मिक सम्पदा, जो प्रभुधर्म की राष्ट्रीय परिसम्पत्ति का पूरक है और जो स्थानीय बहाई सभाओं के ट्रस्ट के रूप में सम्मिलित किए जाने के परिणामस्वरूप, पूरब और पश्चिम के विभिन्न देशों में कानूनी तौर पर स्थापित और सुरक्षित की जा चुकी है, यद्यपि अपने महत्व में कुछ कम विशिष्ट है फिर भी अत्यावश्यक हैं। विशेषकर फारस में इन सम्पत्तियों ने, चाहे ये ज़मीनों, प्रशासनिक भवनों,

स्कूलों या अन्य संस्थाओं के रूप में हों, विश्वव्यापी बहाई समुदाय की स्थानीय धार्मिक सम्पत्तियों को बड़े पैमाने पर समृद्ध किया है।

स्थानीय और राष्ट्रीय बहाई सभाओं की स्थापना, ट्रस्ट के रूप में इन्हें शामिल किए जाने, इनकी विशेष समितियों के गठन, स्थानीय और राष्ट्रीय बहाई संविधानों की रचना तथा बहाई सम्पत्तियों की स्थापना के साथ–साथ इन नव–स्थापित सभाओं द्वारा संस्थागत महत्व के ऐसे महान कार्य शुरू किए गए जिनमें राष्ट्रीय बहाई सभा का केन्द्र एवं भविष्य की समस्त बहाई प्रशासनिक गतिविधियों की धुरी माने जाने वाले हज़ीरतुल–कुद्स की स्थापना को सबसे महत्वपूर्ण समझा जाना चाहिए। सबसे पहले इसकी स्थापना 'पावन बाड़ा' के रूप में फारस में की गई थी, जिसकी शुरूआत उन गुप्त बैठकों से हुई थी जो इस देश के यातनाग्रस्त अनुयायियों द्वारा कभी कभी तहखानों में आधी रात को आयोजित की जाती थी। और अब हज़ीरतुल–कुद्स की यह संस्था, जो अब भी अपने विकास के प्रारम्भिक दौर में है, बहाई समुदाय के आंतरिक कार्यों को दृढ़ता प्रदान करने में अपना योगदान दे रही है और अपने स्थायी विकास और बढ़ती हुई शक्ति का और भी प्रत्यक्ष प्रमाण दे चुकी है। अपने कार्यों में यह उस मश्रिकुल–असकार की पूरक है, जो कि एक ऐसी इमारत है जिसे केवल बहाई आराधना के लिए आरक्षित रखा गया है। जब स्थानीय या राष्ट्रीय हज़ीरतुल–कुद्स के सचिवालय, कोषालय, पुरालेख स्थल, पुस्तकालय, प्रकाशन कार्यालय, सभाकक्ष, परामर्श कक्ष, तीर्थयात्री निवास जैसे घटक अंगों को एक ही स्थान पर लाकर संयुक्त रूप से संचालित किया जायेगा, तब ये बढ़ती हुई संख्या में समस्त बहाई प्रशासनिक गतिविधियों का केन्द्र माना जाने लगेगा और प्रभुधर्म एवं मानवजाति के साथ अपने व्यापक सम्बन्धों में बहाई समुदाय को अनुप्राणित करने वाली सेवा की भावना का उचित प्रतीक बनेगा।

जब स्थानीय और राष्ट्रीय बहाई समुदायों के प्रतिनिधियों सहित, उनकी विशेष समितियों के सदस्य, भोर में उस मश्रिकुल–असकार में एकत्रित होंगे, जिसे *किताब–ए–अक़दस* में बहाउल्लाह ने आराधनास्थल के रूप में विहित किया है, तो उन्हें उस हज़ीरतुल–कुद्स में जो उनकी प्रशासनिक गतिविधियों

का स्थान होगा को अपने दिन–प्रतिदिन के परिश्रम के दौरान अपने कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्वों को इस प्रकार निभाने की आवश्यक प्रेरणा मिलेगी जो उसके धर्म के चुने हुए सेवकों को शोभा देती है।

अमेरिकी महाद्वीप में स्थापित किए गए प्रथम बहाई केन्द्र के पड़ोस में लेक मिशिगन के किनारे, पश्चिम के प्रथम मश्रिकुल–असकार के साये में; प्रभुधर्म का पालना माने जाने वाली फारस की राजधानी में; बग़दाद में महानतम निवास के पास में, इश्काबाद शहर में बहाई जगत के प्रथम मश्रिकुल–असकार के क्षेत्र में; अरबी और इस्लामी जगत का प्रधान केन्द्र मानी जाने वाली मिस्र की राजधानी में; भारत की राजधानी दिल्ली और दूर दराज़ ऑस्ट्रेलिया के सिडनी में भी, वे आरम्भिक कदम पहले ही उठाये जा चुके हैं जो उपरोक्त देशों के बहाई समुदायों के राष्ट्रीय प्रशासनिक केन्द्रों की भव्य और शक्तिशाली स्थापना के साथ अपने चरम बिन्दु पर पहुँचेंगे।

इसके अतिरिक्त, उपरोक्त देशों सहित अन्य कई देशों में, स्थानीय स्तर पर इस संस्था की स्थापना के प्रारम्भिक उपाय या तो स्थानीय बहाई समुदाय के स्वयं के अथवा किराये के भवन के रूप में किए जा चुके हैं। इनमें सबसे पहले वे असंख्य प्रशासनिक भवन आते हैं जो फारस के अनुयायियों ने उन असमर्थताओं के बावजूद जिनसे वे पीड़ित हैं, फारस के विभिन्न प्रांतों में खरीदे या बनाये हैं।

प्रशासनिक व्यवस्था के विकास के एक पहलू के रूप में समान रूप से महत्वपूर्ण उल्लेखनीय प्रगति वह है जो विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिका में उन ग्रीष्मकालीन स्कूलों द्वारा प्राप्त की गई है जिन्हें एक विशेष रूप से बहाई वातावरण में भाईचारे की भावना को बढ़ावा देने के लिए, बहाई शिक्षकों को आवश्यक प्रशिक्षण देने के लिए, प्रभुधर्म के इतिहास एवं इसकी शिक्षाओं के अध्ययन हेतु सुविधाएँ प्रदान करने के लिए तथा अन्य धर्मों और व्यापक मानव समाज के साथ इसके सम्बन्धों को बेहतर समझने के लिए बनाया गया है।

उत्तर अमेरिकी महाद्वीप के तीन बड़े भागों के लिए, तीन क्षेत्रीय केन्द्रों में इसी प्रकार के ग्रीष्मकालीन स्कूल स्थापित किए गए हैं। गीसरविल के

कैलिफोर्नियन हिल्स में (सन् 1927), मैने राज्य में पिस्काटाक्वा के किनारे स्थित ग्रीन एकर में (सन् 1929), मिशिगन में डेविसन के पास लुहेलेन रैंच में (सन् 1931) और हाल ही में कोलोरेडो स्प्रिंग्स की पाईन वैली में स्थापित किए गए अन्तर्राष्ट्रीय स्कूल भी अब इनमें जुड़ गए हैं। दूसरे देशों में, विशेषकर लेटिन अमेरिका में, सेवाएँ अर्पित करने की चाह रखने वाले बहाई शिक्षकों के प्रशिक्षण को समर्पित इन तीनों भ्रूणीय बहाई शैक्षिक संस्थाओं ने अपने कार्यक्रमों के स्थाई विस्तार के माध्यम से, पूरब और पश्चिम के अन्य बहाई समुदायों के लिए एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया है जो अनुकरणीय है। बहाई ग्रंथों और प्रभुधर्म के आरम्भिक इतिहास के अध्ययन, इस्लाम की शिक्षाओं और इतिहास के पाठ्यक्रमों के आयोजन, अन्तरजातीय बन्धुत्व को बढ़ावा देने वाले सम्मेलनों, प्रतिभागियों को बहाई प्रशासनिक व्यवस्था की प्रक्रियाओं से परिचित कराने के लिए तैयार किए गए प्रयोगशाला पाठ्यक्रमों, युवाओं और बच्चों के प्रशिक्षण को समर्पित विशेष सत्रों, वक्तव्य प्रस्तुत करने के लिए प्रशिक्षण कक्षाओं, तुलनात्मक धर्म के बारे में व्याख्यानों, प्रभुधर्म के विविध पहलुओं पर सामूहिक चर्चाओं, पुस्तकालयों की स्थापना, शिक्षण कक्षाओं, लेटिन अमेरिका और बहाई नैतिकशास्त्र के पाठ्यक्रमों, शीतकालीन स्कूल सत्रों, मंचों और भक्तिपरक सम्मिलनों, नाटिकाओं और प्रदर्शनियों, पिकनिक और अन्य मनोरंजक गतिविधियों, बहाइयों और गैर–बहाईयों के लिए समान रूप से खोले गए इन स्कूलों ने इतना ऊँचा उदाहरण प्रस्तुत किया है कि फारस, ब्रिटिश आईल्स, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, भारत, इराक और मिस्र के बहाई समुदाय को यह प्रेरणा मिली है कि वे ऐसे आरम्भिक कदम उठायें जो उन्हें इसी ढांचे पर ऐसी संस्थाएँ खड़ी करने में समर्थ बना सकें जो भविष्य के बहाई विश्वविद्यालयों में विकसित होने योग्य हों।

प्रशासनिक व्यवस्था के विस्तार और इसकी स्थापना में योगदान देने वाले अन्य कारकों में बहाई युवाओं की उन संगठित गतिविधियों का उल्लेख किया जा सकता है जो फारस और संयुक्त राज्य अमेरिका में पहले ही काफी विकसित हो चुकी हैं तथा भारत, ब्रिटिश आईल्स, जर्मनी, इराक, मिस्र, ऑस्ट्रेलिया, बल्गेरिया, हवाईयन द्वीपों, हंगरी और हवाना में हाल ही में शुरू

की गई हैं। इन गतिविधियों में वार्षिक विश्वव्यापी बहाई युवा विचारगोष्ठी, बहाई ग्रीष्मकालीन स्कूलों के युवा सत्र, युवा बुलेटिन और पत्रिकाएँ, एक अन्तर्राष्ट्रीय पत्राचार ब्यूरो, प्रभुधर्म में शामिल होने के इच्छुक युवाओं के लिए पंजीयन की सुविधाएँ, प्रभुधर्म की शिक्षाओं के अध्ययन के लिए रूप–रेखा और संदर्भों का प्रकाशन तथा अमेरिका के एक प्रमुख विश्वविद्यालय की औपचारिक गतिविधि के रूप में एक बहाई अध्ययन समूह का गठन शामिल है। इसके अतिरिक्त, इनमें बहाई घरों और केन्द्रों में आयोजित किए जाने वाले "अध्ययन के दिन", एस्पेरेन्टो एवं अन्य भाषाओं के अध्ययन के लिए कक्षाएँ, बहाई पुस्तकालयों की स्थापना, अध्ययन कक्षों की शुरूआत, बहाई नाटिकाओं की प्रस्तुति, वक्तव्य प्रतियोगिताएँ, अनाथों की शिक्षा, वक्तव्य प्रस्तुत करने की प्रशिक्षण कक्षाएँ, ऐतिहासिक बहाई हस्तियों को स्मरण करने के लिए सम्मिलनों का आयोजन तथा वार्षिक बहाई अधिवेशनों के सम्बन्ध में आयोजित किए जाने वाले अन्तरसमूह क्षेत्रीय सम्मेलन एवं युवा सत्र शामिल हैं।

इस व्यवस्था के विकास को बढ़ावा देने वाले और इसके सुगठन में योगदान देने वाले और भी अन्य कारकों में उस उन्नीस दिवसीय सहभोज की व्यवस्थित स्थापना भी शामिल है जो बहाई सामुदायिक जीवन के भक्तिपरक, प्रशासनिक और सामाजिक पहलुओं को प्रदर्शित करता है और जो पूरब और पश्चिम के अधिकांश बहाई समुदायों में कार्यशील है; साथ ही इसमें बहाई बच्चों की जनगणना के लिए, उन्हें प्रयोगशाला पाठ्यक्रम, प्रार्थना की पुस्तकें एवं प्राथमिक साहित्य प्रदान करने के लिए तथा प्रभुधर्म के गैर–राजनीतिक स्वरूप के बारे में, गैर–बहाई धार्मिक संगठनों में इसकी सदस्यता के बारे में, शिक्षण करने के तरीकों के बारे में, युद्ध के प्रति बहाई सोच के बारे में तथा राष्ट्रीय अधिवेशन, बहाई आध्यात्मिक सभा, उन्नीस दिवसीय सहभोज एवं राष्ट्रीय कोष की स्थापना के बारे में अधिकारिक कथनों का एक संग्रह तैयार करने और इसे प्रकाशित करने के लिए तैयार की गई गतिविधियों की शुरूआत शामिल है। इसके अतिरिक्त बहाउल्लाह और अब्दुल बहा की पातियों के प्रमाणीकरण, संग्रह, अनुवाद, संरक्षण और सूचीबद्ध करने के लिए तथा पावन स्मारक चिन्हों और ऐतिहासिक दस्तावेज़ों के संरक्षण के लिए एक राष्ट्रीय

पुरालेख संग्रहालय की स्थापना, पूरब के अनुयायियों के पास उपलब्ध बाब, बहाउल्लाह और अब्दुल बहा की मूल पातियों के सत्यापन और प्रतिलेखन, प्रभुधर्म के आरम्भ से लेकर वर्तमान तक इसके विस्तृत इतिहास के संकलन, जेनेवा में बहाई अन्तर्राष्ट्रीय ब्यूरो की स्थापना, ज़िला बहाई अधिवेशनों के आयोजन, ऐतिहासिक स्थलों के क्रय, बहाई स्मारक पुस्तकालयों की स्थापना तथा फारस में बच्चों के बचत बैंक के प्रारम्भ करने और इसके फलने–फूलने का भी उल्लेख किया जाना चाहिए।

धार्मिक एकता, शान्ति, शिक्षा, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, अन्तर्जातीय बन्धुत्व और अन्य मानवीय उद्देश्यों को बढ़ावा देने के लिए, यूरोप, एशिया और अमेरिका के विभिन्न देशों में आयोजित की गई विविध प्रकार की महासभाओं, संघों, अधिवेशनों और सम्मेलनों की गतिविधियों और कार्यवाहियों में औपचारिक या अनौपचारिक रूप से इन नवगठित राष्ट्रीय बहाई समितियों के प्रतिनिधियों द्वारा भाग लिए जाने का भी उल्लेख करना आवश्यक है। ऐसे संगठनों के साथ जैसा कि सन् 1924 ई. में लंदन में आयोजित, "कॉन्फ्रेंस ऑफ सम लिविंग रिलिजन्स इन ब्रिटिश एम्पायर" तथा इसी शहर में सन् 1936 में आयोजित "वर्ल्ड फेलोशिप ऑफ फेथ्स"; यूरोप की विभिन्न राजधानियों में वार्षिक रूप से आयोजित "यूनिवर्सल एस्पेरेन्टो कॉंग्रेस"; "इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्टेलेक्चुअल को–आपरेशन"; सन् 1933 में शिकागो में आयोजित "सेन्चुरी ऑफ प्रॉग्रेस एक्ज़िबिशन"; सन् 1938 और 1939 में न्यूयॉर्क में आयोजित "वर्ल्ड फेयर"; सेन फ्रांसिस्को में सन् 1939 में "गोल्डन गेट एक्सपोजिशन", कोलकाता में आयोजित "फर्स्ट कन्वेन्शन ऑफ द रिलिजियस कॉंग्रेस"; इसी शहर में आयोजित "सेकेंड ऑल–इन्डिया कल्चरल कॉन्फ्रेंस"; इन्दौर में आयोजित "ऑल फेथ्स लीग कन्वेन्शन"; भारत के विभिन्न शहरों में आयोजित किए गए आर्य समाज और ब्रह्म समाज सम्मेलनों सहित थियोसोफिकल सोसाईटी तथा "ऑल–एशिया विमेन्स कान्फ्रेंस"; "वर्ल्ड काउन्सिल फॉर यूथ"; तेहरान में "ईस्टर्न विमेन्स कॉंग्रेस"; होनोलुलु में "पेन–पेसिफिक विमेन्स कॉंफ्रेंस"; "विमेन्स इन्टरनेशनल लीग फार पीस" और अर्जेन्टीना में स्थित ब्यूनस आयर्स में "पीपल्स कॉन्फ्रेंस" तथा अन्य कई संगठनों के साथ किसी न किसी रूप में ऐसे सम्बन्ध स्थापित किए गए हैं जिनसे दोहरे उद्देश्य प्राप्त हुए

हैं। पहला यह कि बहाउल्लाह के धर्म की सार्वभौमिकता और व्यापकता प्रदर्शित हुई है और दूसरा यह कि इनके तथा प्रभुधर्म की प्रशासनिक व्यवस्था की दूरस्थ एजेन्सियों के बीच महत्वपूर्ण और स्थाई सम्बन्ध स्थापित हुए हैं।

हमें इन पूरब और पश्चिम की बहाई एजेंसियों और ऐसे कुछ उच्चतम सरकारी अधिकारियों के बीच स्थापित किए गए सम्पर्कों के साथ–साथ, प्रभुधर्म के अधिकारों की रक्षा करने, इसका साहित्य भेंट करने, इस नवजात प्रशासनिक व्यवस्था के पक्ष में समर्थन के अथक प्रयासों में प्रभुधर्म के अनुयायियों के लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्रस्तुत करने के लिए इन बहाई एजेन्सियों द्वारा फारस में इस्लाम के प्रधान व्यक्तियों के साथ तथा लीग ऑफ नेशन्स के साथ, यहाँ तक कि स्वयं शाही परिवार के साथ स्थापित किए गए सम्पर्कों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए न ही इन्हें कम आँकना चाहिए, जैसा संयुक्त राज्य और कनाडा के बहाइयों अर्थात् बहाई प्रशासनिक व्यवस्था के शूरवीर निर्माताओं की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के सदस्यों द्वारा लिखे गए पत्र, अपने आप में बहाई प्रशासनिक व्यवस्था के विकास के इतिहास का एक उल्लेखनीय और ज्ञानवर्धक अध्याय है। इसके अतिरिक्त, बहाउल्लाह की समाधि की चाबियाँ इसके रक्षकों को लौटाने के लिए फिलिस्तीन के उच्चायोग को लिखा गया पत्र; फारस के शाह को चार बार लिखे गए वे पत्र जिनमें उसके राज्य में इनके उत्पीड़ित बन्धुओं की ओर से न्याय की अपील की गई है; इसी विषय पर फारस के प्रधानमंत्री को लिखा गया पत्र; रूमानिया की महारानी मेरी को लिखा गया पत्र जिसमें उनकी ओर से बहाई धर्म को दी गई ऐतिहासिक श्रद्धांजलियों के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त किया गया है। धर्मों के बीच सामंजस्य और शान्ति की अपील करते हुए फारस में इस्लाम के प्रमुख व्यक्तियों को, बग़दाद में स्थित महानतम निवास की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए इराक के राजा फैज़ल को, रूस के बहाई समुदायों की ओर से सोवियत अधिकारियों को, अपने जर्मन भाईयों द्वारा सहन की गईं असमर्थता के बारे में जर्मन अधिकारियों को, इस्लामिक रूढ़िवादिता के बोझ से अपने सह–अनुयायियों को स्वतंत्र कराने के लिए मिस्र की सरकार को, फारस की बहाई शैक्षिक संस्थाओं को बन्द करने के सम्बन्ध में फारस की कैबिनेट को, तुर्की में प्रभुधर्म

के हितों की रक्षा के लिए संयुक्त राज्यों की सरकार के राज्य विभाग को, वॉशिंगटन में स्थित तुर्की राजदूत को, तथा अंकारा में स्थित तुर्की कैबिनेट को, लुआ गेटसिंगर के पार्थिव अवशेषों के लिए, कायरो के प्रोटेस्टेन्ट समाधि स्थल से मिस्र में स्थापित किए गए प्रथम बहाई समाधि स्थल में स्थानान्तरित करने की सुविधा के लिए इसी राज्य विभाग को, कीथ रेन्सम केहलर के ध्येय के बारे में वॉशिंगटन में मौजूद फारस के मंत्री को, मिस्र के राजा को बहाई साहित्य के साथ विश्व शान्ति के बारे में बहाई शिक्षाओं को पेश करते हुए संयुक्त राज्य को और कनाडा की सरकार को, रूमानिया की महारानी मेरी के देहान्त के अवसर पर अमेरिका के बहाइयों की ओर से वॉशिंगटन में मौजूद रूमेनिया के मंत्री को और राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी रूज़वेल्ट को लिखे गए पत्र जिसमें उन्हें बहाउल्लाह द्वारा जारी किए गए उन आदेशों से अवगत कराया गया है जो उन्होंने *किताब–ए–अक़दस* में जारी किए हैं, साथ ही अब्दुल बहा द्वारा प्रकट की गई कुछ प्रार्थनाएँ भी सम्मिलित की गई हैं।

इनमें वे पत्र भी लिए जाने चाहिए जो प्रभुधर्म के विश्व केन्द्र तथा राष्ट्रीय एवं स्थानीय बहाई सभाओं की ओर से, तार के रूप में या लिखित में फिलिस्तीन के उच्चायोग को सम्बोधित किए गए थे। इन पत्रों के द्वारा बहाउल्लाह की समाधि की चाबियों को इसके वास्तविक रक्षक को सौंपने का अनुरोध किया गया था; बग़दाद में स्थित बहाउल्लाह के निवास का अधिकार लौटाने के लिए पूरब और पश्चिम के बहाई केन्द्रों द्वारा इराकी प्रशासनिक अधिकारियों को अपीलें भेजी गईं थीं और इस सम्बन्ध में बग़दाद की कोर्ट ऑफ अपील्स द्वारा किए गए निर्णय के पश्चात ब्रिटिश सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फॉर द कॉलोनीज़ को अपीलें भेजी गई थीं; इन पत्रों के माध्यम से लीग ऑफ नेशन्स के काउन्सिल द्वारा बहाई प्रार्थियों के दावों के पक्ष में की गई औपचारिक घोषणा की सराहना करते हुए पूरब और पश्चिम के बहाई समुदायों ने उन्हें संदेश भेजे थे, साथ ही रूमानिया की महारानी मेरी द्वारा प्रभुधर्म की ऐतिहासिक प्रशंसा के प्रकाशित होने पर, एक ओर प्रभुधर्म के अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र द्वारा तथा दूसरी ओर बहाई शिक्षकों की आदर्श मानी जाने वाली मार्था रूट द्वारा, रूमानिया की महारानी मेरी के साथ कई पत्रों का आदान–प्रदान किया

गया था तथा युगोस्लाविया की महारानी मेरी की माता एवं केन्ट की रानी के पति की दुःखद मृत्यु के समय विश्वव्यापी बहाई समुदाय की ओर से उन्हें सहानुभूति भरे संदेश भेजे गए थे।

हमें, इराक़ के बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा द्वारा लिखे गए उस आवेदन का भी विशेष उल्लेख करने से नहीं चूकना चाहिए, जो बग़दाद में बहाउल्लाह के निवास को हड़पने के परिणामस्वरूप लीग ऑफ नेशन्स के मेनडेट कमीशन को भेजा गया था, न ही उन लिखित संदेशों का उल्लेख करने में विफल होना चाहिए जो इसी राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा द्वारा इराक के राजा गाज़ी प्रथम को उसके पिता की मृत्यु के बाद और उसके विवाह के अवसर पर भेजे गए थे, न ही इस राजा की आकस्मिक मृत्यु के समय इसी सभा द्वारा इराक के वर्तमान प्रशासक को लिखित में भेजे गए शोक संदेश का उल्लेख करने से चूकना चाहिए, न ही मिस्र के बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के उन पत्रों का उल्लेख करने से चूकना चाहिए जो उन्होंने मिस्र की मुस्लिम धर्म की अदालत के फैसले के बाद प्रधानमंत्री, गृहमंत्री तथा न्यायमंत्री को प्रस्तुत किए थे अथवा बहाई स्कूलों के बन्द किए जाने और देशभर में बहाई साहित्य पर रोक लगा दिए जाने के सम्बन्ध में फारस के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा द्वारा फारस की कैबिनेट को सम्बोधित किए गए उन पत्रों का भी उल्लेख करना नहीं भूलना चाहिए जो उन्होंने फारस के शाह और वहाँ की केबिनेट को सम्बोधित किये थे। इसके अतिरिक्त उन लिखित संदेशों का भी उल्लेख किया जाना चाहिए जो रूमानिया के राजा की माता महारानी मेरी के देहान्त के अवसर पर, फारस के बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा ने उनको और शाही परिवार को भेजे थे। साथ ही तेहरान में तुर्की के राजदूत को भेजे गए उस संदेश का भी उल्लेख किया जाना चाहिए जिनके माध्यम से फारस के अनुयायियों द्वारा तुर्की के भूकम्प–पीड़ितों के लिए अंशदान भेजा गया था; मार्था रूट द्वारा स्वर्गीय राष्ट्रपति वोन हिन्डरबर्ग और जर्मनी के विदेश मंत्री डॉ. स्ट्रेसमेन को भेजे गए उन पत्रों का भी उल्लेख होना चाहिए जिनके साथ उन्होंने इन्हें प्रभुधर्म का साहित्य भेंट किया था; फारस की यादगार यात्रा के समय कीथ रेन्सम केहलर द्वारा वहाँ के शाह को सम्बोधित लगातार सात

आवेदनों का और उस राज्य के विभिन्न मंत्रियों एवं उच्च पदाधिकारियों को प्रेषित गए असंख्य पत्रों का भी उल्लेख किया जाना चाहिए।

जो प्रक्रिया बहाई प्रशासनिक व्यवस्था की शुरूआत के साथ जुड़ी थी और राष्ट्रीय बहाई समुदायों के उभरने एवं उनकी प्रशासनिक, शैक्षिक और शिक्षण एजेन्सियों की स्थापना के बिल्कुल समकालीन थी, वह उस पावन भूमि में शुरू की गई थी जिसे इस व्यवस्था का हृदय और केन्द्र माना जाता है। यह प्रक्रिया जो कि उस यादगार अवसर पर आरम्भ की गई थी जब बहाउल्लाह ने कार्मल की पाती प्रकट की थी और बाब की समाधि के भावी स्थल का दौरा किया था, अब बगैर रुके प्रकट होती जा रही थी। बहाउल्लाह के स्वर्गारोहण के कुछ ही समय बाद, इस स्थान को खरीदने के बाद बाब के पावन अवशेषों को तेहरान से अक्का स्थानान्तरित करने से, अब्दुल बहा की कैद के सबसे दुःखद वर्षों के दौरान इस समाधि के निमार्ण से तथा अन्त में इन अवशेषों को हमेशा के लिए कार्मल पर्वत की गोद में समाधिस्थ करने से, इस समाधि के बिल्कुल पास में एक तीर्थयात्री निवास की स्थापना करने से और भविष्य के सबसे प्रथम बहाई शैक्षिक संस्थान के लिए इस पर्वत पर एक स्थान निर्धारित करने से इस प्रक्रिया को एक ज़बरदस्त बल मिला था।

बहाउल्लाह के विश्व केन्द्र को मिलने वाली आज़ादी का लाभ उठाते हुए, 1914–18 के युद्ध के दौरान जर्जर हो रहे ऑटोमन साम्राज्य की अपमानजनक हार के समय से ही, उनके द्वारा प्रकट की गई अद्भुत योजना की शुरूआत से जारी होने वाली शक्तियाँ अब अबाधित रूप से प्रवाहमान थीं। ये शक्तियाँ अब ऐसे माध्यमों से प्रवाहित हो रही थीं जो पूरे विश्व के सामने उन क्षमताओं को प्रकट कर सकते थे जिनसे इस योजना ने उन्हें सम्पन्न बनाया था। बाब की समाधि के एक कक्ष में स्वयं अब्दुल बहा के पावन अवशेषों का समाधिस्थ किया जाना जिससे इस पर्वत की पावनता और भी बढ़ गई थी; साथ ही उस बिजली सयंत्र की स्थापना जो हाईफा शहर में स्थापित किया जाने वाला अपने किस्म का पहला संयत्र था और जिसके द्वारा उस महान की समाधि रोशनी से जगमगा उठी थी, जिसे उनके स्वयं के शब्दों में, अज़रबैजान

के दुर्ग के कारागार में *"एक प्रज्वलित दीप"* से भी वंचित रखा गया था और बाब की समाधि से लगे हुए तीन अतिरिक्त कक्षों का निर्माण किया जाना, जिसके द्वारा इस इमारत के लिए अब्दुल बहा की योजना के पहले भाग का कार्य पूरा हुआ था साथ ही, संविदा भंजकों के षडयंत्रों के बावजूद इस समाधि के आसपास फैली हुई उस विशाल ज़मीन को खरीदना, जो कार्मल पर्वत की चोटी से लेकर इसके नीचे स्थित टेम्पलर बस्ती तक फैली हुई कम से कम चार लाख पाउन्ड की अनुमानित सम्पत्ति थी; इसके साथ–साथ छः सौ एकड़ के उन चार भूखण्डों को खरीदा जाना, जो बहाई समाधियों को समर्पित थे और जो उत्तर में अक्का के मैदानी क्षेत्रों में, दक्षिण के बीरशीबा ज़िले में तथा पूरब में जॉर्डन की घाटी में स्थित थे; छज्जों की उस श्रृंखला का आरम्भ किया जाना, जो अब्दुल बहा की रूपरेखा के अनुसार बाब की समाधि के साये में बसे हुए शहर से लेकर इस समाधि तक पहुँचने का एक सीधा मार्ग प्रदान करेंगे तथा ऐसे उद्यानों एवं बगीचों द्वारा इसके परिसर का सौन्दर्यीकरण, जो प्रतिदिन लोगों के लिए खुले रहेंगे और जो पर्यटकों एवं स्थानीय निवासियों को समान रूप से इसके द्वार पर आकर्षित करेंगे। इन सभी को प्रभुधर्म के विश्व केन्द्र में स्थापित की गईं इसकी अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं एवं सम्पत्तियों के शानदार विस्तार का प्रारम्भिक प्रमाण माना जा सकता है। इसके अतिरिक्त विशेष महत्व की बात यह है कि फिलिस्तीन के उच्चायोग ने उस सम्पूर्ण भूमि क्षेत्र को कर से छूट दी है जो बाब की समाधि के आसपास स्थित है और जो इसे समर्पित की गई है, साथ ही स्कूल की उस ज़मीन को और इसके निकट स्थित पुरालेख स्थलों को एवं इसके पड़ोस में स्थित पश्चिमी तीर्थयात्री निवास सहित बहजी की हवेली, अक्का में बहाउल्लाह के घर को और शहर के पूरब में स्थित रिज़वान के उद्यान जैसे ऐतिहासिक स्थलों को भी कर से छूट दी गई है; नागरिक प्रशासन के समक्ष प्रस्तुत किए गए दो औपचारिक आवेदनों के परिणामस्वरूप, फिलिस्तीन में धार्मिक समितियों के रूप में मान्यता प्राप्त अमेरिका और भारत की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा की फिलिस्तीनी शाखाओं की स्थापना (जिसके बाद, आंतरिक सुगठन के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए, बहाई जगत की अन्य राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं को भी इसी प्रकार

सम्मिलित किया जाना था) और कम से कम तीस सौदों के माध्यम से बाब की समाधि के लिए समर्पित कुल पचास वर्गमीटर की उन सम्पत्तियों के स्वामित्व का अमेरिकी राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा की शाखा के नाम स्थानान्तरण, जिनमें से अधिकांश पर हाईफा में भूमि रजिस्ट्रार के रूप में बहाउल्लाह की संविदा के मुख्य भंजक के पुत्र के हस्ताक्षर हैं।

कार्मल पर्वत पर उन दो अन्तर्राष्ट्रीय पुरालेखों का स्थापित किया जाना भी इतना ही महत्वपूर्ण है। इनमें से एक तो बाब की समाधि से लगा हुआ है और दूसरा, महानतम पावन पात की समाधि के बिल्कुल निकट स्थित है, जिसके अन्दर बहाई इतिहास में पहली बार ऐसी संग्रहणीय वस्तुएँ एकत्रित कर तीर्थयात्रियों के लिए प्रदर्शित की गई हैं जो इससे पहले बिखरी हुई थीं और जिसे सुरक्षा की दृष्टि से अकसर छिपाया गया था। इस खज़ाने में बाब और बहाउल्लाह की तस्वीरें; उनका व्यक्तिगत सामान जैसे कि बाब के केश, उनके वस्त्र; बहाउल्लाह के केश, रक्त और उनकी कलमदान, उनके वस्त्र, ज़रीदार ताज, सुलेमानिया के दिनों का उनका कमण्डल, घड़ी और उनकी कुरान सहित ऐसे अमूल्य हस्तलेख और पातियाँ शामिल हैं, जिनमें से कुछ को सजाया गया था, जैसे कि निगूढ़ वचन का वह भाग जो स्वयं बहाउल्लाह ने अपने हाथ से लिखा था, बाब के लिपिक सैय्यद हुसैन की लिखावट में फारसी बयान, बाब द्वारा जीवित अक्षरों को सम्बोधित करते हुए लिखी गई मूल पातियाँ और "कुछ प्रश्नों के उत्तर" की हस्तलिपी शामिल है। इसके अतिरिक्त इस बहुमूल्य संग्रहण में ऐसी वस्तुएँ भी शामिल हैं जो अब्दुल बहा से जुड़ी हैं; पावनतम शाखा के खून से सने हुए वस्त्र, कुद्दूस की अँगूठी, मुल्ला हुसैन की तलवार, बहाउल्लाह के पिता जो कि एक वज़ीर थे उनकी मुहरें, रूमानिया की महारानी द्वारा मार्था रूट को भेंट किया गया जड़ाऊ पिन और महारानी द्वारा मार्था रूट एवं अन्य लोगों को सम्बोधित किए गए पत्र एवं प्रभुधर्म को दी गई श्रद्धांजलियों सहित प्रभुधर्म के संस्थापकों द्वारा प्रकट की गईं प्रार्थनाओं एवं पातियों के कम से कम बीस ग्रंथ शामिल हैं, जिन्हें अब सम्पूर्ण पूरब की बहाई सभाओं द्वारा प्रमाणीकृत और अनुलेखित कर लिया गया है।

इसके अतिरिक्त, इस पावन पर्वत पर बहाउल्लाह द्वारा आरम्भ किए गए अद्भुत कार्य के शानदार प्रकटीकरण और प्रगतिशील सुगठन के एक और साक्ष्य के रूप में, महानतम पावन पात की उस स्थायी समाधि का भी उल्लेख किया जा सकता है जिसके लिए, बाब की समाधि के दायरे में स्थित स्कूल की ज़मीन के एक टुकड़े को चुना गया है। महानतम पावन पात अब्दुल बहा की *"प्रिय बहन"* हैं और वह "अंश" हैं जो उस *"प्राचीन अस्तित्व मूल"* से उत्पन्न हुआ है, वे बहाउल्लाह के *"जगमगाते हुए वस्त्रों की खुशबू"* हैं, वे वह हैं जिन्हें बहाउल्लाह ने एक ऐसे उच्च *"स्थान पर उन्नत किया था जहाँ कोई भी नारी पहुँच नहीं पाई थी"* और जिसकी तुलना साराह, आसीयेह, पवित्र मैरी, फातिमा और ताहिरा जैसी उन अमर वीरांगनाओं से की जा सकती थी जिनमें से प्रत्येक ने महानता में पिछले युगों की नारीजाति की हर सदस्या को पीछे छोड़ दिया था। और अन्त में इस दिव्य योजना से प्रवाहित होने वाले आशीर्वादों के प्रमाण के रूप में पावनतम शाखा के उन पवित्र अवशेषों का स्थानान्तरण शामिल है, जिन्हें उनकी मृत्यु के कारण आने वाले पचास साल के बिछोह के बाद बहाउल्लाह की संविदा के मुख्य भंजक के भाई और प्रतिनिधि द्वारा दर्शाए गए विरोध के बावजूद कुछ वर्षों के बाद पावन भूमि में इसी पवित्र स्थल पर समाधिस्थ किया गया था। पावनतम शाखा, बहाउल्लाह के वे शहीद पुत्र थे जिन्हें *"बहा के प्रकाश से उत्पन्न किया गया था"*, जो *"ईश्वर की अमानत"* एवं उनका *"कोष"* थे और जिन्हें उनके पिता ने इस विश्व के पुनर्जनन और इसके लोगों को एक करने के लिए *"उद्धार–मूल्य के रूप में बलिदान"* किया था। जिस दिन पावनतम शाखा के पावन अवशेषों को समाधिस्थ किया गया था, उसी दिन इसी समाधि स्थल में, उनकी माताश्री अर्थात् वह संत जैसी नवाब के पार्थिव शरीर को भी स्थानान्तरित किया गया था। अब्दुल बहा द्वारा एक पाती में दी गई साक्षी के अनुसार, जिनके दारूण दुःख और कष्टों के बारे में इसाईयाह की पुस्तक के सम्पूर्ण 54 वें अध्याय ने साक्षी दी है और इसी पैग़म्बर के शब्दों के अनुसार, जिनके *"पति" "दिव्य सेना के स्वामी हैं"* और जिनकी सन्तान *"उसे विरासत के रूप में पायेंगे"* और जिन्हें बहाउल्लाह ने अपनी पाती में *"अपने प्रत्येक लोक की जीवन संगिनी बनाना नियत किया है।"*

यदि हम इन तीनों समाधियों के संगम के महत्व का सही अनुमान लगायें तो यह उस स्थान की आध्यात्मिक क्षमताओं को पुष्ट करता है जिसे स्वयं बहाउल्लाह ने ईश्वर के सिंहासन का स्थान कहा है। ये तीनों समाधियाँ स्वयं बाब की समाधि की छत्रछाया तले कार्मल की गोद में अवस्थित हैं जो अक्का की उस खाड़ी के पार बसे हुए बर्फ जैसे सफेद अक्का शहर के सामने स्थित है, जहाँ बहाई जगत का वह किब्ला है जो उत्कृष्ट रूप से सुन्दर उपवन के रूप में स्थापित किया गया है और यह उस मार्ग में मील का पत्थर है जो अन्त में भविष्य के प्रजातन्त्र राज्य के स्थाई प्रशासनिक केन्द्र की स्थापना की ओर ले जाता है। यह स्थाई प्रशासनिक केन्द्र, प्रभुधर्म के आध्यात्मिक केन्द्र से कभी अलग नहीं होगा और इसके निकट रहकर ही एक ऐसी भूमि में कार्य करेगा जो पहले से ही वन्दनीय है और जिसे विश्व के तीन प्रमुख धर्मों के अनुयायी पावन मानते हैं।

पश्चिम के प्रथम मश्रिकुल–असकार की इमारत का निर्माण और इसकी बाहरी सजावट के कार्य का सम्पादन भी कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं रहा है। बहाउल्लाह के धर्म के प्रति अमेरिकी बहाई समुदाय की सेवाओं को अमर बनाने वाली उपलब्धियों में यह कार्य श्रेष्ठतम रहा है। एक कुशलतापूर्वक कार्य कर रही एवं नवस्थापित प्रशासनिक व्यवस्था के माध्यम से पूरा होने वाले इस कार्य ने, इसका निर्माण सम्भव बनाने वाले समुदाय के गौरव में वृद्धि की है, इसके बल को दृढ़ किया है और इसकी सहायक संस्थाओं को विस्तार प्रदान किया है।

जिस मंदिर की कल्पना 41 साल पहले की गई थी; जिसका शुभारम्भ मार्च, 1903 में अब्दुल बहा को भेजे गए उस आवेदन पत्र के साथ हुआ था जो पश्चिम में स्थापित होने वाले प्रथम बहाई केन्द्र अर्थात् शिकागो के बहाइयों के *"आध्यात्मिक मंदिर"* ने तब अनायास ही भेजा था जब इसके सदस्यों ने इश्काबाद के मश्रिकुल–असकार के निर्माताओं द्वारा प्रस्तुत किए गए उदाहरण से प्रेरित होकर अब्दुल बहा से यह अपील की थी कि वे ऐसा ही एक मंदिर अमेरिका में बनाने की अनुमति उन्हें भी दें; अब्दुल बहा द्वारा प्रदान की गई स्वीकृति और उसी वर्ष जून में उनके द्वारा प्रकट की गई एक पाती में मंदिर

निर्माण के इस कार्य की महान प्रशंसा की गई है और इसे आशीर्वादित किया गया है। यह कार्य मंदिर का निर्माण स्थल चुनने के लिए नवम्बर 1907 में शिकागो में एकत्रित होने वाले विभिन्न सभाओं के प्रतिनिधियों द्वारा आरम्भ किया गया। मार्च, 1909 में उसी शहर में आयोजित प्रथम अमेरिकी बहाई अधिवेशन के कुछ ही समय बाद कानूनी तौर पर मान्यता प्राप्त *"बहाई टेम्पल यूनिटी"* नामक धार्मिक संघ के माध्यम से इस मंदिर के कार्य को राष्ट्रीय स्तर प्रदान किया गया। मई, 1912 में इस स्थान की यात्रा करते समय स्वयं अब्दुल बहा की अध्यक्षता में आयोजित एक समर्पण समारोह के द्वारा सम्मानित किया गया। यह महान कार्य उस यादगार अवसर के बाद से तब तक निरन्तर प्रगति करता रहा जब तक कि उत्तर अमेरिकी महाद्वीप में इस प्रशासनिक व्यवस्था की नींव को दृढ़ता से खड़ा करते हुए अमेरिकी बहाई समुदाय इस स्थिति तक नहीं पहुँच गया जहाँ वह उन साधनों का उपयोग कर सके जो उसने अपने कार्य के कुशल निष्पादन के लिए तैयार किए थे। यह कार्य प्रथम बहाई शताब्दी में बहाउल्लाह के धर्म की प्रशासनिक व्यवस्था की सर्वोच्च उपलब्धि था।

1914 के अमेरिकी बहाई अधिवेशन में इस मंदिर के लिए ज़मीन खरीदने का काम पूरा हुआ। 1920 में न्यूयॉर्क में आयोजित अधिवेशन को अब्दुल बहा द्वारा पहले ही निर्देशित कर दिया गया था कि वे मंदिर की रूपरेखा तय कर लें। इसलिए इस अधिवेशन ने उन कई रूपांकनों में से, जो प्रतिस्पर्धात्मक रूप से प्रस्तुत किये गए थे, एक फ्रांसिसी–कनाडाई आर्किटेक्ट लुई जे. बुर्जोइस के रूपांकन को चुना गया। बाद में इस चयन की पुष्टि स्वयं अब्दुल बहा ने भी की थी। धरती के स्तर से 120 फुट नीचे फैली हुई इस इमारत के बीच के भाग को सहारा देने और तलघर के ढाँचे का निर्माण करने के लिए नौ विशाल स्तम्भों को पानी में स्थापित करने की आवश्यकता थी जिसके लिए दिसम्बर 1920 और अगस्त 1921 में क्रमिक रूप से ठेके दिए गए। तत्कालीन आर्थिक संकट के बावजूद और अमेरिकी इतिहास में बेरोज़गारी के उस दौर में, इस इमारत के निर्माण के लिए अगस्त 1930 में, 24 अतिरिक्त उप–ठेकों वाला एक बड़ा ठेका दिया गया और 1 मई, 1931 को काम पूरा हुआ और इसी दिन इस नई इमारत की सबसे पहली भक्तिपरक सेवा आयोजित करने का उत्सव भी मनाया गया।

यह तिथि अब्दुल बहा द्वारा किए गए भूमि अर्पण की 19वीं वर्षगाँठ के साथ मेल खाती थी। इस इमारत के गुम्बद की सजावट का काम जून 1932 में शुरू किया गया और जनवरी, 1934 में पूरा किया गया। रोशनदान की सजावट जुलाई, 1935 में पूरी की गई और इसके नीचे स्थित बरामदे वाले भाग की सजावट नवम्बर, 1938 में पूरी हुई। युद्ध शुरू होने के बावजूद अप्रैल, 1938 में मुख्य इमारत की सजावट का काम शुरू किया गया जो जुलाई 1942 में पूरा हुआ; जबकि उन 18 वृत्ताकार सीढ़ियों को दिसम्बर 1942 तक तैयार कर दिया गया था। यह एक ऐसा काम था जो 40 साल पहले शिकागो के अनुयायियों द्वारा अब्दुल बहा को अर्पित किए गए एक आवेदनपत्र और अब्दुल बहा द्वारा प्रदान की गई अनुमति के साथ शुरू हुआ था और जो प्रभुधर्म के उस शताब्दी समारोह के 17 माह पहले ही पूरा हो गया था।

यह अद्वितीय भवन एक धीरे–धीरे विकसित हो रही प्रशासनिक व्यवस्था का फल है तथा प्रथम बहाई शताब्दी में निर्मित की गई सबसे भव्य इमारत और भविष्य की सभ्यता का प्रतीक एवं पूर्व लक्षण है। यह उत्तर अमेरिकी महाद्वीप के हृदय में, लेक मिशिगन के पश्चिमी किनारे पर स्थित है और सात एकड़ से कुछ कम क्षेत्र के अपने खुद के मैदानों से घिरी हुई है। अमेरिकी समुदाय द्वारा इसे एक मिलियन से भी अधिक डालर की लागत से बनाया गया है। इस राशि में पूरब और पश्चिम के ईसाई, मुसलमान, यहूदी, ज़ोरास्ट्रीयन, हिन्दू एवं बौद्ध पृष्ठभूमि के जाने–माने अनुयायियों द्वारा समय–समय पर दिया गया स्वैच्छिक अंशदान भी शामिल है। अपने आरम्भिक दौर में यह इमारत अब्दुल बहा से जुड़ी रही, जबकि अपने निर्माण के अन्तिम चरणों में यह महानतम पावन पात, पावनतम शाखा और उनकी माता की यादों से जुड़ी रही। यह इमारत एक बिल्कुल सफेद पत्थर से सजी नौ–कोण और नौ–पक्षीय संरचना है। इसका रूपांकन नवीनतम और अतुलनीय है; यह अपने आधार की परिधि पर घूमती हुई सीढ़ियों से ऊपर उठती है, इसके ऊपर एक भव्य और सुन्दर गुम्बद है, जिस पर सजावटी और रचनात्मक महत्व की समरूपता से जड़ी गईं नौ ऐसी शुन्डाकार कमानियाँ हैं जो इसकी चोटी तक पहुँचती हैं और अन्त में एक ऐसी सामूहिक इकाई में मिल जाती हैं जो आसमान की ओर

संकेत करती है। इस गुम्बद का ढाँचा कंक्रीट में लिपटे हुए संरचनात्मक स्टील से बना है, और इसकी सजावट की सामग्री ऐसे पारदर्शी पत्थरी बिल्लौर, धुंधले पत्थरी बिल्लौर और सफेद पोर्टलैंड सीमेन्ट से बनी है जिनमें एक ऐसी स्पष्ट जालीदार बनावट दी गई है, जो पत्थर की तरह सख्त और टिकाऊ है जो किसी भी तत्व के लिए अभेद्य है और एक जालीदार लेस जैसे नाजुक रूपांकन में ढली हुई है। इसके तलघर की ज़मीन से लेकर इसके गोलार्द्ध जैसे गुम्बद को जकड़ने वाली कमानियों की चोटी तक, यह इमारत 191 फुट ऊँची है। इसके गुम्बद की ऊँचाई 49 फुट तथा बाहरी चौड़ाई 90 फुट है। दिन में रोशनी के प्रवेश के लिए और रात को प्रकाश फैलाने के लिए गुम्बद के एक–तिहाई ऊपरी भाग को छिद्रित किया गया है। इस इमारत को 45 फुट ऊँची मीनारों का सहारा दिया गया है और इसके 9 द्वारों के ऊपर, जिनमें से एक की दिशा अक्का की ओर है, बहाउल्लाह के लेखों से चयनित नौ उद्धरण लिखे गए हैं, साथ ही इसके प्रत्येक द्वार के ऊपर बने मेहराब के मध्य में महानतम नाम लिखा गया है। इसे विशेष रूप से आराधना के लिए समर्पित किया गया है। यह समस्त धर्मानुष्ठानों और कर्मकाण्डों से रहित है। इसमें एक सभागार है जिसमें 1600 व्यक्तियों के बैठने का स्थान है और इसे ऐसी समाज–सेवी सहायक संस्थाओं द्वारा पूरक बनाया जायेगा जो इसके आसपास स्थापित की जायेंगी, जैसे अनाथाश्रम, अस्पताल, गरीबों के लिए औषधालय, विकलांगों के लिए आश्रय, यात्रियों के लिए हॉस्टल और कला एवं विज्ञान के अध्ययन के लिए कॉलेज। इस मंदिर के निर्माण से बहुत पहले से ही, जबकि इसकी आन्तरिक सजावट का काम अभी शुरू भी नहीं हुआ था, संयुक्त राज्य एवं अन्य देशों की पब्लिक प्रेस, टेक्निकल पत्रिकाएँ और अन्य पत्रिकाओं में ऐसी रूचिकर टिप्पणियाँ प्रकाशित की गई थीं, जिन्होंने अब्दुल बहा की अपेक्षाओं और आशाओं को उचित ठहराया। इसके नमूने को ऐसे कला केन्द्रों, चित्रशालाओं, राज्य–स्तरीय मेलों, एवं राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में प्रदर्शित किया जाता रहा, जिनमें सन् 1933 में शिकागो में आयोजित सेंचुरी ऑफ प्रोग्रेस एग्ज़िबिशन शामिल है, जहाँ हॉल ऑफ रिलिजन्स में से प्रतिदिन गुज़रने वाले कम से कम दस हजार लोगों ने प्रतिदिन इसे देखा होगा। इसकी प्रतिकृति को शिकागो के विज्ञान एवं

उद्योग संग्रहालय में स्थाई रूप से प्रदर्शित किया गया है। यहाँ पर, दूर और पास से लगभग हर देश के लोग आते हैं। जून, 1932 से लेकर अक्टूबर, 1942 तक इन आगंतुकों की संख्या, जो विश्व के प्रत्येक देश के होते है, 1,30,000 से भी अधिक थी। विश्वास के साथ यह कहा जा सकता है कि बहाउल्लाह के धर्म के इस *"मौन शिक्षक"* ने उनके धर्म का ज्ञान और इसकी शिक्षाओं को फैलाने में जिस प्रकार अपना योगदान दिया है, उसकी तुलना में इसकी प्रशासनिक व्यवस्था के अन्दर कार्य कर रही कोई भी ऐजेन्सी इसके पास भी नहीं आ सकी है।

स्वयं अब्दुल बहा ने यह भविष्यवाणी की है कि, *"जब अमेरिका में मश्रिकुल–असकार की नींव डाली जायेगी और जब वह दिव्य भवन बनकर तैयार हो जायेगा, तब अस्तित्व जगत में एक अद्भुत और रोमांचकारी हलचल प्रकट होगी..... । प्रकाश के इस बिन्दु से, ईश्वर के धर्म को फैलाती हुई और ईश्वर की शिक्षाओं को बढ़ावा देती हुई शिक्षण की चेतना दुनिया के सभी भागों में प्रवेश कर जायेगी।"* दिव्य योजना की पातियों में उन्होंने यह पुष्टि की है *"इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इस मश्रिकुल–असकार से हज़ारों मश्रिकुल–असकार पैदा होंगे।"* उन्होंने आगे लिखा है *"यह, धरती पर ईश्वरीय साम्राज्य के शुभारम्भ का संकेत देता है।"* और एक बार फिर वे कहते हैं : *"यह, उस महान महाद्वीप के बीचोंबीच लहराता हुआ एक प्रत्यक्ष ध्वज है।"* जब वे इस मंदिर के लिए भूमि अर्पण कर रहे थे, तब उन्होंने यह घोषित किया था कि *"पूरब और पश्चिम में हज़ारों मश्रिकुल–असकार स्थापित किए जायेंगे, लेकिन पश्चिम में बनाया जाने वाला प्रथम मश्रिकुल–असकार होने के नाते, इसका महत्व बहुत बड़ा है।"* इस इमारत के बारे में उन्होंने आगे कहा है कि, *"मश्रिकुल–असकार का यह संगठन, आने वाली सदियों के लिए एक उदाहरण पेश करेगा और मातृ का स्थान ग्रहण करेगा।"*

इस मंदिर के निर्माता ने स्वयं यह प्रमाणित किया है कि, "इसका शुभारम्भ मनुष्य की ओर से नहीं हुआ है, क्योंकि, जिस प्रकार संगीतकारों, कलाकारों, और कवियों को अपनी प्रेरणा एक दूसरे लोक से प्राप्त होती है उसी प्रकार, अपने प्रयासों के इतने वर्षों के दौरान इस मंदिर का निर्माता भी इस बात के प्रति

सचेत रहा है कि अपनी महिमा के लिए बनाये गए इस मंदिर के सृजनकर्ता बहाउल्लाह थे।" उन्होंने आगे लिखा है कि, "इस नवीन रूपांकन में.....एकता के सबसे महान बहाई सिद्धान्त को सांकेतिक रूप से बुना गया है, सभी धर्मों की एकता एवं सम्पूर्ण मानवजाति की एकता। इसमें गणित के अंकों का ऐसा सम्मिश्रण है जो ब्रह्माण्ड की रेखाओं का प्रतीक है और वृत्त में एवं वृत्त के भीतर वृत्त के इनके पेचीदा विलय में, हमें सभी धर्मों का एक ही धर्म में विलय होना दिखायी देता है।" एक बार फिर, "कुल मिलाकर 18 सोपानों का एक वृत्त इस इमारत को बाहर से घेरे रहेगा और सभागृह की ओर ले जायेगा। ये 18 सोपान, बाब के प्रथम 18 जीवित अक्षरों के प्रतीक हैं और जिस द्वार की ओर ये ले जाते हैं, वह द्वार स्वयं बाब का प्रतीक है।" चूँकि धर्मों की मूल शिक्षाओं का भाव समान था..... इसलिए बहाई मंदिर में एक ऐसी मिश्रित वास्तुशैली का उपयोग किया गया है जो प्रत्येक महान वास्तुशैली का सार व्यक्त करती है और इन्हें सम्पूर्ण रूप से जोड़ती है।"

जून 1920 में, न्यूयॉर्क में इंजिनियरिंग सोसाईटीज़ बिल्डिंग में आयोजित की गई एक प्रदर्शनी में प्रदर्शित किए गए प्लास्टर से बने इस मंदिर के मॉडल को देखकर आर्किटेक्चरल लीग के अध्यक्ष, प्रसिद्ध वास्तुकार एच. वैन. ब्यूरेन मागोनिगल ने घोषित किया कि, "13वीं शताब्दी के बाद, वास्तुकला की यह पहली नई संरचना है।" इसके अतिरिक्त उन्होंने कहा है कि, "इसके निर्माता ने प्रकाश के एक ऐसे मंदिर की कल्पना की है जिसमें, जैसा कि आमतौर पर समझा गया है, ढाँचे को छिपाया जाना है, जहाँ तक सम्भव हो दिखाई देने वाले सहारों का उपयोग नहीं किया जाना है और पूरी बनावट को सपनों का एक स्वर्गिक अस्तित्व प्रदान किया जाना है। यह एक जालीदार घेरा है जिसमें प्रकाश की संरचना को सुरक्षित रखा गया है। धरती और गगन के बीच खड़ा किया गया जाल का यह एक ऐसा आश्रय है जिसे प्रकाश द्वारा आर–पार भेद दिया गया है, एक ऐसा प्रकाश जो आंशिक पैमाने पर इसके रूप को छिपा देगा और इसे एक कल्पना की वस्तु बना देगा।"

"आर्किटेक्चरल रेकॉर्ड" नामक एक जाने माने प्रकाशन में एक लेखक ने लिखा है कि, "इस मंदिर के स्तम्भों और चारों ओर के दरवाज़ों एवं खिड़कियों

के ऊपर बने ज्यामितिक रूपों में व्यक्ति को विश्व के सभी धार्मिक चिन्ह दिखायी देते हैं। यहाँ स्वास्तिक, सूली, त्रिकोण और दोहरे त्रिकोण या छः कोनों वाला सितारा (सॉलोमन की मुहर) भी है, लेकिन इससे भी ज़्यादा आध्यात्मिक सूर्य का महान प्रतीक, वह पाँच कोनों वाला सितारा है; साथ ही यूनानी क्रॉस, रोम का क्रॉस और इन सबसे ऊपर श्रेष्ठ, वह अद्‌भुत नौ कोनों वाला सितारा है जो कि इस मंदिर की संरचना में ही प्रकट होता है, और इसके अलंकरण में आज के संसार की आध्यात्मिक महिमा का ध्यान बारबार सामने आता है।"

संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रसिद्ध मूर्तिकारों में से एक जॉर्ज ग्रे बर्नार्ड के कथन के अनुसार, यह "गॉथिक (प्राचीन) युग से लेकर अब तक की महानतम कृति" है, और "मैंने आज तक इसके जैसा सुन्दर कुछ भी नहीं देखा।"

प्रोफेसर लुईगी क्वागलिनों, टूरिन में वास्तुशिल्प के पूर्व प्राध्यापक ने इस मंदिर के मॉडल को देखने के बाद कहा कि, "यह एक ऐसी नई कृति है जो विश्वभर में वास्तुशिल्प में क्रान्ति ला देगी, और मैंने आज तक इसके जैसा सुन्दर कुछ भी नहीं देखा। बेशक, इतिहास में यह एक स्थाई पृष्ठ ग्रहण करेगा। यह एक दूसरे ही लोक से प्रकट हुआ है।"

जब न्यूयॉर्क की केवोक्रियन गैलेरी में इस मंदिर का एक मॉडल प्रदर्शन के लिए रखा गया था, तब न्यूयॉर्क टाइम्स के पत्रिका वाले भाग में शरविन कोडी ने लिखा कि "अमेरिका के निवासियों को यह समझने के लिए कुछ देर यहाँ रुकना पड़ेगा कि इस इमारत में एक कलाकार ने धार्मिक संयुक्त राज्य की अवधारणा को गढ़ दिया है।" और अन्त, में बहाई विश्व के वर्तमान या भविष्य के इस सबसे पावन उपासना मंदिर की विशेषताओं और इसमें समाहित किए गए आदर्शों पर इलिनाई के विश्वविद्यालय के फाइन एन्ड अप्लाईड आर्ट्स कॉलेज के अध्यक्ष डॉ. रेक्सफोर्ड न्यूकोम्ब का यह कथन, *"प्रकाश का यह मंदिर"* मनुष्य के अनुभवों के क्षेत्र के सामने नौ महान द्वार खोलता है जो प्रत्येक जाति और देश के, प्रत्येक आस्था और विश्वास के, आज़ादी या दासता की प्रत्येक स्थिति के स्त्री पुरूषों को अपने अन्दर आकर उस सम्बन्ध और

भाईचारे को स्वीकार करने के लिए आमंत्रित करता है जिसके बगैर यह आधुनिक जगत बहुत कम आगे बढ़ पायेगा....। इसका गुम्बद, जो कि रूप में नुकीला है, और भी उच्च एवं बेहतर चीज़ों की ओर उसी प्रकार निशाना साध रहा है जिस प्रकार मध्यकालीन बड़े गिरजाघरों की आकांक्षी रेखाएँ किया करती थीं। यह इमारत, न केवल अपने प्रतीक से, बल्कि इसके रचनात्मक औचित्य और रूप की मनोरमता के माध्यम से एक ऐसी सुन्दरता प्राप्त करती है कि रोम में सेंट पीटर के बेसिलिका पर बने माईकल एन्जेलो के गुम्बद के निर्माण से लेकर आज तक कोई भी गुम्बदनुमा संरचना इसकी बराबरी नहीं कर सकती।"

बहाई संस्थाओं पर आक्रमण

बहाउल्लाह के धर्म की प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना का संकेत देने वाली संस्थाएँ उन आक्रमणों और अत्याचारों से अछूती नहीं थीं जो इस व्यवस्था को जन्म देने वाले धर्म ने सत्तर साल से भी अधिक समय तक सहन की थीं और जिनसे यह अभी भी पीड़ित है। एक ऐसे समुदाय के उभरने से जो एक ऐसे विश्वधर्म का दावा प्रस्तुत कर रहा था, जिसकी उपशाखाएँ पाँच महाद्वीपों में फैली हुई थीं, जो विभिन्न प्रकार की जातियों, भाषाओं, वर्गों और धार्मिक परम्पराओं का प्रतिनिधित्व करता था; जिसका साहित्य पूरी दुनिया में फैलकर इसकी शिक्षाओं को कई भाषाओं में फैला रहा था; जो स्पष्ट दूरदर्शिता वाला, निडर, सजग और अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए दृढ़संकल्प था और दिव्य रूप से प्रदान की गई प्रशासनिक व्यवस्था के यंत्र के द्वारा जुड़ा था। जो गैर–साम्प्रदायिक, गैर–राजनीतिक और अपने नागरिक दायित्वों के प्रति वफादार होते हुए भी अपने स्वरूप में राष्ट्रवाद से ऊपर था; जो अपने सामुदायिक जीवन को विनियमित करने वाले कानूनों का पालन करने में दृढ़ था। ऐसे समुदाय का एक ऐसी दुनिया में उभरना जो पूर्वाग्रह में डूबी हुई थी, जो अपनी कल्पना द्वारा गढ़े गए ईश्वर को पूजती थी, जो आन्तरिक बंटवारों के कारण टूट कर बिखर चुकी थी और जो आँखें मूंदकर पुराने सिद्धान्तों और दोषपूर्ण आदर्शों से लिपटी थी, ऐसी दुनिया में कभी न कभी तो ऐसा संकट पैदा होना ही था। यद्यपि यह उन अत्याचारों से कुछ कम गम्भीर नहीं था, जिन्होंने आरम्भिक दौर में ही इस समुदाय के संस्थापकों और उनके प्रथम अनुयायियों को घेर लिया था। इस समुदाय के साथ जुड़ी प्रशासनिक व्यवस्था पर अन्दर

के ऐसे शत्रुओं ने आक्रमण किया था जिन्होंने या तो इसके ईश्वरप्रदत्त अधिकार के विरूद्ध विद्रोह किया था अथवा अपने धर्म को पूरी तरह त्याग दिया था या जिस पर बाहर के राजनीतिक या धार्मिक नेताओं ने वार किया था। ऐसी नवजात प्रशासनिक व्यवस्था ने अपने आरम्भ से और अपने विकास के प्रत्येक चरण में, उन ताकतों की ओर से कठोर आघात महसूस किया था जिन्होंने इसके फलते–फूलते जीवन का दम घोंटने के और इसके उद्देश्य को धुंधला करने के निरर्थक प्रयास किए थे।

अपनी नीयत और उग्रता में बढ़ने वाले और विश्वभर में आवश्यक हलचल पैदा करने वाले इन आक्रमणों के बारे में स्वयं अब्दुल बहा ने उस समय जब उनके द्वारा उनकी वसीयत में इस दिव्य व्यवस्था की रूपरेखाएँ निर्धारित की जा रहीं थीं तब, उल्लेखनीय रूप से संकेत करते हुए पहले ही यह कह दिया था : *"शीघ्र ही, दूर और पास से, अफ्रीका एवं पूरे अमेरिका में, समूहों की चिल्लाहट, यूरोपीय और तुर्की लोगों का रोना, भारत और चीन का कराहना सुनाई देगा। उसके धर्म को रोकने के लिए वे सब मिलकर अपनी पूरी ताकत के साथ उठ खड़े होंगे। तब संविदा की सेना से संबलित होकर उस स्वामी के शूरवीर उठ खड़े होंगे और इस श्लोक की सच्चाई को प्रकट करेंगें कि : 'हारने वालों के बीच उत्पन्न होने वाली उलझन देखिए !'"*

एक से अधिक देशों में पहले ही इस अविनाशी, इस विश्वव्यापी व्यवस्था के न्यासियों एवं चुने हुए प्रतिनिधियों को इसके दावों से अनभिज्ञ अथवा इसके सिद्धांतों के प्रतिरोधी या फिर इसकी बढ़ती हुई ताकत से भयाक्रांत होकर ऐसे नागरिक अधिकारियों या धार्मिक अदालतों द्वारा बुलवाया जा चुका था और उनसे कहा जा चुका था कि या तो वे इस धर्म से अपना सम्बन्ध–विच्छेद कर लें या फिर इसकी गतिविधियों को कम करें। इसके पावन स्थलों और इमारतों के विरूद्ध पहले ही एक ऐसा आक्रामक हाथ उठ चुका था जो ईश्वर के बदला लेने वाले कोप से बेखबर था। पहले ही कुछ देशों में इसके रक्षकों और शूरवीरों को धर्म विरोधी घोषित किया जा चुका था या कानून और व्यवस्था को उलटने वाले कहकर कलंकित किया जा चुका था या कल्पनाएँ गढ़ने वाले ऐसे लोग मानकर अपमानित किया गया था, जो देशभक्त नहीं थे जो अपने नागरिक

कर्त्तव्यों और ज़िम्मेदारियों के प्रति लापरवाह थे अथवा जिन्हें अपनी गतिविधियाँ रोकने और अपनी संस्थाओं को समाप्त करने के लिये अटल रूप से आदेशित किया गया था।

पावन भूमि में, इस व्यवस्था के विश्व केन्द्र में, जहाँ इसका हृदय है, जहाँ इसके संस्थापकों के पावन पार्थिव अवशेषों का विश्राम–स्थल है, जहाँ से इसके उद्देश्यों को प्रकट करने वाली, इसके जीवन को ऊर्जा प्रदान करने वाली और इसके भाग्य को रचने वाली समस्त प्रक्रियाएँ उत्पन्न होती हैं, वहाँ इसके आरम्भ की घड़ी में ही इस पर वह पहला वार हुआ जिसने छोटे और बड़े सब के समक्ष उस नींव की मजबूती की घोषणा कर दी जिस पर इसकी स्थापना की गई थी। अब्दुल बहा के आकस्मिक निधन के पश्चात जिस व्यक्ति की सोयी हुई उम्मीदें जाग उठी थीं उस मुख्य विद्रोही मिर्ज़ा मुहम्मद अली ने जिन बचे–खुचे मुट्ठीभर संविदाभंजकों को पुनः उकसाया, उन्होंने उस अहंकारी मिर्ज़ा बदिउल्लाह के नेतृत्व में, बहाउल्लाह की समाधि की चाबियाँ जबरन छीन लीं और समाधि के रक्षक साहसी व्यक्ति, अबुल–कासिम–ए–खुरासानी को निकाल दिया। साथ ही, यह माँग की कि अधिकारियों द्वारा उनके मुखिया को इस समाधि का कानूनी रक्षक मान लिया जाए। लम्बी जाँच पड़ताल के बाद फिलिस्तीनी अधिकारियों ने अक्का में पदस्थ एक अंग्रेज़ अफसर को निर्देश दिए कि वह इन चाबियों को दोबारा उसी रक्षक के हवाले कर दे। अपनी असफलता से सबक न लेते हुए, इन संविदाभंजकों ने दूसरे तरीके अपनाए ताकि वे अब्दुल बहा के दुःखी किन्तु दृढ़ शिष्यों के बीच दरार पैदा कर सकें और उन संस्थाओं की नींव ही तोड़ दें जिनका निर्माण करने के लिए उनके अनुयायी परिश्रम कर रहे थे। उन्होंने बहाई प्रशासनिक व्यवस्था के निर्माणकर्ता को प्रेरणा देने वाले आदर्शों के बारे में ग़लत बयान दिए और हालाँकि पहले से कम, फिर भी ऐसे व्यक्तियों के साथ विनाशकारी पत्राचार कायम रखे, जिनकी वफादारी को खत्म करने की उन्हें पूरी उम्मीद थी। उन्होंने उन अधिकारियों के साथ, जिनसे वे मिल सकते थे, अपने सम्पर्क के दौरान सच को जानबूझकर बदल दिया; उन्होंने बहाउल्लाह की हवेली का एक भाग खरीदने के लिए रिश्वत और धमकी जैसे हथकंडे अपनाने के प्रयास भी किए, उन्होंने बाब की

समाधि के आसपास की कुछ ज़मीन को खरीदने से बहाई समुदाय को रोकने के प्रयास किए और उन योजनाओं को असफल करने की कोशिशें कीं, जिनके द्वारा कुछ सम्पत्तियों को कानूनी मान्यता प्राप्त आध्यात्मिक सभाओं के नाम कर के एक मजबूत आधार प्रदान किया जाना था। इस प्रकार ये संविदाभंजक कई वर्षों तक निरन्तर प्रयास करते रहे, लेकिन संविदा को तोड़ने वाले मुख्य व्यक्ति की मौत ने उनका हौसला पस्त कर दिया।

बहाउल्लाह के स्वर्गारोहण के पश्चात, जो संविदाभंजक बगैर किसी रोकटोक के उनकी हवेली में निवास कर रहे थे, उन्होंने उस हवेली को छोड़ दिया। वह हवेली जो इनकी घोर लापरवाहियों के कारण जीर्णता की दुःखद स्थिति में पहुँच चुकी थी। इस हवेली की मरम्मत के बाद अब्दुल बहा के मन में लम्बे समय से संजोयी इच्छा पूरी हुई। इस हवेली में बिजली लगाने के उद्देश्य से एक अमेरिकी अनुयायी द्वारा स्थापित किए गए विद्युत–संयत्र के कारण यह रोशनी से जगमगा उठी। इसके जिस कमरे में बहाउल्लाह का स्वर्गवास हुआ था, उसमें रखे हुए एक चिरागदान को छोड़कर, इसके पूर्व निवासी इसके सभी कीमती स्मारक चिन्हों को उठा ले गए थे। इसके बाद इसके सभी कमरों को दोबारा सजाया गया। आज इसकी दीवारों पर बहाई ऐतिहासिक दस्तावेज़ों का, स्मारक चिन्हों का और कम से कम चालीस भाषाओं में बहाई साहित्य के पाँच हजार से भी अधिक ग्रंथों का संग्रह है। अक्का में और कार्मल पर्वत पर स्थित बहाई संस्थाओं और सम्पत्तियों को सरकारी कर से पहले ही दी गई छूट अब इस हवेली पर भी लागू हो गई। और अन्त में एक निजी निवास से इसे एक ऐसे तीर्थ केन्द्र में रूपान्तरित कर दिया गया जिसे देखने के लिए बहाई और जिज्ञासु, सभी समान रूप से आते हैं। इन सभी बातों ने उन लोगों की बचीखुची उम्मीदों पर भी पानी फेर दिया जो अब भी बहाउल्लाह की संविदा के प्रकाश को बुझाने के निरर्थक प्रयास कर रहे थे। इसके अतिरिक्त, कार्मल पर्वत पर बाब की समाधि के परिसर में स्थित ज़मीन को खरीदने में और इनकी सुरक्षा के काम में मिलने वाली सफलता के कारण, तथा इनमें से कुछ को कानूनी तौर पर स्थापित, अमेरिकी बहाई राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा की फिलिस्तीनी शाखा के नाम करने में मिलने वाली

सफलता के कारण और अब्दुल बहा के सम्पूर्ण सेवाकाल के दौरान षड़यन्त्र रचने वाले मुख्य स्रोत की मृत्यु के कारण इन शत्रुओं ने अपने प्रयासों की निरर्थकता और अपने उद्देश्य की आशाहीनता देखी।

जिस दौरान संविदाभंजकों द्वारा बहाउल्लाह की समाधि के रखवाले के हाथ से समाधि की चाबियाँ छीनी गई थीं, लगभग उसी समय इराक के शिया मुसलमानों ने एक अन्य पवित्र स्थान पर कब्ज़ा कर लिया था, जो स्वरूप में और भी गम्भीर एवं और भी दुष्ट परिणामों को जन्म देने वाला था। यह स्थान बहाउल्लाह का वह घर था, जिसमें वे अपने निर्वासन की लगभग पूरी अवधि के दौरान रहे थे, जिसे उन्होंने खरीद लिया था और जिसे बाद में एक तीर्थ स्थान बनाया गया था, जो बग़दाद से उनके चले जाने के बाद भी लगातार बहाइयों के कब्ज़े में था। ऐसे पवित्र बहाई स्थल को इराक के शिया मुसलमानों ने गैरकानूनी ढंग से अपने अधिकार में कर लिया था। अब्दुल बहा के स्वर्गवास के एक साल पहले इराक में शासन बदलने के बाद अब्दुल बहा के निर्देशानुसार इस घर के पुनःनिर्माण का काम आरम्भ किया गया। इसके कारण उत्पन्न होने वाले इस संकट के बढ़ने पर धीरे–धीरे इसकी चर्चा फैलने लगी और न्यायालयों के लिए यह विषय विचार का मुद्दा बन गया। सबसे पहले बग़दाद की स्थानीय शिया जाफारिय्याह, फिर 'पीस कोर्ट', उसके बाद 'कोर्ट ऑफ फर्स्ट इन्सटान्स' उसके पश्चात ईरान के 'कोर्ट ऑफ अपील में' और अन्त में यह मामला उस 'लीग ऑफ नेशन्स' में एक विचाराधीन मुद्दा बन गया, जो अब तक की सबसे बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था थी और जिसे अपने अध्यादेश में शामिल किए गए सभी देशों का निरीक्षण और नियंत्रण करने का अधिकार था। यद्यपि कई मिले–जुले धार्मिक और राजनीतिक कारणों से इस समस्या का अब तक कोई हल नहीं निकल पाया है, फिर भी इसने पहले ही उल्लेखनीय रूप से स्वयं बहाउल्लाह की भविष्यवाणी को पूरा कर दिया है और जिस समय ईश्वर की ओर से इसकी समस्याओं के समाधान के साधन उत्पन्न हो जायेंगे, उस समय अपने नियत समय में, यह उस ऊँचे स्थान को प्राप्त करेगा जो बहाउल्लाह ने अपनी पातियों में इसके लिए निर्धारित किया है। जिन कट्टरवादी शत्रुओं का इस पर कोई अधिकार ही नहीं था, उनके द्वारा इस पर

अपना अधिकार किए जाने से बहुत पहले बहाउल्लाह ने यह भविष्यवाणी की थी कि, *"प्रत्येक दृष्टि–सम्पन्न नेत्र से आँसू बह निकलेंगे।"*

बग़दाद के बहाइयों की आध्यात्मिक सभा इस पवित्र सम्पत्ति का उपयोग नहीं कर सकती थी क्योंकि अपील की अदालत के बहुमत द्वारा लिए गए उस प्रतिकूल निर्णय के कारण, जिसके द्वारा निचली अदालत के निर्णय को उलटकर यह सम्पत्ति शिया समुदाय के हवाले कर दी गई थी। इस कोर्ट का फैसला लागू किए जाने के बाद शिया समुदाय को इस बात के लिए उकसाया गया था कि वे इस इमारत को वक्फ (एक पावन संगठन) की सम्पत्ति बना दें और इसका नाम "हुसैनिय्येह" रख दें ताकि उनके लाभ को और भी समर्थन मिल सके। बग़दाद की स्थानीय आध्यात्मिक सभा को उस बातचीत की निरर्थकता समझ में आ गई जो यह पिछले तीन साल से बग़दाद के नागरिक प्रशासन के साथ इसलिए कर रही थी, ताकि उसके साथ किए गए गलत निर्णय को ठीक किया जा सके। अतः इराक के बहाइयों के राष्ट्रीय प्रतिनिधि होने के नाते, उन्होंने 11 सितम्बर, 1928 को इराक के उच्चायोग के माध्यम से और लीग ऑफ नेशन्स की संविदा की धारा 22 के अनुसार, लीग के पर्मानेन्ट मैनडेट्स कमीशन के समक्ष एक आवेदन प्रस्तुत किया जो स्वीकार हुआ और नवम्बर 1928 को इस संस्था द्वारा स्वीकार कर अनुमोदित किया गया। मैंडेटरी पावर द्वारा इस आवेदन के सम्बन्ध में इसी कमीशन को दिया गया एक ज्ञापन–पत्र, स्पष्ट रूप से कहता है कि इस भवन पर "शिया समुदाय का कोई अधिकार नहीं है" और जाफारिय्याह अदालत का निर्णय "स्पष्ट रूप से गलत," "अन्यायपूर्ण" एवं "पूर्णतया धार्मिक पूर्वाग्रह से प्रेरित था", इसके परिणामस्वरूप बहाइयों का इस घर से निकाला जाना "गैरकानूनी" है और प्रशासन का यह कृत्य "अत्यन्त अनियमित" था तथा ऐसा अंदेशा था कि अपील की अदालत का फैसला "राजनीतिक हित से प्रभावित" है।

लीग ऑफ नेशन्स की परिषद के समक्ष आयोग द्वारा प्रस्तुत की गई रिपोर्ट में कहा गया है, "यह आयोग परिषद का ध्यान उन तर्कों और निर्णयों की ओर आकर्षित करना चाहता है जो आवेदन की जाँच करने पर ज्ञात हुए हैं। आयोग यह अनुशंसा करता है कि परिषद को अंग्रेज़ सरकार से कहना

चाहिए कि जिस अन्याय से आवेदक पीड़ित हुए हैं उसे तत्काल दूर करने के लिए वे इराकी सरकार के समक्ष अभ्यावेदन प्रस्तुत करें।" परमानेन्ट मैनडेट्स कमीशन के जेनेवा में आयोजित किए गए 14वें सत्र के कार्य विवरण में आयोग द्वारा प्रस्तुत की गई यह रिपोर्ट प्रकाशित की गई और बाद में इसका अरबी अनुवाद इराक में भी प्रकाशित किया गया।

आयोग के सत्रों के दौरान वहाँ उपस्थित ब्रिटेन के अधिकृत प्रतिनिधि ने आगे कहा : "मैंन्डेटरी पावर ने इस बात को समझ लिया है कि बहाइयों के साथ अन्याय हुआ है", साथ ही इस सत्र में इस सच्चाई की ओर संकेत किया गया कि शियाओं के इस कृत्य ने इराक के संविधान और वहाँ के कानून को भंग किया है। इसके अतिरिक्त फिनलैंड के प्रतिनिधि ने परिषद को दी गई अपनी रिपोर्ट में यह घोषणा की, कि यह "अन्याय मात्र धार्मिक आवेग का परिणाम है" और यह माँग की कि "आवेदक के साथ किए गए अन्याय को दूर किया जाना चाहिए।"

इस रिपोर्ट के साथ–साथ आयोग की टिप्पणियों और निष्कर्षों पर विचार करने के बाद लीग की परिषद ने, 4 मार्च, 1929 को अपनी ओर से, एकमत होकर निर्णय लिया। बाद में इस निर्णय का अनुवाद किया गया और इसे बग़दाद के समाचार पत्रों में प्रकाशित किया गया। इस निर्णय में मैंन्डेटरी पावर को निर्देशित किया गया था कि वे "इन आवेदकों द्वारा सहे गए अन्यायों को दूर करने के लिए इराक की सरकार के समक्ष अभ्यावेदन प्रस्तुत करें।" तदनुसार, सेक्रेटरी जनरल को यह निर्देश दिये गए कि वह, मैंन्डेटरी पावर को और सम्बन्धित आवेदकों को आयोग के निष्कर्षों से अवगत करा दे। अंग्रेज सरकार ने इराक में पदस्थ अपने उच्चायोग के माध्यम से यह निर्देश इराक की सरकार तक पहुँचा दिया।

ब्रिटेन के विदेश मंत्री मिस्टर आर्थर हेन्डरसन की ओर से 12 जनवरी 1931 को लीग ऑफ नेशन्स के सचिवालय को सम्बोधित एक पत्र में कहा गया था कि, "परिषद के निष्कर्ष के प्रति इराक की सरकार ने बहुत ध्यानपूर्वक विचार किया" और "अन्त में, बग़दाद के कुछ मकानों के सम्बन्ध में बहाई समुदाय द्वारा व्यक्त की गई राय पर विचार करने के लिए और इस मामले को निष्पक्ष रूप से निपटाने के लिए सलाह देने वाली एक विशेष समिति बनाने का निर्णय लिया

गया।" इसके अतिरिक्त, इस पत्र में यह बताया गया कि इस समिति ने अगस्त 1930 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसे सरकार द्वारा स्वीकार कर लिया गया। बहाई समुदाय ने इस समिति की सलाह को "सैद्धांतिक तौर पर स्वीकार" कर लिया था और बग़दाद के नागरिक प्रशासन ने यह निर्देश दिए कि, "आगामी वित्तीय वर्ष के दौरान समिति की सलाह पर अमल करने के लिए विस्तृत योजनाएँ और लागत–अनुमान तैयार कर लिए जायेंगे।"

इस महत्वपूर्ण मामले के आगे के इतिहास के बारे में कहने की आवश्यकता नहीं कि इस विषय में किए गए विस्तृत विचार विमर्श और उसके बाद शुरू होने वाले विलम्ब और जटिलताएँ; उन "सौ से भी अधिक" चर्चाओं के बारे में, जिनमें खुद राजा, उसके मंत्री और सलाहकार शामिल हुए थे; जेनेवा में सन् 1929, 1930, 1931, 1932 और 1933 में आयोजित किए गए मैन्डेट्स कमीशन के क्रमिक सत्रों के रिकार्ड में दर्ज की गईं "खेद", "आश्चर्य" और "चिन्ता" की अभिव्यक्तियों; शिया समुदाय को प्रेरित करने वाली "असहिष्णुता की भावना", इराकी अदालतों के "पक्षपात", नागरिक प्रशासन की "कमज़ोरी" और "इस अन्याय की जड़ में बसे धार्मिक कट्टरपन की आयोग के सदस्यों द्वारा की गई निन्दा, "आवेदकों की अत्यन्त समझौताकारी रुचि", प्रस्तावों की उपयुक्तता के सम्बन्ध में उनके "सन्देह" उत्पन्न होने वाली इस परिस्थिति की "गम्भीरता" की उनकी समझ, "न्याय के उस निन्दनीय खण्डन", जिसके कारण बहाइयों ने कष्ट सहे और अन्त में, उस "नैतिक कर्ज़" के बारे में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है, जो सरकार द्वारा चुकाया जाना था, एक ऐसा कर्ज़ जिसे चुकाना इराक का कर्त्तव्य था। भले ही एक राष्ट्र के रूप में उसकी हैसियत में कोई भी बदलाव क्यों न आए।

ब्रिटेन के उच्चायुक्त और इराक के प्रधानमंत्री की अकाल मृत्यु के दुर्भाग्यपूर्ण परिणामों का वर्णन, इराक को लीग ऑफ नेशन्स का सदस्य बनाये जाने के परिणामस्वरूप ब्रिटेन के पास वर्तमान जनादेश के अन्त का वर्णन; स्वयं राजा की दुःखद मृत्यु का वर्णन; शहर नियोजन योजना के न होने के कारण उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों का वर्णन; जनवरी 1932 में कार्यकारी मुखिया द्वारा अपने पत्र में उच्चायोग को दिए गए लिखित आश्वासन का वर्णन; अपनी मृत्यु से पहले, फरवरी 1933 में विदेश मंत्री की मौजूदगी में राजा द्वारा

किए गए वायदे का वर्णन करना कि बहाउल्लाह के मकान का कब्ज़ा वापस ले लिया जायेगा, तथा आगामी वर्ष की बसंत ऋतु में आवश्यक राशि वसूल कर ली जायेगी; इसी विदेश मंत्री द्वारा सुस्पष्ट रूप से कही गई इस बात का वर्णन करना, कि प्रधानमंत्री ने यह आवश्यक आश्वासन दे दिए हैं कि कार्यकारी मुखिया द्वारा पहले ही किया गया वायदा निभाया जायेगा; और अन्त में उस सकारात्मक बात का भी वर्णन करना ज़रूरी प्रतीत नहीं होता, जो जेनेवा में लीग ऑफ नेशन्स की सभा के सत्रों के दौरान, अपने देश का प्रतिनिधित्व करते समय इसी विदेश मंत्री और उसके सहयोगी वित्त मंत्री ने कही थीं कि स्वर्गीय राजा द्वारा किए गए वायदे का पूरा–पूरा सम्मान किया जायेगा।

बस इतना कहना पर्याप्त होगा कि इस अन्तहीन विलम्ब, विरोधों और टाल–मटोल के बावजूद, तथा लीग की परिषद और परमानेन्ट मैन्डेट्स कमीशन द्वारा की गई सिफारिशों पर अमल करने की सम्बन्धित अधिकारियों की स्पष्ट विफलता के बावजूद, विश्व के उच्चतम न्यायालय द्वारा की गई इस यादगार अदालती कार्यवाही से और इसकी सच्चाई और न्याय के उद्देश्य की रक्षा से, प्रभुधर्म को मिलने वाली लोक प्रसिद्धि ने इसके मित्रों को आश्चर्यचकित कर दिया और इसके शत्रुओं को भयभीत कर दिया। बहाउल्लाह के धर्म के रचनात्मक युग के जन्म के समय से, इस धर्म के कट्टर शत्रुओं द्वारा इसके पावनतम स्थलों में से एक पर किए गए अकारण हमले से सरकारों और बड़े सरकारी कार्यालयों पर पड़ने वाले प्रभाव की तुलना यदि हुई भी हो, तब भी शायद ही ऐसी कुछ घटनाएँ होंगी जिन्होंने उच्च स्थानों में प्रतिघात उत्पन्न न किया हो।

स्वयं बहाउल्लाह ने उल्लेखनीय रूप से लिखा है, *"हे ईश्वर के मंदिर, यदि नास्तिकों के हाथों तुम्हारी पावनता का पर्दा ध्वस्त हो जाये तो दुःखी न होना। सृष्टि के संसार में ईश्वर ने तुम्हें अपने स्मरण के रत्न से विभूषित किया है। ऐसे आभूषण को कोई भी व्यक्ति कभी अपवित्र नहीं कर सकता। सभी परिस्थितियों में तुम्हारे स्वामी की आँखें तुम्हारी ओर टिकी रहेंगी।"* एक अन्य

उद्धरण में इसी निवास का उल्लेख करते हुए उन्होंने भविष्यवाणी की है, *"निर्धारित समय आने पर वह स्वामी, सत्य की शक्ति से सभी मनुष्यों की दृष्टि में इसे ऊँचा करेंगे। वे इसे ईश्वरीय साम्राज्य का ध्वज बनायेंगे, वह समाधि जिसके आसपास स्वर्गदूत परिक्रमा करेंगे।"*

बहाउल्लाह की पावन समाधि पर अधिकार करने के अपने सम्मिलित प्रयासों में उनकी संविदा भंग करने वालों द्वारा किए गए दुस्साहसी हमले तथा इराक के शिया समुदाय द्वारा बहाउल्लाह के पावन निवास पर एकतरफा अधिकार के साथ, अब कुछ वर्ष पश्चात एक और कष्टदायक आक्रमण जुड़ गया जो एक ऐसे शत्रु द्वारा किया गया था, जो और भी शक्तिशाली था जिसके निशाने पर प्रशासनिक व्यवस्था का वह ताना–बाना था जो एक लम्बे समय से फलने–फूलने वाले दो समुदायों ने स्थापित किया था, जिसका अन्त इन समुदायों के वास्तविक रूप से टूटने और बहाई जगत के प्रथम मश्रिकुल–असकार एवं उसके आसपास स्थापित की गई कुछ सहायक संस्थाओं के अधिग्रहण के साथ हुआ।

इन समुदायों द्वारा दर्शाए गए साहस, उत्साह और आध्यात्मिक जीवन की शक्ति; इनकी प्रशासनिक संस्थाओं की अत्यन्त व्यवस्थित स्थिति; इनके युवाओं को धार्मिक शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए प्रदान की गई सुविधाएँ; प्रभुधर्म के सिद्धान्तों से जुड़े विचारों वाले कई उदारवादी रूसी नागरिकों द्वारा धर्म परिवर्तन; धर्म, पारिवारिक जीवन की पवित्रता, निजी सम्पत्ति की स्थापना, श्रेणियों के बीच समस्त भेदभाव के खण्डन और मनुष्यों की पूर्ण समानता के सिद्धान्त का इनके द्वारा अस्वीकार किया जाना – इन सभी बातों ने मिलकर अधिकारियों के संदेह को जगा दिया और आगे चलकर उनके भयंकर विरोध को उकसा दिया तथा प्रथम बहाई शताब्दी के इतिहास में सबसे गम्भीर संकट को जन्म दिया।

जब यह संकट बढ़ा और तुर्की एवं कौकेशस के दूर स्थित केन्द्रों तक भी पहुँच गया, तो इसके परिणामस्वरूप इन समुदायों की स्वतंत्रता पर धीरे–धीरे रोक लगा दी गई, इनके निर्वाचित प्रतिनिधियों से पूछताछ की जाने लगी और उन्हें गिरफ्तार किया जाने लगा, मॉस्को, इश्काबाद, बाकू और

उपरोक्त प्रान्तों के अन्य नगरों में इनकी स्थानीय सभाओं और उनसे जुड़े समुदायों को भंग कर दिया गया और सभी बहाई युवा गतिविधियों पर रोक लगा दी गई। इसके साथ ही बहाई स्कूल, बालविहार, पुस्तकालय और सार्वजनिक अध्ययन–कक्ष भी बन्द करवा दिए गए। विदेशों के बहाई केन्द्रों के साथ किए जा रहे हर प्रकार के सम्पर्क पर रोक लगा दी गई। बहाई प्रिंन्टिंग प्रेस, पुस्तकें और दस्तावेज़ जब्त कर लिए गए, बहाई संदेश देने की सभी गतिविधियों को निषिद्ध कर दिया गया, बहाई संविधान को रद्द कर दिया गया, सभी राष्ट्रीय और स्थानीय कोषों को समाप्त कर दिया गया और बहाई बैठकों में जिज्ञासुओं की उपस्थिति पर रोक लगा दी गई।

सन् 1928 ई. के मध्य में इश्काबाद के मश्रिकुल–अश्कार पर धार्मिक इमारतों को अधिग्रहीत करने का कानून लागू कर दिया गया। फिर भी, इस इमारत को पाँच साल के लिए किराये पर लेकर मित्रों ने उपासना मंदिर के रूप में इसका उपयोग जारी रखा। इस अवधि के बाद सन् 1933 में इसे स्थानीय प्रशासन से एक बार फिर पाँच साल के लिए किराये पर लिया गया। 1938 में तुर्किस्तान और कौकेशस में तेज़ी के साथ स्थिति और भी बिगड़ गई, जिसके परिणामस्वरूप पाँच सौ से भी अधिक अनुयायियों को कैद कर लिया गया जिनमें कई महिलाएँ भी सम्मिलित थीं और जिनमें से कई लोगों की मौत हो गई। मित्रों की सम्पत्तियाँ छीन ली गईं और इसके बाद इन समुदायों के कई प्रख्यात सदस्यों को साइबेरिया के ध्रुवीय वनों में और उत्तर ध्रुवीय सागर के निकट स्थित अन्य स्थानों में निर्वासित कर दिया गया। इसके बाद इन समुदायों के अन्य अधिकांश व्यक्तियों को उनकी फारसी राष्ट्रीयता के कारण फारस निर्वासित कर दिया गया और अन्त में, मंदिर को पूरी तरह अधिग्रहित कर एक आर्ट गैलरी में परिवर्तित कर दिया गया।

इसी प्रकार, जर्मनी में भी प्रभुधर्म की प्रशासनिक व्यवस्था जिसके विस्तार और सुगठन में जर्मनी के अनुयायी स्पष्ट रूप से अधिक से अधिक योगदान दे रहे थे, उनके उत्थान और स्थापना के शीघ्र बाद ऐसे दमनकारी उपाय किए गए जो हालाँकि उन कष्टों से कम दुःखद थे जो तुर्किस्तान और

कौकेशस के बहाइयों ने उठाए थे फिर भी, उनके कारण युद्ध के तत्काल पहले के वर्षों में, उस पूरे देश की सभी संगठित बहाई गतिविधियाँ बाधित हो गईं। शान्ति और सार्वभौमिकता पर खुलेआम ज़ोर देने वाले एवं जातिवाद को अस्वीकार करने वाले इस प्रभुधर्म के सार्वजनिक शिक्षण कार्य को सरकारी तौर पर वर्जित कर दिया गया; बहाई सभाओं और उनकी समितियों को भंग कर दिया गया; बहाई अधिवेशनों के आयोजन पर रोक लगा दी गई; राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के पुरालेखों को जब्त कर लिया गया; ग्रीष्मकालीन स्कूल समाप्त कर दिए गए और सभी प्रकार के बहाई साहित्य के प्रकाशन पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

इसके अतिरिक्त, फारस में शीराज़, आबादिह, आर्दिबिल और इस्फहान के साथ–साथ अज़रबैजान एवं खुरासान के कुछ ज़िलों में अत्याचार की छिटपुट घटनाएँ घटीं, जो पूर्व के शक्तिशाली शिया धर्माधिकारियों के भाग्य के पतन के कारण संख्या और हिंसा में कम हो चुकी थीं। इन घटनाओं के अलावा राजधानी और अन्य प्रान्तों में नागरिक प्रशासन ने इस नव स्थापित और अब तक निर्बल प्रशासनिक व्यवस्था पर ऐसे प्रतिबंध लगा दिए जिनका उद्देश्य था इनके कार्य क्षेत्र को सीमित करना, इनकी स्वतंत्रता का हनन करना और इनके आधारों को हानि पहुँचाना।

विपत्तियों की पाठशाला में शिक्षित होने वाला, अपने उत्साह में सदा कायम रहने वाला तथा दृढ़ता से जुड़ा हुआ यह राष्ट्रीय समुदाय धीरे–धीरे और बिल्कुल अनापेक्षित रूप से गुमनामी से बाहर आया; 75 साल तक इस समुदाय से लगातार टकराने वाले और इसे लगभग निगल लेने वाले अमानवीय अत्याचारों की सतत् लहरों के उठने के बावजूद इस समुदाय ने फारस के प्रत्येक प्रान्त में अपने केन्द्र स्थापित कर लिए; साथ ही अपने धर्म की चेतना और सिद्धान्तों को फैलाने, इसके साहित्य का प्रसार करने, इसके नियमों और विधानों को लागू करने, इनका उल्लंघन करने वालों को दण्डित करने, विदेशों में बसे अपने सह–अनुयायियों के साथ सतत् सम्पर्क बनाये रखने और इसकी प्रशासनिक व्यवस्था की इमारतों और संस्थाओं का निर्माण करने के इस

समुदाय के दृढ़संकल्प ने उन लोगों की आशंका और शत्रुता को उकसा दिया जो सत्ता में थे, जिन्होंने या तो इस समुदाय के उद्देश्यों को ग़लत समझ लिया था या जो इसको समाप्त करने पर तुले हुए थे। प्रशासनिक स्वरूप के सभी मामलों में अपने देश के नागरिक कानूनों के प्रति आज्ञाकारी होने वाले इस समुदाय के सदस्य, बहाउल्लाह द्वारा प्रकट किए गए उन आधारभूत आध्यात्मिक सिद्धान्तों और नियमों का पालन करने के प्रति अटल थे, जिनके अनुसार अन्य कार्यों के साथ–साथ, सच्चाई को कसकर थामना, अपने धर्म को न छोड़ना, विवाह एवं तलाक के लिए निर्धारित किए गए आदेशों का पालन करना और बहाउल्लाह द्वारा विहित किए गए पावन दिवसों पर सभी प्रकार के व्यवसायिक कार्यों को रोक देना जैसे आदेशों के अनुपालन ने उन्हें एक ऐसे शासन के विरोध में ला खड़ा किया, जो इस्लाम को देश का धर्म मानता था। इसलिए इसने उन लोगों को किसी भी प्रकार की मान्यता देने से इन्कार कर दिया जिन्हें इस्लाम के आधिकारिक व्याख्याताओं ने पहले ही धर्म विरोधी घोषित कर अपराधी ठहरा दिया था।

जब उन सभी आधिकारिक बहाई संस्थाओं को, जो बहाइयों की निजी सम्पत्तियाँ थीं और पूरी तरह उन्हीं के द्वारा नियंत्रित की जाती थीं, फारस के बहाई समुदाय के प्रतिनिधियों ने इस बात की अनुमति देने से इन्कार कर दिया कि वे बहाई पावन दिवसों पर अपना कामकाज रोक देने के स्पष्ट रूप से प्रकट किए गए नियम का उल्लंघन कर सकते हैं, तब इसके परिणामस्वरूप सरकार ने फारस के बहाई समुदाय के सभी बहाई स्कूलों को बन्द करवा दिया। इसी प्रकार, सभी बहाई विवाह प्रमाण पत्रों को अस्वीकार किया जाना, समस्त बहाई साहित्य की छपाई और वितरण के साथ–साथ देश में इसके प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया जाना; विभिन्न केन्द्रों में बहाई दस्तावेज़ों, पुस्तकों और स्मारक चिन्हों का जब्त किया जाना; कुछ प्रांतों में हज़ीरतुल–कुद्स का बन्द करवाया जाना और कई स्थानों पर इनके फर्नीचर का हड़प लिया जाना; सभी प्रकार के बहाई प्रदर्शनों, सम्मेलनों और अधिवेशनों पर प्रतिबंध लगाया जाना; फारस के बहाई केन्द्रों के बीच पत्राचार एवं विदेशी बहाई समुदायों के साथ यहाँ के केन्द्रों के पत्र–व्यवहार पर कठोर नियंत्रण लगाया जाना एवं इन पत्रों को अक्सर न

पहुँचाया जाना; बहाई धर्म का दृढ़ता से पालन करने के कारण, देश के वफादार और वहाँ के कानूनों का पालन करने वाले बहाई नागरिकों को *"सदाचरण प्रमाण पत्र"* से वंचित रखा जाना; सरकारी कर्मचारियों को नौकरी से मुक्त कर देना, सेना अधिकारियों की पदावनती या छुट्टी, कई ऐसे बहाइयों की गिरफ्तारी, पूछताछ और दण्ड के अलावा उन पर अन्य सज़ाओं का थोपा जाना, जिन्होंने या तो अपने धर्म के आध्यात्मिक सिद्धान्तों का पालन करने की नैतिक अनिवार्यता को टालने से इन्कार कर दिया था या ऐसा कोई भी कार्य करने से इन्कार कर दिया था जो प्रभुधर्म की सार्वभौमिकता और गैर–राजनीतिक स्वरूप के विरूद्ध हो – इन सभी बातों को वह प्रारम्भिक प्रयास समझा जा सकता है जो उस देश में किए गए थे जिसकी मिट्टी पहले ही असंख्य बहाई शहीदों के खून से रंग चुकी थी। इन प्रयासों का उद्देश्य था उस नवजात प्रशासनिक व्यवस्था को स्थापित करने और इसे स्वतंत्र करने के लिए की गई कड़ी मेहनत को निष्फल कर देना, जिसकी जड़ों ने अपनी ताकत साहसपूर्ण त्याग से पाई है।

प्रभुधर्म और इसकी संस्थाओं की मुक्ति एवं मान्यता

जिस समय पूरब और पश्चिम में बहाउल्लाह के अनुयायियों द्वारा उनके धर्म की प्रशासनिक व्यवस्था का ढाँचा तैयार करने के लिए एक साथ प्रारम्भिक कदम उठाये जा रहे थे, तब मिस्र के एक अनजान गाँव के उन मुट्ठी भर बहाइयों पर भयंकर हमला किया गया जो वहाँ इसी प्रशासनिक व्यवस्था की एक प्राथमिक संस्था को स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे। यह एक ऐसा हमला था जिसे इतिहास के परिप्रेक्ष्य में देखने पर भविष्य में आने वाली पीढ़ियाँ, इसे न केवल प्रभुधर्म के रचनात्मक काल का बल्कि प्रथम बहाई शताब्दी का मील का पत्थर मानेंगी और इसकी जयजयकार करेंगी। सचमुच, इस हमले के परिणाम के बारे में यह कहा जा सकता है कि इसने स्वयं प्रभुधर्म के विकास में एक नया अध्याय शुरू कर दिया जो इस धर्म को एक स्वतन्त्र प्रकटीकरण के रूप में दमन, आज़ादी, स्वीकृति और राष्ट्रीय धर्म के क्रमिक चरणों से ले जाते हुए बहाई राष्ट्र की स्थापना तक पहुँचायेगा और जो बहाई राष्ट्रमण्डल की स्थापना के साथ अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचेगा।

यह घटना एक ऐसे देश में घटी थी, जो वास्तव में इस बात पर गर्व कर सकता है कि वह अरब और मुस्लिम जगत, दोनों का जाना–माना केन्द्र है, यह इस्लाम के सबसे बड़े समाज के धर्माचारियों की अपनी इच्छा से की गई कार्यवाही का परिणाम था और उन गड़बड़ियों की एक श्रृंखला का सीधा

परिणाम था जो इसी समाज के कुछ सदस्यों द्वारा उकसायी गईं थी और जिसका उद्देश्य था प्रभुधर्म के उन विशिष्ट अनुयायियों की गतिविधियों को दबाना जो कभी उनके बीच धर्माधिकारी हुआ करते थे। संघर्ष कर रहे इस बहाई समुदाय के भाग्य में घटने वाली इस निर्णायक घटना ने उस प्रशासनिक व्यवस्था की प्रतिष्ठा को और बढ़ाने में बहुत हद तक सीधा योगदान दिया जिसका निर्माण इस समुदाय ने प्रारम्भ किया था। इसके अतिरिक्त, जैसे–जैसे इसका अप्रत्यक्ष प्रभाव अन्य इस्लामिक देशों में फैलेगा और जैसे–जैसे ईसाईयत एवं इस्लाम, दोनों ही इसके विशाल महत्व को और भी स्पष्ट रूप से समझेंगे, वैसे–वैसे यह उस संक्रमण काल की अवधि का अन्त करने में शीघ्रता करेगा जबकि अभी यह धर्म अपने विकास के इस रचनात्मक काल से गुज़र रहा है।

उत्तरी मिस्र के बेनी स्यूफ प्रान्त के बेबा जिले में स्थित कौमुस–सायीदिह नामक गाँव में एक बहाई सभा की स्थापना के कारण उस गाँव के प्रमुख के दिल में धार्मिक हठ पैदा हो गया, जिसके परिणामस्वरूप, ज़िला पुलिस अधिकारी तथा प्रान्त के गवर्नर के सामने उसके द्वारा लगाये गए आरोपों के कारण गाँव के मुसलमान इतना भड़क उठे कि उन्होंने अपने शिकार के विरूद्ध शर्मनाक कृत्यों को अंजाम दे दिया। इन सब के परिणामस्वरूप, गाँव के नोटरी ने न्याय मंत्रालय द्वारा अधिकृत धार्मिक याचिकाकर्त्ता की हैसियत से उस गाँव में रहने वाले तीन बहाइयों के विरूद्ध कार्रवाई शुरू कर दी, जिसके तहत यह माँग की गई कि उनकी मुस्लिम पत्नियों को इस आधार पर उनसे अलग कर दिया जाये कि कानूनी तौर पर मुस्लिम विवाह करने के बाद उनके पतियों ने इस्लाम धर्म छोड़ दिया था।

10 मई 1925 को बेबा की धार्मिक अपील अदालत ने अपनी राय और निर्णय सुनाया, जिसे कायरो के सर्वोच्च धर्माधिकारियों द्वारा स्वीकृति दी गई और अन्तिम निर्णय के रूप में समर्थन भी दे दिया गया और स्वयं मुस्लिम अधिकारियों द्वारा इसे प्रकाशित और वितरित भी किया गया। इस फैसले के परिणामस्वरूप उन तीनों बहाई प्रतिवादियों द्वारा किए गए विवाहों को रद्द कर दिया गया और इस्लाम के नियमों एवं विधानों का उल्लंघन करने के कारण इस धर्म विरोधी समूह की निन्दा की गई। यहाँ तक कि इसने यह सकारात्मक,

चौंका देने वाली और ऐतिहासिक पुष्टि की कि इन धर्म विरोधियों द्वारा अपनाये गए इस धर्म को एक अलग धर्म समझा जाये, जो उन सभी धार्मिक व्यवस्थाओं से पूरी तरह स्वतंत्र है जो इससे पहले आये थे। यह एक ऐसी पुष्टि थी जिस पर पूरब या पश्चिम में प्रभुधर्म के शत्रुओं ने अब तक या तो विवाद किया था या जिसे जान बूझकर अनदेखा किया गया था।

इस्लाम के मौलिक सिद्धान्तों और नियमों की व्याख्या करने के बाद, और *किताब–ए–अक़दस* से तथा अब्दुल बहा एवं मिर्ज़ा अबुल फ़ज़ल के लेखों के समर्थन से, कुछ विशेष बहाई नियमों का उल्लेख करके और बहाई शिक्षाओं की विस्तारपूर्ण व्याख्या के साथ यह दर्शाते हुए कि इन बातों से यह प्रकट होता है कि प्रतिवादियों ने सचमुच मुहम्मद के धर्म को त्याग दिया है, उसका औपचारिक निर्णय बिल्कुल स्पष्ट शब्दों में यह घोषित करता है कि : "बहाई धर्म एक नया धर्म है, इसकी अपनी ही ऐसी मान्यताओं, सिद्धान्तों और नियमों के कारण यह पूर्णरूप से स्वतंत्र है, जो इस्लाम की मान्यताओं, सिद्धान्तों और नियमों से अलग और बिल्कुल विपरीत हैं। इसलिए, जिस प्रकार किसी बौद्ध, ब्राह्मण या ईसाई को मुसलमान नहीं माना जा सकता और इसका विपरीत भी नहीं हो सकता, उसी प्रकार किसी भी बहाई को मुसलमान नहीं माना जा सकता या इसका विपरीत नहीं हो सकता।" मुकदमे के पक्षों के विवाह के अनुबन्धों को निरस्त करते हुए और उन पतियों को उनकी पत्नियों से "अलग" करने के आदेश देने के बाद, यह औपचारिक और यादगार घोषणा, निम्नलिखित शब्दों के साथ खत्म होती है : "यदि इनमें से कोई भी (पति) पछतावा करता है और ईश्वर के धर्म प्रचारक मुहम्मद द्वारा.....जो कुछ भी ईश्वर की ओर से लाया गया है उसमें विश्वास करता है एवं स्वीकार करता है..... और इस्लाम के पावन धर्म में लौट आता है..... और यह साक्ष्य देता है कि ..... मुहम्मद..... आखिरी पैगम्बर एवं सन्देशवाहक हैं..... और उनके धर्म के बाद दूसरा कोई धर्म नहीं आयेगा और कोई भी विधान उनके विधान को रद्द नहीं करेगा और कुरान ईश्वर की अन्तिम पुस्तक है और उसके पैग़म्बरों एवं सन्देशवाहकों के लिए उसका अन्तिम प्रकटीकरण है....., तो उसे स्वीकार कर लिया जायेगा और वह अपने विवाह के अनुबन्ध को ताज़ा करने का हकदार होगा.....।"

इतने असाधारण महत्व की इस घोषणा को जिसे बहाउल्लाह के धर्म के घोषित शत्रुओं ने स्वयं निर्विवाद सबूतों का समर्थन दिया था, जो एक ऐसे देश में की गई थी जो खलीफा शासन की पुनर्स्थापना के द्वारा इस्लाम का नेतृत्व करने की चाह रखता था और जिसे उस देश के उच्चतम धर्माधिकारियों की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी थी, उस औपचारिक साक्ष्य ने, जिसे कहने से फारस और इराक के शिया इस्लाम के नेता एक शताब्दी से बड़ी मेहनत से बच रहे थे और जो उन निन्दकों को हमेशा के लिए चुप करा देती है जिनमें पश्चिम के वे ईसाई पादरी भी शामिल हैं, जिन्होंने पूर्व में प्रभुधर्म को एक पंथ, एक बाबी सम्प्रदाय और इस्लाम की एक शाखा कहकर या कई धर्मों की मिलावट कहकर कलंकित किया था। ऐसी घोषणा को पूरब और पश्चिम के बहाई समुदाय ने इस्लामिक रूढ़िवादिता की बेड़ियों से बहाउल्लाह के धर्म की मुक्ति की सबसे पहली घोषणा मानकर इसका जयजयकार किया और इस धर्म को इसकी अन्तिम एवं विश्वव्यापी स्वीकृति तक ले जाने वाले रास्ते पर, इसके अनुयायियों की अपेक्षा इसके शत्रुओं द्वारा उठाया जाने वाला वह ऐतिहासिक कदम मानकर इसका जयघोष किया जिसकी अपेक्षा नहीं की जा सकती थी।

असंख्य सम्भावनाओं से भरे हुए इस निर्णय को तत्काल ही एक ऐसी शक्तिशाली चुनौती के रूप में पहचान लिया गया जिसका सामना करने और जिसे स्वीकार करने में बहाउल्लाह के धर्म की प्रशासनिक व्यवस्था के निर्माताओं ने भी समय नहीं गवाँया। इसने उन पर एक पावन अनिवार्यता लागू कर दी जिसे पूरा करने के लिए उन्होंने अपने आपको तैयार कर लिया। इस निर्णय की रचना करने वालों का उद्देश्य था इसके माध्यम से अपने शत्रुओं को मुसलमान अदालतों का दरवाज़ा खटखटाने से वंचित रखना और उन्हें एक उलझन भरी एवं शर्मनाक परिस्थिति में डाल देना। लेकिन यही निर्णय वह सहारा बन गया जिसे मिस्र के बहाई समुदाय ने और बाद में आगे चलकर उसके साथी समुदायों ने तत्काल अपने धर्म की स्वतंत्रता का दावा करने के लिए और अपनी सरकार से इसके लिए मान्यता प्राप्त करने में भरपूर उपयोग में लिया। कई भाषाओं में अनुवाद किए जाने, और पूरब एवं पश्चिम के बहाई समुदायों में वितरित किए जाने के बाद इसने पावन भूमि, मिस्र, फारस और

अमेरिका के संयुक्त राज्यों के भी नागरिक अधिकारियों एवं इन समुदायों के निर्वाचित प्रतिनिधियों के बीच बातचीत का रास्ता खोल दिया ताकि इन अधिकारियों से प्रभुधर्म के लिए एक स्वतंत्र धर्म के रूप में औपचारिक मान्यता प्राप्त की जा सके।

यह निर्णय मिस्र में ऐसे उपायों का क्रम शुरू करने का एक संकेत था जो अपने बढ़ते हुए प्रभाव से इस मान्यता को उस सरकार के माध्यम से फैलाने में सहायक हों जो औपचारिक रूप से अब भी इस्लाम से जुड़ी थी और जो एक सीमा तक अपने कानून और नियम इस्लाम के धार्मिक नेताओं के विचारों और वचनों के आधार पर बनाती थी। इस देश की किसी भी धार्मिक अदालत से किसी भी प्रकार का लेना देना न रखते हुए और बहाइयों को दिए जाने वाले किसी भी धर्माचार्य पद को स्वीकार न करते हुए, अपने धर्म के सिद्धान्तों से तिल भर भी न हटने का मिस्र के अनुयायियों का वह अटल संकल्प; इसके अतिरिक्त, विवाह, तलाक, उत्तराधिकार और अन्तिम–संस्कार जैसी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा के मामलों से जुड़े *किताब–ए–अक़दस* के आधारभूत नियमों का वर्गीकरण और प्रकाशन और मिस्र के मंत्रिमण्डल के समक्ष इन नियमों की प्रस्तुति; साथ ही मिस्र की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा द्वारा बहाई विवाह और तलाक के प्रमाणपत्र जारी किया जाना; इसी सभा द्वारा बहाई विवाह सम्पादित करने और तलाक के अलावा मृतकों के अन्तिम–संस्कार से जुड़े समस्त कर्त्तव्य और उत्तरदायित्वों को अपने हाथों में लिया जाना; बहाई शिक्षाओं में विहित आदेशानुसार इस समुदाय के सभी सदस्यों द्वारा उन नौ पावन दिवसों का मनाया जाना जिनमें सभी प्रकार के व्यवसायिक कार्यों को पूरी तरह रोक दिया जाता है; इस समुदाय के राष्ट्रीय स्तर पर चुने गए प्रतिनिधियों द्वारा मिस्र के प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और न्यायमंत्री को सम्बोधित किए गए आवेदन की वह प्रस्तुति (जिसे अमेरिकी राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा द्वारा मिस्र की सरकार को सम्बोधित किए गए इसी प्रकार के एक पत्र द्वारा समर्थित किया गया था), जिसके साथ उस न्यायालय के निर्णय की तथा उनके राष्ट्रीय बहाई संविधान एवं उप–नियमों की एक प्रति संलग्न की गई थी और जिसके द्वारा उनसे यह अनुरोध किया गया था कि उनकी सभा को एक ऐसी संस्था के रूप में मान्यता

प्रदान की जाये जिसे एक स्वतंन्त्र न्यायालय के सभी कार्य करने की योग्यता प्राप्त हो और जिसे, बहाइयों की व्यक्तिगत प्रतिष्ठा को प्रभावित करने वाले सभी मामलों में उन नियमों और विधानों को लागू करने का अधिकार प्राप्त हो जो उनके धर्म के संस्थापक द्वारा प्रकट किए गए हैं। ये सभी उस ऐतिहासिक घोषणा के वे विशेष प्रारम्भिक परिणाम हैं जो अन्त में इस धर्म को ऐसी स्थापना तक ले जायेंगे जिसका स्तर इस देश के अन्य धर्मों के बिल्कुल बराबर होगा।

इस ऐतिहासिक घोषणा का परिणाम और बहाई समुदाय के कुछ सदस्यों के अन्तिम–संस्कार के सम्बन्ध में यहाँ की कट्टर जनता द्वारा पोर्टसेड में लगातार भड़काई जा रही उथल–पुथल का सीधा परिणाम वह शासकीय और उतना ही उल्लेखनीय फतवा (फैसला) था जो न्याय मंत्रालय के अनुरोध पर मिस्र के महामुफ्ती ने जारी किया था। इसकी घोषणा के कुछ ही समय बाद, इसे मिस्र की प्रेस में छापा गया जिसने प्रभुधर्म की स्वतंत्र प्रतिष्ठा को और भी सशक्त करने में योगदान दिया। ऐसा उन दंगों के बाद हुआ जो असाधारण रोष के साथ उस समय फूट पड़े जब एक क्रोधित भीड़ ने मुहम्मद सुलेमान की शव–यात्रा को घेर लिया जो उस शहर में रहने वाले एक जाने माने बहाई थे। इस भीड़ ने ऐसा उत्पात किया कि पुलिस को बीच में पड़ना पड़ा और शव को बचाकर उसके घर वालों तक पहुँचाने के बाद उन्हें बगैर किसी रक्षक के रात को रेगिस्तान में ले जाकर एक सुनसान जंगल में दफनाना पड़ा।

यह निर्णय उस पूछताछ के परिणामस्वरूप दिया गया था जो 24 जनवरी 1939 को मिस्र के गृहमंत्री ने न्यायमंत्री को लिखकर भेजा था। इस पत्र के साथ व्यक्तिगत हैसियत के मामलों से सम्बन्धित बहाई नियमों का एक संकलन भी भेजा गया था जिसे मिस्र की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा ने प्रकाशित किया था और जिसमें मुफ्ती से यह माँग की गई थी कि वह इस सभा द्वारा मिस्र की सरकार को लिखे गए उस आवेदन पर अपना फैसला सुनाए, जिसमें सरकार से ज़मीन के चार ऐसे भूखण्ड आवंटित करने की माँग की गई थी जिन्हें कायरो, एलेक्ज़ेन्ड्रिया, पोर्टसेड और इस्माईलिय्याह के बहाई समुदायों द्वारा बहाई समाधि–स्थल के रूप में उपयोग में लाया जा सके। न्याय मंत्रालय द्वारा मुफ्ती को लिखे गए पत्र के जवाब में 11 मार्च 1939 को उस मुफ्ती ने

अपने उत्तर में लिखा कि, "हमें दिनांक 21 फरवरी, 1939 का आपका पत्र..... संलग्न सहपत्रों के साथ मिला है जिसमें यह पूछा गया है कि क्या बहाई मृतकों को मुस्लिम समाधि–स्थलों में दफन किया जाना शास्त्रानुसार होगा या नहीं। हम इस पत्र के द्वारा घोषित करते हैं कि जैसा कि इनकी मान्यताओं से स्पष्ट होता है इस समुदाय को मुस्लिम नहीं माना जाना चाहिए। जिन्हें "व्यक्तिगत प्रतिष्ठा के मामलों को प्रभावित करने वाले नियम" कहते हैं, उन्हें पढ़ना ही साक्ष्य के तौर पर पर्याप्त है। इस समुदाय का जो भी व्यक्ति जो पहले मुस्लिम था और वह इस समुदाय के झूठे दावों में विश्वास करके इस्लाम को त्याग चुका है, अतः उसे इस्लाम की परिधि से बाहर समझा जाना चाहिए। ऐसा व्यक्ति, इस्लाम धर्म द्वारा स्थापित किए गए उन नियमों का पात्र है जो धर्म छोड़ देने पर लागू होते हैं। चूँकि यह समुदाय मुस्लिम नहीं है, अतः इसके मृतकों को मुस्लिम समाधि–स्थलों में दफन करना गैर–कानूनी होगा, चाहे वे पहले कभी मुस्लिम रहे हों या नहीं.....।"

मिस्र में इस्लामिक विधान के सर्वोच्च व्याख्याता के इस अन्तिम तथा स्पष्ट शब्दों में लिखे गए और अधिकारपूर्ण वाक्य के परिणामस्वरूप और उस लम्बी बातचीत के बाद जिसके कारण शुरू में कायरो के बहाई समुदाय को उनके समाधि–स्थल के लिए एक ऐसा भूखण्ड आवंटित कर दिया गया जो उस भूखण्ड का भाग था जो उस शहर में निवास करने वाले स्वतंत्र विचारकों के लिए अलग रखा गया था और जिसे इस समुदाय को देने के लिए सरकार तैयार हो गई थी। साथ ही, इस्माईलिय्याह के बहाई समुदाय को भी उसके मृतकों के लिए समाधि–स्थल के रूप में उपयोग में लाने के लिए दो भूखण्ड दिए गए। यह ऐतिहासिक महत्व का एक ऐसा कार्य था जिसका इस अत्यन्त सताये गए और एक लम्बे समय से पीड़ित समुदाय के सदस्यों ने हृदय से स्वागत किया और जिसने इसके धर्म के स्वतंत्र रूप को दर्शाया है और इस धर्म का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्थाओं के कार्य क्षेत्र के दायरे को और भी विस्तृत किया है।

मिस्र की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के निर्णय के बाद, फारस की अन्य बहाई आध्यात्मिक सभाओं की मदद से इन औपचारिक रूप से नामित किए गए बहाई समाधि–स्थलों में से प्रथम स्थल में मिर्ज़ा अबुल फज़ल के पार्थिव अवशेषों

को स्थानान्तरित किया गया और उनके उच्च स्थान को शोभा देने योग्य समाधि बनाई गई। इस तरह पूरब में इस प्रकार की पहली औपचारिक बहाई संस्था का उचित ढंग से उद्घाटन किया गया। यह उपलब्धि और भी बढ़ गई जब इसके तुरन्त बाद, अमेरिकी बहाई राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा और वॉशिंगटन के राज्य विभाग की सहायता से पश्चिम की उस अति प्रसिद्ध मातृ–शिक्षिका श्रीमती ई. गेटसिंगर के पार्थिव शरीर को कायरो के एक समाधि–स्थल से निकालकर, इस समाधि–स्थल के बिल्कुल बीच में और प्रभुधर्म के प्रख्यात लेखक एवं शूरवीर की समाधि के निकट समाधिस्थ किया गया।

पावन भूमि में, जहाँ इन घोषणाओं से पहले ही, और अब्दुल बहा के धर्मकाल के दौरान एक बहाई समाधि–स्थल स्थापित किया जा चुका था, यह ऐतिहासिक निर्णय लिया गया कि बहाई दिवंगतों को अक्का में स्थित किब्ले की ओर मुँह करके समाधिस्थ किया जायेगा, यह एक ऐसा उपाय था जिसका महत्व तब और भी बढ़ गया जब यह निर्णय लिया गया कि विवाह और तलाक से जुड़े सभी प्रकरणों में, किसी भी इस्लामिक न्यायालय का सहारा लेना बन्द किया जाए और दिवगंतों का अंतिम संस्कार और इससे जुड़ी तैयारियों को सम्पूर्ण रूप से बगैर कुछ छिपाये बहाउल्लाह द्वारा निर्धारित की गई विधि के अनुसार ही किये जायें। इसके शीघ्र बाद, हाईफा के स्थानीय बहाई समुदाय के प्रतिनिधियों ने दिनांक 4 मई 1929 को फिलिस्तीनी प्रशासन को एक औपचारिक आवेदन भेजकर उनसे अनुरोध किया कि हाईफा के निवासियों की धार्मिक मान्यताओं को अनदेखा करते हुए सभी निवासियों पर लागू होने वाले व्यक्तिगत प्रतिष्ठा से जुड़े समान नागरिक कानून के अपनाये जाने तक, बहाई समुदाय को सरकारी मान्यता दी जाए और इसे "इसके स्वयं के क्रियाकलापों को संचालित करने के वे सभी अधिकार दिए जाएँ जो फिलिस्तीन के अन्य धार्मिक समुदायों को प्राप्त हैं।"

इस आवेदन की स्वीकृति एक बहुत ही महत्वपूर्ण उपलब्धि थी और किसी भी देश में प्रभुधर्म के इतिहास में बिल्कुल अद्वितीय भी। इस स्वीकृति के माध्यम से स्थानीय समुदाय के प्रतिनिधियों द्वारा जारी किए गए विवाह प्रमाणपत्रों को नागरिक प्राधिकरण ने सरकारी मान्यता प्रदान कर दी थी,

जिसकी वैधता को फिलिस्तीन में पदस्थ फारसी सरकार के शासकीय प्रतिनिधि ने गुप्त रूप से स्वीकार कर लिया था। इसके बाद इसके विश्व केन्द्र में बहाई समुदाय द्वारा पावन मानी जाने वाली या इसके संस्थापकों की समाधियों को समर्पित की गईं सभी सम्पत्तियों और संस्थाओं को एक–एक करके सरकारी कर से छूट देने के निर्णय लिए गए। इसके अतिरिक्त इन निर्णयों के द्वारा बहाई समाधियों में रखे गए सजावट के पूरे सामान और फर्नीचर को सीमा–कर से छूट दे दी गई और देश के नियमों के अनुसार अमेरिकी एवं भारतीय राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं की शाखाओं को "धार्मिक संस्थाओं" के रूप में कार्य करने की और इन सभाओं के एजेन्ट के रूप में सम्पत्ति खरीदने और इसका प्रबन्ध करने की अनुमति दी गई।

फारस में निवास करने वाले इस समुदाय ने, जो संख्या में पहले ही ईसाई, यहूदी और जोरास्ट्रियन अल्पसंख्यकों से कहीं अधिक बड़ा था, वहाँ के नागरिक और धर्माधिकारियों के क्रम से चले आ रहे शत्रुतापूर्ण व्यवहार के बावजूद, अपनी प्रशासनिक संस्थाओं का ढाँचा तैयार करने में सफलता प्राप्त कर ली। उस निर्णायक घोषणा की प्रतिक्रिया ऐसी थी जिससे इस समुदाय के सदस्यों को प्रेरणा मिली और जिसने, उन्हें इस बिल्कुल अनापेक्षित प्रशंसापत्र के विशाल लाभों का पूरा–पूरा लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। बुरी तरह अपमानित हो चुके उस शक्तिशाली धर्माधिकारी वर्ग के क्रूर, अहंकारी और निर्दयी नेताओं द्वारा ली गई अग्नि परीक्षाओं से गुज़रने के बाद, गुमनामी से उभरकर सामने आने वाले इस विजयी समुदाय ने पहले से कहीं अधिक बढ़कर एक मजबूत इरादा कर लिया था कि वह अपने संस्थापकों द्वारा निर्धारित की गई सीमाओं में रहकर, एक स्वतन्त्र धार्मिक अस्तित्व के रूप में स्वीकार किए जाने के अपने दावे पर बल देगा और अपने पास उपलब्ध सभी माध्यमों से अपनी अखण्डता, अपने सदस्यों की एकता और अपनी चुनी जाने वाली संस्थाओं की सुरक्षा करेगा। अब, जबकि इसके घोषित शत्रुओं ने एक ऐसे देश में, ऐसे शब्दों में और इतने महत्वपूर्ण मुद्दे पर, इतनी प्रभावी और व्यापक घोषणा कर दी थी और उस परदे को चीर कर रख दिया था जो इतने लम्बे समय से इसके सिद्धान्तों के सार में बसी कुछ अलग सच्चाइयों पर आधारित था। ऐसे वातावरण में यह

समुदाय और चुप नहीं रह सकता था या किसी प्रकार का विरोध किए बगैर उन प्रतिबंधों को सहन नही कर सकता था जो इस इरादे से लगाये गए थे कि इस धर्म की शक्तियाँ सीमित हो जाये, इसके सामुदायिक जीवन का दम घुट जाये और इसे उस देश के अन्य धार्मिक समुदायों के साथ बिना शर्त समानता का स्थान न देने के इसके अधिकार से वंचित रखा जा सके।

इस समुदाय के सदस्यों ने संकल्प लिया कि अब वे मुसलमान, यहूदी, ईसाई या जोरास्ट्रियन के रूप में वर्गीकृत किया जाना स्वीकार नहीं करेंगे। इसके लिए उठाये गए पहले कदम के रूप में इस समुदाय ने यह निश्चय किया कि यह ऐसे उपाय करेगा जिनसे किसी भी चुनौती के परे इसकी वह विशेष श्रेणी सिद्ध हो जायेगी जिसका दावा इसके घोषित शत्रुओं ने इसके लिए किया था। केवल प्रशासनिक स्वरूप के सभी मामलों में अपने देश के नियमों का पालन करने के अपने स्पष्ट, अपने पावन और अपरिहार्य कर्त्तव्य के प्रति सचेत रहते हुए, किन्तु अपने पास उपलब्ध हर माध्यम के द्वारा अपने धर्म के स्वतंत्र स्वरूप का दावा करने और इसे प्रदर्शित करने के प्रति कृतसंकल्प होकर उन्होंने एक नीति तैयार की और ऐसे कार्य आरम्भ किए जिनका उद्देश्य उन्हें उस लक्ष्य के अगले चरण की ओर अग्रसर करना था जिसे प्राप्त करने के लिए उन्होंने अपने आपको लगा दिया था।

अपना धर्म न छोड़ने का उनका दृढ़ संकल्प, चाहे इसके लिए उन्हें कोई भी त्याग क्यों न करना पड़े; साथ ही उनका यह अटल निर्णय कि वे अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा पर प्रभाव डालने वाले किसी भी मामले को किसी भी मुसलमान, ईसाई, रब्बाई और जोरास्ट्रियन न्यायालय में प्रस्तुत नहीं करेंगे तथा किसी भी संगठन से सम्बद्ध होने से या अपने देश के किसी भी मान्यता प्राप्त धर्म से जुड़ा कोई भी धर्माधिकारी पद को स्वीकार करने से इन्कार कर देने का उनका निर्णय; *किताब–ए–अकदस* में निर्धारित किए गए अनिवार्य प्रार्थना, उपवास, विवाह, तलाक, उत्तराधिकार, मृतकों के अंतिम संस्कार, अफीम एवं अन्य नशीले पदार्थों के उपयोग से सम्बन्धित नियमों का विश्व भर में पालन; मान्यता प्राप्त बहाई सभाओं के निर्देशानुसार और उनकी मुहर से, जन्म, मृत्यु

विवाह और तलाक के प्रमाण पत्रों का जारी किया जाना; मिस्र की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा द्वारा सर्वप्रथम प्रकाशित किए गए "व्यक्तिगत प्रतिष्ठा से सम्बन्धित प्रकरणों को प्रभावित करने वाले बहाई नियमों" का फारसी भाषा में अनुवाद," सभी बहाई पावन दिवसों पर कामकाज पर रोक; सभी वफादार अनुयायियों के लिए चाहे वे किसी भी धार्मिक पृष्ठभूमि से क्यों न हों, एक सार्वजनिक समाधि स्थल की व्यवस्था करने के उद्देश्य से राजधानी में और अन्य प्रान्तों में बहाई समाधि स्थलों की स्थापना; इस बात पर बल दिया जाना कि पहचान पत्रों, विवाह प्रमाणपत्रों, पासपोर्टों और अन्य शासकीय दस्तावेज़ों में उन्हें मुसलमान, ईसाई, यहूदी या जोरास्ट्रियन के रूप में दर्ज न किया जाये; इसके अतिरिक्त जैसा कि पावनतम पुस्तक में बहाउल्लाह द्वारा स्थापित किया गया है, उन्नीस दिवसीय सहभोज की स्थापना पर ज़ोर दिया जाना, समुदाय के अनुशासनहीन सदस्यों को मताधिकार से और इन सभाओं एवं इनकी समितियों की सदस्यता से वंचित करते हुए चुनी गई उन बहाई सभाओं द्वारा उन पर प्रतिबंध लगाया जाना, जो अब धार्मिक न्यायालयों के कर्त्तव्य एवं कार्य अपने हाथों में ले रही हैं। इन सभी को एक ऐसे समुदाय के प्रारम्भिक कार्य समझा जाना चाहिए जिसने अपनी प्रशासनिक व्यवस्था के ताने–बाने का निर्माण किया था और जो मिस्र में पारित किए गए इस ऐतिहासिक न्यायिक निर्णय के आगे बढ़ने वाले प्रभाव से, अब बलपूर्वक नहीं बल्कि अनुनय के द्वारा नागरिक प्राधिकरण से वह स्थान प्राप्त करने का लक्ष्य रखता था जिसकी इसके धर्माधिकारी शत्रुओं ने इतना बल देकर साक्षी दी थी।

इसके आरम्भिक प्रयास को आंशिक सफलता मिलना, इसका कभी–कभी शासकीय अधिकारियों के संवेग को जगा देना और इसके शत्रुओं द्वारा इसके बारे में मिथ्या वक्तव्य देना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। नागरिक प्रशासन से अपनी बातचीत में कुछ अर्थों में यह समुदाय उसी प्रकार सफल रहा जिस प्रकार फारस के नागरिकों को जारी किए जाने वाले पासपोर्टों में धर्म सम्बन्धी पहचान के हर संकेत को हटा देने के सरकारी आदेश प्राप्त करने में इसे सफलता प्राप्त हुई और कुछ स्थानों में इसे निःशब्द अनुमति प्राप्त करने में सफलता मिली कि कुछ शासकीय दस्तावेज़ों में दिए गए धर्म की जानकारी

वाले भाग को इसके सदस्य खाली छोड़ सकते हैं, लेकिन अपनी स्वयं की सभाओं के समक्ष इनके लिए आवश्यक था कि वह अपने विवाह, तलाक और मृत्यु के प्रमाणपत्र दर्ज कराएँ और अन्तिम संस्कार के कार्य बहाई संविधान के अनुरूप करें। लेकिन अन्य बातों में इस समुदाय ने अपने आपको गम्भीर रूप से असमर्थ महसूस किया : उन स्कूलों को जो इसके द्वारा स्थापित किए गए थे, जो केवल इसी की सम्पत्ति थे और इसी समुदाय द्वारा चलाये जाते थे, उन्हें बलपूर्वक इसलिए बन्द करवा दिया गया क्योंकि इस समुदाय ने बहाई पावन दिवसों पर इन स्कूलों को खुला रखने से इन्कार कर दिया था; इसके सदस्यों पर, स्त्रियों और पुरूषों दोनों पर मुकदमे चलाये गए; वे मित्र, जो सेना में या नागरिक सेवा में नौकरी करते थे, उनमें से कुछ को सेवामुक्त कर दिया गया और सभी बहाई सभाओं पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

जैसा कि सभी देशों के बहाई समुदाय ने किया है, इस देश के बहाई समुदाय ने भी यहाँ के नागरिक प्राधिकरण द्वारा समय–समय पर जारी किए गए या भविष्य में जारी किए जाने वाले सभी प्रशासनिक नियमों के प्रति अपने देश की सरकार के प्रति और अपने पावन कर्त्तव्यों के प्रति वफादार रहकर विश्वास के योग्य आज्ञाकारिता दिखाई है और दिखाता रहेगा। फारस में सरकार द्वारा स्कूलों को तत्काल बन्द किया जाना इस बात का प्रमाण है। लेकिन, ऐसे आदेशों के प्रति जिनका पालन करना इसके सदस्यों के लिए अपने धर्म का त्याग करने के बराबर है या जो इसके आध्यात्मिक, इसके आधारभूत और ईश्वर द्वारा दिए गए सिद्धान्तों एवं विधानों के प्रति विश्वासघात का कृत्य समझा जाता है, यह समुदाय झुकने से बिल्कुल इन्कार कर देगा और बजाय इसके कि एक भौतिक शासक के आदेशों का पालन करे, जिसमें इसे अपने धर्म को त्यागना पड़ेगा, इसे निर्वासन और मौत सहित हर प्रकार के कष्ट सहना उसी तरह अधिक प्रिय होगा जिस तरह उन बीस हजार शहीदों को प्रिय था, जिन्होंने इस धर्म के संस्थापकों की राह में पहले ही अपने जीवन की आहूति दे दी थी।

फारस के गवर्नर ने मन बना लिया था कि वह उन पर दबाव डालकर उन्हें मुसलमान घोषित करने पर विवश कर देगा। लेकिन उपद्रव के इस केन्द्र

में इनमें से कुछ शहीदों के निडर वंशजों ने गवर्नर को एक संदेश भेजा जिसमें लिखा था, "यदि तुम, पूरे आबादिह ज़िले में हम सभी स्त्रियों, पुरूषों और बच्चों को काटकर हमारे टुकड़े–टुकड़े भी कर दोगे तब भी हम तुम्हारी इच्छा के सामने नहीं झुकेंगे।" यह एक ऐसा संदेश था जिसने उस अवज्ञाकारी गवर्नर के हाथ में पहुँचते ही उसे इस मामले को आगे बढ़ाने से बाज़ आने पर विवश कर दिया।

संयुक्त राज्य अमेरिका के बहाई समुदाय ने, अपनी प्रशासनिक व्यवस्था का ढाँचा तैयार करके और इसे पूर्णता के स्तर पर पहुँचाकर पहले ही एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत कर दिया था। यह समुदाय, मिस्र के मुस्लिम न्यायालय द्वारा दिए निर्णय के दूर तक पहुँचने वाले प्रभाव के प्रति और पावन भूमि में इससे उत्पन्न होने वाली प्रतिक्रिया के महत्व के प्रति सजग था। फारस में इसके साथी समुदायों द्वारा दिखाई गई साहसिक अटलता से भी ये प्रेरित हुआ था। इस समुदाय ने अपनी उल्लेखनीय उपलब्धियों में आगे ऐसे और भी काम जोड़े, जिनका उद्देश्य उत्तर अमेरिकी महाद्वीप में बहाउल्लाह के धर्म द्वारा प्राप्त किए गए उच्च स्तर को बनाए रखना था। यह समुदाय संख्या में फारस के मित्रों के समुदाय से छोटा था। यूनियन के अन्तर्गत अमेरिकी राज्यों को शासित करने वाले बहुत सारे कानूनों के कारण, अपने सदस्यों की व्यक्तिगत प्रतिष्ठा पर असर डालने वाले मामलों में, इस समुदाय को एक ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ा जो पूरब के अनुयायियों की स्थिति की तुलना में मौलिक रूप से अलग थी और उससे कहीं अधिक जटिल भी थी। लेकिन एक दिव्यरूप से विहित की गई व्यवस्था के विकास को एक बार फिर प्रबल प्रोत्साहन देने के अपने उत्तरदायित्व के प्रति सचेत रहने वाले इस समुदाय ने साहसपूर्वक ऐसे उपाय शुरू किए जो इस प्रकटीकरण के स्वतंत्र स्वरूप पर और भी ज़ोर डाले जिसका इसने पहले ही इतने उत्तम तरीके से समर्थन किया था।

राष्ट्रीय संघ के अधिकारियों द्वारा राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को एक ऐसी धार्मिक संस्था के रूप में स्वीकार किया जाना जिसे यह अधिकार प्राप्त है कि वह प्रभुधर्म के हितों के लिये समर्पित की गई सम्पदा की देखरेख एक न्यासी के रूप में करे; साथ ही बहाई सम्पदा की स्थापना करना और नागरिक

प्राधिकरण द्वारा इन पर, ऐसी सम्पत्तियों के रूप में छूट दिया जाना जो धार्मिक समुदाय की सम्पत्तियाँ थीं और जिनका प्रबन्ध केवल इसके हितों के लिए किया जाता था। इन उपलब्धियों के साथ अब वे निर्णय और कार्य भी जुड़ गए जिनका उद्देश्य था इसके सदस्यों को एक करने वाले सम्बन्धों के स्वरूप को और भी उभारना। दैनिक अनिवार्य प्रार्थनाओं के बारे में *किताब–ए–अक़दस* में वर्णित कुछ आधारभूत नियमों पर दिया गया विशेष बल; उपवास का पालन, विवाह के लिए माता–पिता की अनुमति की आवश्यकता; तलाक की अत्यावश्यक शर्त के रूप में पति–पत्नी के बीच एक साल का अलगाव; सभी मादक पेयों का त्याग; इसी पुस्तक में बहाउल्लाह द्वारा के आदेशानुसार, उन्नीस दिवसीय सहभोज की स्थापना पर दिया गया ज़ोर; सभी धर्माधिकारियों से सम्बन्धित संगठनों की सदस्यता और उनके साथ किसी भी प्रकार की सम्बद्धता का अन्त और किसी भी धार्मिक मूल के पद को स्वीकार करने से इन्कार। इन सभी बातों ने बहाई धर्म के विशिष्ट स्वरूप को बल देकर रेखांकित करने और लोगों की दृष्टि में इसे उन रस्मों और मानव–निर्मित प्रथाओं से अलग करने में सहायता की है जो अतीत की धार्मिक व्यवस्थाओं की पहचान हैं।

उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप में शिकागो की आध्यात्मिक सभा सबसे प्रथम केन्द्र थी। सरकारी मान्यता प्राप्त करने में यह अपनी सहयोगी आध्यात्मिक सभाओं में सबसे पहली थी और पश्चिम में बहाई उपासना मंदिर के निर्माण का मार्ग तैयार करने की दिशा में पहल करने में सर्वप्रथम थी। शिकागो की इस आध्यात्मिक सभा ने *किताब–ए–अक़दस* के विधानों के अनुसार कानूनी विवाह कराने के अधिकार को मान्यता दिलाने के लिए और जिन विवाह प्रमाणपत्रों पर पूर्व में सभा की औपचारिक स्वीकृति दी जा चुकी थी, उन्हें दर्ज कराने के लिए इलिनोइस राज्य के नागरिक अधिकारियों को जो आवेदन सम्बोधित किया था, वह विशेष और ऐतिहासिक महत्व का है। अधिकारियों द्वारा इस आवेदन के स्वीकार किए जाने से सभी स्थानीय सभाओं के उपनियमों में ऐसा संशोधन करना आवश्यक हो गया जिसके द्वारा वे बहाई कानूनी विवाह करवा सकती थीं और जिसके माध्यम से शिकागो की स्थानीय सभा के अध्यक्ष या सचिव को सभी बहाई विवाह में सभा का प्रतिनिधित्व करने का अधिकार दिया गया था।

22 सितम्बर 1939 को इलिनोइस राज्य द्वारा सबसे पहला बहाई विवाह प्रमाणपत्र जारी किया गया, जिसके द्वारा इस सभा को बहाई विवाह कराने और बहाई विवाह प्रमाणपत्र जारी करने का अधिकार दिया गया; इसके बाद न्यूयॉर्क, न्यू जर्सी, विसकोनसिन और ओहियो जैसे यूनियन के अन्य राज्यों द्वारा स्वयं के लिए इसी प्रकार के विशेषाधिकार प्राप्त करने के उद्देश्य से किए गए सफल उपायों ने भी प्रभुधर्म के स्वतंत्र स्थान को अतिरिक्त ख्याति प्रदान करने में अपना योगदान दिया है। इनमें उस स्वीकृति को भी जोड़ा जाना चाहिए जो युद्ध के शुरू होने के समय से संयुक्त राज्य के द्वारा प्रदान की गई थी और जिसका सबूत उस पत्र में पाया जा सकता है जो 14 अगस्त 1942 को उस विभाग के क्वार्टर मास्टर जनरल द्वारा अमेरिकी राष्ट्रीय बहाई आध्यात्मिक सभा को लिखा गया था, जिसमें युद्ध में मारे जाने वाले और सैन्य समाधि स्थलों में या निजी समाधि स्थलों में दफन किए गए बहाईयों की समाधियों को चिन्हित करने वाले पत्थरों पर महानतम नाम के चिन्ह का उपयोग करने की अनुमति दी गई है, ताकि इन समाधियों को लेटिन क्रॉस के चिन्ह वाली या डेविड के सितारे के चिन्ह वाली उन समाधियों से अलग दर्शाया जा सके जो क्रमशः ईसाई और यहूदी धर्मों के अनुयायियों को दी गईं थीं।

वॉशिंगटन डी.सी. में अमेरिकी बहाई राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा द्वारा, ऑफिस ऑफ प्राइस एडमिनिस्ट्रेशन को किए गए उस सफल आवेदन का भी उल्लेख करना नहीं छूटना चाहिए जिसके द्वारा यह माँग की गई थी कि बहाई स्थानीय सभाओं के अध्यक्षों और सचिवों को धार्मिक बैठकों का संचालन करने वाले अधिकारियों की उनकी हैसियत से और कुछ राज्यों में बहाई विवाह सम्पादित करने के लिए अधिकृत व्यक्तियों के रूप में उन्हें उन क्षेत्रों की धार्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जिनकी वे सेवा करते हैं, 'गेसोलीन रेग्यूलेशन्स के प्रिफर्ड माईलेज सेक्शन' के प्रावधानों के तहत अधिमान्य लाभ की पात्रता दी जाये।

भारत, इराक, ग्रेट ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया जैसे अन्य देशों के बहाई समुदायों ने भी या तो इस ऐतिहासिक निर्णय के प्रकाशन से मिलने वाले लाभों को समझने में शीघ्रता दिखाई है या प्रत्येक ने अपनी क्षमतानुसार और वर्तमान

स्थितियों के कारण निर्धारित की गई सीमाओं के अन्दर रहकर उन अवसरों का पूरा–पूरा लाभ उठाया है जो सार्वजनिक निर्णयों से मिले हैं। ऐसा इसलिए किया गया ताकि वे अपनी ओर से उस धर्म के स्वतंत्र स्वरूप को प्रदर्शित कर सकें, जिसके ढ़ाँचे का निर्माण वे पहले ही कर चुके थे। जिस सीमा तक भी सम्भव था, अपनी पावनतम पुस्तक में विहित किए गए नियमों को लागू करके; किसी भी सम्प्रदाय की धर्माधिकारी संस्था के साथ सम्बन्ध और सदस्यता के सभी बन्धन तोड़कर; प्रभुधर्म के विकास में और इसकी स्थापना को सुगम बनाने के लिए एक बड़ा मोड़ लेकर आने वाले इस बड़े मुद्दे को और भी फैलाने के एकमात्र उद्देश्य से शुरू की गई नीति तैयार करके, ये समुदाय और वास्तव में सभी संगठित बहाई संस्थाएँ, चाहे वे पूरब की हों या पश्चिम की, चाहे वे कितनी ही दूर स्थित हों या अपने विकास में कितनी ही अपरिपक्व रही हों, फिर भी अपनी एकता के प्रति सचेत रहते हुए और अपने सामने आने वाली शानदार सम्भावनाओं से भलीभाँति अवगत रहते हुए, बहाउल्लाह के धर्म के स्वतंत्र स्वरूप की घोषणा करने के लिए और हर तरह की बेड़ियों से इसे स्वतंत्र कराने के लिए एक आवाज़ बनकर उठ खड़ी हुई हैं, चाहे वे धार्मिक हों या अन्य, जो इसकी अन्तिम एवं विश्वव्यापी स्वीकृति में बाधा डाल सकती हैं या इसमें विलम्ब कर सकती है।

बहुत हद तक बिना किसी सहायता के और अपने स्वयं के प्रयासों एवं उपलब्धियों के माध्यम से जो स्थान इनके धर्म ने प्राप्त किया था, उसके लिए समाज के विभिन्न क्षेत्रों से ऐसे प्रेक्षकों ने श्रद्धांजलियाँ दी हैं जिनके कथनों का ये स्वागत करते हैं और जिन्हें उन ऊँचाईयों की ओर कठिन चढ़ाई के अपने कार्य को बढ़ावा देने वाली प्रेरणा समझते हैं, जिन्हें ये अन्त में प्राप्त करेंगे।

फिलिस्तीन सरकार के पूर्व अटॉर्नी जनरल प्रोफेसर नारमन बेन्टविच का कहना है कि, "फिलिस्तीन को अब तीन नहीं, बल्कि चार धर्मों का देश समझा जाना चाहिए, क्योंकि बहाई धर्म जिसके धार्मिक और तीर्थ के केन्द्र अक्का और हाईफा में हैं, एक विश्वधर्म का स्वरूप धारण कर रहा है। जहाँ तक इस देश में इसके प्रभाव का प्रश्न है, यह अन्तर्राष्ट्रीय एवं अन्तर्धार्मिक समन्वय का कारण है।" प्रतिष्ठित स्विस वैज्ञानिक और मनोचिकित्सक, डॉ. ऑगस्ट फोरेल

द्वारा अपने वक्तव्य में घोषित किया गया है कि, "बहाईयों द्वारा स्वीकृत विश्व धर्म के बारे में मुझे पता चला, जो 70 साल पहले पूरब के एक फारसी व्यक्ति बहाउल्लाह द्वारा स्थापित किया गया था। यह "सामाजिक कल्याण" का एक सच्चा धर्म है जो मतों और पुजारियों से रहित है और हमारे इस छोटे से भूमण्डल के सभी लोगों को जोड़ता है। मैं बहाई बन चुका हूँ। ईश्वर करे यह धर्म मानवजाति के कल्याण के लिए बना रहे और फले–फूले ! यह मेरी अत्यन्त हार्दिक इच्छा है।" वे आगे कहते हैं कि, "एक विश्वराज्य, एक विश्वभाषा और एक विश्वधर्म होना निश्चित है। मेरे हिसाब से मानवजाति की एकता के लिए चलने वाला बहाई आन्दोलन, आज विश्वशान्ति और भ्रातृत्वभाव के लिए काम करने वाला सबसे महान आन्दोलन है।" रूमानिया की स्वर्गीय महारानी मैरी की कलम से निकला एक और कथन है, "एक ऐसा धर्म जो सभी जातियों को एक करता है.....एक ऐसा धर्म जो ईश्वर की आंतरिक चेतना पर आधारित है.....। यह सिखाता है कि सभी प्रकार की घृणा, षड़यंत्र, संदेह, अपशब्द और समस्त आक्रामक देशभक्ति भी ईश्वर के शाश्वत नियम के विपरीत हैं और विशेष प्रकार की मान्यताएँ मात्र सतही बाते हैं, लेकिन वह हृदय जो दिव्य प्रेम से धड़कता है, किसी जनजाति या वर्ग को नहीं जानता।"

शिक्षण गतिविधियों का अन्तर्राष्ट्रीय विस्तार

जिस समय बहाउल्लाह के धर्म की प्रशासनिक व्यवस्था का तानाबाना धीरे–धीरे बुना जा रहा था और जिस दौरान ऐसी शक्तियों के असर से जिनके बारे में पहले सोचा नहीं गया था, प्रभुधर्म के शत्रु इसके स्वतंत्र अस्तित्व को निश्चित रूप से स्वीकारने लगे थे एवं इसके मित्र इसे प्रदर्शित करने लगे थे, उसी दौरान उतने ही परिणामों से भरा एक आन्दोलन शुरू किया जा रहा था, इसका उद्देश्य था प्रभुधर्म की सीमाओं में वृद्धि करना, इसके घोषित अनुयायियों एवं प्रशासनिक केन्द्रों की संख्या बढ़ाना, इसके साहित्य को समृद्ध बनाना, इसे विविधता प्रदान करने के कार्य के साथ–साथ इसे सभी क्षेत्रों में दूर–दूर तक फैलाने के कार्य को अधिक से अधिक बल प्रदान करना। अनुभव ने वास्तव में यह सिद्ध कर दिया था कि प्रशासनिक व्यवस्था के विशेष गुणों के अलावा, इसका स्वरूप भी ऐसा था जो निश्चित रूप से कुशलता और शिक्षण के इस कार्य को तेज़ी से प्रोत्साहित करता था। इस व्यवस्था के निर्माताओं ने अनुभव किया कि जैसे–जैसे प्रभुधर्म विकास की ओर आगे बढ़ रहा है, वैसे–वैसे इसके उत्साह को लगातार ताज़गी मिल रही है और इसका ध्येय सम्बन्धी उत्साह बढ़ता जा रहा है।

वे उन परामर्शों, आग्रहों और वचनों के प्रति लापरवाह नहीं थे जो प्रभुधर्म के उन संस्थापकों ने उन्हें दिए थे, जिन्होंने अपने–अपने तरीके से और अपनी गतिविधियों को रोकने वाली सीमाओं के अन्दर रहकर, इतनी वीरता के साथ इस धर्म की कीर्ति को चारों ओर फैलाने के लिए 75 साल का त्याग किया था, जिसके भाग्य को साकार करने का कार्य ईश्वर ने उन्हें सौंपा था।

उनके धर्म के अग्रदूत ने धरती के सम्राटों को भी आदेश दिया था कि वे उठ खड़े हों और उनके धर्म की शिक्षा दें। इस विषय में कय्य्यूमुल अस्मा में लिखा है कि : *"ओ सम्राटों के समूह ! सच्चाई और पूरी शीघ्रता के साथ उन वचनों को बाँटो जो हमारे द्वारा तुर्की और भारत के लोगों को और उनके अतिरिक्त .....पूरब और पश्चिम के देशों को भेजे गए हैं।"* इसी पुस्तक में उन्होंने आगे लिखा है कि,*"ओ पश्चिम के लोगों, ईश्वर की सहायता करने के लिए अपने–अपने शहरों से बाहर निकलो।" किताब–ए–अक़दस* में बहाउल्लाह ने अपने अनुयायियों को इन शब्दों में सम्बोधित किया है,*"हम तुम्हें अपने सर्वमहिमाशाली क्षितिज से देखते हैं और जो कोई भी मेरे धर्म की सहायता के लिए उठ खड़ा होगा, उसकी सहायता हम स्वर्गदूतों की सेना के द्वारा और ऐसे फरिश्तों के द्वारा करेंगे जो हमारे करीब हैं।"* उन्होंने आगे लिखा है,*"प्रभुधर्म का शिक्षण करो, ओ बहा के लोगों !"* क्योंकि ईश्वर ने सभी के लिए यह कर्त्तव्य निर्धारित किया है और वह इसे सभी कर्मों में सर्वश्रेष्ठ मानता है। उन्होंने स्पष्ट रूप से पुष्टि की है कि,*"यदि कोई व्यक्ति बहा के नाम पर बिल्कुल अकेला भी उठ खड़ा होगा और उसके प्रेम का कवच पहन लेगा तो उसे वह शक्तिशाली ईश्वर विजयी बनायेगा, भले ही उसके विरूद्ध धरती और स्वर्ग की समस्त शक्तियाँ उठ खड़ी हों।"* उन्होंने आगे घोषित किया है कि,*"यदि कोई व्यक्ति हमारे धर्म की विजय के लिए उठ खड़ा होगा तो वह ईश्वर उसे विजयी बनायेगा, भले ही लाखों शत्रु उसका विरोध करने के लिए एक हो जायें।"* और एक बार फिर वे कहते हैं :*"अपनी ऊर्जाओं को ईश्वर के धर्म के प्रसार में लगाओ। जो कोई भी इतने उच्च आह्वान के योग्य हो उसे उठ खड़े होकर इसे बढ़ावा देने दो। जो कोई भी असमर्थ है उसका कर्त्तव्य है कि वह उसे नियुक्त करे जो उसके स्थान पर इस प्रकटीकरण का प्रचार करेगा..... ।"* स्वयं बहाउल्लाह वचन देते हैं कि,*"वे, जिन्होंने हमारे धर्म का शिक्षण करने के लिए अपना देश छोड़ा है उन्हें वह विश्वसनीय परम आत्मा अपनी शक्ति से बलवान बनायेगी। वास्तव में, ऐसी सेवा समस्त सद्कर्मों में सर्वश्रेष्ठ है और प्रत्येक अच्छे कर्म का आभूषण है।"* अब्दुल बहा ने अपनी वसीयत में लिखा है,*"इन दिवसों में सभी वस्तुओं में सबसे महत्वपूर्ण है इस दुनिया के राष्ट्रों और लोगों*

का मार्गदर्शन करना। प्रभुधर्म का संदेश देना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह नींव की मुख्य आधारशिला है।" इसी दस्तावेज़ में उन्होंने घोषित किया है,*"ईसा मसीह के शिष्यों ने स्वयं को समस्त भौतिक वस्तुओं से वंचित कर लिया था, उन्होंने अपनी समस्त चिन्ताओं और सम्पत्तियों को त्याग दिया था, स्वयं को अपने आप से और लालसाओं से रिक्त कर लिया था, वे पूर्ण अनासक्ति के साथ दूर–दूर तक फैल गए थे और दुनिया के लोगों का सही मार्गदर्शन करने में जुट गए थे, अंततः उन्होंने इस दुनिया को एक दूसरी दुनिया बना दिया, धरती को प्रकाशित कर दिया और अपने जीवन के अंतिम क्षण तक उस एक परमप्रिय ईश्वर के पथ में आत्मत्यागी सिद्ध हुए। अन्त में, विभिन्न देशों में उन्होंने शहादत स्वीकार की। कर्मप्रधान लोगों को इनके पदचिन्हों पर चलने दिया जाये।"* इसी इच्छापत्र में उन्होंने सत्यनिष्ठा से कहा था कि,*"जब वह घड़ी आयेगी कि यह अन्याय–पीड़ित और पंख–टूटा पंछी स्वर्गिक समूह के पास जाने के लिए अपनी उड़ान भर चुका होगा..... तब प्रत्येक और सभी मित्रों और प्रियजनों के लिए .....यह अनिवार्य है कि वे उसके धर्म का शिक्षण करने के लिए और उसके मत को अपने सम्पूर्ण अन्तर्मन से एवं मिलजुल कर बढ़ावा देने के लिए उठ खड़े हों। उनके लिए यह उपयुक्त है कि वे क्षण भर भी विश्राम न करें..... । उन्हें स्वयं को प्रत्येक देश में फैला देना चाहिए..... और सभी क्षेत्रों में यात्रा करनी चाहिए। काम में लगे हुए, बगैर विश्राम किए और अन्त तक दृढ़ रहते हुए, उन्हें प्रत्येक देश में 'या बहा–उल–आभा* (हे तू जो सभी महिमाओं की महिमा है) *का जय घोष करना चाहिए.....ताकि सम्पूर्ण पूरब और पश्चिम में एक विशाल समूह ईश्वर के शब्द की छत्र छाया में एकत्रित हो सके, पावनता की मीठी सुगंध प्रवाहित हो सके और मनुष्यों के मुख मण्डल प्रकाशित हो सकें, ताकि उनके हृदय दिव्य चेतना से भर उठें और उनकी आत्माएँ स्वर्गिक बन जायें।"*

इन बार–बार दोहराये जाने वाले आदेशों का पालन करते हुए, ऐसे भव्य वचनों के प्रति सजग रहते हुए, अपने आह्वान की उच्चता के प्रति सचेत रहकर, उस उदाहरण से प्रेरित होकर जो स्वयं अब्दुल बहा द्वारा प्रस्तुत किया गया था और उनके अचानक चले जाने से निराश न होते हुए, प्रभुधर्म के अन्दर

और बाहर के शत्रुओं द्वारा किए गए आक्रमणों से बिना डरे, पूरब और पश्चिम के बहाउल्लाह के अनुयायी पहले से कहीं अधिक उत्साह के साथ अपनी एकता की पूरी ताकत से अपने धर्म का अन्तर्राष्ट्रीय विस्तार करने के लिए उठ खड़े हुए। एक ऐसा विस्तार जो अब उस अनुपात में होने वाला था कि इसे प्रभुधर्म के इतिहास की पहली शताब्दी की सबसे निर्णायक घटनाओं में से एक माना जाना चाहिए।

पृथ्वी के प्रत्येक महाद्वीप में शिक्षण के कार्य पहले रुक–रुक कर, आकस्मिक रूप से और अव्यवस्थित ढंग से शुरू हुए थे। बाद में धीरे–धीरे विकसित हो रही प्रशासनिक व्यवस्था के उभरने के परिणामस्वरूप, इन्हें व्यवस्थित रूप से संचालित किया जाने लगा, केन्द्रीय स्तर पर कुशलतापूर्वक निर्देशित और निष्पादित किया जाने लगा। बहाउल्लाह के अनुयायियों द्वारा शिक्षण कार्य कई देशों में किया जा रहा था, लेकिन अमेरिका में यह कार्य प्रत्यक्ष रूप से सभी आयु वर्ग के सदस्यों, स्त्री और पुरूषों, नए बहाइयों, अनुभवियों, यात्रा करने वाले शिक्षकों और एक स्थान पर बस जाने वाले बहाइयों द्वारा किया जा रहा था। अपनी उस विविधता और उन आशीर्वादों के कारण जो इनसे प्राप्त हुए हैं, यह ऐसा दैदीप्यमान वृत्तान्त बन चुका है कि इनकी बराबरी केवल उन उपलब्धियों के साथ की जा सकती है जिन्होंने बहाई विधान के प्रारम्भिक वर्षों को अमर बनाया है।

प्रभुधर्म का वह प्रकाश जो बाबी विधान के नौ वर्षों के दौरान फारस में चमका था और जो फारस के साथ लगे हुए इराक में प्रतिबिम्बित हुआ था, जिसने बहाउल्लाह के उनतालीस वर्षीय सेवाकाल के दौरान अपनी ज्योति भारत, मिस्र, तुर्की, कौकेशस, तुर्किस्तान, सूडान, फिलिस्तीन, सीरिया, लेबनान और बर्मा पर बिखेरी थी और जो आगे चलकर दिव्य रूप से स्थापित की गई संविदा के प्रभाव के माध्यम से, अमेरिका के संयुक्त राज्यों तक और कनाडा, फ्राँस, ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी, ऑस्ट्रिया, रूस, इटली, हॉलैंड, हंगरी, स्विटज़रलैंड, अरेबिया, ट्यूनिशिया, चीन, जापान, हवाईयन द्वीप, दक्षिण अफ्रीका, ब्राज़ील और ऑस्ट्रेलिया तक पहुँची थी, उसे, अब पहली बहाई शताब्दी के अन्त से पहले, कम से कम 34 स्वतंत्र देशों के साथ–साथ अमेरिकी, एशियाई एवं

अफ्रीकी महाद्वीपों, फारस की खाड़ी और अटलांटिक एवं प्रशांत महासागर में स्थित कई निर्भर देशों तक पहुँचाना था और उन्हें प्रकाशित करना था। अब्दुल बहा के स्वर्गारोहण के बाद नॉर्वे, स्वीडन, डेनमार्क, बेल्जियम, फिनलैंड, आयरलैंड, पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया, रूमेनिया, युगोस्लाविया, बल्गेरिया, अल्बेनिया, अफगानिस्तान, एबिसीनिया, न्यूज़ीलैंड और 19 लेटिन अमेरिकी गणराज्यों में बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के ध्वज फहराये जा चुके हैं तथा इनमें से बहुत से स्थानों पर उनके धर्म की प्रशासनिक व्यवस्था के ढाँचे की नींव पहले ही स्थापित की जा चुकी है। इसके अतिरिक्त, अलास्का, आइसलैंड, जेमाईका, पोर्टो रिको, फिलिपीन्स में सोलानो द्वीप, जावा, तस्मानिया, बहरीन और ताहीति के द्वीप, बलूचिस्तान, दक्षिण रोडेशिया और बेल्जियन कांगो जैसे पूरब और पश्चिम के कई निर्भर देशों में, इस नवजात बाईबिल के धारकों ने अपना निवास स्थापित कर लिया है और इसकी संस्थाओं के लिए एक अभेद्य आधार बनाने के हर सम्भव प्रयास कर रहे हैं।

वक्तव्यों और सम्मेलनों, प्रेस और रेडियो के माध्यम से अध्ययन की कक्षाएँ और अनौपचारिक बैठकें आयोजित करके, प्रभुधर्म के सिद्धातों जैसे आदर्शों से प्रेरित होने वाली सोसाईटियों, संस्थानों और क्लबों की गतिविधियों में भाग लेकर, बहाई साहित्य के वितरण, विभिन्न प्रदर्शनों, शिक्षक प्रशिक्षण कक्षाओं की स्थापना द्वारा, राजनेताओं, विद्वानों, प्रचारकों, लोकोपकारकों और जन–विचार के अन्य नेताओं के साथ सम्पर्क बनाकर – जिसमें से अधिकांश कार्य, उन अमेरिकी बहाई समुदाय के सदस्यों की प्रबंधकुशलता के माध्यम से किया गया है, जिन्होंने इन देशों और निर्भर राज्यों में से अधिकांश में आध्यात्मिक विजय प्राप्त करने का सीधा उत्तरदायित्व निभाया है और इन सब से ऊपर, प्रथम बहाई शताब्दी के अन्तिम दशकों के दौरान, यह विजय उन पायनियरों के अटल दृढ़संकल्प और उनकी अडिग स्वामीभक्ति के माध्यम से प्राप्त की गई हैं जिन्होंने यात्री शिक्षकों या निवासियों के रूप में इन अभियानों में भाग लिया है।

बहाउल्लाह के पश्चिमी अनुयायियों और विशेषकर अमेरिकी बहाई समुदाय के उन दिग्गज सदस्यों की अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षण गतिविधियों का उल्लेख भी नहीं छूटना चाहिए, जिन्होंने उन्हें मिलने वाले प्रत्येक अवसर का

पूरा–पूरा लाभ उठाते हुए या तो उदाहरण और वचनों के माध्यम से या फिर साहित्य के वितरण के माध्यम से नए क्षेत्रों में प्रभुधर्म की स्थापना की और उन बीजों को विकसित किया जिन्हें अन्त में अंकुरित होकर एक ऐसी फसल उपजानी थी जो उतनी ही उल्लेखनीय होने वाली थी जितनी पूर्वोल्लेखित देशों में प्राप्त की गई थीं। ऐसे प्रयासों के माध्यम से ईश्वर के प्राणदायी प्रकटीकरण की पवन धरती के दूरस्थ कोनों तक पहुँच गई और इसने लेपलैंड; स्पिट्बर्जेन का वह द्वीप जो दुनिया का सबसे उत्तरी वास है; नार्वे का हेमरफेस्ट और चिली की सीमा पर स्थित मैन्जेलेन्स – जो कि धरती के सबसे उत्तरी और दक्षिणी शहर हैं; प्रशांत महासागर में स्थित पागो और फिज़ी; युकाटन प्रांत में स्थित चिचेन इट्ज़ा; वेस्ट इन्डीज़ में स्थित बहामा द्वीप, ट्रिनिदाद और बारबाडोस; ईस्ट इन्डीज़ में स्थित बाली द्वीप और ब्रिटिश नॉर्थ बोर्नियो; पाटागोनिया; ब्रिटिश गियाना; सेशैल्स द्वीप; न्यू गिनी एवं सीलोन जैसे दूर स्थित देशों एवं दुर्गम क्षेत्रों में आध्यात्मिक जीवन के अंकुर फैलाए।

जिनेवा में एक अन्तर्राष्ट्रीय बहाई ब्यूरो की स्थापना से विशेष और बहुमूल्य सहायता मिली है। यह एक ऐसा केन्द्र है जो मुख्य रूप से यूरोपीय महाद्वीप में प्रभुधर्म की शिक्षण गतिविधियों के विस्तार को सुगम बनाने के लिए स्थापित किया गया है। पावन भूमि में स्थित विश्व प्रशासनिक केन्द्र के एक सहायक के रूप में इस केन्द्र ने पूरब और पश्चिम के बहाई समुदायों के साथ सम्पर्क बनाये रखा है। प्रभुधर्म के लिए यह एक जानकारी का ब्यूरो होने के साथ–साथ इसके साहित्य के वितरण केन्द्र के रूप में भी काम करता है। अपने निःशुल्क पाठन कक्ष और पुस्तकालय, भ्रमणकारी शिक्षकों के सत्कार से और विभिन्न सोसायटियों के साथ अपने सम्पर्क के माध्यम से इस ब्यूरो ने व्यक्तियों द्वारा और बहाई राष्ट्रीय सभाओं द्वारा निष्पादित किए जा रहे शिक्षण कार्यक्रमों का एकीकरण करने में बहुत बड़ा योगदान दिया है।

इन शिक्षण गतिविधियों के माध्यम से जिनमें कुछ तो व्यक्तियों द्वारा शुरू की गई थीं और अन्य संगठित सभाओं द्वारा आरम्भ की गई योजनाओं के माध्यम से संचालित की जा रहीं थी, बहाउल्लाह का वह धर्म, जिसमें उनके जीवनकाल में फारसी, अरबी, तुर्की, रूसी, कुर्दी, भारतीय, बर्मा निवासी और

नीग्रो शामिल थे और जो आगे चलकर अब्दुल बहा के दिनों में अंग्रेज, जर्मन, फ्राँसिसी, इटालियन, जापानी, चीनी और अमेरिकी नवधर्मियों के शामिल होने के कारण और भी प्रबलित हुआ था, वह धर्म अब इस बात पर गर्व कर सकता था कि इसके घोषित अनुयायियों में हंगेरियन, आयरलैंडवासी, स्केन्डिनेवियावासी सूडानी, चेकोस्लोवाकियावासी, बल्गेरियावासी, फिनलैंडवासी, इथियोपियावासी, अल्बेनियावासी, पोलैंडवासी, एस्किमो, अमेरिकी इन्डियन, युगोस्लावियावासी, लेटिन अमेरिकी और माओरी जैसे व्यापक रूप से फैले हुए जातीय समूह के प्रतिनिधि भी शामिल थे।

प्रभुधर्म की सीमाओं के इतने उल्लेखनीय विस्तार, इसकी परिधि में शामिल किए गए तत्वों की विविधता की इतनी उल्लेखनीय वृद्धि के साथ–साथ इसके साहित्य की संख्या में भी भारी विस्तार हुआ, एक ऐसा विस्तार जो शुरू में उठाये गए उन कदमों से बिल्कुल विपरीत था जो बहाउल्लाह के उन लेखों के चन्द संस्करणों के प्रकाशन के लिए किए गए थे, जो उनके सेवाकाल के अन्तिम वर्षों के दौरान जारी किए गए थे। बाब और बहाउल्लाह के दिनों में आधी शताब्दी तक बहाई साहित्य का विस्तार उन दो भाषाओं तक ही सीमित रहा जिनमें उनकी शिक्षाएँ मूल रूप से प्रकट की गई थीं और बाद में अब्दुल बहा के जीवनकाल में इनका विस्तार हुआ, इसमें वे संस्करण भी शामिल हो गए जो अंग्रेज़ी, फ्राँसिसी, जर्मनी, तुर्की, रूसी और बर्मीज भाषाओं में प्रकाशित किए गए थे, जिन्हें अब्दुल बहा के स्वर्गारोहण के पश्चात पुस्तकों, आलेखों, पैम्फ्लेटों और पत्रकों की संख्या में विशाल वृद्धि के माध्यम से कम से कम 29 अतिरिक्त भाषाओं में छापा और वितरित किया गया था। स्पेनिश और पुर्तगाली; तीन स्कैन्डिनेवियाई भाषाओं, फिनिश और आइसलैंडिक भाषाओं; डच, इटालियन, चेक, पोलिश, हन्गेरियन, रूमैनियन, सर्बियन, बल्गेरियन, ग्रीक और अल्बेनियन भाषाओं; हीब्रू और एस्पेरान्टो, आर्मिनियन, कुर्दिश और आम्हारिक; चीनी और जापानी; साथ ही उर्दू, गुजराती, बांग्ला, हिन्दी और सिन्धी जैसी पाँच भारतीय भाषाओं में, अधिकतर व्यक्तिगत बहाईयों द्वारा की गई पहल के माध्यम से और आंशिक रूप से बहाई सभाओं की मध्यस्थता द्वारा पुस्तकों को प्रकाशित किया गया और इन्हें व्यापक रूप से वितरित किया गया, साथ ही

पूरब एवं पश्चिम के निजी एवं सार्वजनिक पुस्तकालयों में भी रखा गया। इसके अतिरिक्त, वर्तमान में प्रभुधर्म के साहित्य को लात्वियन, लिथुआनियन, यूक्रेनियन, तमिल, मराठी, पश्तो, तेलगु, किनारीज़, सिन्घालीस, मलयालम, उड़िया, पंजाबी और राजस्थानी भाषाओं में अनुवादित किया जा रहा है।

उस साहित्य की विविधता भी इतनी ही उल्लेखनीय रही है जो पृथ्वी के प्रत्येक महाद्वीप में जन साधारण की सेवा के लिए प्रस्तुत किया गया है और दृढ़ एवं परिश्रमी पायनियरों द्वारा धरती के दूरतम छोर तक पहुँचाया जा रहा है। यह एक ऐसा कार्य है जिसमें अमेरिकी बहाई समुदाय के सदस्यों ने अपनी अलग पहचान बनाई है। इसके अन्तर्गत, एक ऐसे अंग्रेजी संस्करण का प्रकाशन किया गया जिसमें बहाउल्लाह के लेखों से ऐसे चुनिन्दा उद्धरण लिए गए थे जिनका अब तक अनुवाद नहीं हुआ था और जो अधिक महत्वपूर्ण थे। साथ ही बहाउल्लाह द्वारा प्रकट किए गए *"भेड़िये के पुत्र को सम्बोधित पत्र"* के अंग्रेजी अनुवाद का प्रकाशन किया गया तथा उनकी लेखनी द्वारा प्रकट की गई प्रार्थनाओं एवं चिन्तन के इसी भाषा में किए गए संकलन का भी प्रकाशन किया गया। इसके अतिरिक्त, उनके *"निगूढ़ वचन"* का आठ भाषाओं में, उनकी *"किताब–ए–ईक़ान"* का सात भाषाओं में और अब्दुल बहा के *"कुछ प्रश्नों के उत्तर"* का छः भाषाओं में अनुवाद और प्रकाशन किया गया; इसके अतिरिक्त, अंग्रेजी में अनुवादित की गई अब्दुल बहा की पातियों के तीसरे खण्ड का संकलन; बहाई मान्यता के सिद्धान्तों से सम्बन्धित और प्रभुधर्म की प्रशासनिक व्यवस्था के उद्‌गम एवं विकास से सम्बन्धित पुस्तकों एवं लेखों का प्रकाशन किया गया; इतिहासकार और कवि नबील–ए–ज़रान्दी द्वारा लिखित बहाई प्रकटीकरण के प्रारम्भिक दिनों की कहानी का अंग्रेज़ी अनुवाद किया गया, जिसे बाद में अरबी में प्रकाशित किया गया और जर्मन एवं एस्पेरान्टो भाषाओं में भी अनुवादित किया गया; साथ ही बहाई शिक्षाओं पर की गई टिप्पणियों और व्याख्याओं का प्रकाशन, पश्चिमी लेखकों और चर्च के पूर्व पादरी पुरोहितों द्वारा प्रशासनिक संस्थाओं और सम्बद्ध विषयों का प्रकाशन जैसे कि विश्व संघ, जातीय एकता और तुलनात्मक धर्म। ये सभी बहाई प्रकाशनों के उस विविध स्वरूप को प्रमाणित करते हैं जो पृथ्वी पर इनके व्यापक विकास के कदम से कदम मिलाकर चल रहा था। इसके

अतिरिक्त, *किताब–ए–अक़दस* के नियमों से सम्बद्ध दस्तावेज़ों, बाईबिल की भविष्यवाणियों से सम्बन्धित पुस्तकों और पैम्फ्लेटों, बहाउल्लाह, अब्दुल बहा और कई बहाई लेखकों के लेखों के कुछ संशोधित संस्करणों, विभिन्न प्रकार की बहाई पुस्तकों और विषयों के लिए मार्गदर्शिकाओं और अध्ययन रूपरेखाओं, बहाई प्रशासन से जुड़े पाठों, बहाई पुस्तकों और पत्रिकाओं की विषय सूचियों, बरसी के कार्डों और कैलेन्डरों, कविताओं, गीतों, नाटिकाओं और नुमाईशों, बहाई बच्चों के प्रशिक्षण के लिए अध्ययन सामग्रियों और प्रार्थना की पुस्तकों की छपाई तथा समाचार पत्रों एवं अंग्रेज़ी, फारसी, जर्मन, एस्पेरान्टो, अरबी, फ्राँसिसी, उर्दू, बर्मीस और पुर्तगाली में जारी किए गए बुलेटिनों और पत्रिकाओं की छपाई से बहाई प्रकाशनों का उत्पादन बहुत बढ़ गया है और इसकी विविधता में वृद्धि हुई है।

कई वर्षों की अवधि में बहाई गतिविधियों के द्विवर्षीय अन्तर्राष्ट्रीय रिकॉर्ड के ऐसे क्रमिक संस्करणों का तैयार होना विशेष महत्व का रहा है, जिनमें बहाई गतिविधियों की सविस्तार जानकारी दी गई है, इनके बारे में पूरी तरह से लिखा गया है और अन्य बातों के अतिरिक्त इनमें प्रभुधर्म के लक्ष्यों और उद्देश्यों के साथ–साथ प्रभुधर्म की प्रशासनिक व्यवस्था के बारे में एक वक्तव्य, प्रभुधर्म के पावन ग्रंथों के कुछ चुनिन्दा उद्धरण, इसकी गतिविधियों का सर्वेक्षण, पाँच महाद्वीपों में इसके केन्द्रों की सूची, इसके साहित्य की ग्रंथ सूची, पूरब और पश्चिम के प्रख्यात स्त्री पुरुषों द्वारा इसके आदर्शो एवं इसकी उपलब्धियों को दी गई श्रद्धांजलियाँ और वर्तमान समस्याओं से सम्बन्धित लेख हैं।

पहली बहाई शताब्दी के वर्षों के अन्तर्गत तैयार किया गया बहाई साहित्य का कोई भी सर्वेक्षण अधूरा है यदि इसमें प्रभुधर्म के उस शुद्ध हृदय और अमर सहायक, जे. ई. एज़लमॉन्ट द्वारा लिखे गए बहाई इतिहास और शिक्षाओं के शानदार, सप्रमाण और व्यापक परिचय के प्रकाशन और इसके दूर तक पहुँचने वाले प्रभाव का विशेष उल्लेख नहीं किया जाता। यह इतिहास पहले ही कम से कम 37 भाषाओं में प्रकाशित किया जा चुका है और वर्तमान में 13 अतिरिक्त भाषाओं में अनुवादित किया जा रहा है, जिसके अंग्रेजी अनुवाद की लाखों प्रतियाँ छप चुकी हैं और संयुक्त राज्य अमेरिका में तो इसे कम से

कम नौ बार छापा जा चुका है, जिसके एस्पेरान्टो, जापानी और अंग्रेज़ी भाषाओं के अनुवाद का ब्रेल लिपि में प्रतिलेखन किया गया है और जिसको शाही परिवार के सदस्यों ने अपनी श्रद्धांजलियाँ देते हुए इसे "प्रेम और अच्छाई की एक तेजस्वी पुस्तक कहा है" और सबको इसे पढ़ने का सुझाव दिया है, साथ ही यह पुष्टि की है कि "इस पुस्तक के कारण कोई भी मनुष्य बेहतर बनने से बच नहीं सकता।"

जिन उपलब्धियों का विशेष उल्लेख किया जाना आवश्यक है उनमें निम्नलिखित हैं – ब्रिटेन की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा द्वारा एक पब्लिशिंग ट्रस्ट की स्थापना, जिसे "द बहाई पब्लिशिंग कम्पनी" के नाम से पंजीकृत किया गया जो सम्पूर्ण ब्रिटिश आईल्स में बहाई साहित्य के प्रकाशक और थोक वितरक के रूप में कार्यरत है; सम्पूर्ण पूरब की बहाई सभाओं द्वारा बाब, बहाउल्लाह और अब्दुल बहा के उन पावन लेखों के कम से कम ऐसे 40 हस्तलिखित ग्रंथों का संकलन, जो अब तक प्रमाणीकृत और अप्रकाशित थे; *किताब–ए–अक़दस* के उस परिशिष्ट का अंग्रेज़ी में अनुवाद, जिसका शीर्षक था *"प्रश्न और उत्तर,"* साथ ही व्यक्तिगत हैसियत के मामलों में बहाई नियमों की रूपरेखा का मिस्र और भारत की राष्ट्रीय बहाई आध्यात्मिक सभाओं द्वारा क्रमशः अरबी और फारसी में प्रकाशन और भारत की राष्ट्रीय बहाई आध्यात्मिक सभा द्वारा मृतकों के अन्तिम संस्कार से सम्बन्धित नियमों की एक संक्षिप्त रूपरेखा का प्रकाशन; न्यूज़ीलैंड के एक माओरी बहाई द्वारा एक बहाई पैम्फ्लेट का माओरी भाषा में अनुवाद। इसके अतिरिक्त जिन कार्यों का उल्लेख किया जाना चाहिए वे इस प्रकार है – तेहरान के बहाईयों की आध्यात्मिक सभा द्वारा बहुत से ऐसे पत्रों और वक्तव्यों का संकलन और प्रकाशन जो अब्दुल बहा द्वारा पश्चिम के अपने दौरे के समय दिए गए थे। फारसी भाषा में प्रभुधर्म के विस्तृत इतिहास का तैयार किया जाना; साथ ही पूरब की कई राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं द्वारा बहाई विवाह और तलाक के प्रमाणपत्रों की फारसी और अरबी भाषाओं में छपाई; फारस की बहाई राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा द्वारा जन्म और मृत्यु के प्रमाणपत्रों का जारी किया जाना; प्रभुधर्म के लिए विरासत बनाने की चाह रखने वाले मित्रों के लिए वसीयत के

फार्म तैयार करना; अमेरिकी बहाई राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा द्वारा अब्दुल बहा की बहुत सी अप्रकाशित पातियों का एक संकलन बनाया जाना; सुप्रसिद्ध ज़ामेनहोफ की बेटी जिसने स्वयं भी प्रभुधर्म को स्वीकार किया था, द्वारा कई बहाई पुस्तकों सहित बहाउल्लाह और अब्दुल बहा के कुछ अधिक महत्वपूर्ण लेखों का एस्पेरान्टो में अनुवाद किया जाना; बेल्ग्रेड विश्वविद्यालय से जुड़े श्रेष्ठतम विद्वानों में से एक प्रोफेसर बोगडान पोपोविच द्वारा एक बहाई पुस्तिका का सर्बियन भाषा में अनुवाद किया जाना और रूमेनिया की राजकुमारी इलीनिया द्वारा बड़े स्वाभाविक तरीके से दिया गया वह प्रस्ताव जिसमें उन्होंने अंग्रेज़ी में लिखे गए एक बहाई पैम्फ्लेट को अपने देश की भाषा में अनुवादित करने का प्रस्ताव दिया था, बाद में इसे छपवाया और इनका अपने मूल देश में वितरण भी कर दिया था।

बहाई लेखों के ब्रेललिपि में प्रतिलेखन के कार्य में की गई प्रगति का भी उल्लेख किया जाना चाहिए – एक ऐसा प्रतिलेखन जिसमें *"किताब–ए–ईक़ान," "निगूढ़ वचन," "सात घाटियाँ," "इशराक़ात," "सुरिय–ए–हैकाल," "ज्ञान के शब्द," "बहाउल्लाह की प्रार्थनाएँ और चिन्तन,"* अब्दुल बहा द्वारा दिए गए *"कुछ प्रश्नों के उत्तर," "विश्व शान्ति की घोषणा," "अब्दुल बहा का विवेक," "एक नई विश्व व्यवस्था का लक्ष्य,"* जैसी अंग्रेज़ी पुस्तकें पहले ही शामिल हैं, साथ ही जिसमें *"बहाउल्लाह और नयायुग"* का अंग्रेजी (दो संस्करण), एस्पेरान्टो, और जापानी भाषाओं में अनुवाद और ऐसे पैम्फ्लेट्स भी शामिल हैं जो अंग्रेज़ी, फ्रांसिसी और एस्पेरान्टो में लिखे गए हैं।

प्रभुधर्म के साहित्य को समृद्ध बनाने और इसे कई भाषाओं में अनुवादित करने के कार्य के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी लोगों ने विभिन्न संगठनों के साथ अपने औपचारिक सम्पर्क द्वारा इसे फैलाने में भी तेज़ी दिखाई। बहाउल्लाह के धर्म के उन प्रतिनिधियों द्वारा प्रदर्शित की गई ऊर्जा, सतर्कता और दृढ़ता उच्चतम प्रशंसा के योग्य हैं, जिनके द्वारा हाल ही के वर्षों में बहाई साहित्य का वितरण एक विशाल पैमाने पर किया जा रहा है। यूनाइटेड स्टेट्स और कनाडा में जिन मुख्य एजेंसियों को इस साहित्य के प्रकाशन और वितरण का कार्य सौंपा गया है, उनके द्वारा तैयार की गई और सबको पहुँचाई गई

रिपोर्टों से यह बात सामने आती है कि 28 फरवरी 1943 को समाप्त होने वाली ग्यारह माह की अवधि के अन्दर 19,000 से भी ज़्यादा पुस्तकें, 100,000 पैम्फ्लेट, 3,000 अध्ययन रूपरेखाएँ, चयनित लेखों के 4,000 सेट और 1800 बरसी और उपासना मंदिर के कार्ड और फोल्डर या तो बिक चुके थे या बाँटे जा चुके थे; इसके अलावा दो साल के दौरान ऐसे 3,76,000 पैम्फ्लेट भी छापे जा चुके थे जिनमें संयुक्त राज्य अमेरिका में बनाये गए उपासना मंदिर के स्वरूप और उद्देश्य की रूपरेखा दी गई है। सेन फ्राँसिस्को और न्यूयॉर्क में आयोजित किए गए दो विश्व मेलों में बहाई साहित्य की 300,000 सामग्रियाँ बिक चुकी थीं और बारह माह की अवधि के दौरान 1089 पुस्तकें विभिन्न पुस्तकालयों को दान की जा चुकी हैं। नेशनल कॉन्टेक्ट कमेटी के माध्यम से एक साल में लेखकों, रेडियो उद्घोषकों और यहूदी एवं नीग्रो अल्पसंख्यकों के प्रतिनिधियों सहित अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में रुचि रखने वाले विभिन्न संगठनों को 4,500 पैम्फ्लेटों सहित 2,300 से भी अधिक पत्र पहुँच चुके हैं।

इसी प्रकार, अन्य देशों की आध्यात्मिक सभाओं की सहायता से प्रतिष्ठावान एवं ऊँचे पद वाले व्यक्तियों को यह विशाल साहित्य भेंट करने में अमेरिकी बहाई समुदाय के चुने गए प्रतिनिधियों और भ्रमणकारी शिक्षकों ने, ऐसी ऊर्जा और दृढ़संकल्प प्रदर्शित किया है जो उतना ही प्रशंसनीय है जितने वे प्रयास हैं जो इस साहित्य को तैयार करने के लिए किए गए थे। इंग्लैंड के राजा, रूमानिया की महारानी मैरी, राष्ट्रपति फ्रेंकलिन डी. रूज़वेल्ट, जापान के सम्राट, स्वर्गीय राष्ट्रपति वोन हिन्डेनबर्ग, डेनमार्क के राजा, स्वीडन की महारानी, बल्गेरिया के राजा फरडिनेन्डे, एबिसीनिया के सम्राट, मिस्र के राजा, इराक के स्वर्गीय राजा फैज़ल, एल्बानिया के राजा ज़ोग, चेकोस्लोवाकिया के स्वर्गीय राष्ट्रपति मासारिक तथा इसके अतिरिक्त मेक्सिको, होन्ड्यूरास, पनामा, एल–सेल्वाडोर, ग्वाटेमाला और पोर्टो रिको के राष्ट्रपतियों को, जनरल चियेंग काईशेक, मिस्र के पूर्व खेदिव, स्वीडन के युवराज, विन्डसर के ड्यूक, केन्ट की डचेस, आस्ट्रिया की आर्च–डचेस एन्टन को, युगोस्लाविया की राजकुमारी ओल्गो, मिस्र की राजकुमारी काद्रिया, विस्बोर्ग की राजकुमारी एस्एल बर्नाडोट, महात्मा गाँधी, भारत के कई शासक राजकुमारों और ऑस्ट्रेलिया के राष्ट्रमण्डल

के सभी राज्यों के प्रधान मंत्रियों और इन सभी के साथ–साथ छोटे पदाधिकारियों को प्रभुधर्म के विभिन्न पहलुओं पर जानकारी देने वाला बहाई साहित्य भेंट किया गया था। इनमें से कुछ को व्यक्तिगत रूप से और अन्य को उचित माध्यमों से, व्यक्तिगत अनुयायियों द्वारा अथवा फिर बहाई समुदाय के निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा प्रभुधर्म का साहित्य भेंट किया गया।

इस साहित्य को राज्य के सामान्य जन, विश्वविद्यालयों और सार्वजनिक पुस्तकालयों के लिए प्रस्तुत करने के अपने कर्त्तव्य के प्रति ये व्यक्तिगत शिक्षक और सभाएँ कभी लापरवाह नहीं रही हैं। इस तरह उन्होंने पढ़ने में रुचि रखने वाली जनता के एक बड़े भाग को बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के इतिहास और सिद्धान्तों की जानकारी प्राप्त करने का अवसर दिया है। पाँच महाद्वीपों में फैलने वाली इन गतिविधियों का फैलाव दिखाने के लिए इनमें से अधिक महत्वपूर्ण पुस्तकालयों के नाम गिनवाना ही काफी है: लंदन का ब्रिटिश म्यूज़ियम, ऑक्सफॉर्ड की बॉडलीयन लाईब्रेरी, वॉशिंगटन में लाईब्रेरी ऑफ कांग्रेस, हेग में स्थित पीस पैलेस लाईब्रेरी, ओस्लो की नोबेल पीस फाउन्डेशन और नैंसेन फाउन्डेशन लाईब्रेरियाँ, कोपेनहैगन की रॉयल लाईब्रेरी, जिनेवा में लीग ऑफ नेशन्स की लाईब्रेरी, हूवर पीस लाईब्रेरी, एमस्टरडेम यूनिवर्सिटी लाईब्रेरी, ओटावा में लाईब्रेरी ऑफ पार्लियामेन्ट, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी लाईब्रेरी, अलीगढ़ यूनिवर्सिटी लाईब्रेरी, यूनिवर्सिटी ऑफ मद्रास लाईब्रेरी, बोलेपुर में स्थित शान्ति निकेतन इन्टरनेशनल यूनिवर्सिटी लाईब्रेरी, हैदराबाद की उस्मानिया यूनिवर्सिटी लाईब्रेरी, कोलकाता की इम्पीरियल लाईब्रेरी, दिल्ली की जामिया मिलिया लाईब्रेरी, मैसूर यूनिवर्सिटी लाईब्रेरी, रंगून की बर्नार्ड लाईब्रेरी, पुणे की जेराबिया वाडिया लाईब्रेरी, लाहौर पब्लिक लाईब्रेरी, लखनऊ और दिल्ली विश्वविद्यालयों की लाईब्रेरियाँ, जोहान्सबर्ग पब्लिक लाईब्रेरी, रियो डी जेनीरियो की सरक्यूलेटिंग लाईब्रेरियाँ, मनीला नेशनल लाईब्रेरी, हाँग काँग यूनिवर्सिटी लाईब्रेरी, रैकजेविक के सार्वजनिक पुस्तकालय, सेशेल्स द्वीपों में स्थित कार्निगी लाईब्रेरी, सैन जुएन पब्लिक लाईब्रेरी, सियूदाद ट्रूजिल्लो यूनिवर्सिटी लाईब्रेरी, पोर्टो रिको के कार्निगी पब्लिक लाईब्रेरियाँ, कैनबेर्रा की लाईब्रेरी ऑफ पार्लियामेंट, वेलिंगटन पार्लियामेंटरी लाईब्रेरी। इन सभी के साथ–साथ ऑस्ट्रेलिया और

न्यूज़ीलैंड के सभी मुख्य पुस्तकालयों में, मेक्सिको के नौ पुस्तकालयों में, मुकडेन और मनचुकुओ के बहुत से पुस्तकालयों में और एक हज़ार से भी अधिक सार्वजनिक पुस्तकालयों में तथा संयुक्त राज्यों और कनाडा में स्थापित की गईं, भारत के कॉलेजों सहित दो सौ विश्वविद्यालयों एवं कॉलेजों के पुस्तकालयों में बहाउल्लाह के धर्म के बारे में प्रमाणिक पुस्तकें रखी गई हैं।

प्रभुधर्म के साहित्य के विकास के लिए नियुक्त की गई एक विशेष समिति के माध्यम से तैयार की गई एक व्यापक योजना में राज्य की जेलों को और युद्ध की शुरूआत के समय से सेना के पुस्तकालयों को भी शामिल कर लिया गया है। यह सजग और उद्यमी समुदाय, बधिरों के हितों के प्रति भी लापरवाह नहीं रहा है, इसका प्रमाण यह है कि इस समुदाय के सदस्यों द्वारा ब्रेललिपि में प्रतिलेखित की गई पुस्तकों को संयुक्त राज्य अमेरिका के 18 राज्यों में स्थित तीस पुस्तकालयों एवं संस्थानों, होनोलुलु (हवाई), रेजीना (सास्कातचीवान), टोकियो और जेनेवा में स्थित बधिरों के पुस्तकालयों में तथा उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप के विभिन्न बड़े शहरों के सार्वजनिक पुस्तकालयों से जुड़े बहुत से चलित पुस्तकालयों में रखा गया है।

इस विषय को मैं उस व्यक्ति का विशेष उल्लेख किए बगैर नहीं छोड़ सकता जिसने न केवल बहाई साहित्य के अनुवाद और वितरण के लिए शुरू किए गए उपायों में अपने योगदान के कारण बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपने विलक्षण और अतुलनीय प्रयासों के कारण, स्वयं को ऐसी कीर्ति से गौरवान्वित किया है जो न केवल पूरी दुनिया में उसके ज़माने के प्रभुधर्म के शिक्षकों की उपलब्धियों से बढ़ चढ़ कर है बल्कि जो इस धर्म के किसी भी प्रसारक द्वारा एक पूरी शताब्दी के दौरान किए गए अद्‌भुत् कार्यों से कहीं अधिक स्मरणीय है। यदि बहाई भ्रमणकारी शिक्षकों की इस आदर्श नारी की और अब्दुल बहा के स्वर्गवास के बाद बहाउल्लाह द्वारा उत्पन्न की जाने वाली इस धर्मभुजा की विविध सेवाओं के मूल्य को उचित रूप से आँका जाए, तो इसे बहाउल्लाह के धर्म की प्रधान राजदूत और पूरब एवं पश्चिम के बहाई शिक्षकों के गौरव से सम्मानित किया जाना चाहिए।

जिस वर्ष दिव्य योजना की पातियाँ प्रकट की गई थीं, उसी वर्ष, इन पातियों में अब्दुल बहा द्वारा उल्लिखित ऐतिहासिक आह्वान के उत्तर में मार्था रूट सबसे पहले उठ खड़ी हुई थीं; अडिग संकल्प और उच्च अनासक्ति की भावना के साथ, वह दुनिया की यात्रा पर निकल पड़ीं। बीस वर्ष की लम्बी अवधि तक निरंतर जारी रहने वाली अपनी इस यात्रा में उन्होंने चार बार पूरी दुनिया का दौरा किया, जिसके दौरान उन्होंने चार बार चीन एवं जापान की और तीन बार भारत की यात्रा की। उन्होंने दक्षिण अमेरिका के प्रत्येक महत्वपूर्ण शहर का भी दौरा किया। सम्राटों, महारानियों, राजकुमारों एवं राजकुमारियों, गणराज्यों के राष्ट्रपतियों, मंत्रियों एवं राजनीतिज्ञों, पत्रकारों, प्रोफेसरों, धर्माधिकारियों एवं कवियों के साथ–साथ जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों की एक बड़ी संख्या को इस नवयुग का संदेश दिया तथा औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप से धार्मिक काँग्रेसों, शान्ति के लिए काम करने वाली सोसाईटियों, एस्पेरान्टो संघों, समाजवादी काँग्रेसों, थियोसोफिकल सोसाईटियों, महिला क्लबों और अन्य सम्बद्ध संगठनों से सम्पर्क किया। इस अदम्य आत्मा ने अपने प्रयासों और उस विजय की विशेषता से उपलब्धि प्राप्त कर एक ऐसा रिकॉर्ड स्थापित किया जो पूरे पश्चिम की अपनी यात्राओं के समय स्वयं अब्दुल बहा द्वारा अपने अनुयायियों के समक्ष प्रस्तुत किए गए उदाहरण के साथ सबसे नज़दीक से मेल खाता है।

रूमानिया की महारानी मैरी से मार्था रूट ने लगातार आठ बार भेंट की। मार्था रूट द्वारा अपनी शाही मेज़बान पर डाले गए गहरे प्रभाव के कारण जिसका प्रमाण वे प्रेमपूर्ण श्रद्धांजलियाँ हैं जो स्वयं महारानी की कलम से निकली हैं – ये भेंट उनकी यादगार यात्राओं की सबसे उल्लेखनीय विशेषता बन चुकी हैं। इन आठ मुलाकातों में सबसे पहली भेंट जनवरी 1926 में बुखारेस्ट के कोन्ट्रोसेनी पैलेस में हुई, दूसरी भेंट 1927 में सिनाईया के पेलिसर पैलेस में हुई, इसके बाद अगले वर्ष की जनवरी में मार्था रूट ने महारानी और उनकी पुत्री राजकुमारी इलियाना से बेल्ग्रेड के उनके शाही निवास पर भेंट की, जहाँ वे युगोस्लाविया के महाराजा और महारानी की मेहमान थीं और बाद में अक्टूबर 1929 में 'ब्लेक सी' के बालसिक में महारानी के "टेहना यूवा" नाम के

ग्रीष्मकालीन राजमहल में उनके साथ एक भेंट हुई, अगस्त 1932 और फरवरी 1933 में विएना के निकट स्थित मॉडलिंग में राजकुमारी इलियाना (अब ऑस्ट्रिया की आर्च–डचेस एन्टन) के निवास पर एक बार फिर उनकी भेंट हुई, इसके एक वर्ष पश्चात फरवरी में उनकी भेंट कॉन्ट्रोसेनी पैलेस में हुई और अन्त में फरवरी 1936 में उनकी भेंट उसी राजमहल में फिर एक बार हुई। प्रभुधर्म की इस अदम्य वीरांगना को राजकुमार पॉल और राजकुमारी ओल्गा द्वारा भी बेल्ग्रेड के रॉयल पैलेस में आमंत्रित किया गया था। मार्था रूट ने पूरब और पश्चिम के लगभग चार सौ विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में वक्तव्य प्रस्तुत किए; दो विश्वविद्यालयों को छोड़कर उन्होंने जर्मनी के अन्य सभी विश्वविद्यालयों का दो बार दौरा किया और चीन के लगभग एक सौ विश्वविद्यालयों, स्कूलों और कॉलेजों का भी दौरा किया। जिन देशों का उन्होंने भ्रमण किया था लगभग उन सभी देशों के अखबारों और पत्रिकाओं के लिए उन्होंने अनेक लेख लिखे और इन्हें समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में छपवाया; उन्होंने असंख्य रेडियो प्रसारण प्रस्तुत किए और निजी एवं राज्य पुस्तकालयों में अनेक बहाई पुस्तकें रखवाई; 1932 में जेनेवा में अपने तीन माह के प्रवासकाल में निरस्त्रीकरण सम्मेलन के समय उन्होंने पचास से भी अधिक देशों के राजनीतिज्ञों से व्यक्तिगत रूप से भेंट की; अपनी कठिन यात्राओं के दौरान उन्होंने डॉ. एज़लमॉन्ट की पुस्तक "बहाउल्लाह एन्ड द न्यू एरा" के संस्करणों के एक बड़ी संख्या में अनुवाद और प्रकाशन के निरीक्षण कार्य के लिए बहुत कठिन प्रयास किए; प्रतिष्ठावान और विद्वान व्यक्तियों के साथ उन्होंने पत्राचार किया और उन्हें बहाई पुस्तकें भेंट कीं; उन्होंने फारस की तीर्थयात्रा की और इस देश में बहाई ऐतिहासिक स्थलों का दौरा करते समय प्रभुधर्म के शूरवीरों की याद में हृदय को छू जाने वाली श्रद्धाँजलियाँ अर्पित की; उन्होंने एड्रियानोपल की यात्रा की जहाँ बहाउल्लाह के प्रति अपने छलकते प्रेम के कारण उन्होंने उन घरों को खोज निकाला जहाँ बहाउल्लाह ने निवास किया था और जिन लोगों से वे इस शहर में अपने निर्वासन के दौरान मिले थे और जहाँ शहर के गवर्नर और मेयर ने उनका स्वागत किया था। उन सभी देशों में जिनमें प्रभुधर्म की संस्थाएँ निर्मित की जा चुकीं थीं अथवा स्थापित की जा रहीं थीं वहाँ के प्रभुधर्म के

प्रशासकों को उन्होंने तत्पर सहायता पहुँचाई। इन सभी उपलब्धियों को एक ऐसी सेवा की विशिष्टता माना जा सकता है जो कई मायनों में प्रथम बहाई शताब्दी के सम्पूर्ण इतिहास में अतुलनीय है।

उन लोगों के नामों की सूची भी कुछ कम चित्ताकर्षक नहीं है जिनका उन्होंने अपने ध्येय को अंजाम देते समय साक्षात्कार किया था और जिनमें पहले बताये गए नामों के साथ–साथ शाही व्यक्ति और विशिष्ट हस्तियाँ भी शामिल हैं। जैसे, नॉर्वे के राजा हाकोन; इराक के राजा फैज़ल; अल्बेनिया के राजा ज़ोग और उनके परिवार के सदस्य; ग्रीस की राजकुमारी मरीना (अब केन्ट की राजकुमारी); ग्रीस की राजकुमारी एलिज़ाबेथ; राष्ट्रपति थॉमस जी. मासारिक और चेकोस्लोवाकिया के राष्ट्रपति एडुआर्ड बेनिस; ऑस्ट्रिया के राष्ट्रपति डा. सुन याट सेन; डा. निकोलस मुर्रे बटलर, कोलम्बिया विश्वविद्यालय के अध्यक्ष; बेल्ग्रेड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर बोगडान पोपोविच; तुर्की के विदेश मंत्री तौफिक़ रूश्दी बे; चीन के विदेश मंत्री और शिक्षा मंत्री; लिथुआनिया के विदेश मंत्री, मिस्र के राजकुमार मुहम्मद अली; स्टीफन रेडिच; पटियाला, बनारस और ट्रावनकोर के महाराजा; येरूसलम के गवर्नर और महा मुफ्ती; स्वीडन के आर्चबिशप डॉ. अर्लिंग आइडेम; सरोजिनी नायडू; सर रवीन्द्रनाथ टैगोर; मिस्र की नारीवादी लीडर मेडम हुदा शारावी; जापानी शाही घराने के डॉ. के इचिकी; प्रोफेसर टेट्सूजिरो इनूयी; टोकियो इम्पीरियल यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर एमेरिटस; बेरोन योशिरो साकाटानी, जापान के हाउस ऑफ पीयर्स के सदस्यगण, फैकल्टी ऑफ लैटर्स के डोयेन और तुर्की इतिहास संस्थान के अध्यक्ष।

न तो उम्र, न ही बीमारी, न शुरूआती प्रयासों में साहित्य का अभाव, न संसाधनों की कमी, न जलवायु की वह अधिकता, न ही वे राजनीतिक उथल–पुथल, जिनका उन्हें अपनी यात्राओं के दौरान सामना करना पड़ता था, इस आध्यात्मिक रूप से संत जैसी नारी के उत्साह को कम कर सके और न ही उनके उद्देश्य की दिशा मोड़ सके। अकेले ही एक से अधिक अवसरों पर अत्यन्त जोखिम भरी परिस्थितियों में, वे विविध जातियों, वर्णों और वर्गों के लोगों

को बहाउल्लाह के संदेश की ओर बिगुल के स्वर में तब तक बुलाती रहीं, जब तक कि उस प्राणघातक और दर्दनाक बीमारी ने उन्हें घेर न लिया, जिसे वे शूरवीरों की तरह धैर्य के साथ सहती रहीं। हाल ही में शुरू की गई सात वर्षीय योजना में सहायता देने के लिए अपने देश लौटने की जल्दी में उन्होंने रास्ते में ही दम तोड़ दिया। पूरब और पश्चिम में, जहाँ उन्होंने इतनी कड़ी मेहनत की थी, उन दोनों भागों के बीच में उस सांकेतिक स्थान पर 28 सितम्बर 1939 को उनकी मृत्यु हो गई और इसके साथ ही एक ऐसे जीवन का अन्त हुआ जिसे बहाउल्लाह के युगधर्म के रचनात्मक काल द्वारा उत्पन्न किया गया सबसे उत्कृष्ट फल माना जा सकता है।

अब्दुल बहा द्वारा अपने इच्छापत्र में दिए गए निर्देश – *"एक पल भी आराम न करने के," "सभी क्षेत्रों में भ्रमण करने के"* और *"बगैर आराम किए, अन्त तक दृढ़ रहकर" "प्रत्येक देश में, "या–बहा–उल–आभा"* का घोष करने के प्रति इस अमर वीरांगना ने एक ऐसी आज्ञाकारिता दिखलाई जिस पर वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियाँ गर्व कर सकती हैं और अनुकरण कर सकती हैं।

"पवन की तरह निर्बंध होकर," ईश्वर में *"सम्पूर्ण भरोसे"* को ही अपनी यात्रा का *"सबसे उत्तम प्रबंध"* बनाकर उन्होंने लगभग शब्दशः अब्दुल बहा की उस इच्छा को पूरा किया जो उन्होंने इन मार्मिक शब्दों में अपनी उन पातियों में व्यक्त की थी, जिनके आह्वान का पालन करने के लिए वे तत्काल उठ खड़ी हुई थीं, *"काश मैं पैदल और अत्यन्त दरिद्रता में इन क्षेत्रों में जा सकता और शहरों, गाँवों, पर्वतों, रेगिस्तानों और सागरों में, 'या बहा–उल–आभा' का जयघोष करते हुए इन दिव्य शिक्षाओं को फैला सकता ! लेकिन दुःख है कि मैं यह नहीं कर सकता। मुझे इसका कितना खेद है ! ईश्वर करे, तुम यह काम पूरा कर सको।"*

यूगोस्लाविया की राजकुमारी ओल्गा द्वारा मार्था रूट को यह शाही श्रद्धाँजलि दी गई है : "मिस मार्था रूट के देहावसान का समाचार प्राप्त कर मुझे हार्दिक दुःख पहुँचा है, क्योंकि मुझे इसकी कोई जानकारी नहीं थीं। उनसे मिलकर हमें हमेशा बहुत खुशी महसूस होती थी। वह दयालु और नम्र थीं और शान्ति की स्थापना की एक सच्ची सेविका थीं। मुझे विश्वास है कि उनके कार्य के लिए उन्हें बहुत याद किया जायेगा।"

स्वयं बहाउल्लाह की संविदा के केन्द्र की अचूक लेखनी ने प्रमाणित किया है, *"तुम सत्य ही उस दिव्य साम्राज्य की अग्रदूत हो। तुम सचमुच आत्मत्यागी हो। तुम सभी देशों के प्रति दयालुता दिखलाती हो। तुम एक ऐसा वृक्ष उत्पन्न कर रही हो जो अनन्तकाल तक पत्तियाँ और फूल उपजायेगा और फल देगा और जिसकी छाँव का आकार दिन प्रतिदिन बढ़ता जायेगा।"*

बहाउल्लाह के धर्म की इस तारक सेविका द्वारा प्रभुधर्म को दी गई समस्त सेवाओं में सबसे कान्तिवान और अब तक की सबसे महत्वपूर्ण सेवा, महारानी मैरी की तत्काल मिलने वाली वह प्रतिक्रिया थी जो उन्होंने बहाउल्लाह का संदेश मिलने पर व्यक्त की थी जो उनके जीवन के सबसे अंधकारमय पलों में, उनकी घोर आवश्यकता, उलझन और दुःख की घड़ी में इस उत्साही एवं साहसिक पायनियर ने उन्हें दिया था। स्वयं महारानी ने एक पत्र में लिखा है कि, "जिस तरह सभी महान संदेश आते हैं, यह संदेश भी मेरे गहन दुःख, आंतरिक संघर्ष एवं व्यथा की घड़ी में मुझ तक पहुँचा इसलिए इसका बीज गहराईयों तक मेरे अन्दर उतर गया।"

महारानी मैरी, महारानी के दूसरे पुत्र ड्यूक ऑफ एडिनबर्ग की सबसे बड़ी बेटी थीं जिसे बहाउल्लाह ने एक महत्वूपर्ण पाती में सराहना भरे शब्द सम्बोधित किए थे; और जिस जार एलेक्ज़ेन्डर द्वितीय के लिए उसी लेखनी ने एक धर्मपत्र प्रकट किया था, उसकी वे पोती थीं; जन्म और विवाह दोनों के माध्यम से वे यूरोप के सबसे प्रमुख परिवारों से सम्बद्ध थीं; उनका जन्म अंग्रेज़ों के चर्च से जुड़े परिवार में हुआ था; अपने विवाह के द्वारा वे ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च से जुड़ी थीं जो उनके द्वारा अपनाये गए देश का राष्ट्रीय धर्म था। वे स्वयं एक कुशल लेखिका थीं। उनका व्यक्तित्व बहुत मनोहर और दीप्तिमान था; स्वभाव से वे बहुत प्रतिभावान, स्पष्ट विचारों वालीं, दिलेर और उत्साही महिला थीं; चूँकि वे लोकोपकारी स्वरूप के सभी कार्यों के प्रति उत्सुकतापूर्वक समर्पित थीं, इसलिए अपनी बहन और महारानियों में, अपने शाही खानदान या पद के सभी लोगों में, वे अकेली ही थीं जो बहाउल्लाह के सन्देश की महानता को सहज रूप से स्वीकार करने के लिए तथा उनके परमपिता होने की एवं मुहम्मद के पैग़म्बर होने की घोषणा करने के लिए तथा स्त्री पुरूष सभी को उनकी

शिक्षाएँ अंगीकार करने की सलाह देने के लिए और इनकी क्षमता, उदात्तता और सुन्दरता का वर्णन करने के लिए आगे आईं।

अपने स्वजनों और विशेषकर अपनी सबसे छोटी बेटी के समक्ष बहाई धर्म में अपनी आस्था की घोषणा; आने वाली पीढ़ियों के लिए अपनी महानतम और स्थायी विरासत के रूप में अपनी तीन क्रमिक श्रद्धाँजलियों; बहाई प्रकाशनों के प्रति अपने योगदान के रूप में लिखे गए अपने तीन अतिरिक्त प्रशंसापत्रों; अपने मित्रों और साथियों सहित अपनी मार्गदर्शक और आध्यात्मिक माता (मार्था रूट) को सम्बोधित किए गए कई पत्रों; स्वयं उनके द्वारा और उनकी सबसे छोटी बेटी के द्वारा बहाई पुस्तकों के लिए दिए गए आर्डरों के माध्यम से उन्हें मिलने वाले शुभ समाचारों के प्रति अपनी आस्था और आभार व्यक्त करने वाले विभिन्न चिन्हों के माध्यम से और अन्त में, प्रभुधर्म के संस्थापकों की समाधियों पर अपनी श्रद्धाँजलि अर्पित करने के स्पष्ट उद्देश्य से पावन भूमि में उनकी असफल तीर्थयात्रा के माध्यम से, इन सभी कृत्यों के कारण यह प्रख्यात महारानी, प्रभुधर्म के उन शाही समर्थकों में सबसे पहली समर्थक होने का स्थान प्राप्त करने योग्य है जो भविष्य में उठ खड़े होंगे और स्वयं बहाउल्लाह के शब्दों में इनमें से प्रत्येक का *"मानवजाति के नेत्र, सृष्टि के मस्तिष्क के चमकदार आभूषण, विश्व के लिए आशीर्वाद के निर्झरस्रोत"* के रूप में अभिनन्दन किया जाना चाहिए।

एक व्यक्तिगत पत्र में उन्होंने उल्लेखनीय रूप से कहा है कि "मेरी जाति के कुछ लोग ऐसे शब्द कहने के मेरे साहस पर आश्चर्य करते हैं और उस साहस को नापसंद करते हैं जो शाही खानदान के सदस्यों के लिए स्वाभाविक नहीं हैं, लेकिन मैं अपने अन्दर की उस भावना के कारण आगे बढ़ती हूँ जिसे मैं रोक नहीं सकती। मैं सिर झुकाकर स्वीकार करती हूँ कि मैं भी उन महान के हाथों में एक माध्यम मात्र हूँ और इस बात से मुझे बहुत खुशी मिलती है।"

बुखारेस्ट पहुँचने पर मार्था रूट ने महारानी को एक नोट के साथ *"बहाउल्लाह एन्ड द न्यू एरा"* नामक पुस्तक की एक प्रति भेजी। इस पुस्तक में महारानी ने इतनी रुचि ली कि वे इसे सुबह तक पढ़ती रहीं। इसके परिणाम

स्वरूप, दो दिन बाद, 30 जनवरी 1926 को महारानी ने मार्था रूट को कोन्ट्रोसेनी पैलेस में उनसे मिलने की अनुमति दी, इस दौरान महारानी ने अपना यह विश्वास घोषित किया कि, "ये शिक्षाएँ विश्व की समस्याओं का हल हैं"; इसके परिणामस्वरूप उसी वर्ष उन्होंने अपनी उन तीन ऐतिहासिक घोषणाओं को प्रकाशित करने के लिए पहल की जो संयुक्त राज्य और कनाडा के लगभग दो सौ अखबारों में प्रकाशित की गईं और जिन्हें बाद में अनुवादित करके यूरोप, चीन, जापान, ऑस्ट्रेलिया, निकटवर्ती पूरब और महासागरों के द्वीपों में प्रकाशित किया गया।

इनमें से पहली घोषणा में उन्होंने इस बात की पुष्टि की कि बहाउल्लाह और अब्दुल बहा के सभी लेख "शान्ति की ओर एक ऐसी महान पुकार हैं, जो सरहदों के पार पहुँचती है, जो समस्त रस्मों और मतों के लड़ाई–झगड़ों के ऊपर हैं.....। यह एक अद्‌भुत संदेश है जो बहाउल्लाह और अब्दुल बहा ने हमें दिया है। उन्होंने इसे आक्रामक ढंग से प्रस्तुत नहीं किया है, क्योंकि वे जानते हैं कि अनन्त सत्य का वह बीज जो इसके सार में निहित है, अवश्य ही अपनी जड़ें स्थापित करेगा और विकसित होगा.....। यह ईसा मसीह के संदेश का ऐसा नवीनीकरण है जो लगभग उन्हीं शब्दों में है लेकिन जिसे उस अन्तर के अनुकूल बनाया गया है जो प्रथम वर्ष से लेकर आज तक के बीच के एक हजार वर्षों से भी अधिक लम्बे समय के अंतराल में है।" उन्होंने अपनी बात में एक उल्लेखनीय चेतावनी जोड़ी जो बिल्कुल वैसी ही थी जैसे डॉ. बेन्जामिन जावेट् के वे प्रभावशाली शब्द थे, जिन्होंने अपने शिष्य, प्रोफेसर लुईस कैम्पबेल के साथ अपनी बातचीत के दौरान प्रभुधर्म की सराहना करते हुए इसे "ईसा मसीह के बाद इस दुनिया में आने वाला महानतम प्रकाश" कहा था और उसे चेतावनी दी थी कि वह "सावधान रहे" और इसे कभी अपनी आँखों से ओझल न होने दे। महारानी ने लिखा था कि, "यदि बहाउल्लाह और अब्दुल बहा का नाम कभी आपके सामने आए, तो उनके लेखों को अनदेखा न कीजिये। उनकी पुस्तकों को खोज निकालें और उनके तेजस्वी, शान्तिदायक, प्रेम उत्पन्न करने वाले शब्दों और शिक्षाओं को अपनी अन्तर्रात्मा में वैसे ही उतरने दीजिये जैसे ये मेरे दिल में उतरे हैं.....। इन्हें प्राप्त कीजिये और पहले से अधिक सुखी हो जाइये।"

एक अन्य घोषणा में, जिसमें उन्होंने अरबी पैग़म्बर के स्थान के बारे में एक महत्वपूर्ण टिप्पणी की थी; उन्होंने यह घोषित किया था कि : "ईश्वर ही सर्वस्व है! सब कुछ है! सभी प्राणियों के अन्दर उसी की शक्ति है.....। हमारे अन्दर उसी की वाणी है जो हमें अच्छे बुरे का ज्ञान कराती है। लेकिन हममें से कई इस वाणी पर ध्यान नहीं देते अथवा इसे गलत समझ लेते हैं। अतः उसने अपनी वाणी को, अपने वास्तविक अर्थ को स्पष्ट करने के लिए अपने चुने हुए व्यक्तियों को हमारे बीच भेजा। इसीलिए पैग़म्बर आए; ईसा मसीह, मुहम्मद और बहाउल्लाह आए, क्योंकि मनुष्य को समय–समय पर धरती पर ऐसे शब्दों की आवश्यकता होती है जो ईश्वर को उसके निकट ला सकें, ताकि उस एक सत्य ईश्वर के अस्तित्व के बारे में उसकी समझ तेज़ हो सके। हम तक भेजे गए इन शब्दों को शरीर धारण करना पड़ा ताकि हम अपने भौतिक कानों से उनकी बातों को सुन सकें और समझ सकें।"

इन घोषणाओं की प्रशंसा में, पूरब और पश्चिम के बहाउल्लाह के अनुयायियों के नाम एक पत्र भेजा गया और इसके जवाब में उनके द्वारा भेजे गए हृदयस्पर्शी पत्र में उन्होंने लिखा : "बहाउल्लाह और अब्दुल बहा के संदेश से मुझे एक महान प्रकाश मिला है.....। इन प्रिय शिक्षकों की शिक्षाओं से मेरी सबसे छोटी पुत्री को भी बहुत शक्ति और चैन मिलता है। हम इस संदेश को अपनी बातों के द्वारा दूसरों तक पहुँचाते हैं और जिन्हें भी हम इसके बारे में बताते हैं, वे अपने समक्ष एक महान प्रकाश अचानक प्रज्वलित होते हुए देखते हैं और ऐसा बहुत कुछ जो पहले कठिन लगता था, अब इतना सरल और स्पष्ट हो गया है और ऐसी आशा से भर उठा है जैसा पहले कभी नहीं था। यह मेरे लिए बहुत खुशी की बात है कि इस धर्म के लिए कष्ट उठाने वालों के लिए मेरा खुला संदेश एक मरहम था और इसे मैं यह संकेत समझती हूँ कि ईश्वर ने मेरी विनम्र श्रद्धाँजलि स्वीकार की है। अपने आप को सार्वजनिक रूप से व्यक्त करने का जो अवसर मुझे मिला था, वह भी उसी का काम था, क्योंकि वास्तव में यह परिस्थितियों की एक लड़ी थी जिसकी प्रत्येक कड़ी मुझे अनजाने में तब तक एक कदम और आगे बढ़ाती चली गई, जब तक कि मेरी आँखों के सामने सब कुछ स्पष्ट नहीं हो गया और मैं समझ नहीं पाई कि ऐसा

क्यों हुआ। इस तरह वह ईश्वर अन्त में हमें अपने अन्तिम प्रारब्ध की ओर ले जाता है। .....धीरे–धीरे परदा उठ रहा है, दुःख ने इसे चीर कर अलग कर दिया है और दुःख ही सदा मुझे सत्य के एक कदम और निकट लाया है; इसलिए मुझे दुःख से कोई शिकायत नहीं !"

पेरिस में रहने वाली अपनी एक घनिष्ठ अमेरिकी सहेली को लिखे गए एक महत्वपूर्ण और हृदयस्पर्शी पत्र में उन्होंने लिखा कि : "हाल ही में मुझे अब्दुल बहा की ओर से बहुत आश्वासन मिला है। उनके और उनके पिता बहाउल्लाह के धर्म के संदेश ने एक सच्चे धर्म की मेरी लालसा को पूरा किया है.....। मेरा मतलब है कि इन पुस्तकों ने मुझे आश्चर्यजनक रूप से दृढ़ बना दिया है और अब मैं आशा से भर उठी हूँ और किसी भी दिन मरने के लिए तैयार हूँ। लेकिन मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि मुझे अभी न उठाये, क्योंकि मुझे अभी बहुत से काम करने हैं।"

और एक बार फिर प्रभुधर्म की प्रशंसा में अपने लेख में उन्होंने लिखा है कि, "बहाई शिक्षाएँ शान्ति और समन्वय स्थापित करती हैं। यह एक व्यापक आलिंगन की तरह है जो उन सभी को समा लेता है जो एक लम्बे समय से आशा भरे शब्दों की तलाश में भटक रहे हैं.....। कई धर्मों के अनुयायियों के बीच निरन्तर चलने वाले झगड़ों से दुःखी होकर और एक–दूसरे के प्रति उनकी असहिष्णुता से थक जाने के बाद मैंने बहाई शिक्षाओं में ईसा मसीह की वह सच्ची चेतना प्राप्त की है जिसे इतनी बार नकार दिया जाता है और गलत समझ लिया जाता है।" और एक बार फिर वे आश्चर्यजनक रूप से यह वर्णन करतीं हैं कि : "बहाई शिक्षाएँ आत्मा को शान्ति और दिल को आशा प्रदान करतीं हैं। उनके लिए, जो आश्वासन की तलाश कर रहे हैं, ये शब्द एक रेगिस्तान में उस फव्वारे के समान हैं जो एक लम्बे समय तक भटकने के बाद मिलता है।"

उन्होंने मार्था रूट को लिखा कि "बहाउल्लाह का यह खूबसूरत सच एक सहायता और एक प्रेरणा बनकर हमेशा मेरे साथ रहता है। मैंने जो कुछ भी लिखा था वह इसलिए कि आपके द्वारा मुझे दिए गए विचारों के लिए मेरा हृदय आभार से भर उठा था। यदि आपको लगता है कि मैंने सहायता की है

तो मुझे खुशी है। मैंने सोचा कि इससे सत्य को और भी निकट लाया जा सकेगा क्योंकि मेरे शब्दों को कई लोग पढ़ते हैं।"

पूरब की अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने बहाई समाधियों की यात्रा करने की अपनी आकांक्षा प्रकट की और अपनी सबसे छोटी बेटी के साथ हाईफा से गुज़रीं भी लेकिन उन्हें वह तीर्थ करने का अधिकार देने से इंकार कर दिया गया जिसकी उन्होंने योजना बनाई थी। उत्सुकतापूर्वक उनके आगमन की प्रतीक्षा कर रही वृद्ध हो चुकी महानतम पावन पात को इस बात से घोर निराशा हुई। कुछ माह बाद, जून 1931 में मार्था रूट को अपने एक पत्र में उन्होंने लिखा : "पावन समाधियों पर जाने से हमें रोक दिए जाने पर, इलियाना और मुझे, दोनों को ही बहुत निराशा हुई.....लेकिन उस समय हम एक कष्टकर संकट से गुज़र रहे थे, मेरी हर हरकत को मेरे विरोध में इस्तेमाल किया जा रहा था और उसका राजनीतिक लाभ उठाया जा रहा था। इससे मुझे बहुत दुःख पहुँचा था और मेरी आज़ादी बड़ी निर्दयता से कम कर दी गई थी.....। लेकिन सत्य की सुन्दरता कायम रहती है और मैं अपने जीवन की हर उथल–पुथल में इसे कसकर थामे रहती हूँ, जो कुछ उदास सा हो गया है.....। यह सुनकर मुझे खुशी है कि आपकी यात्रा इतनी फलदायी रही है और चूँकि मैं जानती हूँ कि आप देश–विदेश में कितना सुन्दर संदेश पहुँचा रही हो, इसलिए मेरी इच्छा है कि आपको लगातार सफलता मिलती रहे।"

इस दुःखद निराशा के बाद उन्होंने अपने बचपन की एक सहेली को पत्र लिखा जो अक्का के नज़दीक उस घर में रह रही थीं जहाँ पहले बहाउल्लाह निवास कर चुके थे। इस पत्र में उन्होंने लिखा : "तुम्हारा पत्र पढ़कर और विशेष रूप से यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि तुम्हारा निवास हाईफा के निकट है। मैं बहाई शिक्षाओं की अनुयायी हूँ। मेरे लिए यह रुचि की बात है कि तुम उस विशेष घर में निवास कर रही हो.....। मुझे इतनी गहरी रुचि थी कि मैंने प्रत्येक फोटो को बड़े ध्यान से देखा। वह बड़ा सुन्दर स्थान होगा.....और जिस घर में तुम रहती हो, वह आश्चर्यजनक रूप से आकर्षक है और उस व्यक्ति से जुड़े होने के नाते बहुमूल्य बन चुका है, जो हम सभी के लिए पूज्यनीय हैं.....।"

अपनी मृत्यु के दो वर्ष पहले उन्होंने अपने धर्म को अन्तिम श्रद्धाँजलि दी जिससे वे इतना अधिक प्रेम करती थीं। उन्होंने लिखा कि, "आज जब दुनिया एक ऐसी उथल–पुथल और अशान्ति के संकट का सामना कर रही है, हमें प्रभुधर्म में पहले से कहीं अधिक दृढ़ रहना चाहिए और उसकी कामना करनी चाहिए जो तोड़ता नही, बल्कि जोड़ता है। वे जो प्रकाश की तलाश में हैं, उनके लिए बहाई शिक्षाएँ एक ऐसा सितारा प्रस्तुत करती हैं जो उन्हें और भी गहरी समझ, आश्वासन, शान्ति और सभी मनुष्यों के प्रति सद्भावना की ओर ले जायेगा।

मार्था रूट के स्वयं के लेख में एक आलेख इस प्रकार हैं : "दस साल तक महारानी और उनकी बेटी, हर रॉयल हायनेस राजकुमारी इलियाना (अब आर्च–डचेस एन्टन) ने बहाई धर्म के बारे में प्रेस से निकलने वाली प्रत्येक नई पुस्तक को बड़ी रुचि के साथ पढ़ा.....। अपने पति राजा फर्डिनेन्ड के स्वर्गवास के बाद उन्होंने 1927 में सिनाईया में स्थित पेलिसर पैलेस में मुझे एक साक्षात्कार की अनुमति देने की कृपा की और अमरता के बारे में बहाई शिक्षाओं की बात की। उनकी मेज़ पर और दीवान पर कई बहाई पुस्तकें रखीं थीं क्योंकि वे उनमें से प्रत्येक में मृत्यु के बाद जीवन के विषय में शिक्षाएँ पढ़ रहीं थीं। उन्होंने इस लेखक से कहा कि वह .....को, ईरान के मित्रों को और उन कई अमेरिकी बहाईयों को उनकी ओर से शुभकामनाएँ दें जिन्हें उन्होंने पिछले वर्ष संयुक्त राज्य के उनके दौरे के दौरान इतनी उल्लेखनीय उदारता दिखायी थी.....। 19 जनवरी 1928 को जब बेल्ग्रेड के उस रॉयल पैलेस में, जहाँ वे और 'रॉयल एक्सेलेन्सी' राजकुमारी इलियाना दोनों युगोस्लाविया की महारानी के मेहमान थे और जहाँ वे अपने साथ कुछ बहाई पुस्तकें लाये थे, एक बार फिर महारानी से मेरी भेंट हुई। इस भेंट के दौरान जो शब्द मुझे सबसे अधिक समय तक याद रहेंगे वे ये हैं : 'जो अन्तिम स्वप्न हम पूरा कर सकेंगे वह यह है कि बहाई विचारधारा में इतनी शक्ति है कि धीरे धीरे यह उन सभी के लिए एक ऐसा प्रकाश बन जायेगा जो सत्य की वास्तविक अभिव्यक्ति की तलाश कर रहे हैं'.....। इसके बाद बुखारेस्ट में कोन्ट्रोसेनी पैलेस वाली मुलाकात में..... एक बार फिर रूमानिया की महारानी मेरी ने बड़े

मित्रवत तरीके से मुझसे अपने पुस्तकालय में भेंट की.....। कितनी यादगार थी वह मुलाकात ! .....उन्होंने मुझसे यह भी कहा कि जब वे लंदन में थीं, तब उनकी भेंट लेडी ब्लॉमफील्ड नाम की एक बहाई महिला से हुई थी, जिन्होंने उन्हें बहाउल्लाह के उस संदेश की मूल प्रति दिखाई थी जो बहाउल्लाह ने लंदन में उनकी दादीजी महारानी विक्टोरिया को भेजा था। उन्होंने इस लेखक से बहाई धर्म की प्रगति के बारे में, विशेषकर बाल्कान देशों में इसकी प्रगति के बारे में पूछा.....। उन्होंने कई बहाई पुस्तकों के बारे में, *"ईक़ान"* की गहराई के बारे में और विशेषकर *"ग्लीनिंग्स फ्रॉम द राइटिंग्स ऑफ बहाउल्लाह"* के बारे में भी बात की जिसे उन्होंने एक अद्भुत पुस्तक कहा ! उनके खुद के शब्द ये थे : 'संदेह करने वाले लोग भी, यदि इसे एकान्त में पढेंगे तो इसमें एक शक्तिशाली ऊर्जा पायेंगे और अपनी आत्माओं को विकसित होने का समय देंगे।' .....मैंने उनसे पूछा कि क्या मैं सम्भवतः उस जड़ाऊ पिन के बारे में बात कर सकती हूँ जो बहाईयों के लिए ऐतिहासिक रूप से बहुमूल्य है, इस पर उन्होंने उत्तर दिया था कि 'हाँ, आप कर सकती हैं'। एक बार सन् 1928 में प्रिय महारानी ने इस लेखक को एक बहुत सुन्दर जड़ाऊ पिन भेंट के रूप में दिया था, जो कुछ साल पहले रूस के उनके शाही परिवारजनों ने महारानी को भेंट किया था। यह पिन सोने और चाँदी से बने दो छोटे–छोटे पंखों से बना था जिनमें हीरे के बहुत छोटे–छोटे टुकडे जड़े हुए थे और ये पंख एक बड़े मोती से जुड़े हुए थे। महारानी ने मुस्कुराते हुए कहा था कि 'तुम हमेशा दूसरों को उपहार देती रहती हो, अब मैं तुम्हें अपनी ओर से एक उपहार दूँगी'। ऐसा कहकर उन्होंने इस पिन को मेरी ड्रेस पर लगा दिया। पंखों और मोतियों के कारण यह "प्रकाशधारी" बहाई जैसा लगने लगा था ! उसी सप्ताह इसे बहाई उपासना मंदिर के लिए उपहार स्वरूप शिकागो भेज दिया गया..... और उस बसंत में चल रहे राष्ट्रीय अधिवेशन के दौरान महारानी की इस भेंट की नीलामी करने की बात पर हिचकिचाहट प्रकट की गई। क्या इसे बहाउल्लाह के धर्म का प्रसार करने वाली सबसे पहली महारानी के स्मारक के रूप में बचाकर नहीं रख लेना चाहिए ? फिर भी, यह पिन तत्काल बिक गई और इसका पैसा उपासना मंदिर को दे दिया गया, क्योंकि इस

महान इमारत के निर्माण कार्य को आगे बढ़ाने के लिए, जो कि संयुक्त राज्य अमेरिका में अपनी तरह का पहला मंदिर था, सभी बहाई अधिकतम दान कर रहे थे। इस उत्कृष्ट जड़ाऊ पिन को खरीदने वाले कैलिफोर्निया, लॉस एँजिलिस के बहाई मिस्टर विलियर्ड हैच, सन् 1931 में इसे फिलिस्तीन, हाईफा ले गए और इसे कार्मल पर्वत पर स्थित पुरालेख में रखवा दिया, जहाँ अन्य बहाई वस्तुओं के साथ यह सदियों तक सुरक्षित रखा रहेगा.....।"

जुलाई 1938 में रूमानिया कि महारानी मेरी का स्वर्गवास हो गया। पूरब और पश्चिम के बहाई समुदायों की ओर से उनकी पुत्री, युगोस्लाविया की महारानी को एक शोक सन्देश भेजा गया जिसके उत्तर में उन्होंने "बहाउल्लाह के सभी अनुयायियों के प्रति सच्चे दिल से अपना आभार" व्यक्त किया। बहाउल्लाह के मूल देश में प्रभुधर्म के अनुयायियों की ओर से फारस की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा ने उनके पुत्र, रूमानिया के राजा और रूमानियाई शाही परिवार को एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने अपना दुःख और सहानुभूति व्यक्त की। यह पत्र फारसी एवं अंग्रेजी, दोनों ही भाषाओं में लिखा गया था। मार्था रूट ने राजकुमारी इलियाना को गहरी और प्रेम भरी सहानुभूति भेजी, जिसे उन्होंने आभार के साथ स्वीकार किया। महारानी की स्मृति में शोक सभाएँ आयोजित की गईं, जिनमें उनके द्वारा निर्भीक और ऐतिहासिक रूप से बहाउल्लाह को परमपिता माने जाने के लिए, इस्लाम के पैग़म्बर के स्थान को पहचानने के लिए और उनकी कई श्रद्धाँजलियों के लिए उन्हें उचित सम्मान दिया गया। उनके स्वर्गवास की पहली वर्षगांठ पर संयुक्त राज्य अमेरिका की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा ने इस दिवंगत महारानी के प्रति कृतज्ञतापूर्ण प्रशंसा और स्नेह प्रदर्शित करने के लिए फूलों की एक भव्य भेंट के माध्यम से स्वयं को एक ऐसी प्रभावशाली शोक सभा के साथ जोड़ा जो महारानी के सम्मान में आयोजित की गई थी और जिसकी व्यवस्था वॉशिंगटन डी. सी. के केथीड्रिल में बेथलेहेम चैपेल के रूमानियाई धर्माधिकारी द्वारा की गई थी, जिसमें सेक्रेटरी ऑफ स्टेट के नेतृत्व में एक ऐसा अमेरिकी प्रतिनिधिमण्डल भी शामिल हुआ जिसमें सरकारी अधिकारीगण तथा सेना एवं जलसेना के प्रतिनिधि, ब्रिटेन, फ्राँस और इटली के राजदूत और अन्य यूरोपीय दूतावासों के

प्रतिनिधि एवं उनके दूतगण शामिल हुए और उस शख्सियत को एक मिली जुली श्रद्धाँजलि अर्पित की जिसने बहाउल्लाह के साम्राज्य में अमिट प्रसिद्धी प्राप्त करने के अतिरिक्त, इस भौतिक जीवन में भी अपने देश की सीमाओं के परे रहने वाले कई लोगों का सम्मान और प्रेम अर्जित कर लिया था।

महारानी मेरी द्वारा इस दिव्य संदेश को स्वीकार किया जाना, बहाउल्लाह की उस परिकल्पना के पहले फल थे जो उन्होंने अपने कारावास के बहुत समय पहले की थी और *किताब–ए–अक़दस* में घोषित करते हुए यह लिखा था : *"कितना महान है वह परम सुख जो उस सम्राट की प्रतीक्षा कर रहा है जो स्वयं को मेरे अतिरिक्त अन्य सब कुछ से अनासक्त कर मेरे साम्राज्य में मेरे धर्म की सहायता के लिए उठ खड़ा होगा!.....सभी को उसके नाम का गुणगान करना चाहिए, उसके पद का आदर करना चाहिए और मेरे उस नाम की कुँजियों से नगरों को खोलने में उसकी सहायता करनी चाहिए जो दृश्य एवं अदृश्य साम्राज्यों में निवास करने वाले सभी का सर्वशक्तिमान रक्षक है। ऐसा सम्राट मानवजाति की दृष्टि, सृष्टि के मस्तक पर दीप्तिमान आभूषण और सम्पूर्ण विश्व के लिए आशीर्वाद के एक निर्झर–स्रोत के समान है। ओ बहा के लोगों, उसकी सहायता के लिए अपनी सम्पत्ति ही नहीं, अपितु अपने आपको भी बलिदान कर दो।"*

मार्था रूट की इन उल्लेखनीय अन्तर्राष्ट्रीय सेवाओं के अमिट यश का ताज पहनने वाले अमेरिकी बहाई समुदाय की यह नियति थी कि प्रथम बहाई शताब्दी के अन्त तक, अपने सदस्यों के संगठित प्रयासों द्वारा अपने देश में और विदेशों में अर्जित की गई सम्भावनाओं और गुणवत्ता वाली ऐसी और भी उपलब्धियाँ प्राप्त कर स्वयं को इतना विशेष बना ले कि उस शताब्दी के दौरान की गई प्रभुधर्म की शिक्षण गतिविधियों का कोई भी सर्वेक्षण इन्हें अनदेखा न कर सके। यह कहना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि ये विशाल उपलब्धियाँ और इनसे उत्पन्न होने वाले आश्चर्यजनक परिणाम एक नव–स्थापित प्रशासनिक व्यवस्था की उन सभी एजेन्सियों को नियंत्रित और निर्देशित करने से प्राप्त हुए थे जो एक ध्यानपूर्वक तैयार की गई योजना के अनुरूप कार्य कर रहीं थीं और

ये बहाउल्लाह के धर्म की सेवा के सौ वर्षों के उत्तम प्रयासों के इतिहास का एक उचित उपसंहार है।

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि इतनी भव्य शताब्दी के अन्तिम वर्षों में, संयुक्त राज्यों और कनाडा में बहाउल्लाह के अनुयायियों ने विजय का ध्वज फहराया था। बहाई युग के शौर्यकाल के अन्तिम बीस वर्षों के दौरान और इसके रचनात्मक काल के प्रथम पन्द्रह वर्षों में इसकी उपलब्धियाँ इसके भविष्य के लिए पहले ही बड़ी शुभ रहीं थीं और बहाई युग की पहली शताब्दी के अन्त से पहले ही विजय का मार्ग तैयार कर चुकी थीं।

लगभग सौ साल पहले, बाब ने *कय्यूमुल अस्मा* में, *"पश्चिम के लोगों"* का आह्वान करते हुए कहा था कि वे अपने *"शहरों से बाहर निकलें"* और उनके धर्म की सहायता करें। *किताब–ए–अक़दस* में बहाउल्लाह ने सम्पूर्ण अमेरिका के गणराज्यों के राष्ट्रपतियों को संयुक्त रूप से सम्बोधित करते हुए आदेश दिया था कि वे उठ खड़े हों और *"टूटे हुओं को न्याय के हाथ से जोड़ें"* और अपने स्वामी के *"आदेशों की छड़"* से *"अत्याचारी को कुचल दें"* और इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने लेखों में *"पश्चिम में"*, *"अपनी सत्ता के चिन्हों"* के प्रकट होने का पूर्वानुमान लगाया था। अब्दुल बहा ने अपनी ओर से यह घोषणा की थी कि उनके पिता के धर्म द्वारा पश्चिम पर डाला गया *"प्रकाश"* *"एक असाधारण चमक"* प्राप्त करेगा और *"दिव्य साम्राज्य का प्रकाश"* पूरब की अपेक्षा *"पश्चिम में अधिक फैलेगा।"* उन्होंने विशेष रूप से अमेरिकी महाद्वीप की प्रशंसा *"एक ऐसे क्षेत्र के रूप में की थी जिसमें उसके प्रकाश की चमक प्रकट होगी और जहाँ उसके धर्म के रहस्य प्रकट किए जायेंगे"* और यह पुष्टि की थी कि *"यह सभी देशों का आध्यात्मिक नेतृत्व करेगा।"* इससे भी अधिक विशेष रूप से उन्होंने पश्चिम के महान गणराज्य को, उस महाद्वीप के अग्रणी देश को चुनकर यह घोषणा की थी कि *"इसके निवासी वास्तव में इस योग्य थे कि सर्वमहान शान्ति के मन्दिर की स्थापना करने में और मानवजाति की एकता की घोषणा करने में प्रथम बनें"* और *"यह उस कार्य को अंजाम देने के लिए सुसज्जित और सशक्त है जो इतिहास के पृष्ठों को सजायेगा, जो इसे विश्व*

की ईर्ष्या का कारण बनायेगा और जो पूरब और पश्चिम दोनो में आशीर्वादित होगा।"

उनके सेवाकाल का सबसे पहला काम था बहाउल्लाह के ध्वज को इस गणराज्य के मध्य फहराना। इसके बाद उन्होंने स्वयं भी इस देश की लम्बी यात्रा की, उनके शिष्यों के समुदाय द्वारा यहाँ बनाया जाने वाला पहला उपासना मंदिर समर्पित किया। अन्त में, अपने जीवन की शाम में दिव्य योजनाओं की पातियाँ प्रकट कीं और अपने शिष्यों को यह आदेश दिया कि वे भी पृथ्वी के सभी महाद्वीपों, देशों और द्वीपों में उनके पिता के धर्म का ध्वज उसी तरह फहराएँ जिस प्रकार उन्होंने उनके देश में फहराया था। इसके अतिरिक्त उन्होंने यहाँ के प्रख्यात राष्ट्रपति की प्रशंसा करते हुए उन्हें एक ऐसा व्यक्ति कहा जिन्होंने उन आदर्शों के माध्यम से, जिनकी उन्होंने व्याख्या की थी और उन संस्थाओं के माध्यम से जो उन्होंने स्थापित की थीं, उस शान्ति की भोर का आना सम्भव बनाया जिसकी बहाउल्लाह ने आशा की थी; यह आशा की कि उनके देश से *"दुनिया के सभी लोगों तक" "स्वर्गिक प्रकाश"* पहुँचे; उन पातियों में उन्हें "बहाउल्लाह का धर्मप्रचारक" कहा था; उन्हें आश्वासन दिया था कि "यदि उनके उद्यम को सफलता मिलती है" तो *"ईश्वर के साम्राज्य का सिंहासन अपने भरपूर प्रताप और महिमा के साथ दृढ़ता से स्थापित हो जायेगा";* और यह हलचल मचा देने वाली घोषणा की कि*"जिस क्षण"* वे इस *"दिव्य संदेश को यूरोप, एशिया, अफ्रीका एवं ऑस्ट्रेलेशिया तथा प्रशांत महासागर के दूर स्थित द्वीपों तक पहुँचायेंगे, उसी समय यह समुदाय स्वयं को अनन्त साम्राज्य के सिंहासन पर सुरक्षित रूप से स्थापित पायेगा"* और *"सम्पूर्ण पृथ्वी इसके प्रताप और महानता की जयजयकार से गूँज उठेगी।"*

जिन्होंने इस समुदाय को सृजित किया, बड़े स्नेह से इसका पालन–पोषण किया और बार–बार इसे आशीर्वादित किया एवं इसे एक विशेष ध्येय सौंपा था, उन्हीं के जीवनकाल में इस समुदाय ने मश्रिकुल–असकार के लिए भूमि खरीदकर इसकी नींव स्थापित की थी और इसका काम शुरू कर दिया था। जिस धर्म को इस समुदाय ने अपनाया था उसका प्रसार करने के लिए इसने

पूरब और पश्चिम में अपने शिक्षक भेजे, अपने सामुदायिक जीवन के आधार की स्थापना की और अपने संस्थापक अब्दुल बहा के स्वर्गवास के पश्चात, अपने समुदाय की इमारत का निर्माण किया एवं इसकी बाहरी सजावट का काम शुरू कर दिया। इसके अतिरिक्त, इस समुदाय ने प्रभुधर्म की प्रशासनिक व्यवस्था के ढाँचे का निर्माण करने का, इसके उद्देश्य के प्रसार का, इसके स्वतंत्र स्वरूप को प्रदर्शित करने का, इसके साहित्य को समृद्ध बनाने का, इसके अत्याचार–पीड़ित अनुयायियों को नैतिक और भौतिक मनोबल देने का, शत्रुओं के आक्रमण को रोकने का और शाही खानदान के सदस्यों की निष्ठा जीतने का अधिकांश भार अपने ऊपर ले लिया था। इतने भव्य इतिहास का समापन, इस शताब्दी के अन्त तक एक ऐसी योजना शुरू करने के साथ होना था जो अब्दुल बहा द्वारा सौंपे गए लक्ष्य को साकार रूप देने की दिशा में पहला चरण था। इस योजना के दौरान, सात साल की कम अवधि के अन्दर मश्रिकुल–अश्कार की बाहरी सजावट का काम सफलतापूर्वक पूरा होने वाला था। उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप में आध्यात्मिक सभाओं की संख्या दोगुनी होने वाली थी, इसी महाद्वीप में उन क्षेत्रों की संख्या जिनमें बहाई निवास करते हों बढ़कर 1322 होने वाली थी, संयुक्त राज्यों के प्रत्येक राज्य एवं कनाडा के प्रत्येक प्रांत में प्रशासनिक व्यवस्था का संरचनात्मक आधार स्थापित होने वाला था तथा केन्द्रीय एवं दक्षिणी अफ्रीका के बीस गणराज्यों में से प्रत्येक में स्थिरता स्थापित करके इसकी परिधि में सम्मिलित किए जाने वाले स्वतंत्र राज्यों की संख्या साठ तक बढ़ने वाली थी।

अमेरिकी बहाई समुदाय की मजबूत कार्यवाही को प्रेरित करने हेतु अब विविध प्रकार की शक्तियाँ एक हो गईं थीं: जैसे कि बहाउल्लाह के वे दीप्तिमान परामर्श और वचन तथा उपासना मन्दिरों के निर्माता को उनकी सलाह, उत्तरी अमेरिकी गणराज्य के पश्चिमी, केन्द्रीय, उत्तर पूर्वी एवं दक्षिणी राज्यों में तथा कनाडा में निवास करने वाले अनुयायियों को सम्बोधित की गई 14 पातियों में, अब्दुल बहा द्वारा जारी किए गए वे निर्देश; अमेरिका के मश्रिकुल–अश्कार के बारे में भविष्यवाणी करने वाले अब्दुल बहा के वे वचन; एक उत्सुक सहयोग की भावना को पोषित करने एवं इसे प्रभावशाली बनाने में

नई प्रशासनिक व्यवस्था का वह प्रभाव; मार्था रूट का वह उदाहरण, बुद्धिमान कीथ रेन्सम केहलर की वह दृढ़ता एवं आत्मत्याग, जिन्होंने ईरान की यात्रा की और कई साक्षात्कारों के दौरान वहाँ के मंत्रियों, धर्माधिकारियों और सरकारी अधिकारियों के समक्ष उस देश के अपने अत्याचार पीड़ित भाई–बहनों के पक्ष का समर्थन किया, शाह को कम से कम सात आवेदन भेजे और ढलती हुई उम्र एवं खराब स्वास्थ्य की चेतावनियों पर ध्यान न देते हुए, अन्त में इस्फहान में स्वर्गलोक सिधार गए। उस समुदाय को दोबारा त्याग करने और खतरा उठाने के लिए प्रेरित करने वाले अन्य कारण भी थे। वे उस कार्य को बल देना चाहते थे जो उनके कुछ ऐसे पायनियरों द्वारा की गई यात्राओं के कारण और उनके वहाँ बस जाने से शुरू हुआ जिन्होंने ब्राज़ील में प्रभुधर्म का सबसे पहला केन्द्र स्थापित किया था साथ ही, उन्होंने वेस्ट इन्डीज़ का दौरा किया था और केन्द्रीय एवं दक्षिण अमेरिका के विभिन्न देशों में साहित्य वितरित किया था। इसके अलावा इस समुदाय के सदस्य तेज़ी से बिगड़ती जा रही अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के समक्ष अपनी आवश्यक ज़िम्मेदारियों के प्रति सतर्क थे। वे जानते थे कि प्रथम बहाई शताब्दी का तेज़ी से अन्त हो रहा है और तीस साल पहले शुरू किए गए कार्य को एक उचित समापन तक पहुँचाने के प्रति वे चिन्तित थे। क्षेत्र की विशालता, मजबूती से जमे धर्माधिकारियों के संगठनों की शक्ति, कुछ ऐसे देशों की राजनीतिक अस्थिरता जहाँ वे बसने वाले थे, जलवायु सम्बन्धी परिस्थितियाँ जिनका वे सामना करने वाले थे और जिन लोगों के बीच वे बसने वाले थे उनकी भाषा एवं रीति–रिवाज़ों के अलग होने के कारण विचलित हुए बगैर तथा उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप में प्रभुधर्म की अत्यावश्यक ज़रूरतों के प्रति जागरूक रहते हुए, अमेरिकी बहाई समुदाय के सदस्यगण, तीन उद्देश्यों वाला एक ऐसा अभियान शुरू करने के लिए एक होकर उठ खड़े हुए, जो सावधानी से तैयार एवं संचालित किया गया था। उद्देश्य था उत्तरी अमेरिका के प्रत्येक नए राज्य एवं प्रांत में एक–एक आध्यात्मिक सभा स्थापित करना, केन्द्रीय और उत्तरी अमेरिका के प्रत्येक गणराज्य में निवास करने वाले अनुयायियों की एक केन्द्रीय सूची तैयार करना और मश्रिकुल–असकार की बाहरी सजावट का काम पूरा करना।

इस महान योजना को पूरा करने लिए लगभग एक सौ प्रशासनिक एवं शैक्षिक गतिविधियाँ चलाई गईं। कोष के लिए खुलकर दिए गए दान के माध्यम से; एक अंतर–अमेरिकी समिति और सहायक क्षेत्रीय शिक्षण समितियों की स्थापना के माध्यम से; बहाई शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय स्कूल की स्थापना के माध्यम से; नए क्षेत्रों में पायनियरों के बसने और भ्रमणकारी शिक्षकों के दौरों के माध्यम से; स्पेनिश एवं पुर्तगाली भाषाओं में किए गए साहित्य के प्रसार के माध्यम से; समूहों एवं स्थानीय सभाओं द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों एवं विस्तार कार्य के आयोजन; अखबारों एवं रेडियो से प्रसारण; उपासना मंदिर के स्लाइड एवं मॉडल प्रदर्शित करके; अंतर–सामुदायिक सम्मेलनों तथा विश्वविद्यालयों एवं कॉलेजों में वक्तव्य प्रस्तुत करके; ग्रीष्मकालीन स्कूलों में शिक्षण पाठ्यक्रमों एवं लेटिन अमेरिकी अध्ययन को सघन बनाकर, इन सभी के माध्यम से तथा अन्य गतिविधियों के ज़रिये, इस सात वर्षीय योजना के कार्यकर्ताओं ने उस कार्य में विजयी होने में सफलता प्राप्त कर ली जिसे प्रथम बहाई शताब्दी के सम्पूर्ण इतिहास में बहाउल्लाह के अनुयायियों द्वारा आरम्भ किया गया महानतम सामूहिक कार्य माना जाना चाहिए।

वास्तव में, उस शताब्दी के अन्त से पहले, न केवल मंदिर का काम अपने निर्धारित समय से 16 माह पहले पूरा हो चुका था, बल्कि प्रत्येक लेटिन रिपब्लिक में एक छोटे से नाभिक केन्द्र के स्थान पर, मैक्सिको सिटी में और प्यूबेला (मैक्सिको), ब्यूनस आयर्स (अर्जेन्टीना), ग्वाटेमाला सिटी (गौतेमाला), सैनटियेगो (चिली), मोन्टेविडियो (उरूग्वे), क्वीटो (एक्वाडोर), बोगोटा (कोलम्बिया), लिमा (पेरू), आसन्सियों (पाराग्वे), टेग्यूसीगाल्पा (हॉन्ड्यूरास), सान साल्वाडोर (अल–साल्वाडोर), सान जोस, पन्टारीनास (कोस्टा रिका), हवाना (क्यूबा) और पोर्ट–औ–प्रिंस (हाईटी) में स्थानीय सभाएँ स्थापित की जा चुकी थीं। इसके अतिरिक्त विस्तार कार्य भी शुरू किया जा चुका था जिसमें नव नामांकित 400 लेटिन अमेरिकी अनुयायी भाग ले रहे थे। इस प्रकार का विस्तार कार्य मैक्सिको, ब्राज़ील, अर्जेन्टीना, चिली, पनामा और कोस्टारिका के गणराज्यों में किया जा रहा था; अनुयायी न केवल सभी लेटिन अमेरिकी राज्यों की राजधानियों में बस चुके थे, बल्कि वेराक्रूज़, कानानिया एवं टाकूबाया (मैक्सिको),

बाल्बोआ, क्रिस्टोबाल (पनामा), रेसाईफ (ब्राज़ील), ग्वायाक्विल एवं अम्बाटो (एक्वाडोर), टेमुका और माजेल्लेन्स (चिली) जैसे केन्द्रों में भी जा बसे थे; मैक्सिको सिटी के और सानजोस के बहाईयों की आध्यात्मिक सभाओं को सरकारी मान्यता प्राप्त हो चुकी थी; मैक्सिको सिटी में एक बहाई केन्द्र स्थापित किया जा चुका था जिसमें एक पुस्तकालय, एक वाचनालय और एक व्याख्यान कक्ष भी था; हवाना, ब्यूनस आयर्स और सेनटियेगो में बहाई युवा संगोष्ठियाँ आयोजित की जा चुकी थीं, जबकि ब्यूनस आयर्स में लेटिन अमेरिका के लिए बहाई साहित्य का एक वितरण केन्द्र स्थापित किया जा चुका था।

इस महान कार्य के आरम्भिक चरण में भी इसे उस आशीर्वाद से वंचित नहीं रखा गया जो अमेरिका के आध्यात्मिक मेल को मजबूत करने वाला था, एक ऐसा आशीर्वाद जो उस व्यक्तित्व के त्याग से उत्पन्न हुआ था जो संविदा के दिवस की भोर के समय से ही यूरोप एवं डोमिनियन ऑफ कनाडा – दोनों के प्रथम बहाई केन्द्र की स्थापना के लिए उत्तरदायी था और जिसने अपनी सत्तर साल की आयु तथा अपने बिगड़े हुए स्वास्थ्य से जुड़ी तकलीफों के बावजूद अर्जेन्टीना की राजधानी तक का छः हजार मील लम्बा सफर तय किया, जहाँ अपनी पायनियर सेवाओं की देहलीज़ पर अचानक उनका देहांत हो गया। उसने उस गणराज्य में शुरू किए गए कार्य को ऐसा बल प्रदान किया, जिसने लेटिन अमेरिका में एक बहाई साहित्य वितरण केन्द्र की स्थापना के माध्यम से इसे पहले ही इस योग्य बना दिया था कि यह अपने सहयोगी गणराज्यों के बीच सबसे ऊँचा स्थान पा सके।

प्रथम अखिल अमेरिकी अधिवेशन के दौरान बड़ी मेहनत से प्राप्त की गई अपनी विजयों का उत्सव मनाते समय अमेरिकी बहाई समुदाय को, मे मैक्सवेल के प्रति, जिन्हें अर्जेन्टीना की मिट्टी में दफनाया गया है; हाईड डुन के प्रति, जिनके अवशेष सिडनी शहर में एइंपोड्स में दफन किए गए हैं; कीथ रेन्सम केहलर के प्रति, जिन्हें दूर दराज़ इस्फहान में दफन किया गया है; सुसेन मूडी एवं लिलियन कैप्स तथा उनके शूरवीर साथियों के प्रति जो तेहरान में दफन हैं; लुआ गेटसिंगर के प्रति जो मिस्र की राजधानी में सदा के लिए विश्राम कर

रहीं हैं और अन्त में उस मार्था रूट के प्रति जिन्हें प्रशांत महासागर के एक द्वीप में दफन किया गया है, सदा कृतज्ञ रहना चाहिए। अपनी सेवाओं एवं त्याग के माध्यम से अमेरिकी बहाई समुदाय को विजयी बनाने में इन सब का योगदान रहा है।

बहाउल्लाह की महिमा को समर्पित पावन मंदिर में एकत्रित होकर; एक ही समय में बाबी विधान के जन्म का शताब्दी–समारोह मनाने के लिए, बहाई युग के आरम्भ का उत्सव मनाने के लिए, बहाई युगचक्र के आरम्भ का और अब्दुल बहा के जन्म का उत्सव मनाने के लिए और इनके साथ–साथ पश्चिम में प्रभुधर्म की स्थापना की 50वीं वर्षगाँठ का उत्सव मनाने के लिए तथा अपने उत्सव में अमेरिकी गणराज्यों के उन प्रतिनिधियों के साथ जुड़ने के लिए पश्चिम में स्थापित किया गया पहला बहाई केन्द्र होने पर अमेरिकी बहाई समुदाय गर्व कर सकता है। इन सभी बातों के लिए, इस पवित्र अवसर पर इस समुदाय को वास्तव में यह अनुभव हो सकता है कि अब्दुल बहा द्वारा रेखांकित की गई योजना के प्रथम चरण के सफल समापन के माध्यम से, इसने अपनी बारी में, पूरब और पश्चिम के अपने सहयोगी समुदायों पर अमिट कीर्ति बिखेरी है और प्रथम बहाई शताब्दी के इतिहास के अन्तिम पृष्ठों को सुनहरे अक्षरों से सुशोभित कर दिया है।

पुनरावलोकन और सम्भावना

इस प्रकार बहाई युग की पहली शताब्दी का समापन हुआ। एक ऐसा दौर जो अपनी भव्यता और उर्वरता के कारण धार्मिक इतिहास और वास्तव में मानवजाति के पूरे इतिहास में अतुलनीय है। एक ऐसी प्रक्रिया जो ईश्वर की शक्ति से आगे बढ़ रही थी, अपार क्षमताओं से सम्पन्न थी, अपनी कार्यप्रणाली में रहस्यमय थी, अपनी गति को रोकने की चाह रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को सज़ा देने में भयावह थी और जो मानवजाति को आध्यात्मिक रूप से पुनर्जीवित करने और इसका उद्धार करने के अपने वचन पालन में अपार रूप से धनी थी। शीराज़ में शुरू होकर इसने क्रमिक रूप से तेहरान, बग़दाद, एड्रियानोपल और अक्का में गति पकड़ी। इस प्रक्रिया ने स्वयं को महासागरों के पार भी विस्तार दिया, पश्चिम में अपना प्रभाव डाला और पूरे विश्व को ऊर्जा प्रदान करने वाली शक्ति के आरम्भिक प्रमाणों को उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप के मध्य भी प्रकट किया।

यह प्रक्रिया एशिया के मध्य में प्रकट हुई थी और अपने अबाधित मार्ग से पश्चिम की ओर आगे बढ़ते हुए गति पकड़ कर तब तक आगे बढ़ती रही जब तक इसने पूरी धरती को अपनी महिमा की परिधि में नहीं ले लिया। यह फारस प्रांत में रेशम के एक व्यापारी के पुत्र द्वारा प्रारम्भ की गई थी और नूर के एक कुलीन व्यक्ति ने इसे फिर से स्वरूप प्रदान किया। उस महान के प्रयासों ने इसे बल प्रदान किया था जिसने अपने यौवन और प्रौढ़ता के सबसे बहुमूल्य वर्ष निर्वासन और कैद में व्यतीत किए थे। इस प्रक्रिया ने एक ऐसे देश में और ऐसे लोगों के बीच विजय हासिल की थी जो इसके उद्‌गम स्थान वाले देश से पृथ्वी के आधे चक्कर की दूरी पर थे। यह उस प्रत्येक हमले को

पराजित कर चुकी थी जो इसके विरूद्ध किया गया था और इसने अपनी प्रगति के मार्ग में आने वाली प्रत्येक बाधा को उखाड़ फेंका था, इसकी शक्ति को समाप्त करने की चाह रखने वाले प्रत्येक अहंकारी शत्रु को इसने नीचा दिखाया था और उन लोगों में सबसे निर्बल और दीन जनों को अविश्वसनीय साहस की ऊँचाईयों तक पहुँचा दिया था जो उठ खड़े हुए थे और इसकी क्रान्तिकारी शक्ति के इच्छुक साधन बन चुके थे। भयावह त्रासदियों और उचित दण्ड के साथ बुने हुए वीरतायुक्त संघर्ष और अतुलनीय विजय ने इसके सौ वर्ष के इतिहास के स्वरूप को रचा था।

इस प्रक्रिया के प्रभाव के परिणामस्वरूप, शिया इस्लाम के पंथ से उत्पन्न होने वाले शेखी विचारधारा के मुट्ठीभर विद्यार्थी, आगे चलकर एक ऐसे विश्व समुदाय में परिवर्तित हो गए जो निकट से जुड़ा हुआ है, जिसकी सोच स्पष्ट है, सजीव है, जो कम से कम बीस हज़ार शहीदों के खून से पवित्र बन चुका है; जो राष्ट्र की सीमाओं से ऊपर उठ चुका है; गैर–साम्प्रदायिक और गैर–राजनीतिक है; एक विश्व धर्म का स्थान ग्रहण करने का और एक विश्व धर्म के कार्य करने का दावा कर रहा है और जो पाँच महाद्वीपों और महासागरों के द्वीपों में फैला हुआ है; जिसकी शाखाएँ साठ से भी अधिक स्वतंत्र देशों और 17 निर्भर राष्ट्रों में फैली हुई थीं। यह एक ऐसे साहित्य से सुसज्जित है जिसका अनुवाद और वितरण चालीस भाषाओं में किया जा चुका है; जिसके नियंत्रण में करोड़ों डॉलर की अचल सम्पत्ति है; जिसे पूरब और पश्चिम दोनों में कई सरकारों की मान्यता प्राप्त है; जो अपने उद्देश्य और दृष्टिकोण में अभिन्न है; जिसमें कोई पेशेवर धर्माधिकारी वर्ग नहीं है; इसकी एक ही मान्यता है; जो एक ही कानून का पालन करता है; एक ही उद्देश्य से प्रेरित है; यह एक ऐसी प्रशासनिक व्यवस्था के माध्यम से जुड़ा हुआ है जो दिव्यरूप से विहित की गई है और अपनी विशेषताओं में अतुलनीय है; जिसकी परिधि में दुनिया के समस्त प्रमुख धर्म, विभिन्न वर्ग और जातियाँ शामिल हैं; जो अपने कानूनी दायित्वों के प्रति वफादार है; अपने नागरिक उत्तरदायित्वों के प्रति सजग है और उन खतरों से अवगत है जिनका यह समाज सामना कर रहा है जिसका वह एक हिस्सा है; जो सबके साथ इस समाज के दुःखों को सहन कर रहा है और अपनी उच्च नियति के प्रति आश्वस्त है।

शीराज़ में मुल्ला हुसैन के समक्ष अपने ध्येय की घोषणा करने के कुछ ही समय बाद बाब द्वारा इस समुदाय का नाभिक तैयार किया गया था। इसका ऐसा विरोध हुआ जिसमें बादशाह, सरकार, प्रजा और उसके देश के पूरे धर्माधिकारी वर्ग ने एकजुट होकर इस समुदाय के जन्म का तिरस्कार किया। मक्का की अपनी तीर्थयात्रा से लौटने के तत्काल बाद, इसके युवा संस्थापक के हिस्से में अज़रबैजान के पहाड़ों की शीघ्रगामी और क्रूर कैद आई। माहकू और चिहरिक के अकेलेपन में बाब ने अपनी संविदा की स्थापना की, अपने नियमों की रचना की और आने वाली पीढ़ियों के लिए अपने लेखों का एक बड़ा हिस्सा लिख छोड़ा। बहाउल्लाह के नेतृत्व में बदश्त गाँव में आयोजित किए गए बाब के शिष्यों के एक सम्मेलन ने नाटकीय परिस्थितियों के बीच इस्लाम के नियमों को रद्द कर दिया और एक नए युग का स्वागत किया गया। तबरीज़ में राजसिंहासन के उत्तराधिकारी और अज़रबैजान के प्रमुख धर्माधिकारी वर्ग एवं उच्च पदाधिकारियों की उपस्थिति में, सार्वजनिक रूप से और खुलकर बाब ने अपने प्रतिज्ञापित, चिरप्रतीक्षित काईम होने का दावा किया। माज़िन्दरान, नायरीज़, ज़नजान और तेहरान में विनाशकारी हिंसा के तूफानों ने उनके अनुयायियों के समूह को अत्याधिक हानि पहुँचाई और उनसे उनके श्रेष्ठ एवं बहुमूल्य समर्थक छीन लिए। उन्हें स्वयं भी अपने धर्म का वास्तविक अन्त देखना पड़ा और अपने अधिकांश जीविताक्षरों की मृत्यु का दुःख उठाना पड़ा। व्यक्तिगत रूप से लगातार दुःखद अपमान सहने के पश्चात तबरीज़ के बैरक चौक में, बंदूक चलाने वाले एक दस्ते के हाथों उन्हें मृत्यु दण्ड दिया गया। असाधारण क्रूरता के रक्तस्नान ने उनके धर्म की महानतम वीरांगना को निगल लिया, इस धर्म को इसके अनुयायियों से खाली कर दिया, बाब के विश्वसनीय लिपिक एवं उनकी अन्तिम इच्छाओं के संग्राहक के जीवन का अन्त कर दिया और बहाउल्लाह को तेहरान के सबसे गंदे अंधकूप कारागार में डाल दिया गया।

उस ऐतिहासिक घोषणा के नौ वर्ष बाद, बाब द्वारा घोषित किए गए संदेश ने सियाहचाल के विषैले वातावरण में अपना फल दिया, उनका वचन पूरा हुआ और बहाई युग के शौर्यकाल का सबसे महिमाशाली, सबसे निर्णायक दौर उदित हुआ। नसीरूद्दीन शाह के आदेश की वजह से बहाउल्लाह के इराक निर्वासन,

कुर्दिस्तान के पर्वतों पर उनके अचानक एकान्तवास पर चले जाने तथा बग़दाद में उनके सह–अनुयायियों के अत्याचार पीड़ित समुदाय को घेरने वाले पतन और उलझन के कारण हाल ही में उदित होने वाले सत्य के इस सूर्य, विश्व के महानतम प्रकाशग्रह पर क्षणिक ग्रहण छा गया। बहाउल्लाह के दो वर्षीय एकान्तवास के बाद, तेज़ी से पतन की ओर जाने वाले इस समुदाय के भाग्य में परिवर्तन आया और यह समुदाय पुनर्जीवित होने लगा, इसकी नैतिकता में सुधार आने लगा, इसका सम्मान बढ़ने लगा, इसके सिद्धान्त का संवर्धन हुआ और इसका समापन, नाजीबिय्येह के बाग में बहाउल्लाह की उस घोषणा के साथ हुआ जो उन्होंने कॉन्सटैन्टिनोपल में अपने निर्वासन की शाम को अपने निकटतम साथियों के समक्ष की थी। एक और संकट ने एड्रियानोपल में प्रभुधर्म की हाल ही में संगठित की गईं शक्तियों को लगभग बाधित कर दिया था और सर्वमहान नाम के उस समुदाय को जिसे बहाउल्लाह ने स्वरूप प्रदान किया था, आग के दीक्षा–स्नान में नष्ट करने के काम को छोड़कर बाकी सब कुछ कर दिया था। यह संकट उन सभी संकटों में सबसे कष्टदायक था जो संघर्ष कर रहे इस धर्म ने अपने इतिहास में अनुभव किए थे। यह संकट बाब द्वारा नामित व्यक्ति के विद्रोह, उसके द्वारा किए गए अधर्मी कृत्य और उसे बहकाने वाले दुष्ट ने उत्पन्न किया था। इस अविनाशी धर्म ने, उस "सर्वमहान मूर्ति" से शुद्ध होकर, उन आक्षेपों से अविचलित रहते हुए, जिन्होंने इसे अपनी गिरफ्त में ले लिया था, बाब द्वारा स्थापित की गई संविदा में अब उस अत्यन्त दुर्जेय बाधा पर भी विजय प्राप्त कर ली थी जो इसके मार्ग में फिर कभी नहीं आने वाली थी और इसी समय बहाउल्लाह द्वारा विश्व के पूरब और पश्चिम के सम्राटों, शासकों और धार्मिक नेताओं को सम्बोधित की गई अपने ध्येय की घोषणा के माध्यम से यह धर्म अपनी महिमा की पराकाष्ठा पर पहुँच गया। इस अपूर्व विजय के कुछ ही समय बाद सुल्तान अब्दुल अज़ीज़ द्वारा जारी किए गए आदेश के तहत बहाउल्लाह को अक्का की कारा–नगरी में निर्वासित कर दिया गया। इसके परिणामस्वरूप उनके कष्ट चरम सीमा पर पहुँच गए। चौकस रहने वाले शत्रुओं ने इस फैसले का स्वागत किया क्योंकि वे इसे एक ऐसे शत्रु की अन्तिम तबाही का संकेत समझ बैठे थे जिससे वे बहुत डरते थे और घृणा करते थे और जिसने

इस कारा नगरी में जिसे बहाउल्लाह ने "सर्वमहान कारागृह" की उपाधि दी थी, प्रभुधर्म पर ऐसी आंतरिक और बाहरी आपदाएँ लाद दी थीं जिनका अनुभव इस धर्म ने पहले कभी नहीं किया था। फिर भी, एक नवजात विधान के नियमों और विधानों की रचना किए जाने से और भविष्य की प्रशासनिक व्यवस्था का ताना–बाना बुनने वाले इसके आधारभूत सिद्धान्तों के प्रकट किए जाने से और इनकी पुनः पुष्टि करने से धीरे–धीरे परिपक्व हो रहा प्रकटीकरण इस योग्य बन चुका था कि आपदाओं के इस ज्वार के बावजूद यह एक चरण और आगे बढ़ सकता था तथा अपने सर्वोत्तम फल दे सकता था।

बहाउल्लाह के स्वर्गवास ने उनके वफादार समर्थकों को दुःख और घबराहट में डुबो दिया था और उनके धर्म के उन विश्वासघातियों में जान और आशा फूँक दी थी, जिन्होंने उनके ईश्वर–प्रदत्त अधिकार के विरूद्ध विद्रोह किया था, खुशियाँ मनाई थीं और उनके राजनीतिक एवं धार्मिक शत्रुओं को प्रोत्साहित किया था। बहाउल्लाह द्वारा रचे गए साधन अर्थात उनके द्वारा स्थापित की गई संविदा ने उनके स्वर्गवास के बाद उन शक्तियों को जो उन्होंने अपने सेवाकाल के चालीस वर्षों के दौरान संचालित की थीं, उचित माध्यमों में प्रवाहित कर दिया था, जिसने इस धर्म की एकता की रक्षा की और इसे वह प्रेरणा दी जो इसे अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए आवश्यक थीं। इस नई संविदा की घोषणा के बाद एक और संकट आया, जो उनके अपने बेटे द्वारा उत्पन्न किया गया था जिसे इस साधन के प्रावधानों के अनुसार, एक ऐसा पद प्रदान किया गया था जो केवल संविदा के केन्द्र के स्थान की तुलना में ही द्वितीय था। उस अमर और अतुलनीय दस्तावेज़ के प्रकटीकरण से जन्म लेने वाली शक्तियों से बल प्राप्त कर, (संविदाभंजकों पर अपनी आरम्भिक विजय दर्ज करते हुए), एक अविभाज्य धर्म ने अब्दुल बहा के नेतृत्व में पश्चिम में उजाला कर दिया, यूरोप की पश्चिमी सीमाओं को प्रकाशित कर दिया, उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप में अपना ध्वज फहरा दिया तथा उन प्रक्रियाओं को गतिशील कर दिया जो इस धर्म के अग्रदूत के भौतिक अवशेषों को पावन भूमि में स्थानान्तरित होते ही एवं कार्मल पर्वत पर बनी समाधि में इनके समाधिस्थ होते ही और रूसी तुर्किस्तान में इसके प्रथम उपासना मंदिर के निर्मित होते ही

अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचने वाली थीं। पूरब और पश्चिम में हासिल की गई उल्लेखनीय विजय के तत्काल बाद एक बहुत बड़ा संकट उत्पन्न हो गया, जो बहाउल्लाह की संविदा को तोड़ने वाले मुख्य व्यक्ति के षड़यंत्रों एवं उस क्रूर अब्दुल हमीद द्वारा जारी किए गए आदेशों की देन था। इस संकट ने सात साल से भी अधिक समय तक प्रभुधर्म के हृदय और केन्द्र को एक ऐसे संकट में डाले रखा जो सिर पर खड़ा रहता था। इसने इस धर्म के अनुयायियों को चिन्ता और वेदना से भर दिया और इसके विस्तार एवं सुगठन के लिए तैयार किए गए उद्यमों के निष्पादन को स्थगित कर दिया था। उस अत्याचारी के पतन और उसके शासन के गिरने के बाद यूरोप और अमेरिका में अब्दुल बहा की ऐतिहासिक यात्राओं ने संविदाभंजकों को ज़ोरदार धक्का पहुँचाने वाला झटका दिया था, उनके सेवाकाल के प्रारम्भिक वर्षों में उनके द्वारा आरम्भ किए गए विशाल कार्य को दृढ़ता प्रदान की और उनके पिता के धर्म को सम्मानजनक ऊँचाईयों तक पहुँचा दिया जो इस धर्म ने पहले कभी प्राप्त नहीं की थी और जो इस धर्म की सच्चाईयों को दूर–दूर तक घोषित करने में सहायक था, जिसने इसके प्रकाश को दूर स्थित पूरब एवं एन्टीपोड्स तक पहुँचाने के लिए रास्ता साफ कर दिया था। इसके बाद एक और बड़ा संकट उत्पन्न हुआ, जो प्रभुधर्म द्वारा अपने विश्व केन्द्र में सहन किया गया अन्तिम संकट था। इसे उकसाने वाला व्यक्ति क्रूर जमाल पाशा था। एक विनाशकारी विश्व युद्ध की चिन्ताओं के कारण, इससे जुड़े अभावों के कारण और इसकी वजह से टूटने वाले सम्पर्कों के कारण यह संकट और भी हानिकारक बन चुका था। इसने, इस धर्म के प्रधान व्यक्ति सहित इसके युगल संस्थापकों के पावन अवशेषों की समाधियों के लिए भी गम्भीर संकट उत्पन्न कर दिया था। इस दुःखद युद्ध के अंधकारमय दिनों के दौरान किए गए दिव्य योजना की पातियों के प्रकटीकरण के माध्यम से अब्दुल बहा के सेवाकाल के अन्तिम वर्षों में, पश्चिम के बहाई समुदाय के प्रमुख सदस्यों को अर्थात् भविष्य की प्रशासनिक व्यवस्था के समर्थकों को एक ऐसा विश्व लक्ष्य मिला था जो पहली बहाई शताब्दी के अन्तिम वर्षों तक इस धर्म पर और इसकी प्रशासनिक संस्थाओं पर अमिट प्रकाश बिखेरने वाला था। एक लम्बे एवं दुःखद युद्ध के परिणाम ने उस

जंगी तानाशाह की उम्मीदों पर पानी फेर दिया था और उसे अपमानजनक रूप से पराजित कर दिया था। इसने उस खतरे को हमेशा के लिए हटा दिया था जो 65 साल तक प्रभुधर्म के संस्थापक और उनकी संविदा के केन्द्र पर मंडरा रहा था तथा उन भविष्यवाणियों को पूरा कर दिया था जो उसने अपने लेखों में की थीं। इसने उसके धर्म एवं धर्म के प्रधान का सम्मान और बढ़ा दिया था और आस्ट्रेलियाई महाद्वीप में उसके संदेश के प्रसार के कारण स्पष्ट पहचान प्राप्त कर ली थी।

प्रभुधर्म के प्रारम्भिक युग के अन्त को चिन्हित करने वाले अब्दुल बहा के आकस्मिक देहावसान ने जैसा कि उनके पिता के स्वर्गवास के दौरान हुआ था उनके वफादार शिष्यों को दुःख और घबराहट में डुबो दिया था, मिर्ज़ा याह्या और मिर्ज़ा मुहम्मद अली ने घटते हुए अनुयायियों के अन्दर नई उम्मीद जगा दी थी और उन राजनीतिक एवं धार्मिक शत्रुओं को सघन गतिविधियों में लगा दिया था, जो उन समुदायों के टूटकर बिखरने की प्रतीक्षा कर रहे थे जिन्हें संविदा के केन्द्र ने इतना अधिक प्रेरित किया था और जिनका उन्होंने इतनी कुशलता से नेतृत्व किया था। बहाई युग की शुरूआत करने वाले उनके इच्छापत्र और वसीयतनामे की घोषणा ने, बाब द्वारा घोषित की गई उस व्यवस्था की विशेषताओं को जिसकी कल्पना बहाउल्लाह ने की थी और जिसके नियमों और सिद्धान्तों को उन्होंने प्रकट किया था, चित्रित करने वाले घोषणापत्र ने यूरोप, एशिया, अफ्रीका और अमेरिका के इन समुदायों को संगठित होकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया था। इस व्यवस्था में स्थानीय एवं राष्ट्रीय सभाओं की स्थापना, इनके लिए संविधान की रचना, विभिन्न देशों के नागरिक प्राधिकरणों द्वारा इन संस्थाओं की मान्यता, प्रशासनिक मुख्यालय की स्थापना, पश्चिम में प्रथम उपासना मंदिर की इमारत के निर्माण, प्रभुधर्म के धर्मस्व की स्थापना और इसके आकार को बढ़ाकर, विश्व केन्द्र के साथ–साथ इसके धार्मिक स्वरूप को उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप के नागरिक अधिकारियों द्वारा पूरी मान्यता दिलाकर इस व्यवस्था का निर्माण करने में और इसे मजबूत बनाने में उनकी सहायता की थी।

जिस दौरान बहाई विश्व प्रशासनिक व्यवस्था के ढाँचे का आधार स्थापित किया रहा था, उस महान प्रक्रिया के आरम्भ में मिस्र में एक मुस्लिम धार्मिक न्यायालय द्वारा घोषित किए गए एक गम्भीर और ऐतिहासिक दोषारोपण ने मुस्लिम पृष्ठभूमि वाले सभी अनुयायियों को इस्लाम से बाहर निकाल दिया, उन्हें धर्म विरोधी कहकर निन्दित किया गया और इस बहिष्कृत समुदाय के सदस्यों को उन परीक्षाओं और खतरों के समक्ष ला खड़ा किया जिनका सामना इन्होंने पहले कभी नहीं किया था। इसके अतिरिक्त, इराक में बग़दाद के नागरिक न्यायालय के उस अन्यायपूर्ण निर्णय ने, जो शिया शत्रुओं द्वारा भड़काया गया था, साथ ही रूस में एक और भी बड़े शत्रु द्वारा जारी किए गए आदेश ने, एक ओर जहाँ प्रभुधर्म से इसका एक पावनतम तीर्थ स्थान छीन लिया था वहीं दूसरी ओर, इसके उस पहले उपासना मंदिर का उपयोग करने से इसे वंचित कर दिया था, जिसकी स्थापना का शुभारम्भ अब्दुल बहा ने किया था और जिसे उनके सेवाकाल के दौरान निर्मित किया गया था। अन्त में, एक चिरकालीन शत्रु द्वारा की गई उस आकस्मिक घोषणा से, जो सम्पूर्ण मुक्ति की दिशा में उनके धर्म की कूच के पहले कदम को चिन्हित करती है एवं इसकी संस्थाओं पर किए गए दोगुने वार से डरे बिना, बहाउल्लाह के वे अनुयायी जो पहले ही एकजुट थे और एक मजबूती से स्थापित की गई प्रशासनिक व्यवस्था की एजेन्सियों के माध्यम से पूरी तरह सुसज्जित थे, अब अपने धर्म के स्वतंत्र रूप को सिद्ध करके, अपने पावनतम ग्रंथ में विहित किए गए आधारभूत नियमों को लागू करके, एक स्वतंत्र धर्म के अनुयायी माने जाने के अपने अधिकार को शासन द्वारा मान्य किए जाने की माँग रखकर एवं कुछ प्रकरणों में यह मान्यता प्राप्त करके, उस अन्याय को विश्व के उच्चतम न्यायालय की ओर से निन्दित घोषित कराकर जो उन्होंने अपने अत्याचारियों के हाथों सहन किया था, कम से कम 34 अतिरिक्त देशों में और 13 अधीन राष्ट्रों में अपने निवास स्थापित करके, 21 अतिरिक्त भाषाओं में अपना साहित्य वितरित करके, अपने धर्म के समर्थकों में एक महारानी को सम्मिलित करके और अन्त में एक ऐसे उद्यम की शुरूआत करके पहली बहाई शताब्दी के अमर इतिहास को ताज पहनाने के लिए उठ खड़े हुए थे, जिसने उस शताब्दी के अन्त तक उन्हें उनके द्वितीय

उपासना मंदिर की बाहरी सजावट का काम पूरा करने में एवं उस योजना के पहले चरण को सफलतापूर्वक पूरा करने में समर्थ बनाया था जो अब्दुल बहा ने उनके धर्म के विश्वव्यापी और सुव्यवस्थित प्रसार के लिए तैयार की थी।

जब हम पीछे मुड़कर एक पूरी शताब्दी के कोलाहल भरे इतिहास को देखते हैं, तो हम पाते हैं कि पूरब अथवा पश्चिम के राजाओं, सम्राटों, राजकुमारों ने इस धर्म के संस्थापकों के आह्वान पर या तो ध्यान नहीं दिया था या उनके संदेश को अस्वीकार कर दिया था या उन्हें निष्कासित करने और देशनिकाला देने के आदेश दिए थे या उनके अनुयायियों को बड़ी बर्बरता से सताया था अथवा उनकी शिक्षाओं को बदनाम करने के प्रयत्न किए थे, ऐसे राजाओं या राजकुमारों को ईश्वर के क्रोध ने धर दबोचा और कुछ ने तो अपने सिंहासन तक गवाँ दिए, कुछ ने अपने राजवंशों का अन्त देखा, इनमें से कुछ की हत्या कर दी गई या उन्हें बेइज़्ज़त किया गया और अन्य ने पाया कि वे अपने साम्राज्यों के प्रलयकारी विघटन को रोकने में असमर्थ थे, कई अन्य को उन्ही के राज्य में निम्न पदों पर पदावनत कर दिया गया। इस धर्म के मुख्य शत्रु, जिस खलीफा राज्य ने इसके संस्थापक के विरूद्ध तलवार उठाई थी और उन्हें तीन बार निष्कासित किया था वह स्वयं धूल में मिल गया और अपने अपमानजनक पतन में वैसी ही दुर्गति को प्राप्त हुआ जैसा तकरीबन दो हज़ार साल पहले ईसाई युग की पहली शताब्दी में, उस यहूदी धर्माधिकारी वर्ग की उनके रोमन स्वामियों के हाथों हुई थी जो ईसा मसीह को सताने वाला मुख्य वर्ग था। विभिन्न राजकीय क्रम के शिया, सुन्नी, जोराष्ट्रीयन और ईसाई सदस्यों ने प्रभुधर्म पर भयंकर आक्रमण किया, इसके समर्थकों को धर्म विरोधी कहा तथा इसके ताने बाने को तार–तार करने, इसकी नींव को उखाड़ने के सतत् प्रयत्न किए। इसी क्रम में सबसे बड़े शत्रु को या तो हरा दिया गया था या वास्तव में उनके टुकड़े–टुकड़े कर दिए गए थे, अन्य की प्रतिष्ठा और उनके प्रभाव तेज़ी से सिमट गए, सभी को एक ऐसी धर्मनिरपेक्ष शक्ति का प्रभाव सहना पड़ा, जो आक्रामक थी और उनके विशेषाधिकारों को कम करने का एवं अपनी सत्ता का दावा करने का दृढ़ निश्चय कर चुकी थी। पतितों, विश्वासघातियों और धर्म विरोधियों ने छिपकर और खुलकर इस धर्म के अनुयायियों की

वफादारी की जड़ें उखाड़ने के, उनकी एकता भंग करने के या उनकी संस्थाओं पर हमला करने के भरसक प्रयत्न किए थे। इन शत्रुओं को, एक एक करके, कुछ को धीरे–धीरे, अन्य को नाटकीयता के साथ, नष्ट कर दिया गया या हटा दिया गया और भुला दिया गया। इस धर्म की बहुत सी प्रमुख हस्तियों ने, इसके आरम्भिक शिष्यों ने, इसके प्रधान समर्थकों ने, इसके संस्थापकों के साथियों एवं सह–निर्वासितों ने, इसके जनक एवं इसकी संविदा के केन्द्र के विश्वसनीय लिपिकों एवं सचिवों ने, यहाँ तक कि स्वयं ईश्वरावतार के परिवार के चन्द लोगों ने भी जिनमें बाब द्वारा नामित व्यक्ति तथा बहाउल्लाह का वह पुत्र भी शामिल था जिसका उल्लेख उन्होंने अपनी संविदा की पुस्तक में किया था, इन सभी ने स्वयं को इस धर्म की छत्रछाया से हटा लिया था, अमिट बदनामी के कृत्यों से इसे लज्जित किया था और ऐसे विस्तृत प्रभावों वाले संकट पैदा किए थे जो पूर्व के किसी भी धर्म ने अनुभव नहीं किए थे। बगैर किसी अपवाद के इनमें से प्रत्येक ने अपने जीवनकाल में अपने ऊँचे पदों से अपने षड़यंत्रों को विफल होते हुए देखा, अन्य लोग बदनामी और दुःख में डूब गए और उस धर्म की एकता को भंग करने में या उसकी कूच को रोकने में पूरी तरह असमर्थ रहे जिसे उन्होंने इतनी बेशर्मी से त्याग दिया था। मंत्रियों, राजदूतों और राज्य के अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने इसके उद्देश्य को बिगाड़ने के लिए बड़ा श्रम किया था, वे इसके संस्थापकों के क्रमागत निष्कासनों के लिए ज़िम्मेदार थे और उन्होंने इसके आधार को गुप्त रूप से हानि पहुँचाने के दुर्भावनापूर्ण प्रयत्न किए थे। ऐसे षड़यंत्रों के माध्यम से, उन्होंने अनजाने में अपना ही पतन कर लिया था, अपने बादशाहों का विश्वास गवाँ दिया था, अपमान के प्याले को तलछट तक पी लिया था और अपने दुर्भाग्य पर अटल रूप से मुहर लगा दी थी। भ्रष्ट और बिल्कुल बेपरवाह मानवजाति ने भी प्रभुधर्म के युगल संस्थापकों द्वारा की गई और बाद में पश्चिम में संविदा के केन्द्र द्वारा अपने सार्वजनिक वक्तव्यों में की गई आग्रहपूर्ण अपीलों और चेतावनियों पर ध्यान देने से इंकार कर दिया था उस मानवजाति ने उजाड़ देने वाले दो ऐसे युद्ध किए जिनके परिणाम अभूतपूर्व थे और जिन्होंने इसके संतुलन को अस्त व्यस्त कर दिया, इसके युवाओं को मिटा दिया और जिन्होंने मानवजाति को

उसकी जड़ों तक हिला कर रख दिया। दूसरी ओर कमज़ोर, नगण्य और अत्याचार पीड़ित लोगों ने, इतने महान धर्म के प्रति अपनी निष्ठा के माध्यम से और इसके आह्वान का उत्तर देकर वीरता और साहस के ऐसे कार्य करने की सामर्थ्य अर्जित कर ली जो अमर ख्याति प्राप्त करने वाले उन स्त्री पुरूषों की उपलब्धियों के समान थे और कुछ प्रकरणों में तो उनकी भी उपलब्धियों से कहीं अधिक महान थे, जिनके नामों और कर्मों ने मानवजाति के आध्यात्मिक इतिहास को सजाया है।

इसकी नवजात शक्ति पर बाहर के सांसारिक और आध्यात्मिक सत्ताधारियों की ओर से या फिर अंदर के काले दिल वाले शत्रुओं की ओर से किए गए वार के बावजूद, बहाउल्लाह का धर्म टूटने या झुकने की अपेक्षा और भी शक्तिशाली होता चला गया, विजय पर विजय प्राप्त करता चला गया। सचमुच, यदि इसके इतिहास को सही ढंग से पढ़ा जाये तो यह कहा जा सकता है कि इसने अपने आपको संकट और विजय की बारी–बारी से आने वाली धड़कनों की एक श्रृंखला में ढाल लिया है, जो इसे इसके दिव्यरूप से निर्धारित किए गए भाग्य की ओर ले जा रहीं हैं। बाब द्वारा घोषित किए गए प्रकटीकरण का स्वागत करने वाले जंगली कट्टरपन का प्रकोप, जिसके बाद होने वाली उनकी गिरफ्तारी और कैद के पश्चात उनके विधानों और नियमों की रचना की गई थी, बदश्त में उस विधान की शुरूआत हुई थी और तबरीज़ में उनके स्थान का सार्वजनिक दावा किया गया था। प्रान्तों में व्यापक रूप से फैलाव हुआ तथा और भी हिंसक विद्रोह, उनकी स्वयं की हत्या, इसके बाद बहाया गया खून और सियाहचाल में बहाउल्लाह की कैद के पश्चात, इस अंधकूप कारागार में बहाई प्रकटीकरण की भोर का उदय होना। बहाउल्लाह का इराक में निर्वासन, कुर्दिस्तान में उनके एकान्तवास और बग़दाद में उनके सह–अनुयायियों को पीड़ित करने वाली उलझन और दुःख के बदले में बाबी समुदाय का वह पुनरूत्थान हुआ जो नजिबिय्येह के बाग में बहाउल्लाह के ध्येय की घोषणा के साथ अपनी चरम सीमा पर पहुँचा। उन्हें कॉन्सटैन्टिनोपल बुलाने वाले सुल्तान अब्दुल अज़ीज़ के आदेश और मिर्ज़ा याह्या द्वारा उत्पन्न किए गए संकट के बाद विश्व के राजाओं एवं महारानियों और इसके धार्मिक नेताओं के समक्ष

बहाउल्लाह के ध्येय की घोषणा हुई। अक्का की दण्ड बस्ती में बहाउल्लाह के निर्वासन और इसकी परेशानियों और दुःखों के बदले में उनके प्रकटीकरण के नियमों और विधानों की घोषणा और उनकी संविदा की स्थापना हुई। यह उनके जीवन का अन्तिम कार्य था। मिर्ज़ा मुहम्मद अली और उसके साथियों के विद्रोह से उत्पन्न होने वाली अग्नि परीक्षाओं के बाद बहाउल्लाह का धर्म पश्चिम में पहुँचा और बाब के पावन अवशेषों को पावन भूमि में स्थानान्तरित किया गया। अब्दुल बहा की कैद का नवीनीकरण और इससे उत्पन्न होने वाले खतरों और चिन्ताओं के परिणामस्वरूप अब्दुल हमीद का पतन हुआ और अब्दुल बहा को उनकी कैद से रिहा कर दिया गया। बाब के पावन अवशेषों को कार्मल पर्वत पर समाधिस्थ किया गया और स्वयं संविदा के केन्द्र ने यूरोप और अमेरिका की अपनी विजयी यात्राएँ पूरी कीं। विनाशकारी विश्व युद्ध के आवेग से और उन खतरों के बढ़ जाने से जिसमें जमाल पाशा और संविदा भंजकों ने अब्दुल बहा को खुले में डाल दिया था, परिणामतः दिव्य योजना की पातियों का प्रकटीकरण हुआ, वह घमंडी कमांडर पलायन कर गया, पावन भूमि स्वतंत्र हो गई, विश्व केन्द्र में प्रभुधर्म सम्मानित हुआ और पूरब तथा पश्चिम में इसकी गतिविधियों का उल्लेखनीय विस्तार हुआ।

अब्दुल बहा के स्वर्गवास से होने वाली खलबली के बाद उनकी वसीयत और इच्छापत्र की घोषणा हुई, बहाई युग के रचनात्मक काल का शुभारम्भ हुआ और एक विश्वव्यापी प्रशासनिक व्यवस्था का आधार स्थापित हुआ। और अन्त में, संविदाभंजकों द्वारा बहाउल्लाह की समाधि की चाबियाँ छीन लिए जाने, बग़दाद में शिया समुदाय द्वारा बहाउल्लाह के निवास पर बलपूर्वक आधिपत्य किये जाने, रूस में अत्याचारों के भड़क उठने तथा मिस्र में बहाई समुदाय को इस्लाम से निकाले जाने के बाद, पूरब और पश्चिम में प्रभुधर्म के अनुयायियों द्वारा प्रभुधर्म की स्वतंत्र धार्मिक हैसियत का सार्वजनिक रूप से दावा किया गया, इसके विश्व केन्द्र में इसकी हैसियत को मान्यता दी गई, लीग ऑफ नेशन्स की परिषद द्वारा की गई घोषणा में इस धर्म के दावों को न्यायसंगत ठहराया गया, इसके शिक्षण की अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियों का और इसके साहित्य का उल्लेखनीय विस्तार हुआ, शाही परिवार के सदस्यों द्वारा इसके

दिव्य मूल के बारे में लिखित साक्ष्य जारी किए गए और पश्चिमी जगत में इसके प्रथम उपासना मंदिर की बाहरी सजावट का काम पूरा हुआ।

बहाउल्लाह के धर्म के प्रगतिशील रूप के प्रकट होने के दौरान आने वाली आपत्तियाँ वास्तव में ऐसी रही हैं कि इनकी गम्भीरता उन आपत्तियों से बढ़कर थी जिनका कष्ट पूर्व के धर्मों ने उठाया है, फिर भी इस धर्म की एकता भंग करने में या कुछ ही समय के लिए ही सही, इसके अनुयायियों के बीच दरार उत्पन्न करने में ये आपत्तियाँ बिल्कुल विफल रही हैं। यह धर्म न केवल इन अग्नि परीक्षाओं में बचा रहा है, बल्कि पवित्र और बेदाग रहकर उभरा और ऐसे किसी भी प्रकार के संकट का सामना करने और उस पर विजय पाने की क्षमता से भी सम्पन्न हुआ है जो भविष्य में इसके निर्बाध विकास के कारण उत्पन्न हो सकता है।

इस प्रताड़ित किन्तु अपराजित धर्म द्वारा एक ही शताब्दी के अन्दर पूरे किए गए कठिन कार्य तथा इसके द्वारा प्राप्त की गई विजय वास्तव में महान है। आज जब यह दूसरी बहाई शताब्दी की दहलीज़ पर आ खड़ी है, इसके अधूरे काम, इसकी भावी विजय और भी महान होगी। अपने अस्तित्व के सौ साल के कम समय में, यह पाँच महाद्वीपों में अपना प्रकाश फैलाने में, धरती के दूर स्थित कोनों में अपने केन्द्र स्थापित करने में, सम्पूर्ण मानवजाति के साथ एक अभेद्य आधार पर अपनी संविदा स्थापित करने में, अपनी विश्वव्यापी प्रशासनिक व्यवस्था का तानाबाना बुनने में, अपनी सम्पूर्ण मुक्ति को हासिल करने में एवं पूरी दुनिया द्वारा इसे स्वीकार किए जाने में बाधक बनने वाली कई बेड़ियों को तोड़ने में, शाही, राजनीतिक और धर्माधिकारी वर्ग के शत्रुओं पर अपनी विजय सुनिश्चित करने में तथा पूरी पृथ्वी पर आध्यात्मिक विजय प्राप्त करने वाले अपने सबसे प्रथम सुव्यवस्थित धर्मयुद्ध की शुरूआत करने में यह धर्म सफल रहा है।

लेकिन, उस संस्था की स्थापना अब तक नहीं हुई है जो इस धर्म के विश्व आध्यात्मिक केन्द्र के रूप में कार्य करेगी और जो इसकी विश्वव्यापी प्रशासनिक व्यवस्था के ढाँचे के निर्माण का अंतिम चरण होगी। धार्मिक रूढ़िवादिता की बेड़ियों से इस धर्म की सम्पूर्ण मुक्ति, इसे पूरी दुनिया द्वारा

स्वीकारे जाने की और इसकी विश्व व्यवस्था के प्रकट होने की आवश्यकता अभी पूरी नहीं हुई है। अब्दुल बहा की योजना के अनुसार इसकी व्यवस्था के कल्याणकारी प्रभावों को प्रत्येक देश और द्वीप में फैलाने के लिए तैयार किए गए इन क्रमबद्ध अभियानों को वहाँ शुरू करना अब भी बाकी है जहाँ इसकी प्रशासनिक व्यवस्था के संरचनात्मक आधार का निर्माण अब तक नहीं हुआ है। जैसा कि उन्होंने भविष्यवाणी की है, इस्लामिक जगत के सबसे प्रमुख गुरूकुल के शिखर से 'या बहा–उल–आभा' का ध्वज अब तक फहराया नहीं गया है। बहाउल्लाह द्वारा *किताब–ए–अक़दस* में तीर्थ का केन्द्र नियत किए गए सर्वमहान निवास को अब भी आधिपत्य से छुड़वाया नहीं गया है। बहाउल्लाह की महिमा में निर्मित किया जाने वाला वह तीसरा मश्रिकुल–अश्कार, जिसके लिए हाल ही में ज़मीन खरीदी गई है तथा पूरब और पश्चिम में पहले ही निर्मित किए गए दो उपासना मंदिरों की सहयोगी संस्थाओं का निर्माण अब भी नहीं हुआ है। जैसा कि अब्दुल बहा ने आशा की थी, बाब की समाधि को ताज पहनाने वाले गुम्बद का निर्माण अब भी बाकी है। बहाई प्रकटीकरण का मातृग्रंथ, *किताब–ए–अकदस* का संहिताकरण तथा इसके नियमों और विधानों की यथाक्रम घोषणा अभी शुरू नहीं हुई है। इन नियमों और विधानों को लागू करने वालों और इन पर अमल करने वाले बहाई न्यायालयों की स्थापना के प्रारम्भिक उपाय करना अब भी बाकी हैं। बहाई विश्व के सबसे प्रथम मश्रिकुल–अश्कार की बहाली तथा इतने समर्पण के साथ इसका निर्माण करने वाले समुदाय का दोबारा तैयार किया जाना अब भी बाकी है। जैसी की बहाउल्लाह के पावनतम ग्रंथ में भविष्यवाणी की गई है, उनकी मातृभूमि के साम्राज्य में शासन करने वाला वह शासक अब भी उपलब्ध नहीं है जो एक लम्बे समय से सताये जा रहे उनके अनुयायियों को शाही सुरक्षा प्रदान करेगा। जैसी कि अब्दुल बहा ने भविष्यवाणी की थी, प्रभुधर्म की प्रगति के प्रति वर्तमान में उदासीन धार्मिक नेताओं के संयुक्त आक्रमण के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाला वाद–विवाद होना अब तक बाकी है। विश्व के सभी लोगों और राष्ट्रों की एकता का साक्ष्य बनने वाले प्रभुधर्म का स्वर्णिम युग, सर्वमहान शान्ति की स्थापना, धरती पर उस परम पिता के साम्राज्य की स्थापना, मानवजाति की

परिपक्वता और बहाउल्लाह की विश्व व्यवस्था द्वारा उत्पन्न की गई सृजनात्मक ऊर्जाओं द्वारा प्रेरित और निर्देशित की गई, अपने वैभव पर चमकने वाली विश्व सभ्यता का जन्म अब तक नहीं हुआ है इसके वैभवशाली भविष्य के सम्बन्ध में कोई शंका नहीं की जा सकती।

भविष्य के दशकों में या क्रमिक शताब्दियों में ईश्वर के इस नवजात धर्म के साथ कुछ भी घटे, इसके विश्वव्यापी विकास का अगला चरण कोई भी दुःख, खतरा और विपत्ति उत्पन्न करे, इसके वर्तमान या भविष्य के शत्रु इसके विरोध में इस पर किसी भी दिशा से आक्रमण करें, इसके द्वारा सहन की गई पराजय और बाधाएँ कितनी ही बड़ी क्यों न हो, हम लोगों को जिन्हें अपने सीमित मस्तिष्क की समझ शक्ति के अनुसार इस धर्म की प्रगति एवं स्थापना से जुड़ी इन अनोखी घटनाओं के महत्व को समझने का विशेषाधिकार मिला है, इसमें कोई सन्देह नहीं होगा कि इस धर्म के जीवन के प्रथम सौ वर्षों में इस धर्म ने जो प्राप्त किया है, वह इस बात की पर्याप्त गारंटी देता है कि यह धर्म तब तक आगे बढ़ता रहेगा, जब तक यह और अधिक ऊँचाईयों को प्राप्त करते हुए, प्रत्येक बाधा को हटाते हुए, नए क्षितिज खोलते हुए तथा महानतम विजय हासिल करते हुए अपने उस महिमाशाली ध्येय को पूरा नहीं कर लेता जो भविष्य के धुँधले विस्तार में फैला हुआ है।